कुरआन का आसान मतलब

ख़ुलासा-ए-तफ़सीर

मआ़रिफ़ुल कुरआन

जिल्द दोम

पारा 17 से 30

डा० अब्दुल वहाब चरथावली

तफ़सीलात

नाम किताबः	कुरआन का आसान मतलब (जिल्द दोम)
माख़ूज़ः	तफ़सीर मआ़रिफ़ुल कुरआन
मुफ़स्सिरः	मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी उ़स्मानी रह०
तरतीब व तरजमाः	डा० अब्दुल वहाब चरथावली **9410473660 - 8979863586**
सफ़हातः	680
सन् इशाअ़तः	2022 ई0
कम्पोज़िंगः	अब्दुल अलीम - स्टार कम्प्यूटर देवबन्द 9359254215–7017984091
नाशिरः	कुतबख़ाना नईमिया देवबन्द

नाशिर

कुतबख़ाना नईमिया देवबन्द

फ़हरिस्त सूरत

सूरत नं०	नाम सूरत	सफ़हा नं०	पारा नं०
21	सूरत अम्बिया	07	17
22	सूरत हज	29	17
23	सूरत मोमिनून	48	18
24	सूरत नूर	65	18
25	सूरत फ़ुरक़ान	87	18-19
26	सूरत शुअ़रा	103	19
27	सूरत नम्ल	124	19-20
28	सूरत क़सस	143	20
29	सूरत अनकबूत	165	20-21
30	सूरत रूम	183	21
31	सूरत लुक़मान	197	21
32	सूरत सजदा	205	21
33	सूरत अहज़ाब	211	21-22
34	सूरत सबा	238	22
35	सूरत फ़ातिर	255	22
36	सूरत यासीन	268	22-23
37	सूरत साफ़्फ़ात	281	23
38	सूरत साद	299	23
39	सूरत ज़ुमर	312	23-24
40	सूरत मूमिन	333	24

41	सूरत हामीम सजदा	350	24-25
42	सूरत शूरा	365	25
43	सूरत ज़ुख़रुफ़	381	25
44	सूरत दुख़ान	397	25
45	सूरत जासिया	404	25
46	सूरत अहक़ाफ़	412	26
47	सूरत मुहम्मद	423	26
48	सूरत फ़तह	434	26
49	सूरत हुजुरात	446	26
50	सूरत क़ाफ़	454	26
51	सूरत ज़ारियात	461	26-27
52	सूरत तूर	468	27
53	सूरत नज्म	474	27
54	सूरत क़मर	482	27
55	सूरत रहमान	489	27
56	सूरत वाक़िआ़	495	27
57	सूरत हदीद	502	27
58	सूरत मुजादिला	512	28
59	सूरत हश्र	519	28
60	सूरत मुमतहिना	527	28
61	सूरत सफ़्फ़	533	28
62	सूरत जुमआ़	537	28
63	सूरत मुनाफ़िक़ून	541	28
64	सूरत तग़ाबुन	545	28
65	सूरत तलाक़	549	28

66	सूरत तहरीम	555	28
67	सूरत मुल्क	560	29
68	सूरत क़लम	566	29
69	सूरत हाक़्क़ा	572	29
70	सूरत मआ़रिज	576	29
71	सूरत नूह	580	29
72	सूरत जिन्न	584	29
73	सूरत मुज़्ज़म्मिल	589	29
74	सूरत मुदस्सिर	593	29
75	सूरत क़ियामा	598	29
76	सूरत दहर	602	29
77	सूरत मुरसलात	607	29
78	सूरत नबा	610	30
79	सूरत नाज़िआ़त	614	30
80	सूरत अबस	618	30
81	सूरत तकवीर	621	30
82	सूरत इनफ़ितार	624	30
83	सूरत मुतफ़्फ़िफ़ीन	626	30
84	सूरत इन्शिक़ाक़	629	30
85	सूरत बुरूज	631	30
86	सूरत तारिक़	634	30
87	सूरत आला	636	30
88	सूरत ग़ाशिया	638	30
89	सूरत फ़ज्र	640	30
90	सूरत बलद	643	30

91	सूरत शम्स	645	30
92	सूरत लैल	647	30
93	सूरत ज़ुहा	649	30
94	सूरत इन्शिराह	651	30
95	सूरत तीन	653	30
96	सूरत अलक़	655	30
97	सूरत क़द्र	658	30
98	सूरत बय्यिना	660	30
99	सूरत ज़िलज़ाल	662	30
100	सूरत आदियात	664	30
101	सूरत क़ारिआ़	665	30
102	सूरत तकासुर	666	30
103	सूरत अस्र	668	30
104	सूरत हुमाज़ा	669	30
105	सूरत फ़ील	670	30
106	सूरत क़ुरैश	671	30
107	सूरत माऊन	672	30
108	सूरत कौसर	673	30
109	सूरत काफ़िरून	674	30
110	सूरत नस्र	675	30
111	सूरत लहब	676	30
112	सूरत इख़लास	677	30
113	सूरत फ़लक़	678	30
114	सूरत नास	680	30

21-सूरत-अम्बिया

इस मक्की सूरत में ‘7’ रूकू और ‘112’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ﴿۱﴾ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ
اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۲﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ۖ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ هَلْ هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ
اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿۳﴾ قٰلَ رَبِّىْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۫ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۴﴾ بَلْ
قَالُوْۤا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚ فَلْيَاْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿۵﴾ مَاۤ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ
قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۶﴾ وَمَاۤ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِىْۤ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۷﴾ وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ﴿۸﴾ ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ
فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۹﴾ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۰﴾

आयत न० 01 से 10

उन (इनकार करने वाले) **लोगों से उन का हिसाब** (का वक़्त) **नज़दीक आ पहुंचा** (यानी क़ियामत धीरे-धीरे नज़दीक होती जाती है) **और ये** (अभी) **भूल** (ही) **में** (पड़े) **हैं** (और उस के यक़ीन करने और उसकी तैयारी करने से) **मुंह फेरे हुए हैं**(1) (और उन की बेपरवाई यहां तक बढ़ गई है कि) **उन के पास उन के रब की तरफ़ से जो नसीहत की नई बात** (उन की हालत के हिसाब से) **आती है** (उससे सबक़ लेने के बजाए) **ये उस को इस तरह सुनते हैं कि** (उस के साथ) **हंसी करते हैं**(2) (और) **उन के दिल** (इस तरफ़) **ध्यान नहीं करते, और ये ज़ालिम** (और काफ़िर) **लोग** (आपस में) **चुपके चुपके बातें करते हैं** (यानी इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करके उस को मिटाना चाहते हैं) **कि ये** (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **सिर्फ़ तुम जैसे एक** (आम) **आदमी हैं** (यानी नबी नहीं और यह लुभावना कलाम जो सुनाते हैं असल में पैग़म्बरी का मोजिज़ा नहीं बल्कि जादू है), **तो क्या** (इस बात के बावजूद) **फिर भी तुम जादू की बात सुनने को** (उन के पास) **जाओगे**

जब कि तुम (इस बात को अच्छी तरह) **जानते** (समझते) **हो**(3) **पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने** (जवाब में) **कहा कि मेरा रब हर बात को** (चाहे) **आसमान में हो और** (चाहे) **ज़मीन में** (हो और चाहे खुली हो या छुपी हो अच्छी तरह) **जानता है** (सो तुम्हारी कुफ़्र की बातो को भी जानता है) **और** (वक़्त पर सज़ा देगा क्योंकि) **वो सब कुछ सुनने वाला सब कुछ जानने वाला है**(4) (और उन्होंने इस सच्चे कलाम को सिर्फ़ जादू ही नहीं कहा) **बल्कि यह** (भी) **कहा कि यह** (कुरआन) **बेजोड़ ख़्वाब** (जैसा) **है** (कि असलीयत में लुभावना भी नहीं) **बल्कि उन्होंने** (यानी पैग़म्बर ने) **इस को** (अपने आप) **घड़ लिया है** (और यह बात कुछ कुरआन ही के साथ ख़ास नहीं) **बल्कि ये तो शाइर आदमी** (है इन की सभी बातें ऐसी ही घड़ी हुई होती हैं मतलब यह कि पैग़म्बर नहीं) **हैं,** (और पैग़म्बरी के बड़े दावेदार हैं) **तो उन को चाहिए कि ऐसी कोई** (बड़ी) **निशानी लाएं जैसा पहले लोग पैग़म्बर बनाए गये** (थे और बड़े-बड़े मोजिज़े दिखाए उस वक़्त हम पैग़म्बर मानें और ईमान लाएं और यह कहना भी एक बहाना था वर्ना पहले पैग़म्बरों को भी न मानते) **थे**(5) (अल्लाह तआला जवाब में कहते हैं कि) **उन से पहले जिन बस्ती वालों को हम ने हलाक किया वो** (मांगे हुए मोजिज़े दिखाने के बावजूद) **ईमान नहीं लाए सो क्या ये लोग** (उन मोजिज़ों के देखने पर) **ईमान ले आएंगे** (और कुरआन काफ़ी मोजिज़ा है)(6) **और** (पैग़म्बरी के बारे में जो उनको यह शक है कि पैग़म्बर इन्सान न होना चाहिए उस का जवाब यह है कि) **हम ने आप से पहले सिर्फ़ आदमियों ही को पैग़म्बर बनाया है जिनके पास हम वही भेजा करते थे सो** (ऐ इनकार करने वालो) **अगर तुम को** (यह बात) **पता न हो तो किताब वालों से पूछ लो** (क्योंकि ये लोग चाहे काफ़िर हों मगर ऐसी बात बताने वाले का सच्चा मुसलमान होना ज़रूरी नहीं फिर तुम उन को अपना दोस्त समझते हो तो उन की बात का यक़ीन भी होना चाहिए)(7) **और** (इसी तरह यह बात कि पैग़म्बर फ़रिशता होना चाहिए उस का जवाब यह है कि) **हम ने उन पैग़म्बरों के** (जो कि पहले हो चुके हैं) **ऐसे बदन नहीं बनाए थे जो खाना न खाते हों** (यानी फ़रिशता न बनाया था) **और** (ये लोग जो आप की मौत के इन्तिज़ार में खुशियां मना रहे हैं तो) **वो** (पहले पैग़म्बर) **लोग** (भी दुनिया में) **सदा रहने वाले नहीं हुए** (बस अगर आप भी न रहें तो पैग़म्बरी में क्या ऐतराज़ हो सकता है मतलब यह कि जैसे पहले पैग़म्बर थे वैसे ही आप भी हैं और ये लोग जिस तरह आप को झुटलाते हैं इसी तरह उन पैग़म्बरों को भी उस ज़माने के काफ़िरों ने झुटलाया था)(8) **फिर हम ने जो उन पैग़म्बरों से वादा किया था** (कि झुटलाने वालों को अज़ाब से हलाक करेंगे और तुम को और मोमिनों को बचा लेंगे हमने) **उस** (वादे) **को सच्चा किया यानी उन को और जिस जिस को** (बचाना) **चाहा** (उस अज़ाब

से) **हम ने बचा लिया और** (उस अज़ाब से ताबेदारी की) **हद से निकलने वालों को हलाक किया** (सो इन लोगों को डरना चाहिए)(9) **हम तुम्हारे पास ऐसी किताब भेज चुके हैं कि उसमें तुम्हारे लिए नसीहत है, क्या** (ऐसी तबलीग़ व नसीहत के बावजूद) **फिर भी तुम समझते** (नहीं और नहीं मानते तो इस झुटलाने के बाद तुम पर दुनिया व आख़रत में अज़ाब आए तो अचम्भे की बात) **नहीं**(10)।

नोटः- तफ़सीर क़ुरतबी में है कि ऊपर आयत से मालूम हुआ कि जाहिल आदमी जिस को शरीअत के हुक्म मालूम न हों उस पर आलिमों की बात मानना वाजिब है कि आलिम से पूछ कर उसके हिसाब से चला करे।

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ۝١١ فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا
يَرْكُضُوْنَ ۝١٢ لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْــَٔلُوْنَ ۝١٣ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا
ظٰلِمِيْنَ ۝١٤ فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ۝١٥

आयत न० 11 से 15

और हमने बहुत सी बस्तियां जिन के रहने वाले ज़ालिम (यानी काफ़िर) **थे तबाह कर डाली और उन के बाद दूसरी क़ौम पैदा कर दी**(11) **तो जब उन ज़ालिमों ने हमारा अज़ाब आता देखा तो** (अज़ाब से बचने के लिए) **उस बस्ती से भागना शुरू किया**(12) (अल्लाह तआला कहते हैं कि) **भागो मत और अपने ऐश के सामान और अपने मकानों की तरफ़ वापस चलो शायद तुम से कोई पूछे** (कि तुम पर क्या गुज़री यानी जिस सामान और मकान पर तुम को घमन्ड था अब न वो सामान रहा न मकान न किसी दोस्त हमदर्द का नाम निशान रहा)(13) **वो लोग** (अज़ाब आने के वक़्त) **कहने लगे कि हाय हमारी बदनसीबी बेशक हम ज़ालिम थे**(14) **उन की ये ही पुकार जारी रही यहां तक कि हम ने उन को ऐसा** (मिलयामेट) **कर दिया जिस तरह खेती कट गई हो या आग बुझ गयी हो**(15)।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ۝١٦ لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا
فٰعِلِيْنَ ۝١٧ بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۗ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝١٨ وَلَهٗ مَنْ

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَنْ عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ لَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۚ﴿۱۹﴾ يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَ
النَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمِ اتَّخَذُوْۤا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَاۤ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۲۲﴾ لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَ هُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿۲۳﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ
اٰلِهَةً ؕ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَ ذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْۤ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿۲۵﴾ وَ قَالُوا اتَّخَذَ
الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ؕ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿۲۶﴾ لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَ هُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ لَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَ هُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿۲۸﴾ وَ مَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ
اِنِّيْۤ اِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾

आयत न० 16 से 29

और (हमारे अकेला होने पर हमारी पैदा की हुई चीज़ें सबूत हैं क्योंकि) **हम ने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है उसको इसलिए नहीं बनाया कि हम कोई बेकार का काम** (या खेल तमाशा) **करने वाले हों** (बल्कि इन में बहुत सी भलाइयां और फ़ाइदे हैं जिन में एक बड़ा फ़ाइदा तौहीद पर दलील है)(16) **अगर हम** (आसमान और ज़मीन को किसी ख़ास फ़ाइदे के लिए न बनाते बल्कि) **खिलौना बनाना चाहते** (जिसमें कोई फ़ाइदा न होता बल्कि दिल बहलाना होता) **तो ख़ास अपने पास की चीज़ों को बना लेते अगर हम को यह करना होता**(17) (बस साबित हुआ कि हम ने बेकार पैदा नहीं किया) **बल्कि** (हक़ की सच्चाई और झूट के झूटा होने को साबित करने के लिए पैदा किया है और) **हम** (उस) **हक़ बात को** (जिस के सबूत पर पैदा की हुई चीज़ें दलील हैं) **झूट बात पर** (इस तरह हावी कर देते हैं जैसे ऐसा समझो कि हम इस को उस पर) **फेंक मारते हैं सो वो** (हक़) **उस** (झूट) **का भेजा निकाल देता है** (यानी उस पर छा जाता है) **सो वो** (झूट दब कर) **एक दम मिलयामेट हो जाता है** (यानी तौहीद की दलीलें शिर्क को ग़लत साबित कर देती हैं), **और** (तुम फिर भी शिर्क करते हो तो) **तुम्हारे लिए उस बात से बड़ी ख़राबी है जो तुम** (हक़ के ख़िलाफ़) **घड़ते हो**(18) **और** (अल्लाह तआला की वो शान है कि) **जितने कुछ आसमान और ज़मीन में हैं सब उसी के हैं, और** (उनमें से) **जो अल्लाह के नज़दीक** (बड़े मक़बूल व नज़दीकी) **हैं** (उन की बन्दगी की यह हालत है कि) **वो उस की इबादत से सरकशी नहीं करते और न**

थकते हैं(19) (बल्कि) **रात और दिन** (अल्लाह की) **तस्बीह करते हैं** (किसी वक़्त) **सुस्ती नहीं करते** (जब उन की यह हालत है तो आम लोग तो किस गिनती में हैं बस इबादत के लाइक़ वो ही है और जब कोई दूसरा ऐसा नहीं तो फिर उस का साझी समझना कितनी ना समझी है)(20) **क्या** (तौहीद के इन सबूतों के बावजूद) **उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और माबूद बना रक्खे हैं** (ख़ास कर) **ज़मीन की चीज़ों में से** (जो कि और भी घटिया हैं जैसे कि पत्थर या धातों के बुत) **जो किसी को ज़िन्दा करते हैं** (यानी जो जान भी न डाल सकता हो ऐसा मजबूर कब माबूद होने के क़ाबिल होगा)(21) **ज़मीन** (में या) **आसमान में अगर अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई और माबूद** (भी) **होता तो दोनों में फ़साद हो जाता** (क्योंकि दोनों अपनी मर्ज़ी पूरी करने के लिए एक दूसरे से टकराते और ऐसा हुआ नहीं इसलिए ख़ुदा एक ही है) **सो** (इससे साबित हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला जो कि मालिक है अर्श का उन बातों से पाक है जो कुछ ये लोग बयान कर रहे** (हैं कि नऊ़ज़ुबिल्लाह उस के और साझी भी) **हैं**(22) **वो** (ऐसी शान वाला है कि वो) **जो कुछ करता है उससे कोई पूछताछ नहीं कर सकता और दूसरों से पूछताछ की जा सकती** (है यानी अल्लाह तआ़ला पूछताछ कर सकता है बस कोई बड़ाई में उस का साझी नहीं फिर इबादत में कोई कैसे साझी हो सकता) **है**(23) **क्या अल्लाह को छोड़ कर उन्होंने और माबूद बना रक्खे हैं,** (उन से) **कहिए कि तुम** (इस दावे पर) **अपनी दलील लाओ, यह मेरे साथ वालों की किताब** (यानी क़ुरआन) **और मुझ से पहले लोगों की किताबें** (यानी तौरेत व इन्जील और ज़बूर) **मौजूद हैं** (जिन का सच्ची होना और अल्लाह की तरफ़ से होना साबित है और दूसरी किताबों में चाहे बदलाव हुआ है मगर क़ुरआन में बदलाव नहीं हो सकता बस जो बात क़ुरआन से साबित हो वो बेशक सही है, और इन सब सबूतो से तो ये लोग तौहीद को मान जाते लेकिन फिर भी नहीं मानते) **बल्कि उन में ज़्यादा वो ही हैं जो हक़ बात का यक़ीन नहीं करते सो** (इस वजह से) **वो** (इसके मानने से) **मुंह मोड़ रहे हैं**(24) **और** (यह तौहीद कोई नई बात नहीं जिससे घबराहट हो बल्कि पुरानी शरीअत है जैसा कि) **हम ने आप से पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिस के पास हम ने यह वही न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई माबूद** (होने के लाइक़) **नहीं बस मेरी** (ही) **इबादत किया करो**(25) **और ये** (मुशरिक) **लोग** (जो हैं उन में से कुछ) **ऐसा कहते हैं कि** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **अल्लाह तआ़ला ने** (फ़रिशतों को) **औलाद बना रक्खी है** (तौबा-तौबा) **वो** (अल्लाह तआ़ला इससे) **पाक है,** (और वो फ़रिशते उस की औलाद नहीं है) **बल्कि** (उस के) **बन्दे हैं** (हां) **इज़्ज़त वाले** (बन्दे हैं इसी से नासमझों को शक हो गया)(26) **वो** (तो ऐसे ताबेदार हैं कि) **उस से आगे बढ़ कर बात नहीं कर**

सकते (बल्कि हुक्म के इन्तिज़ार में रहते हैं) **और वो उसी के हुक्म के हिसाब से चलते** (हैं उस के ख़िलाफ़ नहीं कर सकते) **हैं(27)** (क्योंकि वो जानते हैं कि) **अल्लाह तआला उन की अगली पिछली बातों को जानता है और** (उन के अदब की यह हालत है कि) **वो सिवाए उस** (आदमी) **के जिसके लिए** (सिफ़ारिश करने की) **अल्लाह तआला की मर्ज़ी हो और किसी की सिफ़ारिश नहीं कर सकते और वो सब अल्लाह तआला के डर से सहमे रहते हैं(28) और** (मान लो अगर) **उन में से कोई यह कहे कि** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **मैं अल्लाह के सिवा माबूद हूं तो हम उस को जहन्नम की सज़ा देंगे,** (और) **हम ज़ालिमों को ऐसे ही सज़ा दिया करते** (हैं यानी अल्लाह का उन पर पूरा बस है जैसे और लोगों पर फिर वो अल्लाह की औलाद जिस के लिए ख़ुदा होना ज़रूरी है कैसे हो सकते) **हैं(29)।**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि बड़ों का एक अदब यह भी है कि जब मजलिस में कोई बात आए तो जो उस मजलिस का बड़ा है उस के बोलने का इन्तिज़ार किया जाए पहले ही किसी और का बोल पड़ना अदब के ख़िलाफ़ है।

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا
يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾ وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ ۠ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾ وَ
جَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۚ وَهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَ
الْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

आयत न० 30 से 33

क्या इन काफ़िरों को यह पता नहीं चला कि आसमान और ज़मीन (पहले) **बन्द थे** (यानी न आसमान से बारिश होती थी न ज़मीन से कुछ पैदावार) **फिर हम ने दोनों को** (अपनी क़ुदरत से) **खोल दिया** (कि आसमान से बारिश और ज़मीन से पैदावार शुरू हो गई), **और** (बारिश से सिर्फ़ खेती की पैदावार ही नहीं होती बल्कि) **हम ने** (बारिश के) **पानी से हर जानदार चीज़ को बनाया** (है यानी हर ज़िन्दा जानदार के वजूद के लिए पानी ज़रूरी) **है, क्या** (इन बातों को सुन कर) **फिर भी ईमान नहीं लाते(30) और हम ने** (अपनी क़ुदरत से) **ज़मीन में पहाड़ इस लिए बनाए**

कि ज़मीन उन लोगों को लेकर हिलने न लगे, और हम ने उस (ज़मीन) **में चौड़े-चौड़े रास्ते बनाए ताकि लोग** (उन से अपने) **ठिकाने तक पहुंच जाएं(31) और हमने** (अपनी क़ुदरत से) **आसमान को** (ज़मीन के ऊपर) **एक छत** (की तरह) **बनाया जो** (हर तरह से) **सही सलामत** (महफ़ूज़) **है** (यानी गिरने से भी टूटने से भी और इससे भी कि शैतान वहां पहुंच कर आसमान की बातें सुन सकें), **और ये लोग उस** (आसमान के अन्दर) **की** (मौजूदा) **निशानियों से मुंह फेरे हुए हैं** (यानी उन में सोच विचार नहीं करते)(32) **और वो ऐसा** (क़ुदरत वाला) **है कि उस ने रात और दिन और सूरज और चान्द बनाए** (और वो निशानियां आसमान की ये ही हैं, और सूरज और चान्द में से) **हर एक एक-एक मदार में** (इस तरह चल रहे हैं कि जैसे) **तैर रहे हैं**(33)

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ اَفَاۡئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ ﴿٣٤﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوْكُمْ
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۗ وَاِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ۗ اَهٰذَا الَّذِيْ
يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ۚ وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٦﴾ خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۗ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا
تَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿٣٧﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ
عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٣٩﴾ بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤١﴾ قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۗ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ
لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۗ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿٤٣﴾ بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ
وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۗ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۗ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾
قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ
عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ
شَيْـًٔا ۗ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ﴿٤٧﴾

आयत न० 34 से 47

और (ये लोग जो आप की मौत की ख़ुशियां मना रहे हैं यह मौत भी पैग़म्बरी के ख़िलाफ़ नहीं

क्योंकि) **हम ने आप से पहले भी किसी इन्सान के लिए** (चाहे वो पैग़म्बर हो या कोई और दुनिया में) **सदा रहना तय नहीं किया** (बस जैसे आप से पहले पैग़म्बरों को मौत आई उससे उन की पैग़म्बरी में किसी को शक नहीं हुआ इसी तरह आप की मौत से आप की पैग़म्बरी में कोई शक नहीं हो सकता), **फिर** (यह कि) **अगर आप को मौत आ जाए तो क्या ये लोग** (दुनिया में) **सदा-सदा को रहेंगे** (आख़िर ये भी मरेंगे फिर ख़ुशी की क्या बात है)(34) **हर जानदार मौत का मज़ा चक्खेगा, और** (यह जो हम ने कुछ दिनों की तुम को ज़िन्दगी दे रक्खी है तो सिर्फ़ इसलिए कि) **हम तुम को बुरी भली हालतों से अच्छी तरह आज़माते हैं** (बुरी हालत जैसे बीमारी, ग़रीबी और अच्छी हालत जैसे सहत और मालदारी कोई इनमें ईमान लाता है नेकी करता है कोई कुफ़्र और गुनाह करता है मतलब यह कि ज़िन्दगी इसलिए दे रक्खी है कि देखें कैसे-कैसे काम करते हो), **और** (इस ज़िन्दगी के ख़त्म पर) **फिर तुम सब हमारे पास चले आओगे** (और हर एक को उसके हिसाब से सज़ा व बदला देंगे)(35) **और** (इन की ये हालत है कि) **ये काफ़िर लोग जब आप को देखते हैं तो बस आप से हंसी मज़ाक़ करने लगते हैं,** (और आपस में कहते हैं कि) **क्या ये ही** (साहिब) **हैं जो तुम्हारे माबूदों का** (बुराई से) **ज़िक्र किया करते हैं** (सो आप पर तो बुतों के इनकार का भी ऐतराज़ है) **और** (ख़ुद) **ये लोग अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र पर इनकार** (और कुफ़्र) **किया करते हैं**(36) (और जब कुफ़्र की सज़ा की बात सुनते हैं तो झुटलाते हुए तक़ाज़ा करते हैं कि यह सज़ा जल्दी आजाए और जल्दी इन्सान की आदत में बसी हुई है कि) **इन्सान जल्दी ही** (के ख़मीर) **का बना हुआ है,** (सो ज़रा सब्र करो) **हम जल्दी ही** (उस के वक़्त आने पर) **तुम को अपनी निशानियां** (यानी सज़ाएं) **दिखाए देते हैं बस तुम मुझ से जल्दी मत मचाओ** (क्योंकि अज़ाब वक़्त से पहले आता नहीं और वक़्त पर टलता नहीं)(37) **और ये लोग** (जब अज़ाब की बात सुनते हैं तो पैग़म्बर और मोमिनों से यह) **कहते हैं कि यह वादा किस वक़्त आएगा** (यानी देर किस बात की है) **अगर तुम** (अज़ाब की ख़बर के बारे में) **सच्चे हो**(38) (असलीयत यह है कि इन को इस मुसीबत की ख़बर नहीं जो ऐसी बेफ़िक्री की बातें करते हैं) **काश इन काफ़िरों को उस वक़्त की ख़बर होती जबकि** (उन को सब तरफ़ से दोज़ख़ की आग घेरेगी और) **ये लोग** (उस) **आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से और न उन की कोई मदद करेगा**(39) (और ये जो दुनिया ही में आग के अज़ाब की मांग कर रहे हैं सो यह ज़रूरी नहीं कि उन की मांग पर आग का अज़ाब आजाए) **बल्कि वो आग** (तो) **उन को एक दम से घेर लेगी सो उनके होश खो देगी फिर न ये उसे पीछे हटा सकेंगे और न उन को मुहलत दी जाएगी**(40) **और** (अगर वो दुनिया

में उस अज़ाब का नमूना दिखाने को कहें तो जान लें कि) **आप से पहले जो पैग़म्बर हुए हैं उन के साथ भी** (काफ़िरों की तरफ़ से) **मज़ाक़ किया गया फिर उन का मज़ाक़ उड़ाने वालों पर वो अज़ाब आगया जिस का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे(41)** (और उन से यह भी) **कह दीजिए** (कि दुनिया में जो तुम अज़ाब से बचे हो सो वो भी अल्लाह तआला की महरबानी है और अगर तुम इस को नहीं मानते तो फिर बताओ) **कि वो कौन है जो रात और दिन में अल्लाह** (के अज़ाब) **से तुम्हारा बचाव करता हो,** (मगर वो यह बात सुनकर भी नहीं मानते) **बल्कि वो लोग** (अब भी उसी तरह) **अपने** (सच्चे) **रब के ज़िक्र से** (यानी ईमान लाने से) **मुंह मोड़े हुए** (ही) **हैं(42) क्या उनके पास हमारे सिवा और ऐसे माबूद हैं कि** (उस बताए अज़ाब से) **उन का बचाव कर लेते हों, वो** (बेचारे उन का बचाव तो क्या करते वो तो) **ख़ुद अपना बचाव नहीं कर सकते** (जैसे कोई उन को तोड़ने लगे तो रोक थाम नहीं कर सकते बस न वो उन के माबूद उन का बचाव कर सकते हैं) **और न हमारे मुक़ाबिले में कोई उन का साथ दे सकता है(43)** (और ये लोग सारे सबूतों के बावजूद हक़ बात को नहीं मानते तो यह वजह नहीं कि दलील में कुछ कमी है) **बल्कि** (असल वजह इस की यह है कि) **मैंने उन को और उनके बाप दादों को** (दुनिया का) **ख़ूब सामान दिया यहां तक कि उन पर** (उसी हालत में) **एक ज़माना बीत गया** (जिससे ऐश आराम में खा खा कर बेपरवा हो गये)**, क्या उन को यह दिखाई नहीं देता कि हम** (उन की) **ज़मीन को** (इस्लाम की जीत से) **चारों तरफ़ से बराबर घटाते चले जाते हैं, सो क्या ये लोग** (यह उम्मीद रखते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मोमिनों पर) **हावी हो जाएंगे(44)** (अगर इस पर भी हटधर्मी से अज़ाब ही मांगे तो) **आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ वही के वास्ते से तुम को डराता हूं** (अज़ाब का आना मेरे बस से बाहर है)**, और** (यह बात काफ़ी है मगर) **ये बहरे जिस वक़्त** (हक़ की तरफ़ बुलाए जाने के लिए अज़ाब से) **डराए जाते हैं सुनते ही नहीं** (और सच्चाई जानने की कोशिश ही नहीं करते)(45) **और** (हिम्मत इतनी है कि) **अगर उन को आप के रब के अज़ाब का एक झोंका भी ज़रा लग जाए तो** (सारी बहादुरी ख़त्म हो जाए और) **यह कहने लगें कि हाय हमारी बदनसीबी** (कैसी हमारे सामने आई) **सचमुच हम ग़लती पर थे** (बस इस हिम्मत पर अज़ाब मांगते हैं)(46) **और** (असल में उन की शरारत तो ऐसी ही है कि दुनिया में ही फ़ैसला कर देते मगर किसी वजह से यह काम आख़िरत के लिए उठा रक्खा है वहां) **क़ियामत के दिन हम इन्साफ़ की तराज़ू लाएंगे** (और सब के कामों को तोलेंगे) **सो किसी पर असल में ज़ुल्म न होगा, और** (ज़ुल्म न होने का यह नतीजा होगा कि) **अगर** (किसी का) **कोई काम राई के दाने के बराबर**

भी होगा तो हम उस को (वहां) **सामने ले आएंगे** (और उसको भी तोलेंगे), **और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं** (हमारे इस तोलने और हिसाब के बाद फिर किसी हिसाब-किताब की ज़रूरत न रहेगी बल्कि उस पर सब फ़ैसला हो जाएगा)(47)।

नोटः- एक हदीस में है कि आमाल की तराज़ू पर एक फ़रिशता तैनात होगा और हर इन्सान को वहां लाया जाएगा अगर उस की नेकियों का पल्ड़ा भारी होगा तो फ़रिशता मुनादी करेगा कि फ़ला आदमी कामयाब हो गया अब कभी उस को महरूमी नहीं होगी और अगर नेकियों का पल्ड़ा हल्का रहा तो फ़रिशता मुनादी करेगा कि फ़लां आदमी नाकाम और महरूम हो गया अब कभी कामयाब न होगा। यह ऐलान सभी महशर वाले सुनेंगे। (क़ुरतबी)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَ ضِيَآءً وَّ ذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَ هُمْ مِّنَ
السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَ هٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٥٠﴾

आयत न० 48 से 50

और हम ने (आप से पहले) **मूसा और हारून** (अलैहिमुस्सलाम) **को एक फैसले की और रौशनी की और** (उन) **परहेज़गारों के लिए नसीहत की चीज़** (यानी तौरेत) **दी थी**(48) **जो** (परहेज़गार) **अपने रब से बिन देखे डरते हैं और** (अल्लाह ही से डरने की वजह से) **वो लोग क़ियामत से** (भी) **डरते हैं** (क्योंकि क़ियामत में इसका डर है कि अल्लाह तआला की नाराज़ी और सज़ा न होने लगे)(49) **और** (जैसे वो किताब हम ने उन को दी थी इसी तरह) **यह** (क़ुरआन भी) **बड़ी बरकतों वाली नसीहत** (की किताब) **है जिस को हम ने उतारा है, सो क्या** (यह साबित हो जाने के बाद कि यह अल्लाह की उतारी हुई है) **फिर भी तुम इस का** (अल्लाह की तरफ़ से होने का) **इनकार करते हो**(50)।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿٥١﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ
اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿٥٢﴾ قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٥٤﴾ قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿٥٥﴾ قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ الَّذِيْ

فَطَرَهُنَّ ۖ وَ اَنَا عَلٰی ذٰلِکُمۡ مِّنَ الشّٰھِدِیۡنَ ﴿۵۶﴾ وَ تَاللّٰہِ لَاَکِیۡدَنَّ اَصۡنَامَکُمۡ بَعۡدَ اَنۡ تُوَلُّوۡا مُدۡبِرِیۡنَ ﴿۵۷﴾
فَجَعَلَہُمۡ جُذٰذًا اِلَّا کَبِیۡرًا لَّہُمۡ لَعَلَّہُمۡ اِلَیۡہِ یَرۡجِعُوۡنَ ﴿۵۸﴾ قَالُوۡا مَنۡ فَعَلَ ہٰذَا بِاٰلِہَتِنَاۤ اِنَّہٗ لَمِنَ
الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۵۹﴾ قَالُوۡا سَمِعۡنَا فَتًی یَّذۡکُرُہُمۡ یُقَالُ لَہٗۤ اِبۡرٰہِیۡمُ ﴿۶۰﴾ قَالُوۡا فَاۡتُوۡا بِہٖ عَلٰۤی اَعۡیُنِ النَّاسِ لَعَلَّہُمۡ
یَشۡہَدُوۡنَ ﴿۶۱﴾ قَالُوۡۤا ءَاَنۡتَ فَعَلۡتَ ہٰذَا بِاٰلِہَتِنَا یٰۤاِبۡرٰہِیۡمُ ﴿۶۲﴾ قَالَ بَلۡ فَعَلَہٗ ٭ۖ کَبِیۡرُہُمۡ ہٰذَا فَسۡـَٔلُوۡہُمۡ اِنۡ
کَانُوۡا یَنۡطِقُوۡنَ ﴿۶۳﴾ فَرَجَعُوۡۤا اِلٰۤی اَنۡفُسِہِمۡ فَقَالُوۡۤا اِنَّکُمۡ اَنۡتُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۶۴﴾ ثُمَّ نُکِسُوۡا عَلٰی رُءُوۡسِہِمۡ ۚ لَقَدۡ
عَلِمۡتَ مَا ہٰۤؤُلَآءِ یَنۡطِقُوۡنَ ﴿۶۵﴾ قَالَ اَفَتَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ مَا لَا یَنۡفَعُکُمۡ شَیۡئًا وَّ لَا یَضُرُّکُمۡ ﴿۶۶﴾ اُفٍّ لَّکُمۡ وَ
لِمَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ ؕ اَفَلَا تَعۡقِلُوۡنَ ﴿۶۷﴾ قَالُوۡا حَرِّقُوۡہُ وَ انۡصُرُوۡۤا اٰلِہَتَکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ فٰعِلِیۡنَ ﴿۶۸﴾ قُلۡنَا
یٰنَارُ کُوۡنِیۡ بَرۡدًا وَّ سَلٰمًا عَلٰۤی اِبۡرٰہِیۡمَ ﴿۶۹﴾ وَ اَرَادُوۡا بِہٖ کَیۡدًا فَجَعَلۡنٰہُمُ الۡاَخۡسَرِیۡنَ ﴿۷۰﴾ وَ نَجَّیۡنٰہُ وَ لُوۡطًا اِلَی
الۡاَرۡضِ الَّتِیۡ بٰرَکۡنَا فِیۡہَا لِلۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۷۱﴾ وَ وَہَبۡنَا لَہٗۤ اِسۡحٰقَ ؕ وَ یَعۡقُوۡبَ نَافِلَۃً ؕ وَ کُلًّا جَعَلۡنَا صٰلِحِیۡنَ ﴿۷۲﴾ وَ
جَعَلۡنٰہُمۡ اَئِمَّۃً یَّہۡدُوۡنَ بِاَمۡرِنَا وَ اَوۡحَیۡنَاۤ اِلَیۡہِمۡ فِعۡلَ الۡخَیۡرٰتِ وَ اِقَامَ الصَّلٰوۃِ وَ اِیۡتَآءَ الزَّکٰوۃِ ۚ وَ کَانُوۡا
لَنَا عٰبِدِیۡنَ ﴿۷۳﴾

आयत न० 51 से 73

और हम ने इस (मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने) **से पहले इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को** (उन की शान के हिसाब से) **समझ बूझ दी थी और हम उन** (की ख़ूबियों) **को अच्छी तरह जानते थे** (51) (उन का वो वक़्त याद कीजिए) **जब कि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से** (उनको बुत परस्ती में देख कर) **कहा कि क्या** (बेकार) **मूरतें हैं जिन** (की इबादत) **पर तुम जमे बैठे हो** (यानी ये हरगिज़ इबादत के क़ाबिल नहीं)(52) **वो लोग** (जवाब में) **कहने लगे कि हम ने अपने बड़ों को इन की इबादत करते हुए देखा है** (और वो लोग समझदार थे इससे पता चलता है कि ये मूरतें इबादत के लाइक़ हैं)(53) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादे** (इन को इबादत के लाइक़ समझने में) **खुली ग़लती में** (पड़े हो यानी ख़ुद उन ही के पास इन के माबूद होने की कोई दलील और सनद नहीं है वो तो इसलिए गुमराही में हैं और तुम ऐसों के पीछे चलते हो जो बेदलील बेसबूत बातों के पीछे चलने वाले हैं इसलिए तुम गुमराही में) **हो**(54) **वो लोग कहने लगे कि क्या तुम हमारे सामने सच्ची बात कर रहे हो या** (यूंही) **दिल्लगी कर रहे हो**(55) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि नहीं** (दिल्लगी नहीं बल्कि सच्ची बात है कि ये इबादत

के क़ाबिल नहीं) **बल्कि तुम्हारा** (सच्चा) **रब** (जो इबादत के लाइक़ है) **वो है जो सारे आसमानों का और ज़मीन का रब है जिसने** (रब होने के सिवा) **उन सब** (आसमानों और ज़मीन और उनमें जो कुछ है यहां तक कि ये बुत भी सब) **को पैदा किया, और मैं इस** (दावे) **पर दलील भी रखता हूं** (तुम्हारी तरह दूसरों के पीछे नहीं चलता)(56) **और अल्लाह की क़सम मैं तुम्हारे इन बुतों की दुर्गति करूंगा जब तुम** (उनके पास से) **चले जाओगे** (ताकि उन का बेबस और मजबूर होना अच्छी तरह पता चल जाए उन लोगों ने यह समझ कर कि ये अकेले क्या कर सकते हैं कुछ ध्यान न किया होगा और चले गये)(57) **तो** (उन लोगों के चले जाने के बाद) **उन्होंने उन बुतों को** (तोड़ फोड़ कर) **टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवाए उन के एक बड़े बुत के** (कि उस को छोड़ दिया जिससे इशारा होता है कि कहीं उसी ने तो सब को नहीं तोड़ा) **कि शायद वो लोग इब्राहीम की तरफ़** (पूछने के लिए) **आएं**(58) (बस वो लोग जो बुत ख़ाने में आए और बुतों की दुर्गति देखी तो आपस में) **कहने लगे यह** (बेअदबी का काम) **हमारे बुतों के साथ किसने किया है इसमें कोई शक नहीं कि उसने बहुत ही बुरा किया**(59) **कुछ लोगों ने कहा कि हम ने एक नौजवान आदमी को जिसे इब्राहीम कहते हैं इन बुतों का** (बुराई से) **ज़िक्र करते सुना है**(60) (फिर) **वो लोग बोले कि** (जब यह बात है तो) **अच्छा उस को सब आदमियों के सामने लेकर आओ ताकि** (शायद वो इक़रार करले और) **वो लोग** (उस के इक़रार के) **गवाह हो जाएं**(61) (फिर जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को लाया गया तो) **उन लोगों ने कहा कि क्या हमारे बुतों के साथ तुमने यह हरकत की है ऐ इब्राहीम**(62) **उन्होंने** (जवाब में) **कहा कि** (तुम यह क्यों नहीं सोचते कि यह हरकत मैंने) **नहीं की बल्कि उन के उस बड़े** (गुरू) **ने की सो इन** (बुतों ही) **से पूछ लो**(ना) **अगर ये बोलते हों** (और अगर ये बोल भी नहीं सकते तो इन्हें कैसे ख़ुदा मान लिया)(63) **इस पर वो लोग अपने जी में सोचे फिर** (आपस में) **कहने लगे कि असलीयत में तुम ही लोग नाहक़ पर हो** (और इब्राहीम हक़ पर है कि जो ऐसा बेबस हो वो क्या माबूद होगा)(64) **फिर** (शर्म के मारे) **अपने सरों को झुका लिया** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम से बहुत दबी आवाज़ में बोले कि) **ऐ इब्राहीम तुम को तो पता ही है कि ये बुत** (कुछ) **बोलते नहीं** (हम उन से क्या पूछें इससे साबित हुआ कि जब बोलते नहीं तो और कुछ तो क्या कर सकते हैं)(65) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उस वक़्त) **कहा कि** (अफ़सोस जब ये ऐसे हैं) **तो क्या अल्लाह को छोड़ कर तुम ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जो तुम को न कुछ नफ़ा पहुंचा सकें और न कुछ नुक़सान पहुंचा सकें**(66) **अफ़सोस है तुम पर** (कि हक़ जानने के बावजूद ग़लत बात पर जमे हो) **और उन पर** (भी) **जिन को तुम अल्लाह**

के सिवा पूजते हो, क्या तुम (इतना भी) **नहीं समझते(67) वो लोग** (झुंझला कर) **कहने लगे कि इन** (इब्राहीम) **को आग में जला दो और अपने माबूदों का** (इन से) **बदला लो अगर तुम को कुछ करना है** (तो यह काम करो वर्ना बिल्कुल ही बात डूब जाएगी, बस सब ने एक राय होकर उस का सामान किया और उन को दहकती आग में डाल दिया)(68) **हम ने** (उस वक़्त आग को) **हुक्म दिया कि ऐ आग तू ठन्डी और सलामती वाली बन जा इब्राहीम के लिए** (यानी न ऐसी गर्म रह जिससे जलने की नौबत आए और न बहुत ठन्डी बर्फ़ हो कि उस की ठन्डक से तकलीफ़ पहुचें, बस ऐसा ही हो गया)(69) **और उन लोगों ने उन के साथ बुराई करना चाहा था** (कि हलाक हो जाएंगे) **सो हम ने उन्हीं लोगों को नाकाम कर दिया** (कि उन का मन चाहा पूरा न हुआ बल्कि और उल्टा इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सच्चाई का सबूत हो गया)(70) **और हमने इब्राहीम को और** (उनके भतीजे) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **को** (कि उन्होंने क़ौम के ख़िलाफ़ इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तस्दीक़ की थी और इस वजह से लोग उन के भी मुख़ालिफ़ और दुशमन थे) **ऐसे मुल्क** (यानी शाम) **की तरफ़ भेज कर** (काफ़िरों के सताने से) **बचा लिया जिसमें हमने दुनिया जहान के लोगों के वास्ते** (भलाई व) **बरकत रक्खी है** (दुनिया की भी कि फलों की अच्छी पैदावार है और दीनी भी कि बहुत से पैग़म्बर वहां हुए यानी उन्होंने मुल्क शाम की तरफ़ अल्लाह के हुक्म से हिजरत की)(71) **और** (हिजरत के बाद) **हमने उन को इसहाक़** (बेटा) **और याक़ूब पोता दिया, और हमने उन सब** (बाप बेटे पोते) **को** (ऊंचे दर्जे का) **नेक** (बनाया यानी उन सब को नबी) **बनाया(72) और हम ने उन** (सब) **को इमाम बनाया** (जो कि पैग़म्बरी के लिए ज़रूरी है) **कि हमारे हुक्म से** (लोगों को) **राह बताते थे** (जो कि पैग़म्बरों की ज़िम्मेदारी है) **और हमने उन के पास नेक कामों के करने का और** (ख़ास कर) **नमाज़ की पाबन्दी का और ज़कात अदा करने का हुक्म भेजा** (यानी यह हुक्म भेजा कि इन कामों को किया करो) **और वो हमारी** (ख़ूब) **इबादत किया करते** (थे यानी उन को जो हुक्म हुआ था उस को अच्छी तरह अदा करते) **थे(73)।**

नोटः- लिखा है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उस आग में सात दिन रहे और फ़रमाया करते थे कि मुझे उम्र में कभी ऐसी चैन नहीं मिली जितनी उन सात दिनों में हासिल थी। (मज़हरी)

وَ لُوْطًا اٰتَیْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا وَّ نَجَّیْنٰهُ مِنَ الْقَرْیَةِ الَّتِیْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ
فٰسِقِیْنَ ۙ۝ وَ اَدْخَلْنٰهُ فِیْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۠۝ وَ نُوْحًا اِذْ نَادٰی مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ

فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَ نَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ
سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٧٧﴾

आयत न० 74 से 77

और लूत (अलैहिस्सलाम) **को हम ने हिकमत और इल्म** (पैग़म्बरों की शान वाला) **दिया और हम ने उन को उस बस्ती से छुटकारा दिया जिस के रहने वाले गन्दे-गन्दे काम करते थे** (जैसे शराब पीना गाना बजाना और सबसे बुरा काम लड़कों से बुरा काम करना और दूसरे बहुत से बुरे काम), **बेशक वो लोग बहुत बुरे** (और) **बदकार थे(74) और हम ने लूत को अपनी रहमत में** (यानी जिन बन्दों पर रहमत होती है उनमें) **दाख़िल किया** (क्योंकि) **बेशक वो बड़े** (दर्जे के) **नेक लोगों में से** (थे यानी पैग़म्बर) **थे(75) और नूह** (अलैहिस्सलाम के क़िस्से का ज़िक्र कीजिए कि उन्हों) **ने जब उस** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने) **से पहले** (अल्लाह तआला से) **दुआ की** (कि इन काफ़िरों से मेरा बदला ले लीजिए) **तो हम ने उन की दुआ क़ुबूल की और उन को और उन के साथियों को बड़ी भारी मुसीबत से बचा लिया** (यानी काफ़िर जो उन्हें तरह-तरह की तकलीफ़ पहुंचाते और झुटलाते थे उससे छुटकारा मिला)(76) **और** (बचाया ऐसे कि) **हम ने ऐसे लोगों से उन का बदला लिया जिन्होंने हमारे** (उन) **हुक्मों को** (जो कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम लाए थे) **झूटा बताया था, बेशक वो लोग बहुत बुरे थे इसलिए हम ने उन सब को डुबा दिया(77)।**

وَ دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَ كُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ﴿٧٨﴾
فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَ كُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ۫ وَّ سَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَ الطَّيْرَ ؕ وَ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿٧٩﴾
وَ عَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً
تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ كُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿٨١﴾ وَ مِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ
يَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٨٢﴾

आयत न० 78 से 82

और दावूद और सुलैमान (अलैहिमुस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए जब कि दोनों किसी खेत में फ़ैसला करने लगे** (जिसमें ग़ल्ला था या अंगूर के पेड़ थे) **जब कि उस** (खेत) **में कुछ**

लोगों की बकरियां रात के वक़्त जा घुसीं (और उस को चर गईं), **और हम उस फ़ैसले को जो** (मुक़दमे वाले) **लोगों के बारे में हुआ था देख रहे थे(78) सो हम ने उस फ़ैसले** (की आसान सूरत) **की समझ सुलेमान को देदी, और** (वैसे) **हम ने दोनो** (ही) **को हिकमत और इल्म दिया** (था यानी दावूद अलैहिस्सलाम का फ़ैसला भी शरीअत के ख़िलाफ़ न) **था, और हम ने दावूद** (अलैहिस्सलाम) **के साथ ताबे कर दिया था पहाड़ों को कि** (उन की तस्बीह के साथ) **वो** (भी) **तस्बीह किया करते थे और** (इसी तरह) **परिन्दों को भी** (ताबे कर दिया था), **और** (कोई इस बात पर अचम्भा न करे क्योंकि इन कामों के) **करने वाले हम थे** (और हमारी क़ुदरत से कुछ बाहर नहीं फिर अचम्भे की क्या बात है)(79) **और हम ने उन को** (जंगी लिबास) **ज़रह** (बनाने) **की कारीगरी सिखाई तुम लोगों के** (नफ़े के) **वास्ते** (यानी) **ताकि वो** (ज़रह लड़ाई में) **तुम को एक दूसरे के हमले से बचाए,** (और यह बड़ी नेमत इसलिए दी ताकि तुम शुक्र करो) **तो तुम** (इस नेमत का) **शुक्र करोगे** (भी या नहीं)(80) **और हम ने सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **का तेज़ हवा को ताबे बना दिया था कि वो उन के हुक्म से उस ज़मीन की तरफ़ को चलती जिसमें हम ने बरकत रक्खी है** (यानी मुल्क शाम जहां वो रहते थे मतलब यह कि जब कहीं जाते और आते थे तो सुलेमान अलैहिस्सलाम एक तख़्त पर अपनी फ़ौज और साथियों के साथ कुर्सियों पर बैठ जाते फिर हवा को हुक्म देते वो सब को उठा कर थोड़ी देर में एक महीने का रास्ता तय करती), **और हम हर चीज़ को जानते हैं** (हमारे इल्म में सुलेमान अलैहिस्सलाम को ये चीज़ें देने में छुपी भलाई थी इसलिए दी गईं)(81) **और कुछ शैतान** (यानी जिन्नात) **ऐसे थे कि सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के लिए** (दरियाओं में) **डुबकी लगाते थे** (ताकि मोती निकाल कर उनके पास लाएं) **और वो और काम भी इसके सिवा** (सुलेमान अलैहिस्सलाम के लिए) **किया करते थे और** (वो जिन्नात बड़े सरकश और शरीर थे मगर) **उन के संभालने वाले हम** (थे इसलिए वो कोई शरारत नहीं कर सकते) **थे**(82)।

नोटः- दो आदमी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के पास आए उनमें एक बकरियों वाला था दूसरा खेती वाला था। खेती वाले ने बकरी वाले पर यह दावा किया कि उसकी बकरियां रात को छूट कर मेरे खेत में घुस गईं और खेत को बिल्कुल साफ़ कर दिया कुछ नहीं छोड़ा दूसरे ने इक़रार कर लिया होगा और फ़सल की क़ीमत बकरियों के बराबर होगी इसलिए हज़रत दावूद अलैहिस्सलाम ने यह फ़ैसला सुना दिया कि बकरियों वाला अपनी सारी बकरियां खेत वाले को देदे। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने यह फ़ैसला सुन कर कहा कि मैं अगर फ़ैसला करता तो इस तरह

करता कि कुछ वक़्त के लिए बकरियां खेत वाले को दी जाएं कि वो उन के दूध और ऊन से फ़ाइदा उठाता रहे और खेत की ज़मीन बकरियों वाले के हवाले की जाए कि उसमें खेती कर के फ़सल उगाए जब यह खेत उस हालत पर आजाए जिस पर बकरियों ने खाया था तब खेत खेत वाले को दिलवा दें और बकरियां बकरी वाले को।

हज़रत दावूद अलैहिस्सलाम ने इस फ़ैसले को पसन्द करके कहा कि बस अब ये ही फ़ैसला रहना चाहिए हालांकि उन का फ़ैसला भी सही था मगर इसमें दोनों की भलाई थी।

وَ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْنَ ﴿۸۳﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّ
اٰتَیْنٰهُ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَ ذِكْرٰى لِلْعٰبِدِیْنَ ﴿۸۴﴾ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِدْرِیْسَ وَ ذَا الْكِفْلِؕ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۸۵﴾ وَ اَدْخَلْنٰهُمْ فِیْ رَحْمَتِنَاؕ اِنَّهُمْ مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۸۶﴾

आयत न० 83 से 86

और अय्यूब (अलैहिस्सलाम) **के क़िस्से का ज़िक्र कीजिए जब कि उन्होंने** (सख़्त बीमारी की हालत में) **अपने रब को पुकारा कि मुझ को यह तकलीफ़ पहुंच रही है और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं** (तो अपनी रहमत से मेरी यह तकलीफ़ दूर कर दीजिए)(83) **तो हम ने उन की दुआ क़ुबूल की और उन को जो तकलीफ़ थी उस को दूर कर दिया और** (बिना उन के मांगे ही) **हम ने उन के घर वाले भी दे दिये** (यानी औलाद जो उन से बिछड़ गये थे या मर गये थे इस तरह से कि वो उन के पास आगये या इतने ही और पैदा हो गये) **और उन के साथ** (गिनती में) **उन के बराबर और भी** (दिये यानी जितनी औलाद पहले थी उस के बराबर और भी दे दिये चाहे उनके ही या उन की औलाद के) **अपनी ख़ास रहमत की वजह से और इबादत करने वालों के लिए एक यादगार रखने के लिए**(84) **और इस्माईल और इद्रीस और ज़ुल किफ़्ल** (अलैहिमुस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए, ये सब** (अल्लाह के हुक्मों पर जमे रहने वाले) **सब्र करने वाले लोगों में से थे**(85) **और हमने उन** (सब) **को अपनी** (ख़ास) **रहमत में दाख़िल कर लिया था, बेशक ये** (सब) **नेक लोगों में थे**(86)

नोटः- हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के सब्र को आज़माया गया और उन को माल व औलाद से महरूम होने के अलावा ऐसी बीमारी लगी कि लोग पास आते हुए घबराऐं। फिर जब दुआ क़ुबूल हुई तो

एक दम ऐसे अच्छे हो गये कि जब उन की बीवी उन के पास आईं तो पहचान न सकीं और माल व औलाद भी वापस मिल गईं।

وَ ذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِى الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ
اِنِّىْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸۷﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَ نَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ وَ كَذٰلِكَ نُـنْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۸﴾

आयत न० 87 से 88

और मच्छली वाले (पैग़म्बर यानी यूनुस अलैहिस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए जब वो** (अपनी क़ौम से ईमान न लाने पर) **नाराज़ होकर चल दिये** (और उन की क़ौम पर से अज़ाब टल जाने के बाद भी ख़ुद वापस न आए और इस सफ़र के लिए हमारे हुक्म का इन्तिज़ार नहीं किया) **और उन्होंने** (अपनी इल्मी राय से) **यह समझा कि हम** (इस चले जाने में) **उन की कोई पकड़ नहीं करेंगे बस** (जब पकड़ हुई तो) **उन्होंने अन्धेरों में पुकारा** (एक अन्धेरा मच्छली के पेट का दूसरा दरिया के पानी का और तीसरा रात का बस इन अन्धेरों में दुआ की) **कि आप के सिवा कोई माबूद नहीं आप** (सब ऐबों से) **पाक हैं मैं बेशक कुसूरवार हूं** (बस मेरी ग़लती मुआफ़ करके इस मुसीबत से छुटकारा दीजिए)(87) **सो हम ने उन की दुआ क़ुबूल की और उन को उस घुटन से आज़ादी दी, और हम इसी तरह** (और) **ईमान वालों को** (भी मुसीबत और ग़म से) **छुटकारा दिया करते हैं** (जब कि ग़म और मुसीबत में और रखना ज़रूरी न हो)(88)।

नोटः- यूनुस अलैहिस्सलाम के बहुत समझाने के बाद जब उन की क़ौम ईमान नहीं लाई तो आप तीन दिन बाद अज़ाब आने की ख़बर सुनाकर उस बस्ती से चले गये। क़ौम अज़ाब की निशानी देख कर डर गई और सच्चे दिल से सब ने तौबा की। यूनुस अलैहिस्सलाम को क़ौम के तौबा करने और क़ुबूल हो जाने का पता न चला और अज़ाब न आने पर झूटा साबित हो जाने के डर से वो वापस नहीं आए इस ग़लती पर कि हुक्म न आने से पहले जगह क्यों छोड़ी बस पकड़ हुई चूंकि इस चले जाने को उन्होंने अपनी इल्मी राय से जाइज़ समझा इसलिए वही का इन्तिज़ार न किया लेकिन चूंकि वही की उम्मीद तक वही का इन्तिज़ार पैग़म्बरों को करना चाहिए और यह बात उनसे छूट गई इसलिए उन को यह परीशानी सामने आई कि रास्ते में उन को कोई दरिया मिला और वहां किशती में सवार हुए, किशती चलते-चलते रूक गई यूनुस अलैहिस्सलाम समझ

गये कि मेरा बिना इजाज़त चले आना नापसन्द हुआ इस की वजह से यह किशती रूकी। किशती वालों से कहा कि मुझ को दरिया में डाल दो वो तैयार न हुए बस पर्ची डाली गई तब भी उन्हीं का नाम निकला आख़िर उन को दरिया में डाल दिया और अल्लाह के हुक्म से उन को एक मच्छली ने निगल लिया फिर उन्होंने दुआ की और उस मुसीबत से छुटकारा मिला कि मच्छली ने उन को सही सलामत उगल दिया फिर तन्दरूस्त होने के बाद क़ौम की तरफ़ वापस आए और नबी की हैसियत से काम संभाल लिया।

وَ زَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِىْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ وَ وَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَ
اَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَ يَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿٩٠﴾ وَ
الَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَ جَعَلْنٰهَا وَ ابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٩١﴾

आयत न० 89 से 91

और ज़िकरिया (अलैहिस्सलाम के क़िस्से) **का ज़िक्र कीजिए जब कि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि या रब मेरे मुझ को लावारिस न रखना** (यानी मुझ को बेटा दीजिए जो मेरा वारिस हो) **और** (यूं तो) **सब वारिसों से अच्छे** (यानी असली वारिस) **आप ही हैं** (क्योंकि एक दिन बेटा भी न रहेगा लेकिन इस वारिस से कुछ दीनी और दुनिया के फ़ाइदे हो जाएंगे इसलिए इस की चाहत है)(89) **सो हम ने उन की दुआ कुबूल कर ली और हमने उन को याहया** (बेटा) **दिया और उन के लिए उनकी बीवी को भी** (जो बांझ थी) **औलाद के क़ाबिल कर दिया, ये सब** (पैग़म्बर जिनका इस सूरत में ज़िक्र हुआ है) **नेक कामों में दौड़ते थे और उम्मीद व डर के साथ हमारी इबादत किया करते थे, और** (उन के दिल) **हमारे सामने झुके रहते थे**(90) **और उन बीबी** (मरयम के क़िस्से) **का भी ज़िक्र कीजिए जिन्होंने अपनी आबरू को** (मर्दों से) **बचाया** (निकाह से भी और नाजाइज़ से भी) **फिर हम ने उनमें** (जिबरील अलैहिस्सलाम के वास्ते से) **अपनी रूह फूंक दी** (जिससे उन को बिना शौहर के बच्चा रह गया) **और हम ने उन को और उनके बेटे** (ईसा अलैहिस्सलाम) **को दुनिया जहान वालों के लिए** (अपनी कुदरत की) **निशानी बना दिया** (कि उन को देख सुन कर समझलें कि अल्लाह तआला हर चीज़ की कुदरत रखता है वो बिना बाप के भी औलाद पैदा कर सकता है और बिना मां और बाप के भी जैसा कि आदम अलैहिस्सलाम)(91)

إِنَّ هٰذِهٖٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٩٢﴾ وَتَقَطَّعُوْٓا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ۖ كُلٌّ إِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿٩٣﴾
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَإِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿٩٤﴾ وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَآ
أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾ حَتّٰٓى إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوْجُ وَمَأْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ
الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۖ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾ إِنَّكُمْ وَ
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۖ أَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۖ وَكُلٌّ
فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰىٓ ۙ أُولٰٓئِكَ عَنْهَا
مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ۚ وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ
وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ۖ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾ يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۖ
كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ۖ وَعْدًا عَلَيْنَا ۖ إِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾

आयत न० 92 से 105

ऐ लोगों (ऊपर जो पैग़म्बरों का तरीक़ा व तौहीद के अक़ीदे का पता चला है) **यह तुम्हारा तरीक़ा है** (जिस पर तुम को रहना ज़रूरी है और) **वो एक ही तरीक़ा** (है जिसमें सब नबी और शरीअ़त एक) **है, और** (मतलब इस तरीक़े का यह है कि) **मैं तुम्हारा रब हूं तो तुम मेरी इबादत किया करो**(92) **और** (जब यह साबित हो चुका कि सारे पैग़म्बरों और सभी आसमनी किताबों और शरीअतों ने इसी तरीक़े की दावत दी है तो लोगों को चाहिए था कि वो भी इसी तरीक़े पर रहते मगर ऐसा न किया बल्कि) **उन लोगों ने अपने दीन को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया,** (मगर इस की सज़ा देखेंगे क्योंकि) **सब हमारे पास आने वाले हैं**(93) **फिर** (आने के बाद हर एक को उस के कामों का बदला मिलेगा तो) **जो आदमी नेक काम करता होगा और वो ईमान वाला भी होगा तो उस की मेहनत बेकार जाने वाली नहीं और हम उस** (के कामों) **को लिख लेते हैं** (जिसमें भूल नहीं हो सकती और उसी लिखे हुए के हिसाब से उसे सवाब मिलेगा)(94) **और** (अल्लाह की तरफ़ लौटने के लिए एक दिन तय है यानी क़ियामत का दिन उससे पहले कोई नहीं लौटता ये ही वजह है कि) **हम जिन बस्तियों** (के रहने वालों) **को** (अज़ाब या मौत से) **हलाक कर चुके हैं वो** (दुनिया में) **फिर लौट कर नहीं आ सकते** (यानी क़ियामत तक नहीं लौटेंगे)(95) **यहां तक कि जब** (वो

आने वाला वक़्त आजाएगा जिस का सामान ऐसे शुरू होगा कि) **याजूज माजूज** (जिन का रास्ता दीवार से रूका हुआ है वो) **खोल दिये जाएंगे और वो** (बहुत ज़्यादा होने की वजह से) **हर ऊंचाई** (टीले और पहाड़) **पर उतरे हुए** (दिखाई देते) **होंगे(96) और** (अल्लाह की तरफ़ लौटने का सच्चा) **वादा नज़दीक आ पहुंचा होगा तो बस फिर अचानक यह हालत हो जाएगी कि काफ़िरों की आंखें फटी की फटी रह जाएंगी,** (और वो यह कहेंगे कि) **हाय हमारी बद नसीबी हम इससे भूल में थे** (फिर कुछ सोच कर कहेंगे कि इस को भूल तो जब कहा जा सकता कि किसी ने हम को बताया न होता) **बल्कि** (असलीयत यह है कि) **हम ही क़ुसूरवार थे(97)** (ऐ मुशरिको) **बेशक तुम और जिस को तुम अल्लाह के सिवा पूज रहे हो सब जहन्नम में जाओगे,** (और) **तुम सब इसमें दाख़िल होंगे** (उसमें वो पैग़म्बर और फ़रिशते नहीं जाएंगे जिन को दुनिया में कुछ मुशरिकों ने ख़ुदा और माबूद बना लिया था क्योंकि वो इसके हक़दार नहीं और न उनका कुछ क़ुसूर है)(98) **अगर ये** (तुम्हारे माबूद) **सचमुच माबूद होते तो उस** (जहन्नम) **में क्यों जाते, और** (जाना भी ऐसा कि कुछ दिनों का नहीं बल्कि) **सब** (इबादत करने वाले और माबूद) **इसमें सदा रहेंगे(99)** (और) **उसमें वो चिल्लाएंगे और वहां** (अपने शोर में) **किसी की कोई बात नहीं सुन सकेंगे(100)** (मगर) **जिन लोगों के लिए हमारी तरफ़ से भलाई लिखी जा चुकी है** (यानी नेक मोमिन) **वो लोग उस** (दोज़ख़) **से दूर रक्खे जाएंगे(101)** (इतना दूर) **कि उस की आहट भी न सुनेंगे** (क्योंकि ये लोग जन्नत में होंगे और जन्नत दोज़ख़ में बहुत दूरी है), **और वो लोग अपनी मन चाही चीज़ों में सदा रहेंगे(102)** (और) **उन को** (क़ियामत की) **बड़ी घबराहट दुखी न करेगी और** (क़ब्र से निकलते ही) **फ़रिशते उन को लेने आएंगे,** (और कहेंगे) **यह है तुम्हारा वो दिन जिस का तुम से वादा किया जाता था(103)** (और वो दिन याद रक्खो) **जिस दिन हम** (पहले सूर फूंकने के बाद) **आसमानों को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह लिखे हुए काग़ज़ को लपेट दिया जाता है,** (और) **हमने जिस तरह पहली बार पैदा करने के वक़्त** (हर चीज़ को) **शुरू किया था इसी तरह** (आसानी से) **उस को दोबारा पैदा कर देंगे, यह हमारे ज़िम्मे वादा है, हम ज़रूर** (इस को) **पूरा करेंगे(104) और** (ऊपर जो नेक बन्दों से सवाब व नेमत का वादा हुआ है वो बहुत पुराना है सो) **हम** (सब आसमानी) **किताबों में नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि उस ज़मीन** (यानी जन्नत) **के मालिक मेरे नेक बन्दे होंगे(105)**

नोटः- याजूज माजूज एक क़ौम है जो दुनिया के किसी ऐसे हिस्से में आबाद है जहां तक लोगों की

पहुंच नहीं क़ियामत के नज़दीक ज़माने में वो खोल दिये जाएंगे और दुनिया में बड़ा फ़साद मचाएंगे इस का क़िस्सा सूरत कहफ़ में आया है वहां देख लिया जाए।

إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَٰغًا لِّقَوْمٍ عَٰبِدِينَ ﴿١٠٦﴾ وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿١٠٧﴾ قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ
إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَقُلْ ءَاذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا
تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾ إِنَّهُۥ يَعْلَمُ ٱلْجَهْرَ مِنَ ٱلْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾ وَإِنْ أَدْرِى لَعَلَّهُۥ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ
حِينٍ ﴿١١١﴾ قَٰلَ رَبِّ ٱحْكُم بِٱلْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا ٱلرَّحْمَٰنُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

आयत न० 106 से 112

बेशक इस (कुरआन या उस के हिस्से यानी इस सूरत) **में काफ़ी नसीहत है उन लोगों के लिए जो इबादत करने वाले हैं** (और जो सरकशी करने वाले हैं हिदायत तो उन के लिए भी है मगर उनमें चाहत नहीं इसलिए उन को नफ़ा नहीं होता)(106) **और** (ऐ पैग़म्बर) **हम ने आप को सारे जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा** (है वो रहमत और महरबानी ये ही है कि लोग पैग़म्बर की बातों को मानें और हिदायत का फ़ाइदा उठाएं और जो न माने उस की ग़लती) **है**(107) **आप उन लोगों से** (दोबारा) **कह दीजिए कि मेरे पास तो ये ही वही आई है कि तुम्हारा माबूद तो एक ही माबूद है तो** (इस की सच्चाई साबित हो जाने के बाद) **अब भी तुम मानते हो** (या नहीं यानी अब तो मान लो)(108) **फिर भी अगर ये लोग** (इसके मानने से) **मुंह मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मैं तुम को साफ़-साफ़ ख़बर सुना चुका हूं** (दीन की सच्चाई की भी और इसके इनकार पर जो सज़ा मिलेगी उस की भी), **और** (अगर इस सज़ा के बारे में तुम को कुछ शक है तो समझ लो कि सज़ा का मिलना तो यक़ीनी है मगर) **मैं यह नहीं जानता कि जिस** (सज़ा) **का तुम से वादा हुआ है वो नज़दीक** (ही होने वाली) **है या दूर** (ज़माने में होने वाली है लेकिन उस सज़ा का होना ज़रूरी) **है**(109) **अल्लाह तआला को** (तुम्हारी) **पुकार कर कही हुई बात का भी पता है और जो तुम दिल में रखते हो उस का भी पता है**(110) **और** (अज़ाब में देरी से धोके में न रहना यह देरी भी किसी ख़ास वजह से हो रही है) **मैं नहीं जानता** (कि वो वजह क्या है हां इतना कह सकता हूं कि) **शायद** (यह अज़ाब में देरी) **तुम्हारे लिए इम्तिहान हो** (कि शायद सबक़ लेकर ईमान ले आएं) **और एक** (थोड़े) **वक़्त** (यानी मौत तक) **फ़ाइदा पहुंचाना हो** (कि मज़ों में लगे रहें और

अज़ाब बढ़ता चला जाए)(111) **पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने** (जब देखा कि इन बातों से हिदायत नहीं हुई तो अल्लाह तआला की इजाज़त से) **कहा कि या रब मेरे** (हमारे और हमारी क़ौम के बीच) **फ़ैसला कर दीजिए** (जो कि सदा) **इन्साफ़ का** (हुआ करता है मतलब यह कि मुसलमानों से जो मदद के वादे हैं वो पूरे कर दीजिए) **और** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों से यह भी कहा कि) **हमारा रब बड़ा महरबान है जिससे उन बातों के मुक़ाबिले में मदद चाही जाए जो तुम बनाया करते हो** (कि मुसलमान जल्दी मिलयामेट हो जाएंगे यानी हम उसी महरबान रब से तुम्हारे मुक़ाबिले में मदद चाहते हैं)(112)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अल्लाह की भेजी हुई रहमत हूं ताकि (अल्लाह के हुक्म मानने वाली) एक क़ौम को सरबलन्द कर दूं और दूसरी क़ौम (जो अल्लाह का हुक्म मानने वाली नहीं उन को) पस्त कर दूं।
इससे मालूम हुआ कि जिहाद करना भी ऐन रहमत है। (इब्ने कसीर)

22-सूरत-हज्ज

इस मदनी सूरत में '78' आयतें और '10' रूकू हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَیْءٌ عَظِيْمٌ ۝١ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّاۤ
اَرْضَعَتْ وَ تَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَ تَرَى النَّاسَ سُكٰرٰی وَ مَا هُمْ بِسُكٰرٰی وَ لٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ
شَدِيْدٌ ۝٢

आयत नं० 01 से 02

ऐ लोगों अपने रब (के गुस्से) **से डरो** (और ईमान लाओ और कहना मानो क्योंकि) **बेशक क़ियामत का भौंचाल बड़ी भारी चीज़ होगी** (जिस का आना ज़रूरी है उस दिन से बचने की अब फ़िक्र करो जिस का तरीक़ा परहेज़गारी है)(1) **जिस दिन तुम लोग उस** (भौंचाल) **को देखोगे उस दिन** (यह हाल होगा कि) **सभी दूध पिलाने वाली** (डर की वजह से) **अपने दूध पीते** (बच्चे) **को भूल जाएंगी और सभी हमल वाली अपना बच्चा** (दिन पूरे होने से पहले) **गिरा देंगी और तुम्हें लोग नशे की सी हालत में दिखाई देंगे हालांकि वो नशे में नहीं होंगे** (और वहां नशे की चीज़ें होंगी ही नहीं) **बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही सख़्त चीज़ है** (जिस के डर की वजह से उन की हालत नशे वाले की सी हो जाएगी)(2)।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ يَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ۝٣ كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ
فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَ يَهْدِيْهِ اِلٰی عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝٤ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِیْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ
تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَ نُقِرُّ فِی
الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰی وَ مِنْكُمْ
مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤی اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَ تَرَى الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا

الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝٧ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ
يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٨ ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٩ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٠

आयत नं० 03 से 10

और कुछ आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला के बारे में (यानी उस की हस्ती या ख़ूबियों या कामों के बारे में) **बे जाने बूझे झगड़ा करते हैं और हर सरकश शैतान के पीछे चल पड़ते** (हैं यानी उसके बहकाए में आ जाते) **हैं(3) जिस के बारे में** (अल्लाह के यहां से) **यह बात लिखी जा चुकी है** (और तय हो चुकी है) **कि जो आदमी उससे वास्ता रक्खेगा** (यानी उसके पीछे चलेगा) **तो उस का काम ही यह है कि वो उस को** (सही रास्ते से) **गुमराह कर देगा और उस को दोज़ख़ के अज़ाब का रास्ता दिखा देगा(4) ऐ लोगो अगर तुम** (क़ियामत के दिन) **दोबारा ज़िन्दा होने के बारे में शक में हो तो** (ज़रा सोचो कि) **हमने** (पहली बार) **तुम को मिट्टी से बनाया** (क्योंकि जिस ख़ुराक से मनी बनती है वो मिट्टी से पैदा होती है) **फिर मनी से फिर जमे हुए ख़ून से फिर बोटी से कि** (कुछ) **पूरी होती है** (कि उसमें पूरे हिस्से बन जाते हैं) **और** (कुछ) **अधूरी भी** (होती है कि कुछ हिस्से अधूरे रह जाते हैं और ऐसा इसलिए बनाया) **ताकि हम तुम्हारे सामने** (अपनी क़ुदरत) **दिखा दें** (और इसी से साबित है कि दोबारा पैदा करने की भी क़ुदरत है)**, और हम मां के पेट में जिस** (बच्चे) **को चाहते हैं एक ज़माने तक** (यानी पैदा होने के वक़्त तक) **ठहराए रखते हैं** (और जिस को ठहराना नहीं चाहते वहां बच्चा गिर जाता है) **फिर** (उस तय ज़माने के बाद) **हम तुम को बच्चा बना कर** (मां के पेट से) **बाहर लाते हैं फिर** (उस के बाद तीन क़िस्में हो जाती हैं एक क़िस्म यह कि तुम में से कुछ को जवानी तक मुहलत देते हैं) **ताकि तुम अपनी भरी जवानी** (की उम्र) **तक पहुंच जाओ, और कुछ तुम में वो भी हैं जो** (जवानी से पहले ही) **मर जाते हैं** (यह दूसरी क़िस्म हुई) **और कुछ तुम में वो हैं जो निकम्मी उम्र** (यानी ज़्यादा बुढ़ापे) **तक पहुंचा दिये जाते हैं जिस का असर यह है कि एक चीज़ जान कर फिर अन्जान हो जाते** (हैं जैसा कि अक्सर बूढ़ों को देखा गया है कि अभी एक बात बताई और अभी फिर पूछ रहे हैं यह तीसरी क़िस्म हुई ये सब हालतें भी अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत की निशानियां) **हैं, और** (दूसरी दलील

यह है कि) **तुम ज़मीन को देखते हो कि सूखी** (पड़ी) **है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो उभरती और फूलती है और हर क़िस्म** (यानी तरह-तरह) **की अच्छी-अच्छी चीज़ें उगाती है(5)** (और) **यह** (सब कुछ) **इसलिए हुआ कि अल्लाह तआ़ला ही का वजूद** (पूरा और) **हक़ है और वो ही बेजानों में जान डालता है और वो हर चीज़ की क़ुदरत रखता है(6) और** (इसलिए हुआ कि) **क़ियामत आने वाली है उसमें ज़रा शक नहीं और अल्लाह तआ़ला** (क़ियामत में) **क़ब्र वालों** (यानी मुर्दों) **को दोबारा पैदा कर देगा(7) और कुछ आदमी ऐसे होते हैं कि अल्लाह तआ़ला के बारे में बिना जानकारी** (यानी ज़रूरी इल्म) **और बिना दलील और बिना रौशन किताब के झगड़ा करते हैं(8)** (और बड़े आलिमों की बात मानने से) **घमन्ड करते** (हुए झगड़ते) **हैं ताकि** (दूसरे लोगों को भी) **अल्लाह की राह से** (यानी सच्चे दीन से) **गुमराह कर दें, ऐसे आदमी के लिए दुनिया में रूसवाई है और क़ियामत के दिन हम उस को जलती आग का अज़ाब चखा देंगे(9)** (और उससे कहा जाएगा कि) **यह तेरे हाथों किये हुए कामों का बदला है और यह बात तय है कि अल्लाह तआ़ला** (अपने) **बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं** (बस तुझ को बिना जुर्म सज़ा नहीं दी गई)(10)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसी उम्र से पनाह मांगी है जिस में सोच समझ और अक़्ल जाती रहे।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اِطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَ اِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ اِنْقَلَبَ عَلٰى
وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۞ يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَ مَا لَا
يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۞ يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَ لَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ۞ اِنَّ
اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۞ مَنْ
كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَاۗءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ
يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ۞ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ۞

आयत नं० 11 से 16

और कुछ आदमी अल्लाह की इबादत (इस तरह) **करते हैं जैसे** (कोई किसी चीज़ के) **किनारे पर** (खड़ा हो और मौक़ा पाकर चल देने पर तैयार) **हो, फिर अगर उस को कोई** (दुनिया

का) **नफ़ा पहुंच गया तो उस की वजह से** (इस्लाम पर) **जम गया, और अगर उस को** (किसी परीशानी से) **आज़माया गया तो मुंह उठा कर** (कुफ़्र की तरफ़) **चल दिया** (जिससे) **दुनिया व आख़रत दोनो खो बैठा, ये ही है खुला नुक़सान**(11) (दुनिया का नुक़सान तो आज़माने को मुसीबत का आना और आख़रत का नुक़सान यह हुआ कि इस्लाम और) **अल्लाह को छोड़ कर उसी चीज़ की इबादत करने लगा जो** (इतनी मजबूर और बेबस है कि) **न उस को नुक़सान पहुंचा सकती है न नफ़ा पहुंचा सकती है** (यानी उस की इबादत न करो तो कोई नुक़सान न पहुंचा सके और करो तो नफ़ा न पहुंचा सके), **यह परले दर्जे की गुमराही है**(12) (सिर्फ़ ये ही नहीं कि उस की इबादत से कोई नफ़ा न पहुंचे बल्कि उल्टा नुक़सान है क्योंकि) **वो ऐसे की इबादत कर रहा है कि उस का नुक़सान उसके नफ़े से ज़्यादा क़रीब है, ऐसा मददगार भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा** (जो किसी तरह किसी हाल किसी के काम न आए)(13) **बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी,** (और अल्लाह जिस आदमी या क़ौम को कोई सवाब या अज़ाब देना चाहे उस को कोई रोकने वाला नहीं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (बड़ी क़ुदरत वाला है) **जो इरादा कर लेता है उस को पूरा करता है**(14) **जो आदमी** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मुख़ालफ़त और दुशमनी करके) **यह सोचता हो कि** (मैं हावी हो जाऊंगा और आप के दीन की तरक़्क़ी को रोक दूंगा और यह कि) **अल्लाह तआ़ला रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की** (और आप के दीन की) **दुनिया व आख़रत में मदद न करेगा तो उस को चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक तान ले** (और आसमान से बान्ध दे) **फिर** (उस रस्सी से अगर आसमान पर पहुंच सके तो पहुंच जाए ताकि) **उस वही को रोक दे** (और ऐसा कोई कर नहीं सकता) **तो फिर सोचना चाहिए कि उस की** (यह) **कोशिश** (जिससे बिल्कुल मजबूर है) **उस के ग़ुस्से की चीज़ को** (यानी वही को) **रोक सकती है**(15) **और हम ने इस** (क़ुरआन) **को इसी तरह उतारा है** (कि इसमें हमारे इरादे और क़ुदरत के सिवा किसी का दख़ल नहीं) **जिसमें** (दीन की सच्चाई की) **खुली-खुली निशानियां हैं और अल्लाह तआ़ला ही जिस को चाहता है हिदायत करता है**(16)

नोटः- इस्लाम के दुशमन यह चाहते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने पैग़म्बर और उसके दीन की मदद न करे और यह तो जभी हो सकता है जबकि ख़ुदा न करे पैग़म्बर से पैग़म्बरी छिन जाए क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने जिस बन्दे को पैग़म्बर बनाता है उसकी मदद तो दुनिया व आख़रत में

करने का अल्लाह की तरफ़ से वादा है तो जो आप के दीन की तरक़्क़ी को रोकना चाहता है उस को चाहिए कि वही को रोक दे यानी पैग़म्बरी छिनवा दे और यह हो नहीं सकता तो अल्लाह की मदद और दीन की तरक़्क़ी भी रोकी नहीं जा सकती।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَىٰ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَ
الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ حَقَّ عَلَيْهِ
الْعَذَابُ ۗ وَمَن يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۩ ﴿١٨﴾ هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ
فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ ﴿١٩﴾ يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي
بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ ﴿٢٠﴾ وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ ﴿٢١﴾ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَ
ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٢٣﴾ وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَ
هُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿٢٤﴾

आयत नं० 17 से 24

इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमान और यहूदी और साबी और ईसाई और मजूसी और मुशरिक लोग अल्लाह तआ़ला इन सब के बीच में क़ियामत के दिन (खुला) **फ़ैसला** (कर देगा कि मुसलमानों को जन्नत में और सब क़िस्म के काफ़िरों को जहन्नम में दाख़िल) **कर देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को जानता है(17) क्या तुम यह बात नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला के सामने** (अपनी-अपनी हालत के हिसाब से) **सब सर झुकाते हैं जो कि आसमानों और जो ज़मीन में हैं और सूरज और चान्द और तारे और पहाड़ और पेड़ और जानवर और** (सभी के ताबेदार होने के बावजूद इन्सान जो ख़ास दर्जे की अक़्ल भी रखता है वो सब के सब ताबेदार नहीं बल्कि) **बहुत से** (तो) **आदमी भी** (ताबेदारी करते हैं), **और बहुत से ऐसे हैं जो अज़ाब के हक़दार हैं, और** (यह सच है कि) **जिस को अल्लाह ज़लील करे** (कि उस को हिदायत की तौफ़ीक़ न हो) **उस का कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं** (और) **अल्लाह तआ़ला** (की मर्ज़ी कि

अपनी हिकमत से) **जो चाहे करे**(18) (जिन का ज़िक्र ऊपर आयत में हुआ है) **ये दो फ़रीक़ हैं** (एक मोमिन दूसरा काफ़िर फिर काफ़िरों की कई क़िस्में हैं यहूदी, ईसाई, साइब, मजूसी और बुत परस्त) **जिन्होंने अपने रब के बारे में आपस में झगड़ा किया** (इस झगड़े का फैसला क़ियामत में इस तरह होगा कि) **जो लोग काफ़िर थे उन के** (पहनने के) **लिए आग के कपड़े तैयार किये जाएंगे** (यानी आग उनके पूरे बदन को इस तरह घेरे होगी जैसी कपड़े), **और उन के सर के ऊपर से तेज़ गर्म पानी छोड़ा जाएगा**(19) **जिससे उनके पेट की चीज़ें** (यानी आन्तें) **और खालें सब** (गल जाएंगी यानी यह खौलता हुआ तेज़ पानी कुछ पेट के अन्दर चला जाएगा जिससे आन्तें) **गल जाएंगी**(20) **और उन के** (मारने के) **लिए हथौड़े होंगे** (और उस मुसीबत से कभी छुटकारा न होगा)(21) **वो लोग जब** (दोज़ख़ में) **तंग आकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिये जाएंगे, और कहा जाएगा कि जलने का अज़ाब** (सदा के लिए) **चखते रहो** (कभी निकलना नसीब न होगा)(22) **बेशक अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी उन को वहां सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां कपड़े उनके रेशम के होंगे**(23) **और** (यह सब इनआम व इ़ज़्ज़त इस वजह से कि दुनिया में) **उन को पाक कलमे** (के यक़ीन करने) **की हिदायत हो गई थी और उन को उस** (अल्लाह) **के रास्ते की हिदायत हो गई थी जो तारीफ़ का हक़दार** (है वो रास्ता इस्लाम) **है**(24)।

नोटः- सोने का ज़ेवर और रेशम का कपड़ा पहनने की दुनिया में तो सिर्फ़ औरतों को इजाज़त है मर्दो को नहीं मगर जन्नत में मर्दो को भी इजाज़त होगी।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَ
الْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٢٥﴾ وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا
تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ ﴿٢٦﴾ وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ
رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾ لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿٢٨﴾ ثُمَّ لْيَقْضُوا
تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٩﴾

आयत नं० 25 से 29

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और (मुसलमानों को) **अल्लाह के रास्ते से और ख़ाना काबा से रोकते हैं** (ताकि मुसलमान उमरा अदा न कर सकें जब कि) **इसको हम ने सभी लोगों के वास्ते बनाया है कि इसमें सब बराबर हैं इस** (हरम के पास) **में रहने वाले भी और बाहर से आने वाले** (मुसाफ़िर) **भी, और जो कोई इसमें** (यानी हरम शरीफ़ में) **ज़ुल्म के साथ कोई बेदीनी का काम करने का इरादा करेगा तो हम उस आदमी को दर्दनाक अज़ाब** (का मज़ा) **चखाएंगे(25) और** (उस बात को याद दिलाइये) **जब कि हम ने इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को ख़ाना काबा की जगह बता दी** (क्योंकि उस वक़्त ख़ाना काबा बना हुआ न था और हुक्म दिया) **कि** (इस मकान को इबादत के लिए तैयार करो और इस इबादत में) **मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करना** (यह असल में उनके बाद के लोगों को सुनाना था और यह भी समझाना था कि काबे की तरफ़ नमाज़ पढ़ने और उस का तवाफ़ करने से किसी जाहिल को यह शक न हो जाए कि ये ही माबूद है) **और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों के और** (नमाज़ में) **खड़े होने वालों और रुकू और सजदा करने वालों के वास्ते** (गन्दगी और कुफ़्र व शिर्क से) **पाक रखना** (यह भी असल में दूसरों ही को सुनाना था)(26) **और** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम से यह भी कहा गया कि) **लोगों में हज** (के फ़र्ज़ होने) **का ऐलान कर दो** (इस ऐलान से) **लोग तुम्हारे पास** (यानी तुम्हारे इस पाक घर के पास) **चले आएंगे पैदल भी और** (लम्बे सफ़र की वजह से) **दुबली** (हो जाने वाली) **ऊंटनियों पर भी जो कि दूर के रास्तों से पहुंची होंगी(27)** (और वो लोग इसलिए आएंगे) **ताकि अपने** (अपने दीनी और दुनिया के) **फ़ाइदों के लिए हाज़िर हो जाएं और** (इसलिए आएंगे) **ताकि तय दिनों में** (जो क़ुर्बानी के दिन दसवीं से बारहवीं ज़िलहिज्जा तक हैं) **उन ख़ास जानवरों पर** (यानी क़ुर्बानी के जानवरों पर ज़बह के वक़्त) **अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह तआ़ला ने उन को दिये हैं,** (ऐ मुसलमानों) **उन** (क़ुर्बानी के) **जानवरों में से तुम भी खाया करो** (कि यह जाइज़ है और मुस्तहब यह है कि) **ग़रीब परीशानहाल को भी खिलाया करो(28) फिर** (क़ुर्बानी के बाद) **लोगों को चाहिए कि अपना मैल दूर करें** (यानी अहराम खोल दें बाल कटालें) **और अपने वाजिब हुक्मों को पूरा करें और** (उन्हीं ख़ास दिनों में) **इस अमन वाले घर** (यानी ख़ाना काबा) **का तवाफ़ करें** (यह तवाफ़ तवाफ़े ज़ियारत कहलाता है)(29)

नोटः- वो काम जिनका करना सवाब है और न करना गुनाह नहीं शरीअ़त में 'मुस्तहब' कहलाते हैं।

ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ وَاُحِلَّتْ لَكُمُ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۝٣٠ حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ
فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝٣١ ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ
اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝٣٢ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝٣٣

आयत नं० 30 से 33

यह बात तो हो चुकी (जो हज के ख़ास हुक्म थे) **और** (अब दूसरे आम हुक्म जिनमें हज और हज के सिवा दूसरे मसअले भी हैं सुनो कि) **जो आदमी अल्लाह तआला के इज़्ज़त वाले हुक्मों का अदब करेगा तो यह उसके हक़ में उसके रब के नज़दीक बहुत अच्छा** (है हुक्मों का अदब करने में यह भी दाख़िल है कि उन को जाने और यह भी कि उन पर चले कि यह काम अज़ाब से छुटकारा और सदा के चैन का सामान) **है, और उन सब जानवरों को तुम्हारे लिए हलाल कर दिया है सिवाए उन** (कुछ जानवरों) **के जो तुम को पढ़ कर सुना दिये गये हैं** (यानी सूरत अनआम में और इस जगह जानवरों के हलाल होने का ज़िक्र इसलिए किया गया कि अहराम की हालत में शिकार की पाबन्दी से किसी को अहराम की हालत में जानवरों के मना होने का शक न हो जाए और जब दीन व दुनिया की भलाई अल्लाह के हुक्मों की इज़्ज़त में है) **तो तुम लोग गन्दगी से यानी बुतों से अलग रहो** (क्योंकि मुशरिक लोग हज करते हुए अल्लाह के साथ बुतों का नाम भी लेते थे) **और झूटी बात** (चाहे वो झूट शिर्क की बातों का हो या दूसरी बातों का उस) **से बचते रहो(30)** (इस तरह से कि) **अल्लाह की तरफ़ झुके रहो उस के साथ** (किसी को) **साझी मत ठहराओ, और जो आदमी अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो** (उस की हालत ऐसी होगी कि) **जैसे वो आसमान से गिर पड़ा फिर परिन्दों ने उस की बोटियां नोचलीं या हवा ने उस को किसी दूर जगह ले जाकर फेंक दिया(31) यह बात भी हो चुकी और** (अब एक ज़रूरी बात क़ुर्बानी के जानवरों के बारे में सुन लो कि) **जो आदमी अल्लाह के दीन की इन** (बताई) **यादगारों का पूरा अदब करेगा तो उस का यह अदब करना दिल की परहेज़गारी की बात** (है यादगारों के अदब से मुराद अल्लाह के हुक्मों की पाबन्दी है जो क़ुर्बानी के बारे में हैं चाहे ज़बह से पहले के हुक्म या ज़बह के वक़्त के हुक्म जैसे तकबीर पढ़ना या ज़बह के बाद के हुक्म जैसा कि जिसका खाना जिसके लिए हलाल है वो खाए और वो न खाए जिसका खाना जिसके लिए हलाल नहीं) **है(32) तुम को उन**

(जानवरों) **से एक तय वक़्त तक फ़ाइदे उठाना जाइज़ है** (यानी जब तक वो हरम की क़ुर्बानी के लिए नामज़द न किये जाएं तो उन से दूध या सवारी या सामान लादने का फ़ाइदा उठाना जाइज़ है मगर जब उन को नामज़द कर दिया तो फिर उन से कोई नफ़ा उठाना जाइज़ नहीं) **फिर** (नामज़द करने के बाद) **उस के ज़बह हलाल होने की जगह उसी पुराने घर** (यानी ख़ाना काबा) **के आस पास है** (यानी हरम की हदों से बाहर ज़बह न करें)(33)

नोटः- मिना जहां क़ुर्बानी होती है वो हरम की हदों में ही है।

وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْا ؕ وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَ
الْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ الْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖۗ فَاذْكُرُوا
اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَ الْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا
لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۳۶﴾ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَ لَا دِمَآؤُهَا وَ لٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ
سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿۳۸﴾

आयत नं० 34 से 38

और (जितने भी शरीअत वाले हुए हैं उन में से) **हम ने हर उम्मत के लिए क़ुर्बानी करना इसलिए रक्खा था कि वो उन ख़ास जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन को दिये थे** (बस असल चीज़ यह नाम लेना था), **सो** (इससे यह बात निकल आई कि) **तुम्हारा** (सच्चा) **माबूद एक ही ख़ुदा है तो तुम बस उसी के होकर रहो, और** (ऐ पैग़म्बर जो लोग हमारी इस बात पर चलें) **आप** (ऐसे अल्लाह के हुक्मों के सामने) **गर्दन झुका देने वालों को** (जन्नत की) **ख़ुशख़बरी सुना दीजिए**(34) **जो** (इस तौहीद ख़ालिस की बरकत से) **ऐसे हैं कि जब** (उन के सामने) **अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जो उन मुसीबतों पर सब्र करते हैं जो उन पर पड़ती हैं और जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और जो कुछ हम ने उन को दिया है उसमें से** (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च करते हैं**(35) **और क़ुर्बानी के ऊंट और गाय को**

(और इसी तरह भेड़ बकरी को भी) **हम ने अल्लाह** (के दीन) **की यादगार बनाया है** (और) **उन जानवरों में तुम्हारे** (और भी) **फ़ाइदे हैं** (जैसे दुनिया का फ़ाइदा खाना और खिलाना और आख़रत का फ़ाइदा सवाब है), **सो** (जब उसमें ये भलाइयां हैं तो) **तुम उन पर खड़े करके** (ज़बह करने के वक़्त) **अल्लाह का नाम लिया करो** (खड़े करके ज़बह करना सिर्फ़ ऊंटों के लिए है) **बस जब वो किसी करवट के बल गिर जाएं** (और ठन्डे हो जाएं) **तो** (उन का गोश्त) **तुम ख़ुद भी खाओ और न मांगने वाले** (को भी) **और मांगने वाले को** (भी यानी दोनों क़िस्म के ग़रीबों को) **खाने को दो,** (और) **हमने इन जानवरों को इस तरह तुम्हारा ताबेदार कर दिया ताकि तुम** (इस ताबेदार बनाने पर अल्लाह का) **शुक्र करो**(36) (और) **अल्लाह तआ़ला के पास न उन का गोश्त पहुंचता है और न उन का ख़ून, लेकिन उस के पास पहुंचता है तुम्हारा तक़्वा** (यानी नीयत की सच्चाई), **इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने इन जानवरों को तुम्हारा ताबेदार कर दिया कि तुम** (अल्लाह के रास्ते में उन को क़ुर्बान करके) **इस बात पर अल्लाह की बड़ाई** (बयान) **करो कि उसने तुम को** (इस तरह क़ुर्बानी करने की) **तौफ़ीक़ दी** (वर्ना अगर अल्लाह की तौफ़ीक़ न होती तो या तो ज़बह ही में शक निकाल कर यह इबादत न कर पाते या अल्लाह के सिवा दूसरों के नाम पर ज़बह करने लगते), **और** (ऐ पैग़म्बर सच्ची नीयत से) **नेक काम करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए**(37) (और) **यक़ीन जानो कि अल्लाह तआ़ला** (इन मुशरिकों के सताने से जल्दी ही) **ईमान वालों का बचाव करेगा** (कि हज व उमरे से रोक ही न सकेंगे), **बेशक अल्लाह तआ़ला किसी दग़ाबाज़ कुफ़्र करने वाले को पसन्द नहीं करता** (बल्कि ऐसे लोगों से नाराज़ है इसलिए अन्जाम कार इन लोगों को नाकाम और सच्चे मोमिनों को कामयाब करेगा)(38)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि इबादत में असल चीज़ नीयत की सच्चाई है इसके बिना इबादतों का असली फ़ाइदा हासिल नहीं होता।

أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ﴿۳۹﴾ اِلَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ
حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ لَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَ بِيَعٌ وَّ
صَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَ لَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۴۰﴾
اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَ اَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَ نَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لِلّٰهِ
عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿۴۱﴾

आयत नं० 39 से 41

इजाज़त लड़ने की (काफ़िरों से अब तक न थी लेकिन अब) **उन लोगों को देदी गई जिन से** (काफ़िरों की तरफ़ से) **लड़ाई की जाती है इस वजह से कि उन पर** (बहुत) **ज़ुल्म किया गया है** (यह वजह है जिहाद के जाइज़ होने की), **और** (इस इजाज़त की हालत में मुसलमानों के कम होने और काफ़िरों के ज़्यादा होने पर नज़र न करना चाहिए क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला उन** (मुसलमानों) **को जीत दिलाने की पूरी क़ुदरत रखता है**(39) **जो** (बेचारे) **अपने घरों से निकाले गये सिर्फ़ इतनी बात पर कि वो यह कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है** (यानी तौहीद के अक़ीदे पर काफ़िरों का यह ग़ुस्सा था कि उन को इतना परीशान किया कि वतन छोड़ना पड़ा), **और** (जिहाद में छुपी भलाई के बारे में बताते हैं कि) **अगर यह बात न होती कि अल्लाह तआ़ला** (सदा से) **लोगों का एक दूसरे** (के हाथ) **से ज़ोर न घटावाता रहता** (यानी हक़ वालों को नाइन्साफ़ों पर कभी-कभी हावी न करता रहता) **तो** (अपने अपने ज़मानों में) **ईसाइयों और यहूदियों की इबादत गाहें और** (मुसलमानों की) **वो मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम बहुत लिया जाता है सब ढाए** (जाते और मिट) **जाते, और बेशक अल्लाह तआ़ला उसकी मदद करेगा जो कि अल्लाह** (के दीन) **की मदद करेगा** (यानी उस का लड़ना सिर्फ़ अल्लाह के लिए हो), **बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त वाला** (और) **ज़ोर वाला** (है वो जिसको चाहे ताक़त और हुकूमत दे सकता) **है**(40) (और) **ये लोग ऐसे हैं कि अगर हम इन को दुनिया में हुकूमत देदें तो ये लोग ख़ुद भी नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और** (दूसरों को भी) **नेक कामों के करने को कहें और बुरे कामों से मना करें, और सब कामों का अन्जाम तो अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है** (बस मुसलमानों की अब की हालत देख कर यह कोई क्योंकर कह सकता है कि अन्जाम भी उन का ये ही रहेगा बल्कि हो सकता है कि इस का उलट हो जाए जैसा कि ऐसा ही हुआ)(41)

नोटः- ऊपर वाली आयत में दी गई ख़ुशख़बरी इस बात की दलील है कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन सब के सब हक़ पर थे और उन के ज़माने में जो इन्तिज़ाम हुकूमत का था वो हक़ और सही और अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ था।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾ وَقَوْمُ إِبْرٰهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ﴿٤٣﴾ وَأَصْحٰبُ
مَدْيَنَ ۖ وَكُذِّبَ مُوسٰى فَأَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٤﴾ فَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ

أَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ﴿٤٥﴾ أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي
الْأَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ أَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى
الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ﴿٤٦﴾ وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۭ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ
كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا ۚ وَإِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾
قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَآ أَنَا لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ
كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾ وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾

आयत नं० 42 से 51

और (ऐ पैग़म्बर) **ये** (झगड़ने वाले लोग) **अगर आप को झुटलाते हैं तो** (आप ग़म न करें क्योंकि) **इन लोगों से पहले झुटला चुकी हैं नूह की क़ौम और आद व समूद** (की क़ौमें)(42) **और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम(43) और मदयन वाले भी** (अपने-अपने नबियों को झुटला चुके हैं) **और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को भी झूटा बताया** (मगर झुटलाने के बाद) **मैंने उन काफ़िरों को** (कुछ दिन) **मोहलत दी** (जैसे आज के काफ़िरों को मोहलत दे रक्खी है) **फिर मैंने उन को** (अ़ज़ाब में) **पकड़ लिया तो** (देखो) **मेरा अज़ाब कैसा हुआ (44) सो कितनी बस्तियां हैं जिन को हमने** (अज़ाब से) **हलाक किया जिनकी हालत यह थी कि वो ज़ुल्म** (और नाफ़रमानी) **करती थी तो** (अब उनकी यह हालत है कि) **वो अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं** (यानी वीरान हैं कि पहले छत गिरी फिर दीवारें आपड़ी) **और** (इसी तरह उन बस्तियों में) **बहुत से बेकार कुएं** (जो पहले आबाद थे) **और बहुत से पक्के कली चूने के महल** (जो अब टूट गये हैं ये सब उन बस्तियों के साथ तबाह हुए बस इसी तरह अपने वक़्त पर इस ज़माने के लोग भी अज़ाब में पकड़े जाएंगे)(45) **तो क्या यह** (सुन कर) **लोग मुल्क में चले फिरे नहीं जिससे उनके दिल ऐसे हो जाएं कि उनसे समझने लगें या उनके कान ऐसे हो जाएं कि उन से सुनने लगें, बात यह है कि** (न समझने वालों की कुछ) **आंखें अन्धी नहीं हो जाया करतीं बल्कि दिल जो सीनों में हैं वो अन्धे हो जाते हैं** (इन काफ़िरों के भी दिल अन्धे हो गये वर्ना पहली उम्मतों की हालतों से सबक़ लेते)(46) **और ये लोग** (पैग़म्बरी में शक डालने के लिए) **आप से अज़ाब** (जल्दी लाने) **की मांग करते हैं** (और अज़ाब के जल्दी न आने से यह दलील लेते हैं कि अज़ाब आने वाला ही नहीं) **जब कि अल्लाह तआ़ला कभी अपना वादा ख़िलाफ़ न करेगा** (यानी वादे के वक़्त पर ज़रूर अज़ाब होगा), **और**

आप के रब के पास का एक दिन (जिसमें अज़ाब होगा यानी क़ियामत का दिन गिनती या सख़्ती में) **एक हज़ार साल की बराबर है तुम लोगों की गिनती के हिसाब से** (तो ये बड़े बेवक़ूफ़ हैं कि ऐसी मुसीबत की मांग करते हैं)(47) **और** (फिर सुन लो कि) **बहुत सी बस्तियां हैं जिन को मोहलत दी थी और वो ज़ुल्म** (और नाफ़रमानी) **करती थीं फिर मैंने उन को** (अज़ाब में) **पकड़ लिया और सब को मेरी ही तरफ़ लौटना होगा** (उस वक़्त पूरी सज़ा मिलेगी)(48) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि ऐ लोगों मैं तुम्हारे लिए एक साफ़ डराने वाला** (पैग़म्बर) **हूं** (अज़ाब देने या न देने में मेरा दख़्ल नहीं न मैंने इसका दावा किया है)(49) **तो जो लोग** (इस डर को सुन कर) **ईमान ले आएं और अच्छे काम करने लगे उन के लिए मुआफ़ी और इ़ज़्ज़त की रोज़ी** (यानी जन्नत) **है**(50) **और जो लोग हमारी आयतों के बारे में** (उनके इनकार और झुटलाने की) **कोशिश करते रहते हैं** (पैग़म्बर और मोमिनों को) **हराने** (यानी मजबूर करने) **के लिए ऐसे लोग दोज़ख़ में** (रहने) **वाले हैं**(51)

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي
الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۲﴾ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ﴿۵۳﴾ وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۴﴾ وَلَا يَزَالُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿۵۵﴾ اَلْمُلْكُ
يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۵۶﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۵۷﴾ ؑ

आयत नं० 52 से 57

और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ये लोग जो शैतान के बहकाने से आप से झगड़ा करते हैं यह कोई नई बात नहीं बल्कि) **हम ने आप से पहले कोई रसूल और कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिस के साथ यह क़िस्सा न हुआ हो कि जब उस ने** (अल्लाह तआला के हुक्मों में से) **कुछ पढ़ा** (तब ही) **शैतान ने उस के पढ़ने में** (काफ़िरों के दिलों में) **शक** (और ऐतराज़) **डाला** (और काफ़िर उन्हीं शक व ऐतराज़ों को पेश करके पैग़म्बरों से बहस व झगड़ा किया करते थे),

फिर अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए शक को (साफ़ दलीलों के जवाब से) **मिटा देता है** (जैसा कि सही जवाब के बाद ऐतराज़ दूर हो जाता है) **फिर अल्लाह तआ़ला अपनी आयतों** (की बातों) **को** (उन जवाबों से और) **ज़्यादा मज़बूत कर देता है, और अल्लाह तआ़ला** (इन ऐतराज़ों के बारे में) **ख़ूब इल्म वाला है** (और उनके जवाब सिखाने में) **ख़ूब हिकमत वाला है(52)** (और यह सारा क़िस्सा इसलिए बयान किया है) **ताकि अल्लाह तआ़ला शैतान के डाले हुए शक शुबहों को ऐसे लोगों के लिए इम्तिहान** (का सामान) **बना दे जिन के दिल में** (शक की) **बीमारी है और जिन के दिल** (बिल्कुल ही) **सख़्त** (हैं कि वो शैतान के बहकाने से शक से बढ़ कर झूट का यक़ीन किये हुए हैं सो उन का इम्तिहान होता है कि देखें जवाब के बाद अब भी शकों पर चलते हैं या जवाब को समझ कर हक़ को मानते) **हैं, और असल में** (ये) **ज़ालिम लोग** (यानी शक करने वाले भी और झूट का यक़ीन करने वाले भी) **बड़ी मुख़ालफ़त में** (हैं कि सच्चाई जानने के बाद भी हटधर्मी की वजह से नहीं मानते) **हैं(53) और** (इन शक व शुबहों को इसलिए दूर किया जाता है) **ताकि जिन लोगों को** (सही) **समझ दी गई है वो** (इन जवाबों से) **इस बात का ज़्यादा यक़ीन करलें कि यह** (जो नबी ने पढ़ा है वो) **आप के रब की तरफ़ से हक़ है सो ईमान पर ज़्यादा जम जाएं फिर** (ज़्यादा यक़ीन की बरकत से) **उस** (पर अमल करने) **की तरफ़ उन के दिल और भी झुक जाएं, और सचमुच उन ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला ही सीधा रास्ता दिखाता है** (फिर क्योंकर इनको हिदायत न हो)**(54) और** (रहे) **काफ़िर लोग** (सो वो) **सदा उस** (पढ़े हुए हुक्म) **की तरफ़ से शक ही में रहेंगे** (जो उन के दिल में शैतान ने डाला था) **यहां तक कि उन पर अचानक क़ियामत आजाएगी** (जिस का डर ही काफ़ी है चाहे अज़ाब न भी होता) **या** (इससे बढ़ कर यह कि) **उन पर किसी बेबरकत दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **का अज़ाब आ पहुंचे** (मतलब यह कि ये बिना अज़ाब देखे कुफ़्र से बाज़ न आएंगे मगर उस वक़्त फ़ाइदा न होगा)**(55) बादशाही उस दिन अल्लाह ही की होगी, वो उन सब** (लोगों) **के बीच** (खुला) **फ़ैसला कर देगा, तो जो लोग ईमान लाएं होंगे और अच्छे काम किये होंगे वो चैन के बाग़ों में होंगे(56) और जिन्होंने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुटलाया होगा तो उन के लिए रूसवाई का अज़ाब होगा(57)।**

وَ الَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ
الرّٰزِقِيْنَ ﴿۵۸﴾ لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿۵۹﴾ ذٰلِكَ ۚ وَ مَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ

بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٦٠

आयत नं० 58 से 60

और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में (यानी दीन की हिफ़ाज़त के लिए) **अपना वतन छोड़ा फिर वो लोग** (काफ़िरों के मुक़ाबिले में) **क़त्ल किये गये या** (वैसे ही अपनी मौत) **मर गये** (वो नाकाम व महरूम नहीं चाहे उन को दुनिया का नफ़ा न मिले मगर आख़रत में) **अल्लाह तआ़ला उन को ज़रूर अच्छी रोज़ी देगा** (यानी जन्नत की अनगिनत नेमतें), **और बेशक अल्लाह तआ़ला सब देने वालों से अच्छा** (देने वाला) **है(58)** (और इस अच्छी रोज़ी के साथ) **अल्लाह तआ़ला उन को** (घर भी अच्छा देगा यानी) **ऐसी जगह ले जाकर दाख़िल करेगा जिस को वो** (बहुत ही) **पसन्द करेंगे** (रही यह बात कि बहुत से हिजरत करने वाले नाकाम क्यों हुए उन की मदद क्यों न हुई तो इसकी वजह यह है कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला** (हर काम की हिकमत व भलाई को) **ख़ूब जानने वाला है** (उन की इस नाकामी में बहुत सी भलाइयां छुपी हैं और) **बहुत सहार वाला** (है इसलिए दुशमनों को एकदम सज़ा नहीं देता) **है(59) यह** (बयान तो) **हो चुका और** (आगे यह सुनो कि) **जो आदमी** (दुशमन को) **उतनी ही तकलीफ़ पहुंचाए जितनी** (दुशमन की तरफ़ से) **उस को तकलीफ़ पहुंचाई गई थी फिर** (इस बराबर सराबर हो जाने के बाद अगर उस दुशमन की तरफ़ से) **उस आदमी को फिर सताया जाए तो अल्लाह तआ़ला उस आदमी की ज़रूर मदद करेगा, बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत मुआफ़ करने वाला बहुत बख़्शने वाला है(60)**

नोटः- अगर यह मोमिन पहली बार सताए जाने पर पहले ही सब्र करता तो इस का दर्जा बहुत ऊंचा होता भले ही ज़ुल्म का उतना ही बदला लेना जाइज़ है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٦١ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٦٢ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً ۖ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝٦٣ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦٤ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٥ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝٦٦

आयत नं० 61 से 66

यह (मोमिनों का हावी कर देना) **कि अल्लाह तआ़ला** (की बड़ी क़ुदरत है वो) **रात** (के कुछ हिस्से) **को दिन में और दिन** (के कुछ हिस्से) **को रात में दाख़िल कर देता है** (यह दुनिया का बदलाव एक क़ौम को दूसरी क़ौम पर हावी करने वाले बदलाव से ज़्यादा अचम्भे की बात है) **और इस वजह से है कि अल्लाह तआ़ला** (इन सब की बातों और हाल को) **ख़ूब सुनने वाला ख़ूब देखने वाला** (है वो काफ़िरों के ज़ुल्म और मोमिनों की मजबूरी को सुनता देखता) **है(61) और यह** (मदद) **इस वजह से** (यक़ीनी) **है कि** (इसमें किसी ताक़त की मजाल नहीं जो इसमें अल्लाह तआ़ला के हुक्मों में रूकावट करे क्योंकि) **अल्लाह ही हक़ है और जिन चीज़ों की अल्लाह के सिवा ये लोग इबादत कर रहे हैं वो सब झूट है** (कि वो मुहताज भी हैं कमज़ोर भी वो क्या अल्लाह के हुक्मों में रूकावट कर सकते हैं) **और अल्लाह ही ऊंची शान वाला सब से बड़ा** (है इस में सोचने से तौहीद का हक़ होना और शिर्क का ग़लत होना हर आदमी समझ सकता) **है(62) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया जिससे ज़मीन हरीभरी हो गई,** (फिर) **बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत महरबान सब बातों का जानने वाला** (है इसलिए बन्दों की ज़रूरतों को जानकर उसी हिसाब से महरबानी करता) **है(63) सब उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और बेशक अल्लाह तआ़ला ही ऐसा है जो किसी का मुहताज नहीं हर तरह की तारीफ़ के लाइक़ है(64)** (और) **क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के काम में लगा रक्खा है ज़मीन की चीज़ों को और कशती को** (भी) **कि वो दरिया में उस के हुक्म से चलती है, और वो ही आसमानों को ज़मीन पर गिरने से थामे हुए हैं हां मगर यह कि उसी का हुक्म हो जाए** (तो यह सब कुछ हो सकता है, और बन्दों के गुनाह और बुरे कामों की वजह से ऐसा हो जाना चाहिए था मगर फिर भी यह हुक्म नहीं देता तो वजह यह है कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला लोगों पर नर्मी करने वाला और रहमत करने वाला है(65) और वो ही है जिसने तुम को ज़िन्दगी दी फिर** (अपने वक़्त पर) **तुम को मौत देगा फिर** (क़ियामत में) **तुम को ज़िन्दा करेगा,** (इन नेमतों व अहसानों की वजह से चाहिए था कि लोग तौहीद अपनाते और अल्लाह का शुक्र अदा करते मगर) **सचमुच इन्सान है बड़ा नाशुक्रा** (कि अब भी कुफ़्र व शिर्क से बाज़ नहीं आता, ऐसे सब इन्सान नहीं बल्कि वो ही जो नाशुक्रे हैं)(66)।

لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْاَمْرِ وَ ادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۶۷﴾ وَ اِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۸﴾ اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۶۹﴾ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرٌ ﴿۷۰﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّ مَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ
نَّصِيْرٍ ﴿۷۱﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ
يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَ بِئْسَ
الْمَصِيْرُ ﴿۷۲﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّ لَوِ
اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ وَ اِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْـًٔا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَ الْمَطْلُوْبُ ﴿۷۳﴾ مَا قَدَرُوا
اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿۷۴﴾

आयत नं० 67 से 74

(जितनी उम्मतें शरीअत वाली हुई हैं उनमें) **हम ने हर उम्मत के लिए इबादत करने का एक तरीक़ा रक्खा है कि वो उसी तरीक़े पर इबादत किया करते थे तो** (ऐतराज़ करने वाले) **लोगों को चाहिए कि इस मुआमले में आप से झगड़ा न करें** (उन को तो आप से बहस और झगड़ा करने का हक़ नहीं मगर आप को हक़ है इसलिए) **आप** (उन को) **अपने रब** (यानी उस के दीन) **की तरफ़ बुलाते रहिए, बेशक आप सही रास्ते पर हैं** (सही रास्ते पर चलने वाले को हक़ होता है कि ग़लत रास्ते पर चलने वालों को अपनी तरफ़ बुलाए ग़लत रास्ते वाले को यह हक़ नहीं होता)(67) **और अगर** (इस पर भी) **ये लोग आप से झगड़ा करते हैं तो आप यह कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को ख़ूब जानता है** (वो ही तुम को समझेगा)(68) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे बीच क़ियामत के दिन** (खुला) **फ़ैसला कर देगा जिन चीज़ों में तुम झगड़ते थे**(69) **क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों को जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में हैं,** (और यह भी) **यक़ीनी बात है कि यह** (यानी उनकी सब बातें और काम) **आमाल नामे में** (भी लिखी) **हैं,** (बस) **बेशक** (साबित हो गया कि) **यह** (फ़ैसला करना) **अल्लाह तआ़ला के लिए आसान है**(70) **और ये** (मुशरिक) **लोग अल्लाह तआ़ला के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हैं जिन** (की इबादत के जाइज़ होने) **पर अल्लाह तआ़ला ने कोई दलील**

(अपनी किताब में) **नहीं भेजी और न उनके पास इसकी कोई जानकारी है, और** (क़ियामत में जब इन को शिर्क पर सज़ा होने लगेगी तो) **इन ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा** (कि उनको किसी तरह अज़ाब से बचाले)(71) **और** (इन लोगों की गुमराही और हटधर्मी यहां तक बढ़ी है कि) **जब इन लोगों के सामने हमारी आयतें जो कि बहुत साफ़ है पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो तुम काफ़िरों के चेहरों में** (नागवारी की वजह से) **बुरे आसर देखते हो** (जैसे चेहरे पर बल पड़ जाना नाक चढ़ाना, और इन आसर से) **ऐसा लगता है उन लोगों पर हमला कर देंगे जो हमारी आयतें उनके सामने पढ़ रहे हैं, आप** (इन मुशरिकों से) **कह दीजिए कि** (तुम को जो ये क़ुरआन की आयतें सुन कर नागवारी हुई तो) **क्या मैं तुम को इससे** (भी) **ज़्यादा नागवार चीज़ बता दूं, वो दोज़ख़ है,** (कि) **उसका अल्लाह तआला ने काफ़िरों से वादा किया है, और बुरा ठिकाना** (है यानी क़ुरआन से नागवारी का नतीजा नागवार दोज़ख़) **है**(72) **ऐ लोगों एक अजीब बात बयान की जाती है उस को ध्यान से सुनो,** (वो यह है कि) **इसमें कोई शक नहीं कि जिन की तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो वो एक** (छोटी सी) **मक्खी को तो पैदा कर ही नहीं सकते चाहे** (इस काम के लिए) **सब के सब भी** (क्यों न) **जमा हो जएं, और** (पैदा करना तो बड़ी बात है वो तो ऐसे बेबस हैं कि) **अगर उन से मक्खी कुछ** (उनके चढ़ावे में से) **छीन ले जाए तो उस को** (तो) **उससे छुड़ा** (ही) **नहीं सकते, ऐसा इबादत करने वाला भी कमज़ोर और जिसकी इबादत की जाए वो भी कमज़ोर**(73) (अफ़सोस है) **इन लोगों ने अल्लाह की जैसी इज़्ज़त करनी चाहिए थी** (कि उसके सिवा किसी की इबादत न करते) **वो न की** (कि शिर्क करने लगे, हालांकि) **अल्लाह तआला बड़ी ताक़त वाला सब पर छाया हुआ है** (तो इबादत उस का ख़ालिस हक़ था न कि दूसरों का जो हर तरह से कमज़ोर हैं)(74)।

नोटः- मौजूदा शरीअत आजाने के बाद अब किसी पहली शरीअ़त पर अमल करना जाइज़ नहीं अपने ज़माने में वो शरीअ़तें बेशक हक़ थीं।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۚ﴿۷۵﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا
خَلْفَهُمْ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿۷۶﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَ اسْجُدُوْا وَ اعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَ افْعَلُوا الْخَيْرَ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۚ﴿۷۷﴾ وَ جَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ؕ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَ مَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ؕ
مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ ؕ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ۬ مِنْ قَبْلُ وَ فِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَ تَكُوْنُوْا

شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ۖ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ۗ هُوَ مَوْلٰىكُمْ ۚ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ﴿٧٨﴾

आयत नं० 75 से 78

अल्लाह तआ़ला (की मर्ज़ी है पैग़म्बरी के लिए जिसको चाहता है) **चुन लेता है फ़रिशतों में से** (जिन फ़रिशतों को चाहे अपने) **हुक्म** (नबियों के पास) **पहुंचाने वाले** (तय कर देता है) **और** (इसी तरह) **आदमियों में से भी** (जिस को चाहे आम लोगों के लिए हुक्म पहुंचाने वाले तय कर देता है), **बेशक अल्लाह तआ़ला ख़ूब सुनने वाला ख़ूब देखने वाला है**(75) (यानी) **वो उन** (सब फ़रिशतों और इन्सानों) **की अगली और पिछली बातों को** (ख़ूब) **जानता है, और सब कामों का दारोमदार अल्लाह ही पर है** (है यानी अल्लाह तआ़ला से उसके किसी काम की वजह पूछने का हक़ किसी को नहीं) **है**(76) **ऐ ईमान वालो** (तुम दीन के हुक्मों की पाबन्दी रक्खो, ख़ास कर नमाज़ की, बस तुम) **रूकू किया करो और सजदा किया करो और** (दूसरे हुक्मों की पाबन्दी के साथ) **अपने रब की इबादत किया करो और नेक काम किया करो उम्मीद** (यानी वादा) **है कि तुम कामयाब हो जाओगे**(77) **और अल्लाह के काम में ख़ूब कोशिश किया करो जैसा कोशिश करने का हक़ है, उसने तुम को** (दूसरी क़ौमों के मुक़ाबिले) **पसन्द किया और तुम पर दीन में किसी क़िस्म की तंगी नहीं रक्खी,** (और ईमान वालो जिस इस्लाम का तुम को हुक्म किया गया है ये ही इब्राहीम का दीन है) **तुम अपने बाप इब्राहीम के दीन पर जमे रहो, उसी ने तुम्हारा नाम मुसलमान रक्खा पहले भी और इस** (कुरआन) **में भी ताकि तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह गवाह बनें और** (इस रसूल की गवाही से पहले) **तुम** (एक बड़े मुक़दमे में जिस में एक फ़रीक़ पैग़म्बर होंगे और दूसरे फ़रीक़ उन की मुख़ालिफ़ क़ौमें होंगी उन मुख़ालिफ़) **लोगों के मुक़ाबिले में गवाह बनो** (और रसूल की गवाही से तुम्हारी गवाही की तस्दीक हो और पैग़म्बरों के हक़ में फ़ैसला हो), **सो** (हमारे हुक्मों की पूरी पाबन्दी करो, बस) **तुम लोग** (ख़ास कर) **नमाज़ की पाबन्दी रक्खो और ज़कात देते रहो और** (बाक़ी हुक्मों में भी) **अल्लाह ही को मज़बूत पकड़े रहो** (यानी हिम्मत के साथ दीन के हुक्म पूरे करो न दूसरों को राज़ी करने की फ़िक्र करो और न अपने जी का कहना मानो) **वो** (ही) **तुम्हारा रखवाला है सो कैसा अच्छा रखवाला है और कैसा अच्छा मददगार है**(78)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हारे लिए दो चीज़ें ऐसी छोड़ी हैं कि तुम जब तक इन दोनों को पकड़े रहोगे गुमराह न होंगे एक अल्लाह की किताब दूसरे उस के रसूल की सुन्नत। (मज़हरी)

23-सूरत-मूमिनून

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '118' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝٢ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝٣
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝٤ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝٥ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٦ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝٧ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ
عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝٨ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝٩ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ
الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١١

आयत नं० 01 से 11

बेशक उन मुसलमानों ने (आख़रत में) **कामयाबी पाई(1) जो** (सही अक़ीदों के साथ इन बातों की पाबन्दी करते हैं यानी वो) **अपनी नमाज़ में दिल से झुकने वाले हैं(2) और जो बेकार** (यानी फ़ालतू) **बातों से बचने वाले हैं(3) और जो अपने** (जी) **को** (बुरी बातों से) **पाक रखने वाले हैं(4) और जो अपनी शर्मगाहों की** (और सब से) **हिफ़ाज़त रखने वाले हैं(5) सिवाए अपनी बीवियों से या अपनी** (शरई) **बान्दियों से क्योंकि उन पर** (इसमें) **कोई इल्ज़ाम नहीं(6) हां जो इसके सिवा** (और जगह इस ज़रूरत को पूरी करना) **चाहें ऐसे लोग** (शरीअत की) **हद से निकलने वाले** (बदकार) **हैं(7) और जो अपनी** (सुपुर्दगी में ली हुई) **अमानतों और अपने एहद** (और वादों) **का ध्यान रखने वाले हैं(8) और जो अपनी** (फ़र्ज़) **नमाज़ों की पाबन्दी करते हैं(9) ऐसे ही लोग वारिस होने वाले हैं(10) जो फ़िरदौस** (जन्नत) **के वारिस होंगे और** (वो) **उसमें सदा-सदा रहेंगे(11)**

नोटः- यहां मालूम हो गया कि असल कामयाबी और कामयाबी की जगह जन्नत है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن سُلَالَةٍ مِّن طِينٍ ﴿١٢﴾ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ﴿١٣﴾ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ
عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظَامًا فَكَسَوْنَا الْعِظَامَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۚ فَتَبَارَكَ
اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿١٤﴾ ثُمَّ إِنَّكُم بَعْدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا
فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ﴿١٧﴾ وَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَّاهُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّا
عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿١٨﴾ فَأَنشَأْنَا لَكُم بِهِ جَنَّاتٍ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ لَّكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا
تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِن طُورِ سَيْنَاءَ تَنبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْآكِلِينَ ﴿٢٠﴾ وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۖ
نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

आयत नं० 12 से 22

और (अब इन्सान के पैदा करने का बयान है कि) **हम ने इन्सान को मिट्टी के सत्त** (यानी ख़ुराक) **से बनाया** (यानी पहले मिट्टी से खेती पैदा होती है फिर उससे ख़ुराक ली जाती है)(12) **फिर हम ने उस को मनी की बून्द से बनाया जो कि** (एक ख़ास वक़्त तक) **एक हिफ़ाज़त की जगह** (यानी बच्चे दानी) **में रहा** (और वो ख़ुराक से बना था)(13) **फिर हम ने उस बून्द को जमा हुआ ख़ून बना दिया फिर हम ने उस जमे ख़ून को** (गोश्त की) **बोटी बना दिया फिर हम ने उस बोटी** (के कुछ हिस्सों) **को हड्डियां बना दिया फिर हम ने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया** (जिससे वो हड्डियां ढक गईं) **फिर** (इन सब बदलाव के बाद) **हम ने** (उसमें रूह डाल कर) **उस को एक दूसरी ही** (तरह की) **मख़लूक़ बना दिया** (यानी एक ज़िन्दा इन्सान बन गया)**, सो कैसी शान है अल्लाह की जो सारे कारीगरों से बढ़ कर** (कारीगर है क्योंकि दूसरे कारीगर तो अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों में जोड़ तोड़ करके ही बनाते हैं ज़िन्दगी पैदा करना यह ख़ास अल्लाह ही का काम) **है**(14) (आगे इन्सान के आख़री अन्जाम का बयान है कि) **फिर तुम इस** (अजीब क़िस्से) **के बाद ज़रूर ही मरने वाले हो**(15) **फिर तुम क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे।**(16) **और** (जिस तरह हम ने तुम को शुरू में पैदा किया इसी तरह तुम्हारे जीने का सामान भी किया कि) **हम ने तुम्हारे ऊपर सात** (आसमान जिन में फ़रिश्तों के आने जाने के लिए) **रास्ते** (हैं) **बनाए** (कि इसमें तुम्हारे बहुत से फ़ाइदे जुड़े हैं)**, और हम** (अपनी पैदा की हुई) **मख़लूक़** (की भलाइयों) **से अन्जान नहीं थे** (बल्कि सब की ज़रूरतों का ध्यान रक्खा गया)(17) **और हम ने** (इन्सान की ज़रूरत के

लिए) **आसमान से** (ठीक) **अन्दाज़ के साथ पानी बरसाया फिर उस को** (लम्बे वक़्त तक) **ज़मीन में ठहराया** (जैसा कि कुछ पानी तो ज़मीन के ऊपर रहता है और कुछ अन्दर उतर जाता है जो ज़रूरत के हिसाब से निकलता रहता है), **और हम** (जिस तरह उस के बरसाने की क़ुदरत रखते हैं इसी तरह) **उस** (पानी) **के ग़ाइब कर देने की** (भी) **क़ुदरत रखते हैं** (कि इतनी गहराई में चला जाए कि किसी तरह न निकाल सको मगर हम ने बाक़ी रक्खा)(18) **फिर हम ने उस** (पानी) से **तुम्हारे लिए बाग़ पैदा किये खजूरों के और अंगूरों के, तुम्हारे वास्ते उन में बहुत से** (ताज़े) **फल** (भी) **हैं और उनमें से** (कुछ को बचाकर सुखा कर रख लेते हो फिर बाद में) **खाते** (भी) **हो**(19) **और** (उसी पानी से) **एक** (ज़ैतून का) **पेड़ भी** (हम ने पैदा किया) **जो कि सीना** (नाम के) **पहाड़ में** (बहुत) **पैदा होता है जो उगता है तेल लिये हुए और खाने वालों के लिए सालन लिये हुए** (यानी उस का तेल जलाने और खाने दोनों काम आता है)(20) **और तुम्हारे लिए जानवरों में** (भी) **नसीहत का सामान है, कि हम तुम को उन के पेट में की चीज़** (यानी दूध) **पीने को देते हैं और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत से फ़ाइदे हैं** (कि उनके बाल और ऊन काम आती है) **और उनमें से कुछ को खाते भी हो**(21) **और उन** (में जो सवारी के क़ाबिल हैं उन) **पर और कशती पर** (और दूसरी सवारियों पर) **सवार** (भी) **होते हो**(22)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾ فَقَالَ الْمَلَأُ
الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً
مَا سَمِعْنَا بِهَٰذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي
بِمَا كَذَّبُونِ ﴿٢٦﴾ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَإِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۙ فَاسْلُكْ فِيهَا
مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ
مُغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾ فَإِذَا اسْتَوَيْتَ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّانَا مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢٨﴾
وَقُلْ رَبِّ أَنْزِلْنِي مُنْزَلًا مُبَارَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ﴿٣٠﴾

आयत नं० 23 से 30

और (आगे बयान है लोगों के दीनी सुधार के लिए किये गये इन्तिज़ामों का कि) **हम ने नूह** (अलैहिस्सलाम) **को उन की क़ौम की तरफ़ पैग़म्बर करके भेजा सो उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा**

कि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत किया करो उसके सिवा कोई तुम्हारे लिए माबूद बनाने के लाइक़ नहीं, (और जब यह एक बात साबित है तो) **फिर क्या तुम** (दूसरों के माबूद बनाने से) **डरते नहीं हो(23) बस** (नूह अलैहिस्सलाम की यह बात सुनकर) **उन की क़ौम में जो काफ़िर सरदार थे** (लोगों से) **कहने लगे यह आदमी सिवाए इसके कि तुम्हारी तरह का एक** (आम) **आदमी है और कुछ नहीं** (यानी पैग़म्बर नहीं) **है** (और ख़ुद को पैग़म्बर कहने से) **उस का** (असल) **मतलब यह है कि तुम से बड़ा बन कर रहे** (यानी यह अपनी इ़ज़्ज़त व बड़ाई चाहता है)**, और अगर अल्लाह** (पैग़म्बर भेजना) **चाहता तो** (इस काम के लिए) **फ़रिशतों को भेजता** (बस उन का यह कहना ग़लत और तौहीद की तरफ़ बुलाना भी ग़लत क्योंकि) **हम ने यह बात** (कि और किसी को माबूद मत बनाओ) **अपने बड़ों में** (कभी) **नहीं सुनी(24) बस यह एक दीवाना आदमी है** (इसलिए सारी दुनिया से अलग बातें करता है कि मैं पैग़म्बर हूं और ख़ुदा एक है) **सो एक ख़ास वक़्त** (यानी उसके मरने के वक़्त) **तक उस** (की हालत) **का और इन्तिज़ार कर लो** (आख़िर एक वक़्त पर पहुंच कर ख़त्म हो जाएगा और सारा झगड़ा मिट जाएगा)(25) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उनके ईमान लाने से नाउम्मीद होकर अल्लाह तआ़ला से) **दुआ की कि या रब मेरे** (उन से) **मेरा बदला ले इस वजह से कि उन्होंने मुझ को झुटलाया है(26) बस हम ने** (उन की दुआ़ क़ुबूल की और) **उन के पास हुक्म भेजा कि तुम कशती तैयार कर लो हमारी देख रेख में और हमारे हुक्म से** (कि अब तूफ़ान आएगा और तुम और मुसलमान उस पर सवार होकर बच जाओगे) **फिर जिस वक़्त हमारा हुक्म** (अज़ाब का नज़दीक) **आपहुंचे और** (निशानी उस की यह है कि) **ज़मीन से पानी उबलना शुरू हो जाए तो** (उस वक़्त) **हर क़िस्म** (के जानवरों) **में से** (जो कि इन्सान के काम के हैं और पानी में ज़िन्दा नहीं रह सकते जैसे गाय बैल भेड़ बकरी ऊंट घोड़ा और दूसरे) **एक-एक जोड़ा** (यानी नर मादा) **इस** (कशती) **में सवार कर लो और अपने घर वालों को भी** (सवार कर लो) **सिवाए उसके जिस पर उनमें से** (डूबने का) **हुक्म हो चुका है** (यानी आप के घर वालों में जो काफ़िर हो उस को मत सवार करो)**, और** (यह सुन लो कि अज़ाब आने के वक़्त) **मुझ से काफ़िरों** (के बचाने) **के बारे में कुछ बात मत करना** (क्योंकि) **वो सब डुबोए जाएंगे(27) फिर जिस वक़्त तुम और तुम्हारे साथी** (मुसलमान) **कशती में बैठ चुको तो यह कहना कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हम को काफ़िर लोगों से** (यानी उनके कामों और उनके वबाल से) **बचाया(28) और** (जब तूफ़ान गुज़रने के बाद कशती से ज़मीन पर आने लगो तो) **यह कहना कि या रब मेरे मुझ को** (ज़मीन पर) **बरकत का उतारना उतार दीजिए** (कि चैन आराम के साथ रहना हो) **और**

आप सब उतारने वालों से अच्छे (हैं क्योंकि और लोग अपने महमान की सब ज़रूरतें पूरी करने की कुदरत नहीं रखते आप इन सब चीज़ों पर कुदरत रखते) **हैं**(29) **इस** (क़िस्से) **में** (समझदारों के लिए हमारी कुदरत की) **बहुत सी शिानियां हैं और हम** (ये निशानियां दिखा कर अपने बन्दों को) **आज़माते हैं** (कि देखें कौन इन से नफ़ा उठाता है कौन नहीं उठाता, और निशानियां ये हैं- पैग़म्बर भेजना, ईमानदारों को बचा लेना काफ़िरों को हलाक कर देना, अचानक तूफ़ान पैदा कर देना कशती को सही सलामत रखना और बहुत सी)(30)

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٣١ فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٣٢ وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ۝٣٣ وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا
مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ۝٣٤ اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ۝٣٥
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ۝٣٦ اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝٣٧ اِنْ هُوَ اِلَّا
رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٣٨ قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝٣٩ قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ
لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ۝٤٠ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤١

आयत नं० 31 से 41

फिर (नूह की क़ौम के बाद) **हम ने दूसरी क़ौम पैदा की**(31) **फिर हम ने उन में एक पैग़म्बर को भेजा जो उन्हीं में के थे** (उन पैग़म्बर ने कहा कि) **तुम लोग अल्लाह ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा और कोई** (सच्चा) **माबूद नहीं, क्या तुम** (शिर्क से) **डरते नहीं हो**(32) **और उन की क़ौम के वो सरदार जो काफ़िर थे और आख़रत के मिलने को झुटलाते थे और हम ने उन को दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश भी दिया था** (वो) **कहने लगे कि बस ये तो तुम्हारी तरह एक** (आम) **आदमी हैं** (जैसा कि) **ये वो ही खाते हैं जो तुम खाते हो और वो ही पीते हैं जो तुम पीते हो**(33) **और** (जब ये तुम्हारे ही जैसे इन्सान हैं तो) **अगर तुम अपने जैसे एक** (आम) **आदमी के कहने पर चलने लगो तो बेशक तुम** (समझ के) **घाटे में हो** (यानी बड़ी बेवक़ूफ़ी है)(34) **क्या यह आदमी तुम से यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और** (मरकर)

मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो (फिर दोबारा ज़िन्दा करके) **ज़मीन से निकाले जाओगे(35) बहुत ही दूर है** (समझ से) **बहुत ही दूर है जो बात तुम से कही जाती है(36) बस ज़िन्दगी तो ये ही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है कि हम में कोई मरता है और कोई पैदा होता है और हम दोबारा ज़िन्दा न किये जाएंगे(37) बस यह एक ऐसा आदमी है जो अल्लाह पर झूट बान्धता है** (कि उसने मुझ को पैग़म्बर बनाकर भेजा है और कोई दूसरा माबूद नहीं और क़ियामत आएगी) **और हम तो कभी इस को सच्चा न समझेंगे(38) पैग़म्बर ने दुआ की कि या रब मेरे मेरा बदला ले इस वजह से कि उन्होंने मुझ को झुटलाया(39) अल्लाह तआ़ला ने कहा कि ये लोग जल्दी ही पछताएंगे(40) बस उन को एक सख़्त आवाज़** (के अज़ाब) **ने सच्चे वादे के हिसाब से आ पकड़ा** (जिससे वो सब हलाक हो गये) **फिर** (हलाक करने के बाद) **हम ने उन को कूड़ा करकट** (की तरह रोंद) **कर** (रख) **दिया, सो फिटकार है** (अल्लाह की ऐसे) **ज़ालिम** (व काफ़िर) **लोगों पर(41)**

नोटः- ऊपर जिस क़ौम का ज़िक्र आया है वो क़ौमे आद है या क़ौमे समूद है।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿۴۲﴾ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿۴۳﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا
تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّ جَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا
يُؤْمِنُوْنَ ﴿۴۴﴾ ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَ اَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۴۵﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۠ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ
كَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ﴿۴۶﴾ فَقَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَ قَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ
الْمُهْلَكِيْنَ ﴿۴۸﴾ وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَ جَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَ اُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّ اٰوَيْنٰهُمَاۤ اِلٰى
رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِيْنٍ ﴿۵۰﴾

आयत नं० 42 से 50

फिर उन (क़ौमों) **के** (हलाक होने के) **बाद हम ने और उम्मतों को पैदा किया** (पैग़म्बरों को झुटलाने की वजह से वो भी हलाक हुए)**(42) कोई उम्मत** (उन उम्मतों में से) **अपने** (उस) **तय वक़्त से** (जो अल्लाह के इल्म में तय था, हलाक होने में) **न आगे बढ़ सकती थी न पीछे हट सकती** (थी बल्कि ऐन वक़्त पर हलाक की गई) **थी(43)** (मतलब यह कि वो उम्मतें पहले पैदा की गईं) **फिर** (उन के पास) **हम ने** (हिदायत के लिए) **लगातार अपने पैग़म्बरों को भेजा,** (मगर उन की हालत

यह हुई कि) **जब कभी किसी उम्मत के पास उस उम्मत का** (ख़ास) **पैग़म्बर** (अल्लाह के हुक्म लेकर) **आया उन्होंने उस को झुटलाया तो हम ने** (भी हलाक करने में) **एक के बाद एक का तार बान्ध दिया और हम ने उन को** (क़िस्से) **कहानियां बना दिया** (यानी वो ऐसे मिटे कि सिवाए कहानियों के उन का कुछ नाम निशान न रहा), **सो अल्लाह की फिटकार उन लोगों पर जो** (पैग़म्बरों के समझाने पर भी) **ईमान न लाते थे(44) फिर हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **और उनके भाई हारून** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **अपने हुक्म और** (पैग़म्बरी की) **खुली दलील** (यानी मोजिज़ा) **देकर भेजा(45) फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन लोगों ने** (उन की तस्दीक़ व ताबेदारी से) **घमन्ड किया और वो लोग थे** (पहले) **ही** (से) **घमन्डी(46) सो वो** (आपस में) **कहने लगे कि क्या हम अपने जैसे दो आदमियों पर ईमान ले आएं** (और उन के कहने में चलें) **जब कि उन की क़ौम के लोग** (तो ख़ुद) **हमारे ग़ुलाम हैं** (यानी हमारी तो ख़ुद उन की क़ौम पर हुकूमत है फिर उन दोनों की सरदारी को हम कैसे मान लें उन्होंने दीन की सरदारी को दुनिया की सरदारी की तरह समझा)(47) **बस वो लोग उन दोनों को झुटलाते ही रहे सो** (इस झुटलाने की वजह से) **हलाक किये गये(48) और** (उन के हलाक होने के बाद) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को किताब** (तौरेत) **दी ताकि** (उससे) **वो लोग** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम बनी इस्राईल) **सीधी रह पाएं(49) और हमने** (अपनी क़ुदरत और तौहीद के सबूत के लिए और ऐसे ही बनी इस्राईल की हिदायत के लिए) **मरयम के बेटे** (ईसा अलैहिस्सलाम) **को और उन की मां** (हज़रत मरयम अलैहिस्सलाम) **को बड़ी निशानी** (अपनी क़ुदरत की और उन की सच्चाई की) **बनाया** (कि बेबाप पैदा होना दोनों की बड़ी निशानी है) **और** (चूंकि उन को नबी बनाना था और एक ज़ालिम बादशाह बचपन में ही उन का दुश्मन हो गया इसलिए) **हम ने** (उससे बचाकर) **उन दोनों को एक ऐसी ऊंची ज़मीन पर ले जाकर पनाह दी जो** (ग़ल्ले और फलों की पैदावार की वजह से) **रहने के क़ाबिल थी और** (बहती नहर के) **साफ़ पानी** (की वजह से हरी भरी थी यहां तक कि जवान हुए और पैग़म्बरी मिली मगर कुछ लोग ईमान नहीं लाए)(50)

يٰۤاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ اِنِّىْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۵۱﴾ وَاِنَّ هٰذِهٖۤ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ ﴿۵۲﴾ فَتَقَطَّعُوْۤا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَذَرْهُمْ فِىْ غَمْرَتِهِمْ
حَتّٰى حِيْنٍ ﴿۵۴﴾ اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ ﴿۵۵﴾ نُسَارِعُ لَهُمْ فِى الْخَيْرٰتِ ؕ بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ ﴿۵۶﴾

आयत नं० 51 से 56

(हम ने तुम्हारी तरह दूसरे पैग़म्बरों और उन की उम्मतों को भी हुक्म दिया कि) **ऐ पैग़म्बरों तुम** (और तुम्हारी उम्मतें) **पाकीज़ा** (यानी हलाल) **चीज़ें खाओ** (कि अल्लाह की नेमतें हैं) **और** (खाकर शुक्र अदा करो यानी इबादत और) **नेक काम करो,** (और) **मैं तुम सब के किये हुए कामों को अच्छी तरह जानता हूं** (तो इबादत और नेक कामों पर उन का बदला दूंगा)(51) **और** (हम ने उन से यह भी कहा कि जो तरीक़ा तुम्हें अभी बताया गया है) **यह है तुम्हारा तरीक़ा** (यानी दीन जिस पर तुम को चलना और रहना वाजिब है) **कि वो एक ही तरीक़ा है** (सब नबियों और उनकी उम्मतों का किसी शरीअत में यह तरीक़ा नहीं बदला) **और** (मतलब उस का यह है कि) **मैं तुम्हारा रब हूं सो तुम मुझ से डरते रहो** (यानी मेरे हुक्मों की मुख़ालफ़त न करो)(52) **सो** (चाहिए तो यह था कि सब एक ही तरीक़े पर रहते मगर ऐसा न किया बल्कि) **उन लोगों ने अपने दीन में फूट डाल कर अलग-अलग फ़िरक़े बना लिये, हर फ़िरक़े के पास जो दीन** (यानी अपना बनाया हुआ तरीक़ा) **है वो उसी पर मगन और ख़ुश** (है उसके ग़लत होने के बावजूद उसी को हक़ समझता) **है(53) तो आप उन को उन की जहालत में एक ख़ास वक़्त तक रहने दीजिए** (यानी उन की जहालत पर आप ग़म न कीजिए जब उन की मौत का वक़्त आजाएगा असलीयत खुल जाएगी)(54) **क्या** (एक दम अज़ाब न आने पर) **ये लोग यह सोच रहे हैं कि हम उन को जो कुछ माल व औलाद देते हैं(55) तो हम उन को जल्दी-जल्दी फ़ाइदे पहुंचा रहे हैं,** (यह बात बिल्कुल नहीं) **बल्कि ये लोग** (इस ढील देने की वजह) **नहीं जानते** (यानी यह ढील तो आज़माने के लिए है क्योंकि हमारी ढील और मोहलत देने से ये और घमन्डी होकर सरकशी और गुनाह ज़्यादा करेंगे और अज़ाब ज़्यादा होगा)(56)

नोटः- आलिमों ने बताया कि हलाल खाने का नेक कामों में बड़ा दख़ल है जब खाना हलाल होता है तो नेक कामों की तौफ़ीक़ ख़ुद ही होने लगती है और खाना हलाल न हो तो नेक काम का इरादा करने के बावजूद भी नहीं कर पाते बल्कि ऐसी सूरत में कि खाना और लिबास हलाल न हो तो दुआ और इबादत भी क़ुबूल नहीं होती।

إِنَّ الَّذِينَ هُم مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾ وَالَّذِينَ هُم بِرَبِّهِمْ لَا
يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوا وَّقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾ أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ
وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ﴿٦١﴾ وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

आयत नं० 57 से 62

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग अपने रब के रौब से डरते रहते हैं(57) और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं(58) और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं मानते(59) और जो लोग (अल्लाह के रास्ते में) **देते हैं जो कुछ देते हैं और** (अल्लाह की राह में देने और ख़र्च करने के बावजूद) **उन के दिल इस बात से डरते हैं कि वो अपने रब के पास जाने वाले हैं** (देखिये वहां जाकर इन सदके़ ख़ैरात का क्या फल मिले कहीं ऐसा न हो कि हमारी किसी कमी की वजह से कु़बूल न हों)**(60) ये लोग भलाइयां पाने में जल्दी कर रहे हैं और वो उन** (भलाइयों) **की तरफ़ दौड़ रहे** (हैं जैसे आम लोग दुनिया के नफ़ों के पीछे दौड़ते और एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते) **हैं(61) और** (ये काम कुछ भारी नहीं जिन का करना मुश्किल हो क्योंकि) **हम किसी को उस की हिम्मत से ज़्यादा काम करने को नहीं कहते** (इसलिए ये सब काम आसान हैं और इसके साथ उन का अच्छा अन्जाम और फल यक़ीनी है क्योंकि) **हमारे पास एक दफ़्तर** (आमाल नामे का) **है जो ठीक-ठीक** (सब का हाल) **बता देगा और लोगों पर ज़रा** (भी) **जु़ल्म न होगा(62)**

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० कहते हैं कि हमने ऐसे लोग देखे हैं जो नेक काम करके इतना डरते थे कि तुम बुरे काम करके भी इतना नहीं डरते।

بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَ لَهُمْ اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ
بِالْعَذَابِ اِذَا هُمْ يَجْئَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَا تَجْئَرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فَكُنْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ ﴿٦٦﴾ مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ ﴿٦٧﴾ اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ
يَاْتِ اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦٨﴾ اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ بَلْ جَآءَهُمْ
بِالْحَقِّ وَ اَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَ لَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهِنَّ
بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧١﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّ هُوَ خَيْرُ
الرّٰزِقِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَ اِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٧٣﴾ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ
لَنٰكِبُوْنَ ﴿٧٤﴾ وَ لَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَ كَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَ لَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ
فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿٧٦﴾ حَتّٰٓى اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٧﴾

आयत नं० 63 से 77

(यह तो ऊपर मोमिनों की हालत सुनी मगर काफ़िर ऐसे नहीं हैं) **बल्कि** (इसके उलट) **इन काफ़िरों के दिल इस दीन की तरफ़ से जहालत** (और शक) **में** (डूबे हुए) **हैं और इस** (जहालत व इनकार) **के सिवा उन लोगों के और भी** (बुरे बुरे गन्दे) **काम हैं जिन को** (ये लगातार) **करते रहते हैं(63)** (और ये लोग शिर्क और बुरे कामों के बराबर आदी रहेंगे) **यहां तक कि जब हम उन के ख़ुशहाल** (और दौलतमन्द) **लोगों को** (मौत के बाद) **अज़ाब में पकड़ लेंगे** (और ग़रीब तो किस गिनती में हैं और वो तो अज़ाब से क्या बचाव कर सकते हैं बस जब उन पर अज़ाब आएगा) **तो एक दम चिल्ला उठेंगे(64)** (और सारा इनकार व घमन्ड निकल जाएगा कि जिस के अब आदी हैं उस वक़्त उन से कहा जाएगा कि) **अब मत चिल्लाओ** (कि कोई फ़ाइदा नहीं क्योंकि) **हमारी तरफ़ से तुम्हारी ज़रा भी मदद न** (होगी क्योंकि वो तो इन्साफ़ की जगह) **होगी(65)** (जहां गिड़गिड़ाना नफ़ा दे सकता था यानी दुनिया वहां तो तुम्हारा यह हाल था कि) **मेरी आयतें तुम को पढ़-पढ़ कर** (पैग़म्बर की ज़बान से) **सुनाई जाया करती थीं तो तुम उल्टे पांव भागते थे(66) घमन्ड करते हुए कुरआन का खेल बनाते हुए** (इस कुरआन की शान में) **बेहूदा बकते हुए** (कोई उस को जादू कहता कोई शेर शाइरी कहता बस जैसा दुनिया में किया वैसा भुगतो)(67) **क्या** (वजह है इस की जो ये लोग कुरआन और कुरआन लाने वाले को झुटला रहे हैं क्या) **इन लोगों ने इस** (अल्लाह के) **कलाम में सोचा नहीं** (जिससे इस की करामत का पता चल जाता और ये ईमान ले आते) **या** (झुटलाने की यह वजह है कि) **उनके पास कोई ऐसी चीज़ आई है जो उन के पहले बड़ों के पास नहीं आई थी** (यानी पैग़म्बरों के वास्ते से उम्मतों को सदा ये ही हुक्म दिये जाते रहे हैं)(68) **या** (झुटलाने की वजह यह है कि) **ये लोग अपने पैग़म्बर** (की सच्चाई व अमानत दारी) **को जानते ही न थे इस वजह से उनका इनकार कर रहे हैं** (लेकिन आप की सच्चाई और अमानतदारी को तो पहले से ही सब लोग मानते थे)(69) **या** (यह वजह है कि) **ये लोग** (नऊज़ुबिल्लाह) **आप के बारे में कहते हैं कि ये दीवाने** (हैं सो आप की समझदारी और अक़्लमन्दी को तो सब जानते और मानते) **हैं, बल्कि** (असली वजह यह है कि) **ये पैग़म्बर उन के पास हक़ बात लेकर आए हैं और इन में बहुत लोग हक़ बात से नफ़रत रखते** (हैं बस यह असल वजह है कि दीन में अपनी मर्ज़ी चलाना चाहते) **हैं(70) और** (मान लो जैसा वो चाहते हैं) **अगर दीने हक़ उन की मर्ज़ी मुवाफ़िक़ कर दिया जाता तो** (सारी दुनिया में कुफ़्र व शिर्क फैल जाता और उसका असर यह होता कि अल्लाह तआ़ला का गुस्सा सारी दुनिया पर उतरता जिससे) **सभी आसमान और ज़मीन और जो**

उनमें (आबाद) **हैं सब तबाह हो जाते** (जैसा क़ियामत में सभी इन्सानों में गुमराही फैल जाने की वजह से अल्लाह तआला का ग़ुस्सा सब पर होगा और सब कुछ हलाक हो जाएगा, और इन लोगों में सिर्फ़ ये ही एक ऐब नहीं कि हक़ से नफ़रत हो) **बल्कि** (इससे भी बढ़ कर यह कि हक़ पर चलना जो उन्हीं के नफ़े का सामान है उससे दूर भागते हैं बस) **हम ने उन के पास उन की नसीहत** (और नफ़े) **की बात भेजी सो ये लोग अपनी नसीहत से भी मुंह मोड़ते हैं**(71) **या** (उनके झुटलाने की यह वजह है कि उन को यह शक हुआ हो कि) **आप उनसे कुछ आमदनी चाहते हैं तो** (यह भी ग़लत है क्योंकि जब आप जानते हैं कि) **आप के रब का दिया हुआ सब से अच्छा है, और वो सब देने वालों से अच्छा है** (तो आप लोगों से क्यों मांगते)(72) **और** (निचोड़ उन की हालत का यह है कि) **आप तो उन्हें सीधे रास्ते की तरफ़** (यानी दीने हक़ की तरफ़) **बुला रहे हैं**(73) **और उन लोगों की जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते यह हालत है कि उस** (सीधे) **रास्ते से हटे जाते हैं**(74) **और** (उन की सख़्ती व हटधर्मी की यह हालत है कि) **अगर हम उन पर महरबानी कर दें और उनकी तकलीफ़ को हम दूर भी कर दें तो वो लोग** (फिर) **अपनी गुमराही में भटकते हुए** (सरकशी में) **जमे रहें** (और वो वादे जो मुसीबत में किये थे सब ख़त्म हो जाएं)(75) **और** (सुबूत इस का यह है कि कभी-कभी) **हम ने उन को अज़ाब में पकड़ा भी है तो** (उस वक़्त भी) **वो लोग न अपने रब के सामने** (पूरी तरह) **झुके और न गिड़गिड़ाए** (बस जब मुसीबत में भी नहीं झुके तो मुसीबत दूर होने के बाद क्या उम्मीद हो)(76) **यहां तक कि हम जब उन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल देंगे** (चाहे दुनिया ही में कि कोई बड़ी मुसीबत आजाए या मौत के बाद तो ज़रूर ही होगा) **तो उस वक़्त बिल्कुल हैरान रह जाएंगे** (कि यह क्या हो गया और सब नशा दूर हो जाएगा)(77)

नोटः- जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बद दुआ से मक्के में क़हत आया यानी अकाल का अज़ाब और लोग भूखे मरने लगे मुरदार खाने पर मजबूर हो गए तो अबू सुफ़ियान ने आप से दुआ की दरख़्वास्त की और वो अज़ाब दूर हो गया मगर लोग फिर भी अपने रब के सामने नहीं झुके और शिर्क व कुफ़्र पर उसी तरह जमे रहे।

وَهُوَ الَّذِیْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَ
اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّیْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ

مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ﴿۸۱﴾ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۸۲﴾ لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَ اٰبَآؤُنَا هٰذَا
مِنْ قَبْلُ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۸۳﴾ قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهَآ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۴﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ
قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿۸۶﴾ سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ﴿۸۷﴾ قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ وَّ هُوَ يُجِيْرُ وَ لَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۸﴾ سَيَقُوْلُوْنَ
لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ ﴿۸۹﴾ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۹۰﴾ مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّ مَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ
اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَ لَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۹۱﴾ عٰلِمِ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۹۲﴾

आयत नं० 78 से 92

और वो (अल्लाह) **ऐसा** (कुदरत वाला और नेमतें देने वाला) **है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए** (कि आराम भी बरतो और दीन को भी समझो, लेकिन) **तुम लोग बहुत ही कम शुक्र करते हो** (क्योंकि असली शुक्र यह था कि उस नेमतें देने वाले के पसन्दीदा दीन को मानते और दोबारा क़ियामत में ज़िन्दा करने का इनकार न करते)(78) **और वो ऐसा है जिसने तुम को ज़मीन में फैला रक्खा है और तुम सब** (क़ियामत में) **उसी के पास लाए जाओगे** (उस वक़्त इस नाशुक्री की असलीयत का पता लगेगा)(79) **और वो ऐसा है जो ज़िन्दगी और मौत देता है और उसी के बस में है रात और दिन का घटना बढ़ना, सो क्या तुम** (इतनी बात) **नहीं समझते** (कि ये दोनो कुदरत की निशानी तौहीद और क़ियामत में दूसरी ज़िन्दगी दोनो पर दलील हैं)(80) **बल्कि** (फिर भी नहीं मानते और) **ये भी वैसी ही बात कहते हैं जो पहले** (काफ़िर) **लोग कहते चले आए हैं**(81) (यानी) **यह कहते हैं कि क्या हम जब मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां रह जाएंगे तो क्या हम दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे**(82) **उस का तो हम से और** (हम से) **पहले हमारे बड़ों से वादा होता चला आया है यह कुछ भी नहीं सिर्फ़ बेसनद बातें** (और कहानियां) **हैं जो पहले लोगों से कही चली आती हैं**(83) **आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि** (अच्छा) **इस ज़मीन और इसमें बसने वालों का मालिक कौन है** (बताओ) **अगर तुम जानते हो**(84) **वो ज़रूर ये ही कहेंगे कि अल्लाह** (मालिक) **है,** (तो) **उन से कहिए कि फिर** (उसकी तौहीद और उस की कुदरत के बारे में) **क्यों नहीं सोचते**(85) (और) **आप यह भी कहिए कि**

(अच्छा यह बताओ कि) इन सात आसमानों का मालिक और आलीशान अर्श का मालिक कौन है(86) (उस का भी) वो ज़रूर ये ही जवाब देंगे कि यह भी (सब) अल्लाह का है, आप (उस वक़्त) कहिए कि फिर तुम (उससे) क्यों नहीं डरते (कि उस की क़ुदरत और आयतों का इनकार करते हो)(87) आप (उससे) यह भी कह दीजिए कि (अच्छा) वो कौन है कि हर चीज़ जिस के बस में है और वो (जिस को चाहता है) पनाह देता है और उसके मुक़ाबिले में कोई किसी को पनाह नहीं दे (सकता यानी वो जब किसी को नफ़ा या नुक़सान पहुंचाना चाहे तो कोई रोक नहीं) सकता (बताओ) अगर तुम कुछ जानते हो(88) (तब भी जवाब में) वो ज़रूर ये ही कहेंगे कि ये सब ख़ूबियां भी अल्लाह ही की हैं, आप (उस वक़्त) कहिए कि फिर तुम पर कैसा जादू हो गया (है कि इन सब बातों का इक़रार है और तौहीद व क़ियामत का इनकार) है(89) (और ये क़ियामत की बातें कहानियां नहीं हैं) बल्कि हम ने उन को सच्ची बात पहुंचाई है और बेशक ये (ख़ुद ही) झूटे हैं(90) (और) अल्लाह तआ़ला ने किसी को औलाद नहीं बनाया (जैसा कि मुशरिक लोग फ़रिशतों के बारे में कहते थे) और न उस के साथ कोई और ख़ुदा है अगर ऐसा होता तो हर ख़ुदा अपनी (बनाई) मख़लूक़ को (बान्ट कर) अलग कर लेता और (फिर दुनिया के बादशाहों की तरह दूसरे की मख़लूक़ छीनने के लिए) एक दूसरे पर चढ़ाई करता, (फिर कितनी तबाही होती लेकिन दुनिया ऐसे ही चल रही है इससे साबित हुआ कि) अल्लाह तआ़ला उन (गन्दी) बातों से पाक है जो ये लोग (उसके बारे में) बयान करते हैं(91) (वो अल्लाह) जानने वाला है सब छुपी और खुली बातों का बस वो उन लोगों के शिर्क से बहुत ऊपर है(92)

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِیَنِّیْ مَا یُوْعَدُوْنَ ﴿۹۳﴾ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِیْ فِی الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۹۴﴾ وَ اِنَّا عَلٰۤی اَنْ نُّرِیَكَ مَا نَعِدُهُمْ
لَقٰدِرُوْنَ ﴿۹۵﴾ اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ السَّیِّئَةَ ؕ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا یَصِفُوْنَ ﴿۹۶﴾ وَ قُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ
الشَّیٰطِیْنِ ﴿۹۷﴾ وَ اَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ ﴿۹۸﴾ حَتّٰۤی اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ﴿۹۹﴾ لَعَلِّیْۤ اَعْمَلُ
صَالِحًا فِیْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآىِٕلُهَا ؕ وَ مِنْ وَّرَآىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰی یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

आयत नं० 93 से 100

आप (अल्लाह तआ़ला से) दुआ़ कीजिए कि या रब मेरे जिस अज़ाब की धमकी इन काफ़िरों को दी जा रही है अगर आप मेरे सामने ले आएं(93) या रब मेरे (अगर ऐसा हुआ)

तो मुझ को उन ज़ालिम लोगों में शामिल न कीजिए(94) और यक़ीन जानो हम जिस बात की उन्हें धमकी दे रहे हैं उसे आप की आंखों के सामने लाने की पूरी क़ुदरत रखते हैं(95) (और जब तक उन पर अज़ाब न आए) **आप** (उनके साथ यह बरताव रखिए कि) **उन की बुराई को ऐसे बरताव से दूर कर दिया कीजिए जो बहुत ही अच्छा** (और नर्म) **हो,** (और आप अपने लिए बदला न लीजिए बल्कि हमारे हवाले कर दिया कीजिए) **हम अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ ये** (आप के बारे में) **कहा करते हैं(96) और** (अगर आप को कभी गुस्सा आ जाया करे तो उसे दूर करने के लिए) **आप यह दुआ किया कीजिए कि या रब मेरे मैं आप की पनाह मांगता हूं शैतानों के बहकाने से(97) और या रब मेरे मैं आप की पनाह मांगता हूं इससे कि शैतान मेरे पास भी आएं(98)** (और ये काफ़िर अपने कुफ़्र व हटधर्मी से बाज़ नहीं आते) **यहां तक कि जब उनमें से किसी** (के सर) **पर मौत आ**(खड़ी हो)**ती है** (और आख़रत दिखाई देने लगती है) **उस वक़्त** (आंखे खुलती हैं और अपनी जहालत और कुफ़्र पर पछता कर) **कहता है कि या रब मेरे** (मुझ से मौत को टाल दीजिए और) **मुझ को** (दुनिया में) **फिर वापिस भेज दीजिए(99) ताकि जिस** (दुनिया) **को मैं छोड़ आया हूं उसमें** (फिर जाकर) **नेक काम करूं** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (होगा), **यह** (उस की) **एक बात ही बात है जिस को यह कहे जा रहा है** (और पूरी होने वाली नहीं), **और** (वजह उस की यह है कि) **उन लोगों के आगे एक** (चीज़) **रूकावट** (की आने वाली) **है** (कि जिस का आना ज़रूरी है और वो ही दुनिया में वापिस आने से रूकावट है यानी मौत कि उस का वक़्त पर आना भी ज़रूरी और मौत के बाद दुनिया में लौट कर आना भी) **क़ियामत के दिन तक** (अल्लाह के क़ानून के ख़िलाफ़ है)(100)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मौत के वक़्त मोमिन जब रहमत के फ़रिशते और रहमत के सामान सामने देखने लगता है तो फ़रिशते उससे पूछते हैं कि क्या तुम चाहते हो कि फिर तुम्हें दुनिया में वापस कर दिया जाए तो वो कहता है कि मैं उस ग़मों और तकलीफ़ों की दुनिया में जाकर क्या करूंगा। मुझे तो अब अल्लाह के पास ले जाओ और काफ़िर से पूछते हैं तो वो कहता है मुझे दुनिया में लौटा दो। (इब्ने कसीर)

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَآ أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَآءَلُونَ ﴿١٠١﴾ فَمَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٢﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُۥ فَأُو۟لَٰٓئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَٰلِدُونَ ﴿١٠٣﴾ تَلْفَحُ وُجُوهَهُمُ

النَّارُ وَهُمْ فِيهَا كٰلِحُونَ ۝١٠٤ أَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِي تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝١٠٥ قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا
شِقْوَتُنَا وَ كُنَّا قَوْمًا ضَآلِّينَ ۝١٠٦ رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظٰلِمُونَ ۝١٠٧ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيهَا وَ لَا
تُكَلِّمُونِ ۝١٠٨ إِنَّهٗ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَ ارْحَمْنَا وَ أَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١٠٩
فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَ كُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ ۝١١٠ إِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْٓا
أَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝١١١ قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ۝١١٢ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ
الْعَآدِّيْنَ ۝١١٣ قٰلَ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١٤ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّ أَنَّكُمْ إِلَيْنَا
لَا تُرْجَعُوْنَ ۝١١٥

आयत नं० 101 से 115

फिर जब (क़ियामत का दिन होगा और) **सूर फूंका जाएगा तो** (ऐसे डरे होंगे कि) **उन में** (जो) **रिशते नाते** (थे) **उस दिन** (जैसे वो भी) **न रहेंगे** (यानी कोई किसी की हमदर्दी न करेगा जैसे अन्जान-अन्जान होते हैं) **और न कोई किसी को पूछेगा** (कि भाई तुम किस हाल में हो यानी न रिशता नाता काम आएगा न दोस्ती और जान पहचान बस वहां ईमान काम आएगा बस कोई किसी के काम न आए यह हालत काफ़िरों की होगी और वहां अक़ीदों व नेकियों को तौला जाएगा)(101) **सो जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **भारी होगा** (यानी वो मोमिन होगा) **तो ऐसे लोग कामयाब होंगे** (यानी बख़्शे जाएंगे और न उन को डर दहशत होगी)(102) **और जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **हल्का होगा** (यानी वो काफ़िर होगा) **सो ये लोग वो होंगे जिन्होंने अपना नुक़सान कर लिया और जहन्नम में सदा के लिए रहेंगे(103) उन के चेहरों को** (उस जहन्नम की) **आग झुलसती होगी और उस** (जहन्नम) **में उन की सूरतें बिगड़ जाएंगी(104)** (और उन से पूछा जाएगा कि) **क्यों क्या मेरी आयतें** (दुनिया में) **तुम को पढ़ कर सुनाई नहीं जाया करतीं थीं और तुम उन को झुटलाया करते थे** (यह उस की सज़ा मिल रही है)(105) **वो कहेंगे कि या रब हमारे** (सचमुच) **हमारी बदनसीबी ने हम को** (हमारे हाथों) **घेर लिया था और** (बेशक) **हम गुमराह लोग थे** (यानी हम जुर्म का इक़रार करते और उस पर पछताते हैं)(106) **या रब हमारे हम को इस** (जहन्नम) **से** (अब) **निकाल दीजिए** (और दोबारा दुनिया में भेज दीजिए) **फिर अगर हम दोबारा** (ऐसा) **करें तो हम बेशक क़ुसूरवार हैं** (उस वक़्त हम को ख़ूब सज़ा दीजिए और अब छोड़ दीजिए)(107) **कहा जाएगा कि इसी** (जहन्नम) **में ज़लील होकर पड़े रहो और मुझ से बात मत**

करो(108) (क्या तुम को याद नहीं रहा कि) **मेरे बन्दों में एक गिरोह** (ईमान दारों का) **था जो** (बेचारे हम से) **दुआ किया करते थे कि या रब हमारे हम ईमान ले आए सो हम को मुआफ़ कर दीजिए और हम पर रहम कीजिए और आप सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाले हैं**(109) **सो तुम ने** (सिर्फ़ इस बात पर जो हर तरह क़द्र के क़ाबिल थी) **उन का मज़ाक़ बनाया** (और) **यहां तक** (उस का खेल बनाया) **कि उन की** (साथ) **छेड़** (छाड़) **ने तुम को हमारी याद भी भुला दी और तुम उन से हंसी किया करते थे**(110) (सो उन का तो कुछ न बिगड़ा कुछ दिन की तकलीफ़ थी कि सब्र करना पड़ा जिस का यह नतीजा मिला कि) **मैंने उन को आज उन के सब्र का यह बदला दिया कि वो ही कामयाब हुए** (और तुम इस नाकामी में पकड़े गये मतलब जवाब का यह हुआ कि तुम्हारा क़ुसूर इस क़ाबिल नहीं कि सज़ा के वक़्त इक़रार करने से मुआफ़ कर दिया जाए)(111) **कहा जाएगा** (उन दोज़ख़ियों से) **कि** (अच्छा यह बताओ कि) **कि तुम सालों की गिनती** (के हिसाब) **से कितना ज़माना ज़मीन में रहे होंगे**(112) (वहां की मुसीबत को देख कर) **वो जवाब देंगे कि** (साल कैसे बहुत रहे होंगे तो) **एक दिन या एक दिन से भी कम रहे होंगे** (और सच यह है कि हम को याद नहीं) **सो गिनने वालों से** (यानी फ़रिशतों से कि कामों और उम्रों का हिसाब करते थे उन से) **पूछ लीजिए**(113) **कहा जाएगा कि** (एक दिन या उससे भी कम तो ग़लत है मगर इतना तो तुम्हारे इक़रार से भी साबित हो गया जो कि सही है कि) **तुम** (दुनिया में) **थोड़ी ही मुद्दत रहे** (लेकिन) **क्या अच्छा होता कि तुम** (यह बात उस वक़्त) **समझते होते** (कि हम को यहां थोड़े ही दिनों रहना है फिर सदा के लिए कहीं और जाना है और हिसाब देना है)(114) **हां तो क्या तुम ने यह सोचा था कि हम ने तुम को यूं ही बेकार** (बेमतलब) **पैदा कर दिया है और यह** (सोचा था) **कि तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे**(115)

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन जिस वक़्त महशर में सब पियासे होंगे तो मुसलमान बच्चे जो नाबालिग़ी की हालत में मर गये थे वो जन्नत का पानी लिए हुए निकलेंगे लोग उन से पानी मांगेंगे तो वो कहेंगे कि हम तो अपने मां बाप को तलाश कर रहे हैं यह पानी उनके लिए है।

(मज़हरी)

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿۱۱۶﴾ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ لَهٗ
بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ ع

आयत नं० 116 से 118

(और ये सब बातें जब जान चुके) **तो** (इससे यह पूरी तरह साबित हो गया कि) **अल्लाह तआ़ला बहुत ही ऊंची शान वाला है जो कि बादशाह** (है और बादशाह भी) **सच्चा है, उसके सिवा कोई भी इबादत के लाइक़ नहीं** (और वो) **इ़ज़्ज़त वाले अर्श का मालिक है**(116) **और जो आदमी** (यह बात साबित हो जाने के बाद) **अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और माबूद की भी इबादत करे कि जिस** (के माबूद होने) **पर उस के पास कोई भी दलील नहीं तो उस का हिसाब उसके रब के यहां होगा,** (जिस का नतीजा यह होना है कि) **बेशक काफ़िरों को कामयाबी न होगी** (बल्कि सदा-सदा अज़ाब में रहेंगे)(117) **और** (जब अल्लाह तआ़ला की यह शान है तो) **आप** (और दूसरे लोग भी दुआ़ में) **यह कहा करें कि या रब मेरे** (मेरी खताएं) **मुआफ़ कर दीजिए और** (हर हालत में मुझ पर) **रहम कीजिए** (रोज़गार में भी, ताबेदारी की तौफ़ीक़ में भी, आख़रत की मुआफ़ी में भी और जन्नत देने में भी) **और आप सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाले हैं**(118)

नोटः- यह दुआ "रब्बिग़्फ़िर वरहम व अन्तॣ ख़ैरूर्राहिमीन" असल में उम्मत को सिखाने के लिए है वर्ना नबी तो मासूम और सरापा रहमत के साय में हैं।

24-सूरत-नूर

इस मदनी सूरत में '9' रूकू और '102' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سُوۡرَۃٌ اَنۡزَلۡنٰہَا وَ فَرَضۡنٰہَا وَ اَنۡزَلۡنَا فِیۡہَاۤ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍ لَّعَلَّکُمۡ تَذَکَّرُوۡنَ ﴿۱﴾ اَلزَّانِیَۃُ وَ الزَّانِیۡ فَاجۡلِدُوۡا کُلَّ وَاحِدٍ مِّنۡہُمَا مِائَۃَ جَلۡدَۃٍ ۪ وَّ لَا تَاۡخُذۡکُمۡ بِہِمَا رَاۡفَۃٌ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰہِ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ ۚ وَ لۡیَشۡہَدۡ عَذَابَہُمَا طَآئِفَۃٌ مِّنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۲﴾

आयत नं० 01 से 02

यह एक सूरत है जिस को हम ने उतारा है और इस (के हुक्मों) **को** (भी) **हम** (ही) **ने तय किया है** (चाहे वो फ़र्ज़ या वाजिब हों या मुस्तहब) **और हम ने** (इन हुक्मों के सबूत में) **इस** (सूरत) **में साफ़-साफ़ आयतें उतारी हैं ताकि तुम समझो** (और अमल करो)(01) **बदकारी करने वाली औरत और बदकारी करने वाला मर्द** (दोनों का हुक्म यह है कि) **उन में से हर एक के सौ-सौ कोड़े मारो, और तुम लोगों को उन दोनो पर अल्लाह के दीन के बारे में तरस न आना चाहिए** (कि तरस खाकर छोड़ दो या सज़ा में कमी कर दो) **अगर तुम अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान रखते हो, और दोनो की सज़ा के वक़्त मुसलमानों का एक मजमा मौजूद रहना चाहिए** (ताकि उन की रूसवाई हो और देखने सुनने वालों को नसीहत हो)(02)

नोटः- सौ कोड़े मारने का हुक्म कुंवारे मर्द व कुंवारी औरत के लिए है शादी शुदा मर्द व शादी शुदा औरत की सज़ा पथराव करके जान से मार देना है जो हदीस से साबित है।

اَلزَّانِیۡ لَا یَنۡکِحُ اِلَّا زَانِیَۃً اَوۡ مُشۡرِکَۃً ۫ وَّ الزَّانِیَۃُ لَا یَنۡکِحُہَاۤ اِلَّا زَانٍ اَوۡ مُشۡرِکٌ ۚ وَ حُرِّمَ ذٰلِکَ عَلَی الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۳﴾ وَ الَّذِیۡنَ یَرۡمُوۡنَ الۡمُحۡصَنٰتِ ثُمَّ لَمۡ یَاۡتُوۡا بِاَرۡبَعَۃِ شُہَدَآءَ فَاجۡلِدُوۡہُمۡ ثَمٰنِیۡنَ جَلۡدَۃً وَّ لَا

تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۙ﴿۴﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْا ۚ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵﴾

आयत नं० 03 से 05

(बदकारी ऐसी गन्दी चीज़ है उससे इन्सान का मन ही ख़राब हो जाता है उस का लगाव बुरी ही चीज़ की तरफ़ हो जाता है ऐसे आदमी की तरफ़ झुकाव ऐसे ही आदमी का हो सकता है जो बिगड़ा हुआ हो इसलिए) **बदकार मर्द** (अपनी बदकारी की वजह से) **निकाह भी किसी के साथ** (पसन्द) **नहीं करता सिवाए बदकार या मुशरिक औरत के, और** (इसी तरह) **बदकार औरत के साथ भी और कोई निकाह** (पसन्द) **नहीं करता सिवाए बदकार या मुशरिक मर्द के, और यह** (ऐसा निकाह जिस का नतीजा आगे भी बदकारी में पड़े रहना हो या किसी मुशरिक औरत के साथ हो) **मुसलमानों पर हराम** (और गुनाह) **किया गया है** (लेकिन अगर कोई बदकार से निकाह कर ले तो निकाह तो हो जाएगा मगर गुनाह होगा और मुशरिक से निकाह ही नहीं होगा)(03) **और जो लोग** (बदकारी का) **झूटा इलज़ाम लगाएं पाक दामन औरतों को** (जिन का बदकार होना किसी दलील से साबित नहीं) **और फिर चार गवाह** (अपने दावे पर) **न ला सकें तो ऐसे लोगों को अस्सी कोड़े लगाओ और उनकी कोई गवाही कभी न मानो** (यह भी झूटा इल्ज़ाम लगाने ही का हिस्सा है कि वो सदा के लिए गवाही के क़ाबिल न होंगे यह तो दुनिया की सज़ा का ज़िक्र था) **और ये लोग** (आख़रत में भी सज़ा के हक़दार हैं क्योंकि) **फ़ासिक़** (यानी बड़े गुनाहगार) **हैं**(04) **लेकिन जो लोग उस के बाद** (अल्लाह के सामने) **तौबा करलें** (क्योंकि झूटा इल्ज़ाम लगाने में उन्होंने अल्लाह की नाफ़रमानी की) **और** (जिस पर इल्ज़ाम लगाया था उससे मुआफ़ कराकर भी) **अपना सुधार करलें** (क्योंकि उस को दुख पहुंचाया था) **तो अल्लाह तआला ज़रूर मुआफ़ करने वाले रहमत करने वाले हैं** (यानी सच्ची तौबा करने से आख़रत की सज़ा मुआफ़ हो जाएगी लेकिन दुनिया की सज़ा बाक़ी रहेगी(05)

नोटः- जिस पर झूटा इल्ज़ाम लगाया गया था अगर वो मुआफ़ कर दे तो झूटा इलज़ाम लगाने वाले की सज़ा मुआफ़ हो जाएगी। मगर बदकारी करने वालों की सज़ा मुआफ़ नहीं हो सकती।

وَ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ
لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۶﴾ وَ الْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۷﴾ وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ

تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۸﴾ وَ الْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَاۤ اِنْ كَانَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿۹﴾ وَ لَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰﴾

आयत नं० 06 से 10

और जो लोग अपनी बीवियों पर (बदकारी का) **इलज़ाम लगाएं और उनके पास सिवाए अपने** (ही दावे के) **और कोई गवाह न हों** (जो गिनती में चार होने ज़रूरी हैं) **तो उन की गवाही ये ही है कि चार बार अल्लाह की क़सम खाकर यह कहदे कि बेशक मैं सच्चा हूं(06) और पांचवी बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह की फिटकार हो अगर मैं झूटा हूं(07) और** (उसके बाद) **उस औरत से** (बदकारी की) **सज़ा इस तरह टल सकती है कि वो चार बार क़सम खा कर कहे कि बेशक यह मर्द झूटा है(08) और पांचवी बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर यह मर्द सच्चा हो** (इस तरह से दोनों मियां बीवी दुनिया की सज़ा से बच सकते हैं लेकिन उन में जो झूटा होगा आख़रत की सज़ा उस पर बढ़ जाएगी और वो औरत उस मर्द पर हराम हो जाएगी और इस क़सम खिलवाने को लिआन कहते हैं)**(09) और अगर तुम पर अल्लाह तआ़ला का करम और महरबानी न होती और यह** (बात न होती) **कि अल्लाह तआ़ला तौबा क़ुबूल करने वाले हिकमत वाले हैं तो तुम बड़े नुक़सान में पड़ जाते(10)**

नोटः- जब दो मियां बीवी के बीच हाकिम के सामने लिआन हो जाए तो यह औरत उस मर्द पर सदा के लिए हराम हो जाती है फिर कभी भी उन का निकाह नहीं हो सकता।

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ؕ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ؕ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا
اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَ الَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۱﴾ لَوْ لَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ
الْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّ قَالُوْا هٰذَاۤ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۲﴾ لَوْ لَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا
بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ
فِيْ مَاۤ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَ تَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّ
تَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۖۗ وَّ هُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ﴿۱۵﴾ وَ لَوْ لَاۤ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۖۗ

سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖۤ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷﴾ وَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ
فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَ اَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ وَ اَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ
رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَ
الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۱﴾ وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ السَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِي الْقُرْبٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ الْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَ لْيَعْفُوْا وَ لْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ
الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ ۪ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۲۳﴾ يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ
اَلْسِنَتُهُمْ وَ اَيْدِيْهِمْ وَ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾ يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿۲۵﴾ اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَ الْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ ۚ وَ الطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَ الطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ
اُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 11 से 26

नोटः- एक बार सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी हज़रत आइशा रज़ि० उनके साथ थी एक रात रास्ते में जब क़ाफ़िला ठहरा और सब अपनी-अपनी ज़रूरत पूरी करने के बाद चले उस वक़्त हज़रत आइशा इस्तन्जे के लिए ज़रा दूर गई हुई थीं और पालकी उठाने वालों ने समझा कि वो पालकी में हैं और हज़रत आइशा बदन में बहुत हल्की थीं इसलिए उठाने वालों को सही अन्दाज़ा न हुआ और पालकी ऊंट पर रख दी और क़ाफ़िला रवाना हो गया कुछ देर बाद पता चला कि हज़रत आइशा पालकी में नहीं हैं तो क़ाफ़िला ठहर गया। उधर हज़रत आइशा ज़रूरत पूरी होने के बाद वापस आईं तो क़ाफ़िला न देख कर वहीं रूक गईं कि उन की तलाश में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा को यहीं भेजेंगे। पीछे से हज़रत सफ़वान रज़ि० आगये जो पीछे चलते थे कि किसी की कोई चीज़ रह जाए तो उठा लाएं वो हज़रत आइशा को इज़्ज़त के साथ लेकर क़ाफ़िले में आमिले। इस थोड़ी देर के बिछुड़ने को लेकर कुछ दुशमन मुनाफ़िक़ों ने बुरी बातें उड़ानी शुरू कीं और धोके में आकर कुछ भोले भाले मुसलमान भी साथ लग गये वो

भी उन बातों का चर्चा करने लगे इन बातों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को और मुसलमानों को बहुत दुःख हुआ इस पर ये आयतें उतरी जिन में हज़रत आइशा का पाक साफ़ होना बयान किया गया है:-

जिन लोगों ने (हज़रत आइशा के बारे में) **यह तूफ़ान उठाया है** (ऐ मुसलमानो) **वो तुम में का एक** (छोटा सा) **गिरोह है, तुम इस** (बात) **को अपने हक़ में बुरा न समझो** (भले ही यह ग़म की बात है मगर असल में इससे तुम्हारा नुक़सान नहीं), **बल्कि यह** (अन्जाम कार) **तुम्हारे हक़ में बेहतर ही बेहतर** (है क्योंकि इस ग़म से तुम को सब्र का सवाब मिला तुम्हारे दर्जे बढ़े और जिन पर झूटा इल्ज़ाम लगाया गया उनके पाक साफ़ होने के सबूत में आयतें उतरीं बल्कि उन चर्चा करने वालों का नुक़सान हुआ) **है,** (कि) **उनमें से हर आदमी को जितना किसी ने कुछ किया था गुनाह** (हुआ जैसे ज़बान से कहने वालों को ज़्यादा गुनाह और सुन कर चुप रह जाने वालों को या दिल से शक करने वालों को उसके हिसाब से गुनाह) **हुआ, और उनमें जिस ने उस** (तूफ़ान के फैलाने) **में सब से बड़ा हिस्सा लिया** (कि उस को घड़ा यानी अब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़) **उस को** (सब से बढ़ कर) **सख़्त सज़ा होगी** (यानी जहन्नम का अज़ाब)(11) **जब तुम लोगों ने यह बात सुनी थी तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने अपने आपस वालों के बारे में** (यानी हज़रत आइशा और उन सहाबी के बारे में दिल से) **भली बात क्यों न सोची और** (ज़बान से) **यह क्यों न कहा कि यह खुला झूट है** (जैसा कि दूसरे सहाबा ने कहा)(12) **ये** (झूटा इल्ज़ाम लगाने वाले) **लोग उस** (अपने बयान) **पर चार गवाह क्यों न लाए** (जो कि बदकारी के सबूत के लिए शर्त है), **सो अब तक कि ये लोग** (क़ाइदे के मुवाफ़िक़) **गवाह नहीं लाए तो बस अल्लाह के** (क़ानून के) **नज़दीक झूटे हैं**(13) **और** (आगे इल्ज़ाम लगाने वालों में जो मोमिन थे उन पर भी रहमत का ज़िक्र है कि) **अगर तुम पर अल्लाह तआला की महरबानी और रहमत न होती दुनिया में** (भी कि तौबा की मोहलत दी) **और आख़रत में** (भी कि तौबा की तौफ़ीक़ दी और उस को क़ुबूल भी कर लिया अगर यह न होता) **तो जिन बातों में तुम पड़ गये थे उस की वजह से तुम पर** (उस वक़्त) **सख़्त अज़ाब आ जाता**(14) **जब कि तुम उस** (झूट बात) **को अपनी ज़बानों से एक दूसरे से कह रहे थे और अपने मुंह से ऐसी बात कह रहे थे जिस की तुम को** (किसी दलील से) **कोई ख़बर नहीं** (और ऐसी बात कहने वाला झूटा होता है) **और तुम उस को हलकी बात समझ रहे थे जब कि वो अल्लाह के नज़दीक बहुत भारी** (यानी बहुत बड़े गुनाह की) **बात थी**

(एक तो किसी पाक दामन औरत पर बदकारी का इल्ज़ाम लगाना अपने आप में बड़ा गुनाह है फिर वो भी कौन हुज़ूर की पाक बीबियों में से कि उन पर झूटा इल्ज़ाम लगाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ देना बस इस में बहुत से गुनाह जमा हो गये थे)(15) **और तुम ने जब इस बात को** (पहली बार) **सुना था तो यह क्यों न कहा कि हमें ऐसी बात मुंह से नहीं निकालनी चाहिए अल्लाह की पनाह यह तो बड़ा बोहतान** (यानी झूटा इलज़ाम) **है** (जैसा कि कुछ सहाबा ने इसी तरह कहा था)(16) **अल्लाह तआला तुम को नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना अगर तुम ईमान वाले हो(17) और अल्लाह तआला तुम से साफ़-साफ़ हुक्म बयान करता है, और अल्लाह तआला बड़ा जानने वाला हिकमत वाला है** (तुम्हारे दिल के पछतावे को भी जानता है इसलिए तौबा क़ुबूल करली और सियासत की हिकमत भी ख़ूब जानता है इसलिए तुम्हें दुनिया में सज़ा दी गई)(18) **जो लोग** (इन आयतों के उतरने के बाद भी) **चाहते हैं** (यानी इस की कोशिश करते हैं) **कि बेहयाई की बात का मुसलमानों में चर्चा हो** (यानी यह ख़बर फैले कि इन मुसलमानों में बेहयाई की बात है मतलब यह कि जो लोग इन पाक हस्तियों के बारे में बदकारी की बात करते हैं) **उन के लिए दुनिया व आख़रत में दर्दनाक सज़ा** (तय) **है, और** (इस बात पर सज़ा का अचम्भा मत करो क्योंकि) **अल्लाह तआला जानता है** (कि कौन गुनाह किस दर्जे का है) **और तुम** (इस की असलीयत पूरी) **नहीं जानते(19) और** (ऐ तौबा करने वालो) **अगर यह बात न होती कि तुम पर अल्लाह तआला की महरबानी व रहमत है** (जिसने तुम को तौबा की तौफ़ीक़ दी) **और यह कि अल्लाह बड़ा नर्मी करने वाला रहमत वाला है** (जिस ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल करली) **तो तुम भी** (इस धमकी से) **न बचते(20) ऐ ईमान वालो तुम शैतान के पीछे मत चलो** (यानी उसके बहकाने में न आओ), **और जो आदमी शैतान के पीछे चलता है तो वो** (सदा हर आदमी को) **बेहयाई और बुराई ही का काम करने को कहेगा** (जैसा इस क़िस्से में तुम ने देख लिया), **और अगर तुम पर अल्लाह तआला की महरबानी और रहमत न होती तो तुम में से कोई कभी भी** (तौबा करके) **पाक साफ़ न होता** (या तो तौबा की तौफ़ीक़ ही न होती जैसा मुनाफ़िक़ों को न हुई और या तौबा क़ुबूल न की जाती क्योंकि कोई चीज़ हमारे ज़िम्मे तो है नहीं) **लेकिन अल्लाह तआला जिस को चाहता है** (तौबा की तौफ़ीक़ देकर) **पाक व साफ़ कर देता है, और अल्लाह तआला सब कुछ सुनता सब कुछ जानता** (है बस तुम्हारी तौबा सुन ली और तुम्हारे पछतावे को जान लिया इसलिए महरबानी की) **है(21) और** (आगे इस का बयान है कि कुछ सहाबा ने जिनमें हज़रत आइशा के वालिद हज़रत अबूबक्र रज़ि० भी हैं गुस्से की हालत में क़सम खाली कि जिस जिस ने यह चर्चा किया है

जिनमें बहुत ग़रीब भी थे उन को अब किसी क़िस्म की माली मदद न करेंगे अल्लाह तआ़ला उन को मुआफ़ करने और मदद जारी कर देने को कहते हैं कि) **जो लोग तुम में बड़े दर्जे वाले और गुन्जाइश वाले हैं वो रिश्तेदारों को और ग़रीबों को और अल्लाह के रास्ते में हिजरत करने वालों को कुछ न देने की क़सम न खा बैठें** (यानी अगर ऐसी क़सम खाली है तो उस पर जमे न रहें बल्कि तोड़ दें) **और चाहिए कि मुआफ़ कर दें और दरगुज़र से काम लें, क्या तुम यह बात नहीं चाहते कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे क़ुसूर मुआफ़ कर दे** (सो तुम भी अपने क़ुसूरवारों को मुआफ़ कर दो) **बेशक अल्लाह तआ़ला मुआफ़ करने वाले रहम करने वाले है(22)** (आगे मुनाफ़िक़ों को धमकी है यानी) **जो लोग** (आयतों के उतर जाने के बाद बदकारी का) **झूटा इलज़ाम लगाते हैं उन औरतों पर जो पाक दामन हैं** (और) **ऐसी बातों** (के करने और उसके इरादे) **से** (भी) **अन्जान हैं और ईमान वाली** (हैं और जिन की पाकी क़ुरआन से साबित हो चुकी है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सभी बीवियां पाक हैं उन पर इलज़ाम लगाने वाले मुनाफ़िक़ और काफ़िर हो सकते) **हैं उन पर दुनिया और आख़रत में लानत की जाती है** (यानी ऐसे लोग काफ़िर हैं), **और उन को** (आख़रत में) **बड़ा अज़ाब होगा(23) जिस दिन उन के ख़िलाफ़ उन की ज़बानें गवाही देंगी और उन के हाथ और उनके पैर भी** (गवाही देंगे) **उन कामों की जो कि ये लोग किया करते थे(24) उस दिन अल्लाह तआ़ला उन को वो बदला पूरा-पूरा देगा जिस के वो हक़दार हैं और** (उस दिन ठीक-ठीक) **उन को पता चल जाएगा कि अल्लाह ही ठीक फ़ैसला करने वाला** (और) **बात** (की असलीयत) **को खोल देने वाला है(25) गन्दी औरतें गन्दे मर्दों के लाइक़ होती हैं और गन्दे मर्द गन्दी औरतों के लाइक़ होते हैं और पाक साफ़ औरतें पाक साफ़ मर्दों के लाइक़ होती हैं और पाक साफ़ मर्द पाक साफ़ औरतों के लाइक़ होते हैं** (और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हर चीज़ आप के लाइक़ ही दी गई है और वो पाक ही चीज़ें हैं तो ज़रूर आप की बीवी भी पाक हैं उन के बारे में शक वो ही कर सकता है जिस का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न हो इसी से साबित हुआ कि हज़रत सफ़वान भी बेक़ुसूर हैं इसी लिए आगे बताया जाता है कि) **ये** (पाक हस्तियां) **उस बात से पाक हैं जो ये** (मुनाफ़िक़) **बकते फिरते हैं, उन** (हस्तियों) **के लिए** (आख़रत में) **मुआफ़ी और इ़ज़्ज़त की रोज़ी** (यानी जन्नत) **है(26)।**

नोटः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि किसी नबी की औरत ने कभी बदकारी नहीं की।

(दुर्रे मन्सूर)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَ تُسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَهْلِهَا ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَاۤ اَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَ اِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا
فَارْجِعُوْا هُوَ اَزْكٰى لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ﴿۲۸﴾ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ
فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۲۹﴾

आयत नं० 27 से 29

ऐ ईमान वालो तुम अपने (ख़ास रहने के) **घरों के सिवा दूसरे घरों में मत जाओ** (जिनमें दूसरे लोग रहते हों चाहे वो उन के अपने हों या किराए पर लिए हों) **जब तक इजाज़त न लेलो और** (इजाज़त लेने से पहले) **उन के रहने वालों को सलाम न कर लो** (यानी पहले बाहर से सलाम करके फिर उन से पूछो कि क्या हमें अन्दर आने की इजाज़त है और बिना इजाज़त लिए वैसे ही मत घुस जाओ, चाहे कुछ लोग इजाज़त लेने को अपनी शान के ख़िलाफ़ समझें लेकिन असलीयत में) **ये ही** (तरीक़ा) **तुम्हारे लिए बेहतर है** (कि इजाज़त लेकर जाओ और यह बात तुम को इसलिए बताई) **ताकि तुम ध्यान रक्खो** (और इस पर अमल करो कि इसमें बड़ी भलाइयां छुपी हैं)(27) **फिर अगर उन घरों में तुम कोई आदमी न पाओ** (चाहे असलीयत में वहां कोई हो या न हो) **तो** (भी) **उन घरों में** (उस वक़्त तक) **न जाओ जब तक तुम को इजाज़त न मिल जाए** (क्योंकि बिना इजाज़त किसी के ख़ाली मकान में घुस जाना भी नाजाइज़ है), **और अगर** (इजाज़त मांगने के वक़्त) **तुम से यह कह दिया जाए कि** (इस वक़्त) **लौट जाओ तुम लौट आया करो ये ही** (तरीक़ा) **तुम्हारे लिए बेहतर है** (यानी न वहां पर इन्तिज़ार में ठहरो और न ही मना करने का बुरा मानो), **और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की ख़बर** (है अगर हुक्म के ख़िलाफ़ करोगे सज़ा पाओगे और ये ही हुक्म उस सूरत का है कि घर वालों ने चाहे लौट जाने को नहीं कहा मगर कोई बोला भी नहीं ऐसी हालत में तीन बार इजाज़त लेने पर कोई जवाब न आए तो लौट आना चाहिए जैसा कि हदीस में आया) **है**(28) (और) **तुम को ऐसे मकानों में** (बिना ख़ास इजाज़त के) **चले जाने में गुनाह न होगा जिन में** (घर की तरह) **कोई न रहता हो** (और) **उन में तुम्हारी ज़रूरत पूरी होती** (हो यानी उन मकानों के बरतने का तुम्हें हक़) **हो, और तुम जो कुछ ऐलानिया करते हो या छुपा कर करते हो अल्लाह तआ़ला सब जानता** (है इसलिए हर हाल में परहेज़गारी और अल्लाह का डर ज़रूरी) **है**(29)

नोटः- मर्दों की तरह औरतों को भी किसी घर में जाने से पहले इजाज़त लेना चाहिए भले ही उस घर में औरतें ही मौजूद हों। और अगर इजाज़त न मिले बल्कि यह कहा जाए कि इस वक़्त लौट जाइये तो लौट जाएं बुरा नहीं मानना चाहिए।

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿۳۰﴾
وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ يَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ
لْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۪ وَ لَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اٰبَآئِهِنَّ اَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ
اَبْنَآئِهِنَّ اَوْ اَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ اَوْ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اِخْوَانِهِنَّ اَوْ بَنِيْۤ اَخَوٰتِهِنَّ اَوْ نِسَآئِهِنَّ اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُنَّ اَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ اُولِي الْاِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ اَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۪ وَ لَا
يَضْرِبْنَ بِاَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ؕ وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾

आयत नं० 30 से 31

आप मुसलमान मर्दों से कह दीजिए कि अपनी नज़रें नीचे रक्खें (कि किसी को बुरी नीयत से न देखें और जिस चीज़ को देखना नाजाइज़ है उसे बिल्कुल न देखें) **और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त** (करें यानी बदकारी के काम न) **करें, यह उनके लिए ज़्यादा सफ़ाई की बात** (है और इसके ख़िलाफ़ करने में गन्दगी) **है, बेशक अल्लाह तआ़ला को सब ख़बर है जो कुछ लोग किया करते हैं** (बस ख़िलाफ़ करने वाले सज़ा पाने के हक़दार होंगे)(30) **और** (इसी तरह) **मुसलमान औरतों से कह दीजिए कि** (वो भी) **अपनी नज़रें नीची रक्खें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपनी सजावट** (किसी को) **न दिखाएं** (यानी बदन के उन हिस्सों को छुपाएं जो देखने वालों के दिल पर असर करते हैं) **सिवाए उस** (हिस्से) **के जो** (अकसर) **खुला** (ही) **रहता है** (जिसके हर वक़्त छुपाने में हरज है जैसे हाथ पैर और महरमों के सामने चेहरा भी) **और** (ख़ास कर सर और सीना ढकने का बहुत ध्यान रक्खें और) **अपने दुपट्टे** (जो सर के ढकने के लिए हैं) **अपने सीनों पर** (भी) **डाले रहा करें** (यानी दुपट्टा ऐसे ओढ़ें कि सर व सीना ढक जाए), **और अपनी सजावट** (के हिस्से) **को** (किसी को) **न दिखाएं** (यानी सबसे पर्दा करें) **सिवाए अपने शौहरों के या**

(अपने महरमों के यानी) **अपने बाप या अपने शौहर के बाप के या अपने बेटों या अपने शौहर के बेटों के** (जो दूसरी बीवियों से हों) **या अपने भाइयों के** (जो अपने मां बाप से हों न कि चचा ज़ाद या मामू ज़ाद भाई) **या अपने** (उन) **भाइयों के बेटों के या अपनी** (सगी) **बहनों के बेटों के या अपनी** (दीन शरीक यानी मुसलमान) **औरतों के** (क्योंकि काफ़िर औरतों का हुक्म अजनबी मर्दों जैसा है) **या अपनी बान्दियों के** (चाहे वो काफ़िर ही हों) **या** (घरों में) **काम करने वाले उन मर्दों के जिन को** (कम समझ होने की वजह से औरतों की बातों की तरफ़) **ध्यान न हो या ऐसे लड़कों के जो औरतों के पर्दों की बातों से अभी अन्जान हैं** (यानी जो बच्चे अभी बालिग़ होने के नज़दीक नहीं पहुंचे और उन्हें उन बातों की कुछ ख़बर नहीं बस उन से पर्दा न करना भी जाइज़ है और शौहर के सामने किसी जगह का भी छुपाना वाजिब नहीं हां ख़ास बदन को देखना अच्छा नहीं), **और** (पर्दे का यहां तक ध्यान रक्खें कि चलने में) **अपने पांव ज़ोर से न रक्खें कि उनके छुपे ज़ेवर का पता चल जाए** (यानी ज़ेवरों की आवाज़ नामहरमों के कान तक पहुंचे), **और मुसलमानो** (तुम से जो हुक्मों की पाबन्दी में कमी हो गई हो तो) **तुम सब अल्लाह तआला के सामने तौबा करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ** (वर्ना गुनाह से कामयाबी में रूकावट हो जाती है)(31)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि अगर बिना इरादा अचानक किसी ग़ैर महरम औरत पर नज़र पड़ जाए तो क्या करना चाहिए तो आपने हुक्म दिया कि अपनी नज़र उस तरफ़ से फेर लो। (इब्ने कसीर)

وَ اَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَ الصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَآئِكُمْ ؕ اِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝۳۲ وَ لْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ
الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ۖۗ وَّ اٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اٰتٰىكُمْ ؕ وَ لَا
تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ مَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ
بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۳۳

आयत नं० 32 से 33

जो बेनिकाह हों (तुम में से मर्द या औरतें) **तुम उन का निकाह कर दिया करो और** (इसी तरह) **तुम्हारे ग़ुलाम और बान्दियों में जो इस** (निकाह) **के लाइक़ हों** (यानी निकाह के हक़ अदा

कर सकते हों निकाह कर दिया करो) **उन का भी,** (और) **अगर वो लोग ग़रीब होंगे तो अल्लाह तआला** (अगर चाहेगा) **उन को अपनी महरबानी से मालदार कर देगा, और अल्लाह तआला गुन्जाइश वाला है** (जिस को चाहे मालदार कर दे और सब का हाल) **ख़ूब जानने वाला है** (जिस को माल देने में भलाई समझेगा उस को मालदार कर देगा और जिसके ग़रीब ही रहने में भलाई है उस को ग़रीब रक्खा जाएगा)(32) **और** (अगर कोई अपनी ग़रीबी की वजह से निकाह का सामान न रखता हो तो) **ऐसे लोगों को जिनके पास निकाह का सामान नहीं उन को चाहिए कि** (अपने जी को) **थामे रहें यहां तक कि अल्लाह तआला** (अगर चाहे तो) **उन को अपनी महरबानी से मालदार कर दे** (उस वक़्त निकाह कर लें), **और तुम्हारे ग़ुलाम बान्दियों में से जो मकातिब बनना चाहें तो** (बेहतर है कि) **उन को मकातिब बना दिया करो अगर उनमें भलाई** (की निशानी) **पाओ, और** (मुसलमानो) **अल्लाह के** (दिये हुए) **उस माल में से उन को भी दो जो अल्लाह ने तुम को दे रक्खा है** (ताकि जल्दी आज़ाद हो सकें)**, और अपनी बान्दियों को बदकारी करने पर मजबूर न करो** (ख़ास कर) **जब वो पाकदामन रहना चाहें** (और तुम्हारा यह नीच काम) **सिर्फ़ इसलिए कि दुनिया की ज़िन्दगी का कुछ फ़ाइदा** (यानी माल) **तुम को मिल जाए, और जो आदमी उन को मजबूर करेगा** (और वो बचना चाहेंगी) **तो अल्लाह तआला उन को मजबूर किये जाने के बाद** (उनको) **मुआफ़ करने वाला महरबान है**(33)

नोटः- अगर ग़ुलाम या बान्दी अपने मालिक से यह कहे कि आप मुझ पर कुछ माल तय कर दें कि वो माल मैं अपनी महनत से कमा कर के आप को अदा कर दूं तो मैं आज़ाद हो जाऊं और मालिक उस बात को मान ले तो ऐसा ग़ुलाम "मकातिब" कहलाता है।

وَ لَقَدۡ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ اٰیٰتٍ مُّبَیِّنٰتٍ وَّ مَثَلًا مِّنَ الَّذِیۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلِکُمۡ وَ مَوۡعِظَۃً لِّلۡمُتَّقِیۡنَ ﴿٣٤﴾ اَللّٰہُ نُوۡرُ السَّمٰوٰتِ وَ
الۡاَرۡضِ ؕ مَثَلُ نُوۡرِہٖ کَمِشۡکٰوۃٍ فِیۡہَا مِصۡبَاحٌ ؕ اَلۡمِصۡبَاحُ فِیۡ زُجَاجَۃٍ ؕ اَلزُّجَاجَۃُ کَاَنَّہَا کَوۡکَبٌ دُرِّیٌّ یُّوۡقَدُ مِنۡ
شَجَرَۃٍ مُّبٰرَکَۃٍ زَیۡتُوۡنَۃٍ لَّا شَرۡقِیَّۃٍ وَّ لَا غَرۡبِیَّۃٍ ۙ یَّکَادُ زَیۡتُہَا یُضِیۡٓءُ وَ لَوۡ لَمۡ تَمۡسَسۡہُ نَارٌ ؕ نُوۡرٌ عَلٰی نُوۡرٍ ؕ
یَہۡدِی اللّٰہُ لِنُوۡرِہٖ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ یَضۡرِبُ اللّٰہُ الۡاَمۡثَالَ لِلنَّاسِ ؕ وَ اللّٰہُ بِکُلِّ شَیۡءٍ عَلِیۡمٌ ﴿٣٥﴾ۙ فِیۡ بُیُوۡتٍ اَذِنَ اللّٰہُ
اَنۡ تُرۡفَعَ وَ یُذۡکَرَ فِیۡہَا اسۡمُہٗ ۙ یُسَبِّحُ لَہٗ فِیۡہَا بِالۡغُدُوِّ وَ الۡاٰصَالِ ﴿٣٦﴾ۙ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلۡہِیۡہِمۡ تِجَارَۃٌ وَّ لَا بَیۡعٌ عَنۡ
ذِکۡرِ اللّٰہِ وَ اِقَامِ الصَّلٰوۃِ وَ اِیۡتَآءِ الزَّکٰوۃِ ۪ۙ یَخَافُوۡنَ یَوۡمًا تَتَقَلَّبُ فِیۡہِ الۡقُلُوۡبُ وَ الۡاَبۡصَارُ ﴿٣٧﴾ۙ لِیَجۡزِیَہُمُ اللّٰہُ

أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ
كَسَرَابٍۭ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ وَ
اللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۳۹﴾ اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ۗ ظُلُمٰتٌۢ
بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۗ اِذَآ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ﴿۴۰﴾

आयत नं० 34 से 40

और हम ने (तुम लोगों की हिदायत के लिए इस क़ुरआन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से) **तुम्हारे पास खुले-खुले हुक्म भेजे हैं और जो लोग तुम से पहले हो चुके हैं उन की** (या उन जैसे लोगों की) **कुछ मिसालें और** (अल्लाह से) **डरने वालों के लिए नसीहत की बातें** (भेजी हैं)(34) **अल्लाह तआ़ला** (हिदायत का) **नूर देने वाला है आसमानों** (में रहने वालों) **का और ज़मीन** (में रहने वालों) **का** (यानी आसमान व ज़मीन वालों में जिन को हिदायत हुई है उन सब को अल्लाह ही ने हिदायत दी है), **उस के** (हिदायत के) **नूर की मिसाल ऐसी है जैसे** (मानलो) **एक ताक़ है** (और) **उसमें एक चराग़** (रक्खा) **है,** (और) **वो चराग़** (ताक़ में रक्खे हुए) **एक शीशे** (की क़न्दील) **में है,** (और) **वो शीशा ऐसा** (साफ़ और आर पार दिखाने वाला) **है जैसा कि एक चमकदार सितारा हो** (और) **वो चराग़ एक बहुत नफ़ा देने वाले पेड़** (के तेल) **से रौशन किया जाता है जो ज़ैतून** (का पेड़) **है जो** (किसी आड़ के) **न पूरब रुख़ है और न** (किसी आड़ के) **पच्छम रुख़ है** (यानी उस के पूरब या पच्छम की तरफ़ कोई आड़ पहाड़ नहीं बल्कि पूरे दिन धूप रहती है ऐसे पेड़ का तेल बहुत अच्छा साफ़ और रौशन होता है और) **उस का तेल** (ऐसा साफ़ और सुलगने वाला है कि) **अगर उस को आग भी न छुए तो भी ऐसा लगता है कि अपने आप ही जल उठेगा,** (और जब आग भी लग गई तो) **नूर पर नूर** (है बस इसी तरह मोमिन के दिल में अल्लाह तआ़ला जब हिदायत का नूर डालता है तो दिन पर दिन वो हक़ क़ुबूल करने के लिए खुलता जाता है और हर वक़्त हुक्मों पर अमल करने के लिए तैयार रहता) **है,** (और) **अल्लाह तआ़ला अपने** (इस हिदायत के) **नूर तक जिस को चाहता है रास्ता दिखा देता** (और पहुंचा देता) **है, और अल्लाह तआ़ला लोगों** (की हिदायत) **के लिए** (ये) **मिसालें बयान करता है** (ताकि बातें समझनी आसान हो जाएं), **और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को ख़ूब जानने वाला है**(35) (आगे हिदायत वालों का हाल बयान करते हैं कि) **वो ऐसे घरों में** (जाकर इबादत करते) **हैं जिन के बारे में अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया है कि उन का अदब किया जाए और उनमें अल्लाह का**

नाम लिया जाए (मुराद उन घरों से मस्जिदे हैं) **उन** (मस्जिदों) **में ऐसे लोग सुबह व शाम अल्लाह की तस्बीह** (नमाज़ों में) **करते हैं**(36) **जिन को अल्लाह की याद** (यानी हुक्म की पाबन्दी) **से** (जिस वक़्त के बारे में जो हुक्म हो) **और** (ख़ास कर) **नमाज़ पढ़ने से और ज़कात देने से** (कि ये हुक्म सब से ख़ास हैं) **न ख़रीदना भूल में डालने पाता है और न बेंचना** (और ताबेदारी व इबादत के बावजूद उनके डरने का यह हाल है कि) **वो ऐसे दिन** (की पकड़) **से डरते रहते हैं जिसमें बहुत से दिल और आंखें उलट जाएंगी** (यानी क़ियामत की पकड़ से डरते रहते हैं)(37) **अन्जाम** (उन लोगों का) **यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उन को उन के** (नेक) **कामों का बहुत ही अच्छा बदला** (यानी जन्नत) **देंगे और उन को अपनी महरबानी से और भी ज़्यादा देंगे, और अल्लाह तआ़ला जिस को चाहे बेहिसाब** (यानी बहुत ज़्यादा) **दे देते हैं** (बस उन लोगों को जन्नत में इसी तरह बेहिसाब देंगे(38) **और** (दूसरी तरफ़) **जो लोग काफ़िर** (और गुमराह और हिदायत के नूर से दूर) **हैं उन** (में जो आख़रत और क़ियामत को मानते हैं उन) **के काम ऐसे हैं जैसे एक साफ़ मैदान में चमकता हुआ रेत कि प्यासा** (आदमी) **उस को** (दूर से) **पानी समझता** (है और उसकी तरफ़ दौड़ता) **है, यहां तक कि जब उस के पास आया तो उस को** (जो समझ रक्खा था) **कुछ भी न पाया और** (प्यास से तड़प-तड़प कर मर गया तो यह कहना चाहिए कि पानी की जगह) **अल्लाह के हुक्म यानी मौत को पाया सो अल्लाह तआ़ला ने उस** (की उम्र) **का हिसाब उस को बराबर चुका** (दिया यानी उम्र का ख़ातमा कर) **दिया, और अल्लाह तआ़ला** (जिस चीज़ का वक़्त आ जाता है उस का) **दम भर में हिसाब कर देता है** (उस को कुछ देर नहीं लगती और मतलब यह कि जैसे प्यासा रेत को पानी समझ लेता है ऐसे ही काफ़िर अपने भले कामों को ख़ुदा के यहां क़ुबूल और आख़रत के नफ़े वाले समझ लेता है और वहां जाकर असलीयत का पता चलेगा)(39) **या वो** (काफ़िर जो आख़रत और क़ियामत पर यक़ीन नहीं रखते उन के काम) **ऐसे हैं जैसे किसी गहरे समन्दर के अन्धेरे में हों कि उस** (समन्दर की असली परत) **को एक बड़ी लहर ने ढांक लिया हो** (फिर) **उस** (लहर) **के ऊपर दूसरी लहर** (हो फिर) **उस के ऊपर बादल** (हो जिससे सितारे की रौशनी भी न पहुंचती हो, यानी) **ऊपर नीचे बहुत से अन्धेरे** (ही अन्धेरे) **हैं, कि अगर** (ऐसी हालत में) **कोई** (आदमी दरिया की तह में) **अपना हाथ बाहर निकाले** (और उस को देखना चाहे) **तो देख नहीं सकता** (बस जो काफ़िर क़ियामत और आख़रत का इनकार करते हैं उन के पास कोई नूर नहीं), **और** (आगे उन काफ़िरों के अन्धेरे में होने की वजह यह बयान की है कि) **जिस को अल्लाह ही** (हिदायत का) **नूर न दे उस को** (कहीं से भी) **नूर नहीं** (मिल सकता)(40)

नोटः- एक हदीस में है कि "जो आदमी अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि मुझ से मुहब्बत करे और जो मुझ से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि मेरे सहाबा से मुहब्बत करे और जो सहाबा से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि क़ुरआन से मुहब्बत करे और जो क़ुरआन से मुहब्बत रखना चाहता है उस को चाहिए कि मस्जिदों से मुहब्बत करे क्योंकि वो अल्लाह के घर हैं अल्लाह ने उनकी इ़ज़्ज़त करने का हुक्म दिया है और उनमें बरकत रक्खी है वो भी बरकत वाली हैं और उनके रहने वाले भी बरकत वाले वो भी अल्लाह की हिफ़ाज़त में हैं और उनके रहने वाले भी हिफ़ाज़त में हैं वो लोग अपनी नमाज़ों में लगे होते हैं अल्लाह तआ़ला उन के काम बनाते हैं और ज़रूरतें पूरी करते हैं वो मस्जिदों में होते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनके पीछे उन की चीज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं"। (क़ुरतबी)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۴۲﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِىْ سَحَابًا ثُمَّ
يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ
بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿۴۳﴾ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ
وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿۴۴﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى
بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۴۵﴾

आयत नं० 41 से 45

क्या तुम को पता नहीं चला कि अल्लाह की तस्बीह करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में (मख़लूक़) **हैं और** (ख़ास कर) **परिन्दे** (भी) **जो पर फैलाए हुए** (उड़ते फिरते हैं और यह पैदा करने वाले की एक अजीब निशानी है कि हवा में रूके हुए) **हैं,** (और) **सब** (परिन्दों) **को अपनी-अपनी दुआ और अपनी तस्बीह** (का तरीक़ा) **मालूम है, और** (इन सबूतों के बावजूद फिर भी कुछ लोग तौहीद को नहीं मानते तो) **अल्लाह तआ़ला को उनके सब कामों की पूरी ख़बर है** (इस इनकार और मुंह फेरने पर उन को सज़ा देगा)(41) **और अल्लाह ही की हुकूमत है**

आसमानों और ज़मीन में (अब भी) और (आख़ीर में) अल्लाह ही की तरफ़ (सब को) लौट कर जाना है(42) क्या तुम को यह बात मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला (एक) बादल को (दूसरे बादल की तरफ़) चलता करता है (और) फिर उन बादलों को आपस में मिला देता है फिर उस को तह ब तह कर(घटा बना दे)ता है फिर तुम बारिश को देखते हो कि उस (बादल) के बीच में से निकल (निकल कर) आती है और (कभी-कभी) उस बादल से यानी उस के बड़े हिस्सों से ओले बरसाता है फिर उन को जिस (की जान पर या माल) पर चाहता है गिराता है (कि उस का नुक़सान हो जाता है) और जिससे चाहता है उस को हटा देता (है और उस के जान व माल को बचा लेता) है, (और) उस बादल (में से बिजली भी पैदा होती है और ऐसी चमकदार कि उस बादल) की बिजली की चमक की यह हालत है कि ऐसा लगता है कि जैसे उसने अब आंखों की रौशनी को उचक लिया(43) (और) अल्लाह तआ़ला रात और दिन को बदलता रहता है, बेशक इन (बातों) में समझदारों के लिए नसीहत का सामान है(44) और अल्लाह ने हर चलने वाले जानदार को (चाहे दरियाई हो या ज़मीनी) पानी से पैदा किया है, फिर उन (जानदारों) में कुछ तो वो (जानवर) हैं जो अपने पेट के बल चलते हैं (जैसे सांप, मच्छली) और कुछ उनमें वो हैं जो दो पैरों पर चलते हैं (जैसे इन्सान और परिन्दे जब कि हवा में न हों) और कुछ उन में वो हैं जो चार (पैरों) पर (चलते हैं जैसे गाय, बकरी इसी तरह कुछ ज़्यादा पर भी) चलते हैं, (असल यह है कि) अल्लाह तआ़ला जो चाहता है बनाता है, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है(45)

لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۴۶﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ بِالرَّسُوْلِ وَ
اَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَ مَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾ وَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿۴۸﴾ وَ اِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿۴۹﴾ؕ اَفِىْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَ رَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۵۰﴾ع اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ
الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵۱﴾
وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ يَخْشَ اللّٰهَ وَ يَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۵۲﴾ وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ
اَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۳﴾ قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا

الرَّسُوْلَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ۖ وَإِنْ تُطِيعُوهُ تَهْتَدُوا ۚ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٥٤﴾

आयत नं० 46 से 54

हम ने (हक़ के) **समझाने वाली आयतें** (आम लोगों की हिदायत के लिए) **उतारी हैं, और** (उन आम लोगों में से) **जिस को अल्लाह चाहता है सीधे रास्ते तक पहुंचा देता है(46) और ये** (मुनाफ़िक़) **लोग** (ज़बान से तो) **कहते हैं कि हम अल्लाह पर और रसूल पर ईमान ले आए और** (अल्लाह और रसूल का) **हुक्म** (दिल से) **माना फिर उस के बाद** (जब अमल करने का वक़्त आया तो) **उन में एक गिरोह** (जो बहुत ज़्यादा शरीर है अल्लाह और रसूल के हुक्म से) **मुंह मोड़ लेता है** (मतलब यह कि अगर उनके ज़िम्मे किसी का हक़ चाहता हो और वो फ़ैसले के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलने को कहे तो उस वक़्त में आना कानी करते हैं क्योंकि जानते हैं कि फ़ैसला तो हक़ के साथ होगा), **और ये लोग** (असल में) **ईमान नहीं रखते(47) ये लोग जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ इसलिए बुलाए जाते हैं कि रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **उन के** (और उनके मुख़ालिफ़ के) **बीच में फ़ैसला करदें तो उन में का एक गिरोह** (वहां आने से) **मुंह मोड़ता** (है और टालता है जबकि उनके ज़िम्मे किसी का हक़ चाहता) **है(48) और अगर उन का हक़** (किसी दूसरे के ज़िम्मे) **हो तो सर झुकाए हुए** (बेझिजक आप के बुलाने पर) **आप के पास चले आते हैं** (क्योंकि तसल्ली होती है कि वहां हक़ का फैसला होगा इसमें हमारा फ़ाइदा है(49) **क्या** (इस मुंह मोड़ने की वजह यह है कि) **उन के दिलों में** (कुफ़्र की) **बीमारी है** (यानी उन को इस का यक़ीन है कि आप अल्लाह के पैग़म्बर नहीं) **या ये** (पैग़म्बर की तरफ़ से) **शक में पड़े हैं** (कि पैग़म्बर न होने का यक़ीन तो नहीं मगर पैग़म्बर होने का भी यक़ीन नहीं) **या उन को यह डर है कि अल्लाह और उस का रसूल उन पर ज़ुल्म करने लगें** (यानी फ़ैसला इन्साफ़ से न हो, सो असलीयत यह है कि इनमें से कोई भी वजह) **नहीं** (है), **बल्कि** (असली वजह यह है कि) **ये लोग** (इन मुक़द्दमों में) **ज़ुल्म** (और ना इन्साफ़ी) **पर** (होते) **हैं** (इसलिए पैग़म्बर के सामने मुक़दमा लाना पसन्द नहीं करते कि हम हार जाएंगे)(50) **मुसलमानो की** (शान और उन की) **बात तो यह होती है जब उन को** (किसी मुक़दमे में) **फ़ैसले के लिए अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है वो** (ख़ुशी-ख़ुशी) **कह देते हैं कि हम ने** (तुम्हारी बात को) **सुन लिया और** (उस को) **मान लिया, और** (ऐसे लोग दुनिया में भी ईमान में सच्चे हैं और) **ऐसे** (ही) **लोग** (आख़रत में

भी) **कामयाब होंगे(51) और** (हमारे यहां का क़ानून यह है कि) **जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल का कहना माने और अल्लाह से डरे और उस की मुख़ालफ़त से बचे बस ऐसे लोग कामयाब होंगे(52) और** (उन मुनाफ़िक़ों की यह हालत है कि) **वो लोग बड़ा ज़ोर लगा कर अल्लाह की क़समें खाया करते हैं कि** (हम ऐसे ताबेदार हैं कि) **अगर आप उन को** (यानी हम को) **हुक्म दें** (कि घर बार सब छोड़ दो) **तो वो** (यानी हम सब कुछ छोड़ कर) **अभी निकल खड़े हों, आप** (उन से) **कह दीजिए कि बस क़समें न खाओ** (तुम्हारी) **ताबेदारी की असलीयत मालूम है,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों की पूरी ख़बर रखता** (है और उसने मुझ को बता दिया) **है(53)** (और) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि** (बातें बनाने से काम नहीं चलता काम करो यानी) **अल्लाह का कहना मानो और रसूल का कहना मानो, फिर** (रसूल के यह समझाने के बाद भी) **अगर तुम लोग** (ताबेदारी से) **मुंह मोड़ोगे तो समझ लो कि** (रसूल का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **रसूल के ज़िम्मे वो ही तबलीग़** (का काम) **है जिस की उन पर ज़िम्मेदारी रक्खी गई है** (जिस को वो पूरी कर चुके) **और तुम्हारे ज़िम्मे वो** (ताबेदारी का काम) **है जिस का तुम पर बोझ रक्खा गया है** (जिस को तुम ने पूरा नहीं किया बस तुम्हारा ही नुक़सान होगा), **और अगर** (मुंह न फेरा बल्कि) **तुम ने उन की ताबेदारी की** (जो अल्लाह की ही ताबेदारी है) **तो सीधा रास्ता पा जाओगे, और रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुंचा देना है** (आगे तुम से पूछ ताछ होगी कि माना या नहीं)(54)

नोटः- बशर नाम का एक मुनाफ़िक़ यानी दिखावे का मुसलमान था उसके और यहूदी के बीच में कोई ज़मीन का झगड़ा था यहूदी ने उससे कहा कि चलो तुम्हारे ही रसूल से हम फ़ैसला करा लें मगर बशर मुनाफ़िक़ नाहक़ पर था यह जानता था कि हुज़ूर के यहां फ़ैसला हक़ और इन्साफ़ पर होगा इसलिए मैं हार जाऊंगा तो उसने वहां जाने से इनकार किया और काब बिन अशरफ़ यहूदी के पास मुक़द्दमा ले जाने को कहा इस पर ये आयतें उतरीं।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ
لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ
شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٥٥ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ ۝٥٦ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٥٧

आयत नं० 55 से 57

(ऐ उम्मत के लोगों) **तुम में जो ईमान लाएं और नेक काम करें** (यानी शरीअत के हुक्मों पर चलें) **उन से अल्लाह तआला वादा करता है कि उन को** (इस ताबेदारी की बरकत से) **ज़मीन में हुकूमत देगा जैसा उन से पहले** (ऐसे ही) **लोगों को हुकूमत दी थी, और** (हुकूमत इसलिए दी जाएगी कि) **जिस दीन को** (अल्लाह तआला ने) **उन के लिए पसन्द किया है** (यानी इस्लाम) **उस को उन के** (आख़िरत के नफ़े के) **लिए ताक़त देगा और** (उन को दुशमनों से जो ख़तरा है) **उन के इस ख़तरे के बाद उस को अमन से बदल देगा, शर्त यह है कि मेरी इबादत करते रहें** (और) **मेरे साथ किसी क़िस्म का शिर्क न करें** (न खुला न छुपा जिस को रिया यानी दिखावा कहते हैं यानी अल्लाह का यह वादा दीन की पाबन्दी की शर्त के साथ है और आख़िरत की नेमतों का वादा इस के सिवा है), **और जो आदमी इस** (वादे) **के** (ऐलान के) **बाद भी नाशुक्री करेगा** (यानी दीन के ख़िलाफ़ चलेगा) **तो** (ऐसे आदमी के लिए यह वादा नहीं क्योंकि) **ये लोग नाफ़रमान** (और बाग़ी हैं और वादे ताबेदारों के लिए) **हैं(55) और** (ऐ मुसलमानो जब ईमान और नेक कामों के दीन दुनिया के फ़ाइदे सुन लिए तो तुम को चाहिए कि ख़ूब) **नमाज़ की पाबन्दी रक्खो और ज़कात दिया करो और** (बाक़ी हुक्मों में भी) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का कहना मानो ताकि तुम पर** (पूरा) **रहम किया जाए(56)** (आगे कुफ़्र व गुनाह का अन्जाम बताया गया है कि) **काफ़िरों के बारे में यह मत सोचना कि ज़मीन** (के किसी हिस्से) **में** (भाग जाएंगे और हम को) **हरा देंगे** (और हमारे अज़ाब से बच जाएंगे, नहीं बल्कि वो ख़ुद हारेंगे और सज़ा पाएंगे यह नतीजा तो दुनिया में है) **और** (आख़िरत में) **उन का ठिकाना दोज़ख़ है, और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है(57)**

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَ الَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ
قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ وَ حِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَ مِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۫ؕ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ؕ لَيْسَ
عَلَيْكُمْ وَ لَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَ
اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۸﴾ وَ اِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۹﴾ وَ الْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ
جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۭ بِزِيْنَةٍ ؕ وَ اَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۶۰﴾

आयत नं० 58 से 60

ऐ ईमान वालो (तुम्हारे पास आने के लिए) **तुम्हारे ग़ुलाम बान्दियों को और तुम में से जो** (बच्चे) **अभी बालिग़ नहीं हुए उन को तीन वक़्तों में इजाज़त लेना चाहिए,** (एक तो) **सुबह की नमाज़ से पहले और** (दूसरे) **जब दोपहर को** (सोने लेटने के लिए) **अपने** (ऊपरी) **कपड़े उतार दिया करते हो और** (तीसरे) **इशा की नमाज़ के बाद, ये तीन वक़्त तुम्हारे पर्दे के हैं** (यानी ये आराम के वक़्त हैं जिसमें आदमी बेफ़िक्री से रहना चाहता है जिस में कभी-कभी अकेले में पर्दे का बदन भी खुल जाता है इसलिए इन लोगों को समझाओ कि बिना ख़बर किये और बिना इजाज़त लिये हुए इन वक़्तों में तुम्हारे पास न आया करें), **इन वक़्तों के सिवा न** (बिना इजाज़त आने देने और मना न करने में) **तुम पर कोई इल्ज़ाम है और न** (बिना इजाज़त चले आने में) **उन पर कुछ इल्ज़ाम है,** (क्योंकि) **वो अक्सर तुम्हारे पास आते जाते रहते हैं कोई किसी के पास और कोई किसी के पास** (बस हर वक़्त इजाज़त लेने में तकलीफ़ है), **इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम से** (अपने) **हुक्म साफ़-साफ़ बयान करते हैं, और अल्लाह तआ़ला जानने वाले हिकमत वाले हैं(58) और जब** (ये) **तुम्हारे बच्चे बालिग़ हो जाएं तो उन को भी उसी तरह इजाज़त लेना चाहिए जैसा उन से पहले** (यानी उन से बड़ी उम्र के) **लोग इजाज़त लेते हैं, इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम से अपने हुक्म साफ़-साफ़ बयान करते हैं, और अल्लाह तआ़ला जानने वाले हिकमत वाले हैं(59) और** (एक बात यह जानना चाहिए कि पर्दे के हुक्म बुराई की रोकथाम के लिए हैं जहां इसका ख़तरा न हो जैसे) **बड़ी बूढ़ी औरतें जिन को** (किसी के) **निकाह** (में आने) **की उम्मीद न रही हो** (यानी उन की तरफ़ किसी की दिलचस्पी न रहे) **उन को इस बात में कोई गुनाह नहीं कि वो अपने** (ऊपरी) **कपड़े** (जैसे नक़ाब ग़ैर महरम के सामने भी) **उतार कर रख दें शर्त यह है कि सिंगार न दिखाएं, और** (बूढ़ी औरतों को ग़ैर महरमों के सामने चेहरा खोलने की इजाज़त है लेकिन) **इससे भी बचें तो उनके लिए और ज़्यादा बेहतर है, और अल्लाह तआ़ला सब कुछ सुनते सब कुछ जानते हैं(60)**

नोटः- क़ुरआन ने पाकीज़ा समाज की तालीम दी है जिसमें किसी को किसी से कोई तकलीफ़ न हो सब आराम से रहें।

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّ لَا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ
بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَعْمَامِكُمْ اَوْ

بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً
طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٦١﴾ ع

आयत नं० 61

(अगर तुम अन्धे, लंगड़े या बीमार को अपने किसी रिशतेदार या मिलने वाले के घर ले जा कर कुछ खिला पिलादो या ख़ुद खा पीलो तो जब यह यक़ीन के साथ पता हो कि वो रिशतेदार या मिलने वाला हमारे खाने और खिलाने पर राज़ी होगा उस को कोई तकलीफ़ न होगी तो इन सूरतों में) **न तो अन्धे आदमी के लिए कोई हरज है और न लंगड़े आदमी के लिए और न बीमार आदमी के लिए कुछ हरज है और न ख़ुद तुम्हारे लिए इस बात में** (कुछ हरज है) **कि तुम** (चाहे ख़ुद या उन अपाहजों के साथ) **अपने** (सब) **घरों से** (जिन में बीवी औलाद के घर भी आ गये) **खाना खालो या** (उन घरों में खालो जिन का ज़िक्र आगे आता है, यानी न तुम को ख़ुद खाने में गुनाह है और न उन अपाहजों को खिलाने में और उन अपाहजों को भी खाने में कोई गुनाह नहीं और वो घर ये हैं जैसे) **अपने बाप के घर से** (खालो खिला दो) **या अपनी मांओं के घर से या अपने भाइयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपनी फूपियों के घरों से या अपने मामू के घरों से या अपनी ख़ालाओं के घरों से या उन घरों से जिन की चाबियां तुम्हारे हाथ में हैं** (यानी ख़र्च करने का हक़ दे दिया गया है) **या अपने दोस्तों के घरों से,** (फिर उस में भी कुछ हरज नहीं) **कि सब मिलकर खाओ या अलग-अलग, फिर** (यह भी जान लो कि) **जब तुम घरों में जाने लगो तो अपने लोगों को** (यानी वहां जो मुसलमान हों उन को) **सलाम कर लिया करो** (जो कि) **बरकत वाली पाकीज़ा दुआ है जो अल्लाह की तरफ़ से आई है, इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम से** (अपने) **हुक्म बयान करता है ताकि तुम समझो** (और अमल करो)(61)

नोटः- अपाहज लोगों को दूसरों के साथ खाने में झिजक होती थी कि हमारी वजह से उनको तकलीफ़ न हो ऐसे ही आम लोग सोचते थे कि शायद ये हमारे साथ बेफ़िक्री से न खा पाएं ऐसे ही दूसरे रिशतेदारों और दोस्तों के घर खाने या खिलाने में झिजक होती थी इस पर ये आयतें उतरीं और इन बातों की इजाज़त देकर बता दिया गया कि इतनी बारीकी में जाने की ज़रूरत नहीं है।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ
يَسْتَأْذِنُوهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ
شَأْنِهِمْ فَأْذَن لِّمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾ لَّا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ
بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُم بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَتَسَلَّلُونَ مِنكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ
أَمْرِهِ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قَدْ يَعْلَمُ مَا
أَنتُمْ عَلَيْهِ وَيَوْمَ يُرْجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

आयत नं० 62 से 64

बस मुसलमान तो वो ही हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं और जब रसूल के पास किसी ऐसे काम पर जमा होते हैं जिसके लिए इकट्ठा किया गया है (और अगर वहां से कहीं जाने की ज़रूरत पड़ती है) **तो जब तक आप से इजाज़त न लें** (और आप इस पर इजाज़त न देदें मजलिस से उठकर) **नहीं जाते,** (ऐ पैग़म्बर) **जो लोग आप से** (ऐसे मौक़ों पर) **इजाज़त लेते हैं बस वो ही अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं** (आगे ऐसे लोगों को इजाज़त देने का बयान है) **तो जब ये** (ईमान वाले) **लोग** (ऐसे मौक़ों पर) **अपने किसी काम के लिए आप से** (जाने की) **इजाज़त मांगे तो आप जिस के लिए** (सही समझें और इजाज़त देना) **चाहें इजाज़त दे दिया करें** (और जिस को ठीक न समझें इजाज़त न दें क्योंकि हो सकता है वो जिस काम को ज़रूरी समझ कर इजाज़त चाहते हों वो इतना ज़रूरी न हो) **और** (इजाज़त देकर भी) **आप उनके लिए अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश की दुआ किया कीजिए** (क्योंकि उन का यह छुट्टी चाहना भले ही मजबूरी से है मगर फिर भी दुनिया के लिए है), **बेशक अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला महरबान है** (क्योंकि उनकी नीयत अच्छी थी इसलिए ऐसी बातों पर पकड़ नहीं करता)(62) **तुम लोग रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के बुलाने को** (जब कि वो किसी इस्लामी ज़रूरत के लिए तुम को इकट्ठा करें) **ऐसा** (मामूली बुलाना) **मत समझो जैसा तुम में एक दूसरे को बुला लेता है** (कि चाहे आया या न आया, फिर आकर भी जब तक चाहा बैठा जब चाहा बेइजाज़त उठ कर चल दिया रसूल का बुलाना ऐसा नहीं बल्कि उनके इस हुक्म को मानना वाजिब है और बेइजाज़त वापस जाना हराम है और उस का जाना हो सकता है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से छुपा रह जाए लेकिन यह याद रक्खो कि) **अल्लाह तआ़ला उन लोगों को** (अच्छी तरह) **जानता है जो** (दूसरों की)

आड़ में होकर तुम में से (नबी की मजलिस से) **खिसक जाते हैं तो जो लोग अल्लाह के हुक्म की** (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से पहुंचा है) **मुख़ालफ़त करते हैं उन को इससे डरना चाहिए कि उन पर** (दुनिया में) **कोई आफ़त आजाए या उन पर** (आख़रत में) **कोई** (अज़ाब हो और यह भी हो सकता है कि दुनिया व आख़रत दोनों में) **अज़ाब हो**(63) (और यह भी) **याद रक्खो कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है, अल्लाह तआ़ला उस हालत को भी जानता है जिस पर तुम** (अब) **हो, और उस दिन को भी जिसमें सब उस के पास** (दोबारा ज़िन्दा करके) **लाए जाएंगे तो वो उन को सब जितला देगा जो कुछ उन्होंने किया था, और** (यह बात ही कुछ ख़ास नहीं) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **सब कुछ जानता है**(64)

नोटः- (1) ये आयतें जंगे अहज़ाब के मौक़े पर उतरीं जब कि मुसलमानो को मशवरे के लिए बुलाया गया और कुछ मुनाफ़िक़ चुपके से खिसक गये और कुछ लोग बहाना बनाकर चले गये मगर सच्चे मुसलमान बिना किसी सख़्त मजबूरी के और वो भी बिना इजाज़त नहीं गये।

(2) एक बात यहां यह भी मालूम हुई कि अपने बुज़ुर्गों और बड़ों को उन का नाम लेकर पुकारना और बुलाना बेअदबी है। इज़्ज़त के साथ बात करना चाहिए।

25-सूरत-फ़ुरक़ान

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '77' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ۙ ۝١ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَمْ
یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ۝٢ وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً
لَّا یَخْلُقُوْنَ شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ وَ لَا یَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا یَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّ لَا حَیٰوةً وَّ لَا
نُشُوْرًا ۝٣

आयत नं० 01 से 03

बड़ी ऊंची शान है उस ज़ात की जिसने यह फ़ैसले की किताब (यानी क़ुरआन) **अपने ख़ास बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर उतारी ताकि वो सारी दुनिया जहान वालों के लिए** (ईमान न लाने की सूरत में अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला हो(01) ऐसी ज़ात जिसकी आसमानों और ज़मीन पर हुकूमत है और उसने किसी को** (अपनी) **औलाद नहीं बनाया और न कोई हुकूमत में उस का साझी है और उसने हर चीज़ को पैदा किया फिर सब का अलग-अलग अन्दाज़ रक्खा** (कि किसी चीज़ की ख़ूबियां और आसार कुछ हैं किसी के कुछ हैं)(02) **और** (इन मुशरिक) **लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर ऐसे माबूद बना लिये हैं जो** (किसी तरह माबूद होने के क़ाबिल नहीं क्योंकि वो) **किसी चीज़ को पैदा करने वाले नहीं बल्कि वो ख़ुद पैदा किये गये हैं और जिन का ख़ुद अपने नुक़सान** (के दूर करने) **या फ़ाइदा** (उठा लेने) **पर भी कोई बस नहीं चलता और न किसी की मौत उनके बस में है** (कि किसी जानदार की जान निकाल सकें) **और न किसी की ज़िन्दगी** (उनके बस में है कि किसी में जान डाल दें) **और न किसी को** (क़ियामत में) **दोबारा ज़िन्दा करना** (उन के बस में है और जो आदमी इन चीज़ों पर क़ुदरत नहीं रखता वो माबूद नहीं हो सकता)(03)

नोटः- ऊपर आयत से साबित हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी सारी दुनिया

के लिए है पहले पैग़म्बरों की तरह नहीं कि उन की पैग़म्बरी किसी ख़ास क़ौम या किसी ख़ास जगह के लिए होती थी।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اِفْكُ ِۨافْتَرٰىهُ وَ اَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۛۚ فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ۚ ٤ وَ
قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ٥ قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ٦ وَ قَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَاْكُلُ الطَّعَامَ وَ يَمْشِيْ فِي
الْاَسْوَاقِ ؕ لَوْ لَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۙ ٧ اَوْ يُلْقٰۤى اِلَيْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّاْكُلُ
مِنْهَا ؕ وَ قَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ٨ اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ۠ ٩

आयत नं० 04 से 09

और काफ़िर लोग (क़ुरआन के बारे में) **यह कहते हैं कि यह** (क़ुरआन) **तो कुछ भी नहीं बस झूट** (ही झूट) **है जिस को इस आदमी** (यानी पैग़म्बर) **ने घड़ लिया है और दूसरे लोगों ने इस** (काम) **में इस की मदद की है** (मुराद वो किताब वाले हैं जो मुसलमान हो गये थे या आप के पास वैसे ही आया करते थे) **तो** (ऐसी बात कहकर) **यह लोग बड़े ज़ुल्म और झूट पर उतर आए(04) और ये** (काफ़िर) **लोग** (अपने इसी ऐतराज़ की हिमायत में) **यह कहते हैं कि यह** (क़ुरआन) **पहले लोगों की कही हुई बेसनद बातें हैं जिन को इस आदमी** (यानी पैग़म्बर) **ने** (सोच-सोच कर अच्छे अन्दाज़ में अपने सहाबा के हाथ से) **लिखवा लिया है** (ताकि हिफ़ाज़त रहे) **फिर वो ही** (बातें) **उस को सुबह शाम पढ़ कर सुनाई जाती** (हैं ताकि याद रहें फिर वो ही याद की हुई बातें मजमे में बयान करके ख़ुदा की तरफ़ से उतरी हुई बता दी जाती) **हैं(05) आप** (इस के जवाब में) **कह दीजिए कि इस** (क़ुरआन) **को तो उस** (पाक) **ज़ात ने उतारा है जिस को सब छुपी बातों की ख़बर है चाहे वो आसमानों में हों या ज़मीन में हों** (मतलब यह कि अगर क़ुरआन घड़ी हुई कहानियां होतीं या किसी दूसरे की मदद से लिखी हुई किताब होता तो सारी दुनिया इसकी मिसाल लाने से मजबूर क्यों होती), **सचमुच अल्लाह तआला बख़्शने वाला महरबान है** (इसलिए ऐसे झूट और ज़ुल्म पर फ़ौरन सज़ा नहीं देता)(06) **और ये** (काफ़िर) **लोग** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में) **यह कहते हैं कि इस रसूल को क्या हुआ कि वो** (हमारी तरह) **खाना** (भी) **खाता है और** (ज़रूरतों के लिए हमारी ही तरह) **बाज़ारों में चलता फिरता है**

(मतलब यह है पैग़म्बर इन्सान के बजाए फ़रिशता होना चाहिए जिसे खाने पीने की चीज़ों की ज़रूरत न हो, और कम से कम इतना तो ज़रूर ही होना चाहिए कि रसूल का साथी व मददगार कोई फ़रिशता हो इसलिए कहा कि) **इस** (रसूल) **के पास कोई फ़रिशता क्यों नहीं भेजा गया कि वो उस के साथ रह कर** (लोगों को अल्लाह के अज़ाब से) **डराता(07) या** (अगर यह भी न होता तो कम से कम रसूल को अपने खाने पीने की ज़रूरतों से तो बेफ़िक्री होती इस तरह कि) **उस के पास** (ग़ैब से) **कोई ख़ज़ाना आजाता या उसके पास कोई बाग़ होता जिससे यह खाया** (पिया) **करता, और** (मुसलमानों से) **ये ज़ालिम यह** (भी) **कहते हैं कि** (जब इन के पास न कोई फ़रिशता न ख़ज़ाना न बाग़ और फिर भी ये पैग़म्बरी का दावा करते हैं तो मालूम होता है कि उन की अक़्ल में ख़राबी है इसलिए) **तुम लोग एक ऐसे आदमी की राह पर चल रहे हो जिस पर जादू हो गया है(08)** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **देखिये तो ये लोग आप के लिए कैसी अजीब-अजीब बातें बयान कर रहे हैं तो** (इन बेहूदा बातों से) **वो** (बिल्कुल) **गुमराह हो गये फिर वो राह नहीं पा सकते(09)**

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ وَ يَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ﴿۱۰﴾ بَلْ
كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَ اَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ﴿۱۱﴾ اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا
تَغَيُّظًا وَّ زَفِيْرًا ﴿۱۲﴾ وَ اِذَآ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ﴿۱۳﴾ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا
وَّاحِدًا وَّ ادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا ﴿۱۴﴾ قُلْ اَذٰلِكَ خَيْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّ
مَصِيْرًا ﴿۱۵﴾ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ؕ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ﴿۱۶﴾ وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَ مَا يَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَقُوْلُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ﴿۱۷﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ
يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ وَ لٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَ كَانُوْا قَوْمًۢا
بُوْرًا ﴿۱۸﴾ فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّ لَا نَصْرًا ۚ وَ مَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ
عَذَابًا كَبِيْرًا ﴿۱۹﴾ وَ مَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَ يَمْشُوْنَ فِي الْاَسْوَاقِ ؕ وَ
جَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ؕ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَ كَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ﴿۲۰﴾

आयत नं० 10 से 20

वो ज़ात बड़ी आलीशान है कि अगर वो चाहे तो आप को (काफ़िरों की) **इस** (मांग) **से** (भी) **अच्छी चीज़ देदे यानी बहुत से** (ग़ैबी) **बाग़ जिन के नीचे से नहरें बहती हों और** (बल्कि इन बाग़ों के साथ और चीज़ें जैसे) **आप को बहुत से महल** (देदे जो उन बाग़ों में बने हों या बाहर ही हों, मतलब यह कि जो जन्नत में मिलेगा अगर अल्लाह चाहे तो आप को दुनिया ही में) **देदे**(10) (और इन ऐतराज़ों की वजह यह है कि) **ये लोग क़ियामत को झूट समझ रहे हैं** (इसलिए अन्जाम की फ़िक्र नहीं है और जो जी में आता है बक देते हैं) **और** (अन्जाम इस का यह होगा कि) **हम ने ऐसे आदमी** (की सज़ा) **के लिए जो कि क़ियामत को झूटा समझे दोज़ख़ तैयार कर रक्खी** (है क्योंकि क़ियामत को झुटलाना अल्लाह व रसूल को झुटलाना है जो असली वजह दोज़ख़ में जाने की) **है**(11) (और उस दोज़ख़ की यह हालत होगी कि) **जब वो** (दोज़ख़) **उन को दूर से देखेगी तो** (देखते ही गुस्से में इतना जोश मारेगी कि) **वो लोग** (दूर ही से) **उस की आवाज़ सुनेंगे**(12) **और** (फिर) **जब वो उस** (दोज़ख़) **की किसी तंग जगह में हाथ पांव जकड़ कर डाल दिये जाएंगे तो वहां मौत ही मौत पुकारेंगे**(13) (उस वक़्त उन से कहा जाएगा कि) **एक बार मौत को न पुकारो बल्कि बार-बार मौत को पुकारते रहो** (क्योंकि यह मुसीबत कभी ख़त्म होने वाली नहीं है)(14) **आप** (उन को यह मुसीबत सुना कर) **कहिए कि** (यह बताओ कि) **क्या यह** (मुसीबत की) **हालत अच्छी है** (जो कुफ़्र की वजह से है) **या वो सदा रहने की जन्नत** (अच्छी है) **जिस का अल्लाह से डरने वालों से** (यानी ईमान वालों से) **वादा किया गया है, कि वो उनके लिए** (उनकी ताबेदारी का) **बदला है और उनका** (आख़री) **ठिकाना**(15) (और) **उन को वहां सब चीज़ें मिलेंगी जो कुछ वहां चाहेंगे** (और) **वो** (उसमें) **सदा रहेंगे,** (ऐ पैग़म्बर) **यह एक वादा है जो आप के रब ने** (महरबानी से अपने) **ज़िम्मे कर लिया है** (और) **मांगने के क़ाबिल है**(16) **और** (वो दिन उन को याद दिलाइये कि) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन** (काफ़िर) **लोगों को और जिन को वो लोग अल्लाह के सिवा पूजते थे** (और जिन्होंने किसी को गुमराह नहीं किया था चाहे सिर्फ़ बुत हों या फ़रिशते) **उन** (सब) **को जमा करेगा फिर** (उन माबूदों से इन पूजने वालों की रूसवाई के लिए) **कहेगा क्या तुम ने मेरे इन बन्दों को** (हक़ की राह से) **गुमराह किया था या ये** (अपने आप ही हक़ की) **राह से गुमराह हो गये थे** (मतलब यह कि उन्होंने तुम्हारी इबादत जो असल में गुमराही है तुम्हारे कहने और ख़ुशी से की थी या अपनी ग़लत राय से घड़ ली थी कि हमारी इबादत से ख़ुश होकर अल्लाह तआ़ला से सिफ़ारिश करेंगे)(17) **वो** (माबूद) **कहेंगे कि अल्लाह की पनाह हमारी क्या**

मजाल थी कि हम आप के सिवा और रखवाले बनाते (यानी हम शिर्क की बात कैसे बताते) **लेकिन** (ये ख़ुद ही गुमराह हुए और शुक्र के सामान को कुफ़्र का सामान बनाया जैसा) **आपने** (तो) **उन को और उनके बड़ों को** (दुनिया का ख़ूब) **साज़ो सामान दिया** (जिस का मतलब यह था कि नेमत देने वाले को पहचानते और उस का शुक्र व ताबेदारी करते मगर ये लोग) **यहां तक** (हवस व मज़ों में डूबे) **कि** (आप की) **याद** (ही) **को भुला बैठे और ये लोग ख़ुद ही बर्बाद हुए(18)** (उस वक़्त अल्लाह तआला उन पूजने वालों से कहेंगे) **लो तुम्हारे इन माबूदों ने तुम को तुम्हारी** (सब) **बातों में झूटा** (ही) **ठहरा दिया** (और उन्होंने भी तुम्हारा साथ न दिया) **सो** (अब) **तुम न तो ख़ुद** (अज़ाब को अपने ऊपर से) **हटा सकते हो और न** (किसी दूसरे की तरफ़ से) **मदद पा सकते हो** (यहां तक कि जिन पर पूरा भरोसा था वो भी साफ़ जवाब दे रहे हैं और तुम्हारी खुली मुख़ालफ़त कर रहे हैं) **और जो** (जो) **तुम में ज़ालिम** (यानी मुशरिक) **होगा हम उस को बड़ा अज़ाब चखाएंगे** (यानी ज़ुल्म और शिर्क का अन्जाम अज़ाब है)(19) **और हम ने आप से पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना भी खाते थे और बाज़ारों में भी चलते फिरते थे** (यानी ये बातें पैग़म्बरी में रूकावट नहीं), **और** (ऐ पैग़म्बर और पैग़म्बर के मानने वालो तुम काफ़िरों की ऐसी बेहूदा बातों पर ग़म न करो क्योंकि) **हम ने तुम** (लोगों) **में एक को दूसरे के लिए आज़माने का सामान बनाया है** (कि देखें ऐसी सूरत में कौन पैग़म्बर को मानता है कौन नहीं मानता) **है,** (सो जब यह बात मालूम हो गई तो) **क्या तुम** (अब भी) **सब्र करोगे** (यानी सब्र करना चाहिए) **और** (यह बात यक़ीनी है कि) **आप का रब ख़ूब देख रहा है** (तो वक़्त आने पर उन को सज़ा देगा फिर आप क्यों ग़म करें)(20)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझ से फ़रमाया कि मैं आप के लिए पूरे मक्का की ज़मीन और उसके पहाड़ों को सोना बना देता हूं तो मैंने कहा नहीं या रब मेरे मुझे तो यह पसन्द है कि मुझे एक दिन पेट भराई खाना मिले (जिस पर अल्लाह का शुक्र अदा करूं) और एक दिन भूका रहूं (उस पर सब्र करूं) । (तिरमिज़ी)

और हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं चाहता तो सोने के पहाड़ मेरे साथ फिरा करते। (मज़हरी)

وَ قَالَ الَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَیْنَا الْمَلٰٓىِٕكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِیْۤ اَنْفُسِهِمْ
وَ عَتَوْ عُتُوًّا كَبِیْرًا ﴿۲۱﴾ یَوْمَ یَرَوْنَ الْمَلٰٓىِٕكَةَ لَا بُشْرٰى یَوْمَىِٕذٍ لِّلْمُجْرِمِیْنَ وَ یَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۲۲﴾

आयत नं० 21 से 22

और जो लोग हमारे सामने पेश होने से नहीं डरते (क्योंकि वो क़ियामत और उस की पेशी और हिसाब का इनकार करते हैं) **वो** (पैग़म्बरी के इनकार के लिए) **यह कहते हैं कि हमारे पास फ़रिशते क्यों नहीं आते** (कि अगर फ़रिशते आकर हम से कहें कि ये रसूल हैं) **या हम अपने रब को देख लें** (और वो ख़ुद हम से कह दे कि ये रसूल हैं जब हम मानेंगे, इसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने कहा कि) **ये लोग अपने दिलों में अपने को बहुत बड़ा समझ रहे हैं** (कि अपने को इस क़ाबिल समझते हैं कि फ़रिशते आकर उन से बोलें या ख़ुद अल्लाह तआ़ला से बात करें) **और** (ख़ास कर अल्लाह तआ़ला को दुनिया में देखने और उससे बात करने की मांग में तो) **ये लोग** (इन्सानियत की) **हद से बहुत दूर निकल गये** (हैं क्योंकि फ़रिशते तो फिर भी इन्सान की तरह मख़लूक़) **हैं**(21) (और ये लोग अललाह तआ़ला को देखने के लाइक़ तो क्या होते बल्कि) **जिस दिन ये लोग फ़रिशतों को देखेंगे** (और वो दिन क़ियामत का है) **उस दिन मुजरिमों** (यानी काफ़िरों) **के लिए कोई ख़ुशी की बात** (नसीब) **न होगी और** (फ़रिशतों को जब अज़ाब के सामान के साथ आता देखेंगे तो घबरा कर) **कहेंगे पनाह है-पनाह है**(22)

नोटः- क़ियामत के दिन जब काफ़िर लोग अज़ाब देखेंगे तो पनाह मागेंगे।

وَ قَدِمْنَاۤ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿۲۳﴾ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ یَوْمَىِٕذٍ خَیْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّ اَحْسَنُ
مَقِیْلًا ﴿۲۴﴾ وَ یَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَ نُزِّلَ الْمَلٰٓىِٕكَةُ تَنْزِیْلًا ﴿۲۵﴾ اَلْمُلْكُ یَوْمَىِٕذِ ﹰالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَ كَانَ
یَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِیْنَ عَسِیْرًا ﴿۲۶﴾ وَ یَوْمَ یَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى یَدَیْهِ یَقُوْلُ یٰلَیْتَنِی اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِیْلًا ﴿۲۷﴾
یٰوَیْلَتٰى لَیْتَنِیْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِیْلًا ﴿۲۸﴾ لَقَدْ اَضَلَّنِیْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِیْ ؕ وَ كَانَ الشَّیْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ
خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾ وَ قَالَ الرَّسُوْلُ یٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِی اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿۳۰﴾ وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِیٍّ عَدُوًّا مِّنَ
الْمُجْرِمِیْنَ ؕ وَ كَفٰى بِرَبِّكَ هَادِیًا وَّ نَصِیْرًا ﴿۳۱﴾

आयत नं० 23 से 31

और हम (उस दिन) **उन के** (यानी काफ़िरों के) **उन** (नेक) **कामों की तरफ़ ध्यान करेंगे जो कि वो** (दुनिया में) **कर चुके थे तो उन को ऐसा** (बेकार) **कर** (के दिखा) **देंगे जैसे उड़ती हुई धूल** (कि किसी काम नहीं आती इसी तरह काफ़िरों के भले कामों पर कुछ सवाब न होगा)(23) **जन्नत वालों की उस दिन रहने की जगह भी अच्छी होगी और आराम करने की जगह भी अच्छी होगी(24) और जिस दिन आसमान एक बदली पर से फट जाएगा और** (उस बदली के साथ आसमान से) **फ़रिशते** (ज़मीन पर) **बहुत से उतारे जाएंगे(25)** (और उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला हिसाब- किताब करेंगे और) **उस दिन असली हुकूमत अल्लाह तआ़ला** (ही) **की होगी** (यानी हिसाब किताब और सज़ा व इनआम में किसी को दख़ल न होगा जैसा दुनिया में थोड़ा बहुत दूसरों का भी अमल दख़ल होता है), **और वो** (दिन) **काफ़िरों पर बड़ा सख़्त दिन होगा** (क्योंकि उनके हिसाब का अन्जाम जहन्नम ही है)(26) **और जिस दिन ज़ालिम** (यानी काफ़िर पछतावे से) **अपने हाथ काट-काट खाएगा** (और) **कहेगा क्या अच्छा होता मैं रसूल के साथ** (दीन की) **राह पर होता(27) हाय मेरी बद नसीबी** (कि ऐसा न किया और) **क्या अच्छा होता कि मैं उस आदमी को दोस्त न बनाता(28) उस** (कमबख़्त) **ने मुझ को नसीहत आने के बाद उससे बहका** (दिया और हटा) **दिया, और शैतान तो इन्सान को** (ऐन वक़्त पर) **मदद करने से जवाब दे देता है** (जैसा कि उस काफ़िर के पछतावे के वक़्त उसने कोई हमदर्दी न की जब कि करने से भी कुछ न होता सिर्फ़ दुनिया ही में बहकाने को था)(29) **और** (उस दिन) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआ़ला से काफ़िरों की शिकायत करते हुए) **कहेंगे कि या रब मेरे मेरी** (इस) **क़ौम ने इस क़ुरआन को** (कि जिस पर अमल करना वाजिब था) **बिल्कुल छोड़ रक्खा था** (और अमल करना तो दूर ध्यान ही न करते थे मतलब यह कि ख़ुद काफ़िर भी अपनी गुमराही का इक़रार करेंगे और रसूल भी गवाही देंगे इस तरह सबूत पक्का होकर सज़ा पाएंगे)(30) **और हम इस तरह मुजरिम लोगों में से हर नबी के दुशमन बनाते रहते हैं** (यानी ये लोग जो क़ुरआन का इनकार करके आप की मुख़ालफ़त कर रहे हैं कोई नई बात नहीं जिस का ग़म किया जाए), **और** (जिस को हिदायत देना चाहे उस की) **हिदायत करने को और** (जो हिदायत से महरूम है उस के मुक़ाबिले में आप की) **मदद करने को आप का रब काफ़ी है(31)**

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि हमारे दोस्तों में कौन

लोग बेहतर हैं तो आपने फ़रमाया "वो आदमी जिस को देख कर ख़ुदा याद आए और जिस की बात से तुम्हारा इल्म बढ़े और जिसके कामों को देख कर आख़िरत की याद ताज़ा हो"।

(क़ुरतबी)

और एक हदीस में है कि जिस आदमी ने क़ुरआन पढ़ा मगर फिर उस को बन्द करके घर में रख दिया न उस की तिलावत की पाबन्दी की न उस के हुक्मों में सोचा तो क़ियामत के दिन उसके गले में पड़ा हुआ आएगा और अल्लाह तआला के दरबार में शिकायत करेगा कि आप के इस बन्दे ने मुझे छोड़ दिया था अब आप मेरे उसके मुआमले में फ़ैसला कर दें।

(क़ुरतबी)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۚ كَذَٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ تَرْتِيلًا ﴿٣٢﴾
وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ﴿٣٣﴾ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۙ أُولَٰئِكَ
شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٣٤﴾

आयत नं० 32 से 34

और काफ़िर लोग यह कहते हैं कि इन (पैग़म्बर) **पर सारा क़ुरआन एक ही बार में क्यों नहीं उतारा गया** (मन्शा इस ऐतराज़ से यह है कि अगर ख़ुदा का कलाम होता तो थोड़ा-थोड़ा उतारने की क्या ज़रूरत थी, इस थोड़ा-थोड़ा उतारने से तो यह शक होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद ही सोच-सोच कर थोड़ा-थोड़ा बना लेते हैं, आगे इस ऐतराज़ का जवाब है कि) **इस तरह** (थोड़ा-थोड़ा) **इसलिए** (हम ने उतारा) **है ताकि हम इस के वास्ते से आप के दिल को मज़बूत रक्खें और** (इसी लिए) **हम ने इस को बहुत ठहरा-ठहरा कर उतारा है** (जैसा कि तेईस साल में आहिस्ता-आहिस्ता पूरा हुआ)(32) **और ये लोग कैसा ही अनोख सवाल आप के सामने लाएं मगर हम** (उस का) **ठीक-ठीक जवाब और इससे बेहतर खोल कर बता देते हैं** (ताकि आप मुख़ालिफ़ों को जवाब दे सकें)(33) **ये वो लोग हैं जो अपने चेहरों के बल** (घसीट कर) **जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएंगे ये लोग जगह में भी बदतर हैं और तरीक़े में भी गुमराह हैं**(34)

नोटः- क़ुरआन के थोड़ा-थोड़ा उतरने से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल की मज़बूती और

तसल्ली में कई वजहें हैं एक तो यह कि याद रखना आसान हो गया एक बड़ी किताब एक दम उतारी जाती तो यह आसानी न रहती और आसानी के साथ याद होते रहने से दिल में कोई परीशानी नहीं रहती दूसरे काफ़िरों के ऐतराज़ के वक़्त आप की तसल्ली के लिए क़ुरआन में आयत उतर जाती और अगर पूरा क़ुरआन एक दम उतारा जाता तो उस क़िस्से पर तसल्ली के लिए क़ुरआन में आयत को तलाश करने की ज़रूरत पड़ती तीसरे पैग़ामे ख़ुदावन्दी का आना ताज़ा गवाही है ख़ुदा की मदद की जो कि दिल की मज़बूती के लिए बड़ी चीज़ है और इसके सिवा और भी बहुत सी हिकमतें और फ़ाइदे हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ۝۳۵ فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ
فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ۝۳۶ وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ
عَذَابًا اَلِيْمًا ۝۳۷ وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًۢا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝۳۸ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ۫ وَكُلًّا
تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ۝۳۹ وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ
نُشُوْرًا ۝۴۰ وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝۴۱ اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا
لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝۴۲ اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ
اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝۴۳ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا
كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝۴۴

आयत नं० 35 से 44

और बेशक हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को** (तौरेत) **किताब दी थी और** (उस किताब के मिलने से पहले) **हमने उन के साथ उन के भाई हारून को** (उन का) **मददगार बनाया था**(35) **फिर हम ने** (दोनों को) **हुक्म दिया कि दोनों आदमी उन लोगों के पास** (नसीहत करने के लिए) **जाओ जिन्होंने हमारी** (तौहीद की) **दलीलों को झुटलाया है** (मुराद इससे फ़िरऔन और उसकी क़ौम है बस ये दोनों हज़रात वहां पहुंचे और समझाया मगर उन्होंने न माना)**, सो हम ने उन को** (अपने अज़ाब से) **बिल्कुल ही बर्बाद कर दिया** (यानी दरिया में डुबाए गये)(36) **और नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम को भी** (उनके ज़माने में) **हम हलाक कर चुके हैं** (जिस की वजह यह है कि) **जब**

उन्होंने पैग़म्बरों को झुटलाया तो हम ने उन को (तूफ़ान से) **डुबो दिया और हम ने उन** (के क़िस्से) **को लोगों** (की सीख) **के लिए निशानी बना दिया,** (यह तो दुनिया में सज़ा हुई) **और** (आख़रत में) **हम ने** (उन) **ज़ालिमों के लिए दर्दनाक सज़ा तैयार कर रक्खी है(37) और हम ने आद और समूद और असहाबे रस्स और उन के बीच-बीच में बहुत सी उम्मतों को हलाक किया(38) और हम ने** (उन उम्मतों में से) **हर एक** (की हिदायत) **के वास्ते अजीब अजीब** (यानी असर करने वाली) **मिसालें बयान कीं, और** (जब न माना तो) **हम ने सब को बिल्कुल ही बर्बाद कर दिया(39) और ये** (काफ़िर लोग मुल्क शाम के सफ़र में) **उस बस्ती से होकर गुज़रते हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गये थे** (यानी क़ौमे लूत की बस्ती)**, तो क्या ये लोग उस को देखते नहीं रहते** (फिर भी सीख नहीं लेते कि कुफ़्र को छोड़ दें जिस की वजह से क़ौमे लूत को सज़ा हुई और सीख न लेने की यह वजह नहीं कि उस बस्ती को देखते नहीं) **बल्कि** (असल वजह इसकी यह है कि) **ये लोग मर कर जी उठने की उम्मीद नहीं रखते** (यानी आख़रत का इनकार करते हैं इसलिए कुफ़्र को सज़ा की वजह नहीं समझते बल्कि हादसा समझते हैं यह वजह है सीख न लेने की)**(40) और** (ऐ पैग़म्बर) **जब ये लोग आप को देखते हैं तो बस आप का मज़ाक़ उड़ाने लगते हैं,** (और कहते हैं) **कि क्या ये ही** (बुज़ुर्ग) **हैं जिन को अल्लाह तआ़ला ने पैग़म्बर बना कर भेजा है** (यानी ऐसा ग़रीब आदमी पैग़म्बर न होना चाहिए अगर पैग़म्बरी कोई चीज़ है तो कोई रईस मालदार होना चाहिए था बस ये पैग़म्बर नहीं)**(41) उस आदमी** (की जादू बयानी मगर ऐसी है कि उस) **ने तो हम को हमारे माबूदों से हटा ही दिया होता अगर हम उन पर** (मज़बूती से) **जमे न रहते** (यानी हम तो हिदायत पर हैं और यह हम को गुमराह करने की कोशिश करता था)**, और** (अल्लाह तआ़ला उन की बात की काट के लिए फ़रमाते हैं कि ये ज़ालिम अब तो अपने आप को हिदायत पर और हमारे पैग़म्बर को गुमराह बता रहे हैं मगर मरने के बाद) **जल्दी ही उन को मालूम हो जाएगा जब अज़ाब को देखेंगे कि कौन आदमी गुमराह था** (कि ये ख़ुद या नऊज़ुबिल्लाह पैग़म्बर)(42) **आपने** (ऐ पैग़म्बर) **उस आदमी की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपनी मनमर्ज़ी को बना रक्खा है, तो क्या आप उसकी ज़िम्मेदारी ले सकते हैं(43) या आप सोचते हैं कि उनमें अक्सर सुनते या समझते हैं** (मतलब यह कि आप उन की गुमराही से ग़म न कीजिए क्योंकि आप की ज़िम्मेदारी नहीं कि चाहे न चाहे उन को राह पर लाएं और न हिदायत की उन से उम्मीद कीजिए क्योंकि न हक़ बात को ये सुनते हैं न अक़्ल है कि सोचें) **ये तो सिर्फ़ जानवरों की तरह हैं** (कि वो बात को न सुनते हैं न समझते हैं) **बल्कि ये उन से भी ज़्यादा भटके हुए हैं** (क्योंकि वो तो

दीन के हुक्मों के पाबन्द नहीं तो उन का न समझना बुरा नहीं और इन पर हुक्मों को मानने की पाबन्दी है फिर भी नहीं समझते)(44)

नोटः- असहाबे रस्स कौन लोग थे क़ुरआन और हदीस में उस क़ौम का ज़िक्र नहीं। इस्राइली रिवायतों से पता चलता है कि ये क़ौम समूद के बचे लोग थे जो किसी कुए के पास आबाद थे।

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَ لَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ﴿۴۵﴾ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ
اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿۴۶﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّ النَّوْمَ سُبَاتًا وَّ جَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿۴۷﴾ وَ هُوَ الَّذِيْۤ
اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۙ﴿۴۸﴾ لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّ نُسْقِيَهٗ
مِمَّا خَلَقْنَاۤ اَنْعَامًا وَّ اَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ﴿۴۹﴾ وَ لَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ﴿۵۰﴾ وَ لَوْ
شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۖ﴿۵۱﴾ فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ جَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ﴿۵۲﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ
هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّ هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَ جَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۳﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ
بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّ صِهْرًا ؕ وَ كَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ﴿۵۴﴾ وَ يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَ لَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَ
كَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿۵۵﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿۵۶﴾ قُلْ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ
اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۵۷﴾ وَ تَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَ سَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَ كَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ
خَبِيْرًا ۚۛ﴿۵۸﴾ اِۨلَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚۛ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ
بِهٖ خَبِيْرًا ﴿۵۹﴾ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَ مَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَ زَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿۶۰﴾ تَبٰرَكَ
الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ جَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّ قَمَرًا مُّنِيْرًا ﴿۶۱﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ خِلْفَةً
لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿۶۲﴾

आयत नं० 45 से 62

(ऐ लोगों) **क्या तुम ने अपने रब** (की क़ुदरत) **की तरफ़ नज़र नहीं की कि उसने** (सूरज निकलने के वक़्त खड़ी हुई चीज़ों के) **साय को किस तरह** (दूर तक) **फैलाया** (है क्योंकि सूरज निकलने के वक़्त हर चीज़ का साया लम्बा होता) **है, और अगर वो चाहता तो उस को एक**

हालत पर ठहराया हुआ रखता (यानी सूरज को ऊंचा होने पर भी न घटता), **फिर हम ने सूरज को उस** (साय के घटने बढ़ने) **पर** (एक खुली) **निशानी बना दिया**(45) **फिर हम ने उस** (साए) **को अपनी तरफ़ धीरे-धीरे समेट लिया** (यानी जैसे-जैसे सूरज ऊंचा हुआ वो साया घटते घटते ख़त्म होता गया)(46) **और वो ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दे की चीज़ और नींद को आराम की चीज़ बनाया और दिन को** (रात के आराम के बाद दोबारा) **उठ खड़े होने का वक़्त बनाया**(47) **और वो ऐसा है कि अपनी रहमत की बारिश से पहले हवाओं को भेजता है कि वो** (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिल को) **ख़ुश कर देती हैं, और हम आसमान से पानी बरसाते हैं जो पाक साफ़ करने की चीज़ है**(48) **ताकि उस** (पानी) **से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें और अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से जानवरों और बहुत से इन्सानों को पिलाएं**(49) **और हम उस** (पानी) **को** (जैसा सही समझते हैं) **उन लोगों के बीच बांट देते हैं ताकि लोग सोचें** (कि ये काम किसी बड़ी क़ुदरत वाले के हैं कि वो ही इबादत का हक़दार है) **तो** (चाहिए था कि सोच कर उस का हक़ अदा करते लेकिन) **अक्सर लोग बिना नाशुक्री किये न रहे** (जिसमें सबसे बढ़ कर कुफ़्र व शिर्क है)(50) **और** (आप तबलीग़ के काम से हिम्मत न हारिये कि मैं अकेला कैसे इस काम को करूंगा) **अगर हम चाहते तो** (आप के सिवा इसी ज़माने में) **हर बस्ती में एक पैग़म्बर भेज देते** (और अकेले आप पर इतना काम न डालते लेकिन चूंकि आप का सवाब बढ़ाना है इसलिए हम ने ऐसा नहीं किया)(51) **सो** (इसे नेमत समझ कर इसके शुक्रिये में) **आप काफ़िरों की ख़ुशी का काम न कीजिए** (यानी काफ़िर तो इससे ख़ुश होंगे कि तबलीग़ न हो या कमी हो जाए और उनकी आज़ादी में रूकावट न हो) **और क़ुरआन** (में जो हक़ की दलीलें बयान हुई हैं उन) **से उन का पूरी ताक़त से मुक़ाबिला कीजिए** (यानी हिम्मत के साथ तबलीग़ का काम करते रहिए)(52) **और वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिस ने दो दरियाओं को** (इस तरह) **मिलाया जिनमें एक** (का पानी) **तो मीठा है प्यास बुझाने वाला और एक** (का पानी) **नमकीन खारा है, और** (आपस में मिलने के बावजूद) **उनके बीच में** (अपनी क़ुदरत से) **एक पर्दा और** (असल में मिलने से) **एक बड़ी रूकावट रख दी** (जो दिखाई नहीं देती, इससे मुराद वो मौक़े हैं जहां नदियां और नहरें समन्दर में आकर गिरती हैं और मीलों दूर तक उन का मीठा पानी समन्दर के खारी पानी के साथ अलग-अलग बहते हैं)(53) **और वो ऐसा है जिसने पानी से** (यानी मनी से) **इन्सान को पैदा किया फिर उस को ख़ानदान वाला और सुसराल वाला बनाया** (इस नेमत में क़ुदरत की दलील भी है कि पानी से कैसा बना दिया), **और** (लोगों) **तुम्हारा रब बड़ी क़ुदरत वाला है**(54) **और** (फिर भी) **ये** (मुशरिक) **लोग** (ऐसे)

अल्लाह को छोड़ कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं (जो इबादत करने पर) **न उन को कुछ नफ़ा पहुंचा सकती हैं और न** (इबादत न करने की सूरत में) **उन को कुछ नुक़सान पहुंचा सकती हैं, और काफ़िर तो अपने रब का मुख़ालिफ़** (है कि उस को छोड़ कर दूसरे की इबादत करता) **है(55) और** (ऐ पैग़म्बर आप उन के ईमान न लाने से ग़म न करें क्योंकि) **हम ने आप को सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि** (ईमान वालो को जन्नत की) **ख़ुशख़बरी सुनाएं और** (काफ़िरों को दोज़ख़ से) **डराएं(56) आप** (इन लोगों से यह) **कह दीजिए कि मैं तुम से इस** (तबलीग़) **पर कोई बदला** (माली या इज़्ज़त का) **नहीं मांगता हां जो आदमी यह चाहे कि अपने रब तक** (पहुंचने) **का रास्ता पा जाए** (तो यह तो मैं ज़रूर चाहता हूं इसे चाहे बदला समझ लो)(57) **और** (काफ़िरों की मुख़ालफ़त से न घबराओ बल्कि तबलीग़ में) **उस ज़िन्दा और कभी न मरने वाले पर भरोसा रखिये और** (तसल्ली के साथ) **उस की हम्द के साथ** (उसकी) **तस्बीह में लगे रहिए, और वो** (अल्लाह) **अपने बन्दों के गुनाहों की ख़बर रखने के लिए काफ़ी है** (वो जब ठीक समझेगा सज़ा देगा)(58) **वो ऐसा हैं जिसने आसमान व ज़मीन और जो कुछ उन के बीच में है सब छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया फिर अर्श** (जो शाही कुर्सी जैसा है उस) **पर** (इस तरह) **क़ाइम** (और जलवा फ़रमा) **हुआ** (जो कि उस की शान के लाइक़ है) **वो बड़ा महरबान है सो उस की शान किसी जानने वाले से पूछना चाहिए** (कि वो कैसा है काफ़िर मुशरिक क्या जानें और न जानने की वजह से शिर्क करते हैं)(59) **और जब इन** (काफ़िरों) **से कहा जाता है कि रहमान** (यानी अल्लाह तआला) **को सजदा करो तो** (जहालत और हटधर्मी से) **कहते हैं कि रहमान क्या चीज़ है** (जिसके सामने हम को सजदा करने को कहते हो) **क्या हम उस को सजदा करने लगेंगे जिस को तुम सजदा करने के लिए कहोगे और इससे उन को और ज़्यादा नफ़रत होती है** (वो ऐसा हटधर्मी से कहते थे)(60) **वो ज़ात बहुत आलीशान है जिसने आसमान में बड़े-बड़े सितारे बनाए और उन सितारों में एक रौशन चराग़** (यानी सूरज) **और नूरानी चान्द बनाया(61) और वो ऐसा है जिसने रात और दिन एक दूसरे के पीछे आने जाने वाले बनाए** (और यह सब कुछ जो तौहीद की दलीलों और अल्लाह की नेमतों का ज़िक्र हुआ है) **उस आदमी के** (समझाने के) **लिए** (हैं) **जो समझना चाहे या शुक्र करना चाहे** (कि इसमें समझने वाले की नज़र में दलीले हैं और शुक्र करने वाले की नज़र में नेमते हैं)(62)।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ
لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ اِنَّهَا
سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٦٦﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾ وَالَّذِيْنَ
لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ
يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا
صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ
يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا
بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ
اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾ قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ
يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

आयत नं० 63 से 77

और अल्लाह के (ख़ास) **बन्दे वो हैं जो ज़मीन पर आजज़ी से** (दबे पांव) **चलते हैं** (मतलब यह है कि उनके मिज़ाज में बड़प्पन नहीं है और इसी का असर उनकी चाल में भी है) **और** (दूसरों के साथ उन का बरताव यह है कि) **जब उन से जहालत वाले लोग** (जहालत की) **बात** (चीत) **करते हैं तो वो** (बुराई मिटाने की और) **सलामती की बात करते हैं** (मतलब यह कि अपनी ज़ात के लिए बदला नहीं लेते)(63) **और जो रातों को अपने रब के आगे सजदा और क़ियाम** (यानी नमाज़) **में लगे रहते हैं(64) और जो** (इन सब बातों के बावजूद अल्लाह तआला से इतना डरते हैं कि) **दुआएं मांगते हैं कि या रब हमारे हम से जहन्नम के अज़ाब को दूर रखिए क्योंकि उस का अज़ाब पूरी तबाही है(65) बेशक वो जहन्नम बुरा ठिकाना और बुरी जगह** (है यह तो उनकी जिस्मानी इबादत) **है(66) और** (माली इबादत में उन का तरीक़ा यह है कि) **वो जब ख़र्च करने लगते हैं तो न फ़ुज़ूल ख़र्ची करते हैं** (कि गुनाह में ख़र्च करने लगें) **और न तंगी करते हैं** (कि ज़रूरी कामों में भी ख़र्च में कमी करें) **और उन का ख़र्च करना इस** (ज़्यादती और कमी) **के बीच की चाल होता है(67) और जो** (गुनाह से बचने में यह शान रखते हैं कि) **अल्लाह**

तआ़ला के साथ किसी और माबूद की इबादत नहीं करते और जिस आदमी (के क़त्ल करने) **को अल्लाह तआ़ला ने** (शरीअ़त की रू से) **हराम किया है उसको क़त्ल नहीं करते हां मगर हक़ पर यानी जब शरीअ़त की रू से क़त्ल की इजाज़त हो तो और बात है और वो बदकारी नहीं करते और जो आदमी ऐसे काम करेगा तो सज़ा पाएगा(68) क़ियामत के दिन उस का अज़ाब बढ़ता चला जाएगा और वो इस अज़ाब में रूसवा होकर सदा-सदा रहेगा** (यह सदा का और रूसवा करने वाला अज़ाब मुशरिकों के लिए है)(69) **मगर जो** (शिर्क व गुनाह से) **तौबा करले और** (इस तौबा के क़ुबूल होने की शर्त यह है कि) **ईमान** (भी) **ले आए और नेक काम करता रहे** (यानी ज़रूरी इबादतें करता रहे) **तो अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों के** (पिछले) **गुनाहों** (को मिटा कर उन) **को नेकियों से बदल देगा, और** (यह इसलिए हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाला** (है इसलिए गुनाहों को मिटा दिया और) **बड़ा महरबान है** (इसलिए नेकियां दी गईं)(70) **और जो आदमी** (जिस गुनाह से) **तौबा करता है और नेक काम करता है** (यानी आगे को गुनाह से बचता रहे) **तो वो** (भी अज़ाब से बचा रहेगा क्योंकि वो) **अल्लाह तआ़ला की तरफ़** (सच्ची नीयत के साथ) **लौ लगा रहा है(71) और** (आगे फिर अल्लाह के ख़ास बन्दों की ख़ूबियां बयान करते हैं यानी उनमें यह बात है कि) **वो बेहूदा बातों में** (जैसे शरीअत के ख़िलाफ़ खेल तमाशों में) **शामिल नहीं होते और अगर** (कभी) **बेहूदा कामों के पास से होकर गुज़रें तो इ़ज़्ज़तदारों की तरह** (शराफ़त के साथ) **गुज़र जाते हैं** (यानी उस की तरफ़ ध्यान नहीं देते)(72) **और वो ऐसे हैं कि जिस वक़्त उन को अल्लाह के हुक्मों से नसीहत की जाती है तो उन** (हुक्मों) **पर बहरे अन्धे होकर नहीं गिरते** (बल्कि सुनने वाले देखने वाले समझदार इन्सान की तरह उनमें सोचते हैं और अमल करते हैं)(73) **और वो ऐसे हैं कि** (जैसे ख़ुद दीन के आशिक़ हैं इसी तरह अपने घर वालों के लिए भी) **दुआ करते रहते हैं कि या रब हमारे हम को हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ़ से आंखों की ठन्डक** (यानी चैन) **दीजिए** (यानी उनको दीनदार बना दीजिए) **और** (घर वालों के सरदार तो हैं ही उन को परहेज़गार बनाकर) **हम को परहेज़गारों का सरदार बना दीजिए(74)** (आगे उन अल्लाह के बन्दों के बदले व इनआम का बयान है यानी) **ऐसे लोगों को** (जन्नत में रहने को) **झरोंकेदार महल मिलेंगे उनके** (दीन व ताबेदारी पर) **जमे रहने की वजह से और उन को उस** (जन्नत) **में** (फ़रिशतों की तरफ़ से) **मुबारकबाद और सलाम मिलेगा(75)** (और) **उस** (जन्नत) **में वो सदा-सदा रहेंगे, वो कैसा अच्छा ठिकाना और जगह है(76)** (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (आम लोगों से) **कह दीजिए कि मेरा रब तुम्हारी ज़रा भी परवा**

न करेगा अगर तुम इबादत न करोगे सो (ऐ काफ़िरों) **तुम तो** (अल्लाह के हुक्मों को) **झूटा समझते हो तो जल्द ही यह** (झूटा समझना तुम्हारे लिए जान का) **वबाल हो**(कर रहे)**गा** (चाहे दुनिया में भी मुसीबत आए वर्ना आख़िरत में तो ज़रूर)(77)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तहज्जुद (रात की इबादत) की पाबन्दी करो क्योंकि वो तुम से पहले भी सब नेक बन्दों की आदत रही है। और वो अल्लाह तआ़ला से तुम को नज़दीक करने वाली और गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और गुनाहों से रोकने वाली चीज़ है। (मज़हरी)

26-सूरत-शुअरा

इस मक्की सूरत में '11' रूकू और '227' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

طٰسٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢ لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٣ اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ
السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝٤ وَ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ
مُعْرِضِيْنَ ۝٥ فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦ اَوَ لَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا
فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝٧ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝٩

आयत नं० 01 से 09

तासीम मीम (इस का मतलब तो अल्लाह ही को मालूम है)(01) **ये** (आयतें जो आप पर उतरती हैं हक़ को) **खोल कर बयान करने वाली किताब** (यानी क़ुरआन) **की आयतें हैं**(02) (और ये लोग जो इस पर ईमान नहीं लाते तो आप इतना ग़म क्यों करते हैं कि ऐसा लगता है कि) **शायद आप उन के ईमान न लाने पर** (अफ़सोस करते करते) **अपनी जान देदेंगे**(03) (असल बात यह है कि यह दुनिया आज़माने के लिए है ईमान लाना या न लाना बन्दे के बस में रहता है वर्ना) **अगर हम** (इन को ज़बरदस्ती मोमिन करना) **चाहें तो उन पर आसमान से एक** (ऐसी) **बड़ी निशानी उतार दें** (कि उस के आगे मजबूर हो जाएं) **फिर उन की गर्दनें उस** (निशानी के आने) **से झुक जाएं** (और मजबूर होकर ईमान ले आऐं लेकिन ऐसा करने से इम्तिहान बाक़ी न रहेगा इसलिए ऐसा नहीं किया जाता)(04) **और** (उन की यह हालत है कि) **उन के पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जब कोई नसीहत आती है ये उससे मुंह मोड़ लेते हैं**(05) **सो** (नौबत यहां तक पहुंची कि) **उन्होंने** (सच्चे दीन को) **झूटा बता दिया** (और झुटलाने के साथ हंसी भी उड़ाई) **सो अब जल्दी उन को इस बात की असलीयत पता चल जाएगी जिसके साथ ये मज़ाक़ किया करते थे** (यानी जब ख़ुदा के अज़ाब को मौत के वक़्त या क़ियामत में देखेंगे)(06) **क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा** (जो

उन के बहुत पास और हर वक़्त नज़रों के सामने है) **कि हम ने उसमें कितनी अच्छी-अच्छी चीज़ें उगाईं** (हैं जो पैदा करने वाले की क़ुदरत की दलील) **हैं(07) बेशक इसमें** (तौहीद की) **एक बड़ी** (अक़्ली) **निशानी है, और** (इसके बावजूद) **उनमें के अक्सर लोग ईमान नहीं लाते** (और शिर्क करते हैं जो पैग़म्बरी के इनकार से भी बढ़ कर है, फिर ऐसे ज़िद्दी लोगों के पीछे क्यों जान खोई जाए)(08) **और** (अगर उन को शिर्क पर फ़ौरन अज़ाब न मिलने से शक है तो इसकी वजह यह है कि) **बेशक आप का रब** (इसके बावजूद कि) **ज़बरदस्त** (ताक़त और क़ुदरत वाला) **है** (मगर इसके साथ ही) **रहमत वाला** (भी है इसलिए दुनिया में काफ़िरों को मोहलत दे रक्खी) **है(09)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि नसीहत को तो कोशिश भर करना चाहिए फिर भी अगर हिदायत न हो तो उस पर ज़्यादा ग़म न करना चाहिए।

وَ اِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۙ﴿١٠﴾ قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿١١﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْۤ اَخَافُ اَنْ
يُّكَذِّبُوْنِ ؕ﴿١٢﴾ وَ يَضِيْقُ صَدْرِيْ وَ لَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَ لَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ
يَّقْتُلُوْنِ ۚ﴿١٤﴾ قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَاۤ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿١٥﴾ فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَاۤ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿١٦﴾ اَنْ
اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿١٧﴾ قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّ لَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۙ﴿١٨﴾ وَ فَعَلْتَ
فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَ اَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾ قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّ اَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ؕ﴿٢٠﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ
فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾ وَ تِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿٢٢﴾ قَالَ
فِرْعَوْنُ وَ مَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿٢٣﴾ قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ
اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالَ رَبُّكُمْ وَ رَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾ قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾
قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ
مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالَ اَوَ لَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ۚ﴿٣٠﴾ قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ
فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۚۖ﴿٣٢﴾ وَّ نَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۠﴿٣٣﴾

आयत नं० 10 से 33

और (इन लोगों को उस वक़्त का क़िस्सा सुनाइये) **जब आप के रब ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को पुकारा** (और हुक्म दिया) **कि तुम ज़ालिम लोगों के पास जाओ(10) यानी फ़िरऔन की क़ौम**

के पास (जाओ, और देखो) **क्या ये लोग** (हमारे गुस्से से) **नहीं डरते** (यानी वो लोग बहुत बुरे काम कर रहे हैं)(11) **उन्होंने कहा कि या रब मेरे** (मैं इस ख़िदमत के लिए हाज़िर हूं लेकिन इस काम के लिए एक मददगार चाहता हूं क्योंकि) **मुझ को यह ख़तरा है कि वो मुझे** (अपनी पूरी बात कहने से पहले ही) **झुटलाने लगें**(12) **और** (ऐसे वक़्त में) **मेरे दिल में घुटन सी होने लगती है और मेरी ज़बान** (अच्छी तरह) **नहीं चलती इसलिए हारून के पास** (भी वही) **भेज दीजिए** (और उनको नबी बना दीजिए कि अगर मुझ को झुटलाया जाए तो वो तस्दीक़ करने लगें ताकि दिल मज़बूत और ज़बान जारी रहे)(13) **और** (एक बात यह है कि) **मेरे ज़िम्मे उन लोगों का एक जुर्म भी है** (कि मेरे हाथ से उनके एक आदमी का क़त्ल हो गया था) **तो** (इसलिए) **मुझ को** (एक) **ख़तरा यह है कि वो लोग मुझ को** (हुक्म पहुंचाने से पहले) **क़त्ल कर डालें** (तब भी हुक्म न पहुंचा सकूंगा इस का भी कोई इन्तिज़ाम कर दीजिए)(14) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **कि क्या मजाल है** (जो ऐसा कर सकें और हम ने हारून को भी पैग़म्बरी दी अब दोनों रूकावटें दूर हुईं) **तो** (अब) **तुम दोनो मेरे हुक्म लेकर जाओ** (कि हारून भी नबी हो गये और) **हम** (मदद से) **तुम्हारे साथ हैं** (और जो बात चीत तुम्हारी और उन लोगों की होगी उस को) **सुनते हैं**(15) **सो तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और** (उस) **से कहो कि हम सारे जहानों के रब** (यानी अल्लाह तआ़ला) **का पैग़ाम लेकर आए हैं**(16) (और तौहीद की दावत के साथ यह हुक्म भी लाए हैं) **कि तुम बनी इस्राईल को** (अपने बेगार और ज़ुल्म से रिहाई देकर उनके असली वतन मुल्क शाम की तरफ़) **हमारे साथ जाने दो** (बस ये दोनों हज़रात गये और फिरऔन से बातें कह दीं)(17) **फ़िरऔन** (ये सब बातें सुन कर मूसा अलैहिस्सलाम को पहचान कर उन से) **कहने लगा कि क्या हम ने तुम को बचपन में नहीं पाला और तुम अपनी** (उस) **उम्र में बरसों हम में रहे सहे**(18) **और तुम ने अपनी वो हरकत भी की थी जो की थी** (यानी उनके एक आदमी को क़त्ल किया था) **और तुम बड़े नाशुक्रे** (आदमी) **हो** (कि मेरा ही खाया, मेरा ही आदमी क़त्ल किया फिर मुझ को अपना ताबे बनाने आए हो चाहिए तो यह था कि तुम मेरे सामने दब कर रहते)(19) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने जवाब दिया कि** (असल में) **उस वक़्त वो हरकत मैं कर बैठा था और मुझ से ग़लती हो गई थी** (यानी जान बूझ कर मैंने क़त्ल नहीं किया उस के ज़ुल्म से उस को रोकना चाहता था कि अचानक वो मर गया)(20) **फिर जब मुझ को डर लगा तो मैं तुम्हारे यहां से फ़रार हो गया फिर मेरे रब ने मुझ को** (ख़ास) **समझदारी बख़्शी और मुझ को पैग़म्बरों में शामिल कर दिया** (मतलब यह कि मैं पैग़म्बरी की हैसियत से आया हूं और वो क़त्ल अन्जाने में हुआ था यह तो क़त्ल के ऐतराज़ का जवाब था)(21)

और (रहा अहसान जिताना परवरिश का तो) **वो यह नेमत है जिसका तुम मुझ पर अहसान रखते हो कि तुम ने बनी इस्राईल को ग़ुलाम बना रक्खा था** (और उन पर ज़ुल्म करते थे कि उनके लड़कों को क़त्ल करते थे जिसके डर से मैं सन्दूक़ में रख कर दरिया में डाला गया और तुम्हारे हाथ लग गया और तुम्हारी परवरिश में रहा तो उस परवरिश की असली वजह तुम्हारा ज़ुल्म ही है तो ऐसी परवरिश का क्या अहसान जिताते हो बल्कि इस बात को याद करके तो तुम को शर्माना चाहिए)(22) **फ़िरऔन** (इस बात पर लाजवाब हो गया और बात बदल कर उस) **ने कहा कि** (जिस को तुम) **सारे जहानो का रब** (कहते हो वो) **क्या चीज़** (है यानी उसकी असलीयत क्या) **है**(23) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने जवाब दिया कि वो रब है आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ** (मख़्लूक़) **उनके बीच में है उस** (सब) **का, अगर तुम को** (सचमुच) **यक़ीन करना हो तो** (यह पता बहुत है, मतलब यह कि उसकी ज़ात को नहीं समझ सकते उस की ख़ूबियों और कमालों से उस को पहचान सकते हैं)(24) **फ़िरऔन ने अपने दरबारियों से कहा कि तुम लोग** (कुछ) **सुनते हो** (कि सवाल कुछ जवाब कुछ)(25) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि वो रब है तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादों का**(26) (मगर) **फ़िरऔन** (न समझा और) **कहने लगा कि यह तुम्हारा रसूल जो** (बताता है कि) **तुम्हारी तरफ़ पैग़म्बर होकअर आया है दीवाना** (मालूम होता) **है**(27) **मूसा अलैहि अस्सलाम ने कहा कि वो रब है पूरब और पच्छम का और जो कुछ उनके बीच में है उस का भी, अगर तुम को अक़्ल हो** (तो इसी से मान लो)(28) **फ़िरऔन** (आख़िर मजबूर होकर) **कहने लगा कि अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को माबूद माना तो जेलख़ाना भेज दूंगा**(29) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या अगर मैं कोई खुली दलील दिखाऊं तब भी** (न मानोगे)(30) **फ़िरऔन ने कहा अच्छा तो वो दलील दिखाओ अगर तुम सच्चे हो**(31) **तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अपना असा यानी) **अपनी लाठी डाल दी तो अचानक साफ़ अज़दहा बन गया**(32) (और दूसरा मोजिज़ा दिखाने के लिए) **अपना हाथ** (गरीबान में देकर) **बाहर निकाला तो वो अचानक सब देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया** (कि उस को भी सब ने खुली आंखों से देखा)(33)

नोटः- बनी इस्राईल मुल्क शाम के रहने वाले थे वहां जाना चाहते तो फ़िरऔन उन को जाने न देता था इस तरह चार सौ साल से वो उसकी क़ैद में ग़ुलामी की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔन को हक़ का पैग़ाम पहुंचाने के साथ ही बनी इस्राईल पर जो ज़ुल्म उसने कर रक्खा था उससे बाज़ आने और उनको आज़ाद छोड़ देने की हिदायत की। (क़ुरतबी)

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌۙ ﴿٣٤﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ قَالُوْۤا
اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَۙ ﴿٣٦﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿٣٧﴾ فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ
مَّعْلُوْمٍۙ ﴿٣٨﴾ وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَۙ ﴿٣٩﴾ لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤٠﴾ فَلَمَّا جَآءَ
السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿٤١﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٢﴾
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ
الْغٰلِبُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿٤٥﴾ فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَۙ ﴿٤٦﴾ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِرَبِّ
الْعٰلَمِيْنَۙ ﴿٤٧﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿٤٨﴾ قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِىْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَۚ ﴿٤٩﴾ قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّاۤ اِلٰى
رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَۚ ﴿٥٠﴾ اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَاۤ اَنْ كُنَّاۤ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٥١﴾

आयत नं० 34 से 51

(हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जो ये मोजिज़े दिखाई दिये तो) **फ़िरऔन ने नज़दीकी दरबारियों से कहा कि इसमें कोई शक नहीं कि ये बड़ा माहिर जादूगर है(34) इसका** (असल) **मतलब यह है कि अपने जादू** (के ज़ोर) **से** (ख़ुद सरदार हो जाए और) **तुम को तुम्हारी ज़मीन से बाहर कर दें** (ताकि बिना किसी रोक टोक के अपनी क़ौम को लेकर हुकूमत करे) **तो तुम लोग क्या राय देते हो(35) दरबारियों ने कहा कि आप उन को और उनके भाई को** (कुछ) **मोहलत दीजिए और** (अपने मुल्क के) **शहरों में चपरासियों को** (हुक्म नामे देकर) **भेज दीजिए(36) कि वो** (सब शहरों से) **सब माहिर जादूगरों को** (जमा करके) **आप के पास लाकर हाज़िर करें(37) बस वो जादूगर एक ख़ास दिन के ख़ास वक़्त पर** (मुक़ाबिले के लिए) **जमा कर लिये गये** (और फ़िरऔन को जमा होने की ख़बर देदी गई)(38) **और** (फ़िरऔन की तरफ़ से आम) **लोगों में यह ऐलान किया गया कि क्या तुम लोग** (उस जगह क़िस्सा देखने के लिए) **जमा होंगे** (यानी जमा हो जाओ)(39) **ताकि अगर जादूगर जीत जाएं** (जैसा कि पूरी उम्मीद है) **तो हम उन्हीं के रास्ते पर रहें** (यानी वो ही रास्ता जिस पर फ़िरऔन था और दूसरों को भी उस पर रखना चाहता था, मतलब यह था कि जमा होकर देखो उम्मीद है कि जादूगर जीतेंगे तो हम लोगों का तरीक़ा सही होना दलील से साबित हो जाएगा)(40) **फिर जब वो जादूगर** (फ़िरऔन के सामने) **आए तो फ़िरऔन से कहने लगे कि**

अगर (मूसा अलैहिस्सलाम से) **हम जीत गये तो क्या हम को बड़ा इनआम मिलेगा(41) फ़िरऔन ने कहा हां** (माली इनआम भी बड़ा मिलेगा) **और** (ऊपर से यह रूतब मिलेगा कि) **तुम इस सूरत में** (हमारे) **नज़दीकी लोगों में दाख़िल हो जाओगे(42)** (बस जब मुक़ाबिला शुरू हुआ और जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलम से कहा कि आप अपना असा पहले डालिएगा या हम डालें तो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने उन से कहा कि जो कुछ तुम डालना चाहो** (मैदान में) **डालो(43) तो उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं** (जो जादू के असर से सांप मालूम होते थे) **और कहने लगे कि फ़िरऔन के नसीब की क़सम हम ही जीतेंगे(44) फिर मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह के हुक्म से) **अपना असा डाला डालने के साथ ही** (अज़दहा बनकर) **उन के बने बनाए धन्दे को निगलना शुरू कर दिया(45) बस** (यह देख कर) **जादूगर** (लोगों के दिल पर ऐसा असर हुआ कि) **सब सजदे में गिर गये(46)** (और पुकार-पुकार कर) **कहने लगे कि हम ईमान ले आए सारे जहानों के रब पर(47) जो मूसा और हारून** (अलैहिमुस्सलाम) **का भी रब है(48) फ़िरऔन** (बड़ा घबराया कि कहीं ऐसा न हो कि सारी जनता ही मुसलमान हो जाए तो एक बात घड़ कर गुस्से की सूरत में जादूगरों से) **कहने लगा कि हां तुम मेरी इजाज़त देने से पहले ही मूसा पर ईमान ले आए ज़रूर** (मालूम होता है कि) **यह** (जादू में) **तुम सब का उस्ताद है जिसने तुम सब को जादू सिखाया है** (और तुम उसके चेले हो इसलिए आपस में छुप कर साज़िश कर ली है और हार-जीत का खेल खेला है ताकि खुद हुकूमत करो) **अच्छा अभी तुम्हें पता चल जाएगा, कि मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पैर काटूंगा और तुम सब को सूली पर लटकाऊंगा** (ताकि दूसरे सबक़ लें)**(49) उन्होंने जवाब दिया कि कुछ हरज नहीं हम अपने मालिक के पास जा पहुंचेंगे** (जहां हर तरह का आराम है फिर ऐसे मरने से नुक़सान ही क्या)**(50) हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ग़लतियों को मुआफ़ कर दे इस वजह से कि हम** (इस मौक़े पर हाज़िर लोगों में से) **सब से पहले ईमान लाए(51)**

नोटः- जादूगरों ने फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम खाई जो जहालत के ज़माने का दस्तूर था। इस तरह की क़समें खाना शरीअत से जाइज़ नहीं बल्कि अल्लाह के नाम की झूटी क़सम खाने में जो बड़ा गुनाह है इन नामों की सच्ची क़सम खाने में भी गुनाह उससे कम नहीं।

وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٥٢﴾ فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ
هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَ اِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَ اِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّ
عُيُوْنٍ ﴿٥٧﴾ وَّ كُنُوْزٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾ كَذٰلِكَ ؕ وَ اَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا تَرَآءَ
الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾ قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾ فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ
اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾ وَ اَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾ وَ اَنْجَيْنَا مُوْسٰى
وَ مَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾ وَ اِنَّ
رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾

आयत नं० 52 से 68

और (जब फ़िरऔन इस क़िस्से से भी राह पर नहीं आया और उसने बनी इस्राईल को सताना नहीं छोड़ा तो) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म भेजा कि मेरे इन बन्दों को** (यानी बनी इस्राईल को) **रातों रात** (मिस्र से बाहर) **निकाल ले जाओ** (और फ़िरऔन की तरफ़ से) **तुम लोगों का पीछा** (भी) **किया जाएगा(52)** (बस उन्होंने ऐसा ही किया सुबह यह ख़बर मशहूर हुई तो) **फ़िरऔन ने** (पीछा करने के इरादे से आस पास) **शहरों में चपरासी दौड़ा दिये(53)** (और यह कहला भेजा कि) **ये लोग** (यानी बनी इस्राईल हमारे मुक़ाबिले में) **छोटा सा गिरोह है** (इन के मुक़ाबिले से कोई डर नहीं)(54) **और उन्होंने** (अपनी कार्रवाई से) **हम को बहुत गुस्सा दिलाया है** (वो कार्रवाई यह है कि छुप कर चलाकी से निकल गये और बहुत सा ज़ेवर भी हमारा उधार के बहाने से ले गये मतलब यह कि हम को बेवक़ूफ़ बनाकर गये ज़रूर उनका इन्तिज़ाम करना चाहिए)(55) **और हम सब हथियारों से लैस फ़ौज हैं(56) बस** (फ़ौज लेकर पीछे चला इस तरह) **हम ने उन को निकाल बाहर किया बाग़ों से और नहरों से(57) और ख़ज़ानों से और अच्छे मकानों से(58)** (हम ने उन के साथ तो) **ऐसा किया, और उन के बाद बनी इस्राईल को उन** (चीज़ों) **का मालिक बना दिया(59) बस** (एक दिन फ़िरऔनी फ़ौजों ने) **सूरज निकलने के वक़्त उन को पीछे से जा लिया** (यानी नज़दीक पहुंच गये उस वक़्त बनी इस्राईल दरिया से पार उतरने की सोच में थे कि क्या सामान करें)(60) **फिर जब दोनों फ़ौजें** (आपस में ऐसी नज़दीक हुईं कि) **एक दूसरे को देखने लगीं तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के साथ वाले** (घबराकर) **कहने लगे कि** (ऐ मूसा) **बस हम**

तो पकड़ लिये गये(61) मूसा (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि हरगिज़ नहीं क्योंकि मेरे साथ मेरा रब है वो मुझ को अभी** (दरिया से निकलने का) **रास्ता बता देगा(62) बस हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म दिया कि अपने असा को दरिया पर मारो, बस** (उन्होंने उस पर असा मारा जिससे) **वो** (दरिया) **फट** (कर कई हिस्से हो) **गया** (यानी पानी कई जगह से इधर उधर हट कर बीच में बहुत सी सड़कें खुल गईं) **और हर हिस्सा इतना** (बड़ा) **था जैसा बड़ा पहाड़** (ये लोग दरिया में तसल्ली से पार हो गये)(63) **और हमने दूसरे फ़रीक़ को भी उस जगह के नज़दीक पहुंचा दिया** (यानी फ़िरऔन और उस के लोग भी दरिया के नज़दीक पहुंचे रास्ता खुला देख कर सारी फ़ौज अन्दर घुस गई और चारों तरफ़ से पानी सिमटना शुरू हुआ और सारी फ़ौज डूब गई)(64) **और** (अन्जाम क़िस्से का यह हुआ कि) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को और उनके सब साथियों को** (डूबने से) **बचा लिया(65) फिर दूसरों को** (यानी उन के दुशमनों को) **डुबा दिया(66)** (और) **इस क़िस्से में भी बड़ी सीख का सामान है** (कि अल्लाह के हुक्मों और पैग़म्बर की मुख़ालफ़त से किस तरह ख़ुदा का अज़ाब आ सकता है), **और** (फिर भी) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(67) और आप का रब बड़ा ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **है** (अगर चाहता तो दुनिया में ही उन को अज़ाब देता लेकिन) **बड़ा रहमत वाला** (भी) **है** (इसलिए अपनी रहमत से अज़ाब की मोहलत रख दी बस अज़ाब की देरी से बेफ़िक्र न होना चाहिए)(68)

नोटः- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी उम्मत को तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि मेरा रब मेरे साथ है वो (दरिया में) रास्ता दे देगा और हिजरत के वक़्त दुशमनों के ख़ौफ़ से तसल्ली देते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग़ारे सौर में हज़रत अबूबक्र से फ़रमाया कि हमारा रब हमारे साथ है घबराओ नहीं। तो यह इस उम्मत की शान है कि उम्मत के लोग भी ख़ुदा की रहमत में नबी के साथ गिने जाते हैं।

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾ قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا
عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾ قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾ قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا
كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْۤ اِلَّا
رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾ الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ وَ الَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَ يَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ وَ اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ وَ
الَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ وَ الَّذِيْۤ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾ رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّ

اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ﴿۸۳﴾ وَاجْعَلْ لِّیْ لِسَانَ صِدْقٍ فِی الْاٰخِرِیْنَ ﴿۸۴﴾ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِیْمِ ﴿۸۵﴾ وَاغْفِرْ
لِاَبِیْۤ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّیْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَا تُخْزِنِیْ یَوْمَ یُبْعَثُوْنَ ﴿۸۷﴾ یَوْمَ لَا یَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ
بِقَلْبٍ سَلِیْمٍ ﴿۸۹﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۹۰﴾ وَبُرِّزَتِ الْجَحِیْمُ لِلْغٰوِیْنَ ﴿۹۱﴾ وَقِیْلَ لَهُمْ اَیْنَمَا كُنْتُمْ
تَعْبُدُوْنَ ﴿۹۲﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ یَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ یَنْتَصِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ فَكُبْكِبُوْا فِیْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿۹۴﴾ وَجُنُوْدُ اِبْلِیْسَ
اَجْمَعُوْنَ ﴿۹۵﴾ قَالُوْا وَهُمْ فِیْهَا یَخْتَصِمُوْنَ ﴿۹۶﴾ تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۹۷﴾ اِذْ نُسَوِّیْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۹۸﴾
وَمَاۤ اَضَلَّنَاۤ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۹۹﴾ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِیْنَ ﴿۱۰۰﴾ وَلَا صَدِیْقٍ حَمِیْمٍ ﴿۱۰۱﴾ فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۰۲﴾ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۰۴﴾

आयत नं० 69 से 104

और (ऐ पैग़म्बर) **आप इन लोगों के सामने इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **का क़िस्सा बयान कीजिए** (ताकि इन को शिर्क की बुराई की दलीलें मालूम हों ख़ासकर इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वास्ते से क्योंकि ये अरब के मुशरिक अपने को इब्राहीमी दीन पर बताते हैं)(69) **जबकि उन्होंने** (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने) **अपनी** (बुत परस्त) **क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत किया करते हो(70) उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत किया करते हैं और हम उन्हीं** (की इबादत) **पर जमे बैठे रहते हैं(71) इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन को** (अपनी ज़रूरत के वक़्त) **पुकारा करते हो(72) या** (तुम जो इन की इबादत करते हो तो क्या) **ये तुम को कुछ नफ़ा पहुंचाते हैं या** (तुम इन की इबादत छोड़ दो तो क्या) **ये तुम को कुछ नुक़सान पहुंचा सकते हैं** (यानी ख़ुदा होने का हक़दार होने के लिए इल्म और क़ुदरत का कमाल तो ज़रूरी है)(73) **उन लोगों ने कहा** (नहीं यह बात तो नहीं) **बल्कि हम ने अपने बड़ों को इसी तरह करते देखा है** (इस लिए हम भी ऐसा ही करते हैं)(74) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि भला तुम ने उन** (की हालत) **को** (ध्यान से) **देखा भी जिन की तुम इबादत किया करते हो(75) तुम भी और तुम्हारे पुराने बड़े भी(76) ये** (माबूद तो) **मेरे लिए** (यानी तुम्हारे लिए) **नुक़सान वाले हैं** (यानी अगर इन की इबादत की जाए) **मगर हां अल्लाह तआ़ला** (ऐसा है कि वो अपने इबादत करने वालों का दोस्त है और उस की इबादत में सरासर नफ़ा है)(77) **जिसने मुझ को** (और इसी तरह सब को) **पैदा किया फिर वो ही मुझ को** (भलाई की) **राह दिखाता है** (यानी समझ देता

है जिससे नफ़ा नुक़सान को समझता हूं)(78) **और जो कि मुझ को खिलाता पिलाता है(79) और जब मैं बीमार हो जाता हूं** (जिसके बाद शिफ़ा हो जाती है) **तो वो ही मुझ को शिफ़ा** (और सहत) **देता है(80) और जो मुझ को** (वक़्त पर) **मौत देगा, फिर** (क़ियामत के दिन) **मुझ को ज़िन्दा करेगा(81) और जिस से मुझ को यह उम्मीद है कि मेरी ग़लतियों को क़ियामत के दिन मुआफ़ कर देगा(82)** (ये सभी ख़ूबियां इसलिए सुनाई कि क़ौम को अल्लाह तआला की इबादत की दिलचस्पी हो, फिर अल्लाह तआला से दुआ करने लगे कि) **या रब मेरे मुझ को हिकमत** (यानी इल्म व अमल में कमाल) **दीजिए और मुझ को** (ऊंचे दर्जे के) **नेक लोगों में शामिल कीजिए** (यानी बड़े पैग़म्बरों में)(83) **और आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्र जारी रखिए** (ताकि मेरे तरीक़े पर चलें जिसमें मुझ को ज़्यादा सवाब मिले)(84) **और मुझे उन लोगों में से बना दे जो नेमतों वाली जन्नत के वारिस होंगे(85) और मेरे बाप को** (ईमान की तौफ़ीक़ देकर उस को) **बख़्श दीजिए कि वो गुमराह लोगों में से है(86) और जिस दिन सब ज़िन्दा होकर उठेंगे उस दिन मुझ को रूसवा न करना(87)** (आगे उस दिन के बारे में बताते हैं ताकि क़ौम सुने और डरे यानी वो ऐसा दिन होगा) **जिस दिन में कि** (बख़्शिश के लिए) **न माल काम आएगा न औलाद(88) मगर हां** (वो बख़्शा जाएगा) **जो अल्लाह के पास** (कुफ़्र व शिर्क से) **पाक दिल लेकर आएगा(89) और** (उस दिन) **परहेज़गारों** (यानी ईमान वालों) **के लिए जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी** (कि उस को देखें और यह जानकर कि हम इसमें जाएंगे ख़ुश हों)(90) **और इन गुमराहों** (यानी काफ़िरों) **के दोज़ख़ सामने कर दी जाएगी** (कि उस को देख कर दुखी हों कि हम इस में जाएंगे)(91) **और** (उस दिन) **उन** (गुमराहों) **से कहा जाएगा कि वो माबूद कहां गये जिन की तुम इबादत किया करते थे(92) अल्लाह को छोड़ कर,** (इस वक़्त) **क्या वो तुम्हारा साथ दे सकते हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं(93) फिर** (यह कह कर) **औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिये जाएंगे वो** (इबादत करने वाले) **लोग और गुमराह लोग(94) और इबलीस का सारा गिरोह भी** (बस वो बुत और शैतान न अपने को बचा सके न अपने इबादत करने वालों को)(95) **वो काफ़िर लोग उस दोज़ख़ में बात करते हुए** (उन माबूदों से) **कहेंगे(96) कि अल्लाह की क़सम बेशक हम खुली गुमराही में थे(97) जब कि तुम को** (इबादत में) **अल्लाह तआला के बराबर करते थे(98) और हम को तो बस** (गुमराही फैलाने वाले) **इन बड़े मुजरिमों ने गुमराह किया था(99) तो** (अब) **न कोई हमारा सिफ़ारिशी है** (कि छुड़ा ले)(100) **और न कोई सच्चा दोस्त** (कि ख़ाली तसल्ली ही देदे)(101) **सो क्या अच्छा होता कि हम को** (दुनिया में) **फिर वापस जाना मिलता कि हम मुसलमान हो**

जाते(102) (यहां तक इब्राहीम अलैहिस्सलाम का बयान है आगे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि) **बेशक इस क़िस्से में** (भी सच्चाई जानने वालों के लिए) **एक सबक़ है** (कि इन बातों को सोचकर तौहीद का ऐतक़ाद करें और क़ियामत के क़िस्से से डरें और ईमान लाएं), **और** (इसके बावजूद) **इन** (मुशरिकों) **में बहुत लोग ईमान नहीं लाते**(103) **और बेशक आप का रब बड़ा ज़बरदस्त रहमत वाला** (है कि अज़ाब दे सकता है मगर मोहलत दे रक्खी) **है**(104)

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ۨالْمُرْسَلِیْنَ ۝۱۰۵ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۱۰۶ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۝۱۰۷ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ۝۱۰۸ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۱۰۹ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوْنِ ۝۱۱۰
قَالُوْۤا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَ اتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ۝۱۱۱ قَالَ وَ مَا عِلْمِیْ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝۱۱۲ اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰی رَبِّیْ لَوْ
تَشْعُرُوْنَ ۝۱۱۳ وَ مَاۤ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝۱۱۴ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝۱۱۵ قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ یٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمَرْجُوْمِیْنَ ۝۱۱۶ قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِیْ كَذَّبُوْنِ ۝۱۱۷ فَافْتَحْ بَیْنِیْ وَ بَیْنَهُمْ فَتْحًا وَّ نَجِّنِیْ وَ مَنْ مَّعِیَ مِنَ
الْمُؤْمِنِیْنَ ۝۱۱۸ فَاَنْجَیْنٰهُ وَ مَنْ مَّعَهٗ فِی الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝۱۱۹ ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِیْنَ ۝۱۲۰ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ
مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۝۱۲۱ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۝۱۲۲

आयत नं० 105 से 122

नूह (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुटलाया** (क्योंकि एक पैग़म्बर के झुटलाने से सब को झुटलाना ठहरा)(105) **जब कि उन से उन** (की बिरादरी) **के भाई नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **नहीं डरते**(106) **मैं तुम्हारा अमानत दार पैग़म्बर** (हूं कि अल्लाह का पैग़ाम हूबहू बिना घटाए बढ़ाए पहुंचा देता) **हूं**(107) **तो तुम लोग अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो**(108) **और मैं इस पर तुम से कोई** (दुनियावी) **बदला** (भी) **नहीं मांगता मेरा बदला तो बस सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है**(109) **तो** (इसलिए भी) **तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो**(110) **वो लेग कहने लगे कि क्या हम तुम को मानेंगे हालांकि नीचे दर्जे के लोग तुम्हारे साथ हो लिये हैं** (जिन के साथ आने से हम को शर्म आती है और इनके ईमान का भी भरोसा नहीं कि लालच में ऐसा न किया हो)(111) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि उन के काम** (और पेशे) **से मुझ को क्या बहस**(112) (और) **उन से** (ईमान का) **हिसाब-किताब लेना**

(तो) **बस अल्लाह का काम है क्या अच्छा हो कि तुम इस** (बात) **को समझो(113) और** (छोटा पेशा करने वाले) **ईमानदारों को मैं** (तुम्हारे कहने से) **अपने पास से दूर करने वाला नहीं हूं** (चाहे तुम ईमान लाओ या न लाओ मेरा कोई नुक़सान नहीं)(114) **मैं तो साफ़ तौर पर एक डराने वाला हूं** (और हुक्म पहुंचाने के बाद मेरी ज़िम्मेदारी पूरी हो जाती है आगे अपना नफ़ा व नुक़सान तुम ख़ुद देख लो)(115) **वो लोग कहने लगे ऐ नूह अगर तुम** (इस कहने सुनने से) **बाज़ न आओगे तो ज़रूर पत्थर मार-मार कर हलाक कर दिये जाओगे**(116) (बस जब बहुत साल इसी तरह बीत गये तब) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने दुआ की कि या रब मेरे मेरी क़ौम मुझ को** (बराबर) **झुटला रही है(117) सो आप मेरे और उनके बीच** (खुला) **फ़ैसला कर दीजिए** (यानी उन को हलाक कर दीजिए) **और मुझ को और जो ईमानदार मेरे साथ हैं उन को बचा लीजिए(118) तो हम ने** (उन की दुआ क़ुबूल की और) **उन को और जो उन के साथ भरी हुई कशती में** (सवार) **थे उन को बचा लिया(119) फिर उसके बाद बाक़ी लोगों को डुबा दिया(120) इस** (क़िस्से) **में** (भी) **बड़ा सबक़ है, और** (इसके बावजूद) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(121) और बेशक आप का रब ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **रहमत वाला** (है कि अज़ाब की क़ुदरत होते हुए उन को मोहलत दे रक्खी) **है(122)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि इन्सान का शरीफ़ या रज़ील होना उसके अख़लाक़ या आमाल पर है उसके पेशे पर नहीं। माल व दौलत या इज़्ज़त को शराफ़त की बुनियाद समझना ग़लत है।

كَذَّبَتْ عَادُ ۨالْمُرْسَلِیْنَ ۝۱۲۳ اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۝۱۲۴ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۝۱۲۵ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِیْعُوْنِ ۝۱۲۶ وَ مَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۱۲۷ اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیَةً
تَعْبَثُوْنَ ۝۱۲۸ وَ تَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۝۱۲۹ وَ اِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِیْنَ ۝۱۳۰ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اَطِیْعُوْنِ ۝۱۳۱ وَ اتَّقُوا الَّذِیْۤ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ۝۱۳۲ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّ بَنِیْنَ ۝۱۳۳ وَ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ۝۱۳۴ اِنِّیْۤ اَخَافُ
عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ۝۱۳۵ قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَیْنَاۤ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِیْنَ ۝۱۳۶ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا خُلُقُ
الْاَوَّلِیْنَ ۝۱۳۷ وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِیْنَ ۝۱۳۸ فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ؕ وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِیْنَ ۝۱۳۹ وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۝۱۴۰

आयत नं० 123 से 140

आद की क़ौम ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया(123) जबकि उन से उन** (की बिरादरी) **के भाई हूद** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं हो(124) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं(125) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(126) और मैं तुम से इस** (तबलीग़) **पर कोई बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है(127) क्या तुम** (शिर्क के सिवा घमन्ड में भी ऐसे चूर हो कि) **हर ऊंची जगह एक यादगार** (के तौर पर इमारत) **बनाते हो** (ताकि ख़ूब ऊंची दिखाई दे) **जिस को बेज़रूरत बनाते हो(128) और** (रहने के मकानों को भी बेज़रूरत) **बड़े-बड़े महल बनाते हो** (हालांकि उससे कम में आराम मिल सकता है) **जैसे दुनिया में तुम को सदा रहना है(129) और** (घमन्ड की वजह से ऐसे बेरहम सख़्त दिल हो कि) **जब किसी की पकड़ करते हो बिल्कुल जाबिर** (और ज़ालिम) **बन कर पकड़ करते हो** (इन बुरी आदतों का इसलिए बयान किया गया कि ये बुरी आदतें अक्सर ईमान व ताबेदारी में रुकावट बनती हैं)(130) **सो अल्लाह से डरो और** (चूंकि मैं रसूल हूं इसलिए) **मेरा कहना मानो(131) और उस** (अल्लाह) **से डरो** (यानी जिससे डरने को मैं कहता हूं वो ऐसा है) **जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की जिन को तुम जानते हो(132)** (यानी) **जिसने तुम्हारी मदद की पालतू जानवरों और बेटों से(133) और बाग़ों और नहरों से** (इसलिए चाहिए कि ऐसी नेमतें देने वाले के हुक्मों की मुख़ालफ़त न करो)(134) **मुझ को तुम पर एक बड़े सख़्त दिन के अज़ाब का ख़तरा है** (अगर तुम इन हरकतों से बाज़ न आए)(135) **वो लोग बोले कि हमारे नज़दीक तो दोनों बातें बराबर हैं चाहे तुम नसीहत करो और चाहे नसीहत न करो** (यानी हम दोनों हालतों में अपने तरीक़े से बाज़ न आएंगे)(136) **और** (तुम जो कुछ कह रह हो) **ये तो बस पहले लोगों की** (आम) **आदत** (और रस्म) **है** (कि हर ज़माने में लोग पैग़म्बरी का दावा करके लोगों को ऐसा कहते रहे)(137) **और** (तुम जो हम को अज़ाब से डराते हो तो) **हम को हरगिज़ अज़ाब न होगा(138) बस उन लोगों ने हूद** (अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया तो हम ने उन को** (सख़्त आंधी के अज़ाब से) **हलाक कर दिया, बेशक इस** (क़िस्से) **में** (भी) **बड़ा सबक़ है** (कि हुक्मों की मुख़ालफ़त का क्या अन्जाम हुआ), **और** (इसके बावजूद) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(139) और बेशक आप का रब ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **और रहमत वाला** (हैं कि अज़ाब देने की क़ुदरत रखता है और रहमत से मोहलत भी दे रक्खी) **है(140)**

नोटः- यहां मालूम हुआ कि बिना ज़रूरत के ऊंची इमारत बनाना शरीअत से बुरा है।

كذبت ثمود المرسلين ﴿١٤١﴾ إذ قال لهم أخوهم صلح ألا تتقون ﴿١٤٢﴾ إني لكم رسول أمين ﴿١٤٣﴾ فاتقوا الله
وأطيعون ﴿١٤٤﴾ وما أسئلكم عليه من أجر إن أجري إلا على رب العلمين ﴿١٤٥﴾ أتتركون في ما ههنا
امنين ﴿١٤٦﴾ في جنت وعيون ﴿١٤٧﴾ وزروع ونخل طلعها هضيم ﴿١٤٨﴾ وتنحتون من الجبال بيوتا فرهين ﴿١٤٩﴾
فاتقوا الله وأطيعون ﴿١٥٠﴾ ولا تطيعوا أمر المسرفين ﴿١٥١﴾ الذين يفسدون في الأرض ولا يصلحون ﴿١٥٢﴾ قالوا
إنما أنت من المسحرين ﴿١٥٣﴾ ما أنت إلا بشر مثلنا فأت باية إن كنت من الصدقين ﴿١٥٤﴾ قال هذه ناقة
لها شرب ولكم شرب يوم معلوم ﴿١٥٥﴾ ولا تمسوها بسوء فيأخذكم عذاب يوم عظيم ﴿١٥٦﴾ فعقروها
فأصبحوا ندمين ﴿١٥٧﴾ فأخذهم العذاب إن في ذلك لاية وما كان أكثرهم مؤمنين ﴿١٥٨﴾ وإن ربك لهو
العزيز الرحيم ﴿١٥٩﴾

आयत नं० 141 से 159

समूद की क़ौम ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया(141) जब कि उन से उन के भाई सालिह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं(142) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं(143) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(144) और मैं तुम से इस पर कुछ बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है(145)** (और तुम जो ख़ुशहाली की वजह से अल्लाह को भूल रहे हो तो) **क्या तुम को इन ही चीज़ों में बेफ़िक्री से रहने दिया जएगा जो यहां** (दुनिया में) **मौजूद हैं(146)** (यानी) **बाग़ों में और नहरों में(147) और खेतों में और इन खजूरों में जिन के गुच्छे ख़ूब भरे हुए हैं** (यानी इन खजूरों में बहुत फल आता है)(148) **और क्या** (इस बेपरवाई की वजह से) **तुम पहाड़ों को तराश-तराश कर इतराते** (और घमन्ड करते) **हुए घर बनाते हो(149) सो अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(150) और उन** (बन्दगी की) **हदों से निकल जाने वालों का कहना मत मानो(151) जो ज़मीन में फ़साद किया करते हैं और** (कभी) **सुधार** (की बात) **नहीं करते** (मुराद काफ़िरों के अमीर लोग हैं जो गुमराही पर लोगों को उकसाते थे)(152) **उन लोगों ने कहा कि तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है** (जिससे अक़्ल में ख़राबी आ गई है कि पैग़म्बरी का दावा करते हो)(153) **तुम तो बस हमारी तरह के एक** (आम) **आदमी हो,** (और आदमी नबी होता नहीं) **सो कोई निशानी** (और मोजिज़ा) **लाओ अगर तुम** (पैग़म्बरी के दावे में) **सच्चे हो(154) सालिह** (अलैहिस्सलाम)

ने कहा कि यह एक ऊंटनी है (जिस की पैदाइश मोजिज़ा है और यह मेरी पैग़म्बरी की दलील है खुद इसके भी कुछ हक़ हैं उन में से एक यह है कि) **पानी पीने के लिए एक बारी इस की और एक तय दिन में एक बारी तुम्हारी** (यानी तुम्हारे जानवरों की)(155) **और** (एक यह है कि) **इस को बुराई** (और सताने के इरादे) **के साथ हाथ भी मत लगाना कभी तुम को एक भारी दिन का अज़ाब आ पकड़े(156) सो उन्होंने** (न पैग़म्बरी की तस्दीक की न ऊंटनी के हक़ अदा किये बल्कि) **उस ऊंटनी को मार डाला फिर** (जब अज़ाब के निशान दिखाई दिये तो अपनी हरकत पर) **पछताए** (मगर एक तो अज़ाब देख लेने के वक़्त पछताना बेकार दूसरे ख़ाली पछतावे से क्या होता है जब तौबा व ईमान न हो)(157) **फिर** (आख़िर) **अज़ाब ने उन को आ पकड़ा, बेशक इस** (क़िस्से) **में बड़ा सबक़ है, और** (इसके बावजूद) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(158) और बेशक आप का रब बड़ा ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **रहमत वाला** (है कि क़ुदरत के बावजूद अपनी रहमत से मोहलत देता) **है(159)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि अच्छा पेशा भी खुदा तआला का इनआम है और उस से नफ़ा उठाना जाइज़ है ऐसे ही गुनाह के कामों वाला पेशा करना नाजाइज़ है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۝١٦٠ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٦١ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝١٦٢ فَاتَّقُوا
اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٦٣ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٦٤ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ
الْعَالَمِينَ ۝١٦٥ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ۝١٦٦ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ
يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ۝١٦٧ قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۝١٦٨ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ۝١٦٩
فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝١٧٠ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۝١٧١ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ۝١٧٢ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ
فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۝١٧٣ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝١٧٤ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ
الرَّحِيمُ ۝١٧٥

आयत नं० 160 से 175

क़ौमे लूत ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया(160) जबकि उन से उनके भाई लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं हो(161) मैं तुम्हारा अमानतदार**

पैग़म्बर हूं(162) सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(163) और मैं तुम से इस (काम) **पर कोई बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है(164) क्या सारी दुनिया जहान वालों में से तुम** (यह हरकत करते हो कि) **मर्दों से बुरा काम करते हो(165) और तुम्हारे रब ने जो तुम्हारे लिए बीवियां पैदा की हैं उन को छोड़े बैठे हो** (यानी और कोई आदमी तुम्हारे सिवा यह बुरा काम नहीं करता) **बल्कि** (असल बात यह है कि) **तुम** (इन्सानियत की) **हद से बढ़ जाने वाले हो(166) वो लोग कहने लगे कि ऐ लूत अगर तुम** (हमें कहने-सुनने से) **बाज़ नहीं आओगे तो ज़रूर** (बस्ती से) **निकाल दिये जाओगे(167) लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (मैं इस धमकी पर अपने कहने से न रूकूंगा क्योंकि) **मैं तुम्हारे इस काम से सख़्त नफ़रत रखता हूं(168)** (जब किसी तरह उन लोगों ने न माना और अज़ाब आता हुआ मालूम हुआ तो) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने दुआ की कि या रब मेरे मुझ को और मेरे** (ख़ास) **ताल्लुक़ वालों को उन के इस काम** (की मुसीबत) **से** (जो उन पर आने वाली है) **बचा लीजिए(169) तो हम ने उन को और उन के ताल्लुक़ वालों को सब को बचा लिया(170) सिवाए एक बुढ़िया के कि वो** (अज़ाब के अन्दर) **रह जाने वालों में रह गई(171) फिर हम ने और सब को** (जो लूत अलैहिस्सलाम और उनके घर वालों के सिवा थे) **हलाक कर दिया(172) और हम ने उन पर एक ख़ास क़िस्म की** (यानी पत्थरों की) **बारिश बरसा दी, तो क्या बुरी बारिश थी जो उन लोगों पर बरसी जिन को** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराया गया था(173) बेशक इस** (क़िस्से) **में** (भी) **सबक़ है, और** (फिर भी) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(174) और बेशक आप का रब बड़ी क़ुदरत वाला बड़ी रहमत वाला है** (कि अज़ाब दे सकता था मगर अभी नहीं दिया)(175)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसे आदमी पर लानत की है जो अपनी बीवी से ग़लत काम करता है यानी पीछे के रास्ते से सोहबत करता तो लड़कों से यह बुरा काम तो कितना बड़ा गुनाह होगा। (रूह)

كَذَّبَ اَصۡحٰبُ لۡـَٔيۡكَةِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۱۷۶﴾ اِذۡ قَالَ لَهُمۡ شُعَيۡبٌ اَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۱۷۷﴾ اِنِّىۡ لَـكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ﴿۱۷۸﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَ اَطِيۡعُوۡنِ ﴿۱۷۹﴾ وَمَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ‌ ۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۸۰﴾ اَوۡفُوا الۡكَيۡلَ وَلَا تَكُوۡنُوۡا مِنَ
الۡمُخۡسِرِيۡنَ ﴿۱۸۱﴾ وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ الۡمُسۡتَقِيۡمِ ﴿۱۸۲﴾ وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ

مُفۡسِدِيۡنَ ۝۱۸۳ۚ وَاتَّقُوا الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ وَالۡجِبِلَّةَ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝۱۸۴ؕ قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مِنَ الۡمُسَحَّرِيۡنَ ۝۱۸۵ۙ وَمَاۤ اَنۡتَ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثۡلُنَا وَاِنۡ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الۡكٰذِبِيۡنَ ۝۱۸۶ۚ فَاَسۡقِطۡ عَلَيۡنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ۝۱۸۷ؕ قَالَ
رَبِّىۡۤ اَعۡلَمُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ۝۱۸۸ فَكَذَّبُوۡهُ فَاَخَذَهُمۡ عَذَابُ يَوۡمِ الظُّلَّةِ‌ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ۝۱۸۹ اِنَّ فِىۡ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً‌ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ۝۱۹۰ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۝۱۹۱ع

आयत नं० 176 से 191

ऐका के रहने वालों ने (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया** (जिन का ज़िक्र सूरत हिज्र में आ चुका है)(176) **जब कि उन से शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि क्या तुम** (अल्लाह से) **डरते नहीं हो(177) मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूं(178) तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो(179) और मैं तुम से इस पर कोई बदला नहीं चाहता बस मेरा बदला तो सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **के ज़िम्मे है(180) तुम लोग पूरा नापा करो और** (हक़दार का) **नुक़सान मत किया करो(181) और** (इसी तरह तोलने की चीज़ों में) **सीधी तराज़ू से तौला** (करो यानी कम न तौला) **करो(182) और लोगों को उन की चीज़ों में नुक़सान न दिया करो और ज़मीन में फ़साद मत मचाया करो(183) और उस** (अल्लाह) **से डरो जिस ने तुम को और सभी पहले लोगों को पैदा किया(184) वो लोग कहने लगे कि बस तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है** (जिससे अक़्ल ख़राब हो गई और पैग़म्बरी का दावा करने लगे)(185) **और तुम तो सिर्फ़ हमारी तरह** (के) **एक** (आम) **आदमी हो और हम तो तुम को झूटे लोगों में से समझते हैं(186) सो अगर तुम सच्चों में से हो तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो** (ताकि हम को मालूम हो जाए कि सचमुच तुम नबी थे तुम्हारे झुटलाने से हम को यह सज़ा हुई)(187) **शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **बोले कि** (मैं अज़ाब का लाने वाला या उसकी सूरत तय करने वाला कौन हूं) **तुम्हारे कामों को मेरा रब** (ही) **अच्छी तरह जानता** (है और उस काम की सज़ा में कब अज़ाब हो और कैसा अज़ाब हो उस को भी वो ही जानता है उसके ही बस में) **है(188) बस वो लोग** (बराबर) **उनको झुटलाते रहे फिर उनको सायबान वाले दिन के अज़ाब ने आ पकड़ा, बेशक वो बड़े सख़्त दिन का अज़ाब था(189)** (और) **इस** (क़िस्से) **में** (भी) **बड़ा सबक़ है, और** (फिर भी) **इन** (काफ़िरों) **में बहुत से लोग ईमान नहीं लाते(190) और बेशक आप का रब बड़ी क़ुदरत वाला बड़ी रहमत वाला** (है कि अज़ाब भेज सकता है मगर मोहलत दे रक्खी) **है(191)**

नोटः- सायबान वाले दिन का अज़ाब यह है कि अल्लाह तआला ने उस क़ौम पर सख़्त गर्मी भेजी कि न मकान के अन्दर चैन आता था न बाहर फिर उन के पास जंगल में एक घना बादल भेज दिया जिस के नीचे ठंडी हवा थी सारी क़ौम गर्मी से परीशान थी सब दौड़-दौड़ कर उस बादल के नीचे जमा हो गये जब सारी क़ौम बादल के नीचे आ गई तो उस बादल ने उन पर पानी के बजाए आग बरसा दी जिससे सब भस्म हो कर रह गये। (रूह)

وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٩٢﴾ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿١٩٣﴾ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿١٩٤﴾ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ
مُّبِيْنٍ ﴿١٩٥﴾ وَ اِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٩٦﴾ اَوَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿١٩٧﴾ وَ لَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى
بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿١٩٨﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١٩٩﴾ كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٠٠﴾ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٢٠١﴾ فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٠٢﴾ فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ
مُنْظَرُوْنَ ﴿٢٠٣﴾ اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿٢٠٤﴾ اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ﴿٢٠٥﴾ ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾ مَاۤ
اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ﴿٢٠٧﴾ وَمَاۤ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ﴿٢٠٨﴾ ذِكْرٰى وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٠٩﴾ وَمَا
تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾ اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾ فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ
اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾

आयत नं० 192 से 213

और बेशक यह कुरआन सारे जहानो के रब (अल्लाह) **का भेजा हुआ है(192) इस को अमानतदार फ़रिशता लेकर आया है(193)** (ऐ पैग़म्बर) **आप के दिल पर** (उतरा है) **ताकि आप** (भी) **डराने वालों** (यानी पैग़म्बरों) **में से हो जाएं(194)** (और ऐसी) **साफ़ अरबी ज़बान में** (उतरा कि समझ में आ जाए)**(195) और इस** (कुरआन) **का ज़िक्र पहली उम्मतों की** (आसमानी) **किताबों में** (भी) **है** (कि ऐसी शान का पैग़म्बर होगा और उस पर ऐसा कलाम उतरेगा)**(196) क्या इन लोगों के लिए यह बात दलील नहीं है कि इस** (के नाज़िल होने की ख़बर) **को बनी इस्राईल के आलिम** (पहले से) **जानते हैं(197) और अगर** (मान लो) **हम इस** (कुरआन) **को किसी अजमी** (ग़ैर अरबी) **पर उतार देते(198) फिर वो** (अजमी) **उनके सामने उस को पढ़ भी देता** (जिससे उस का मोजिज़ा होना और साफ़ हो जाता कि ज़बान भी नहीं जानता लेकिन) **ये लोग** (ज़िद की वजह

से) **तब भी उस को न मानते**(199) (आगे हुज़ूर की तसल्ली के लिए उन के ईमान न लाने से नाउम्मीदी दिलाते हैं यानी) **हम ने इसी तरह** (सख़्ती के साथ) **इस ईमान न लाने को इन नाफ़रमानों के दिलों में डाल रक्खा है**(200) **ये लोग इस** (क़ुरआन) **पर ईमान न लाएंगे जब तक कि सख़्त अज़ाब को** (मरने के वक़्त या आख़रत में) **न देख लेंगे**(201) **जो अचानक उन के सामने आखड़ा होगा और उन को** (पहले से) **ख़बर भी न होगी**(202) **फिर** (उस वक़्त जान को बनेगी तो) **कहेंगे कि क्या** (किसी तरह) **हम को** (कुछ) **मोहलत मिल सकती** (है लेकिन वो वक़्त न मोहलत का है न ईमान क़ुबूल होने का) **है**(203) **क्या** (हमारी धमकियों को सुनकर) **ये लोग हमारे अज़ाब की जल्दी चाहते हैं** (जिस का मंशा इनकार है)(204) **ज़रा बताओ तो अगर हम इन को** (कुछ सालों तक) **ऐश में रहने दें**(205) **फिर जिस** (अज़ाब) **का उन से वादा है वो उन के सर आपड़े**(206) **तो उन का वो ऐश किस काम आ सकता** (है यह ऐश की जो मोहलत दी गई उससे उन का अज़ाब हल्का या कम नहीं हो सकता) **है**(207) **और** (यह मोहलत देने में कुछ भेद हैं इसलिए पहली उम्मतों को भी मुहलत मिली है जैसा कि) **जितनी बस्तियां** (काफ़िरों की) **हम ने** (अज़ाब से) **हलाक की हैं सब में डराने वाले** (पैग़म्बर) **आए**(208) **नसीहत के लिए** (जब न माने तो अज़ाब आया), **और हम ज़ुल्म करने वाले नहीं**(209) **और** (यह अल्लाह का भेजा हुआ कलाम है और) **इस को शैतान** (जो काहिनों के पास आया करते थे) **लेकर नहीं आए** (जैसा कि काफ़िरों ने इल्ज़ाम दिया था)(210) **और यह** (क़ुरआन) **उन** (की हालत) **के हिसाब से ही नहीं** (क्योंकि क़ुरआन सब का सब हिदायत और शैतान सब का सब गुमराही है) **और न वो ऐसा कर सकते हैं**(211) **क्योंकि वो शैतान** (आसमानी वही) **सुनने से रोक दिये गये हैं**(212) **सो** (ऐ पैग़म्बर) **तुम अल्लाह के साथ किसी और माबूद की इबादत मत करना कभी तुम को सज़ा होने लगे** (नऊ़ज़ुबिल्लाह आप तो इन बातों से पाक हैं उम्मत को सुनाना है)(213)

नोटः- नमाज़ में फ़र्ज़ तिलावत की जगह क़ुरआन के लफ़्ज़ों का किसी ज़बान उर्दू या अंग्रेज़ी में पढ़ लेना जाइज़ नहीं। इसी तरह क़ुरआन का सिर्फ़ तरजमा बिना अरबी मतन के लिखा जाए तो उस को उस ज़बान का क़ुरआन कहना जाइज़ नहीं जैसे आजकल बहुत से लोग सिर्फ़ उर्दू तरजमे को उर्दू का क़ुरआन कह देते हैं यह नाजाइज़ और बेअदबी है। क़ुरआन को बिना अरबी मतन के छापना और ख़रीदना बेंचना सब नाजाइज़ है।

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿۲۱۴﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۱۵﴾ فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ
بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿۲۱۷﴾ الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿۲۱۸﴾ وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿۲۱۹﴾
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۲۲۰﴾ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿۲۲۱﴾ تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿۲۲۲﴾ يُّلْقُوْنَ
السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿۲۲۳﴾ وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿۲۲۴﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿۲۲۵﴾ وَاَنَّهُمْ
يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۲۲۶﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا
وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿۲۲۷﴾

आयत नं० 214 से 227

और (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन बातों से सबसे पहले) **अपने नज़दीकी ख़ानदान वालों को डराइये** (जैसा कि आपने ऐसा ही किया)(214) **और उन लोगों के साथ** (तो महरबानी और) **नर्मी से पेश आइये जो मुसलमानों में दाख़िल होकर आप की राह पर चलें** (चाहे ख़ानदान के हों या ग़ैर ख़ानदान के हों)(215) **और अगर ये लोग** (जिन को आपने नसीहत की है) **आप का कहा न मानें** (और कुफ़्र पर जमे रहें) **तो आप** (साफ़) **कह दीजिए कि मैं तुम्हारे कामों से नफ़रत रखता हूं**(216) **और** (मुख़ालिफ़ों से न डरिए और) **अल्लाह महरबान पर भरोसा रखिए**(217) **जो आप को देखता है जिस वक़्त कि आप** (नमाज़ के लिए) **खड़े होते हैं**(218) **और** (ऐसे ही नमाज़ शुरू करने के बाद) **नमाज़ियों के साथ आप के उठने बैठने को भी** (देखता है)(219) **वो ख़ूब सुनने वाला ख़ूब देखने वाला** (और रखवाला) **है**(220) (ऐ पैग़म्बर लोगों से कह दीजिए कि) **क्या मैं तुम को बताऊं किस पर शैतान उतरा करते हैं**(221) (सुनो) **ऐसे लोगों पर उतरा करते हैं जो** (पहले से) **झूटे बड़े बदकिरदार हों**(222) **और जो** (शैतानों से) **सुनी सुनाई बातें करते हैं और** (लोगों से उन बातों को बयान करने के वक़्त) **वो बहुत झूट बोलते हैं**(223) **और** (आप शाइर भी नहीं है जैसा कि काफ़िर लोग कहते थे क्योंकि) **शाइरों की राह तो बेराह लोग चला करते हैं** (मुराद राह से शाइरी करना है)(224) **क्या आप नहीं जानते कि वो** (शाइर) **लोग** (बातों की सोच के) **हर मैदान में भटकते फिरा करते हैं**(225) **और** (जब कुछ तुकबन्दी कर लेते हैं जो अक्सर सच्चाई से परे की बातें होती हैं इसलिए) **ज़बान से वो बातें कहते हैं जो करते नहीं**(226) **हां मगर जो लोग** (इन शाइरों में से) **ईमान लाए और अच्छे काम किये** (यानी शरीअत के ख़िलाफ़ उन की बातें नहीं) **और उन्होंने** (अपने शेरों में) **कसरत से अल्लाह का ज़िक्र किया** (यानी दीन

की हिमायत और इल्म फैलाने में उन के शेर हैं कि ये सब अल्लाह के ज़िक्र में दाख़िल हैं) **और** (अगर किसी शेर में कोई नामुनासिब बात भी है जैसे किसी की बुराई तो उस की वजह भी यह है कि) **उन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद** (उसका) **बदला लिया** (है यानी पहले काफ़िरों और फ़ासिक़ों ने उन को ज़बानी तकलीफ़ पहुंचाई जैसे उन की या दीन की तौहीन की या उन के माल को या जान को नुक़सान पहुंचाया तो बदले में ऐसे शेर कहे हैं)**, और जल्दी ही उन लोगों को मालूम हो जाएगा जिन्होंने** (अल्लाह के हक़ रसूल के हक़ या बन्दों के हक़ में) **ज़ुल्म कर रक्खा है कि** (बुरी और मुसीबत की) **जगह उन को लौट कर जाना** (है मुराद इससे जहन्नम) **है**(227)

नोटः- शाइरी हर सूरत में बुरी नहीं बल्कि जिन शेरों में अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी, झूट या किसी इन्सान की तौहीन या बेहयाई की बातें हों वो बुरे और नाजाइज़ हैं। और जिन शेरों में ये गुनाह की बातें न हों वो जाइज़ हैं। और कुछ शेरों में तो नसीहत की बातें होती हैं वो सवाब में दाख़िल हैं।

27-सूरत-नम्ल

इस मक्की सूरत में ‘7’ रूकू और ‘93’ आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

طٰسٓ ۚ تِلۡکَ اٰیٰتُ الۡقُرۡاٰنِ وَ کِتَابٍ مُّبِیۡنٍ ۙ﴿۱﴾ هُدًی وَّ بُشۡرٰی لِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡنَ یُقِیۡمُوۡنَ الصَّلٰوۃَ وَ یُؤۡتُوۡنَ
الزَّکٰوۃَ وَ هُمۡ بِالۡاٰخِرَۃِ هُمۡ یُوۡقِنُوۡنَ ﴿۳﴾ اِنَّ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَۃِ زَیَّنَّا لَهُمۡ اَعۡمَالَهُمۡ فَهُمۡ یَعۡمَهُوۡنَ ؕ﴿۴﴾
اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ لَهُمۡ سُوۡٓءُ الۡعَذَابِ وَ هُمۡ فِی الۡاٰخِرَۃِ هُمُ الۡاَخۡسَرُوۡنَ ﴿۵﴾ وَ اِنَّکَ لَتُلَقَّی الۡقُرۡاٰنَ مِنۡ لَّدُنۡ
حَکِیۡمٍ عَلِیۡمٍ ﴿۶﴾

आयत नं० 01 से 06

तासीन (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है) **ये कुरआन की और** (हुक्मों को) **साफ़-साफ़ बयान करने वाली किताब की आयतें हैं(01) ये** (आयतें) **ईमान वालों के लिए सही रास्ता दिखाने वाली और** (उस राह पर चलने पर अच्छे बदले की) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाली हैं(02) जो** (मुसलमान) **ऐसे हैं कि** (काम भी नेक करते हैं जैसा कि) **नमाज़ की पाबन्दी करते हैं** (जो कि बदनी इबादतों में सब से बड़ी है) **और ज़कात देते हैं** (जो कि माली इबादतों में सबसे बड़ी है) **और** (अक़ीदा भी उन का ठीक है यानी) **वो आख़रत पर पूरा यक़ीन रखते** (हैं ये तो ईमान वालों की ख़ूबियां) **हैं(03)** (और) **जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं रखते हम ने उन के** (बुरे) **काम उन की नज़र में अच्छे करके दिखा रक्खे हैं सो वो** (अपनी जहालत में हक़ से दूर) **भटकते फिरते** (हैं तो जैसे उनके न अक़ीदे ठीक हैं न काम इसलिए वो कुरआन को भी नहीं मानते) **हैं(04) ये वो लोग हैं जिन के लिए** (दुनिया में मरने के वक़्त भी) **सख़्त अज़ाब** (होने वाला) **है और वो लोग आख़रत में** (भी) **बड़े नुक़सान में हैं** (कि कभी छुटकारा ही न होगा)(05) **और** (चाहे ये काफ़िर कुरआन को न मानें मगर ऐ पैग़म्बर) **आप को बेशक एक बड़ी हिकमत वाले इल्म वाले की तरफ़ से कुरआन दिया जा रहा है** (आप इस नेमत की ख़ुशी में उन के इनकार से ग़म न कीजिए)(06)

नोटः- जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं रखते उन को उनके बुरे काम अच्छे लगते हैं इसलिए वो उन्हीं कामों को दिलचस्पी से करते रहते हैं।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَهْلِهِۦٓ إِنِّىٓ ءَانَسْتُ نَارًا سَـَٔاتِيكُم مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ ءَاتِيكُم بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۝٧ فَلَمَّا
جَآءَهَا نُودِىَ أَنۢ بُورِكَ مَن فِى ٱلنَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَـٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلْعَـٰلَمِينَ ۝٨ يَـٰمُوسَىٰٓ إِنَّهُۥٓ أَنَا ٱللَّهُ ٱلْعَزِيزُ
ٱلْحَكِيمُ ۝٩ وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَءَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَـٰمُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّى لَا
يَخَافُ لَدَىَّ ٱلْمُرْسَلُونَ ۝١٠ إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوٓءٍ فَإِنِّى غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝١١ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِى
جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ فِى تِسْعِ ءَايَـٰتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِۦٓ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَـٰسِقِينَ ۝١٢ فَلَمَّا
جَآءَتْهُمْ ءَايَـٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا۟ هَـٰذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝١٣ وَجَحَدُوا۟ بِهَا وَٱسْتَيْقَنَتْهَآ أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا وَعُلُوًّا فَٱنظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَـٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ۝١٤

आयत नं० 07 से 14

(उस वक़्त का क़िस्सा ज़िक्र कीजिए) **जब कि मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (मदयन से आते हुए रास्ता भूल जाने पर सर्दी की रात में) **अपने घरवालों से कहा कि मैंने** (तूर पहाड़ की तरफ़) **आग देखी है, मैं अभी** (जाकर) **वहां से** (या तो रास्ते की) **कोई ख़बर लाता हूं या तुम्हारे पास** (वहां से) **आग का कोई अंगारा लाता हूं ताकि तुम सेंक लो(07) सो जब उस** (आग) **के पास पहुंचे तो उन को** (अल्लाह की तरफ़ से) **आवाज़ दी गई कि जो इस आग के अन्दर हैं** (यानी फ़रिशते) **उन पर भी बरकत हो और जो इस** (आग) **के पास है** (यानी मूसा) **उन पर भी** (बरकत हो यह सलाम के तौर पर है)**, और** (आग की सूरत में जो यह नूर है यह अल्लाह की ज़ात नहीं बल्कि) **अल्लाह सारे जहानों का रब** (तो रंगो और हदों से) **पाक है(08)** (हुक्म हुआ कि) **ऐ मूसा बात यह है कि मैं** (जो बोल रहा हूं) **अल्लाह हूं ज़बरदस्त** (क़ुदरत व) **हिकमत वाला(09) और** (ऐ मूसा) **तुम अपना असा** (ज़मीन पर) **डाल दो** (बस उन्होंने डाल दिया तो वो अज़दहा यानी अजगर बन कर लहराने लगा)**, तो जब उन्होंने उस को इस तरह हरकत करते देखा जैसे सांप हो तो वो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड कर भी तो न देखा,** (कहा गया कि) **ऐ मूसा डरो नहीं** (क्योंकि हम ने तुम को पैग़म्बरी देदी है) **और हमारे सामने** (यानी पैग़म्बरी मिलने के वक़्त) **पैग़म्बर** (ऐसी चीज़ों से जो कि खुद उसकी पैग़म्बरी की दलील यानी मोजिज़े हों) **नहीं डरा करते** (यानी तुम को भी न डरना चाहिए)**(10) हां मगर जिससे कोई ग़लती हो जाए** (और वो उस को याद करके डरे तो हरज नहीं लेकिन अगर) **फिर बुराई** (हो जाने) **के बाद बुराई की जगह**

अच्छे काम करे (तौबा करे) **तो मैं** (उस को भी मुआफ़ कर देता हूं क्योंकि मैं) **बख़्शने वाला रहमत वाला हूं** (यह इस लिए बता दिया कि कभी फ़िरऔनी को मारने का क़िस्सा याद करके परीशान हों इसलिए इससे भी तसल्ली कर दी ताकि घबराहट जाती रहे)(11) **और** (ऐ मूसा एक और मोजिज़ा दिया जाता है वो यह कि) **तुम अपना हाथ गरीबान के अन्दर ले जाओ** (और फिर निकालो तो) **वो बिना किसी बीमारी के** (बहुत) **चमकदार हो कर निकलेगा,** (और ये दोनो मोजिज़े उन) **नौ मोजिज़ों में से हैं** (जिन के साथ तुम को) **फ़िरऔन और उस की क़ौम की तरफ़** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा जाता है,** (क्योंकि) **वो बड़े हद से निकल जाने वाले लोग हैं**(12) **बस जब उन लोगों के पास हमारे** (दिये हुए) **मोजिज़े पहुंचे** (जो) **बहुत साफ़** (और खुले) **थे** (यानी शुरू में दो मोजिज़े दिखाए गये फिर वक़्त पर बाक़ी दिखाए जाते रहे) **तो वो लोग** (उन सब को देख कर भी) **बोले यह** (तो) **खुला जादू है**(13) **और** (सितम तो यह था कि) **ज़ुल्म और घमन्ड की वजह से उन** (मोजिज़ों) **का इनकार किया हालांकि** (अन्दर से) **उन के दिलों ने उन का यक़ीन कर लिया था, सो देखिए कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ उन फ़साद करने वालों का** (कि दुनिया में डुबोए गये और आख़रत में जलने की सज़ा पाई)(14)

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵﴾ وَ
وَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَ قَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَ اُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ
الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۶﴾ وَ حُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ وَ الطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى
وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَ جُنُوْدُهٗ ۙ وَ هُمْ لَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۸﴾ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَ عَلٰى وَالِدَيَّ
وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۹﴾

आयत नं० 15 से 19

और हम ने दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) **और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **को** (शरीअत और हुकूमत का) **इल्म दिया और उन दोनो ने** (शुक्र अदा करने के लिए) **कहा कि सारी तारीफ़ें अल्लाह तआ़ला की हैं जिसने हम को अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर बड़ाई दी**(15) **और दाऊद**

(अलैहिस्सलाम की जगह उन) **के वारिस सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **हुए** (यानी उन को हुकूमत मिली) **और उन्होंने** (शुक्र करते हुए) **कहा कि ऐ लोगो हम को परिन्दों की बोली को** (समझना) **सिखाया गया है** (जो दूसरे बादशाहों को नहीं आता) **और हम को** (हुकूमत के सामान में) **हर क़िस्म की** (ज़रूरी) **चीज़ें दी गईं हैं** (जैसे फ़ौज, माल और जंगी असलहा), **सचमुच यह** (अल्लाह तआ़ला की) **खुली महरबानी है(16) और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम के पास हुकूमत का सामान भी अजीब ग़रीब था जैसा कि उन) **के लिए** (जो) **उन का लशकर जमा किया गया** (था उन में) **जिन्नात भी** (थे) **और इन्सान भी और परिन्दे भी** (जो किसी बादशाह के ताबे नहीं होते) **और** (इतने ज़्यादा थे कि) **उन को** (चलने के वक़्त) **रोका जा**(या कर)**ता था** (ताकि बिछड़ न जाएं पीछे वाले भी पहुंच जाएं)(17) **यहां तक कि** (एक बार अपनी फ़ौज के साथ कहीं जा रहे थे) **जब वो चींटियों के एक मैदान में आए तो एक चींटी ने** (दूसरी चींटियों से) **कहा कि ऐ चींटियों अपने-अपने घरों में जा घुसो कहीं तुम को सुलेमान और उनकी फ़ौज अन्जाने में कुचल न डाले(18) सो सुलेमान** (अलैहिस्सलाम ने उसकी बात सुनी और) **उसकी बात से** (हैरान हो कर कि इस छोटे से वजूद पर यह होशियारी) **मुस्कुराते हुए हंस पड़े और** (अल्लाह की इस नेमत पर कि बोली समझ गये) **कहने लगे कि या रब मेरे मुझ को इस का पाबन्द बना दीजिए कि मैं आप की उन नेमतों का शुक्र किया करूं जो आपने मुझ को और मेरे मां बाप को दी हैं** (यानी ईमान और इल्म सब को और पैग़म्बरी खुद को और अपने वालिद दाऊद अलैहिस्सलाम को) **और** (इस पर भी पाबन्दी दीजिए कि) **मैं नेक काम किया करूं जिससे आप खुश हों** (यानी मेरे काम कुबूल हों) **और मुझ को अपनी रहमत से अपने** (ऊंचे दर्जे के) **नेक बन्दों** (पैग़म्बरों) **में दाख़िल रखिए** (यानी नज़दीकी के बाद दूरी न हो)(19)

नोटः- जानवरों और परिन्दों में भी समझ होती है मगर इस दर्जे की नहीं कि उन को शरीअत के हुक्मों का पाबन्द बनाया जाता।

وَ تَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ۝٢٠ لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ
لَاۡاَذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٢١ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَ جِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ
بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ۝٢٢ اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَ اُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّ لَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ۝٢٣ وَجَدْتُّهَا وَ قَوْمَهَا
يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝٢٤

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ
رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۩ ﴿٢٦﴾ قَالَ سَنَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾ اذْهَب بِّكِتَابِي هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ
ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

आयत नं० 20 से 28

और (एक बार यह क़िस्सा हुआ कि) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने परिन्दों की हाज़िरी ली तो** (हुदहुद को न देखा) **कहने लगे कि क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देखता क्या कहीं ग़ाइब हो गया है(20)** (और जब पता चला कि असलीयत में ग़ाइब है तो कहने लगे कि) **मैं उस को** (ग़ैर हाज़िरी पर) **सख़्त सज़ा दूंगा या उस को ज़बह कर डालूंगा या वो कोई साफ़ दलील** (और ग़ैर हाज़िरी की मजबूरी) **मेरे सामने पेश कर दे** (तो ख़ैर छोड़ दूंगा)(21) **थोड़ी देर बाद वो आ गया और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम से) **कहने लगा कि ऐसी बात मालूम करके आया हूं जो आप को मालूम नहीं हुई** (और वो यह कि) **मैं आप के पास सबा के क़बीले की पक्की ख़बर लाया हूं(22) मैंने एक औरत को देखा** (जिस का नाम बिलक़ीस है) **कि वो उन लोगों पर हुकूमत कर रही है और उस को** (हुकूमत का) **हर क़िस्म का साज़ो सामान मिला है और उसके पास एक बड़ा** (शानदार) **तख़्त** (यानी शाही कुर्सी) **है(23)** (और मज़हबी हालत उन की यह है कि) **मैंने उस** (औरत) **को और उस की क़ौम को देखा कि वो अल्लाह** (की इबादत) **को छोड़ कर सूरज को सजदा करते हैं और शैतान ने उन के** (कुफ़्र के उन) **कामों को उनकी नज़र में अच्छा दिखा रक्खा है** (इस तरह) **उन को** (सही) **रास्ते से रोक रक्खा है इसलिए वो** (सही) **रास्ते पर नहीं चलते(24) कि उस अल्लाह को सजदा नहीं करते जो** (ऐसा क़ुदरत वाला है कि) **आसमान और ज़मीन की छुपी चीज़ों को** (जैसे बारिश और पौधे) **बाहर लाता है और** (ऐसा जानने वाला है कि) **तुम लोग जो कुछ** (दिल में) **छुपा रखते हो और जो कुछ दिखाते हो वो सब को जानता है(25)** (इसलिए) **अल्लाह ही ऐसा है कि उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और वो बड़े अर्श का मालिक है(26) सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह सुनकर) **कहा कि हम अभी देख लेते हैं कि तू सच कहता है या तू झूटों में से है(27)** (अच्छा) **मेरा यह ख़त लेजा और उसको उनके पास डाल देना फिर** (ज़रा वहां से) **हट जाना फिर देखना कि आपस में क्या सवाल जवाब करते हैं** (फिर तू यहां चले आना वो लोग जो कुछ कारवाई करेंगे उस से तेरा सच झूट पता चल जाएगा)(28)

नोटः- लिखा है कि एक बार सफ़र के दौरान हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने ऐसी जगह पड़ाव किया जहां पानी नहीं था और अल्लाह तआ़ला ने हुदहुद परिन्दे में यह ख़ास बात रक्खी है कि वो ज़मीन के अन्दर की चीज़ों को और ज़मीन के अन्दर बहने वाले पानी की धारों को देख लेता है तो हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हुदहुद से यह पता करना चाहते थे कि इस मैदान में पानी कितनी गहराई में है और किस जगह ज़मीन खोदने से पानी आसानी से मिल सकता है ताकि फिर वो जिन्नात को हुक्म दे देते कि उसकी बताई जगह ज़मीन को खोद कर पानी निकालो वो बड़ी जल्दी खोद कर पानी निकाल लेते थे इसलिए हुदहुद की पूछताछ की गई।

قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّیْۤ اُلْقِیَ اِلَیَّ كِتٰبٌ كَرِیْمٌ ﴿٢٩﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَیْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿٣٠﴾ اَلَّا
تَعْلُوْا عَلَیَّ وَ اْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِیْ فِیْۤ اَمْرِیْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰی
تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا بَاْسٍ شَدِیْدٍ وَّ الْاَمْرُ اِلَیْكِ فَانْظُرِیْ مَا ذَا تَاْمُرِیْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ
الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْیَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً وَ كَذٰلِكَ یَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَ اِنِّیْ مُرْسِلَةٌ
اِلَیْهِمْ بِهَدِیَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ یَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَیْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ فَمَاۤ اٰتٰىنَِ اللّٰهُ
خَیْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِیَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَیْهِمْ فَلَنَاْتِیَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَ
لَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

आयत नं० 29 से 37

(सुलेमान अलैहिस्सलाम ने हुदहुद से यह बात करके मलिका बिलक़ीस के नाम एक ख़त लिखा जिसके बारे में आगे आता है और हुदहुद को दिया जिसने चोंच में ले जा कर बिलक़ीस के पास डाल दिया) **मलिका ने** (ख़त पढ़ कर अपने सरदारों को मशवरे के लिए बुलाया और) **कहा कि ऐ दरबार वालो मेरे पास एक ख़त डाला गया है** (जिस का बयान) **इ़ज़्ज़तदार** (और हाकिमाना) **है(29) वो सुलेमान** (बादशाह) **की तरफ़ से है और उस में** (शुरू में) **यह** (लिखा) **है बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम(30)** (और उसके बाद यह कि) **तुम लोग मेरे मुक़ाबिले में घमन्ड मत करो और मेरे पास ताबेदार होकर चले आओ** (यानी सभी को इस्लाम की दावत दी)(31) **मलिका ने** (सुलेमान अलैहिस्सलाम के बारे में जान लेने के बाद) **कहा कि ऐ दरबार वालो तुम मुझ को मेरे इस मुआमले में राय दो**

(कि मुझ को सुलेमान के साथ में क्या बरताव करना चाहिए) **और मैं किसी बात का फ़ैसला नहीं करती जब कि तुम मेरे पास मौजूद न** (हों और राय में शरीक न) **हों(32) वो लोग कहने लगे कि हम** (तो हर तरह से हाज़िर हैं अगर मुक़ाबिला और लड़ना ठीक समझा जाए तो हम) **बड़े ताक़तवर और लड़ने वाले हैं** (और आगे) **तुम्हारी मर्ज़ी है सो तुम ही** (भलाई) **देख लो जो कुछ** (सोच कर) **हुक्म देना चाहो(33) मलिका कहने लगी कि** (मेरे नज़दीक तो लड़ने में तो भलाई नहीं क्योंकि सुलेमान बादशाह हैं और) **बादशाह जब किसी बस्ती में** (हमलावर होकर) **दाख़िल होते हैं तो उसको बर्बाद कर देते हैं और उसके रहने वालों में जो इज़्ज़तदार हैं उनको** (उनका ज़ोर घटाने के लिए) **ज़लील** (ब रूसवा) **किया करते हैं और** (उन से लड़ाई की जाए तो हो सकता है वो ही जीतें तो फिर) **ये लोग भी ऐसा ही करेंगे(34)** (इसलिए जंग को तो अभी छोड़ा जाए) **और** (अभी तो ऐसा करते हैं कि) **मैं उन लोगों के पास** (अपने लोगों के हाथ) **कुछ तोहफ़े भेजती हूं फिर देखूंगी कि वो भेजे हुए** (वहां से) **क्या** (जवाब) **लेकर आते हैं** (उस वक़्त दोबारा सोचा जाएगा बस तोहफ़ों का सामान लेकर आदमी रवाना हुए)(35) **जब वो लोग सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे** (और तमाम तोहफ़े पेश किये) **तो सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि तुम लोग माल से मेरी मदद कर**(ना चाह)**ते हो** (इसलिए तोहफ़े लाए हो), **सो** (समझ रक्खो कि) **अल्लाह ने जो कुछ मुझे दे रक्खा है वो उससे कहीं बेहतर है जो तुम को दे रक्खा है** (क्योंकि तुम्हारे पास सिर्फ़ दुनिया और मेरे पास दीन भी और दुनिया भी तुम से ज़्यादा इसलिए मैं तो इन चीज़ों का लालची नहीं हूं) **हां तुम ही अपने तोहफ़े पर ख़ुश होते होंगे** (बस ये तोहफ़े हम न लेंगे)(36) **तुम** (इन को लेकर) **उन लोगों के पास लौट जाओ** (अगर वो अब भी ईमान ले आएं तो ठीक है वर्ना) **हम उन पर ऐसी फ़ौजें भेजते हैं कि उन लोगों से उन का ज़रा भी मुक़ाबिला न हो सकेगा और हम उन को वहां से ज़लील करके निकाल देंगे और वो** (सदा के लिए हमारे) **मातहत** (और रिआया) **हो जाएंगे** (ये नहीं कि आज़ादी से छोड़ दिये जाएंगे बल्कि सदा के लिए रूसवाई व ताबेदारी उनके लिए ज़रूरी हो जाएगी)(37)

नोटः- ख़त के शुरू में बिस्मिल्लाह लिखना पैग़म्बरों की सुन्नत है मगर आज कल ख़तों को बेअदबी से एक तरफ़ डाल दिया जाता है बल्कि कूड़े दान में डाल दिया जाता है ऐसी सूरत में ख़त लिखते हुए सुन्नत अदा करने के लिए ज़बान से बिस्मिल्लाह कहले ख़त में न लिखें।

قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿۳۸﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَ اِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿۳۹﴾ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ
وَ مَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿۴۰﴾ قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْۤ
اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿۴۱﴾

आयत नं० 38 से 41

(बस जब वो लोग अपने तोहफ़े लेकर वापस गये तो सुलेमान अलैहिस्सलाम के इल्म और पैग़म्बरी के हालात जान कर मलिका बिलक़ीस हाज़िर होने के इरादे से अपने मुल्क से चली तो) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम को उसके आने का पता चल गया और उन्हों) **ने** (अपने दरबार वालों से) **कहा कि ऐ दरबार वालो तुम में कोई ऐसा है जो उस** (बिलक़ीस) **का तख़्त मेरे पास ले आए उनके ताबेदार होकर आने से पहले** (ताकि वो लोग मेरा मोजिज़ा भी देख कर पैग़म्बरी का यक़ीन करलें कि ऐसी हिफ़ाज़त से रक्खा हुआ और इतना बड़ा तख़्त अचानक कैसे आगया)(38) **एक ज़बरदस्त जिन्न ने जवाब में कहा कि मैं उस को आप के पास ले आऊंगा इससे पहले कि आप अपने दरबार से उठें और** (माना वो बहुत भारी है मगर) **मैं उस** (के लाने) **पर ताक़त रखता हूं** (और माना वो बड़ा क़ीमती और मोतियों से सजा हुआ है मगर मैं) **अमानतदार** (भी) **हूं** (उसमें कोई हेराफेरी न करूंगा)(39) **जिस के पास** (अल्लाह की) **किताब का इल्म था** (मुराद सुलेमान अलैहिस्सलाम हैं बस) **उस** (इल्म वाले) **ने** (उस जिन्न से) **कहा कि** (बस तुझ में तो इतनी ही ताक़त है और) **मैं उस को तेरे सामने तेरी आंख झपकने से पहले ला सकता हूं** (क्योंकि मोजिज़े की ताक़त से लाऊंगा बस आपने अल्लाह तआला से दुआ की तो वो तख़्त फ़ौरन सामने आ मौजूद हुआ), **जब सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने उसको अपने सामने रक्खा देखा तो** (ख़ुश होकर शुक्र के तौर पर) **कहने लगे कि यह भी मेरे रब की महरबानी है** (कि मेरे हाथ से यह मोजिज़ा दिखा दिया) **ताकि वो मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या** (ख़ुदा न करे) **नाशुक्री करता हूं, और जो कोई शुक्र करता है वो अपने ही नफ़े के लिए शुक्र करता है** (अल्लाह तआला का कोई नफ़ा नहीं) **और** (इसी तरह) **जो नाशुक्री करता है** (वो भी अपना ही नुक़सान करता है अल्लाह तआला का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **मेरा रब बेपरवा है** (यानी किसी का मुहताज नहीं और) **करम**

करने वाला है(40) (उसके बाद) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने** (बिलक़ीस की अक़्ल आज़माने के लिए) **हुक्म दिया कि उसके तख़्त की सूरत बदल दो हम देखें उस को पता लगता है या उस की गिनती उन्हीं में है जिन को** (ऐसी बातों का) **पता नहीं लगता** (अगर समझदार है तो हक़ बात समझने की ज़्यादा उम्मीद है और उसके हक़ को पहचानने का असर दूर तक भी पहुंचेगा)(41)

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَ اُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَ كُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿۴۲﴾ وَ صَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿۴۳﴾ قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّ كَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ۬ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَ اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۴﴾

आयत नं० 42 से 44

(सुलेमान अलैहिस्सलाम ने यह सब सामान कर रक्खा था फिर मलिका बिलक़ीस पहुंची) **सो जब मलिका आई तो** (तख़्त दिखा कर) **उससे कहा गया कि क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है? वो कहने लगी कि हां है तो वैसा ही** (बिलक़ीस उस को पहचान गई और उसके बदल देने को भी समझ गई) **और** (यह भी कहा कि) **हम लोगों को तो इस क़िस्से से पहले ही** (आप की पैग़म्बरी की) **तस्दीक़ हो चुकी है और हम** (उसी वक़्त से दिल से) **ताबेदार हो चुके हैं** (जब हमारे भेजे हुए लोगों से आप के कमालों का पता चला था इस मोजिज़े की कोई ज़रूरत न थी)**(42) और** (असल में वो समझदार थी मगर कुछ दिनों तक जो ईमान न लाई थी तो उसकी वजह यह है कि) **उस को** (ईमान लाने से) **अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत ने रोक रक्खा था** (जिस की उस को आदत थी, और आदत इसलिए पड़ गई थी कि) **वो काफ़िर क़ौम में की थी** (बस जो सब को देखा वो ही आप करने लगी)**(43) मलिका से कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो जाओ** (जिसके सहन में ऐसा हौज़ बनवाया था जिसमें पानी में मच्छलियां तैर रही थीं और ऊपर साफ़ शीशा था) **तो जब उस का सहन देखा तो उस को पानी** (से भरा हुआ) **समझा और** (इसलिए उसके अन्दर घुसने के लिए अपने कपड़े उठाए और) **अपनी दोनो पिन्डलियां खोल दीं,** (उस वक़्त) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि यह तो महल है जो शीशों से बनाया गया है** (और यह हौज़ भी शीशे से ढका है कपड़े उठाने की ज़रूरत नहीं उस वक़्त) **मलिका बोल उठी कि या रब मेरे मैंने** (अब तक) **अपनी जान**

पर ज़ुल्म किया था (कि शिर्क में गरिफ़्तार थी) **और मैं** (अब) **सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के साथ** (यानी उनके दीन पर) **होकर सारे जहानों के रब अल्लाह पर ईमान लाई**(44)

नोटः- क़ुरआन में तो ज़िक्र नहीं मगर हज़रत अकरमा से रिवायत है कि उसके बाद बिलक़ीस का हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम से निकाह हुआ। और हर महीने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम यमन तशरीफ़ ले जाते और बिलक़ीस के पास तीन दिन ठहरते थे।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِیْقٰنِ یَخْتَصِمُوْنَ۝۴۵ قَالَ یٰقَوْمِ لِمَ
تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّیِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْ لَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۝۴۶ قَالُوا اطَّیَّرْنَا بِكَ وَ بِمَنْ
مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓىِٕرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ۝۴۷ وَ كَانَ فِی الْمَدِیْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ یُّفْسِدُوْنَ فِی
الْاَرْضِ وَ لَا یُصْلِحُوْنَ۝۴۸ قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَیِّتَنَّهٗ وَ اَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِیِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
اَهْلِهٖ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ۝۴۹ وَ مَكَرُوْا مَكْرًا وَّ مَكَرْنَا مَكْرًا وَّ هُمْ لَا یَشْعُرُوْنَ۝۵۰ فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَ قَوْمَهُمْ اَجْمَعِیْنَ۝۵۱ فَتِلْكَ بُیُوْتُهُمْ خَاوِیَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ
یَّعْلَمُوْنَ۝۵۲ وَ اَنْجَیْنَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ۝۵۳

आयत नं० 45 से 53

और हमने समूद (की क़ौम) **के पास उनके** (बिरादरी के) **भाई सालिह** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर यह पैग़ाम देकर) **भेजा कि तुम** (शिर्क को छोड़ कर) **अल्लाह की इबादत करो** (चाहिए तो यह था कि सब ईमान ले आते मगर) **उन में दो गिरोह हो गये** (यानी एक गिरोह तो ईमान लाया और एक न लाया) **जो दीन के बारे में आपस में झगड़ने लगे**(45) (और जब सालिह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के अज़ाब से डराया तो उन्होंने कहा लाओ वो अज़ाब कहां है इस पर) **सालिह** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि ऐ भाइयों तुम नेक काम** (यानी तौबा व ईमान) **से पहले अज़ाब क्यों जल्दी मांगते हो तुम लोग अल्लाह के सामने** (कुफ़्र से) **मुआफ़ी क्यों नहीं चाहते जिस से उम्मीद हो कि तुम पर रहम किया जाए** (यानी अज़ाब से बचे रहो)(46) **वो लोग कहने लगे कि हम तो तुम को और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं** (कि जब से तुम ने यह

मज़हब निकाला है क़ौम में फूट पड़ गई है जिसकी वजह तुम लोग हो), **सालिह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (जवाब में) **कहा कि तुम्हारी** (इस) **नुहूसत** (की वजह) **अल्लाह को पता है** (यानी तुम्हारे कुफ़्र के काम अल्लाह को पता हैं यह नुहूसत उन्हीं कामों की वजह से है उसकी वजह यह दीन नहीं) **बल्कि तुम वो लोग हो कि** (इस कुफ़्र की वजह से) **अज़ाब में पकड़े जाओगे(47) और** (यूं तो काफ़िर उस क़ौम में बहुत थे लेकिन सरदार) **उस बस्ती में नौ आदमी थे जो ज़मीन में** (यानी बस्ती से बाहर तक भी) **फ़साद किया करते थे और** (ज़रा भी) **सुधार** (की बात) **न करते थे(48) उन्होंने** (एक बार यह फ़साद किया कि) **आपस में** (एक दूसरे से) **कहा सब** (इस पर) **अल्लाह की क़सम खाओ कि हम रात के वक़्त सालिह और उनके ताल्लुक़ वालों** (यानी ईमान वालों) **को जाकर मार देंगे फिर** (अगर पूछताछ की नौबत आई तो) **हम उनके वारिस से** (जो ख़ून का दावा करेगा) **कह देंगे कि उन के घर वालों के** (और ख़ुद उन के) **मारे जाने में मौजूद** (भी) **न थे** (मारना तो दूर रहा) **और** (यह भी कह देंगे कि) **हम बिल्कुल सच्चे हैं** (और गवाह कोई देखने वाला होगा नहीं बस बात दबदबा जाएगी)**(49) और** (यह मशवरा करके) **उन्होंने एक चाल चली** (कि रात के वक़्त इस कार्रवाई के लिए चले) **और एक चाल हम ने चली और उनको पता भी न चल सका** (वो यह कि एक पहाड़ से एक पत्थर उन पर लुढक आया और वो सब वहां ही हलाक हो गये)**(50) तो देखिए उन की शरारतों का क्या अन्जाम हुआ कि हमने उन को** (इस तरह) **और** (फिर) **उनकी** (बाक़ी) **क़ौम को** (आसमानी अज़ाब से) **सब को हलाक कर दिया(51) सो ये उन के घर हैं जो उन के कुफ़्र की वजह से वीरान पड़े** (हैं जो मक्के वालों को मुल्क शाम के सफ़र में मिलते) **हैं, बेशक इस** (क़िस्से) **में बड़ा सबक़ है समझदारों के लिए(52) और हम ने ईमान वालों और परहेज़गारों को** (उस क़त्ल से जिस का मशवरा हुआ था और अज़ाब से भी) **बचा लिया(53)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि काफ़िर भी झूट को बुरा समझते थे।

وَ لُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَ اَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۴﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ
النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۵۵﴾ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ
اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ؗ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۵۷﴾ وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۵۸﴾ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾

आयत नं० 54 से 59

और हमने लूत (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बना कर उन की क़ौम के पास) **भेजा था जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम यह बेशर्मी का काम करते हो हालांकि समझदार हो** (क्या इसकी बुराई नहीं समझते)(54) **क्या** (यह कोई यक़ीन करने की बात है कि) **तुम मर्दों के साथ बुरा काम करते हो औरतों को छोड़ कर, बल्कि** (असल बात यह है कि तुम बड़ी) **जहालत** (का काम) **कर रहे हो**(55) (इस नसीहत का) **उन की क़ौम से कोई** (सही) **जवाब न बन पड़ा सिवाए इस के कि आपस में कहने लगे कि लूत** (अलैहिस्सलाम) **के लोगों को** (यानी उन पर ईमान लाने वालों को उन के साथ) **तुम अपनी बस्ती से निकाल दो** (क्योंकि) **ये लोग बड़े पाक साफ़ बनते हैं**(56) **सो** (जब यहां तक नौबत पहुंच गई तो) **हम ने** (उस क़ौम पर अज़ाब भेजा और) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **को और उनके लोगों को** (उस अज़ाब से) **बचा लिया सिवाए उनकी बीवी के कि उसको** (ईमान न लाने की वजह से) **हम ने उन्हीं लोगों में तय कर रक्खा था जो अज़ाब में रह गये थे**(57) **और** (वो अज़ाब जो उन पर आया यह था कि) **हम ने उन पर एक नई तरह की बारिश बरसाई** (कि वो पत्थरों की बारिश थी) **सो उन लोगों पर कैसी बुरी बारिश बरसाई गई जो** (पहले अल्लाह के अज़ाब से) **डराए गये थे** (जिस पर उन्होंने, ध्यान न दिया)(58) **कहिए सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं और सलाम हो उसके उन बन्दों पर जिन को उसने चुन लिया है** (यानी पैग़म्बर), **क्या अल्लाह बेहतर है या वो जिन को उन लोगों ने अल्लाह की ख़ुदाई में शरीक बना रक्खा है**(59)

मसअलाः- इस आयत से साबित हुआ कि ख़ुतबा अल्लाह तआला की हम्द और पैग़म्बरों पर दरूद व सलाम से शुरू होना चाहिए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम के तमाम ख़ुतबों में ये ही तरीक़ा रहा है बल्कि हर अहम काम के शुरू में अल्लाह की हम्द और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद व सलाम सुन्नत व मुस्तहब है।

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ
لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ﴿٦٠﴾ أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ
أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ أَمَّنْ
يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾
أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيْحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ تَعٰلَى
اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٣﴾ أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ قُلْ
هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٦٤﴾

आयत नं० 60 से 64

(ऐ लोगो यह बताओ कि) **वो ज़ात** (बेहतर है) **जिसने आसमान और ज़मीन को बनाया और उसने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे हम ने रौनक़दार बाग़ उगाए** (वर्ना) **तुम्हारे बस में तो नहीं था कि तुम उन** (बाग़ों) **के पेड़ों को उगा सको,** (यह सुन कर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में शरीक होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (मगर मुशरिक लोग फिर भी नहीं मानते) **बल्कि ये ऐसे लोग हैं कि** (दूसरों को) **अल्लाह के बराबर ठहराते हैं(60)** (अच्छा फिर बताओ कि ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जिसने ज़मीन को** (लोगों के) **ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच-बीच में नहरें बनाईं और उस** (ज़मीन) **के** (ठहराने के) **लिए पहाड़ बनाए और दो दरियाओं के बीच में एक आड़ बनाई,** (यह सुनकर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (ख़ुदाई का साझी होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (मगर मुश्रिक नहीं मानते) **बल्कि उनमें ज़्यादा तो** (अच्छी तरह) **समझते भी नहीं(61)** (अच्छा बताओ ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जो तड़पते आदमी की दुआ सुनता है जब वो उस को पुकारता है और** (उसकी) **मुसीबत को दूर कर देता है और तुम को ज़मीन में पहले लोगों का वारिस बनाता है,** (यह सुनकर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में शरीक होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (मगर) **तुम लोग बहुत ही कम याद रखते हो(62)** (अच्छा फिर और ख़ूबियां सुन कर बताओ कि ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जो तुम को जंगल और दरिया के अन्धेरों में रास्ता दिखाता है और जो हवाओं को बारिश से पहले भेजता है जो** (बारिश की उम्मीद दिलाकर दिलों को) **ख़ुश**

कर देती हैं, (यह सुन कर अब बताओ) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में साझी होने के लाइक़) **कोई और माबूद है,** (हरगिज़ नहीं) **बल्कि अल्लाह तआ़ला उनके शिर्क से बहुत ऊपर है**(63) (अच्छा फिर दूसरी ख़ूबियां व अहसान सुन कर बताओ कि ये बुत बेहतर हैं या) **वो ज़ात जो सारी मख़लूक़ को पहली बार पैदा करता है फिर उस को दोबारा पैदा कर देगा और जो आसमान और ज़मीन से** (पानी बरसाकर और पेड़ पौधे उगाकर) **तुम को रोज़ी देता है,** (यह सुन कर अब बताओ कि) **क्या अल्लाह के साथ** (इबादत में साझी होने के लाइक़) **कोई और माबूद है** (और अगर वो यह सुन कर भी कहें कि हां और माबूद भी इबादत के लाइक़ हैं तो) **आप कहिए कि** (अच्छा) **तुम** (उन के इबादत के हक़दार होने पर) **अपनी दलील लाओ अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो**(64)

नोटः- एक हदीस में है कि "तीन दुआ़ऐं ज़रूर क़ुबूल होती हैं जिस में किसी शक की गुन्जाइश नहीं एक (सताए हुए) मज़लूम की दुआ दूसरे मुसाफ़िर की दुआ तीसरे बाप जो अपनी औलाद के लिए बददुआ करे"। क्योंकि ये तड़पते दिलों की दुआ़एं हैं।

और एक हदीस में है कि "अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मैं किसी मज़लूम की दुआ को कभी रद्द (यानी नामन्जूर) नहीं करूंगा चाहे वो किसी काफ़िर के मुंह से हो"। (क़ुरतबी)

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْغَيْبَ اِلَّا اللّٰهُ ؕ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝٦٥ بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا ۫ بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ۝٦٦ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا تُرٰبًا وَّاٰبَآؤُنَآ اَئِنَّا
لَمُخْرَجُوْنَ ۝٦٧ لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٦٨ قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٦٩ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝٧٠ وَيَقُوْلُوْنَ
مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٧١ قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٧٢ وَاِنَّ
رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٧٣ وَاِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ ۝٧٤ وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٧٥

आयत नं० 65 से 75

(ये लोग जो क़ियामत का वक़्त न बताने से यह कहते हैं कि नहीं आएगी) **आप कह दीजिए**

जितनी मख़लूक़ आसमानों और ज़मीन में मौजूद हैं (उनमें से) **कोई भी ग़ैब की बात नहीं जानता सिवाए अल्लाह तआला के, और** (इसी वजह से) **उन को यह ख़बर** (भी) **नहीं कि वो कब दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे** (यानी अल्लाह तआला को तो बेबताए सब पता है और किसी को बेबताए कुछ भी पता नहीं और ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनका पहले पता नहीं और वो होती हैं ऐसे ही क़ियामत के वक़्त की किसी को ख़बर नहीं दी गई लेकिन आएगी ज़रूर मगर काफ़िर क़ियामत का इनकार करते हैं)(65) **बल्कि आख़रत के बारे में इन** (काफ़िरों) **का इल्म बेबस होकर रह गया है बल्कि ये लोग उस** (के आने) **से शक में हैं बल्कि ये उससे अन्धे बने हुए हैं** (कि शक दूर करने वाली दलीलों पर नज़र नहीं करते इसलिए सही रास्ता दिखाई नहीं देता)(66) **और ये काफ़िर यह कहते हैं कि क्या हम लोग जब** (मरकर) **मिट्टी हो गये और** (इसी तरह) **हमारे बड़े भी तो क्या** (फिर) **हम** (ज़िन्दा करके क़बरों से) **निकाले जाएंगे(67) इस का तो हम से और हमारे बड़ों से** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के) **पहले से वादा होता चला आया है** (क्योंकि सभी पैग़म्बरों की यह बात मशहूर है लेकिन न आज तक हुआ और न किसी ने बताया कि कब होगा इस से पता चलता है कि) **ये बेसनद बातें हैं जो पहले लोगों से कही हुई चली आ रही हैं(68) आप कह दीजिए कि** (सारी दलीलें सुनकर भी शक में हो तो) **तुम ज़मीन में चल फिर कर देखो कि मुजरिमों का अन्जाम क्या हुआ** (क्योंकि उनके हलाक होने और अज़ाब आने के आसार अब तक बाक़ी थे)(69) **और** (अगर इन नसीहतों के बावजूद फिर भी नहीं मानते तो) **आप उन पर ग़म न कीजिए और जो कुछ ये शरारतें कर रहे हैं उससे दिल में न कुढ़ें** (कि और पैग़म्बरों के साथ भी ये ही मुआमला हुआ है)(70) **और ये लोग** (बेझिजक) **यह कहते हैं कि यह वादा** (अज़ाब का) **कब होगा अगर तुम सच्चे हो** (तो बताओ)(71) **आप कह दीजिए कि अजब नहीं कि जिस अज़ाब की तुम जल्दी मचा रहे हो उसमें से कुछ तुम्हारे पास ही आ लगा हो(72) और** (अब तक जो देर हो रही है तो उस की वजह यह है कि) **आप का रब लोगों पर बड़ी महरबानी करने वाला** (है इसलिए मुहलत दे रक्खी) **है व लेकिन अक्सर आदमी** (इस बात पर) **शुक्र नहीं करते** (कि देरी को ग़नीमत समझें और मुहलत से फ़ाइदा उठाएं)(74) **और** (मुहलत से ये न समझें कि इन कामों की कभी सज़ा ही न होगी क्योंकि) **आप के रब को सब ख़बर है जो कुछ उनके दिलों में छुपा है और जिस को वो ऐलानियां करते हैं। और** (सब ख़ुदा के दफ़्तर में भी लिखा है और ये ही नहीं बल्कि) **आसमान और ज़मीन में ऐसी कोई छुपी चीज़ नहीं जो** (तक़्दीर की) **खुली किताब में** (दर्ज) **न हो(75)**

नोटः- ऊपर आयत में साफ़ तरीक़े से बता दिया गया कि ग़ैब का इल्म अल्लाह की ख़ास सिफ़त है जिसमें कोई फ़रिशता या नबी व रसूल भी शरीक नहीं हो सकता।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝٧٦ وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝٧٧ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝٧٨ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۖ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ
الْمُبِينِ ۝٧٩ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۝٨٠ وَمَا أَنتَ بِهَادِي الْعُمْيِ
عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ۝٨١ وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ
دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝٨٢

आयत नं० 76 से 82

बेशक यह क़ुरआन बनी इस्राईल पर अक्सर उन बातों (की असलीयत) **को खोलता है जिसमें वो झगड़ा करते हैं(76) और वो ईमानदारों के लिए** (ख़ास) **हिदायत और** (ख़ास) **रहमत है** (हिदायत नेक कामों की और रहमत उनके फल)(77) **बेशक आप का रब उनके बीच अपने हुक्म से** (क़ियामत के दिन खुला) **फ़ैसला कर देगा** (उस वक़्त पता चल जाएगा कि सच्चा दीन क्या था और झूट क्या तो ऐसे लोगों पर क्या अफ़सोस किया जाए) **और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **इल्म वाला** (है बिना उसकी मर्ज़ी के कोई किसी को नुक़सान नहीं पहुंचा सकता) **है(78) तो आप अल्लाह पर भरोसा रखिए** (अल्लाह की मदद ज़रूर होगी, क्योंकि) **आप खुले हक़** (और सही रास्ते) **पर हैं(79) आप मुर्दों को** (अपनी बात) **नहीं सुना सकते और न बहरों को अपनी आवाज़ सुना सकते हैं** (ख़ास कर) **जब कि वो पीठ फेर कर चल दें(80) और न आप अन्धों को उन की गुमराही से** (बचाकर) **रास्ते पर ला सकते हैं** (यानी इन ईमान न लाने वालों की हालत बहरों, अन्धों और मुर्दों की सी हैं), **आप तो सिर्फ़ उन ही को** (अपनी बात) **सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं** (और) **फिर वो मानते भी हैं(81) और जब** (क़ियामत का) **वादा उन** (लोगों) **पर पूरा होने को होगा** (यानी क़ियामत का ज़माना नज़दीक आ पहुंचेगा) **तो हम उन के लिए ज़मीन से एक** (अजीब) **जानवर निकालेंगे कि वो उन से बातें करेगा कि** (काफ़िर) **लोग हमारी** (यानी अल्लाह तआ़ला की) **आयतों पर** (ख़ास कर उन आयतों पर जो क़ियामत के बारे में हैं) **यक़ीन नहीं लाते थे** (मगर अब क़ियामत आ पहुंची उसकी निशानियों में से एक निशानी मेरा निकलना भी है)(82)।

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत की आख़री निशानियों में सबसे पहले सूरज पच्छम से निकलेगा फिर ज़मीन से एक जानवर निकलेगा जो लोगों से बातें करेगा और मोमिन व काफ़िर को पहचानेगा और यह वो वक़्त होगा कि तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा किसी का ईमान लाना क़ुबूल न होगा। (इब्ने कसीर)

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿۸۳﴾ حَتّٰۤى اِذَا جَآءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ
وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿۸۵﴾ اَلَمْ
يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي
الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَتَرَى الْجِبَالَ
تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾ مَنْ
جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي
النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۰﴾

आयत नं० 83 से 90

और जिस दिन (क़ब्रों से ज़िन्दा करने के बाद) **हम हर उम्मत में से** (यानी पहली उम्मतों में से भी और इस उम्मत से भी) **एक-एक गिरोह उन लोगों का** (हिसाब के लिए) **जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुटलाया करते थे फिर उन को** (चलने में पिछलों से आ मिलने के वास्ते) **रोका जाएगा** (ताकि आगे पीछे न रहें सब साथ होकर चलें क्योंकि गिनती में बहुत ज़्यादा होंगे)(83) **यहां तक कि जब हाज़िर हो जाएंगे तो** (हिसाब शुरू होगा और) **अल्लाह तआ़ला कहेंगे कि क्या तुम ने मेरी आयतों को पूरी तरह समझे बिना ही झुटला दिया था** (और इतना ही नहीं) **बल्कि** (याद करो इसके सिवा) **और भी क्या-क्या काम करते** (रहे जैसे पैग़म्बरों को और ईमान वालों को सताना जो झुटलाने से भी बढ़ कर है और इसी तरह दूसरे कुफ़्र के काम में लगे) **रहे**(84) **और** (अब वो वक़्त है कि) **उन पर** (अज़ाब का) **वादा पूरा हो गया** (यानी सज़ा के हक़दार हो गये) **इस वजह से कि** (दुनिया में) **उन्होंने** (बड़े-बड़े) **ज़ुल्म** (और गुनाह के काम) **किये थे सो** (चूंकि सबूत पक्का है इसलिए) **वो लोग** (मजबूरी जिताने की) **बात भी न कर सकेंगे**(85) **क्या उन्होंने नहीं देखा कि**

हम ने रात बनाई ताकि लोग उसमें आराम करें (और यह आराम मौत की तरह है) **और दिन बनाया जिसमें देखें भाले** (और यह जागना मौत के बाद ज़िन्दगी जैसा है), **बेशक इस** (रोज़ाना सोने -जागने) **में** (क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होने पर) **बड़ी दलीलें हैं उन** (ही) **लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं(86) और जिस दिन सूर में** (पहली) **फूंक मारी जाएगी तो जितने आसमान और ज़मीन में** (रहने वाले फ़रिशते व इन्सान) **हैं सब घबरा जाएंगे** (और फिर मर जाएंगे और जो मर चुके हैं उनकी रूहें बेहोश हो जाएंगी) **मगर जिस को अल्लाह चाहे** (वो इस घबराहट और मौत से बचा रहेगा), **और** (कोई भाग न सकेगा बल्कि) **सब के सब उसी के सामने दबे झुके हाज़िर रहेंगे(87) और तुम** (इस वक़्त) **पहाड़ों को ऐसी हालत में देख रहे हो जिससे** (उन की मज़बूती से) **तुम को ऐसा लगता है कि ये** (सदा यूंही जमे रहेंगे और कभी अपनी जगह से) **हिलेंगे नहीं हालांकि** (उस वक़्त उनकी यह हालत होगी कि) **वो बादलों की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे,** (और इस पर अचम्भा न होना चाहिए क्योंकि) **यह अल्लाह का काम होगा जिस ने हर चीज़ को** (ठीक-ठीक) **बना रक्खा है** (वो ही उन की हालत को बदल देगा), **यह यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है(88) जो आदमी नेकी करेगा** (यानी ईमान लाएगा) **सो** (वो ईमान लाने पर जिस सवाब का हक़दार है) **उस आदमी को उस** (नेकी के सवाब) **से बेहतर** (सवाब) **मिलेगा, और वो बड़ी घबराहट से उस दिन अमन में रहेंगे(89) और जो आदमी बुराई** (यानी कुफ़्र व शिर्क) **लाएगा तो वो लोग औंधे मुंह आग में डाल दिये जाएंगे,** (और उनसे कहा जाएगा कि) **तुम को उन्हीं कामों की सज़ा दी जा रही है जो तुम** (दुनिया में) **किया करते थे** (यह अज़ाब बे वजह नहीं)**(90)**

नोटः- नेक अमल उसी वक़्त नेक कहलाने के क़ाबिल होता है जबकि उसकी पहली शर्त ईमान मौजूद हो।

إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِي حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ۖ وَّأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾
وَأَنْ أَتْلُوَا الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿٩٢﴾ وَقُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُونَهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

आयत नं० 91 से 93

(ऐ पैग़म्बर लोगों से कह दीजिए कि) **मुझे तो ये ही हुक्म मिला है कि मैं इस शहर**

(मक्का) **के** (सच्चे) **मालिक की इबादत किया करूं जिसने इस** (शहर) **को इ़ज़्ज़त बख़्शी है** (मतलब यह कि इबादत में किसी को साझी न करूं) **और** (उसकी इबादत क्यों न की जाए जबकि) **सब चीज़ों का मालिक वो ही है, और मुझ को यह** (भी) **हुक्म हुआ कि मैं** (अक़ीदों और सब कामों में) **ताबेदार रहूं** (यह तो तौहीद का हुक्म हुआ)(91) **और** (मुझको) **यह** (भी हुक्म मिला है) **कि मैं** (तुम को) **क़ुरआन पढ़-पढ़ कर सुनाऊं** (यानी अल्लाह के हुक्मों को पहुचाऊं जो पैग़म्बरों की ज़िम्मेदारी है) **सो** (मेरे हुक्म पहुंचाने के बाद) **जो आदमी राह पर आएगा तो अपने ही फ़ाइदे के लिए राह पर आएगा** (यानी उसको अज़ाब से रिहाई और जन्नत की अनमिट नेमतें मिलेंगी) **और** (मैं उससे कोई दुनिया का नफ़ा नहीं चाहता तो) **जो आदमी गुमराह रहेगा तो आप कह दीजिए कि** (मेरा कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **मैं तो सिर्फ़ डराने वाले** (यानी हुक्म सुनाने वाले) **पैग़म्बरों में से हूं**(92) **और आप** (यह भी) **कह दीजिए कि सब ख़ूबियां ख़ालिस अल्लाह के लिए साबित हैं वो मुझ को जल्दी ही अपनी निशानियां** (क़ियामत की) **दिखा देगा सो तुम** (उस वक़्त) **उन को पहचानोगे** (जब कि पहचानने से कोई फ़ाइदा न होगा), **और** (अपने बुरे कामों की सज़ा भी भुगतना पड़ेगी क्योंकि) **आप का रब उन कामों से बेख़बर नहीं जो तुम सब लोग कर रहे हो**(93)

28-सूरत-क़सस

इस मक्की सूरत में '88' आयतें और '9' रूकू हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

طٰسٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢ نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَ فِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٣ اِنَّ
فِرْعَوْنَ عَلَا فِى الْاَرْضِ وَ جَعَلَ اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَ يَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٤ وَ نُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِى الْاَرْضِ وَ نَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّ نَجْعَلَهُمُ
الْوٰرِثِيْنَ ۝٥ وَ نُمَكِّنَ لَهُمْ فِى الْاَرْضِ وَ نُرِىَ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ جُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝٦ وَ
اَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِ ۚ فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِى الْيَمِّ وَ لَا تَخَافِىْ وَ لَا تَحْزَنِىْ ۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ
اِلَيْكِ وَ جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧ فَالْتَقَطَهٗۤ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّ حَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ
جُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ ۝٨ وَ قَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّىْ وَ لَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ
نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩ وَ اَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْ لَاۤ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى
قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠ وَ قَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ۫ فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١ وَ
حَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَ هُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝١٢
فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَ لَا تَحْزَنَ وَ لِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣

आयत नं० 01 से 13

तासीम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **ये आयतें** (जो आप पर वही की जाती हैं हुक्मों को) **साफ़-साफ़ बयान करने वाली किताब** (यानी कुरआन) **की** (आयतें) **हैं**(02) (जिनमें इस जगह) **हम आप को मूसा** (अलैहिस्सलाम) **और फ़िरऔन का कुछ क़िस्सा ठीक-ठीक पढ़ कर** (यानी उतार कर) **सुनाते हैं उन लोगों के** (नफ़े के) **लिए जो कि ईमान रखते हैं**(03) **फ़िरऔन** (मिस्र की) **ज़मीन में बहुत चढ़ गया था और उसने वहां के रहने वालों को**

अलग-अलग गिरोह में बान्ट रक्खा था (इस तरह कि अपनी क़ौम के लोगों को इज़्ज़तदार बना रक्खा था और बनी इस्राईल को दबा रक्खा था) **कि उनमें से एक गिरोह** (यानी बनी इस्राईल) **का ज़ोर घटा रक्खा था** (इस तरह से कि) **उन के बेटों को** (जो नये पैदा होते थे जल्लदों के हाथों) **ज़बह कराता था और उनकी औरतों** (यानी लड़कियों) **को ज़िन्दा रहने देता** (था ताकि उन से ख़िदमत ली जाए और उन से ख़तरा भी न) **था, बेशक वो बड़ा फ़सादी था(04)** (बस फ़िरऔन तो यह सोचता था) **और हम यह चाहते थे कि जिन लोगों का** (मिस्र की) **ज़मीन में ज़ोर घटाया जा रहा था हम उन पर** (दुनिया व दीन का) **अहसान करें और** (वो अहसान यह कि) **उन को** (दीन में) **इमाम बनाएं और** (दुनिया में) **उन को** (उस मुल्क का) **मालिक बनाएं(05) और ज़मीन में उन को हुकूमत दें और फ़िरऔन और हामान और उनके साथियों को उन** (बनी इस्राईल) **की तरफ़ से वो** (नागवार) **बातें दिखाएं जिन से वो बचाव कर रहे थे** (यानी क़ौम को और हुकूमत को बचाना, क्योंकि फ़िरऔन को एक ख़्वाब के बारे में किसी नजूमी (ज्योतिषी) ने कह दिया था कि बनी इस्राईल में एक ऐसा लड़का पैदा होगा जो तुम्हारी हुकूमत ख़त्म कर देगा इसलिए उसने बनी इस्राईल के लड़कों को क़त्ल करने का हुक्म दिया)**(06) और** (जब मूसा अलैहिस्सलाम उसी ज़माने में पैदा हुए तो) **हमने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की मां को इल्हाम किया** (यानी दिल में बात डाली) **कि** (जब तक इन को छुपाया जा सके) **तुम इनको दूध पिलाओ फिर जब तुम को इन के बारे में** (जासूसों के ख़बर होने का) **ख़तरा हो तो** (बेखटक) **इन को** (सन्दूक़ में रख कर) **दरिया में डाल देना और न तो** (डूबने का) **खटका रखना और न** (जुदाई पर) **ग़म करना** (क्योंकि) **हम उन को फिर तुम्हारे ही पास वापस पहुंचा देंगे और** (अपने वक़्त पर) **उन को पैग़म्बर बनाएंगे(07)** (बस मां ने ऐसा ही किया जब सन्दूक़ किनारे लगा) **तो फ़िरऔन के लोगों ने मूसा** (अलैहिस्सलाम को यानी सन्दूक़) **को उठा लिया ताकि वो उन उन लोगों के दुशमनी और ग़म का सामान बनें, बेशक फ़िरऔन और हामान और उन के साथी** (इस बारे में) **बहुत चूके** (कि अपने दुशमन को अपने घर में पाला)**(08) और** (जब वो सन्दूक़ से निकाल कर फ़िरऔन के सामने लाए गये तो) **फ़िरऔन की बीवी** (हज़रत आसिया) **ने** (फ़िरऔन से) **कहा कि यह** (बच्चा) **मेरी और आप की आंखों की ठन्डक है** (यानी इसको देख कर जी ख़ुश हुआ करेगा, तो) **इसको क़त्ल मत करो अजब नहीं कि** (बड़ा होकर) **हम को कुछ फ़ाइदा पहुंचा दे या हम उस को** (अपना) **बेटा ही बनालें और उन लोगों को** (अन्जाम की) **ख़बर न थी** (कि यह वो ही बच्चा है जिसके हाथों फिरऔन की हुकूमत बर्बाद होगी)**(09) और** (उधर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की मां का दिल बेचैन था,**

(और बेचैनी भी ऐसी कि) **क़रीब था कि वो सारा राज़ खोल देतीं अगर हम ने उन के दिल को संभाला न होता कि वो** (हमारे वादे पर) **यक़ीन किये** (बैठी) **रहें**(10) **उन्होंने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की बहन** (यानी अपनी बेटी) **से कहा ज़रा मूसा का पता तो लगा सो** (वो चलीं और वहां पहुंची और) **उन्होंने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को दूर से देखा और उन लोगों को यह ख़बर न थी** (कि ये उनकी बहन हैं और इस तलाश में आई हैं)(11) **और हम ने पहले ही से** (यानी जब से सन्दूक़ से निकले थे) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **पर दूध पिलाने वालियों की बन्दिश कर रक्खी थी** (यानी किसी का दूध न लेते थे) **सो वो** (इस हाल को देख कर मौक़ा पाकर) **कहने लगीं क्या मैं तुम लोगों को किसी ऐसे घराने का पता बताऊं जो तुम्हारे लिए इस बच्चे को पालें और वो** (अपनी आदत के मुवाफ़िक़ दिल से) **इस का भला चाहने वाले हों**(12) **बस** (उन लोगों ने ऐसे वक़्त में कि दूध पिलाने की मुश्किल पड़ रही थी इस राय को ग़नीमत समझा बस इस तरह मूसा अलैहिस्सलाम उन की मां की गोद में दिये गये जाते ही दूध पीना शुरू कर दिया और उन लोगों की इजाज़त से चैन से अपने घर ले आईं और कभी-कभी जाकर उनको दिखा आतीं इस तरह) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम को अपने वादे के मुवाफ़िक़) **उन की मां के पास वापस पहुंचा दिया ताकि** (अपनी औलाद को देख कर) **उनकी आंखें ठन्डी हों और ताकि** (जुदाई के) **ग़म में न रहें और ताकि इस बात को** (और ज़्यादा यक़ीन के साथ) **जान लें कि अल्लाह तआला का वादा सच्चा** (होता) **है लेकिन** (अफ़सोस की बात है कि) **अक्सर लोग** (यानी काफ़िर इसका) **यक़ीन नहीं रखते**(13)।

नोटः- बाज़ रिवायत में है कि एक बार जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या आप को आपका वतन जिसमें आप पैदा हुए याद आता है तो आपने फ़रमाया कि हां ज़रूर याद आता है इस पर जिब्रील अमीन ने क़ुरआन की यह सूरत सुनाई जिसके आख़ीर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस की ख़ुशख़बरी दी है कि अन्जामकार मक्का फ़तह हो कर आपके क़ब्ज़े में आए।

وَ لَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ اسْتَوٰۤى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّ عِلْمًا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤ وَ دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ
غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۗ هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَ هٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِىْ مِنْ
شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِىْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۗ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ
مُّبِيْنٌ ۝١٥ قَالَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝١٦ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنْعَمْتَ

عَلَیَّ فَلَنْ اَکُوْنَ ظَهِیْرًا لِّلْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۷﴾ فَاَصْبَحَ فِی الْمَدِیْنَةِ خَآىِٕفًا یَّتَرَقَّبُ فَاِذَا الَّذِی اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ
یَسْتَصْرِخُهٗ ؕ قَالَ لَهٗ مُوْسٰۤی اِنَّكَ لَغَوِیٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۸﴾ فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ یَّبْطِشَ بِالَّذِیْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ
یٰمُوْسٰۤی اَتُرِیْدُ اَنْ تَقْتُلَنِیْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْاَمْسِ ۖۗ اِنْ تُرِیْدُ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِی الْاَرْضِ وَ مَا
تُرِیْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِیْنَ ﴿۱۹﴾ وَ جَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِیْنَةِ یَسْعٰی ۫ قَالَ یٰمُوْسٰۤی اِنَّ الْمَلَاَ
یَاْتَمِرُوْنَ بِكَ لِیَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّیْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۰﴾ فَخَرَجَ مِنْهَا خَآىِٕفًا یَّتَرَقَّبُ ۫ قَالَ رَبِّ نَجِّنِیْ مِنَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۱﴾ ع

आयत नं० 14 से 21

और जब (मूसा परवरिश पाकर) **अपनी भरी जवानी** (की उम्र) **को पहुंचे और** (ताक़त व समझदारी में) **कमाल को पहुंच गये तो हम ने उन को हिकमत और इल्म दिया** (यानी पैग़म्बरी से पहले ही ऐसी समझ दी कि अच्छाई व बुराई को जान लें), **और हम नेक लोगों को यूंही बदला दिया करते हैं** (यानी नेक कामों से इल्म में तरक़्क़ी होती है और इसमें यह भी इशारा है कि फ़िरऔन के तरीक़े को मूसा अलैहिस्सलाम ने कभी नहीं अपनाया)(14) **और** (एक बार ऐसा हुआ कि) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **शहर में** (कहीं बाहर से) **ऐसे वक़्त पहुंचे कि वहां के** (अक्सर) **रहने वाले बेख़बर** (सो रहे) **थे तो उन्होंने वहां दो आदमियों को लड़ते देखा, एक तो उनकी बिरादरी** (यानी बनी इस्राईल) **में का था और दूसरा उन की दुशमन क़ौम** (यानी फ़िरऔनियों) **में से था** (दोनो किसी बात पर उलझ रहे थे और ज़्यादती उस फ़िरऔनी की थी) **तो वो जो उन की बिरादरी का था उसने** (जो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम को देखा तो उन) **से उसके मुक़ाबिले में जो कि उन के दुशमनों में से था मदद चाही** (मूसा अलैहिस्सलाम ने पहले उस को समझाया जब इस पर भी वो बाज़ न आया) **तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (ज़ुल्म से रोकने के लिए) **उस को** (एक) **घूंसा मारा तो उसका काम ही तमाम कर दिया** (यानी अचानक वो मर ही गया), **मूसा** (अलैहिस्सलाम इस उम्मीद के ख़िलाफ़ नतीजे से बहुत पछताए और) **कहने लगे कि यह तो शैतानी हरकत हो गई, बेशक शैतान** (भी इन्सान का) **खुला दुशमन है किसी ग़लती में डाल देता है**(15) (और पछताकर अल्लाह तआ़ला से दुआ करते हुए) **कहने लगे कि या रब मेरे मुझ से ग़लती हो गई आप मुआफ़ कर दीजिए सो अल्लाह तआ़ला ने मुआफ़ कर दिया, बेशक वो बख़्शने वाला महरबान है**(16) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (ग़लती से तौबा के साथ आगे के बारे में यह भी) **कहा कि या रब मेरे चूंकि**

आने मुझ पर (बड़े-बड़े) **इनआम किये हैं तो कभी मैं मुजरिमों की मदद न करूंगा**(17) **फिर मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को डर और घबराहट की हालत में शहर में सुबह हुई कि अचानक** (देखते क्या हैं कि) **वो ही आदमी जिसने कल उन से मदद चाही थी वो फिर उन को** (मदद के लिए) **पुकार रहा है** (कि किसी और से उलझ पड़ा था), **मूसा** (अलैहिस्सलाम यह देख कर और कल की हालत याद करके उस पर नाराज़ हुए और) **उससे कहने लगे बेशक तू खुला बेराह** (आदमी है रोज़ लोगों से लड़ा करता) **है**(18) **फिर** (यह देख कर कि ज़्यादती फ़िरऔनी की है उस को रोकने के लिए) **जब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने उस पर हाथ बढ़ाया जो दोनों का दुशमन था** (यानी फिरऔनी था तो इस्राईली समझा कि मुझ पर पकड़ है इसलिए घबरा कर) **वो** (इस्राइली) **कहने लगा ऐ मूसा क्या** (आज) **मुझ को क़त्ल करना चाहते हो जैसा कि कल एक आदमी को क़त्ल कर चुके हो** (मालूम होता है कि) **बस तुम दुनिया में अपना ज़ोर बिठाना चाहते हो और सुलह** (और मिलाप) **करवाना नहीं चाहते**(19) **और** (यह बात उस फ़िरऔनी ने सुनी बात फ़िरऔन तक पहुंच गई और दरबार में मूसा अलैहिस्सलाम को क़त्ल करने की राय पास हो गई तो) **एक आदमी** (जो मूसा अलैहिस्सलाम के हमदर्द थे वो) **शहर के** (उस) **किनारे से** (जहां यह मशवरा हो रहा था मूसा अलैहिस्सलाम के पास नज़दीक की गलियों से) **दौड़ते हुए आए** (और) **कहने लगे कि ऐ मूसा दरबार वाले आप के बारे में मशवरा कर रहे हैं कि आप को क़त्ल कर दें सो आप** (यहां से) **निकल जाइये बेशक मैं आप का भला चाहने वाला हूं**(20) **बस** (यह सुनकर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **वहां से** (किसी तरफ़ को) **निकल गये डर और घबराहट की हालत में** (और चूंकि रास्ता मालूम न था दुआ करते हुए) **कहने लगे या रब मेरे मुझ को इन ज़ालिम लोगों से बचा लीजिए** (और अमन की जगह पहुंच दीजिए)(21)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि मज़लूम चाहे काफ़िर या फ़ासिक़ ही हो। उसकी मदद करना चाहिए और किसी मुजरिम ज़ालिम की मदद करना जाइज़ नहीं।

وَ لَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿۲۲﴾ وَ لَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ
اُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ۬ وَ وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَاَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى
يُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ وَ اَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ ﴿۲۳﴾ فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤى اِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ
خَيْرٍ فَقِيْرٌ ﴿۲۴﴾ فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ قَالَتْ اِنَّ اَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ اَجْرَ مَا سَقَيْتَ

لَنَا ۭ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۵﴾ قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا
يٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ۡ اِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْاَمِيْنُ ﴿۲۶﴾ قَالَ اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى ابْنَتَيَّ
هٰتَيْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَاۤ اُرِيْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَيْكَ ۭ
سَتَجِدُنِيْۤ اِنْ شَاۗءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ۭ اَيَّمَا الْاَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۭ
وَاللّٰهُ عَلٰي مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ﴿۲۸﴾

आयत नं० 22 से 28

और जब मूसा (अलैहिस्सलाम यह दुआ करके एक तरफ़ को चले तो अल्लाह की मदद से) **मदयन की तरफ़ चल दिये** (और) **कहने लगे कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझ को** (किसी अमन की जगह का) **सीधा रास्ता चला देगा** (बस ऐसा ही हुआ और मदयन जा पहुंचे)(22) **और जब मदयन के पानी** (यानी कुंवे) **पर पहुंचे तो उस पर** (बहुत से) **आदमियों का एक मजमा देखा जो** (उस कुंवे से खींच-खींच कर अपने जानवरों को) **पानी पिला रहे थे, और उन लोगों से एक तरफ़** (अलग) **दो औरतें देखीं कि वो** (अपनी बकरियां) **रोके खड़ी हैं, मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उनसे) **पूछा तुम क्या चाहती हो, वो दोनो बोलीं कि हम** (अपने जानवरों को) **उस वक़्त तक नहीं पिलाते जब तक ये चरवाहे** (जो कुंवे पर पानी पिला रहे हैं) **पानी पिला कर** (जानवरों को) **हटा कर न ले जाएं** (एक तो शर्म की वजह से दूसरे मर्दों से कमज़ोर क्या उलझें) **और** (इस हालत में हम आते भी नहीं मगर) **हमारे बाप बहुत बूढ़े हैं** (और घर पर और कोई काम करने वाला ही नहीं और काम ज़रूरी है इस मजबूरी को हम को आना पड़ता है)(23) **बस** (यह सुनकर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम को तरस आया और उन्हों)**ने उन के लिए पानी** (खींच कर उनके जानवरों को) **पिलाया** (और उनको इन्तिज़ार और पानी खींचने की तकलीफ़ से बचाया) **फिर** (वहां से) **हट कर** (एक) **साये** (की जगह) **में जा बैठे फिर** (अल्लाह तआ़ला से) **दुआ की कि या रब मेरे** (इस वक़्त) **जो नेमत भी** (थोड़ी या ज़्यादा) **आप मुझ को भेज दें मैं उस का** (सख़्त) **ज़रूरत मन्द हूं** (क्योंकि इस सफ़र में कुछ खाने पीने को न मिला था, और उधर उन लड़कियों ने घर जाकर सारा क़िस्सा अपने बाप को सुनाया उन्होंने एक लड़की को भेजा कि उनको बुला लाओ)(24) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के पास एक लड़की आई कि शर्माती हुई चलती थी** (जो कि शरीफ़ों की आदत होती है, और आकर) **कहने लगी कि मेरे अब्बा तुम को बुलाते हैं ताकि तुम को उस का**

बदला दें जो तुम ने हमारे लिए (हमारे जानवरों को) **पानी पिला दिया था,** (मूसा अलैहिस्सलाम बदला तो नहीं ले सकते थे मगर अमन की जगह की तलाश में थे इसलिए एक शरीफ़ नेक इन्सान के बुलावे पर चल दिये और लड़की से कहा तुम मेरे पीछे हो जाओ ज़बान से रास्ता बता देना यह इसलिए किया ताकि उस पर नज़र न पड़े) **तो जब उन** (बुज़ुर्ग) **के पास पहुंचे और उन से सारी बात बताई तो उन्होंने** (तसल्ली दी और) **कहा कि** (अब) **मत डरो तुम ज़ालिम लोगों से बच आए** (क्योंकि उस जगह पर फ़िरऔन की हुकूमत नहीं थी)(25) **एक लड़की ने कहा अब्बा जान** (आप को आदमी की ज़रूरत है और हम बड़ी हो गईं अब घर में रहना ही ठीक है तो) **आप इन को नौकर रख लीजिए क्योंकि अच्छा नौकर वो आदमी है जो ताक़तवर** (हो और) **अमानतदार** (भी) **हो** (और इनमें दोनों ख़ूबियां हैं जैसा कि ताक़त का उनका पानी खींचने से और अमानत का उनके बरताव से पता चला ख़ासकर रास्ते में औरत को पीछे कर देना)(26) **वो** (बुज़ुर्ग मूसा अलैहिस्सलाम से) **कहने लगे मैं चाहता हूं कि इन दो लड़कियों में से एक का तुम्हारे साथ निकाह कर दूं इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी नौकरी करो** (मतलब यह कि आठ साल की ख़िदमत निकाह का महर है), **फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो यह तुम्हारी तरफ़ से** (अहसान) **है** (यानी मेरी तरफ़ से ज़बरदस्ती नहीं) **और मैं** (इस मुआमले में) **तुम पर कोई तकलीफ़ डालना नहीं चाहता** (यानी काम लेने और वक़्त की पाबनदी में आसानी बरतूंगा, और) **तुम मुझ को इन्शाअल्लाह तआ़ला भलाई करने वाला पाओगे**(27) **मूसा** (अलैहिस्सलाम राज़ी हो गये और) **कहने लगे कि** (बस तो) **यह बात मेरे और आप के बीच** (पक्की) **हो चुकी, मैं इन दोनो मुद्दतों में से जिस** (मुद्दत) **को भी पूरा करदूं मुझ पर कोई ज़बरदस्ती न होगी और हम जो** (मुआमले) **की बात चीत कर रहे हैं अल्लाह उसका गवाह** (काफ़ी) **है** (उसको हाज़िर नाज़िर समझ कर वादा पूरा करना चाहिए)(28)।

नोटः- यहां यह मालूम हुआ कि लड़कियों के वली को चाहिए कि कोई नेक मर्द मिले तो इस का इन्तिज़ार न करे कि उसी की तरफ़ से निकाह की बात शुरू हो बल्कि ख़ुद भी पेश कर देना पैग़म्बर की सुन्नत है।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَ سَارَ بِاَهْلِهٖۤ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّیْۤ
اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِیَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَیْمَنِ فِی

الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ يّٰمُوْسٰى اِنِّيْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٠﴾ وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ
كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰٓى اَقْبِلْ وَ لَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ اُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ
جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۫ وَّ اضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَ مَلَا۟ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿٣٣﴾ وَ اَخِيْ
هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَاَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِيْٓ ۫ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿٣٤﴾ قَالَ سَنَشُدُّ
عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَ نَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚ بِاٰيٰتِنَآ ۚ اَنْتُمَا وَ مَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ﴿٣٥﴾

आयत नं० 29 से 35

बस जब मूसा (अलैहिस्सलाम) **उस मुद्दत को पूरा कर चुके** (और शुऐब अलैहिस्सलाम की इजाज़त से) **अपनी बीवी को लेकर** (मिस्र या शाम की तरफ़) **रवाना हुए तो** (एक रात में ऐसा हुआ कि सर्दी भी थी और रास्ता भी भूल गये उस वक़्त) **उन को तूर पहाड़ की तरफ़ एक आग** (रौशनी की सूरत में) **दिखाई दी, उन्होंने अपने घर वालों से कहा कि तुम** (यहां ही) **ठहरे रहो मैंने एक आग देखी है** (मैं वहां जाता हूं) **शायद मैं तुम्हारे पास वहां से** (रास्ते की) **कुछ ख़बर लाऊं या कोई आग का** (दहकता हुआ) **अंगारा ले आऊं ताकि तुम सेंक लो(29) तो वो जब उस आग के पास पहुंचे तो उन को उस मैदान के दाहिनी तरफ़ से उस मुबारक जगह में एक पेड़ से आवाज़ आई ऐ मूसा मैं अल्लाह हूं सारे जहानों का रब(30) और यह** (भी आवाज़ आई) **कि तुम अपना असा** (यानी लाठी नीचे) **डाल दो, बस** (उन्होंने डाल दिया और वो सांप बनकर चलने लगा तो) **उन्होंने जब उस को** (ऐसा) **लहराता हुआ देखा जैसा सांप हो तो पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड कर भी न देखा,** (उन से कहा गया कि) **ऐ मूसा आगे आओ डरो मत तुम** (हर तरह) **अमन में हो(31)** (और यह कोई डर की बात नहीं बल्कि तुम्हारा मोजिज़ा है और दूसरा मोजिज़ा यह दिया जाता है कि) **तुम अपना हाथ गरीबान के अन्दर डालो** (और फिर निकालो) **वो बिना किसी बीमारी के बहुत चमकदार होकर निकलेगा और डर** (दूर करने) **के वास्ते अपना** (वो) **हाथ** (फिर) **अपने** (गरीबान और बग़ल) **से** (पहले की तरह) **मिला लेना** (ताकि वो फिर असली हालत पर हो जाए) **सो यह** (तुम्हारी पैग़म्बरी की) **दो सनदें** (और दलीलें) **हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास जाने के वास्ते** (जिसका तुम को हुक्म किया जाता है, क्योंकि) **वो बड़े नाफ़रमान लोग हैं(32) उन्होंने कहा कि या रब मेरे** (मैं

जाने के लिए हाज़िर हूं मगर आप की ख़ास मदद की ज़रूरत है क्योंकि) **मैंने उन में से एक आदमी का ख़ून कर दिया था सो मुझ को ख़तरा है कि** (कहीं पहले ही) **वो लोग मुझ को क़त्ल कर दें** (कि आप का हुक्म भी न पहुंचा सकूं)(33) **और** (दूसरी बात यह है कि मेरी ज़बान भी ज़्यादा साफ़ और रवां नहीं है और) **मेरे भाई हारून की ज़बान मुझ से ज़्यादा साफ़ है तो उन को भी मेरा मददगार बनाकर मेरे साथ पैग़म्बरी दे दीजिए कि** (वो मेरी बात की हिमायत और) **तस्दीक़** (पूरी तरह) **करेंगे** (क्योंकि) **मुझ को डर है कि वो लोग** (फ़िरऔन और उसके दरबारी) **मुझ को झुटलाएंगे** (तो उस वक़्त बहस करने के लिए ऐसे आदमी की ज़रूरत होती है जिस की ज़बान रवां होती है)(34) **कहा** (अल्लाह तआला ने) **कि** (बेहतर है) **हम अभी तुम्हारे हाथ मज़बूत किये देते हैं और हम तुम दोनो को ऐसा** (रौब और) **दबदबा देते हैं जिससे उन लोगों की तुम तक पहुंच न होगी** (बस) **हमारे मोजिज़े लेकर जाओ तुम दोनो और जो तुम्हारे साथी होंगे** (उन लोगों पर) **हावी** (और कामयाब) **रहेंगे**(35)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि वाज़ो नसीहत में बात को साफ़ और अच्छे तरीक़े से बयान करना भी पसन्दीदा है जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हारून की तारीफ़ में फ़रमाया।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۶﴾ وَ
قَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَاَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ
فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَ اِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۳۸﴾ وَ اسْتَكْبَرَ هُوَ وَ جُنُوْدُهٗ فِي الْاَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۹﴾ فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۴۰﴾ وَ جَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿۴۱﴾ وَ اَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ
الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿۴۲﴾ ع

आयत नं० 36 से 42

बस जब उन लोगों के पास मूसा (अलैहिस्सलाम) **हमारी खुली निशानियां लेकर पहुंचे तो**

उन लोगों ने (मोजिज़े देख कर) कहा कि यह तो सिर्फ़ एक जादू है कि (यूं ही अल्लाह तआ़ला पर) बात घड़ली है (कि ये उसकी तरफ़ से पैग़म्बरी की दलील हैं) और हम ने ऐसी बात कभी नहीं सुनी कि हमारे बाप दादों के वक़्त में पहले हुई हो(36) और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने (इसके जवाब में) कहा कि मेरा रब उस आदमी को अच्छी तरह जानता है जो सही दीन उसके पास से लेकर आया है और जिस का अन्जाम (यानी ख़ातमा) इस दुनिया से अच्छा होने वाला है, (और) बेशक ज़ालिम लोग (जो कि हिदायत और सही दीन पर न हों) कभी कामयाब न होंगे (क्योंकि उनका अन्जाम अच्छा न होगा)(37) और (मूसा अलैहिस्सलाम की दलीलें देख कर और सुन कर) फ़िरऔन (को ख़तरा हुआ कि कहीं हमारे मानने वाले इनकी तरफ़ न झुक जाएं तो लोगों को जमा करके) कहने लगा ऐ दरबार वालो मुझ को तो तुम्हारा अपने सिवा कोई ख़ुदा मालूम नहीं होता (फिर बात बनाकर अपने वज़ीर से कहा कि) ऐ हामान तुम हमारे लिए मिट्टी (की ईंटें) आग में पकवा कर (उनसे) मेरे वास्ते एक ऊंची इमारत बनवाओ ताकि (मैं उस पर चढ़ कर) मूसा के अल्लाह को देखूं और मैं तो (इस दावे में कि कोई और ख़ुदा है) मूसा को झूटा ही समझता हूं(38) और फ़िरऔन और उसके साथियों ने नाहक़ दुनिया में सर उठा रक्खा था और यह समझ रहे थे कि उन को हमारे पास लौट कर आना नहीं है(39) तो हम ने (इस घमन्ड की सज़ा में) उस को और उसके साथियों को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया (यानी डुबा दिया), तो देखिये ज़ालिमों का अन्जाम कैसा हुआ(40) और हमने उन लोगों को ऐसा सरदार बनाया था जो (लोगों को) दोज़ख़ की तरफ़ बुलाते (यानी कुफ़्र के काम करने को कहते) रहे और (इसी लिए) क़ियामत के दिन (ऐसे मजबूर रह जाएंगे कि) उन का कोई साथ न देगा(41) और (ये लोग दोनो जहान में घाटे में रहे बस) दुनिया में भी हमने उनके पीछे लानत लगा दी और क़ियामत के दिन भी बदहाल लोगों में से होंगे(42)

नोटः- हामान ने फ़िरऔन के हुक्म पर इतना ऊंचा महल तैयार कराया कि उस ज़माने में उससे ऊंची कोई इमारत न थी जिसमें पचास हज़ार मिस्त्री काम कर रहे थे जब वह तैयारी पूरी हो गई तो अल्लाह तआ़ला ने जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया उन्होंने एक चोट में इस महल के तीन टुकड़े करके गिरा दिया जिसमें फ़िरऔनी फ़ौज के हज़ारों आदमी दब कर मर गये।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَاۤ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۳﴾ وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَ مَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿۴۴﴾ وَ لٰكِنَّاۤ
اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَ مَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْۤ اَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَ لٰكِنَّا كُنَّا
مُرْسِلِيْنَ ﴿۴۵﴾ وَ مَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا وَ لٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّاۤ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ لَوْ لَاۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْ لَاۤ
اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَ نَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۷﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْ لَاۤ
اُوْتِيَ مِثْلَ مَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَ لَمْ يَكْفُرُوْا بِمَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا ٙ وَ قَالُوْۤا اِنَّا بِكُلٍّ
كٰفِرُوْنَ ﴿۴۸﴾ قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ اَهْدٰى مِنْهُمَاۤ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۹﴾ فَاِنْ لَّمْ
يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ؕ وَ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللّٰهِ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۰﴾ وَ لَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۱﴾

आयत नं० 43 से 51

और (लोगों के सुधार के लिए पैग़म्बरी का यह सिलसिला सदा से चला आया है जैसा कि) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को** (जिन का क़िस्सा अभी पढ़ चुके हो) **पहली उम्मतों** (यानी क़ौमे नूह व आद व समूद) **के हलाक होने के बाद** (जब कि लोग हिदायत के सख़्त ज़रूरत मन्द थे) **किताब** (तौरेत) **दी थी जो** (उन) **लोगों** (यानी बनी इस्राईल) **के लिए सीख और हिदायत और रहमत थी ताकि वो** (उससे) **नसीहत पाएं(43) और** (फिर हम ने आप को पैग़म्बर बनाया जिस के सबूतों में एक मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से की ख़बर देना है कि) **आप** (तूर के) **पच्छम** (किनारे) **की तरफ़ मौजूद न थे जब कि हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म दिये थे** (यानी तौरेत दी थी) **और** (वहां मौजूद तो क्या होते) **आप** (तो) **उन लोगों में से** (भी) **न थे जो** (उस ज़माने में) **मौजूद थे** (बस ये बातें आप को वही से मालूम हुईं)**(44) बल्कि** (बात यह है कि) **हम ने** (मूसा अलैहिस्सलाम के बाद) **बहुत सी नस्लें पैदा कीं फिर उन पर बड़ा ज़माना बीत गया** (और वो नसीहतें लोग भुला बैठे और फिर हिदायत की ज़रूरत हुई), **और आप मदयन वालों में भी मौजूद न थे कि आप** (वहां के हालात देख कर उनके बारे में) **हमारी आयतें** (अपने ज़माने के) **इन लोगों को पढ़-पढ़ कर सुना रहे हों बल्कि हम ही** (आप को) **रसूल बनाने वाले हैं** (कि रसूल बनाकर ये

क़िस्से वही से बता दिये)(45) **और** (इसी तरह) **आप तूर के किनारे पर उस वक़्त भी मौजूद न थे जब हमने** (मूसा अलैहिस्सलाम को पैग़म्बरी देने के वक़्त) **पुकारा था बल्कि** (इस का पता भी इस तरह चला कि) **आप अपने रब की रहमत से नबी बनाए गये ताकि आप ऐसे लोगों को डराएं जिन के पास आप से पहले कोई डराने वाला** (नबी) **नहीं आया शायद वो नसीहत मान लें(46) और** (हम रसूल न भी भेजते) **अगर यह बात न होती कि उन पर उनके** (बुरे) **कामों की वजह से कोई मुसीबत** (दुनिया या आख़रत में) **आती तो यह कहने लगते कि या रब हमारे आप ने हमारे पास कोई पैग़म्बर क्यों नहीं भेजा ताकि हम आप के हुक्मों पर चलते और** (उन हुक्मों और रसूल पर) **ईमान लाने वालों में से होते(47) बस** (चाहिए तो यह था कि रसूल के आने को ग़नीमत समझते और ईमान लाते लेकिन उन की यह हालत हुई कि) **जब हमारी तरफ़ से उन लोगों के पास सच्चा दीन पहुंचा तो** (उसमें शुबह निकालने के लिए यह) **कहने लगे कि इन को ऐसी किताब क्यों न मिली जैसी मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को मिली थी** (यानी क़ुरआन तौरेत की तरह एक बार क्यों न उतरा, आगे जवाब है कि) **जो किताब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को मिली थी इससे पहले क्या उस का इनकार नहीं किया** (जैसा कि मुशरिक मूसा अलैहिस्सलाम और तौरेत को भी न मानते थे) **ये लोग तो** (क़ुरआन और तौरेत दोनो के बारे में) **यह कहते हैं कि दोनो जादू हैं जो एक दूसरे के मुवाफ़िक़ हैं और यह भी कहते हैं कि हम तो दोनो में से किसी को नहीं मानते(48)** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप कह दीजिए कि अच्छा तो** (तौरेत और क़ुरआन के सिवा) **तुम कोई और किताब अल्लाह के पास से ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनो से बेहतर हो मैं उसी पर चलने लगूंगा अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो(49) फिर** (भी) **अगर ये लोग आप का** (यह) **कहना न कर सकें** (और कर भी नहीं सकते और आप की बात भी न मानें) **तो आप समझ लीजिए कि ये लोग अपनी मनमर्ज़ी** (और नफ़्स के कहने) **पर चलते हैं, और ऐसे आदमी से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो** (अपनी) **मनमर्ज़ी पर चलता हो बिना इसके कि अल्लाह की तरफ़ से कोई दलील** (उसके पास) **हो,** (और) **अललाह तआ़ला ऐसे ज़ालिम लोगों को** (जो हक़ जानने के बाद भी गुमराही से बाज़ न आएं) **हिदायत नहीं किया करता** (जिसकी वजह ख़ुद उन का गुमराह रहने का इरादा है)(50) **और हम ने इस कलाम** (यानी क़ुरआन) **को इन लोगों के लिए थोड़ा-थोड़ा भेजा ताकि ये लोग** (बार-बार ताज़ा सुनने से) **नसीहत मानें** (यानी हम तो एक बार भेजने की क़ुदरत भी रखते हैं मगर उन्हीं के फ़ाइदे के लिए थोड़ा-थोड़ा भेजते हैं फिर भी अन्धेर है कि अपनी ही भलाई की मुख़ालफ़त करते हैं)(51)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि तबलीग़ का अहम पहलू यह भी था कि वो हक़ बात को लगातार कहते रहते और पहुंचाते रहते थे। लोगों का इनकार व झुटलाना उनके अपने काम और अपनी लगन में कोई रूकावट पैदा नहीं करता था। बल्कि अगर हक़ बात को एक बार न माना गया तो दूसरी बार वो भी न माना गया तो तीसरी चौथी बार। बार-बार पेश करते ही रहते। अपनी कोशिश बराबर जारी रहती। आज भी दावत व तबलीग़ के काम करने वालों को इस से सबक़ लेना चाहिए।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِن قَبْلِهِ هُم بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا
إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُم مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

आयत नं० 52 से 56

(और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी उन ख़बरों से भी साबित है जिन की उन आलिमों ने तस्दीक़ की है जिन को तौरेत व इन्जील की उन ख़बरों का इल्म है जैसा कि) **जिन लोगों को हम ने क़ुरआन से पहले** (आसमानी) **किताबें दी हैं** (उनमें जो इन्साफ़ वाले हैं) **वो इस** (क़ुरआन) **पर ईमान लाते हैं(52) और जब क़ुरआन उन के सामने पढ़ा जाता है तो कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए बेशक यह हक़ है** (जो) **हमारे रब की तरफ़ से** (उतरा है और) **हम तो इस** (के आने) **से पहले भी** (अपनी किताबों की ख़ुशख़बरी की वजह से इसे) **मानते थे** (और उन लोगों की तरह नहीं जो इसके आने से पहले तो इसकी तस्दीक़ और इन्तिज़ार करते थे मगर जब क़ुरआन आया तो इस का इनकार करने लगे)(53) **ऐसे लोगों को उनकी** (ईमान पर) **मज़बूती की वजह से दोहरा सवाब मिलेगा** (क्योंकि वो पहली किताब पर ईमान रखने के साथ भी इस पर ईमान रखते थे और इसके आजाने के बाद भी इस पर जमे रहे) **और वो लोग नेकी** (और सहार) **से बुराई** (और तकलीफ़) **को दूर करते हैं और हम ने जो कुछ उन को दिया है उस में से** (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च करते हैं(54) और जब किसी से** (अपने बारे में) **कोई बेहूदा बात सुनते हैं** (जो ज़बानी तकलीफ़ है) **तो उस को** (भी) **टाल जाते हैं और कह देते हैं कि** (हम कुछ

जवाब नहीं देते) **हमारा किया हमारे सामने आएगा और तुम्हारा किया तुम्हारे सामने,** (भाई) **हम तो तुम को सलाम करते हैं** (हम को झगड़े से मुआफ़ रक्खो) **हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते**(55) (ऐ पैग़म्बर) **आप जिसको चाहें सही रास्ते पर नहीं ला सकते बल्कि अल्लाह जिस को चाहता है सही रास्ते पर पहुंचा देता है, और** (सही राह पर लाने की क़ुदरत तो किसी को क्या होती अल्लाह के सिवा किसी को इसका पता तक भी नहीं कि कौन सही राह पाने वाला है, बल्कि) **सही राह पहुंचने वालों को वो ही जानता है**(56)

नोटः- हदीस की किताब मुस्लिम शरीफ़ में है कि ऊपर वाली यह आयत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबुतालिब के बारे में उतरी है कि आप की बड़ी तमन्ना यह थी कि वो किसी तरह ईमान ले आएं इस पर हुज़ूर को यह बता दिया गया कि किसी को मोमिन बना देना आप के बस में नहीं।

तफ़सीर रूहुल मआनी में है कि अबुतालिब के ईमान व कुफ़्र के बारे में बेज़रूरत बात और बहस करने और उन को बुरा कहने से बचना चाहिए कि इससे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल को ठेस पहुंचने का डर है।

وَ قَالُوْۤا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ؕ اَوَ لَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰۤى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ
شَیْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۵۷ وَ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ
مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ؕ وَ كُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝۵۸ وَ مَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى
يَبْعَثَ فِیْۤ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۚ وَ مَا كُنَّا مُهْلِكِی الْقُرٰۤى اِلَّا وَ اَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝۵۹ وَ مَاۤ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ
شَیْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتُهَا ۚ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝۶۰ ع

आयत नं० 57 से 60

और (काफ़िर लोग ईमान न लाने के बारे में जो बातें बनाते हैं उन में एक यह कि) **ये लोग कहते हैं कि अगर आप के साथ होकर** (इस दीन की) **राह पर चलने लगें तो हम अपनी ज़मीन से मार कर निकाल दिये जाएं** (कि घर बार भी छूटे और रोज़गार की परीशानी अलग हो, तो) **क्या हम ने उन को अमन वाले** (घर यानी) **हरम में जगह नहीं दी जहां हर क़िस्म के**

फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से (यानी हमारी क़ुदरत और महरबानी से) **खाने को मिलते हैं लेकिन उनमें अक्सर लोग** (इसको) **नहीं जानते** (यानी इसका शुक्र अदा नहीं करते)(57) **और** (एक वजह उन के ईमान न लाने की यह है कि ये अपनी ऐश पर इतराते हैं लेकिन यह भी बेवक़ूफ़ी है क्योंकि) **हम बहुत सी ऐसी बस्तियां बर्बाद कर चुके हैं जो अपने ऐश के सामान पर इतराते थे, सो** (देख लो) **ये उनके घर** (तुम्हारी आंखों के सामने पड़े) **हैं कि उनके बाद आबाद ही न हुए मगर थोड़ी देर के लिए** (कि कोई मुसाफ़िर राहगीर उधर से गुज़रते हुए थोड़ी देर सस्ताने को या तमाशा देखने को बैठ जाए)**, और आख़िर कार** (उनके उन सब सामानों के) **हम ही मालिक रहे** (कोई नाम को भी वारिस न हुआ)(58) **और** (एक शुबह उन को यह होता है कि अगर वो लोग कुफ़्र की वजह से हलाक किये गये तो हम मुद्दत से कुफ़्र करते आ रहे हैं हम को क्यों न हलाक किया तो उस का जवाब यह है कि) **आप का रब बस्तियों को** (पहली ही बार में) **हलाक नहीं किया करता जब तक कि उन की बड़ी बस्ती में किसी पैग़म्बर को न भेज ले जो उन को हमारी आयतें पढ़ कर सुनाए, और** (पैग़म्बरों को भेजने के बाद भी फ़ौरन) **हम उन बस्तियों को हलाक नहीं करते मगर उसी हालत में कि वहां के रहने वाले बहुत ही शरारत करने लगें** (यानी बार-बार समझाने पर भी बाज़ न आएं)(59) **और** (एक वजह ईमान न लाने की यह है कि दुनिया को नक़्द समझते हैं इसलिए इस पर दिलचस्पी है और आख़रत को उधार समझते हैं तो उससे दिलचस्पी नहीं तो जान लो कि) **जो कुछ तुम को दिया गया है वो सिर्फ़** (कुछ दिनों की) **दुनिया की ज़िन्दगी के बरतने के लिए है यहीं की बहार है** (कि उम्र के ख़ातमे के साथ उस का भी ख़ातमा हो जाएगा) **और जो** (बदला व सवाब) **अल्लाह के यहां है वो इस से कहीं ज़्यादा बेहतर और** (सदा) **बाक़ी रहने वाला है, तो क्या तुम लोग** (इस बात को) **नहीं समझते**(60)

नोटः- इमाम शाफ़ई रह० ने फ़रमाया कि अगर कोई आदमी अपने माल व जायदाद के बारे में यह वसीयत कर जाए कि मेरा माल उस आदमी को दिया जाए जो सबसे ज़्यादा अक़्लमन्द हो तो उस माल के शरई हक़दार वो लोग होंगे जो अल्लाह की इबादत व ताबेदारी में लगे हों। क्योंकि अक़्ल का तक़ाज़ा ये ही है। और दुनियादारों में सबसे ज़्यादा अक़्ल वाला वो ही है जो दुनिया के धन्दों में ज़्यादा न खप जाए बल्कि आख़रत की फ़िक्र में लगे। ये ही मसअला किताब "दुर्रे मुख़तार" में भी है।

أَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ
الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٦١﴾ وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ أَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٦٢﴾ قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ
الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ أَغْوَيْنَا ۚ أَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّأْنَآ إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوْٓا إِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَقِيْلَ
ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ۚ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَيَوْمَ
يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦٥﴾ فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٦٦﴾ فَأَمَّا مَنْ
تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿٦٧﴾

आयत नं० 61 से 67

भला वो आदमी (यानी मोमिन) **जिस से हम ने एक अच्छा वादा कर रक्खा है फिर वो आदमी उस** (वादे की चीज़ यानी जन्नत) **को पाने वाला है क्या उस आदमी जैसा हो सकता है जिसको हम ने दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ाइदा दे रक्खा है** (यानी काफ़िर) **फिर वो क़ियामत के दिन उन लोगों में होगा जो गरिफ़्तार करके लाए जाएंगे(61) और** (वो दिन याद करो) **जिस दिन अल्लाह तआला इन काफ़िरों को पुकार कर कहेगा कि कहां हैं** (ख़ुदाई में) **मेरे वो साझी जिन को तुम** (हमारा साझी) **समझ रहे** (थे मुराद इससे शैतान हैं कि उन्हीं की ताबेदारी से शिर्क करते) **थे(62)** (ये सुन कर शैतान) **जिन पर** (लोगों को गुमराह करने की वजह से) **अल्लाह** (के अज़ाब) **का हुक्म हो चुका होगा वो बोल उठेंगे या रब हमारे बेशक ये वो ही लोग हैं जिन को हम ने बहकाया** (तो ज़रूर लेकिन) **हम ने उन को वैसा ही** (बिना ज़ोर ज़बरदस्ती) **बहकाया जैसा हम ख़ुद** (बिना ज़ोर ज़बरदस्ती) **बहके थे** (यानी जिस तरह हम अपनी मर्ज़ी से गुमराह हुए किसी ने हमें मजबूर नहीं किया इसी तरह हमने इनको मजबूर नहीं किया इन्होंने अपनी मर्ज़ी से बात मानी मतलब यह कि हम भी मुजरिम हैं मगर ये भी बरी नहीं), **हम आप के सामने इनसे ताल्लुक़ का इनकार करते हैं,** (और) **ये लोग** (असलीयत में) **हम को** (ही) **न पूजते थे** (यानी जिन के भरोसे बैठे हैं वो क़ियामत के दिन उन से अलग हो जाएंगे)**(63) और** (जब वो इस तरह मुंह फेर लेंगे तो उस वक़्त इन मुशरिकों से) **कहा जाएगा कि** (अब) **अपने उन ख़ुदाओं को बुलाओ** (जिन को अल्लाह का साझी बना रक्खा था) **बस वो** (बेचैन होकर) **उन को पुकारेंगे तो वो जवाब भी न देंगे और** (उस वक़्त) **ये लोग** (अपनी आंखों से) **अज़ाब को देख लेंगे, ऐ काश ये लोग दुनिया में सीधे रास्ते पर होते** (तो यह मुसीबत न देखते)**(64) और जिस दिन** (अल्लाह) **इन काफ़िरों से पुकार कर**

पूछेगा कि तुम ने पैग़म्बरों को क्या जवाब दिया था(65) सो उस दिन उन (के दिमाग़) **से सारी बातें गुम हो जाएंगी तो वो** (ख़ुद भी न समझ सकेंगे और) **आपस में** (एक दूसरे से) **कुछ पूछ भी न सकेंगे(66) लेकिन जो आदमी** (कुफ़्र व शिर्क से दुनिया में) **तौबा करे और ईमान ले आए और नेक काम किया करे तो ऐसे लोग उम्मीद है कि** (आख़रत में) **कामयाब होने वालों में से होंगे** (और मुसीबत से बचे रहेंगे)(67)

नोटः- यहां मालूम हो गया कि जिस आदमी के सामने हक़ की साफ़ दलीलें मौजूद हों और वो हक़ की तरफ़ दावत देने वालों के बजाए गुमराह करने वालों की बात मान कर गुमराही में पड़ जाए तो ये कोई मजबूरी नहीं।

وَ رَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَ يَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَ رَبُّكَ يَعْلَمُ
مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَ هُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ فِى الْاُوْلٰى وَ الْاٰخِرَةِ ۫ وَ لَهُ الْحُكْمُ وَ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۷۰﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ
بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا تَسْمَعُوْنَ ﴿۷۱﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ
اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَ مِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۳﴾ وَ يَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۷۴﴾
وَ نَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْۤا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَ ضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۷۵﴾

आयत नं० 68 से 75

और आप का रब (ऐसा निराली ख़ूबियों वाला है कि) **जिस चीज़ को चाहता है पैदा करता है और जिस** (हुक्म) **को चाहता है पसन्द करता** (है और पैग़म्बरों के वास्ते से भेजता) **है, इन लोगों के बस में कुछ नहीं है,** (बस साबित हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला उन के शिर्क से पाक और बहुत ऊपर** (है बस जब वो ऐसा है तो इबादत का हक़दार भी वो ही अकेला) **है(68) और आप का रब** (ऐसा इल्म वाला है कि वो) **सब बातों को जानता है जो उनके दिलों में छुपी हैं और जो ये ऐलानिया करते हैं** (और किसी का ऐसा इल्म नहीं)(69) **अल्लाह वो ही है उस के**

सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, तारीफ़ उसी की है दुनिया में भी और आख़रत में भी, और हुकूमत भी (क़ियामत में) **उसी की होगी और तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे** (यह नहीं कि बच जाओ या और कहीं जाकर पनाह लेलो)(70) **आप** (इन लोगों से) **कह दीजिए कि भला यह तो बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर सदा के लिए क़ियामत तक रात ही रहने दे तो अल्लाह के सिवा वो कौन सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रौशनी को ले आए, तो क्या तुम** (तौहीद की ऐसी साफ़ दलीलों को) **सुनते नहीं**(71) **आप** (इन से यह भी) **कहिए कि भला यह तो बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम पर सदा के लिए क़ियामत तक दिन ही रहने दे तो अल्लाह के सिवा वो कौन सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम आराम पाओ, क्या तुम** (उस की कुदरत को) **देखते नहीं** (ऐसी कुदरत वाला ही माबूद होना चाहिए)(72) **और** (वो ऐसा नेमतें देने वाला है कि) **उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम रात में आराम करो और ताकि दिन में उस की रोज़ी तलाश करो और ताकि** (इन दोनो नेमतों पर) **तुम** (अल्लाह का) **शुक्र करो**(73) **और जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन को पुकार कर कहेगा** (ताकि सब लोग उन की रूसवाई सुन लें) **कि जिन को तुम मेरा साझी समझते थे वो कहां गये**(74) **और** (सबूत पूरे करने के लिए) **हम हर उम्मत में से एक-एक गवाह** (भी) **निकाल कर लाएंगे** (मुराद उससे पैग़म्बर हैं जो उन के कुफ़्र की गवाही देंगे) **फिर हम** (इन मुशरिकों से) **कहेंगे कि** (अब) **अपनी कोई दलील** (शिर्क के दावे के सही होने पर) **पेश करो तो** (उस वक़्त) **उन को पता चल जाएगा कि सच्ची बात अल्लाह की थी** (जो पैग़म्बरों के वास्ते से बताई गई थी और शिर्क का दावा झूटा था) **और** (दुनिया में) **जो कुछ बातें घड़ा करते थे** (आज) **किसी का पता न रहेगा** (क्योंकि हक़ के आने पर झूट ग़ाइब हो जाता है)(75)

اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ۠ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِي
الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا
تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٧٧﴾ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ؕ اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ
مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ؕ وَلَا يُسْـَٔلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٧٨﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ
قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٧٩﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ

أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ﴿۸۰﴾ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَ
بِدَارِهِ الْاَرْضَ ۗ فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿۸۱﴾ وَ اَصْبَحَ
الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ يَقْدِرُ ۚ لَوْ لَآ
اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۲﴾

आयत नं० 76 से 82

क़ारून (का हाल देख लो कि कुफ़्र व नाफ़रमानी से उस को क्या नुक़सान पहुंचा और उस का मालो दोलत कुछ काम न आया, उस का क़िस्सा यह है कि वो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की बिरादरी** (यानी बनी इस्राईल) **में से था तो वो** (बहुत ज़्यादा माल होने की वजह से) **उन लोगों के मुक़ाबिले में घमन्ड करने लगा, और** (माल उस के पास इतना ज़्यादा था कि) **हम ने उस को इतने ख़ज़ाने दिये थे कि उनकी चाबियां कई-कई ताक़तवर लोगों को उठानी भारी थी** (यानी उनसे मुश्किल से उठती थी तो जब चाबियां इतनी ज़्यादा थी तो ख़ज़ाने तो फिर बहुत ही होंगे और) **जब उस को उसकी बिरादरी ने** (समझाने के लिए) **कहा कि तुम** (इस मालो दोलत पर) **मत इतराओ बेशक अल्लाह तआ़ला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता(76) और** (यह भी कहा कि) **तुम को अल्लाह ने जितना दे रक्खा है उसमें आख़रत का घर बनाने की कोशिश किया करो और दुनिया से अपना हिस्सा** (आख़रत में ले जाना) **न भूलो और जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे साथ अहसान किया है तुम भी** (बन्दों के साथ) **अहसान किया करो और** (अल्लाह की नाफ़रमानी करके) **दुनिया में फ़साद मत फैलाओ** (यानी गुनाह करने से दुनिया में फ़साद होता है), **बेशक अल्लाह तआ़ला फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता(77) क़ारून** (यह सुनकर) **कहने लगा कि मुझको यह सब कुछ मेरी हुनर मन्दी से मिला** (है यानी मैंने यह माल अपने हुनर से जमा किया है इसमें न किसी का अहसान और न हक़्) **है,** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) **क्या उस** (क़ारून) **ने यह न जाना कि अल्लाह तआ़ला उससे पहले उम्मतों में से ऐसों-ऐसों को हलाक कर चुका है जो ताक़त** (और दौलत) **में भी उससे कहीं ज़्यादा थे और मजमा** (भी उससे) **उनका ज़्यादा था, और** (आख़रत में सज़ा के वक़्त) **मुजरिमों से उनके गुनाहों के बारे में पूछा भी न जाएगा** (क्योंकि अल्लाह को सब मालूम है)(78) **फिर** (एक बार ऐसा हुआ कि) **वो अपनी क़ौम के सामने अपनी शान** (और ठाट बाट) **से निकला, जो लोग** (उसकी बिरादरी में) **दुनिया के**

चाहने वाले थे (चाहे मोमिन ही हों, वो लोग) **कहने लगे कि अच्छा होता कि हम को भी वो सामान मिला होता जैसा क़ारून को मिला है सचमुच वो बड़ा नसीब वाला है(79) और जो लोग** (इल्म और दीन की) **समझ रखते थे वो** (उन हिर्स और लालच करने वालों से) **कहने लगे तुम पर अफ़सोस है** (तुम इस दुनिया पर क्या नज़र करते हो) **अल्लाह तआ़ला के घर का सवाब** (इस दुनिया के साज़ो सामान से) **हज़ार दर्जा बेहतर है जो ऐसे आदमी को मिलता है कि ईमान लाए और नेक काम करे और** (फिर मोमिनों और नेकों में से भी) **वो** (सवाब पूरा) **उन ही लोगों को दिया जाता है जो** (दुनिया की हिर्स व लालच से) **सब्र करने वाले हैं(80) फिर हम ने उस** (क़ारून) **को और उसके महल को** (उसकी शरारत बढ़ जाने से) **ज़मीन में धंसा दिया, सो कोई ऐसा गिरोह न हुआ जो उसको अल्लाह** (के अज़ाब) **से बचा लेता** (भले ही वो बड़े मजमे वाला था), **और न वो ख़ुद ही अपने को बचा सका(81) और कल** (यानी कुछ दिनों पहले) **जो लोग उस जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वो** (आज उसके अन्जाम को देख कर) **कहने लगे बस पता चल गया कि** (ख़ुशहाली और ग़रीबी का मदार ख़ुशनसीबी या बद नसीबी पर नहीं बल्कि) **अल्लाह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी दे देता है और** (जिस को चाहे) **कमी से देने लगता है** (यह हमारी ग़लती थी कि इसको ख़ुशनसीबी समझते थे हमारी तौबा है और सचमुच) **अगर हम पर अल्लाह तआ़ला की महरबानी न होती तो हम को भी धंसा देता** (क्योंकि हिर्स और दुनिया के लालच का गुनाह हमने भी किया), **बस पता चल गया कि काफ़िर लोग कामयाब नहीं होते** (चाहे कुछ दिन मज़े लूट लें मगर अन्जाम घाटा है बस कामयाबी ईमान वालों के लिए ही है)(82)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि दुनिया के साज़ो सामान पर नज़र करना इल्म वालों का काम नहीं उन की नज़र हमेशा आख़रत के सदा के फ़ाइदे पर रहती है दुनिया के सामान को ज़रूरत भर हासिल करते हैं उसी को काफ़ी समझते हैं।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٨٣﴾ مَنْ جَآءَ
بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٤﴾

आयत नं० 83 से 84

यह आख़रत वाला घर (जिस के सवाब का ऊपर बयान हुआ) **हम उन्हीं लोगों को देंगे जो दुनिया में बड़ा बनना नहीं चाहते और न फ़साद करना** (यानी न घमन्ड करते हैं और न कोई ऐसा गुनाह करते हैं जिससे ज़मीन में फ़साद हो), **और नेक अन्जाम परहेज़गार लोगों को मिलता है** (जो बुराइयों से बचने के साथ नेक कामों के भी पाबन्द हों)(83) **जो आदमी** (क़ियामत के दिन) **नेकी लेकर आएगा उस को उस** (के हक़्) **से बेहतर** (बदला) **मिलेगा** (यानी उस के नेक काम से ज़्यादा सवाब मिलेगा जो कम से कम दस गुना ज़्यादा है) **और जो आदमी बुराई लेकर आएगा तो ऐसे लोगों को जो बुराई का काम करते हैं उतना ही बदला मिलेगा जितना वो करते थे** (यानी बुराई से ज़्यादा सज़ा न होगी)(84)

नोटः- तकब्बुर और घमन्ड जिसका हराम होना इस आयत में बताया गया है वो है कि लोगों पर बड़ाई जिताए और उनको गिरा हुआ समझे वर्ना अपने लिए अच्छा लिबास, अच्छा खाना, अच्छे मकान का इन्तिज़ाम जब वो दूसरों पर बड़ाई जितनाने के लिए न हो बुरा नहीं।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ إِلٰى مَعَادٍ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ أَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿٨٥﴾ وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا أَنْ يُّلْقٰٓى إِلَيْكَ الْكِتٰبُ إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَا
يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ
إِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۟ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهٗ ۭ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٨﴾

आयत नं० 85 से 88

(और ऐ पैग़म्बर आप के दुशमनों ने जो आप को वतन छोड़ने पर मजबूर किया है जिस का आप को दुख है तो आप तसल्ली रक्खें) **जिस अल्लाह ने आप पर क़ुरआन** (के हुक्मों को पहुंचाने और उस पर अमल करने) **को फ़र्ज़ किया है** (जो आप की पैग़म्बरी की दलील है) **वो आप को** (आप के) **असली वतन** (यानी मक्का) **में फिर पहुंचा देगा,** (और उस वक़्त हुकूमत भी आप की होगी और ये लोग जो आप को ग़लती पर और अपने को हक़ पर समझते हैं तो) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि मेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन सच्चा दीन लेकर** (अल्लाह की तरफ़ से) **आया है और कौन खुली गुमराही में है**(85) **और** (आप की यह पैग़म्बरी सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ से है यहां

तक कि ख़ुद) **आप को** (नबी होने से पहले) **यह उम्मीद न थी कि आप पर यह किताब उतारी जाएगी मगर सिर्फ़ आप के रब की महरबानी से यह उतरी तो आप** (इन लोगों की बेहूदा बातों पर ध्यान न कीजिए और जिस तरह अब तक इनसे अलग रहे आगे भी इसी तरह) **इन काफ़िरों की मदद न कीजिए(86) और जब अल्लाह के हुक्म आप पर आचुकें तो ऐसा न होने पाए** (जैसा अब तक भी नहीं होने पाया) **कि ये लोग आप को उन हुक्मों से रोक दें और आप** (इसी तरह) **अपने रब** (के दीन) **की तरफ़** (लोगों को) **बुलाते रहिए और** (जिस तरह अब तक मुशरिकों से कोई वास्ता नहीं रहा इसी तरह आगे भी सदा) **इन मुशरिकों में शामिल न होजिए(87) और** (इसी तरह आगे भी) **अल्लाह के साथ किसी माबूद को न पुकारना** (इन आयतों में काफ़िरों और मुशरिकों को इस बात से नाउम्मीद करना है कि अल्लाह के रसूल कभी भी तुम्हारे दीन से समझौता नहीं कर सकते)**, उसके सिवा कोई माबूद** (होने के क़ाबिल) **नहीं** (इसलिए कि) **सब चीज़ें फ़ना हो जाने वाली हैं सिवाए उस की ज़ात के** (बस उसके सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं)**, और उसी के पास तुम सब को जाना है** (बस सब को उनके किये का बदला मिलेगा)(88)

नोटः- ऊपर आयत में मक्के के फ़तह होने की ख़ुशख़बरी दी गई है इसमें इशारा इस तरफ़ भी है कि क़ुरआन की तिलावत और उस पर अमल ही अल्लाह की मदद और कामयाबी की वजह होगी।

29-सूरत-अनकबूत

इस मक्की सूरत में '7' रूकू और '69' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۚ ﴿١﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿٢﴾ وَ لَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَ لَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٣﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ
مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٤﴾ مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٥﴾ وَ مَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا
يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ
لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾

आयत नं० 01 से 07

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **क्या उन लोगों ने** (जो काफ़िरों के सताने से घबरा जाते हैं) **यह सोच रक्खा है कि वो इतना कहने में छूट जाएंगे कि हम ईमान ले आए और उनको** (मुसीबतों से) **आज़माया न जाएगा** (यानी ऐसा न होगा बल्कि इस क़िस्म के इम्तिहान भी पेश आएंगे)(02) **और हम तो** (ऐसे ही इम्तिहानों से) **उन लोगों को भी आज़मा चुके हैं जो इनसे पहले** (मुसलमान) **हो चुके हैं** (यानी और उम्मतों के मुसलमानों पर भी ऐसी मुसीबतें आ चुकी हैं) **तो** (इसी तरह इन को भी आज़माया जाएगा और इस इम्तिहान में) **अल्लाह तआ़ला उन लोगों को** (खुले तौर पर) **जान कर रहेगा जो** (ईमान के दावे में) **सच्चे थे और झूटों को भी जान कर रहेगा** (यानी इस इम्तिहान में पता चल जाता है कि कौन सच्चे दिल से ईमान लाया है)(03) **हां क्या जो लोग बुरे-बुरे काम कर रहे हैं** (जैसे मुसलमानों को सताना) **वो यह समझते हैं कि हम से कहीं निकल भागेंगे, उन का यह अन्दाज़ा बहुत बुरा है** (इसमें मुसलमानों को तसल्ली है कि तुम पर किये ज़ुल्मों का बदला लिया जाएगा)(04) **जो आदमी अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता हो सो** (उसको तो ऐसी मुसीबतों से परीशान होना ही न चाहिए क्योंकि) **अल्लाह** (के मिलने) **का वो तय वक़्त ज़रूर ही आने वाला है** (जिससे सारे ग़म दूर हो

जाएंगे), **और वो सब कुछ सुनता सब कुछ जानता है** (बस तुम्हारी इबादतों और तकलीफ़ों का बदला देकर सब ग़म दूर कर देगा)(05) **और जो आदमी** (अल्लाह की राह में) **मेहनत करता है वो अपने ही** (नफ़े के) **लिए मेहनत करता है,** (वर्ना) **अल्लाह तआ़ला को** (तो) **सारे जहान वालों में किसी की ज़रूरत नहीं(06) और जो लोग ईमान लाते हैं और नेक काम करते हैं हम उनके गुनाह उनसे दूर कर देंगे** (जिसमें कुछ गुनाह जैसे कुफ़्र व शिर्क तो ईमान से मिट जाते हैं और कुछ गुनाह तौबा से और कुछ गुनाह सिर्फ़ नेकियों से और कुछ गुनाह सिर्फ़ महरबानी से मुआफ़ हो जाएंगे और कोई गुनाह कुछ सज़ा के बाद) **और उनको उनके** (उन) **आमाल** (ईमान व नेक काम) **का** (हक़ से) **ज़्यादा अच्छा बदला देंगे(07)**

नोटः- ईमान के दावे में सच्चे और झूटे होने को जान लेने से मुराद यह है कि लोगों में इम्तिहान के बाद उसके सच झूट का पर्दा खुल जाता है वर्ना अल्लाह तआ़ला को तो सब कुछ पहले से मालूम है।

وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ۖ وَإِن جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ۚ إِلَيَّ
مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾

आयत नं० 08 से 09

और हमने इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा सलूक करने का हुक्म दिया है, और (इसके साथ यह भी कह दिया है कि) **अगर वो दोनो तुझ पर इस बात का ज़ोर डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिस** (के माबूद होने) **की कोई** (सही) **दलील तेरे पास नहीं है** (और हर चीज़ ऐसी है कि सभी चीज़ों के इबादत के क़ाबिल न होने पर दलीलें मौजूद हैं) **तो** (इस बारे में) **उन का कहना न मानना, तुम सब को मेरे पास लौट कर आना है तो** (उस वक़्त) **मैं तुम को बता दूंगा** (अच्छे या बुरे) **जो काम करते रहे हो(08) और** (तुम में) **जो लोग ईमान लाए होंगे और नेक काम किये होंगे हम उन को नेक बन्दों** (के दर्जे) **में** (जो कि जन्नत है) **दाख़िल करेंगे** (और इसी तरह बुरे कामों पर मुनासिब सज़ा देंगे बस इस तरह जिसने हमारे हुक्मों के मुक़ाबिले मां बाप का कहना माना होगा वो सज़ा पाएगा और जिसने इसके उलट हमारा कहना माना होगा अच्छा बदला पाएगा मतलब यह हुआ कि इस बारे में मां बाप की नाफ़रमानी से गुनाह का खटका न किया जाए)(09)

नोटः- मां बाप के साथ अच्छा सलूक करने के साथ यह भी ज़रूरी है कि उनके हुक्म की ताबेदारी उसी हद तक की जाए कि वो हुक्म अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ न हो।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ
رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
لَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿۱۱﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ
مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ۫ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳﴾ ع

आयत नं० 10 से 13

और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब उन को अल्लाह की राह में कुछ तकलीफ़ पहुंचाई जाती है तो लोगों के सताने को ऐसा (बड़ा) **समझते हैं जैसे अल्लाह का अज़ाब** (जिससे आदमी बिल्कुल ही मजबूर हो जाए जबकि लोगों में कोई ऐसा अज़ाब नहीं दे सकता), **और** (अब तो उसका यह हाल है) **अगर** (कभी) **कोई मदद** (मुसलमानों की) **आप के रब की तरफ़ से आ पहुंचती है तो** (उस वक़्त) **कहते हैं कि हम तो** (दीन और अक़ीदे में) **तुम्हारे साथ** (थे यानी मुसलमान ही थे भले ही काफ़िरों की ज़ोर ज़बरदस्ती की वजह से काफ़िरों के साथ हो गये) **थे,** (इस पर अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **क्या अल्लाह तआ़ला को दुनिया जहान वालों के दिलों की बातें मालूम नहीं हैं** (यानी उनके दिल ही में ईमान न था)(10) **और** (ये क़िस्से इसलिए होते रहते हैं कि) **अल्लाह तआ़ला ईमान वालों को मालूम करके रहेगा और मुनाफ़िक़ों को भी मालूम करके रहेगा** (कि तकलीफ़ों पर सब्र करने से मुसलमानों का सच्चा होना खुल जाएगा और मुनाफ़िक़ों का झूटा होना)(11) **और काफ़िर लोग मुसलमानों से कहते हैं कि तुम** (दीन में) **हमारी राह चलो और** (क़ियामत में) **तुम्हारे गुनाह** (जो कुफ़्र व जुर्मों से होंगे) **हमारे ज़िम्मे** (और तुम बरी), **हालांकि ये लोग उनके गुनाहों में से ज़रा भी** (इस तरह कि वो बरी हो जाएं) **नहीं ले सकते, ये बिल्कुल झूट बोल रहे हैं**(12) **और** (यह तो होगा कि) **ये लोग अपने गुनाह का** (पूरा-पूरा) **बोझ उठाएंगे और अपने गुनाहों के साथ कुछ गुनाह** (का बोझ) **और भी** (उठाएंगे और ये गुनाह वो हैं जिन को उन्होंने फैलाया और इन गुनाहों का बोझ उठाने से

असल गुनाहगार बरी नहीं होंगे बस दूसरे तो हल्के न हुए मगर ये लोग उन को गुमराह करने की वजह से और ज़्यादा भारी हो गये) **और ये लोग जैसी जैसी झूटी बातें बनाते थे क़ियामत में उनसे पूछ ज़रूर** (होगी और फिर उस पर सज़ा) **होगी**(13)

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी लोगों को नेक राह की तरफ़ बुलाए तो जितने लोग उसके बुलाने की वजह से नेक राह पर चलेंगे उन सब के कामों का सवाब उस बुलाने वाले के आमाल नामे में भी लिखा जाएगा और उन नेक काम करने वालों के सवाब में कोई कमी न की जाएगी और जो आदमी किसी गुमराही की तरफ़ बुलाए तो जितने लोग उसके कहने से उस गुमराही में पड़ेंगे उन सब का गुनाह और वबाल उस आदमी पर भी पड़ेगा और उन लोगों के वबाल और अज़ाब में भी कोई कमी न होगी। (मुस्लिम शरीफ़)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَ هُمْ
ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَ جَعَلْنٰهَاۤ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۵﴾ وَ اِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ
اتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ
الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَ اعْبُدُوْهُ وَ اشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ اِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۸﴾

आयत नं० 14 से 18

और हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) **को उनकी क़ौम की तरफ़** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा सो वो उनमें पचास साल कम एक हज़ार साल** (रहे और क़ौम को समझाते) **रहे, फिर** (जब इस पर भी वो लोग ईमान न लाए तो) **उनको तूफ़ान ने आ पकड़ा और वो बड़े ज़ालिम लोग थे** (कि इतने लम्बे ज़माने तक भी समझाने से असर न लिया)(14) **फिर** (उस तूफ़ान के आने के बाद) **हम ने उन को** (यानी नूह अलैहिस्सलाम को) **और कश्ती वालों को** (यानी जो उनके साथ सवार थे सब को उस तूफ़ान से) **बचा लिया और हम ने उस क़िस्से को दुनिया जहान वालों के लिए एक सबक़** (और निशानी) **बनाया** (कि सोच कर समझ सकते हैं कि हक़ की मुख़ालफ़त करने वालों का क्या अन्जाम है)(15) **और हम ने इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा जब कि उन्होंने अनी क़ौम से** (जो कि बुत परस्त थे) **कहा कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो**

(और डर कर शिर्क छोड़ दो), **यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो**(16) (और नासमझी से) **तुम लोग अल्लाह को छोड़ कर सिर्फ़ बुतों को पूज रहे हो** (जो बिल्कुल मजबूर हैं और किसी काम के नहीं) **और** (उसके बारे में) **झूटी बातें बनाते हो** (कि इनसे हमारा रोज़गार चलता है और यह झूट है क्योंकि) **तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पूज रहे हो तुम को कुछ भी रोज़ी देना उनके बस में नहीं सो तुम लोग रोज़ी अल्लाह के पास से तलाश करो** (यानी उससे मांगो रोज़ी का मालिक वो ही है) **और** (जब रोज़ी का मालिक वो ही है तो) **उसी की इबादत करो और** (चूंकि पहली रोज़ी भी उसी की दी हुई है तो) **उसी का शुक्र करो, और तुम सब को उसी की तरफ़ लौट जाना है** (उस वक़्त कुफ़्र पर तुम को सज़ा देगा)(17) **और अगर तुम** (इन बातों में) **मुझको झूटा समझो तो** (याद रक्खो कि मेरा कोई नुक़सान नहीं) **तुम से पहले भी बहुत सी उम्मतें** (अपने पैग़म्बरों को) **झूटा समझ चुकी हैं** (मगर उन पैग़म्बरों का कोई नुक़सान नहीं हुआ), **और** (वजह इसकी यह है कि) **पैग़म्बर के ज़िम्मे तो सिर्फ़** (बात का) **साफ़-साफ़ पहुंचा देना है** (मनवाना उस का काम नहीं बस सब पैग़म्बरों की ज़िम्मेदारी हुक्म पहुंचाने के बाद पूरी हो गई, इसी तरह मेरी भी बस हम को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा लेकिन मानना तुम्हारे ज़िम्मे वाजिब था उसके छोड़ने से तुम्हारा नुक़सान हुआ)(18)

नोटः- पैग़म्बरों के सब्र के लिए ये क़िस्से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप की उम्मत की तसल्ली के और उन को दीन के काम पर जमाए रखने के लिए हैं।

اَوَ لَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿۱۹﴾ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۰﴾ۚ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ
مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۲۲﴾ۧ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِىْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۳﴾

आयत नं० 19 से 23

क्या इन लोगों को मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला किस तरह मख़्लूक़ को पहली बार पैदा करता है (नापैद से वजूद में लाता है) **फिर वो ही उसको दोबारा पैदा करेगा, यह अल्लाह के लिए बहुत ही आसान बात** (है बल्कि देखा जाए तो दोबारा पैदा करना पहली बार पैदा करने से

ज़्यादा आसान) **है**(19) (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन लोगों से) **कहिए कि तुम लोग मुल्क में चलो फिरो और देखो कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को किस तरह शुरू में पैदा किया है फिर अल्लाह आख़रत में भी पैदा करेगा, बेशक अल्लाह हर चीज़ की क़ुदरत रखता है**(20) (और आख़रत में) **जिस को चाहेगा अज़ाब देगा** (यानी जो इस का हक़दार होगा) **और जिस पर चाहे रहमत करेगा** (यानी जो उसके क़ाबिल होगा) **और** (इस अज़ाब देने और रहमत में किसी का दख़ल न होगा) **तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे** (न कि और किसी के पास)(21) **और** (उसके अज़ाब से बचने की कोई सूरत नहीं है) **तुम न ज़मीन में** (छुप कर अल्लाह को) **हरा सकते हो** (कि उसके हाथ न आओ) **और न आसमान में** (उड़ कर) **और न अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई रखवाला है और न कोई मददगार** (बस न अपनी कोशिश से बच सके न दूसरे की हिमायत से)(22) **और जो लोग अल्लाह तआ़ला की आयतों का और** (ख़ासकर) **उसके सामने जाने का इनकार करते हैं वो लोग** (क़ियामत में) **मेरी रहमत से ना उम्मीद होंगे** (यानी उस वक़्त पता चल जाएगा कि हम रहमत के हक़दार नहीं हैं) **और ये ही हैं जिनको दर्दनाक अज़ाब होगा**(23)

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۵﴾ۙۖ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَ
قَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۶﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِ
النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾

आयत नं० 24 से 27

सो (इब्राहीम अलैहिस्सलाम के यह समझाने के बाद) **उन की क़ौम का** (आख़री) **जवाब बस यह था कि** (आपस में) **कहने लगे कि इनको या तो क़त्ल कर दो या इन को जला दो** (बस जलाने का सामान किया) **सो अल्लाह ने उन को उस आग से बचा लिया** (जिसका क़िस्सा सूरत अम्बिया में आ चुका है), **बेशक इस क़िस्से में उन लोगों के लिए जो कि ईमान रखते हैं बहुत सी निशानियां** (और दलीले) **हैं** (जैसे अल्लाह का क़ुदरत वाला होना, इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नबी होना, कुफ़्र व शिर्क का ग़लत होना)(24) **और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (समझाते हुए यह भी) **कहा**

कि तुम ने जो अल्लाह को छोड़ कर बुतों को (ख़ुदा) **बना रक्खा है बस यह तुम्हारे आपसी दुनियावी रिश्तो नातों की वजह से है** (जैसा कि देखा भी जाता है कि अक्सर आदमी दोस्तो और रिश्तेदारों के तरीक़े पर रहता है और हक़ को समझ कर भी डरता है कि सब दोस्त रिश्तेदार छूट जाएंगे), **फिर क़ियामत में** (तुम्हारा यह हाल होगा कि) **तुम में एक दूसरे का मुख़ालिफ़ हो जाएगा और एक दूसरे पर लानत करेगा, और** (अगर तुम इस बुत परस्ती से बाज़ न आए तो) **तुम्हारा ठिकाना दोज़ख़ होगा और तुम्हारा कोई मददगार न होगा(25) सो** (इतना समझाने पर भी उन की क़ौम ने न माना) **सिर्फ़ लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने उनकी तस्दीक़ की, और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि मैं** (तुम लोगों में नहीं रहता बल्कि) **अपने रब की** (बताई हुई जगह की) **तरफ़ वतन छोड़ कर चला जाऊंगा, बेशक वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है** (वो मेरी हिफ़ाज़त करेगा और मुझ को इस का फल देगा)(26) **और हम ने** (हिजरत के बाद) **उनको इसहाक़** (बेटा) **और याक़ूब** (पोता) **दिया और हमने उनकी नस्ल में पैग़म्बरी और किताब** (के सिलसिले) **को जारी रक्खा और हम ने उनका बदला उन को दुनिया में भी दिया और आख़रत में भी** (बड़े दर्जे के) **नेक बन्दों में होंगे(27)**

नोटः- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम पहले पैग़म्बर हैं जिन को दीन के लिए वतन छोड़ना पड़ा और हिजरत करनी पड़ी। उन की यह हिजरत ‘75’ साल की उम्र में हुई। (क़ुरतबी)

وَ لُوۡطًا اِذۡ قَالَ لِقَوۡمِهٖۤ اِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ الۡفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمۡ بِهَا مِنۡ اَحَدٍ مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۲۸﴾ اَئِنَّكُمۡ لَتَاۡتُوۡنَ
الرِّجَالَ وَ تَقۡطَعُوۡنَ السَّبِيۡلَ ۙ وَ تَاۡتُوۡنَ فِىۡ نَادِيۡكُمُ الۡمُنۡكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوۡمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوا ائۡتِنَا
بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنۡ كُنۡتَ مِنَ الصّٰدِقِيۡنَ ﴿۲۹﴾ قَالَ رَبِّ انۡصُرۡنِىۡ عَلَى الۡقَوۡمِ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ﴿۳۰﴾ وَ لَمَّا جَآءَتۡ رُسُلُنَاۤ
اِبۡرٰهِيۡمَ بِالۡبُشۡرٰى ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا مُهۡلِكُوۡۤا اَهۡلِ هٰذِهِ الۡقَرۡيَةِ ۚ اِنَّ اَهۡلَهَا كَانُوۡا ظٰلِمِيۡنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ اِنَّ فِيۡهَا لُوۡطًا ؕ
قَالُوۡا نَحۡنُ اَعۡلَمُ بِمَنۡ فِيۡهَا ٞ لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَ اَهۡلَهٗۤ اِلَّا امۡرَاَتَهٗ ٝ كَانَتۡ مِنَ الۡغٰبِرِيۡنَ ﴿۳۲﴾ وَ لَمَّاۤ اَنۡ جَآءَتۡ رُسُلُنَا
لُوۡطًا سِىۡٓءَ بِهِمۡ وَ ضَاقَ بِهِمۡ ذَرۡعًا وَّ قَالُوۡا لَا تَخَفۡ وَ لَا تَحۡزَنۡ ٝ اِنَّا مُنَجُّوۡكَ وَ اَهۡلَكَ اِلَّا امۡرَاَتَكَ كَانَتۡ
مِنَ الۡغٰبِرِيۡنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّا مُنۡزِلُوۡنَ عَلٰٓى اَهۡلِ هٰذِهِ الۡقَرۡيَةِ رِجۡزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوۡا يَفۡسُقُوۡنَ ﴿۳۴﴾ وَ لَقَدۡ تَّرَكۡنَا
مِنۡهَاۤ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۳۵﴾

आयत नं० 28 से 35

और हम ने लूत (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा जब कि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुम से पहले दुनिया जहान वालों में किसी ने नहीं किया(28) क्या तुम मर्दों से** (बेहयाई का) **बुरा काम करते हो और** (भी बुरे-बुरे काम करते हो जैसे कि) **तुम डाका डालते हो और** (सितम यह है कि) **अपनी भरी मजलिस में बुरा काम करते हो** (जो और भी बड़ा गुनाह है), **सो उन की क़ौम का** (आख़री) **जवाब बस यह था कि हम पर अल्लाह का अज़ाब ले आओ अगर तुम** (इस बात में) **सच्चे हो** (कि इन कामों पर अज़ाब होता है)(29) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने दुआ की कि या रब मेरे इन शरीर लोगों के मुक़ाबिले मेरी मदद की**(जिए और इन को अज़ाब से हलाक कर दी)**जिए(30) और** (उन की दुआ़ क़ुबूल होने के बाद अल्लाह तआ़ला ने अज़ाब की ख़बर देने और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को बेटा होने की ख़ुशख़बरी देने के लिए फ़रिशतों को भेजा बस) **हमारे** (वो) **भेजे हुए फ़रिशते जब इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के पास** (उनके बेटे इसहाक़ के पैदा होने की) **ख़ुशख़बरी लेकर आए तो** (बात चीत में) **उन फ़रिशतों ने** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम से) **कहा कि हम उस बस्ती वालों को** (जिसमें लूत की क़ौम आबाद है) **हलाक करने वाले हैं** (क्योंकि) **वहां के रहने वाले बड़े शरीर हैं(31) इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि वहां तो लूत** (अलैहिस्सलाम भी मौजूद) **हैं** (कहीं उन को नुक़सान न पहुंचे), **फ़रिशतों ने कहा कि जो वहां** (रहते) **हैं हम को सब मालूम है, हम उन को और उनके घर वालों** (और मोमिनों) **को** (उस अज़ाब से) **बचा लेंगे** (इस तरह कि अज़ाब भेजने से पहले उन को बस्ती से बाहर ले जाएंगे) **सिवाए उनकी बीवी के कि वो अज़ाब में रह जाने वालों में से होगी(32) और** (फिर वहां से) **जब हमारे फ़रिशते लूत** (अलैहिस्सलाम) **के पास पहुंचे तो लूत** (अलैहिस्सलाम) **उन** (के आने) **की वजह से** (इसलिए) **दुखी हुए** (कि वो बहुत हसीन जवानों की सूरत में आए थे और लूत अलैहिस्सलाम ने उन को इन्सान समझा और अपनी क़ौम की ग़लत हरकत का ध्यान आया) **और** (इस वजह से) **उन** (के आने) **की वजह से परीशान हुए और** (उनका यह हाल देखा तो) **वो फ़रिशते कहने लगे आप न डरिए न ग़म कीजिए** (हम इन्सान नहीं बल्कि अज़ाब के फरिशते हैं और उस अज़ाब से) **हम आप को और आप के ख़ास लोगों को बचा लेंगे सिवाए आप की बीवी के कि वो अज़ाब में रह जाने वालों में होगी(33)** (और आप के लोगों को इससे बचाकर) **हम इस बस्ती के** (बाक़ी) **रहने वालों पर एक आसमानी अज़ाब उनकी बदकारियों की सज़ा में भेजने वाले हैं(34)** (बस वो बस्ती उलट दी गई और ग़ैब से पत्थर बरसाए

गये) **और हमने उस बस्ती के कुछ खुले निशान** (अब तक) **रहने दिये हैं उन लोगों** (की सीख) **के लिए जो समझ रखते हैं** (जैसा कि मक्के वाले मुल्क शाम के सफ़र में उन उजड़ी हुई जगहों को देखते थे और कुछ डर कर ईमान ले आते थे)(35)

नोटः- मर्द का मर्द के साथ बुरा काम करना ज़िना से भी ज़्यादा बड़ा गुनाह है यह गुनाह इस क़ौम से पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया था और जंगल के जानवर भी इससे परहेज़ करते हैं।

وَ اِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۙ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ ارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَ لَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ
مُفْسِدِيْنَ ﴿٣٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٣٧﴾ وَ عَادًا وَّ ثَمُوْدَا۠ وَ قَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ
مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَ كَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ ﴿٣٨﴾ وَ قَارُوْنَ وَ
فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ ۫ وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ وَ مَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ فَكُلًّا
اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا
بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ مِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٠﴾ مَثَلُ
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ؕ وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾ وَ
تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَ مَا يَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾

आयत नं० 36 से 44

और मदयन वालों के पास हम ने उन (की बिरादरी) **के भाई शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा सो उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम** (के लोगों) **अल्लाह की इबादत करो** (और शिर्क छोड़ दो) **और क़ियामत के दिन से डरो** (और उसके इनकार से बाज़ आओ) **और** (लोगों का हक़ मार कर) **ज़मीन में फ़साद मत फैलाओ(36) सो उन लोगों ने शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया बस ज़लज़ले ने उन को आपकड़ा फिर वो अपने घरों में दब कर रह गये(37) और हम ने आद व समूद को भी** (उन के कुफ़्र की वजह से) **हलाक किया है**

और उन की तबाही तुम को उन के रहने की जगहों से दिखाई दे रही है (कि उनकी उजड़ी बस्तियों के खन्डर मुल्क शाम को जाते हुए ऐ मक्के वालों तुम्हारे रास्ते पर मिलते हैं), **और** (हालत उनकी यह थी कि) **शैतान ने उन के** (बुरे) **कामों को उन की नज़र में अच्छा बनाकर उन्हें** (सही) **रास्ते से रोक रक्खा था और वो लोग** (दुनिया के कामों में बड़े) **होशियार थे** (बेवक़ूफ़ न थे मगर इस बारे में उन्होंने अपनी अक़्ल से काम न लिया)(38) **और हम ने क़ारून और फ़िरऔन और हामान को भी** (उन के कुफ़्र की वजह से) **हलाक किया और उन** (तीनों) **के पास मूसा** (अलैहिस्सलाम) **खुली दलीलें** (हक़ की) **लेकर आए थे फिर** (भी) **उन लोगों ने ज़मीन में सरकशी की और वो** (हमारे अज़ाब से) **भाग न सके**(39) **हम ने** (उन में से) **हर एक को उस के गुनाह की सज़ा में पकड़ लिया, सो उनमें कुछ पर तो हम ने** (तूफ़ानी) **हवा भेजी** (मुराद इससे क़ौमे आद है) **और उनमें कुछ को डरावनी आवाज़ ने आ दबाया** (मुराद इससे क़ौमे समूद है) **और उनमें कुछ को हम ने ज़मीन में धंसा दिया** (मुराद इससे क़ारून है) **और उनमें कुछ को हम ने** (पानी में) **डुबो दिया** (मुराद इससे फ़िरऔन और हामान हैं) **और** (उन लोगों पर जो अज़ाब आए तो) **अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता** (यानी बिना वजह सज़ा देता) **लेकिन ये लोग** (शरारतें करके) **अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे** (कि अपने को अज़ाब का हक़दार बनाया और बर्बाद हुए तो अपना नुक़सान खुद किया)(40) **जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना रक्खे हैं उन लोगों की मिसाल मकड़ी की सी है जिस ने एक घर बनाया, और कुछ शक नहीं कि सब घरों में ज़्यादा कमज़ोर मकड़ी का घर होता है** (बस जैसा उस मकड़ी ने अपनी सोच में अपना ठिकाना बनाया है मगर असलीयत में वो ठिकाना बहुत कमज़ोर होने की वजह से न होने के बराबर है इसी तरह ये मुशरिक लोग झूटे माबूदों को अपनी पनाह समझते हैं मगर असलीयत में वो पनाह कुछ नहीं है), **अगर वो** (असलीयत को) **जानते तो ऐसा न** (करते यानी शिर्क न) **करते**(41) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **उन सब चीज़ों** (की असलीयत और कमज़ोरी) **को जानता है जिस-जिस को वो लोग अल्लाह के सिवा पूज रहे** (हैं बस वो चीज़ें तो बहुत कमज़ोर) **हैं, और वो** (यानी अल्लाह तआ़ला) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला है**(42) **और** (चूंकि हम इन चीज़ों की असलीयत को जानते हैं इसलिए) **हम इन** (क़ुरआनी) **मिसालों को** (जिसमें एक मिसल ऊपर आई है) **लोगों के** (समझाने के) **लिए बयान करते हैं, और** (चाहिए था कि बात समझते मगर) **इन मिसालों को बस इल्म वाले ही समझते** (हैं जो इन बातों में ग़ौर फ़िक्र करते) **हैं**(43) **अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को ठीक-ठीक बनाया है** (जैसा कि वो भी मानते हैं), **बेशक**

ईमान वालों के लिए इसमें (उसके इबादत का हक़्दार होने की) **बड़ी दलील है(44)।**

नोटः- एक हदीस में है कि "आलिम वो ही आदमी है जो अल्लाह तआ़ला के कलाम में ग़ौरो फ़िक्र करे और उसके हुक्मों पर अमल करे और उसको नाराज़ करने वाले कामों से बचे"।

(इमाम बग़वी)

इससे मालूम हुआ कि क़ुरआन व हदीस के सिर्फ़ अलफ़ाज़ समझ लेने से अल्लाह के नज़दीक कोई आदमी आलिम नहीं होता जब तक कि क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र की आदत न डाले और जब तक कि अपने अमल को क़ुरआन के मुताबिक़ न बनाए।

اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 45

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम चूंकि आप रसूल हैं इसलिए) **जो किताब आप पर वही की गई है आप उसको** (लोगों तक पहुंचाने के लिए उनके सामने) **पढ़ा कीजिए और** (ज़बानी तबलीग़ के साथ दीन के काम करके भी बताइये ख़ासकर) **नमाज़ की पाबन्दी रखिए,** (क्योंकि इबादत के सब कामों में नमाज़ बड़ी इबादत भी है और इसके असरात दूर तक पहुंचते हैं कि) **बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती रहती** (है कि दिल पर उस का ऐसा ही असर होता) **है, और** (इसी तरह नमाज़ के सिवा जितने नेक काम हैं सब पाबन्दी के लाइक़ हैं क्योंकि वो सब अल्लाह की याद ही हैं और) **अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है, और** (अगर तुम अल्लाह की याद में बेपरवाई करो तो यह भी सुन लो कि) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सब कामों को जानता है** (जैसा करोगे वैसा बदला पाओगे)(45)

नोटः- एक हदीस में है कि "जिस आदमी को उसकी नमाज़ ने बुरे कामों और गुनाह से नहीं रोका उसकी नमाज़ कुछ नहीं"। (तिबरानी)
(यानी वो नमाज़ का हक़ अदा नहीं कर रहा अपनी नमाज़ को सुधारे वर्ना नमाज़ की तासीर और उसका असर ये है कि उसके पढ़ने वालों को गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ हो जाती है अगर ऐसा नहीं तो उसकी नमाज़ में कोई गड़बड़ थी)।

وَ لَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِيْۤ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَ
اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَ اِلٰهُنَا وَ اِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ
الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَ مِنْ هٰۤؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَ مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَ مَا كُنْتَ تَتْلُوْا
مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّ لَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾ بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ ؕ وَ مَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَاۤ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ اَوَ لَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّ ذِكْرٰى

لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِالْبَاطِلِ وَ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ لَوْ لَاۤ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ
الْعَذَابُ ؕ وَ لَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ
بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَ يَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

आयत नं० 46 से 55

और (ऐ ईमान वालो जो पैग़म्बर का इनकार करते हैं उन) **किताब वालों के साथ तुम बहस न करो सिवाए अच्छे तरीक़े के** (यानी बहस की नौबत आए तो अच्छे तरीक़े से बहस करो जैसे सख़्त बात का जवाब नर्म बात से गुस्से का जवाब सहार से दो), **हां जो उनमें ज़्यादती करें** (तो उनको जवाब पर जवाब देने में हरज नहीं मगर बेहतर फिर भी अच्छा ही तरीक़ा है) **और** (वो अच्छा तरीक़ा यह है कि उन से) **यह कहो कि हम इस किताब पर भी ईमान रखते हैं जो हम पर उतारी गई और उन किताबों पर भी** (ईमान रखते हैं) **जो तुम पर उतारी गईं** (सो जब क़ुरआन का भी अल्लाह की तरफ़ से होना साबित है तो तुम को भी क़ुरआन पर ईमान लाना चाहिए) **और** (यह तो तुम भी मानते हो कि) **हमार और तुम्हारा ख़ुदा एक है और हम तो उसी के हुक्म पर चलते हैं** (इसी तरह तुम को भी चाहिए और आख़री नबी के आने की ख़बर तुम्हारी किताबों में भी मौजूद है तो तुम को हमारे नबी पर ईमान लाना चाहिए)(46) **और** (जिस तरह हम ने पहले पैग़म्बरों पर किताबें उतारीं) **इसी तरह हम ने आप पर किताब उतारी, सो जिन लोगों को हम ने किताब** (की सही समझ) **दी है वो इस** (आप वाली) **किताब** (क़ुरआन) **पर ईमान ले आते हैं** (और उन से बहस की नौबत भी कम ही आती है) **और इन** (अरब के मुशरिक) **लोगों में भी कुछ ऐसे** (इन्साफ़ वाले) **हैं कि इस किताब पर ईमान ले आते हैं** (चाहे ख़ुद समझ कर या इल्म वालों से जान कर), **और** (साफ़ दलीलें जान कर भी) **हमारी** (इस किताब की) **आयतों का सिवाए** (ज़िद्दी) **काफ़िरों के और कोई इनकार नहीं करता(47) और आप इस किताब** (यानी क़ुरआन) **से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न कोई किताब अपने हाथ से लिख सकते थे ऐसी सूरत में ये झूटे लोग शुबह निकालते हैं** (कि ये लिखे पढ़े आदमी हैं आसमानी किताबें देखभाल कर वहां से लिख कर और याद करके हम लोगों को सुना दीं)(48) **बल्कि यह किताब ख़ुद बहुत साफ़ दलील** (लिए) **है** (जो) **उन लोगों के सीनों में** (खुलती है) **जिन को इल्म मिला** (है), **और** (खुले मोजिज़े

के बावजूद) **हमारी आयतों का बस ज़िद्दी लोग इनकार किये जाते हैं** (वर्ना इन्साफ़ वाले को तो ज़रा शक न रहना चाहिए)(49) **और ये लोग** (हटधर्मी से) **यह कहते हैं कि इन** (पैग़म्बर) **पर उन के रब के पास से** (हमारी मांगी) **निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं, आप यह कह दीजिए कि वो निशानियां तो अल्लाह के क़ब्ज़े में हैं, और** (मेरे बस की बात नहीं) **मैं तो सिर्फ़ एक साफ़** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला** (यानी पैग़म्बर) **हूं** (और पैग़म्बर होने पर सही दलीलें रखता हूं जिन में सबसे बड़ी दलील कुरआन है फिर ख़ास आप की मांगी दलील की क्या ज़रूरत है)(50) **क्या** (पैग़म्बरी के सबूत में) **उन लोगों को यह बात काफ़ी नहीं हुई कि हम ने आप पर यह** (मोजिज़े वाली) **किताब उतारी है जो उन को** (सदा) **सुनाई जाती रहती है** (अगर एक बार में बात समझ में न आए तो दूसरी तीसरी बार में समझ में आ जाए और दूसरे मोजिज़ों में तो यह बात भी न होती बल्कि एक बार मोजिज़ा सामने आ जाता)**, बेशक इस किताब में** (मोजिज़ा होने के साथ) **ईमान वालों के लिए बड़ी रहमत और नसीहत है**(51) (अगर इस पर भी ईमान न लाएं तो) **आप कह दीजिए कि** (अच्छा भाई मत मानो) **अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच** (पैग़म्बरी का) **गवाह काफ़ी है उस को सब चीज़ की ख़बर है जो आसमान में है और ज़मीन में है, और जो लोग झूटी बातों पर यक़ीन रखते हैं और अल्लाह** (की बातों) **का इनकार करते हैं** (जिनमें पैग़म्बरी भी दाख़िल है) **तो वो लोग बड़े नुक़सान में हैं** (यानी जब अल्लाह के हुक्म से मेरी पैग़म्बरी साबित है तो इस का इनकार अल्लाह के साथ कुफ़्र है)(52) **और ये लोग आप से अज़ाब** (लाने) **का तक़ाज़ा करते** (हैं और फ़ौरन अज़ाब न आने से पैग़म्बरी में शक व इनकार करते) **हैं, और अगर** (अल्लाह की तरफ़ से अज़ाब आने में) **वक़्त तय न होता तो** (इन के तक़ाज़े के साथ ही) **उन पर अज़ाब आ चुका होता, और** (जब वो वक़्त आजाएगा तो) **वो अज़ाब उन पर अचानक आ पहुंचेगा और उन को ख़बर भी न होगी**(53) **ये लोग आप से अज़ाब का तक़ाज़ा करते हैं, और** (अज़ाब की सूरत यह है कि) **इसमें कुछ शक नहीं कि जहन्नम इन काफ़िरों को** (चारों तरफ़ से) **घेर लेगी**(54) **जिस दिन कि उन पर अज़ाब उन के ऊपर से और उनके नीचे से घेर लेगा और** (उस वक़्त उनसे) **अल्लाह तआला कहेगा कि जो कुछ** (दुनिया में) **करते रहे हो** (अब उस का) **मज़ा चक्खो**(55)

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का उम्मी होना आप का बड़ा मोजिज़ा है कि लिखना पढ़ना नहीं जानते थे (उम्मी थे) और ऐसा कलाम आप की ज़बान से जारी होने लगा जिसकी मिसाल बड़े-बड़े आलिम न ला सके।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ۝٥٦ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ اِلَيْنَا
تُرْجَعُوْنَ ۝٥٧ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا ۭ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝٥٨ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰي رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٥٩ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ڰ اَللّٰهُ
يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ڮ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦٠ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٦١ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝٦٢ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ
الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٦٣

आयत नं० 56 से 63

ऐ मेरे ईमान वाले बन्दो (जब ये लोग दुशमनी से तुम को दीन पर चलने में सताते हैं तो यहां रहना क्या ज़रूरी है) **मेरी ज़मीन फैली हुई है सो** (अगर यहां रहकर इबादत नहीं कर सकते तो और कहीं चले जाओ और वहां जाकर) **ख़ालिस मेरी ही इबादत करो**(56) (और घर छोड़ते हुए रिशतेदारों, दोस्तों की जुदाई भारी लगती हो तो यह समझ लो कि एक न एक दिन यह तो होना ही है क्योंकि) **हर आदमी को मौत का मज़ा चखना** (ज़रूर) **है** (आख़िर उस वक़्त सब छूटेंगे और) **फिर तुम सब को हमारे पास आना** (है और नाफ़रमान होकर आने में सज़ा का डर) **है**(57) **और** (यह जुदाई अगर हमारे दीन के लिए है तो हमारे पास पहुंचने के बाद इस वादे के हक़दार हो जाओगे कि) **जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये** (और अगर ज़रूरी हुआ तो वतन भी छोड़ा) **हम उन को जन्नत के** (ऐसे) **झरोंकों में जगह देंगे जिन के** (महलों के) **नीचे से नहरें बहती होंगी** (और) **वो उनमें सदा-सदा रहेंगे,** (और उन नेक) **काम करने वालों का क्या अच्छा बदला है**(58) **जिन्होंने** (मुश्किलों में) **सब्र किया और** (दूसरे मुल्क या शहर में जाकर जो तकलीफ़ों का और गुज़ारे की मुश्किलों का ख़तरा था उसमें) **वो अपने रब पर भरोसा किया करते थे**(59) **और** (अगर हिजरत में तुम को यह ध्यान आता हो कि परदेस में खाने को कहां से मिलेगा तो यह समझ लो कि) **बहुत से जानवर ऐसे हैं जो अपना खाना उठा कर** (यानी जमा करके) **नहीं रखते** (चाहे कुछ जमा भी करते हैं मगर बहुत से नहीं भी करते) **अल्लाह ही उन को** (अपनी कुदरत से) **रोज़ी पहुंचाता है और तुम को भी** (पहुंचाता है चाहे तुम कहीं हो बस अल्लाह पर भरोसा रक्खो) **और**

(वो भरोसे के लाइक़ है क्योंकि) **वो सब कुछ सुनता सब कुछ जानता है(60) और** (तौहीद की दलील के लिए) **अगर आप उनसे पूछें कि** (भला) **वो कौन है कि जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और जिसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है तो वो लोग ये ही कहेंगे कि वो अल्लाह है, फिर किधर उल्टे चले जा रहे हैं** (जब पैदा करने वाला वो अकेला है तो इबादत के लाइक़ भी वो ही है)(61) **अल्लाह** (जैसा पैदा करने वाला है उसी तरह रोज़ी देने वाला भी वो ही है बस वो) **अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी ज़्यादा कर देता है और जिसके लिए चाहे कम कर देता है, बेशक अल्लाह ही सब चीज़ों के हाल को जानता** (है जिसमें भलाई समझता है वैसी ही रोज़ी देता) **है(62) और अगर आप उनसे पूछें कि वो कौन है जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे ज़मीन को उसके सूख जाने** (खेती के क़ाबिल न रहने) **के बाद तरो ताज़ा** (खेती के क़ाबिल) **बना दिया तो** (जवाब में) **वो लोग ये ही कहेंगे कि वो भी अल्लाह ही है, आप कहिए अलहम्दु लिल्लाह** (इतना तो इक़रार किया यह भी ख़ुदा के एक होने की दलील है मगर ये लोग मानते नहीं), **बल्कि इनमें अक्सर लोग समझ से काम नहीं लेते** (और सोच विचार नहीं करते)(63)

मसअलाः- जिस शहर या मुल्क में इन्सान को अपने दीन पर क़ाइम रहने की आज़ादी न हो वो कुफ़्र या शिर्क या शरीअत के हुक्मों के ख़िलाफ़ चलने पर मजबूर हो वहां से हिजरत करके किसी दूसरे शहर या मुल्क जहां दीन पर अमल की आज़ादी हो चला जाना वाजिब है शर्त यह है कि वहां से जा सकता हो वर्ना मजबूर है लेकिन जिस शहर में दीन के हुक्मों पर चलने की आज़ादी हो वहां से हिजरत फ़र्ज़ या वाजिब तो नहीं लेकिन जिस शहर में गुनाह और बेहयाई आम हो उसको छोड़ देना मुसतहब्ब है। (मआरिफुल कुरआन)

وَ مَا هٰذِهِ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّ لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِیَ الْحَیَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ۝٦٤ فَاِذَا
رَكِبُوْا فِی الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰهُمْ اِلَی الْبَرِّ اِذَا هُمْ یُشْرِكُوْنَ ۝٦٥ۙ لِیَكْفُرُوْا بِمَآ
اٰتَیْنٰهُمْ ۚۙ وَ لِیَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ۝٦٦ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّ یُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ
حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ یُؤْمِنُوْنَ وَ بِنِعْمَةِ اللّٰهِ یَكْفُرُوْنَ ۝٦٧ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ
كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَیْسَ فِیْ جَهَنَّمَ مَثْوًی لِّلْكٰفِرِیْنَ ۝٦٨ وَ الَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ

سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝69

आयत नं० 64 से 69

और (वजह उन के सोच विचार न करने की दुनिया के कामों की धुन है हालांकि) **यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं, और असल ज़िन्दगी आख़रत** (की है जैसा कि दुनिया फ़ना होने वाली और आख़रत बाक़ी रहने वाली है बस फ़ानी के चक्कर में आख़रत को भूलना ना इन्साफ़ी) **है, अगर उन को इस का** (काफ़ी) **इल्म होता** (तो ऐसा न करते कि फ़ानी के चक्कर में पड़ कर बाक़ी को भुला देते)(64) **फिर** (चाहिए तो यह था कि एक ख़ुदा को मानते जैसा कि) **जब ये लोग कशती में सवार होते हैं** (और वो कशती डगमगाने लगती है) **तो** (उस वक़्त) **ख़ालिस ऐतक़ाद कर के अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं,** (मगर) **फिर जब उन को** (इस मुसीबत से) **बचा कर सूखे** (यानी ज़मीन) **की तरफ़ ले आता है तो फ़ौरन ही शिर्क करने लगते हैं**(65) **जिस का मतलब यह है कि हम ने जो नेमत उन को दी है** (कि उन को बचाया) **उस की नाशुक्री करते हैं और ये लोग कुछ दिन और मज़े कर लें फिर जल्दी ही उन को सब पता चल जाएगा**(66) **और** (वो यह कहते हैं कि अगर हम मुसलमान हो जाएं तो हमें अरब के लोग मार देंगे तो) **क्या उन लोगों ने यह नहीं देखा कि हम ने** (उन के शहर मक्का को) **अमन वाला हरम बनाया है और उनके आस पास** (की जगहों) **में** (जो हरम से बाहर हैं) **लोगों को** (मार-मार कर उन के घरों से) **निकाला जा रहा है** (जब कि ये अमन से बैठे हैं), **फिर** (सच्चाई जानने के बाद इस बेवकूफ़ी और ज़िद का) **क्या** (ठिकाना है कि) **ये लोग झूटे माबूदों पर तो ईमान लाते हैं** (जिस पर ईमान की कोई दलील नहीं) **और अल्लाह** (जिस पर ईमान लाना चाहिए उस) **की नेमतों की नाशुक्री** (यानी अल्लाह के साथ शिर्क) **करते हैं**(67) **और** (सच बात यह है कि) **उस आदमी से ज़्यादा कौन ना इन्साफ़ होगा जो** (बिना दलील) **अल्लाह पर झूट बान्धे** (कि वो अपना साझी रखता है) **और जब सच्ची बात उसके पास** (दलील के साथ) **पहुचें वो उस को झुटला दे, क्या ऐसे काफ़िरों का** (जो ऐसी ना इन्साफ़ी करें) **जहन्नम में ठिकाना न** (होगा यानी ज़रूर) **होगा**(68) **और** (इसके उलट) **जो लोग हमारी राह में तकलीफ़ें सहते हैं हम उन को अपने** (नज़दीकी व सवाब यानी जन्नत के) **रास्ते ज़रूर दिखाएंगे** (जिससे वो जन्नत में जा पहुंचेगें), **और बेशक अल्लाह तआ़ला** (की रहमत) **नेकी करने वालों के साथ है** (दुनिया में भी और आख़रत में भी)(69)।

नोटः- हज़रत अबुदर्दा रज़ि० कहते हैं कि जो इल्म लोगों को दिया गया है जो लोग अपने इल्म पर अमल करने में जिहाद (यानी कोशिश) करते हैं उन पर दूसरे इल्म भी खोल दिये जाते हैं जो अब तक हासिल नहीं।

और फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० कहते हैं कि जो लोग इल्म की चाह में कोशिश करते हैं उनके लिए अमल भी आसान कर दिया जाता है। (मज़हरी)

30-सूरत-रूम

इस मक्की सूरत में ‘6’ रूकू और ‘60’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿۲﴾ فِیْٓ اَدْنَی الْاَرْضِ وَ هُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَیَغْلِبُوْنَ ﴿۳﴾ فِیْ بِضْعِ سِنِیْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ
قَبْلُ وَ مِنْۢ بَعْدُ ؕ وَ یَوْمَئِذٍ یَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۴﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ یَنْصُرُ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ﴿۵﴾
وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا یُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۶﴾ یَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۖۚ وَ
هُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿۷﴾

आयत नं० 01 से 07

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **रोम वाले** (ईरान वालों से) **हार गये(02) क़रीब की ज़मीन में** (यानी सरहदों से नज़दीक एक जंग में हार गये जिससे मुशरिक लोग ख़ुश हुए क्योंकि ईरान वाले आग के पुजारी थे और रूमी किताब वाले थे भले ही मुसलमान न थे) **और वो** (रूमी) **अपने हारने के बाद जल्द ही** (दूसरे मुक़ाबिले में ईरानियों से) **जीत जाएंगे(03) तीन साल से लेकर नौ साल के अन्दर-अन्दर,** (और यह हार जीत सब अल्लाह की तरफ़ से है क्योंकि हार से) **पहले भी सब काम अल्लाह ही के हाथ में थे** (जिससे हरा दिया था) **और हारने के बाद भी** (अल्लाह ही के हाथ में है जिससे जिता देगा), **और उस दिन** (यानी जिस दिन रोम वाले जीतेंगे) **मुसलमान ख़ुश होंगे(04) अल्लाह की इस मदद** (पर यानी मुसलमानों का कहा सच साबित हो जाने) **पर,** (क्योंकि मदद अल्लाह के हाथ में है) **वो जिसको चाहे जिता देगा, और वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला है काफ़िरों को जब चाहे हरादे और) **रहमत वाला** (भी) **है** (मुसलमानों को जब चाहे जितादे)(05) **अल्लाह तआ़ला ने इसका वादा किया है,** (और) **अल्लाह तआ़ला अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता** (इसलिए यह कही हुई बात ज़रूर पूरी होगी) **लेकिन अक्सर लोग** (अल्लाह की बातों को) **नहीं जानते(06)** (इन लोगों का अल्लाह तआ़ला और पैग़म्बरी से बेपरवाह व अन्जान रहना इस वजह से है कि) **ये लोग सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगानी की सामने की हालत को**

जानते हैं और ये लोग आख़रत से (बिल्कुल ही) **बेख़बर हैं** (कि वहां क्या होगा, इसलिए उनको दुनिया में न अज़ाब की चीज़ों से बचने का ध्यान है न बख़्शिश के सामान ईमान और नेक काम की तलाश है)(07)।

नोटः- रूम वालों और ईरान वालों में अक्सर जंग होती रहती थी रूम वाले आसमानी किताब तौरेत इन्जील के मानने वाले थे और मुसलमान आसमानी किताब क़ुरआन के मानने वाले जब कि ईरान वाले आग के पुजारी मुशरिक थे तो मक्का के मुशरिकों ने रूमियों को मुसलमानों का नज़दीक समझ कर उनकी हार पर ख़ुशियां मनाईं कि जिस तरह वो किताब वाले हारे इसी तरह तुम भी हम से हारोगे इस पर यह ख़बर दी गई कि जल्दी ही ईरानी हार जाएंगे और रूमी जीतेंगे और इस ख़बर का सच्ची होना क़ुरआन के आसमानी किताब होने और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अल्लाह का रसूल होने की एक दलील भी थी और यह ख़बर अपने वक़्त पर पूरी होकर रही। इस तरह मुसलमान इस ख़बर के सच्ची होने पर ख़ुश हुए और मुशरिक अपनी बात पर हार गये।

اَوَ لَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۗ مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوا السُّوْۗآٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

आयत नं० 08 से 10

क्या (आख़रत की दलीलें सुन कर भी उनकी नज़रें दुनिया ही पर टिकी रहीं और) **उन्होंने अपने दिलों में नहीं सोचा कि अल्लाह तआ़ला ने आसमानों और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो उनके बीच में हैं किसी हिकमत** (व ज़रूरत) **ही से एक ख़ास वक़्त** (यानी क़ियामत) **तक के लिए पैदा किया** (है जैसा कि उसने आयतों में ख़बर दी है कि उनमें एक हिकमत कामों का बदला व सज़ा भी) **है, और** (ये ही क्या और) **बहुत से आदमी अपने रब के मिलने का इनकार करते**

हैं(08) **क्या ये लोग** (कभी घर से नहीं निकले और) **ज़मीन में चलने फिरे नहीं ताकि देखते कि जो** (काफ़िर) **लोग इन से पहले हो चुके हैं उन का** (आख़री) **अन्जाम क्या हुआ,** (जबकि) **वो इन से ताक़त में बढ़े हुए थे और उन्होंने ज़मीन को भी** (इन से ज़्यादा) **बोया जोता था और जितना इन्होंने** (सामान और मकान से) **इसको आबाद कर रक्खा है इससे ज़्यादा उन्होंने इस को आबाद किया था और उनके पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आए थे** (जिनको उन्होंने नहीं माना और अज़ाब से हलाक हुए जिनकी तबाही की निशानियां उनके उजड़े मकानों से जो मुल्क शाम के रास्ते में मिलते हैं दिखाई देती हैं), **सो** (इस तबाही में) **अल्लाह तआ़ला ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता वो तो ख़ुद ही अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे थे** (कि पैग़म्बरों का इनकार करके बर्बादी के हक़दार हुए)(09) **फिर** (आख़रत में) **ऐसे लोगों का अन्जाम जिन्होंने** (ऐसा) **बुरा काम** (यानी पैग़म्बरों का इनकार) **किया था बुरा ही हुआ** (यानी दोज़ख़ की सज़ा और यह) **इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह तआ़ला की आयतों** (यानी हुक्मों व ख़बरों) **को झुटलाया था और** (झुटलाने से बढ़ कर यह कि) **उनकी हंसी उड़ाते थे**(10)

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ لَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَ كَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآئِ
الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَ حِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ لَهُ الْحَمْدُ فِي
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ عَشِيًّا وَّ حِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ يُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَ يُحْيِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ وَ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۹﴾ ع

आयत नं० 11 से 19

अल्लाह तआ़ला मख़लूक़ को पहली बार भी पैदा करता है फिर वो ही दोबारा भी उसको पैदा करेगा फिर (पैदा होने के बाद) **उसके पास** (हिसाब किताब के लिए) **लाए जाओगे**(11) **और जिस दिन क़ियामत होगी उस दिन मुजरिम** (यानी काफ़िर) **लोग** (हिसाब के वक़्त) **हैरान रह जाएंगे** (यानी कोई सही बात उनसे न बन पड़ेगी)(12) **और** (इबादत में अल्लाह का साझी बनाए हुए) **उन के ख़ुदाओं में से उन का कोई सिफ़ारिशी न होगा और** (उस वक़्त ख़ुद) **ये लोग** (भी)

अपने (उन) **ख़ुदाओं का इनकार करेंगे**(13) **और जिस दिन क़ियामत होगी उस दिन** (अलग-अलग तरीक़े के मानने वाले) **सब लोग अलग-अलग हो जाएंगे**(14) (यानी) **जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किये थे वो तो** (जन्नत के) **बाग़ में ख़ुश होंगे**(15) **और जिन लोगों ने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुटलाया था वो लोग अज़ाब में गिरफ़्तार होंगे** (यह मतलब है अलग-अलग होने का)(16) **सो** (जब ईमान व नेक कामों का फ़ाइदा जान चुके तो) **तुम** (ईमान व ऐतक़ाद के साथ) **अल्लाह की तस्बीह किया करो** (जिसमें नमाज़ भी आ गई और ख़ास कर) **शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त**(17) **और** (असल में वो इबादत का हक़दार भी है क्योंकि) **सारे आसमानों और ज़मीन में उसी की हम्द** (की तस्बीह) **होती है** (तो तुम को भी ज़रूर उसकी तस्बीह करनी चाहिए) **और सूरज ढलने के बाद** (भी तस्बीह किया करो) **और ज़ुहर के वक़्त** (भी तस्बीह किया करो इसमें सारी नमाज़ों के वक़्त आ गये)(18) **वो जानदार को बेजान से बाहर लाता है** (जैसे अन्डे से बच्चा) **और बेजान को जानदार से बाहर लाता है** (जैसे परिन्दे से अन्डा) **और ज़मीन को उसके मुर्दा हो** (जाने यानी सूख) **जाने के बाद ज़िन्दा** (यानी ताज़ा हरा भरा) **करता** (है तो उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल) **है, और इसी तरह तुम लोग** (क़ियामत के दिन) **क़ब्रों से निकाले जाओगे**(19)

नोटः- ऊपर आयात में पांचों नमाज़ों का ज़िक्र आ गया उनके वक़्तों के साथ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ
خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿۲۲﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ
بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاۗؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ
خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ
مِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَاۗءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَلَهٗ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ
الْمَثَلُ الْاَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾

आयत नं० 20 से 27

और उसी की (कुदरत की) **निशानियों में से एक यह** (बात) **है कि तुम को मिट्टी से पैदा किया** (या तो इस तरह कि आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा हुए जिन से सारी नस्ल चली और या इस तरह कि मनी की खुराक मिट्टी से पैदा होती है) **फिर थोड़े ही दिनों बाद** (क्या हुआ कि) **तुम इन्सान बन कर** (ज़मीन पर) **फैले हुए फिरते** (नज़र आते) **हो(20) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से** (एक) **यह** (बात) **है कि उसने तुम्हारे** (फ़ाइदे के) **लिए तुम्हारी जिन्स की बीवियां बनाईं** (और फ़ाइदा यह है कि) **ताकि तुम को उन के पास आराम मिले और तुम मियां बीवी में मुहब्बत और हमदर्दी पैदा की, इस** (बात) **में** (भी) **उन लोगों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं जो सोच समझ से काम लेते हैं(21) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से आसमान और ज़मीन का बनाना है और तुम्हारी बोलचाल और रंगरूप का अलग-अलग होना है, इस** (बात) **में** (भी) **समझदारों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं(22) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से तुम्हारा सोना लेटना है रात में और दिन में** (चाहे रात में ज़्यादा और दिन में कम हो) **और उसकी रोज़ी को तुम्हारा तलाश करना है** (दिन को ज़्यादा और रात को कम), **इस** (बात) **में** (भी) **उन लोगों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं जो** (दलील को ध्यान से) **सुनते हैं(23) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से यह** (बात) **है कि वो तुम को** (बारिश के वक़्त) **बिजली** (चमकती हुई) **दिखाता है जिससे** (उसके गिरने का) **डर भी होता है और** (उससे बारिश की) **उम्मीद भी होती है और वो ही आसमान से पानी बरसाता है फिर उससे ज़मीन को उस के मुर्दा हो जाने** (यानी सूख जाने) **के बाद ज़िन्दा** (यानी हरा भरा) **कर देता है, इस** (बात) **में** (भी) **उन लोगों के लिए** (कुदरत की) **निशानियां हैं जो समझ से काम लेते हैं(24) और उसी की** (कुदरत की) **निशानियों में से** (एक) **यह** (बात) **है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म** (यानी इरादे) **से क़ाइम** (और टिके) **हैं,** (और एक दिन यह सब ख़त्म हो जाएगा), **फिर** (उस वक़्त यह होगा कि) **जब तुम को पुकार कर ज़मीन में से बुलाए तो तुम फ़ौरन निकल पड़ोगे** (और दूसरी दुनिया शुरू हो जाएगी)(25) **और** (ऊपर कुदरत की दलीलों से मालूम हो गया होगा कि) **जितने** (फ़रिशते और इन्सान वग़ैरह) **आसमान और ज़मीन में मौजूद हैं सब उसी के हैं** (यानी सब का वो ही मालिक है, और) **सब उसी के हुक्म के ताबे हैं(26) और वो ही है जो पहली बार पैदा करता है** (जैसा कि सब जानते हैं) **फिर वो ही दोबारा पैदा करेगा** (जैसा कि बताया गया) **और यह** (दोबारा पैदा करना तो) **उसके लिए** (और भी) **ज़्यादा आसान** (है

जैसा कि किसी भी चीज़ को पहली बार बनाने से दोबारा बनाना आसान होता) **है, और आसमान और ज़मीन में उसी की शान** (सबसे) **ऊंची है** (यानी न आसमानों में कोई ऐसा बड़ा है और न ज़मीन में) **और वो** (बड़ा) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला है बस अपनी क़ुदरत से सब को दोबारा पैदा करेगा और) **हिकमत वाला** (है इसलिए क़ियामत के आने में भेद छुपा) **है(27)**

नोटः- अल्लाह तआ़ला की ज़ात की कोई मिसाल नहीं हो सकती।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ
فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۳۱﴾
مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا
رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَاۤ
اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۥ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۴﴾

आयत नं० 28 से 34

अल्लाह तआ़ला (शिर्क को बुरा और ग़लत साबित करने के लिए) **तुम से एक मिसाल तुम्हारे ही हालात में से बयान करते हैं,** (वो यह कि सोचो) **क्या तुम्हारे ग़ुलामों में कोई आदमी तुम्हारे उस माल में जो हम ने तुम को दिया है साझी है कि तुम और वो उसमें बराबर** (का हक़ रखते) **हों जिन को तुम** (ख़र्च के वक़्त) **ऐसा समझते हो जैसा अपने आपस** (के साझी) **को समझते हो** (और उन से इजाज़त लेकर ख़र्च किया करते हो, खुली बात है कि ग़ुलाम इस तरह साझी नहीं होता तो तुम्हारे बनाए हुए ये झूटे माबूद जो कि अल्लाह तआ़ला के ग़ुलाम हैं इबादत में उसके साझी कैसे हो सकते हैं), **हम इसी तरह समझदारों के लिए दलीलें साफ़-साफ़ बयान करते रहते हैं(28)** (सो चाहिए तो यह था कि सही बात मान लेते और शिर्क छोड़ देते) **लेकिन ये ज़ालिम लोग बिना** (किसी सही) **दलील** (के सिर्फ़) **अपनी** (ग़लत) **राय के पीछे चल रहे हैं सो जिसको** (उसकी

हटधर्मी की वजह से) **अल्लाह** (ही) **गुमराह करे उसको कौन राह पर लाए, और** (जब इन गुमराहों को अज़ाब होने लगेगा तो) **उन का कोई हिमायती** (व मददगार) **न होगा**(29) **बस तुम** (झूटे दीनों से अलग और) **एक तरफ़ होकर अपना मुंह इस** (सच्चे) **दीन की तरफ़ रक्खो,** (और सब) **अल्लाह की दी हुई फ़ितरत पर चलो जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है** (मतलब इस फ़ितरत से यह है कि अल्लाह तआ़ला ने पैदाइश से यह बात रक्खी है कि वो अगर हक़ बात को सुनना और समझना चाहे तो वो समझ में आ जाती है तो इस फ़ितरत से काम लो, और) **अल्लाह तआ़ला की इस पैदा की हुई चीज़ को जिस पर उसने सब लोगों को पैदा किया है बदलना न चाहिए, बस** (सीधा) **रास्ता दीन** (का) **ये ही है लेकिन अक्सर लोग** (इसको न सोचने की वजह से) **नहीं जानते** (इसलिए इस पर नहीं चलते)(30) **तुम अल्लाह की तरफ़ लौ लगाकर अल्लाह की दी फ़ितरत पर चलो और** (उसकी मुख़ालफ़त और) **उस** (पर सज़ा) **से डरो और** (इस्लाम क़ुबूल करके) **नमाज़ की पाबन्दी करो और** (उन) **शिर्क करने वालों में से मत रहो**(31) **जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया** (यानी सच्चा दीन तो एक था और झूटे बहुत हैं उन्होंने हक़ को छोड़ कर अलग-अलग रास्ते अपना लिये) **और बहुत से** (अलग-अलग) **गिरोह** (और फ़िरक़े) **हो गये,** (और उनमें) **हर फ़िरक़ा अपने उस तरीक़े पर ख़ुश है जो उन के पास है**(32) **और** (तौहीद के इनकार के बावजूद) **जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुंचती है** (उस वक़्त बेचैन होकर) **अपने** (सच्चे) **रब को उसी की तरफ़ लौ लगा कर पुकारने लगते हैं** (और सब माबूदों को छोड़ देते हैं मगर) **फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको अपनी तरफ़ से कुछ महरबानी का मज़ा चखा देता है तो बस उनमें से कुछ लोग** (फिर) **अपने रब के साथ शिर्क करने लगते हैं**(33) **जिसका मतलब यह है कि हमने जो** (आराम व ऐश) **उन को दिया है उसकी नाशुक्री करते हैं** (जो अक़्ल से भी बुरा है), **अच्छा कुछ दिन और मज़े उड़ा लो फिर जल्दी तुम को** (असलीयत का) **पता चल जाएगा**(34)

नोटः- अल्लाह तआ़ला ने हर इन्सान को अपनी फ़ितरत से मुसलमान पैदा किया है अगर उसके आस पास के माहौल में कोई ख़राब करने वाला ख़राब न कर दे तो हर पैदा होने वाला बच्चा मुसलमान ही होगा मगर होता यह है कि मां बाप उसको कभी-कभी इस्लाम के ख़िलाफ़ चीज़ें सिखा देते हैं जिस की वजह से वो इस्लाम पर क़ाइम नहीं रहता जैसा कि एक हदीस में है कि हर बच्चा अपनी फ़ितरत (यानी तौहीद) पर पैदा होता है फिर मां बाप उसको यहूदी या नसरानी बना देते हैं। (मुस्लिम)

أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا ۖ وَإِن
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ﴿٣٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَ
يَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾ فَآتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ
لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾ وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبًا لِّيَرْبُوَ فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُو
عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُونَ ﴿٣٩﴾ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ
رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِن شُرَكَائِكُم مَّن يَفْعَلُ مِن ذَٰلِكُم مِّن شَيْءٍ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾

आयत नं० 35 से 40

(और ये लोग जो शिर्क करते हैं तो उनसे कोई पूछे कि इसकी क्या वजह है) **क्या हम ने उन पर कोई सनद** (यानी कोई किताब) **उतारी है कि वो उन को अल्लाह के साथ शिर्क करने को कह रही है(35) और जब हम** (इन) **लोगों को कुछ महरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो वो उससे** (इस तरह) **खुश होते हैं** (कि खुशी में मस्त होकर शिर्क करने लगते हैं जैसा ऊपर ज़िक्र आया), **और अगर उनके** (बुरे) **कामों के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं उन पर कोई मुसीबत आती है तो बस वो लोग नाउम्मीद हो जाते हैं(36) क्या वो यह नहीं जानते कि अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी दे देता है और जिसको चाहे कम देता** (है इस बात को मुशरिक भी मानते हैं कि रोज़ी का घटाना बढ़ाना असल में अल्लाह ही काम) **है, इस** (बात) **में** (भी तौहीद की) **निशानियां हैं उन लोगों लिए जो ईमान रखते हैं** (यानी वो समझते हैं और दूसरे भी समझ सकते हैं कि जो ऐसा कुदरत वाला होगा वो ही इबादत का हक़दार होगा)(37) **बस** (जब रोज़ी देने वाला अल्लाह है तो कंजूसी न करो बल्कि) **रिश्तेदार को उसका हक़ दिया करो और** (इसी तरह) **ग़रीब और मुसाफ़िर को भी** (उनके हक़ दिया करो जिसके बारे में शरीअत की किताबों से पता कर सकते हो), **यह उन लोगों के लिए बेहतर है जो अल्लाह को राज़ी करना चाहते हैं, और ऐसे ही लोग कामयाब होने वाले हैं(38) और जो चीज़ तुम** (इस नीयत से किसी को) **दोगे कि वो लोगों के माल में** (शामिल होकर यानी उनके क़ब्ज़े में) **पहुंच कर** (तुम्हारे लिए) **ज़्यादा हो** (कर आ) **जाए** (जैसा शादियों में अक्सर इसी नीयत से तोहफ़े दिये जाते हैं) **तो यह अल्लाह के**

नज़दीक नहीं बढ़ता (क्योंकि अल्लाह के नज़दीक वो ही माल क़ुबूल होता और बढ़ता है जो अल्लाह को राज़ी करने के लिए ख़र्च किया जाए) **और जो ज़कात** (वग़ैरह) **दोगे जिससे अल्लाह को राज़ी करना चाहते हो तो ऐसे लोग** (अपने दिये हुए को) **अल्लाह के पास बढ़ाते रहेंगे**(39) **अल्लाह वो ही है जिसने तुम को पैदा किया फिर तुम को रोज़ी दी फिर तुम को मौत देता है फिर** (क़ियामत में) **तुम को ज़िन्दा करेगा,** (बस वो तो ऐसा क़ुदरत वाला है अब यह बताओ कि) **तुम जिन्हें अल्लाह का शरीक मानते हो उनमें भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ भी कर सके,** (और खुली बात है कि कोई भी नहीं, इसलिए साबित हुआ कि) **वो इनके शिर्क से पाक और बहुत ऊपर है** (यानी उसका कोई साझी नहीं)(40)

नोटः- हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि रिश्तेदारों का हक़ उस आदमी के लिए जो माल रखता है यह है कि माल से उनकी मदद करे और जिसके पास माल न हो वो बदन से ख़िदमत करे और ज़बानी हमदर्दी करे। (क़ुरतबी)

मसअलाः- तोहफ़ा देने वाले को इस पर नज़र रखना कि उसका बदला मिलेगा यह बहुत बुरी बात है जिसको ऊपर आयत में मना किया गया है। लेकिन अपनी ख़ुशी से अपने तोहफ़ा देने वाले को अपना मौक़ा होने पर ख़ुद भी कोई तोहफ़ा दे देना अच्छा है जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते शरीफ़ा भी ये ही थी कि जो आदमी आप को कोई तोहफ़ा देता तो अपने मौक़े पर आप भी उस को तोहफ़ा देते। हां मगर उसकी सूरत ऐसी न बनाए कि तोहफ़ा देने वाला उसको बदला समझे।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾
قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾ فَأَقِمْ وَجْهَكَ
لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يَصَّدَّعُونَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا فَلِأَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُونَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 41 से 45

(शिर्क और गुनाह ऐसी बुरी चीज़ है कि) **ज़मीन और दरिया** (यानी सारी दुनिया) **में लोगों के** (बुरे) **कामों की वजह से मुसीबतें आ रही हैं** (जैसे सूखा पड़ना तूफ़ान आना और वबाई बीमारियां)

ताकि अल्लाह तआ़ला उनके कुछ कामों (की सज़ा) **का मज़ा उन को चखा दे ताकि वो** (अपने उन कामों से) **बाज़ आजाएं**(41) (अगर मुशरिक लोगों को इसे मानने में झिजक हो तो) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि मुल्क में चलो फिरो फिर देखो कि जो** (काफ़िर व मुशरिक) **लोग पहले हो चुके हैं उन का अन्जाम कैसा हुआ, उनमें अक्सर मुशरिक ही थे** (सो देख लो वो आसमानी अज़ाब से किस तरह हलाक हुए जिससे साबित हुआ कि शिर्क का बड़ा वबाल है)(42) **सो** (बस) **तुम अपना मुंह इस सच्चे दीन** (यानी इस्लाम) **की तरफ़ रक्खो इससे पहले कि ऐसा दिन आए जिसको फिर अल्लाह की तरफ़ से हटना न होगा** (यानी जैसे दुनिया में ख़ास अज़ाब के वक़्त को अल्लाह तआ़ला क़ियामत के वादे पर हटाता जाता है जब वो आने वाला दिन आजाएगा फिर उसको न हटाएगा और) **उस दिन** (यह होगा कि) **सब** (अच्छे बुरे काम करने वाले) **लोग** (अन्जाम के हिसाब से) **अलग-अलग हो जाएंगे**(43) (इस तरह कि) **जो आदमी कुफ़्र कर रहा है उस पर तो उस का कुफ़्र** (का वबाल) **पड़ेगा और जो नेक काम कर रहा है सो ये लोग अपने** (नफ़े के) **लिए सामान कर रहे हैं**(44) **जिस का नतीजा यह होगा कि अल्लाह तआ़ला उन लोगों को अपनी महरबानी से** (नेक) **बदला देगा जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये,** (और काफ़िर लोग नाकाम रहेंगे जिसकी वजह यह है कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला काफ़िरों को पसन्द नहीं करता** (बल्कि उनके कुफ़्र पर उन से नाराज़ है)(45)

नोटः- हज़रत थानवी रह० कहते हैं कि जिस मुसीबत के साथ इन्सान को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ध्यान अपने गुनाहों पर पछतावा और तौबा व इस्तिग़फ़ार की तरफ़ लगाव ज़्यादा हो जाए वो निशानी इसकी है कि यह क़हर नहीं बल्कि महरबानी है और जिसको यह सूरत न बने बल्कि घबराहट व बेचैनी और गुनाहों की तरफ़ ध्यान और ज़्यादा बढ़ जाए वो निशानी क़हरे इलाही और अज़ाब की है।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ
فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ
الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي
السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ

إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلِ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْهِم مِّن قَبْلِهِ لَمُبْلِسِينَ ﴿٤٩﴾ فَانظُرْ إِلَىٰ آثَارِ رَحْمَتِ
اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا
فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوا مِن بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ﴿٥١﴾ فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا
مُدْبِرِينَ ﴿٥٢﴾ وَمَا أَنتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَن ضَلَالَتِهِمْ ۖ إِن تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُم مُّسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾

आयत नं० 46 से 53

और अल्लाह तआ़ला की (क़ुदरत व नेमत और उसके एक होने की) **निशानियों में से एक यह** (भी) **है कि वो** (बारिश से पहले) **हवाओं को भेजता है कि वो** (बारिश की) **ख़ुशख़बरी देती हैं और ताकि तुम को अपनी** (इस) **रहमत** (बारिश) **का मज़ा चखा दे** (यानी बारिश के फ़ाइदे पहुंचाए) **और** (इस वास्ते हवा भेजता है) **ताकि** (उस हवा से चलने वाली) **कशतियां उन के हुक्म से** (पानी में) **चलें और ताकि** (इस तरह दरिया के सफ़र से) **तुम उस की रोज़ी को तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो(46) और हम ने आप से पहले बहुत से पैग़म्बर उन की क़ौमों के पास भेजे और वो उनके पास** (हक़ की खुली-खुली) **दलीलें लेकर आए** (जिस पर कुछ ईमान लाए और कुछ न लाए) **सो हम ने उन लोगों से बदला लिया जो मुजरिम थे, और ईमान वालों की मदद करना हमारे ज़िम्मे था** (वो बदला अल्लाह का अज़ाब था और उसमें काफ़िरों का हलाक होना या उन का हार जाना और मुसलमानों का बच जाना और उनका जीत जाना है)**(47) अल्लाह ऐसा** (क़ुदरत वाला) **है कि वो हवाएं भेजता है फिर वो** (हवाएं) **बादलों को उठाती हैं फिर अल्लाह तआ़ला उस** (बादल) **को** (कभी तो) **जिस तरह चाहता है आसमान में** (यानी ऊपर) **फैला देता है और** (कभी) **उस को टुकड़े-टुकड़े कर** (के घटा बना) **देता है फिर तुम बारिश को देखते हो कि उस** (बादल) **के अन्दर से बरसती है फिर जब वो** (बारिश) **अपने बन्दों में से जिसको चाहे पहुंचा देता है तो बस वो ख़ुशी मनाने लगते हैं(48) और वो लोग इस** (बारिश के बरसने) **से पहले** (बिल्कुल ही) **ना उम्मीद** (हो रहे) **थे** (यानी अभी-अभी ना उम्मीद थे और अभी ख़ुश हो गये जैसा कि देखा भी जाता है)**(49) सो** (ज़रा) **अल्लाह की रहमत** (यानी बारिश) **के आसार** (तो) **देखो कि अल्लाह तआ़ला** (इसके वास्ते से) **ज़मीन को उसके मुर्दा होने** (यानी सूख जाने) **के बाद किस तरह ज़िन्दा** (यानी हरा भरा) **करता है,** (तो जिस ख़ुदा ने मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया) **कुछ शक नहीं कि वो ही** (अल्लाह) **मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वो हर चीज़ पर क़ुदरत**

रखने वाला है(50) और अगर हम उन पर और (क़िस्म की) **हवा चलाएं फिर** (उस हवा से) **ये लोग खेती को** (सूखी और) **पीली देखें** (कि उसकी हरियाली जाती रही) **तो ये उसके बाद नाशुक्री करने लगें** (और पहली सब नेमतों को भूल जाएं)**(51) सो** (जब उनकी बेपरवाई और नाशुक्री इस दर्जा की है तो इससे यह भी साबित हुआ कि ये बिल्कुल ही बेहिस हैं तो उनके ईमान न लाने पर ग़म करना बेकार है, क्योंकि) **आप मुर्दों को** (तो) **नहीं सुना सकते और बहरों को** (भी) **आवाज़ नहीं सुना सकते** (ख़ास कर) **जब कि पीठ फेर कर चल दें** (कि इशारे को भी न देखें)**(52) और** (इसी तरह) **आप** (ऐसे) **अन्धों को** (जो कहना न मानें) **उनकी बे राही से राह पर नहीं ला सकते, आप तो बस उनको सुना सकते हैं जो हमारी आयतों का यक़ीन रखते हैं** (और) **फिर वो मानते** (भी) **हैं** (और जब ये लोग मुर्दों, बहरों अन्धों के जैसे हैं फिर इन से ईमान की उम्मीद न रखिए और ग़म न कीजिए)**(53)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि मोमिनों की मदद करना अल्लाह तआ़ला ने अपनी महरबानी से अपने ज़िम्मे ले लिया है और कभी कहीं हार हो जाती है तो हमारी ही कमी की वजह से होता है।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّ شَیْبَةً ؕ یَخْلُقُ
مَا یَشَآءُ ۚ وَ هُوَ الْعَلِیْمُ الْقَدِیْرُ ﴿۵۴﴾ وَ یَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ یُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ۬ مَا لَبِثُوْا غَیْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ
كَانُوْا یُؤْفَكُوْنَ ﴿۵۵﴾ وَ قَالَ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَ الْاِیْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰی یَوْمِ الْبَعْثِ ٘ فَهٰذَا یَوْمُ
الْبَعْثِ وَ لٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۵۶﴾ فَیَوْمَىِٕذٍ لَّا یَنْفَعُ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَ لَا هُمْ یُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۵۷﴾ وَ
لَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَ لَىِٕنْ جِئْتَهُمْ بِاٰیَةٍ لَّیَقُوْلَنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا
مُبْطِلُوْنَ ﴿۵۸﴾ كَذٰلِكَ یَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰی قُلُوْبِ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۵۹﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لَا یَسْتَخِفَّنَّكَ
الَّذِیْنَ لَا یُوْقِنُوْنَ ﴿۶۰﴾ ۧ

आयत नं० 54 से 60

अल्लाह ऐसा है जिसने तुम को कमज़ोरी की हालत में बनाया (इससे मुराद शुरू की बचपन की हालत है) **फिर** (उस) **कमज़ोरी के बाद ताक़त** (यानी जवानी) **दी फिर** (उस) **ताक़त के**

बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा किया, (और) **वो जो चाहता है पैदा करता है, और वो सब कुछ जानने वाला** (और सब कुछ करने की) **क़ुदरत** (रखने) **वाला** (है बस जो ऐसा क़ुदरत वाला हो उसको दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल) **है(54) और जिस दिन क़ियामत होगी मुजरिम** (यानी काफ़िर) **लोग** (वहां की परीशानी से घबराकर) **क़सम खालेंगे कि** (क़ियामत बहुत जल्दी आगई और) **वो** (यानी हम) **लोग** (बरज़ख़ में) **एक घड़ी से ज़्यादा नहीं रहे** (यानी क़ियामत अपने तय वक़्त से पहले ही आगई), **इसी तरह ये लोग** (दुनिया में) **उल्टे चला करते** (थे यानी इसी तरह दुनिया में क़ियामत के आने का इनकार करते थे और न आने की क़समें खाया करते) **थे(55) और जिन लोगों को ईमान और इल्म मिला है** (यानी ईमान वाले कि उनको शरीअत की ख़बरों का इल्म है) **वो** (इन मुजरिमों के जवाब में) **कहेंगे कि** (तुम्हारा कहना ग़लत है बल्कि) **तुम अल्लाह तआ़ला की लिखी तक़दीर के मुवाफ़िक़ क़ियामत के दिन तक** (बरज़ख़ में) **रहे सो क़ियामत का दिन ये ही है लेकिन** (क़ियामत को वक़्त से पहले आया हुआ समझने की वजह यह है कि) **तुम** (दुनिया में क़ियामत के आने का) **यक़ीन** (और ऐतक़ाद) **नहीं करते** (थे बल्कि झुटलाते और इनकार किया करते) **थे(56) बस उस दिन ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **को उन का** (किसी क़िस्म की झूटी सच्ची) **मजबूरी बताना नफ़ा न देगा और न उन से अल्लाह की नाराज़ी दूर करने को कहा जाएगा** (यानी इसका मौक़ा न दिया जाएगा कि तौबा करके अल्लाह को राज़ी करलें)(57) **और हम ने लोगों** (की नसीहत) **के वास्ते इस क़ुरआन में हर तरह की अच्छी-अच्छी** (और ज़रूरी) **बातें बयान की हैं** (मगर काफ़िरों ने हटधर्मी से इसको न क़ुबूल किया और न इससे नफ़ा उठाया), **और** (काफ़िरों की हटधर्मी इतनी बढ़ गई है कि) **अगर** (क़ुरआन के सिवा उन मोजिज़ों में से जिनको ये ख़ुद मांगा करते हैं) **आप उनके पास कोई निशानी ले आएं तब भी ये लोग जो काफ़िर हैं ये ही कहेंगे कि तुम सब** (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सब मुसलमान) **झूटे हो(58)** (और इन लोगों की हटधर्मी की वजह यह है कि) **जो लोग** (सच्चे दीन की निशानियां देखने के बावजूद) **यक़ीन नहीं करते** (और न इसके हासिल करने की कोशिश करते) **अल्लाह तआ़ला उनके दिलों पर बन्द लगा देते हैं** (जिससे रोज़ाना समझ कम होती जाती है)(59) **सो** (जब ये ऐसे हटधर्म हैं तो इनके सताने पर) **आप सब्र कीजिए बेशक अल्लाह का वादा** (कि आख़ीर में ये नाकाम और मुसलमान कामयाब होंगे) **सच्चा है** (वो वादा ज़रूर पूरा होगा बस थोड़े ही दिन सब्र करना है) **और ये यक़ीन न करने वाले लोग आप को बेसहार न करने पाएं** (यानी उन की तरफ़ से चाहे कैसी ही बात पेश आए मगर ऐसा न हो कि आप सब्र और सहार न करें)(60)

बरज़ख़ः- 'बरज़ख़' वो जगह है जहां मौत से क़ियामत तक रहना है इसको आलमे क़ब्र भी कहते हैं।

नोटः- क़ियामत में मौक़े के हिसाब से हालात अलग-अलग होंगे एक मौक़ा वो होगा जब बोल ही न सकेंगे। एक मौक़ा वो होगा जब झूट बोलने की हिम्मत न होगी और एक मौक़ा वो होगा जब आज़ादी होगी कि जो चाहे बयान दे। झूट बोले या सच। जब इन्सान झूट बोलेगा तो उसके मुंह पर बन्द लगा कर उसके हाथ पांव से गवाही ली जाएगी। और वो सचमुच सारा क़िस्सा बयान कर देंगे। जिस पर फ़ैसला हो जाएगा।

31-सूरत-लुक़मान

इस मक्की सूरत में '4' रूकू और '34' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ﴿۱﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿۲﴾ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳﴾ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ
هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ
لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّ يَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۶﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى
عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۷﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿۸﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۹﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَ اَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَ بَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَاۗبَّةٍ ۭ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ
مَاۗءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿۱۰﴾ هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۱﴾

आयत नं० 01 से 11

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **ये आयतें हैं एक हिकमत वाली किताब** (यानी कुरआन) **की(02) जो कि हिदायत और रहमत** (का सामान) **है** (उन) **नेक लोगों के लिए(03) जो नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और ज़कात अदा करते हैं और वो लोग आख़रत का पूरा यक़ीन रखते हैं(04)** (सो) **ये लोग** (इस कुरआन पर ऐतक़ाद और अमल की वजह से) **अपने रब के सीधे रास्ते पर हैं और ये ही लोग** (सीधे रास्ते पर चलने की वजह से) **कामयाब होने वाले हैं(05) और कुछ लोग ऐसे** (भी) **हैं जो** (कुरआन से मुंह मोड़ कर) **उन बातों के ख़रीदार बनते** (हैं यानी ऐसी बातें अपनाते) **हैं जो** (अल्लाह की याद से) **भूल में डालने वाली हैं** (जैसे नाच गाने खेल तमाशे) **ताकि** (उससे दूसरों को भी) **अल्लाह की राह** (यानी सच्चे दीन से) **बे समझे बूझे गुमराह करें और** (गुमराह करने के साथ) **उस** (राहे हक़) **की हंसी उड़ाएं** (ताकि

दूसरों के दिल से भी उसकी इ़ज़्ज़त और असर निकल जाए, और) **ऐसे लोगों के लिए** (आख़रत में) **रूसवा करने वाला अज़ाब** (होने वाला) **है(06) और** (ऐसे आदमी की बेपरवाई की यह हालत है कि) **जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो वो आदमी घमन्ड करता हुआ** (ऐसे) **मुंह मोड़ लेता है जैसे उसने सुना ही नहीं जैसे उसके कानों में बहरापन है सो उस** (आदमी) **को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दीजिए(07)** (और) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन के लिए** (ऐसी) **ऐश की जन्नतें हैं(08) जिनमें वो सदा रहेंगे, यह अल्लाह का सच्चा वादा है, और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला** (है कि अपने किये वादे को अपनी क़ुदरत और हिकमत से पूरा कर सकता) **है(09) अल्लाह ने आसमानों को बिना सतून** (व पिलर के) **बनाया** (जैसा कि) **तुम उनको देख रहे हो और ज़मीन में** (भारी-भारी) **पहाड़ रख दिये हैं कि वो** (ज़मीन) **तुम को लेकर डगमगाने न लगे और उस** (ज़मीन) **में हर क़िस्म के जानवर फैला रक्खे हैं, और हमने आसमान से पानी बरसाया फिर उस ज़मीन में हर तरह के अच्छे क़िस्म के** (पेड़ पौधे) **उगाए(10)** (और उन लोगों से जो शिर्क करते हैं कहिए कि) **ये तो अल्लाह तआ़ला की बनाई हुई चीज़ें हैं** (तो) **अब तुम लोग मुझ को दिखाओ कि उसके सिवा जो** (ख़ुदा ने बना रक्खे) **हैं उन्होंने क्या-क्या चीज़ें पैदा की हैं** (ताकि उन का इबादत का हक़दार होना साबित हो जाए, और यह दलील सुन कर उन्हें रास्ते पर आजाना चाहिए था मगर उन्होंने नहीं माना) **बल्कि ये ज़ालिम लोग** (उसी तरह) **खुली गुमराही में** (पड़े) **हैं(11)**

नोटः- जिन कामों में न दीन का कोई फ़ाइदा हो और न दुनिया का वो सब बुरे हैं और जिन कामों (खेलों) में दुनिया का फ़ाइदा हो और दीन का नुक़सान न हो वो जाइज़ हैं।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ
حَمِيْدٌ ۝١٢ وَ اِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَ هُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝١٣ وَ وَصَّيْنَا
الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّ فِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَ لِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ
الْمَصِيْرُ ۝١٤ وَ اِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَ صَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا
مَعْرُوْفًا ٞ وَّ اتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٥ يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ
تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ

خَبِيْرٌ ۝١٦ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ
الْاُمُوْرِ ۝١٧ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝١٨ وَ
اقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ۭ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ۝١٩

आयत नं० 12 से 19

और हमने लुक़्मान को हिकमत (यानी ख़ास समझदारी) **दी** (जिसकी असलीयत इल्म पर अमल करना है और साथ ही यह हुक्म दिया) **कि** (सब नेमतों पर) **अल्लाह तआ़ला का शुक्र करते रहो, और जो आदमी शुक्र करेगा वो अपने ही नफ़े के लिए शुक्र करता है** (क्योंकि इससे नेमत में तरक़्क़ी होती है) **और जो नाशुक्री करेगा तो** (अपना ही नुक़सान करेगा क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला** (तो) **बेपरवाह** (है कि किसी का मुहताज नहीं और सब) **ख़ूबियों वाला है** (कि उसको किसी की सना और तारीफ़ की ज़रूरत नहीं)(12) **और** (उन बातों को याद करो) **जब लुक़्मान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि बेटा अल्लाह के साथ किसी को शरीक मत बनाना, बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है**(13) **और** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) **हम ने इन्सान को उसके मां बाप के बारे में हुक्म दिया है** (कि उनका कहना माने और ख़िदमत करे क्योंकि उन्होंने उसके लिए बड़ी तकलीफ़ें उठाई हैं ख़ास कर) **उसकी मां ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी उठा कर उस को पेट में रक्खा** (क्योंकि जैसे-जैसे बच्चा पेट में बढ़ता जाता है मां की कमज़ोरी बढ़ती जाती है) **और** (फिर) **दो साल में उसका दूध छुटता** (है इन दिनों में भी वो हर तरह की देखभाल और ख़िदमत करती है इसी तरह बाप भी अपने हिसाब से मेहनत करता है इसलिए हमने अपने हक़ के साथ मां बाप के हक़ अदा करने का हुक्म दिया) **है कि तू मेरा और अपने मां बाप का शुक्र अदा किया कर** (अल्लाह का शुक्र तो इबादत और ताबेदारी करना है और मां बाप का शुक्र ख़िदमत करना है, क्योंकि) **मेरी ही तरफ़** (सब को) **लौट कर आना** (है उस वक़्त मैं अच्छे बुरे कामों का फल और सज़ा दूंगा इसलिए हुक्म मानना ज़रूरी) **है**(14) **और** (मां बाप का इतना बड़ा हक़ होने के बावजूद तौहीद ऐसी चीज़ है कि) **अगर तुझ पर वो दोनो** (भी) **इस बात का ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को शरीक ठहराए जिस** (के ख़ुदाई में शरीक होने) **की तेरे पास कोई दलील** (और सनद) **न हो** (और खुली बात है कि कोई भी चीज़ ऐसी नहीं, मतलब यह कि शिर्क न करना) **तो तू उनका कहना न मानना और** (हां यह ज़रूरी है कि) **दुनिया** (की ज़रूरतों) **में** (जैसे

उनका ज़रूरी ख़र्च और ख़िदमत) **उनके साथ भलाई से रहो, और** (दीन के बारे में सिर्फ़) **उस** (ही) **आदमी की राह पर चलना जिसने मुझ से लौ लगा रक्खी** (हो यानी मेरे हुक्मों पर चलता) **हो, फिर तुम सब को मेरे पास आना है फिर** (आने के वक़्त) **मैं तुम को जितला दूंगा जो-जो कुछ तुम करते थे**(15) (और लुक़मान ने अपने बेटे को यह भी नसीहत की कि) **बेटा** (अल्लाह तआ़ला का इल्म और क़ुदरत इस दर्जा है कि) **अगर** (किसी का) **कोई काम** (कैसा ही छुपा हो जैसे मान लो कि वो) **राई के दाने के बराबर हो** (और) **फिर** (मान लो कि) **वो किसी पत्थर के अन्दर** (छुपा रक्खा) **हो या वो आसमानों के अन्दर हो या वो ज़मीन के अन्दर हो** (लेकिन अल्लाह तआ़ला की ऐसी शान है कि) **तब भी** (क़ियामत के दिन हिसाब के वक़्त) **उस को अल्लाह तआ़ला हाज़िर कर देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला छुपी हुई चीज़ों का जानने वाला** (और) **ख़बरदार है**(16) (और नेक कामों के बारे में यह नसीहत की, कि) **बेटा नमाज़ पढ़ा करो** (कि ईमान के बाद ऊंचे दर्जे का नेक काम है) **और** (लोगों को भी) **अच्छे कामों की नसीहत किया करो और बुरे कामों से मना किया करो और** (इन कामों में) **तुम पर जो मुसीबत आए उस पर सब्र किया करो, यह** (सब्र करना) **हिम्मत के कामों में से है**(17) (और अख़लाक़ व आदतों के बारे में यह नसीहत की, कि बेटा) **लोगों से** (घमन्ड करते हुए) **अपना मुंह मत फेरो और ज़मीन पर इतरा कर मत चलो, बेशक अल्लाह तआ़ला किसी घमन्ड करने वाले शैख़ी बाज़ को पसन्द नहीं करते**(18) **और अपनी रफ़्तार में बीच की चाल रक्खो** (न बहुत दौड़ कर चलो और न बहुत आहिस्ता गिन-गिन कर क़दम रखना कि यह घमन्डियों का तरीक़ा है) **और** (बोलने में) **अपनी आवाज़ को धीमी रक्खो** (यानी बहुत ऊंची आवाज़ न हो न इतनी धीमी कि दूसरे भी न सुन सकें), **बेशक आवाज़ों में सब से बुरी आवाज़ गधों की आवाज़** (होती है तो आदमी होकर गधों की तरह चीख़ना और चिल्लाना क्या ठीक है और चीख़ने चिल्लाने से अक्सर दूसरों को तकलीफ़ भी) **होती है**(19)

नोटः- हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम से किसी ने पूछा कि आप को यह रूतबा कैसे मिला कि लोग आप की इज़्ज़त करते हैं आप ने फ़रमाया कि "हमेशा सच बोलना, बेकार बातों से परहेज़ करना, हलाल रोज़ी पर तसल्ली रखना, अपनी नज़र को नीची रखना, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करना, एहद को पूरा करना, महमान का इकराम करना और पड़ौसी की हिफ़ाज़त करना"।

(इब्ने कसीर)

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ
النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾ وَإِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ
قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ أَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ إِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾ وَمَنْ يُّسْلِمْ
وَجْهَهٗٓ إِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَإِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْأُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا
يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ
نَضْطَرُّهُمْ إِلٰى عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾

आयत नं० 20 से 25

क्या तुम लोगों ने यह नहीं देखा (यानी नहीं जाना) **कि अल्लाह तआ़ला ने सब चीज़ों को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है जो कुछ आसमानों में** (मौजूद) **हैं और जो कुछ ज़मीन में** (मौजूद) **हैं** (चाहे बिना वास्ता काम आती हों या वास्ते से) **और उसने तुम पर अपनी नेमतें खुली और छुपी पूरी कर रक्खी हैं** (खुली वो कि आंख कान से मालूम हों और छुपी वो कि जो अक़्ल से समझी जाएं), **और** (इसके बावजूद कि इस दलील से अल्लाह का एक होना साबित होता है मगर) **कुछ आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला के बारे में** (यानी उसकी तौहीद में) **बिना जानकारी** (यानी ज़रूरी इल्म) **और बिना दलील और बिना किसी रौशन किताब के झगड़ा** (यानी बहसें किया) **करते हैं(20) और जब उन से कहा जाता है कि उस चीज़ पर चलो जो अल्लाह तआ़ला ने उतारी है** (यानी हक़ को साबित करने वाली दलीलों को सोच कर उन पर चलो) **तो जवाब में कहते हैं कि** (हम उस पर) **नहीं** (चलते) **हम** (तो) **उसी पर चलेंगे जिस पर हम ने अपने बड़ों को पाया है,** (आगे उन की बात का जवाब है कि) **क्या अगर शैतान उन के बड़ों को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़** (यानी गुमराही की तरफ़ जिस का अन्जाम दोज़ख़ का अज़ाब है) **बुलाता रहा हो तब भी** (उन्हीं के तरीक़े पर चलेंगे)**(21) और जो आदमी** (सच्चे दीन पर चलकर) **अपना मुंह अल्लाह की तरफ़ झुकादे** (यानी मुसलमान हो जाए) **और** (इसके साथ) **वो** (सच्चा और) **मुख़लिस भी** (हो यानी सिर्फ़ दिखावे का इस्लाम न) **हो तो उसने बड़ा मज़बूत कड़ा थाम लिया** (यानी वो उस आदमी जैसा हो गया जो किसी मज़बूत रस्सी का कड़ा हाथ में थाम कर गिरने से बचा रहता है इसी तरह यह आदमी भी नुक़सान से बच गया), **और सब कामों का आख़री अन्जाम अल्लाह ही**

की तरफ़ पहुंचेगा (बस ये काम यानी अच्छे या बुरे रास्ते पर चलना भी उसके सामने पेश होंगे बस वो हर एक को ठीक फल व सज़ा देगा)(22) **और जो आदमी** (हक़ को साबित करने वाली दलीलों के बावजूद) **कुफ़्र करे तो आप उसके कुफ़्र का ग़म न करें, उन सब को हमारे ही पास लौटना है तो हम उन सब को बता देंगे जो कुछ वो** (दुनिया में) **किया करते थे,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला को** (तो) **दिलों की बातें** (तक) **ख़ूब मालूम हैं** (तो खुले कामों की तो बात ही क्या)(23) **हम उन्हें कुछ दिनों का ऐश दिये हुए हैं फिर उनको धीरे-धीरे एक सख़्त अज़ाब की तरफ़ ले आएंगे**(24) **और अगर आप उन से पूछें कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है तो ज़रूर ये ही जवाब देंगे कि अल्लाह ने,** (इस पर) **आप कहिए कि अलहम्दु लिल्लाह** (बस जो पैदा करने वाला है वो ही इबादत का हक़दार है मगर ये लोग फिर भी नहीं मानते), **बल्कि इन में अक्सर लोग समझ से काम नहीं लेते**(25)

नोटः- सब चीज़ों को इन्सान के काम में लगाने का मतलब यह है कि सभी चीज़ें किसी न किसी सूरत में इन्सान के काम आती हैं चाहे बिना वास्ते के (जिन्हें हम जानते हैं)या किसी वास्ते से (जिन्हें हम नहीं जानते) ।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّ مَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ
يَمُدُّهٗ مِنْ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾ مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا
كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۡ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا
اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

आयत नं० 26 से 32

(और अल्लाह की वो शान है कि) **जो कुछ आसमान व ज़मीन में मौजूद है सब अल्लाह ही का** (है यानी वो ही मालिक) **है, और बेशक अल्लाह तआ़ला** (ख़ुद अपनी ज़ात में भी)

बेनियाज़ (है कि किसी का मुहताज नहीं और) **सब ख़ूबियों वाला** (है बस इबादत का हक़दार वो ही) **है**(26) **और** (उसकी ख़ूबियां इतनी ज़्यादा हैं कि) **जितने पेड़ ज़मीन भर में हैं अगर वो सब क़लम बन जाएं** (यानी उन को काट-काट कर क़लम बना लिये जाएं और इस तरह एक-एक पेड़ से हज़ारों क़लम बन जाएंगे) **और यह जो समन्दर है इसके सिवा सात समन्दर** (रोशनाई की जगह) **इसमें और शामिल हो जाएं** (और फिर उन क़लमों और रोशनाई से अल्लाह तआला की ख़ूबियां लिखनी शुरू करें) **तो** (सब क़लम रोशनाई ख़त्म हो जाए और) **अल्लाह** (की ख़ूबियों) **की बातें ख़त्म न हों, बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है**(27) (और वो ऐसा क़ुदरत वाला है कि) **तुम सब का** (पहली बार) **पैदा करना और** (दूसरी बार) **ज़िन्दा करना** (उसके नज़दीक) **बस ऐसा है जैसा एक आदमी का** (पैदा करना और ज़िन्दा करना), **बेशक अल्लाह तआला सब कुछ सुनता और सब कुछ देखता है** (बस जो लोग इन दलीलों के बावजूद क़ियामत का इनकार और गुनाह कर रहे हैं उन सब को देख रहा है उनको सज़ा देगा)(28) **ऐ लोगो क्या तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह तआला रात** (के कुछ हिस्से) **को दिन में और दिन** (के कुछ हिस्से) **को रात में मिला देता है और उसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है कि हर एक ठहराए वक़्त** (क़ियामत) **तक चलता रहेगा और** (क्या तुझ को) **यह** (मालूम नहीं) **कि अल्लाह तआला तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखता है**(29) **यह सब कुछ इसलिए है कि अल्लाह ही का वजूद सच्चा है और जिन चीज़ों की अल्लाह के सिवा ये लोग इबादत कर रहे हैं वो बिल्कुल ही बेबुनियाद हैं और अल्लाह ही ऊंची शान वाला और** (सब से) **बड़ा है**(30) **क्या** (लोगों) **तुम्हें** (तौहीद की) **यह** (दलील) **मालूम नहीं कि अल्लाह ही की महरबानी से कशती दरिया में चलती है ताकि तुम को अपनी** (क़ुदरत की) **निशानियां दिखा दे** (जैसा कि हर चीज़ अपने पैदा करने वाले के वजूद की दलील है), **बेशक इसमें** (भी क़ुदरत की) **निशानियां हैं हर ऐसे आदमी के लिए जो सब्र करने वाला शुक्र करने वाला हो** (यानी मोमिन कि पूरा सब्र करने वाला शुक्र करने वाला वो ही होता है)(31) **और जब उन लोगों को** (दरिया की) **लहरें सायबानों** (यानी बादलों) **की तरह** (चारों तरफ़ से) **घेर लेती हैं तो ख़ालिस ऐतक़ाद करके अल्लाह ही को पुकारने लगते हैं, फिर जब उन को बचा कर** (सूखी) **ज़मीन की तरफ़ ले आता है तो कुछ तो उनमें सीधे रास्ते पर रहते** (हैं कि शिर्क को छोड़ कर तौहीद अपना लेते) **हैं, और** (कुछ फिर हमारी आयतों का इनकार करने लगते हैं और) **हमारी आयतों का बस वो ही लोग इनकार करते हैं जो वादा तोड़ने वाले और नाशुक्रे हैं** (कि कशती में जो अल्लाह के एक मानने का वादा किया था उसको तोड़

दिया और सूखे में आकर जो शुक्र करना था उस को छोड़ दिया)(32)

नोटः- सारी दुनिया के लोगों को जितना इल्म दिया गया है वो सब मिला कर भी अल्लाह तआ़ला के इल्म के सामने बहुत थोड़ा है।

يَاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ
يُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌۢ بِاَيِّ اَرْضٍ
تَمُوْتُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

आयत नं० 33 से 34

ऐ लोगो अपने रब (की नाराज़ी) **से डरो** (और कुफ़्र शिर्क छोड़ दो) **और उस दिन से डरो जिसमें न कोई बाप अपने बेटे के कुछ काम आएगा और न कोई बेटा ही अपने बाप के कुछ काम आएगा,** (और यह दिन ज़रूर आने वाला है क्योंकि इसके बारे में अल्लाह का वादा है और) **बेशक अल्लाह का वादा सच्चा** (होता) **है बस तुम को दुनिया की ज़िन्दगानी धोके में न डाले** (कि इसमें लग कर उस दिन को भूल जाओ) **और न तुम को वो धोकेबाज़** (यानी शैतान) **अल्लाह से धोके में डाले** (कि तुम उसके बहकाने में आ जाओ कि अल्लाह तुम को अज़ाब न देगा)(33) **बेशक अल्लाह ही को क़ियामत की** (घड़ी की) **ख़बर है और वो ही** (अपने इल्म के मुवाफ़िक़) **बारिश बरसाता है और वो ही जानता है जो कुछ** (लड़की या लड़का) **मां के पेट में है, और कोई आदमी नहीं जानता कि वो कल क्या काम करेगा** (इसकी भी उसी को ख़बर है), **और कोई आदमी नहीं जानता कि वो किस ज़मीन में मरेगा** (इसकी भी उसी को ख़बर है और इन्हीं चीज़ों की क्या ख़ास बात है जितनी ग़ैब की चीज़ें हैं) **बेशक अल्लाह** (ही इन) **सब बातों का जानने वाला** (और इन की) **ख़बर रखने वाला** (है कोई दूसरा इसमें शरीक नहीं) **है**(34)

नोटः- बाप और बेटे का एक दूसरे को क़ियामत में नफ़ा न पहुंचाने का जो बयान ऊपर आयत में आया है वो उस सूरत में है जब कि दोनों में से एक काफ़िर हो कि मोमिन किसी काफ़िर के कुछ काम नहीं आ सकता चाहे कितना ही नज़दीकी रिश्तेदार हो लेकिन एक मोमिन का दूसरे मोमिन के लिए सिफ़ारिश करना और सिफ़ारिश का क़ुबूल होना दूसरी आयतों और हदीसों से साबित है।

32-सूरत-सजदा

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '30' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓمّٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ
قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ۝٣ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۗ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۗ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ
مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝٥ ذٰلِكَ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٦ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ۝٧ ثُمَّ
جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ۝٨ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ ۗ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٩

आयत नं० 01 से 09

अलिफ़ लाम मीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **यह** (अल्लाह की) **उतारी हुई किताब है** (और) **इसमें कुछ शक नहीं** (कि) **यह सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **की तरफ़ से** (है जैसा कि इस किताब का मोजिज़ा होना खुद इसकी दलील) **है(02) क्या ये** (इनकार करने वाले) **लोग यह कहते हैं कि पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने यह अपने दिल से बना लिया** (है यह कहना ग़लत और झूट) **है** (यह बनाया हुआ नहीं) **बल्कि यह सच्ची किताब है** (जो) **आप के रब की तरफ़ से** (आई है) **ताकि आप** (इससे) **ऐसे लोगों को** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराएं जिनके पास आप से पहले कोई डराने वाला** (यानी पैग़म्बर) **नहीं आया था ताकि वो लोग सही रास्ते पर आजाएं(03) अल्लाह ही है जिसने आसमान और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो उन दोनों के बीच में** (मौजूद) **हैं छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया फिर अर्श पर** (जो शाही कुर्सी जैसा है इस तरह) **क़ाइम हुआ** (और जलवा किया जो उसकी शान के लाइक़ है, वो ऐसा बड़ा

है कि) **बिना उस** (की मर्ज़ी व इजाज़त) **के न तुम्हारा कोई मददगार है और न सिफ़ारिश करने वाला** (हां इजाज़त से सिफ़ारिश हो जाएगी), **सो क्या तुम समझते नहीं हो** (कि ऐसी हस्ती का कोई साझी नहीं हो सकता)(04) **वो** (ऐसा है कि) **आसमान से लेकर ज़मीन तक** (जितने काम हैं) **हर काम का** (वो ही) **इन्तिज़ाम करता है फिर हर काम उसी के सामने पहुंच जाएगा एक ऐसे दिन में जिसकी मुद्दत तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार साल होगी** (यानी क़ियामत में सब उसी के सामने पेश होंगे)(05) **वो ही है जानने वाला छुपी और खुली चीज़ों का ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **रहमत वाला(06) जिसने जो चीज़ बनाई ख़ूब बनाई** (यानी जिस काम के लिए उस को बनाया उसके लिए ठीक बनाया) **और इन्सान** (यानी आदम अलैहिस्सलाम) **की पैदाइश मिट्टी से शुरू की(07) फिर** (देखो कि वो इन्सान जो सारी मख़्लूक़ से बरतर है) **उसकी नस्ल को निचोड़े हुए कमतर पानी** (यानी मनी) **से बनाया(08) फिर** (मां के पेट में) **उसके बदन के हिस्सों को ठीक किया और उसमें अपनी** (तरफ़ से) **रूह फूंकी और** (पैदा करने के बाद इन्सानों) **तुम को कान और आंखें और दिल दिये,** (इसलिए चाहिए तो यह था कि इन नेमतों पर जो उसकी क़ुदरत की दलील हैं अल्लाह का शुक्र करते और तौहीद पर ईमान रखते मगर) **तुम लोग बहुत कम शुक्र करते** (हो यानी नहीं करते) **हो(09)।**

وَ قَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِی الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِیْ خَلْقٍ جَدِیْدٍ ۬ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝۱۰ قُلْ یَتَوَفّٰىكُمْ
مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِیْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝۱۱ؒ وَ لَوْ تَرٰۤی اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَ سَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝۱۲ وَ لَوْ شِئْنَا لَاٰتَیْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَ
لٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّیْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ اَجْمَعِیْنَ ۝۱۳ فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِیْتُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ
اِنَّا نَسِیْنٰكُمْ وَ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۱۴ اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا
سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ۝۱۵ تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ
طَمَعًا ؗ وَّ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۝۱۶ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا
یَعْمَلُوْنَ ۝۱۷ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ؔؕ لَا یَسْتَوٗنَ ۝۱۸ اَمَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ
جَنّٰتُ الْمَاْوٰی ؗ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝۱۹ وَ اَمَّا الَّذِیْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ یَّخْرُجُوْا
مِنْهَاۤ اُعِیْدُوْا فِیْهَا وَ قِیْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ۝۲۰ وَ لَنُذِیْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ

الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا
مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ﴿٢٢﴾

आयत नं० 10 से 22

और ये (काफ़िर) **लोग कहते हैं कि हम जब ज़मीन में** (मिल जुल कर) **मिट्टी हो गये तो क्या हम फिर** (क़ियामत में) **नये जन्म में आएंगे,** (और इनको इस बात पर सिर्फ़ अचम्भा ही नहीं) **बल्कि** (असलीयत में) **वो लोग अपने रब से मिलने का ही इनकार करते हैं(10) आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि तुम्हारी जान मौत का फ़रिशता निकालता है जो तुम पर** (अल्लाह की तरफ़ से) **तैनात है फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटा कर लाए जाओगे(11) और** (इस लौटने के वक़्त) **अगर आप** (उन लोगों का) **हाल देखें** (तो अजब हाल देखें) **जब कि ये मुजरिम लोग** (शर्म के मारे) **अपने रब के सामने सर झुकाए** (खड़े) **होंगे,** (और कहते होंगे) **कि या रब हमारे बस** (अब) **हमारी आंखें और कान खुल गये** (और पता चल गया कि पैग़म्बरों ने जो कुछ कहा था सब सच था) **सो हम को** (दुनिया में) **फिर भेज दीजिए हम** (अब के जाकर ख़ूब) **नेक काम किया करेंगे** (अब) **हम को पूरा यक़ीन आगया(12) और** (यह कहना उन का बेकार होगा इसलिए कि) **अगर हम यह चाहते** (कि ज़रूर ही ये राह पर आएं) **तो हम हर आदमी को उस** (की बख़्शिश) **की राह पर ले आते लेकिन मेरी** (तो) **यह** (नसीबी) **बात** (बहुत सी वजहों से) **तय हो चुकी है कि मैं जहन्नम को जिन्नात और इन्सानों दोनों** (में जो काफ़िर होंगे उन) **से ज़रूर भरूंगा** (और वजह इसकी सूरत हूद की तफ़सीर में बयान हो चुकी है)(13) **तो** (उन से कहा जाएगा कि) **अब उस का मज़ा चक्खो कि तुम अपने इस दिन के आने को भूले रहे** (सो) **हम ने तुम को भुला** (दिया यानी रहमत से दूर कर) **दिया और अपने** (बुरे) **कामों की वजह से सदा के अज़ाब का मज़ा चक्खो(14) बस हमारी आयतों पर तो वो लोग ईमान लाते है कि जब उन को वो आयतें याद दिलाई जाती हैं तो वो सजदे में गिर जाते हैं** (जिसके बारे में सूरत मरयम में आ चुका है) **और अपने रब की तस्बीह व तारीफ़ करने लगते हैं और वो लोग** (कलमाए ईमान से) **घमन्ड नहीं करते** (जैसे काफ़िर का हाल आया है कि ईमान की दावत पर घमन्ड से मुंह फेर लेते हैं)(15) **उनके** (नेक कामों का यह हाल है कि उनके) **पहलू** (रात के वक़्त) **अपने बिस्तरों से अलग होते हैं** (चाहे फ़र्ज़ इशा के लिए या तहज्जुद के लिए भी, और इस तरह कि) **वो लोग अपने रब को** (सवाब की) **उम्मीद से और** (अज़ाब के) **डर से पुकारते रहते हैं** (इसमें नमाज़ व दुआ और

ज़िक्र सब आगया), **और हमारी दी हुई चीज़ों में से** (नेकी के कामों में) **ख़र्च करते हैं**(16) **सो किसी आदमी को ख़बर नहीं जो जो आंखों की ठन्डक का सामान ऐसे लोगों के लिए छुपा कर रक्खा गया है यह उन को उन के** (नेक) **कामों का फल मिला है**(17) (और जब दोनो क़िस्म के लोगों का हाल और अन्जाम पता चल गया) **तो** (अब बताओ) **जो आदमी मोमिन हो क्या वो उस आदमी जैसा हो जाएगा जो** (बिल्कुल) **नाफ़रमान** (यानी काफ़िर) **हो,** (नहीं) **वो** (अन्जाम में) **आपस में बराबर नहीं हो सकते**(18) (तो) **जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये सो उनके लिए सदा का ठिकाना जन्नतें हैं जो उनके** (नेक) **कामों के बदले उन की महमानी में दिये जाएंगे** (यानी महमान की तरह उनको ये चीज़ें इज़्ज़त के साथ मिलेंगी न कि मांगने वाले भिकारी की तरह बेइज़्ज़ती के साथ)(19) **और जो लोग नाफ़रमान** (काफ़िर) **थे सो उन का ठिकाना दोज़ख़ है, वो लोग जब उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिये जाएंगे और उनको कहा जाएगा कि दोज़ख़ का वो अज़ाब चक्खो जिस को तुम झुटलाया करते थे**(20) **और** (यह आने वाला अज़ाब तो आख़िरत में होगा और) **हम उनको नज़दीक का** (यानी दुनिया में आने वाला) **अज़ाब भी उस बड़े अज़ाब** (यानी आख़िरत के अज़ाब) **से पहले चखा देंगे** (जैसे बीमारियां व मुसीबतें) **ताकि ये लोग** (असर लेकर कुफ़्र से) **बाज़ आजाएं** (जो फिर भी बाज़ न आए उसके लिए आख़िरत का अज़ाब है ही)(21) **और** (ऐसे लोगों पर अज़ाब होने से कुछ अचम्भा न होना चाहिए क्योंकि) **उस आदमी से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिस को उसके रब की आयतें याद दिलाई जाएं फिर वो उनसे मुंह फेरे,** (तो उसके अज़ाब का हक़दार होने में क्या शक है इसलिए) **हम ऐसे मुजरिमों से बदला लेंगे**(22)।

नोटः- इमामे तफ़सीर मुजाहिद रह० ने फ़रमाया कि सारी दुनिया मलकुलमौत के सामने ऐसी है जैसे किसी इन्सान के सामने एक खुली पलेट में दाने पड़े हों वो जिसको चाहे उठाले।

मसअलाः-मलकुल मौत किसी की मौत का वक़्त पहले से नहीं जानता, जब तक कि उसको (हुक्म न दिया जाए कि फलां की रूह क़ब्ज़ कर लो)। (मज़हरी)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٢٣ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ
اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ ۝٢٤ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝٢٥ اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ط

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ
مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ
الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾

आयत नं० 23 से 30

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को** (आप ही की तरह) **किताब दी थी** (जिसके हुक्म पहुंचाने में उनको तकलीफ़ें सहन करनी पड़ी इसी तरह आप को भी सहन करनी चाहिए एक तसल्ली तो यह हुई फिर इसी तरह आप को भी किताब दी) **सो आप** (अपनी) **इस** (किताब) **के मिलने में कुछ शक न कीजिए** (एक तसल्ली की बात यह हुई) **और हमने उस** (मूसा की किताब) **को बनी इस्राईल के लिए राह दिखाने वाला बनाया था** (इसी तरह आप की किताब से बहुत लोग राह पर आएंगे आप खुश रहिए, एक तसल्ली यह हुई)(23) **और हम ने उन** (बनी इस्राईल) **में बहुत से** (दीन के) **इमाम बना दिये थे जो हमारे हुक्म से नसीहत करते थे जब कि वो लोग** (तकलीफ़ों पर) **सब्र किये रहे, और हमारी आयतों का यक़ीन रखते थे** (यह तसल्ली है मोमिनों को कि तुम लोग सब्र करो तो हम तुम को भी दीन के इमाम बना देंगे)(24) **आप का रब क़ियामत के दिन उन सब के आपस में** (खुला) **फ़ैसला उन बातों में कर देगा जिनमें ये आपस में झगड़ा करते थे** (यानी मोमिन को जन्नत में और काफ़िरों को दोज़ख़ में भेज देगा और क़ियामत भी कुछ दूर नहीं)(25) **क्या इन को इस बात से नसीहत नहीं हुई कि हम इनसे पहले** (उनके कुफ़्र व शिर्क की वजह से) **कितनी उम्मतें हलाक कर चुके हैं जिनके रहने की जगहों में ये लोग** (मुल्क शाम के सफ़र में) **आते जाते** (गुज़रते) **हैं, इस** (बात) **में** (तो) **साफ़ निशानियां** (कुफ़्र के नापसन्दीदा होने की मौजूद) **हैं, क्या ये लोग** (उन पहली उम्मतों के क़िस्से) **सुनते नहीं** (हैं कि मशहूर) **हैं**(26) (और इन को जो क़ियामत के आने में शक या इनकार है तो) **क्या उन्होंने इस बात पर नज़र नहीं की कि हम** (बादलों या नहरों के वास्ते से) **सूखी ज़मीन की तरफ़ पानी पहुंचाते हैं फिर उससे खेती पैदा करते हैं जिससे उनके जानवर और वो खुद भी खाते हैं, तो क्या** (इस बात को रात दिन) **देखते नहीं हैं** (यह साफ़ नमूना है मर कर ज़िन्दा होने का)(27) **और ये लोग** (क़ियामत और फ़ैसले का ज़िक्र सुन कर हंसी उड़ाते हुए और जल्दी मचाते हुए यह) **कहते हैं कि अगर तुम** (इस बात में) **सच्चे हो तो** (बताओ) **यह फ़ैसला कब होगा**(28) **आप कह दीजिए कि** (तुम बेकार इसका तक़ाज़ा

करते हो तुम्हारे लिए तो वो पूरी मुसीबत का दिन है क्योंकि) **उस फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान लाना** (कुछ) **नफ़ा न देगा** (और ये ही एक सूरत उनके बचाव की थी और वो ही है नहीं) **और** (बचाव तो क्या होता) **उन को मोहलत भी** (तो) **न मिलेगी(29) सो** (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **उन की बातों की परवाह न कीजिए और** (आने वाले फ़ैसले का) **इन्तिज़ार कीजिए ये भी** (अपनी सोच में आप के नुक़सान के) **इन्तिज़ार में हैं** (मगर पता चल जाएगा किसका इन्तिज़ार सही रहेगा)(30)।

नोटः- इमामत व सरदारी के लाइक़ अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सिर्फ़ वो लोग हैं जो अमल में भी कामिल हों और इल्म में भी।

33-सूरत-अहज़ाब

इस मदनी सूरत में '9' रूकू और '73' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

یٰۤاَیُّہَا النَّبِیُّ اتَّقِ اللّٰہَ وَ لَا تُطِعِ الۡکٰفِرِیۡنَ وَ الۡمُنٰفِقِیۡنَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ کَانَ عَلِیۡمًا حَکِیۡمًا ۙ﴿۱﴾ وَّ اتَّبِعۡ مَا یُوۡحٰۤی اِلَیۡکَ مِنۡ
رَّبِّکَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ کَانَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِیۡرًا ۙ﴿۲﴾ وَّ تَوَکَّلۡ عَلَی اللّٰہِ ؕ وَ کَفٰی بِاللّٰہِ وَکِیۡلًا ﴿۳﴾

आयत नं० 01 से 03

ऐ नबी अल्लाह से डरते रहिए (और किसी से न डरिए और उन की धमकियों की ज़रा परवाह न कीजिए) **और काफ़िरों का** (जो ऐलानिया दीन के ख़िलाफ़ मशवरे देते हैं) **और** (मुसलमान होने का दिखावा करने वाले यानी) **मुनाफ़िक़ों का** (जो पर्दे के पीछे उन काफ़िरों का साथ देते हैं उनका) **कहना न** (मानिये बल्कि अल्लाह ही का कहना) **मानिये, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा इल्म वाला बड़ी हिकमत वाला है** (और उसके हर हुक्म में फ़ाइदे और भलाइयां छुपी हैं)(01) **और** (अल्लाह का कहना मानना यह है कि) **आप के रब की तरफ़ से जो हुक्म आप पर वही किया जाता है उस पर चलिए,** (और ऐ लोगों) **बेशक तुम लोगों के सब कामों की अल्लाह तआ़ला को पूरी ख़बर है** (तुम में से जो हमारे पैग़म्बर की मुख़ालफ़त कर रहे हैं हम सब को समझेंगे)(02) **और** (ऐ नबी) **आप** (उन लोगों की धमकियों के बारे में) **अल्लाह पर भरोसा रखिये और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है** (उसके मुक़ाबिले में उन लोगों की कोई चाल कामयाब नहीं हो सकती इसलिए कुछ फ़िक्र न कीजिए)(03)

नोटः- ऊपर आयात से साबित हुआ कि दीन के कामों में काफ़िरों से मशवरा लेना भी जाइज़ नहीं दूसरे दुनिया के काम जिनका ताल्लुक़ तजरबे वग़ैरह से हो उनमें मशवरा लेने में कोई हरज नहीं।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ
اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ ۝۴ اُدْعُوْهُمْ
لِاٰبَآىِٕهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ فِيْمَآ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۵ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ
مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗٓ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ
الْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّآ اَنْ تَفْعَلُوْٓا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓىِٕكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝۶

आयत नं० 04 से 06

अल्लाह तआ़ला ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए और (इसी तरह) **तुम्हारी उन बीवियों को जिन को तुम मां की बराबर कह देते हो तुम्हारी मां नहीं बनाया और** (इसी तरह समझलो कि) **तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारा** (सचमुच का) **बेटा** (भी) **नहीं बना दिया, यह सिर्फ़ तुम्हारे कहने की बात** (है जो ग़लत) **है, और अल्लाह तआ़ला ठीक बात कहता है और वो ही सीधा रास्ता बताता है(04)** (और जब मुंह बोले बेटे असलीयत में तुम्हारे बेटे नहीं तो) **तुम उन को** (गोद लेने वालों का बेटा मत कहो बल्कि) **उन के** (असली) **बापों का बेटा कहकर पुकारो यह अल्लाह के नज़दीक इन्साफ़ की बात की है, और अगर तुम उनके बापों को न जानते हों तो** (उनको अपना भाई या दोस्त कहकर पुकारो आख़िर) **वो तुम्हारे दीन के भाई हैं और तुम्हारे दोस्त हैं, और तुम को इसमें भूल-चूक हो जाए तो इसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं होगा लेकिन हां जो दिल से इरादा करके कहो** (तो इससे गुनाह होगा), **और** (इससे भी मुआफ़ी मांग लो तो मुआफ़ हो जाएगा क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला महरबान है(05) नबी** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **मोमिनों के साथ तो उन की अपनी जान से भी ज़्यादा ताल्लुक़ रखते हैं** (क्योंकि इन्सान का अपना जी भी उसको इतना नफ़ा नहीं पहुंचा सकता जितना नफ़ा नबी के वास्ते से पहुंचता है और इन्सान का अपना जी तो कभी-कभी बुराई और नुक़सान की तरफ़ भी चलता है और जब नबी सबसे बड़े हमदर्द हैं तो आपकी सबसे ज़्यादा इज़्ज़त और हर काम में ताबेदारी ज़रूरी है) **और आप की बीवियां उन** (मोमिनों) **की माएं हैं, और रिशतेदार अल्लाह की किताब** (यानी शरीअत के हुक्म) **में एक दूसरे से** (मीरास का) **ज़्यादा ताल्लुक़** (और हक़) **रखते हैं दूसरे**

मुसलमानों और मुहाजिरों के मुक़ाबिले मगर यह कि तुम अपने (उन) **दोस्तों** (के हक़ में कोई वसीयत करके उन) **से कुछ भलाई करना चाहो** (या अपनी ज़िन्दगी में ही कुछ देदो) **तो वो जाइज़ है, यह बात** (तक़दीर की) **किताब में लिखी जा चुकी है** (यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मत के रूहानी बाप हैं और उनकी बीवियां उम्मत की माएं हैं। और मुहाजिर व अन्सार भाई-भाई हैं मगर मीरास रिश्तेदारों ही में बान्टी जाएगी)(06)

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक उस के दिल में मेरी मुहब्बत अपने बाप, बेटे और सब इन्सानों से ज़्यादा न हो जाए"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

मसअलाः-ऊपर आयत से साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों में से किसी की शान में कोई ज़रा सी बेअदबी इसलिए हराम है कि वो उम्मत की माएं हैं और इसलिए भी कि उन की तकलीफ़ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ पहुंचेगी जो बड़े दर्जे का हराम है। और उम्मत की मां होने का मतलब यह नहीं है कि उम्मत के सब मर्द औरत आपस में भाई बहन हो जाएं और उन का आपस में निकाह नाजाइज़ हो जाए।

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَ مِنْكَ وَ مِنْ نُّوْحٍ وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَ اَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ۠

आयत नं० 07 से 08

और (ऐ पैग़म्बर वो वक़्त याद कीजिए) **जब** (कि) **हमने सारे पैग़म्बरों से उन का इक़रार लिया** (कि अल्लाह के हुक्मों पर चलें जिनमें हुक्मों का पहुंचाना और आपस में एक दूसरे की मदद करना भी दाख़िल है) **और** (उन पैग़म्बरों में) **आप से भी** (इक़रार लिया) **और नूह और इब्राहीम और मूसा और मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिमुस्सलाम) **से भी, और** (यह कोई मामूली एहद व इक़रार नहीं था बल्कि) **हमने उन सब से पक्का वादा लिया(07) ताकि** (क़ियामत के दिन) **उन सच्चे लोगों से** (यानी पैग़म्बरों से) **उन की सच्चाई के बारे में पूछें** (ताकि बड़ाई साबित हो जाए और न मानने वालों पर दलील पूरी हो जाए यानी पैग़म्बरों पर अपनी वही पर चलना और आम लोगों पर उन की बात मानना वाजिब है) **और काफ़िरों के लिए** (जो नबी को मानने से इनकार करते हैं) **अल्लाह तआला ने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रक्खा है(08)**

नोटः- पैग़म्बरों से जो एहद व इक़रार लिया गया वो उसके अलावा है जो इक़रार सब लोगों से लिया गया (जैसा कि मिशकात में लिखा है) और एहद पैग़म्बरों से पैग़म्बरी के फ़र्ज़ अदा करने और आपस में एक दूसरे की तस्दीक़ और मदद करने का एहद था। और एक रिवायत में है कि इस एहद में यह भी था कि वो सब इस का भी ऐलान करें कि मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और आख़री नबी हैं आप के बाद कोई नबी नहीं होगा।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَ
كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۚ﴿٩﴾ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَ مِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَ اِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَ بَلَغَتِ
الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَ تَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ﴿١٠﴾ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَ زُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿١١﴾ وَ اِذْ
يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢﴾ وَ اِذْ قَالَتْ طَّآىِٕفَةٌ
مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَ يَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَ مَا
هِيَ بِعَوْرَةٍ ۛۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا ﴿١٣﴾ وَ لَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُىِٕلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَ مَا
تَلَبَّثُوْا بِهَاۤ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿١٤﴾ وَ لَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَ كَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿١٥﴾
قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَ اِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ
يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَ لَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّ لَا
نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَ الْقَآىِٕلِيْنَ لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَ لَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا
قَلِيْلًا ۙ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ
الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ
اَعْمَالَهُمْ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَ اِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ
اَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآىِٕكُمْ ؕ وَ لَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْۤا اِلَّا قَلِيْلًا ؒ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ
فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَ ذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ؕ﴿٢١﴾ وَ لَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ
الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ صَدَقَ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ۫ وَ مَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِيْمَانًا وَّ تَسْلِيْمًا ؕ﴿٢٢﴾
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ ؗ وَ مَا

بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَ يُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾ وَ رَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ؕ وَ كَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ
الْقِتَالَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾ وَ اَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَ قَذَفَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَ تَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾ وَ اَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَ دِيَارَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ وَ اَرْضًا لَّمْ
تَطَـُٔوْهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾

आयत नं० 09 से 27

नोटः- इन आयतों में जंगे अहज़ाब का बयान है कि काफ़िरों के बहुत से गिरोह एक बारगी मुसलमानों पर हमलावर होकर चढ़ आए थे और उन से बचाव के लिए एक ख़न्दक (गहरी खाई) शहर के बाहर खोदी गई इसलिए इस को जंगे ख़न्दक़ भी कहते हैं इस जंग में मुसलमानों को बड़े सख़्त इम्तिहान से गुज़रना पड़ा मगर वो सब मुश्किलों में जमे रहे तो अल्लाह की मदद पहुंची और दुशमनों की फ़ौजें भाग खड़ी हुईं।

ऐ ईमान वालो अल्लाह का इनआम अपने ऊपर याद करो जब तुम पर (दुशमनों की) **बहुत सी फ़ौजें चढ़ आईं फिर हम ने उन पर एक आंधी भेजी** (जिसने उनको परीशान कर दिया और उनके तम्बू उखाड़ फेंके) **और** (फ़रिशतों की) **ऐसी फ़ौजें भेजीं जो तुम** (में आम लोगों) **को दिखाई न देती थीं** (जिन्होंने काफ़िरों के दिलों में रौब डाल दिया कि वो घबरा कर भागने को मजबूर हुए)**, और अल्लाह तआला तुम्हारे** (उस वक़्त के) **कामों को देखते** (थे तुम ने एक लम्बी चौड़ी और गहरी ख़न्दक़ खोदने में बड़ी मेहनत उठाई और काफ़िरों के मुक़ाबिले के लिए बड़ी मज़बूती के साथ जमे रहे तो इस पर ख़ुश होकर तुम्हारी मदद कर रहे) **थे**(09) (यह क़िस्सा उस वक़्त हुआ था) **जब कि वो** (दुशमन) **लोग तुम पर** (हर तरफ़ से घेरा करके) **चढ़ आए थे ऊपर की तरफ़ से** (भी) **और नीचे की तरफ़ से** (भी यानी कोई क़बीला मदीने के नीचे की तरफ़ से और कोई क़बीला उसकी ऊंचाई की तरफ़ से) **और जब कि आंखें** (डर दहशत से) **खुली की खुली रह गईं थीं और कलेजे मुंह को आने लगे थे और तुम लोग अल्लाह के बारे में तरह-तरह की बातें सोचने लगे थे** (जैसा कि सख़्त मुश्किलों में ऐसी बातें दिल में आने लगती हैं जो अपने बस में न होने की वजह से कोई गुनाह नहीं)(10) **इस मौक़े पर मुसलमानों का** (पूरा) **पूरा इम्तिहान किया गया**

(जिसमें वो पूरे उतरे) **और उनको सख़्त** (आज़माइश में) **हिलाया गया**(11) **और** (यह क़िस्सा उस वक़्त हुआ था) **जब** (कि) **मुनाफ़िक़ लोग और** (वो) **लोग जिनके दिलों में** (शक की) **बीमारी है यह कह रहे थे कि हम से तो अल्लाह ने और उसके रसूल ने सिर्फ़ धोके ही का वादा कर रक्खा** (है यानी रोम और फ़ारस जीतने की जो ख़ुशख़बरी सुनाई गई यह सिर्फ़ धोका) **है**(12) **और** (यह क़िस्सा उस वक़्त का था) **जब कि उन** (मुनाफ़िक़ों) **में से कुछ लोगों ने** (दूसरे लोगों से) **कहा कि यसरब** (यानी मदीना) **के लोगो** (यहां) **ठहरने का मौक़ा नहीं** (क्योंकि यहां रहना मौत के मुंह में जाना है) **सो** (अपने घरों को) **लौट चलो, और कुछ लोग उन** (मुनाफ़िक़ों) **में नबी** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **से** (अपने घर वापस जाने की) **इजाज़त मांगते थे कहते थे कि हमारे घरों में हिफ़ाज़त** (का इन्तिज़ाम) **नहीं है** (यानी सिर्फ़ औरतें, बच्चे रह गये हैं दीवारों से तसल्ली नहीं कभी चोर घुस आएं) **हालांकि वो** (उनकी सोच में भी) **बेहिफ़ाज़त नहीं** (यानी उनको चोरी वग़ैरह का ख़तरा नहीं है बल्कि) **ये सिर्फ़ भागना ही चाहते हैं**(13) **और** (उनकी यह हालत है कि) **अगर मदीने में उस के चारों तरफ़ से उन पर कोई** (दुशमनों की फ़ौज) **आ घुसे फिर उन से फ़साद** (यानी मुसलमानों से लड़ने) **को कहा जाए तो ये** (फ़ौरन) **उस** (फ़साद) **को मान लें और** (अपने) **घरों में बहुत ही कम ठहरें** (और घरों की हिफ़ाज़त का कुछ भी ध्यान न करें इससे साफ़ मालूम हुआ कि असल में उनको मुसलमानों से दुशमनी और काफ़िरों से मुहब्बत है इसलिए गिनती बढ़ाकर भी मुसलमानों की मदद करना पसन्द नहीं करते बाक़ी घरों का तो बहाना है)(14) **हालांकि ये लोग** (इससे) **पहले अल्लाह से एहद कर चुके थे कि** (दुशमन के मुक़ाबिले में) **पीठ न फेरेंगे** (यह एहद उस वक़्त किया था जब कि जंगे बद्र में कुछ लोग शरीक होने से रह गये थे उनको देख कर कुछ मुनाफ़िक़ भी कहने लगे कि अफ़सोस हम शरीक न हुए ऐसा करते वैसा करते जब वक़्त आया सारी पोल खुल गई), **और अल्लाह से जो** (इस तरह का) **एहद किया जाता है उसकी पूछ ज़रूर होगी**(15) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि तुम को भागना कुछ नफ़ा नहीं दे सकता अगर तुम मौत से या क़त्ल से भागते हो और इस** (भागने की) **हालत में सिवाए थोड़े दिनों के** (कि वो बची उम्र है) **और ज़्यादा** (ज़िन्दगी से) **नफ़ा नहीं उठा** (सकते यानी भाग कर उम्र नहीं बढ़ सकती क्योंकि उस का वक़्त नसीब में तय है, और जब तय है तो अगर न भागते तो भी वक़्त से पहले मर नहीं) **सकते**(16) (और उनसे) **यह भी कह दीजिए कि वो कौन है जो तुम को अल्लाह से बचा सके अगर वो तुम्हारे साथ बुराई करना चाहे** (जैसे तुम को हलाक करना चाहे तो क्या तुम को कोई बचा सकता है जैसा तुम भाग जाने को समझते हो) **या वो कौन है जो अल्लाह की महरबानी**

को तुम से रोक सके अगर वो तुम पर महरबानी करना चाहे (जैसे वो ज़िन्दा रखना चाहे जो कि दुनिया की रहमत है तो कौन इस रहमत को रोक सकता है जैसा तुम जंग में ठहरने को ज़िन्दगी के लिए ख़तरा समझते हो), **और** (वो लोग सुन लें कि) **अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएंगे** (जो नफ़ा पहुंचाए) **और न कोई मददगार** (जो नुक़सान से बचाए)(17) **अल्लाह तआ़ला तुम में से उन लोगों को** (ख़ूब) **जानता है जो** (दूसरों को लड़ाई में जाने से) **रोकते हैं और जो अपने** (ख़ानदानी या बस्ती के) **भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आजाओ** (वहां अपनी जान क्यों देते हो) **और** (उनकी बुज़दिली और लालच की यह हालत है कि) **लड़ाई में बहुत ही कम** (यानी बस नाम के लिए) **आते हैं**(18) (और आते भी हैं तो) **तुम्हारे साथ लालच लिये हुए** (कि ग़नीमत के माल में कुछ हिस्सा मिल जाए), **सो जब** (कोई) **डर** (का मोक़ा) **पेश आजाता है तो उन को देखते हो कि वो आपकी तरफ़ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आंखें चकराई जाती हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छाई हो** (यह तो बुज़दिली का असर हुआ), **फिर जब वो ख़तरा दूर हो जाता है तो तुम्हारे सामने** (ग़नीमत के) **माल के लालच में तेज़-तेज़ ज़बानें चलाते हैं** (कि क्या हम शरीक नहीं थे हमारी ही मदद से तुम को यह जीत मिली है), **ये लोग** (असल में पहले ही से) **ईमान नहीं लाए तो अल्लाह तआ़ला ने उनके सारे** (नेक) **काम** (पहले ही से) **बेकार कर रक्खे हैं** (आख़रत में कुछ सवाब न मिलेगा), **और यह बात अल्लाह के लिए बहुत आसान है**(19) (हमलावर फ़ौजों के चले जाने के बाद भी) **वो यह समझ रहे हैं कि** (अभी तक दुशमनों की) **फ़ौजें गई नहीं** (और बुज़दिली में उनकी यह हालत है कि) **अगर** (मान लो) **ये** (गई हुई) **फ़ौजें** (फिर लौट कर आजाएं) **तो** (फिर तो) **ये लोग** (अपने लिए) **भी पसन्द करें कि काश हम** (कहीं) **देहातों में बाहर जा रहें कि** (वहां ही बैठे बैठे आने जाने वालों से) **तुम्हारी ख़बरें पूछते रहें** (वो घमासान जंग अपनी आंखों से न देखें), **और अगर** (कुल या कुछ देहात में न जा सकें बल्कि) **तुम ही में रहें तब भी** (बस नाम को) **ऐसा ही लड़ें**(20) (और आगे मुनाफ़िकों को शर्म दिलाई जाती है जो कि मुसलमान होने का दावा करते हैं कि) **तुम लोगों के लिए यानी ऐसे आदमी के लिए जो अल्लाह से और आख़रत के दिन से डरता हो और कसरत से अल्लाह का ज़िक्र करता हो** (यानी पूरा मोमिन हो उसके लिए) **रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का** (मौजूद होना) **एक अच्छा नमूना था** (कि जब आप ही शरीक रहे तो आप से ज़्यादा कौन प्यारा है कि वो शरीक न हो और अपनी जान बचाए फिरे)(21) **और** (आगे मुनाफ़िकों के मुक़ाबिले सच्चे मोमिनों का ज़िक्र है) **जब ईमानदारों ने उन फ़ौजों को देखा तो कहने लगे कि यह वो ही** (मौक़ा) **है जिसकी हम को**

अल्लाह व उस के रसूल ने ख़बर दी थी और अल्लाह व उसके रसूल ने सच कहा था, और इस (क़िस्से) **ने उन के ईमान और ताबेदारी को और बढ़ा दिया(22)** (और) **इन मोमिनों में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्होंने जिस बात का अल्लाह से एहद किया था उस में सच्चे उतरे** (कुछ लोग जो जंगे बद्र में शरीक होने से रह गये थे उन की तमन्ना कुछ कर दिखाने की थी यह ऐसे लोगों का ज़िक्र है) **फिर उन** (एहद करने वालों) **में** (दो क़िस्में हो गईं) **कुछ तो वो हैं जो अपनी बात पूरी कर चुके** (यानी एहद पूरा करने में आख़री दम तक मुंह नहीं मोड़ा लड़ते-लड़ते शहीद हो गये) **और कुछ उनमें इन्तिज़ार में हैं** (अभी शहीद नहीं हुए), **और** (अब तक अपने इरादे) **ज़रा नहीं बदले(23)** (आगे इस जंग के होने में छुपे भेद बताते हैं कि) **यह क़िस्सा इस लिए हुआ ताकि अल्लाह तआ़ला सच्चे मुसलमानों को उनकी सच्चाई का फल दे और मुनाफ़िक़ों को चाहे सज़ा दे या चाहे उनको** (निफ़ाक़ से) **तौबा की तौफ़ीक़ दे, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बड़ा महरबान** (है इसलिए तौबा का क़ुबूल हो जाना अचम्भे की बात नहीं इसमें तौबा के लिए उकसाया गया) **है(24) और अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों** (मुशरिकों) **को उनके गुस्से में भरा हुआ** (मदीने से) **हटा दिया कि उनकी कुछ भी तमन्ना पूरी न हुई, और जंग में अल्लाह तआ़ला मुसलमानों के लिए आप ही काफ़ी हो गया** (यानी काफ़िरों को पूरी तरह लड़ने की नौबत भी न आई कि पहले ही भागना पड़ा), **और** (इस तरह काफ़िरों का हटा देना कुछ अजब न समझो क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला बड़ी ताक़त वाला** (और) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **है** (उस को कुछ मुश्किल नहीं यह तो मुशरिकों का हाल हुआ)**(25) और** (दुशमनों में दूसरा गिरोह यहूदियों का था आगे उनका ज़िक्र है) **जिन किताब वालों ने इन** (मुशरिकों) **की मदद की थी उन को** (अल्लाह तआ़ला ने) **उन के क़िलों से** (जिन में वो पनाह लिये हुए थे) **नीचे उतार दिया और उनके दिलों में** (मुसलमानों) **तुम्हारा रौब बिठा दिया** (जिस से वो उतर आए और फिर) **कुछ को तुम क़त्ल करने लगे और कुछ को क़ैद कर लिया(26) और** (अल्लाह ने) **उन की ज़मीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम को मालिक बना दिया और ऐसी ज़मीन का भी** (तुम को मालिक बना रक्खा है) **जिस पर तुम ने** (अभी) **क़दम** (तक) **नहीं रक्खा** (इसमें ख़ुशख़बरी है आगे की जीतों की) **और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता** (है इसलिए यह काम कुछ मुश्किल नहीं) **है(27)**

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَ زِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَ اُسَرِّحْكُنَّ
سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝۲۸ وَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا
عَظِيْمًا ۝۲۹ يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ؕ وَ كَانَ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝۳۰

आयत नं० 28 से 30

नोटः- हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों ने बड़ी तंगी की हालतों में भी आप के साथ सब्र व तसल्ली से गुज़र बसर की जब मुसलमानों को ख़ुशहाली आई तो उन्होंने चाहा कि उन को दिये जाने वाला ख़र्च बढ़ा दिया जाए। उनके रूतबे के हिसाब से उनकी यह मांग पसन्द नहीं की गई और उस मौक़े पर ये आयतें उतरीं।

ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप अपनी बीवियों से कह दीजिए कि तुम अगर दुनिया की ज़िन्दगी** (की ऐश) **और उस की बहार चाहती हो तो आओ मैं तुम को कुछ माल व सामान** (दुनिया का) **देदूं और** (सामान देकर) **तुम को भलाई के साथ विदा कर दूं** (यानी सुन्नत के मुवाफ़िक़ तलाक़ देदूं ताकि जहां चाहो जाकर दुनिया का ऐश हासिल करो)(28) **और अगर तुम अल्लाह को चाहती हो** (और मतलब इस जगह अल्लाह को चाहने का यह है कि) **उसके रसूल को** (चाहती हो यानी ग़रीबी की इस हालत में रसूल के निकाह में रहना चाहती हो) **और आख़रत** (के ऊंचे दर्जों) **को चाहती हो** (जो कि रसूल की बीवी होने पर मिलने वाले हैं) **तो** (यह तुम्हारी नेकी है और) **तुम में नेक काम करने वालों के लिए अल्लाह तआ़ला ने** (आख़रत में) **बड़ा इनआम तैयार कर रक्खा** (है यानी वो सवाब जो नबी की बीवियों के लिए ख़ास) **है**(29) (और आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) **ऐ नबी की बीवियों जो तुम में खुली ग़लती करेगी** (मुराद इससे वो बातें हैं जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तंग व परीशान हों तो) **उस को** (इस पर आख़रत में) **दो गुनी सज़ा दी जाएगी** (यानी दूसरे आदमी को इस काम पर जितनी सज़ा मिलती उससे दो गुनी सज़ा होगी)**, और यह बात अल्लाह को** (बिल्कुल) **आसान** (है यह नहीं कि दुनिया के हाकिमों की तरह सज़ा बढ़ाने से किसी के बड़ा होने से रूकावट हो जैसा कि कभी-कभी देखा जाता) **है**(30)

नोटः- जब हुज़ूर की तरफ़ से बीवियों को साथ रहने या अलग हो जाने का इख़्तियार दिया गया तो सभी बीवियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ रहना पसन्द किया तंगी की हालत में अलग होना गवारा नहीं किया।

मसअलाः-ऊपर आयत से मालूम हुआ कि जब मियां बीवी का मिज़ाज न मिले तो बेहतर यह है कि बीवी को हक़ दिया जाए कि शौहर की मौजूदा हालत पर तसल्ली से रहना चाहे तो रहे वर्ना सुन्नत के मुताबिक़ तलाक़ देकर इ़ज़्ज़त के साथ रूख़सत कर दिया जाए।

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾ وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ
اَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا
يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

आयत नं० 31 से 34

और (ऐ नबी की बीवियों) **तुम में से जो कोई अल्लाह की और उसके रसूल की ताबेदार रहेगी** (यानी जिन कामों को अल्लाह तआ़ला ने वाजिब किया है उनको अदा करेगी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हक़ अदा करेगी) **और** (दूसरे) **नेक काम करेगी तो हम उस का सवाब** (भी) **दोगुना देंगे और हमने उसके लिए** (इस दोगुने सवाब के सिवा) **एक** (ख़ास) **अच्छी रोज़ी तैयार कर रक्खी** (है जो जन्नत में ख़ास नबी की बीवियों के लिए है जो नेकियों के बदले से ज़्यादा है और नेकियों पर दो गुना सवाब और बुराइयों पर दो गुना अज़ाब होने की वजह नबी की बीवियों का रूतबा बड़ा होना) **है(31) ऐ नबी की बीवियों तुम आम औरतों की तरह नहीं हो** (तुम्हारा रूतबा बड़ा है लेकिन सिर्फ़ इस पर भरोसा करके न बैठा जाए कि हम नबी की बीवियां हैं बल्कि परहेज़गारी और ताबेदारी ज़रूरी है तो) **अगर तुम परहेज़गारी पर चलो तो** (तुम को शरीअत के हुक्मों की पूरी पाबन्दी करना चाहिए कि) **तुम** (नामहरम मर्द से) **बोलने में** (जब कि ज़रूरत से बोलना पड़े तो नर्मी और) **नज़ाकत** (से बात) **मत करो** (जैसा कि नर्मी से बात करना औरतों की फ़ितरत होती है) **कि** (इस अन्दाज़ से बात करने में) **ऐसे आदमी को** (दिल में बुरा) **ध्यान** (पैदा) **होने लगता है जिस के दिल में ख़राबी** (और बुराई) **है** (बल्कि ऐसे मौक़े पर उस अन्दाज़ को बदल कर सपाट लहजे में बात करो) **और बात वो कहो जो भलाई वाली हो(32) और** (आगे पर्दे के बारे में हुक्म है कि) **तुम अपने घरों में चैन से रहो और पुराने** (यानी इस्लाम से पहले के) **जहालत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ मत फिरो** (कि उस वक़्त पर्दे का दस्तूर न था यानी अगर ज़रूरत से बाहर जाना हो तो ऐसे पर्दे के साथ निकलो जिसमें बदन के साथ-साथ लिबास भी दिखाई न दे) **और** (दूसरे हुक्मों का भी ध्यान रक्खो कि) **तुम नमाज़ों की पाबन्दी रक्खो और ज़कात** (अगर वाजिब हो) **दिया करो और** (सब हुक्मों में) **अल्लाह का और उसके रसूल का कहना मानो,** (और इसमें तुम्हारा ही

नफ़ा है क्योंकि) **अल्लाह तआला यह चाहते हैं कि ऐ** (पैग़म्बर के) **घर वालो तुम से** (गुनाह व नफ़रमानी की) **गन्दगी को दूर रक्खे और तुम को** (हर तरह) **पाक-साफ़ रक्खे(33) और** (इन हुक्मों को जानने और याद रखने के लिए) **तुम इन अल्लाह की आयतों** (यानी क़ुरआन) **को और इस** (हुक्मों के) **इल्म को याद रक्खो और जिसका तुम्हारे घरों में चर्चा रहता है,** (और यह भी याद रक्खो कि) **बेशक अल्लाह तआला राज़ों का जानने वाला** (कि दिल के इरादों को भी जानता है और) **पूरा ख़बरदार** (है कि छुपी बातो को भी जानता है इसलिए खुली छुपी सब बातों में शरीअत की पाबन्दी ज़रूरी) **है(34)।**

नोटः- ऊपर आयत से साबित हो गया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियां एहले बैत यानी हुज़ूर के घर वालों में शामिल हैं जैसा कि कुछ शीआ लोग उन को एहले बैत में शामिल नहीं मानते यह ग़लत है।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَانِتِينَ وَالْقَانِتَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّائِمِينَ وَالصَّائِمَاتِ وَالْحَافِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝٣٥

आयत नं० 35

बेशक इस्लाम के काम करने वाले मर्द और इस्लाम के काम करने वाली औरतें और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें और (अल्लाह व रसूल की) **ताबेदारी करने वाले मर्द और ताबेदारी करने वाली औरतें और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें** (और सच्चाई में ईमान की सच्चाई भी आमाल की सच्चाई भी और ज़बान की सच्चाई भी सब आगईं) **और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें** (इसमें सब्र की सब क़िस्में आगईं यानी इबादतों की पाबन्दी पर जमे रहना और गुनाहों से अपने जी को रोकना और मुसीबतों पर सब्र करना) **और दिल से झुकने वाले मर्द और दिल से झुकने वाली औरतें** (इसमें नमाज़ में ध्यान लगाना भी और घमन्ड न करना भी सब आगया) **और सदक़ा** (ख़ैरात) **करने वाले मर्द और सदक़ा** (ख़ैरात) **करने वाली औरतें** (इसमें ज़कात व ख़ैरात सब आगया) **और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली**

औरतें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और कसरत से अल्लाह को याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें उन सब के लिए अल्लाह तआ़ला ने बख़शिश और बड़ा इनआम तैयार कर रक्खा है(35)।

नोटः- एक हदीस में है कि "किसी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि जिहाद करने वालों में सबसे ज़्यादा सवाब किसका है तो आपने फ़रमाया जो सब से ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करे फिर पूछा कि रोज़ेदारों में किस का सवाब सबसे ज़्यादा है फ़रमाया जो सबसे ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करे फिर इसी तरह नमाज़ ज़कात और हज व सदक़ा के बारे में सवाल किये हर बार आप ने ये ही फ़रमाया कि जो अल्लाह का ज़िक्र ज़्यादा करे वो ही सवाब का ज़्यादा हक़दार है"। (इब्ने कसीर)

और ज़िक्र सब इबादतों में सबसे ज़्यादा आसान है शरीअत ने भी इसके लिए कोई शर्त नहीं रक्खी वुज़ू बेवुज़ू लेटे बैठे चलते फिरते हर वक़्त में अल्लाह का ज़िक्र किया जा सकता है न इसमें मेहनत की ज़रूरत है न फ़ुर्सत की और असर व फ़ाइदा इसका इतना बड़ा है कि अल्लाह के ज़िक्र के साथ दुनिया के काम भी दीन व इबादत बन जाते हैं जैसे खाने से पहले व बाद की दुआ सफ़र की दुआ वग़ैरह।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ
يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ
عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا
قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْۤ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ
وَطَرًا ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۙ﴿۳۸﴾ الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا
اللّٰهَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿۳۹﴾

आयत नं० 36 से 39

और किसी ईमान वाले मर्द और किसी ईमान वाली औरत को जब अल्लाह और उसका रसूल किसी काम का हुक्म देदें (चाहे वो दुनिया की बात क्यों न हो फिर) **उन** (मोमिनों) **को उनके उस काम** (के बारे) **में** (करने न करने का) **कोई हक़ बाक़ी नहीं रहता** (बल्कि वो काम करना वाजिब हो जाता है)**, और जो आदमी** (हुक्म के बाद) **अल्लाह का और उसके रसूल का कहना न मानेगा वो खुली गुमराही में पड़ गया(36) और** (ऐ पैग़म्बर उस वक़्त को याद कीजिए) **जब आप** (समझाते हुए) **उस आदमी से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने भी इनआम किया** (कि इस्लाम की तौफ़ीक़ दी जो दीनी इनआम है और गुलामी से छुड़ाया जो दुनिया की नेमत है) **और आप ने भी इनआम किया** (दीन सिखाया और आज़ाद किया और फूफी ज़ाद बहन से निकाह कराया मुराद इससे मुंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद रज़ि० हैं कि आप उनको समझा रहे थे) **कि अपनी बीवी** (ज़ैनब) **को अपने निकाह में रहने दो** (और उसकी मामूली ग़लतियों पर ध्यान न दो) **और अल्लाह से डरो** (और उसके हक़ों में भी कमी न करो) **और** (जब शिकायतें हद से बढ़ गईं और सुधार की उम्मीद न रही तो उस वक़्त समझाने के साथ) **आप अपने दिल में वो बात** (भी) **छुपाए हुए थे जिस को अल्लाह तआ़ला** (आख़ीर में) **खोलने वाला था** (मुराद इससे आप का निकाह है हज़रत ज़ैनब से जब कि ज़ैद उनको तलाक़ देदें) **और** (इस सूरत में) **आप लोगों** (के ताने) **से** (भी) **डरते थे** (कि लोग कहेंगे कि अपने मुंह बोले बेटे की तलाक़ दी हुई औरत से निकाह कर लिया और इस काम के करने का दीनी फ़ाइदा क्या है उस वक़्त इस बात पर ध्यान नहीं किया होगा इसलिए लोगों के ऐतराज़ की फ़िक्र हुई) **और अल्लाह इस बात का ज़्यादा हक़दार है कि तुम उससे डरो** (बस फिर आप किसी से नहीं डरे)**, फिर जब ज़ैद का उस** (ज़ैनब) **से जी भर गया** (यानी तलाक़ देदी और इद्दत भी पूरी हो गई तो) **हम ने आप से उस का निकाह कर दिया ताकि मुसलमानों पर अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों** (से निकाह करने) **के बारे में कुछ तंगी न रहे जब वो** (मुंह बोले बेटे) **उन से अपना जी भर चुकें** (यानी तलाक़ देदें मतलब यह कि यह शरीअत का हुक्म खोलना था)**, और अल्लाह का यह हुक्म तो होने वाला ही** (था क्योंकि इसमें दीनी भेद छुपा) **था(37) इन पैग़म्बर के लिए अल्लाह तआ़ला ने जो बात तय कर दी उस में नबी पर कोई इल्ज़ाम** (और ताना देने की बात) **नहीं, अल्लाह तआ़ला ने उन** (पैग़म्बरों) **के हक़ में** (भी) **ये ही दस्तूर रक्खा है जो पहले हो चुके हैं** (कि उनको जिस काम की इजाज़त होती है बेझिजक वो उसको करते रहते हैं और उन पर कोई ऐतराज़ नहीं ऐसे ही इन नबी पर ऐतराज़ की गुन्जाइश नहीं)**, और** (उन पैग़म्बरों

के भी इस क़िस्म के जितने काम होते हैं उन सब के बारे में भी) **अल्लाह का हुक्म** (पहले से) **तय किया हुआ होता है(38) ये सब** (पहले पैग़म्बर) **ऐसे थे कि अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पहुंचाया करते थे और** (इस बारे में) **अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे** (बस आप भी किसी से न डरिए), **और अल्लाह** (किये कामों का) **हिसाब लेने के लिए काफ़ी** (है फिर किसी से क्या डरना दूसरे आप को ताना देने और ऐतराज़ करने वालों को भी सज़ा देगा इसलिए तानों का ग़म करना बेकार) **है(39)।**

नोटः- हज़रत ज़ैद बिन हारसा रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुंह बोले बेटे थे हुज़ूर ने उनका निकाह अपनी फूफी ज़ाद बहन ज़ैनब रज़ि० से करने को कहा तो ज़ैनब रज़ि० के भाई इसके लिए तैयार नहीं थे मगर हुज़ूर के हुक्म को मानने की ताकीद मालूम हुई तो दोनों बहन भाई ख़ुशी से तैयार हो गये मगर निकाह के बाद उनका निबाह न हो सका तो वही से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताया गया कि ज़ैद अपनी बीवी ज़ैनब को तलाक़ देंगे और ज़ैनब से आप का निकाह होगा यह वो बात है जो आप दिल में छुपाए हुए थे जिसको अल्लाह खोलने वाला था। उस ज़माने में अरब में दस्तूर था कि मुंह बोले बेटे को अपने बेटे की तरह समझा जाता था और मीरास में भी वो हिस्से दार होता था और उसकी बीवी से निकाह को बुरा समझते थे। इस्लाम में इस बात को मना किया गया इस दस्तूर को मिटाने के लिए यह काम नबी के ज़रिये से कराया गया ताकि किसी मुसलमान को ऐतराज़ की गुन्जाइश न रहे।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِيْمًا ۟

आयत नं० 40

(मुसलमानो) **मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं लेकिन अल्लाह के रसूल** (होने की वजह से सारी उम्मत के रूहानी बाप) **हैं और** (सब नबियों में) **सब से आख़री नबी हैं, और** (अगर किसी को यह वसवसा और शक हो कि यह निकाह जाइज़ तो था लेकिन अगर न होता तो अच्छा होता ताकि लोगों को इस ऐतराज़ का और ताने का मौक़ा ही न मिलता कि मुंह बोले बेटे की बीवी से निकाह कर लिया तो समझ लेना चाहिए कि) **अल्लाह तआ़ला हर बात** (की भलाई बुराई) **को अच्छी तरह जानने वाला है(40)**

नोटः- इस आयत से साबित हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़री नबी व आख़री पैग़म्बर हैं आप के बाद कोई नबी पैग़म्बर आने वाला नहीं जो आदमी नबी होने का दावा करे वो झूटा और काफ़िर है। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का आख़री ज़माने में आना पैग़म्बर की हैसियत से न होगा बल्कि वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत के ताबे होकर काम करेंगे।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ﴿41﴾ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِيْلًا ﴿42﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَ مَلٰٓئِكَتُهٗ
لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿43﴾ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚۖ وَ اَعَدَّ لَهُمْ
اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿44﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًا ﴿45﴾ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا
مُّنِيْرًا ﴿46﴾ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿47﴾ وَ لَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ دَعْ اَذٰىهُمْ وَ
تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿48﴾

आयत नं० 41 से 48

ऐ ईमान वालो तुम (अल्लाह के अहसानों को याद करके उस का यह शुक्र अदा करो कि) **अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करो** (इसमें सब इबादतें आगईं)(41) **और** (इस ज़िक्र व इबादत की पाबन्दी रक्खो) **सुबह शाम** (यानी हर घड़ी) **उसकी तस्बीह करते रहो** (यानी दिल से भी ज़बान से भी और बदन से भी)(42) **वो ऐसा** (महरबान) **है कि वो** (ख़ुद भी) **और** (उसके हुक्म से) **उस के फ़रिशते** (भी) **तुम पर रहमत भेजते रहते हैं** (उस का रहमत भेजना तो रहमत करना है और फ़रिशतों का रहमत भेजना रहमत की दुआ करना है और यह रहमत भेजना इसलिए है) **ताकि अल्लाह तआ़ला** (उस रहमत की बरकत से) **तुम को** (जहालत और गुमराही के) **अन्धेरों से** (इल्म और हिदायत की) **रौशनी की तरफ़ ले आए, और** (इससे साबित हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला मोमिनों पर बहुत महरबान है**(43) (और आख़रत में भी उन पर रहमत होगी कि) **वो जिस दिन अल्लाह से मिलेंगे तो उन को जो सलाम होगा वो यह होगा कि** (अल्लाह तआला ख़ुद उन से कहेगा) **अस्सलामु अलैकुम** (जो मुसलमानों के लिए बड़ी इ़ज़्ज़त की बात होगी) **और अल्लाह तआ़ला ने उन** (मोमिनों) **के लिए** (जन्नत में) **इ़ज़्ज़त का इनआम तैयार कर रक्खा** (है बस उन के जाने की देर) **है**(44) **ऐ नबी** (आप कुछ सरफिरों के ऐतराज़ से दुखी न हों क्योंकि) **बेशक हम ने आप**

को इस शान का रसूल बनाकर भेजा है कि आप (क़ियामत के दिन सरकारी) **गवाह होंगे** (कि आप के बयान पर उम्मत के लोगों का फ़ैसला होगा) **और** (दुनिया में) **आप** (मोमिनों को) **ख़ुशख़बरी देने वाले हैं और** (काफ़िरों के) **डराने वाले हैं(45) और** (सब को) **अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से बुलाने वाले हैं और आप** (हिदायत का नमूना होने में) **एक रौशन चराग़** (की तरह) **हैं(46) और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए कि उन पर अल्लाह की तरफ़ से बड़ी महरबानी होने वाली है(47) और** (इसी तरह काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों को डराते रहिए और) **काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न मानिये** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तो इसकी उम्मीद नहीं कि काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों के कहने में आकर तबलीग़ व दावत का काम छोड़ दें लेकिन यह कि लोगों के ऐतराज़ से ज़ैनब के निकाह में कोई सुस्ती न करें) **और उन** (काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों) **की तरफ़ से जो** (कोई) **तकलीफ़ पहुंचे** (जैसा कि इस निकाह के बारे में पहुंची) **उसकी परवाह न कीजिए और अल्लाह पर भरोसा कीजिए, और बस अल्लाह ही काम बनाने वाला है(48)।**

नोटः- ऊपर आयत से साबित हुआ कि मुसलमानों का सलाम आपस में एक दूसरे को अस्सलामु अलैकुम होना चाहिए, चाहे बड़े की तरफ़ से छोटे के लिए हो या छोटे की तरफ़ से बड़े के लिए हो।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ
تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾

आयत नं० 49

ऐ ईमान वालो (तुम्हरे निकाह के हुक्मों में से एक हुक्म तो यह है कि) **जब तुम मुसलमान औरतों से निकाह करो** (और) **फिर उनको छूने** (यानी विदाई होने) **से पहले ही** (किसी वजह से) **तलाक़ दे दो तो तुम्हारी उन पर कोई इद्दत** (वाजिब) **नहीं जिसको तुम गिनने लगो** (ताकि उनको उस इद्दत में दूसरे निकाह से रोक सको जैसा कि इद्दत वाजिब होने की सूरत में शरीअत से रोकना जाइज़ बल्कि वाजिब है और जब इस सूरत में इद्दत नहीं) **तो उनको कुछ** (माल) **सामान देदो और भलाई के साथ उनको विदा करदो(49)।**

नोटः- छूने से मुराद निकाह के बाद विदाई होकर तन्हाई में एक दूसरे का मिलाप हो जाना है। और भलाई से विदा करने का मतलब यह है कि उनको ज़बान से कोई सख़्त बात न कहे और जितना महर उनका बैठता है वो अदा कर दे। और विदाई से पहले तलाक़ दे देने की सूरत में तय महर का आधा देना होता है।

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَ مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَ بَنٰتِ
عَمِّكَ وَ بَنٰتِ عَمّٰتِكَ وَ بَنٰتِ خَالِكَ وَ بَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَ امْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ
اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ
وَ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَ
تُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ؕ وَ مَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ وَ لَا
يَحْزَنَّ وَ يَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ
النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَ لَاۤ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّ لَوْ اَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ۝

आयत नं० 50 से 52

ऐ नबी (कुछ हुक्म ख़ास आप के लिए हैं उनमें से कुछ ये हैं, पहला हुक्म) **हम ने आप के लिए आप की ये बीवियां** (जो कि इस वक़्त आप की ख़िदमत में हाज़िर हैं और) **जिनको आप उनके महर दे चुके हैं** (चार से ज़्यादा होने के बावजूद) **हलाल की हैं और** (दूसरा हुक्म यह कि) **वो औरतें भी** (ख़ास तौर पर हलाल की हैं) **जो तुम्हारी बान्दियां हैं जो अल्लाह तआ़ला ने आप को ग़नीमत में दिलवादी हैं** (और ख़ास तौर पर हलाल से मुराद यह है कि जो बान्दी आप के लिए हलाल की गई है आप के बाद वो किसी के लिए हलाल न होगी) **और** (तीसरा हुक्म यह कि) **आप के चचा की बेटियां और आप की फूफियों की बेटियां** (मुराद इससे बाप के ख़ानदान की बेटियां हैं) **और आप के मामू की बेटियां और आप की ख़ालाओं की बेटियां** (मुराद इससे मां के ख़ानदान की बेटियां हैं, यानी उन सब को) **भी** (अल्लाह तआ़ला ने आप के लिए हलाल किया है, मगर इन ख़ानदान की औरतों में सिर्फ़ वो ही) **जिन्होंने आप के साथ हिजरत की** (हो साथ से मुराद यह

कि हिजरत के हुक्म पर अमल किया) **हो, और** (चौथा हुक्म यह कि) **उस मुसलमान औरत को भी** (आप के लिए हलाल किया है) **जो बिना बदल** (यानी बिना महर) **अपने को पैग़म्बर को पेश कर दे** (यानी निकाह में आना चाहे) **शर्त यह कि पैग़म्बर उस को निकाह में लाना चाहें** (मुसलमान की क़ैद से मुराद यह है कि काफ़िर औरत से जाइज़ नहीं जैसा कि आम मुसलमान किताब वालों की औरत से निकाह कर सकते थे और यह पांचवा हुक्म है) **ये सब हुक्म ख़ास आप के लिए हैं दूसरे मुसलमानों के लिए नहीं** (हैं कि उनके लिए दूसरे हुक्म) **हैं,** (और) **हम को वो हुक्म मालूम हैं** (और आयतों व हदीसों से औरों को भी मालूम करा दिये हैं) **जो हम ने उन** (आम मुसलमानों) **पर उनकी बीवियों और बान्दियों के बारे में तय किये हैं** (और आप को उनसे अलग किया है) **ताकि आप पर किसी क़िस्म की तंगी न रहे, और अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाला बड़ा महरबान है(50)** (और छटा हुक्म यह है कि) **इन** (बीवियों) **में से आप जिसको चाहें** (और जब तक चाहें) **अपने से दूर रक्खें** (यानी उसको बारी न दें) **और जिसको चाहें** (और जब तक चाहें) **अपने पास रक्खें** (यानी उस को बारी दें), **और जिन को दूर कर रक्खा था उनमें से फिर किसी को बुला लें तब भी आप पर कोई गुनाह** (नहीं मतलब यह कि बीवियों के साथ रात की बारी में बराबरी करना आप पर वाजिब) **नहीं, इसमें** (एक छुपी भलाई यह है कि इसमें) **उम्मीद है कि उन** (बीवियों) **की आंखें ठन्डी रहेंगी** (यानी ख़ुश रहेंगी) **और उन्हें दुख नहीं होगा और जो कुछ भी आप उनको दे देंगे उस पर सब की सब राज़ी रहेंगी** (क्योंकि दुख तब होता है जब अपने हक़ में कमी समझे और जब मालूम हो जाए कि जो कुछ मिला है वो अहसान है हमारा हक़ नहीं है तो किसी को कोई शिकायत न रहेगी), **और अल्लाह उन सब बातों को जानता है जो तुम्हारे दिलों में हैं** (इसलिए यह मत सोचना कि ये हुक्म सब के लिए क्यों नहीं क्योंकि यह अल्लाह तआ़ला पर ऐतराज़ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हसद है जिस पर सज़ा होनी चाहिए), **और अल्लाह तआ़ला** (ये ही क्या) **सब कुछ जानने वाला** (और) **बड़ी सहार वाला** (है इसलिए फ़ौरन सज़ा नहीं देता कभी ढील दे देता) **है(51) इनके सिवा** (जो ऊपर बयान हुईं) **दूसरी औरतें आप के लिए हलाल नहीं हैं** (यानी रिशतेदारों में से हिजरत न करने वाली और दूसरी औरतों में जो मोमिन न हों हलाल नहीं) **और** (आगे सातवां नया हुक्म यह है कि) **न यह जाइज़ है कि आप इन** (मौजूदा) **बीवियों की जगह दूसरी नई बीवियां कर लें** (इस तरह से कि इनमें से किसी को तलाक़ देदें और उसकी जगह दूसरी करलें और बिना इनको तलाक़ दिये हुए अगर किसी से निकाह करलें तो इसकी मनाही नहीं इसी तरह अगर बदलने के इरादे के बिना किसी को तलाक़ देदें तो

इसकी भी मनाही साबित नहीं बस बदलना मना है) **चाहे आप को उन** (दूसरी औरतों) **की अच्छाई पसन्द आए, मगर जो आप की बान्दी हो** (कि वो किताब वाली होने पर भी हलाल है और उसको बदलना भी जाइज़ है), **और अल्लाह तआला हर चीज़** (की असलीयत और निशानियों और छुपी भलाइयों) **की पूरी देखभाल करने वाला** (है इसलिए सब हुक्मों में भलाइयां छुपी हैं चाहे वो आम लोगों को पता न हों इसलिए किसी को ऐतराज़ का हक़ नहीं) **है(52)।**

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत सी औरतों से निकाह की इजाज़त होने में छुपी भलाइयों में एक भलाई यह है कि उन बीवियों के वास्ते से दीन की ख़ास बातें उम्मत को मालूम हुईं जिसका अन्दाज़ा इस बात से हो सकता है कि सिर्फ़ हज़रत आयशा रज़ि० से '2210' हदीसें और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से '368' हदीसें रिवायत की गईं हैं जो हदीस की किताबों में लिखी हैं और 200 से ज़्यादा हज़राते सहाबा हज़रत आइशा के शागिर्द हैं जिन्होंने हदीसें और फ़तवे उनसे सीखे हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ ۙ وَ لٰكِنْ اِذَا
دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَ لَا مُسْتَاْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ
مِنْكُمْ ؗ وَ اللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَ اِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْـَٔلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ
لِقُلُوْبِكُمْ وَ قُلُوْبِهِنَّ ؕ وَ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَنْ تَنْكِحُوْۤا اَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ
ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ۝٥٣ اِنْ تُبْدُوْا شَيْـًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٥٤ لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ
فِيْۤ اٰبَآىِٕهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآىِٕهِنَّ وَ لَاۤ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَ لَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَ لَا نِسَآىِٕهِنَّ وَ لَا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَ اتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ۝٥٥

आयत नं० 53 से 55

ऐ ईमान वालो नबी के घरों में (बेबुलाए) **मत जाया करो मगर जिस वक़्त तुम को खाने के लिए** (आने की) **इजाज़त दी जाए** (तो जाने में हरज नहीं, मगर तब भी जाना) **इस तरह** (हो) **कि उस** (खाने) **की तैयारी के इन्तिज़ार में न रहो** (यानी बेदावत तो जाओ नहीं और दावत हो तब

भी बहुत पहले से मत जा बैठो) **लेकिन जब तुम को बुलाया जाए** (कि अब चलो खाना तैयार है) **तब जाया करो फिर जब खाना खा चुको तो उठ कर चले जाया करो और बातों में जी लगा कर मत बैठा करो,** (क्योंकि) **इस बात से नबी को तकलीफ़ होती है सो वो तुम से** (कहते हुए) **शर्माते हैं** (कि उठ कर चले जाओ), **और अल्लाह तआ़ला साफ़ बात कहने से** (किसी से) **नहीं शर्माते** (इसलिए साफ़ कह दिया गया), **और** (अब से ये हुक्म किया जाता है कि हज़रत की बीवियां तुम से पर्दा करेंगी तो अब से) **जब तुम उन से कोई चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर** (खड़े होकर वहां) **से मांगा करो** (यानी बेज़रूरत तो पर्दे के पास जाना और बात करना भी न चाहिए लेकिन ज़रूरत में बात करने में हरज नहीं मगर सामना न होना चाहिए), **यह बात** (सदा के लिए) **तुम्हारे दिलों और उनके दिलों के पाक रहने का अच्छा सामान है** (यानी जिस तरह अब तक पाक हैं इससे आगे को पाक रहेंगे), **और** (सिर्फ़ यह घर में जम कर बैठ जाना ही नहीं बल्कि) **तुम को** (किसी बात में भी) **जाइज़ नहीं कि रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को तकलीफ़ पहुंचाओ और न यह जाइज़ है कि तुम उनके बाद उनकी बीवियों से कभी भी निकाह करो, यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी भारी** (गुनाह की) **बात** (है और जिस तरह यह निकाह नाजाइज़ है ऐसे ही उस का ज़बान से कहना या दिल में इरादा करना सब गुनाह) **है**(53) (सो) **अगर तुम** (इसके बारे में) **किसी चीज़ को** (ज़बान से) **खोलोगे या उस** (के इरादे) **को** (दिल में) **छुपा कर रक्खोगे तो अल्लाह तआ़ला** (को दोनो की ख़बर होगी क्योंकि वो) **हर चीज़ को अच्छी तरह जानते हैं** (बस तुम को इस पर सज़ा देंगे)(54) **पैग़म्बर की बीवियों पर अपने बापों के** (सामने होने के) **बारे में कोई गुनाह नहीं और न अपने बेटों के** (यानी जिसके बेटा हो) **और न अपने भाइयों के और न अपने भतीजों के और न अपने भान्जों के और न अपनी** (दीन शरीक) **औरतों के और न अपनी बान्दियों के** (यानी उनके सामने आना जाइज़ है) **और** (ऐ पैग़म्बर की बीवियों इन हुक्मों की पाबन्दी में) **अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ को देख रहा है** (यानी उससे कोई चीज़ छुपी नहीं जो उसकी बात न मानेगा उस को सज़ा से डरना चाहिए)(55)।

नोटः- ऊपर आयतों में महमानों के लिए और औरतों के पर्दे के बारे में जो हुक्म बयान हुए हैं वो सारी उम्मत के लिए अमल करने और दुनिया व आख़रत का नफ़ा उठाने के लिए हैं।

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝٥٦

आयत नं० 56

बेशक अल्लाह तआ़ला और उसके फ़रिशते रहमत भेजते हैं इन पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर, ऐ ईमान वालो तुम भी उन पर रहमत भेजा करो और ख़ूब सलाम भेजा करो** (ताकि आप की मुहब्बत व अज़्मत का हक़ अदा हो जाए)(56)।

नोटः- अल्लाह तआ़ला का रहमत भेजना रहमत उतारना है और फ़रिशतों की तरफ़ से रहमत नबी के लिए रहमत की दुआ करना है और आम मुसलमानों की तरफ़ से रहमत भेजना दुआ करना और तारीफ़ करना है।

सहाबा के सलात व सलाम का तरीक़ा पूछने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तरीक़ा बताया वो वोही है जो नमाज़ में अत्तहिय्यात और दुरूद शरीफ़ "अल्लाहुम्मा सल्लि...... व अल्लाहुम्मा बारिक......" पढ़ते हैं।

मसअलाः-(1) नमाज़ में तो सलात व सलाम का वोही तरीक़ा क़ियामत तक रहेगा जो हदीस में बताया गया है और रोज़ाए अक़्दस पर सलाम अर्ज़ किया जाए तो अस्सलामु अलैकु कहना सुन्नत है और इसके अलावा "सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" कहा जाए जैसा कि मुहद्दिसीन की किताबों में लिखा है।

(2) जब कोई हुज़ूर का ज़िक्र करे या सुने तो उस पर दुरूद शरीफ़ (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहना) वाजिब हो जाता है। और इस बारे में हदीस में भी आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "ज़लील हो वो आदमी जिसके सामने मेरा ज़िक्र आए और मुझ पर दुरूद न भेजे"। (तिरमिज़ी)

एक और हदीस में है कि "बख़ील (कन्जूस) है वो आदमी जिसके सामने मेरा ज़िक्र आए और वो मुझ पर दुरूद न भेजे"। (तिरमिज़ी)

(3) एक मजलिस में आपका मुबारक ज़िक्र बार-बार आए तो सिर्फ़ एक बार दुरूद पढ़ने से वाजिब अदा हो जाता है लेकिन मुस्तहब यह है कि जितनी बार ज़िक्र करे या सुने तो हर बार दुरूद पढ़े।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِينَ
يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٨﴾

आयत नं० 57 से 58

बेशक जो लोग अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को** (जान बूझ कर) **तकलीफ़ देते हैं अल्लाह उन पर दुनिया व आख़रत में लानत करता है और उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब तैयार कर रक्खा है(57) और** (इसी तरह) **जो लोग ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों को बिना इसके कि उन्होंने कुछ** (ऐसा काम) **किया हो** (जिससे वो सज़ा के हक़दार हो जाएं) **तकलीफ़ पहुंचाते हैं तो वो लोग झूट और खुले गुनाह का** (अपने ऊपर) **बोझ लेते हैं** (यानी अगर तकलीफ़ ज़बान से पहुंचाई गई तो झूटा इल्ज़ाम है और अगर हाथ से हो तो गुनाह है ही)(58)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो अल्लाह से डरो उनको मेरे बाद अपने ऐतराज़ों का निशाना न बनाओ क्योंकि उनसे जिसने मुहब्बत की मेरी मुहब्बत की वजह से की और जिसने दुशमनी रक्खी मेरी दुशमनी की वजह से रक्खी और जिसने उन को तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ दी और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह को तकलीफ़ दी और जिसने अल्लाह को तकलीफ़ दी तो अल्लाह तआला उसकी पकड़ करेगा"। (तिरमिज़ी)

और एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "मुसलमान तो सिर्फ़ वो आदमी है जिसके हाथ ज़बान से सब सलामत रहें किसी को तकलीफ़ न पहुंचे और मोमिन तो सिर्फ़ वो ही है जिससे लोग अपने जान और माल के बारे में अमन में हों"। (मज़हरी)

मसअलाः-जो आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी तरह की तकलीफ़ पहुंचाए आप की ज़ात या सिफ़ात में कोई ऐब निकाले चाहे साफ़ कहे या इशारे में कहे वो काफ़िर हो गया और इस आयत की रू से उस पर अल्लाह की लानत दुनिया में भी होगी और आख़रत में भी । (तफ़सीर मज़हरी)

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَ بَنٰتِكَ وَ نِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ
فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۵۹﴾ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْمُرْجِفُوْنَ فِي
الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ۖۛ ﴿۶۰﴾ مَّلْعُوْنِيْنَ ۛۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَ قُتِّلُوْا
تَقْتِيْلًا ﴿۶۱﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَ لَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿۶۲﴾

आयत नं० 59 से 62

ऐ पैग़म्बर अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और दूसरे मुसलमानों की औरतों से भी कह दीजिए कि वो अपनी चादरें (सर से) **अपने** (चेहरे के) **ऊपर झुका लिया करें, इससे जल्दी पहचान हो जाया करेगी** (कि किसी शरीफ़ ख़ानदान की हैं) **तो उनको सताया न जाएगा** (और कोई छेड़ छाड़ न करेगा यानी अगर किसी ज़रूरत से बाहर निकलना पड़े तो चादर से सर और चेहरा भी छुपा लिया जाए जैसे आजकल बुर्क़े का रिवाज है), **और** (अगर इस पर्दे में बिना इरादा कुछ चूक हो जाए तो) **अल्लाह तआ़ला** (उसको मुआफ़ कर देगा क्योंकि वो) **बख़्शने वाला महरबान है (59)** (और आगे उन लोगों को धमकी दी गई है जो रास्तों में औरतों को छेड़ते थे और झूटी अफ़वाहें फैलाकर उनको परीशान करना चाहते थे फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ों में से) **वो लोग जिनके दिलों में रोग है** (जिसकी वजह से औरतों को छेड़ते और परीशान करते हैं) **और** (उन्ही मुनाफ़िक़ों में से) **वो लोग जो मदीने में** (झूटी और परीशान करने वाली) **अफ़वाहें उड़ाया करते हैं** (ये लोग) **अगर** (अपनी इन हरकतों से) **बाज़ न आए तो ज़रूर** (एक न एक दिन) **हम आप को उन पर तैनात कर देंगे** (यानी उन के मदीने से निकालने का हुक्म कर देंगे) **फिर** (उस हुक्म के बाद) **ये लोग आप के पास मदीने में बहुत ही कम रहने पाएंगे(60) वो भी** (हर तरफ़ से) **फिटकारे हुए** (यानी मदीने से निकलने के लिए जो मोहलत दी जाएगी उन दिनों में भी ज़लील व रूसवा होंगे फिर निकाल दिये जाएंगे और निकालने के बाद भी कहीं अमन न होगा बल्कि) **जहां मिलेंगे पकड़ लिये जाएंगे और मारे जाएंगे(61)** (और फ़सादियों को ऐसी सज़ा देना कुछ इन्हीं के लिए ख़ास नहीं बल्कि) **अल्लाह तआ़ला ने उन** (फ़सादी) **लोगों में भी अपना ये ही दस्तूर** (जारी) **रक्खा जो** (इन से) **पहले हो चुके हैं** (कि उन को आसमानी सज़ाएं दीं या पैग़म्बरों के हाथ से जिहाद में दिलवाईं, बस अगर पहले ऐसा न हो चुका होता तो ऐसी सज़ा में कुछ अचम्भा हो सकता था) **और आप अल्लाह के दस्तूर में** (किसी आदमी की तरफ़ से) **बदलाव न पाएंगे** (कि अल्लाह तो कोई हुक्म जारी करना

चाहे और कोई उस को रोक सके)(62)।

नोट:- ऊपर आयतों से साबित हुआ कि.......

(1) औरतों को जब किसी ज़रूरत से बाहर निकलना पड़े तो पर्दे का ध्यान रक्खें।

(2) मुसलमानों में ऐसी अफ़वाह फैलाना हराम है जिन से उनको परीशानी और नुक़सान पहुंचे।

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ؕ قُلۡ اِنَّمَا عِلۡمُهَا عِنۡدَ اللّٰهِ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوۡنُ قَرِيۡبًا ﴿۶۳﴾ اِنَّ اللّٰهَ
لَعَنَ الۡكٰفِرِيۡنَ وَاَعَدَّ لَهُمۡ سَعِيۡرًا ﴿۶۴﴾ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوۡنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيۡرًا ﴿۶۵﴾ يَوۡمَ تُقَلَّبُ
وُجُوۡهُهُمۡ فِى النَّارِ يَقُوۡلُوۡنَ يٰلَيۡتَنَاۤ اَطَعۡنَا اللّٰهَ وَاَطَعۡنَا الرَّسُوۡلَا ﴿۶۶﴾ وَقَالُوۡا رَبَّنَاۤ اِنَّاۤ اَطَعۡنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا
فَاَضَلُّوۡنَا السَّبِيۡلَا ﴿۶۷﴾ رَبَّنَاۤ اٰتِهِمۡ ضِعۡفَيۡنِ مِنَ الۡعَذَابِ وَالۡعَنۡهُمۡ لَعۡنًا كَبِيۡرًا ﴿۶۸﴾

आयत नं० 63 से 68

ये (इनकार करने वाले) **लोग आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं** (कि कब होगी), **आप** (उन के जवाब में) **कह दीजिए कि उस** (के वक़्त) **की ख़बर बस अल्लाह ही के पास है, और आप को क्या पता** (कि कब होगी) **और अजब नहीं कि क़ियामत अभी आजाए** (इसलिए चाहिए यह था कि उसके अन्जाम से डरते और उसकी तैयारी में लगते और इनकार करने वाले सवालों से और हंसी उड़ाने से बचते)(63) **बेशक अल्लाह तआ़ला ने काफ़िरों को रहमत से दूर कर रक्खा है और उनके लिए दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है(64) जिसमें वो सदा-सदा रहेंगे** (और) **न कोई यार पाएंगे और न कोई मददगार(65) जिस दिन उनके चेहरे दोज़ख़ में अलट पलट किये जाएंगे** (यानी चेहरों के बल घसीटे जाएंगे कभी चेहरे की इस करवट पर कभी दूसरी करवट पर और उस वक़्त बहुत पछताते हुए) **यह कहेंगे ऐ काश! हमने** (दुनिया में) **अल्लाह का कहा माना होता और हमने रसूल का कहा माना** (होता तो आज इस मुसीबत का सामना न) **होता(66) और** (अपने गुमराह करने वालों पर गुस्सा आएगा तो) **यह कहेंगे कि या रब हमारे हमने अपने सरदारों का** (यानी हुकूमत वालों का) **और अपने बड़ों का कहना माना था सो उन्होंने हम को** (सीधे) **रास्ते से गुमराह किया था(67) या रब हमारे उन को दोगुनी सज़ा दीजिए और उन पर बड़ी लानत कीजिए(68)।**

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ؕ وَ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿۶۹﴾ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ قُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿۷۰﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۱﴾

आयत नं० 69 से 71

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों की तरह मत होना जिन्होंने (झूटी बात बनाकर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को सताया था सो उनको अल्लाह तआला ने बरी साबित कर दिया** (यानी उन को तो कुछ नुक़सान न पहुंचा इल्ज़ाम लगाने वाले ही झूटे और सज़ा के हक़दार ठहरे), **और वो** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) **अल्लाह के नज़दीक बड़े रूतबे वाले** (पैग़म्बर) **थे** (मतलब यह है कि तुम रसूल की मुख़ालफ़त करके उनको तकलीफ़ न देना क्योंकि उनकी मुख़ालफ़त अल्लाह की मुख़ालफ़त है वर्ना इसके नतीजे में तुम ख़ुद अपना नुक़सान करोगे)(69) **ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो** (यानी हर बात में उसका कहा मानो) **और** (ख़ास कर बोलने में इस का बहुत ध्यान रक्खो कि जब बात करो) **सीधी सच्ची बात कहो** (जिसमें इन्साफ़ की हद से आगे न बढ़ो)(70) **अल्लाह तआला** (इस के बदले में) **तुम्हारे नेक कामों को क़ुबूल करेगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा** (कुछ नेक कामों की बरकत से कुछ तौबा की बरकत से), **और** (ये फल ताबेदारी के हैं और ताबेदारी ऐसी चीज़ है कि) **जो आदमी अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा तो वो बड़ी कामयाबी को पहुंचेगा**(71)।

नोटः- ऊपर आयत से यह भी मालूम हुआ कि ज़बान और कलाम को ठीक रखना दीन व दुनिया दोनों के काम ठीक बनाने वाला अमल है।

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَ اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَ حَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿۷۲﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ وَ الْمُشْرِكٰتِ وَ يَتُوْبَ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۷۳﴾

आयत नं० 72 से 73

हम ने यह अमानत (यानी शरीअत के हुक्म जो अमानत की तरह हैं) **आसमानों और**

ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश की थी (यानी उनमें कुछ समझ पैदा करके और उन हुक्मों के मानने पर सवाब और न मानने पर अज़ाब बता कर उस अमानत की ज़िम्मेदारी लेना या न लेना उन की मर्ज़ी पर छोड़ दिया गया था) **तो उन्होंने** (डर और अज़ाब की वजह से सवाब की उम्मीद से भी हाथ उठा दिया और) **उस की ज़िम्मेदारी से इनकार कर दिया और उस** (की ज़िम्मेदारी) **से डर गये** (कि ख़ुदा जाने क्या अन्जाम हो, और अगर वो अपने ज़िम्मे रख लेते तो इन्सान की तरह उनको भी अक़्ल और समझ दी जाती) **और** (जब इन्सान को पैदा करके उससे ये ही बात पूछ गई तो) **इन्सान ने** (इस वजह से कि अल्लाह के इल्म में उस का ख़लीफ़ा होना तय था) **उस को अपने ज़िम्मे ले लिया,** (फिर उनमें बहुत सों की हालत यह है कि) **वो** (अपने आमाल व कारनामों में) **ज़ालिम है** (और इल्म में) **जाहिल** (है यानी दोनों बातों में आमाल में भी और अक़ीदों में भी हुक्म की मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी करता) **है(72)** (और इस ज़िम्मेदारी का) **अन्जाम यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला मुनाफ़िक़ मर्दों व मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों व मुशरिक औरतों को** (कि ये हुक्मों के बर्बाद करने वाले हैं) **सज़ा देगा और मोमिन मर्दों व मोमिन औरतों को मुआफ़ कर देगा** (और उन पर रहमत की नज़र करेगा)**, और** (अगर मुख़ालफ़त के बाद भी कोई बाज़ आजाए तो उस को भी मोमिनों में शामिल कर लिया जाएगा क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाला बड़ा महरबान है(73)।**

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चार चीज़ें ऐसी हैं कि जब वो तुम्हें हासिल हो जाएं तो दुनिया की और कोई चीज़ तुम्हें हासिल न हो तो कोई अफ़सोस की बात नहीं। (वो चार चीज़ें ये हैं)- अमानत की हिफ़ाज़त, बात की सच्चाई, अच्छे अख़लाक़ और हलाल रोज़ी। (इब्ने कसीर)

34-सूरत-सबा

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '54' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ وَ لَہُ الۡحَمۡدُ فِی الۡاٰخِرَۃِ ؕ وَ ہُوَ الۡحَکِیۡمُ الۡخَبِیۡرُ ﴿۱﴾ یَعۡلَمُ مَا
یَلِجُ فِی الۡاَرۡضِ وَ مَا یَخۡرُجُ مِنۡہَا وَ مَا یَنۡزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا یَعۡرُجُ فِیۡہَا ؕ وَ ہُوَ الرَّحِیۡمُ الۡغَفُوۡرُ ﴿۲﴾

आयत नं० 01 से 02

सारी तारीफ़ (हम्दो सना) **उसी अल्लाह की है जो मालिक है** (सब का) **जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और आख़रत में भी तारीफ़ उसी की है** (कि जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल होने के बाद उसी की हम्दो सना करेंगे), **और वो हिकमत वाला है** (कि आसमान व ज़मीन की सारी मख़्लूक़ को बहुत सी भलाइयों और हिकमतों के साथ बनाया और वो) **ख़बरदार** (भी है कि उन हिकमतों को पैदा करने से पहले से जानता) **है(01)** (और वो ऐसा ख़बरदार है कि) **वो सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर जाती है** (जैसे बारिश का पानी) **और जो चीज़ उसमें से निकलती है** (जैसे पेड़ पौधे और खेती) **और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ उसमें चढ़ती है** (जैसे फ़रिशते जो आसमान से उतरते और चढ़ते रहते हैं और जैसे शरीअत के हुक्म जो आसमान से उतारे जाते हैं और नेक काम जो आसमान में ले जाए जाते हैं), **और** (इसलिए सब को चाहिए कि उसका शुक्र अदा करें और जो न करें वो सज़ा पाएं लेकिन) **वो** (अल्लाह) **बड़ा रहम करने वाला** (और) **बहुत बख़्शने वाला** (भी है और अपनी रहमत से छोटे गुनाहों को नेक कामों से और बड़े गुनाहों को तौबा से और कभी दोनो क़िस्म के गुनाहों को सिर्फ़ अपनी महरबानी से मुआफ़ कर देता है और जो गुनाह कुफ़्र व शिर्क की हद तक पहुंच जाए उस को ईमान लाने से मुआफ़ कर देता) **है(02)**।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ۭ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ
فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝۳ لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝۴ وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ
رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝۵ وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ
الْحَمِيْدِ ۝۶ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰي رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ
جَدِيْدٍ ۝۷ اَفْتَرٰى عَلَي اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ۝۸
اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ
عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَاۗءِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝۹

आयत नं० 03 से 09

और ये काफ़िर कहते हैं कि हम पर क़ियामत न आएगी, आप कह दीजिए कि क्यों नहीं (आएगी) **क़सम मेरे रब छुपी बातें जानने वाले की कि वो ज़रूर तुम पर आएगी** (उस का इल्म ऐसा है कि) **उस** (के इल्म) **से कोई तिल भर छुपा नहीं न आसमानों में न ज़मीन में** (बल्कि सब उसके इल्म में हाज़िर हैं) **और न कोई चीज़ उससे छोटी है और न कोई चीज़** (उससे) **बड़ी है मगर ये सब** (चीज़ें तक़दीर की) **खुली किताब में** (लिखी) **हैं (03)** (और क़ियामत इसलिए आएगी) **ताकि उन लोगों को** (अच्छा) **बदला दे जो ईमान लाए थे और उन्होंने नेक काम किये थे,** (सो) **ऐसे लोगों के लिए बख़्शिश और** (जन्नत में) **इज़्ज़त की रोज़ी है(04) और जिन लोगों ने हमारी आयतों के बारे में** (उनके झुटलाने की) **कोशिश की थी** (नबी को) **हराने के लिए** (चाहे इस कोशिश में नाकाम ही रहे) **ऐसे लोगों के लिए बहुत सख़्त दर्दनाक अज़ाब होगा(05) और** (क़ुरआन के हक़ होने का सबूत यह है कि) **जिन लोगों को** (आसमानी किताबों का) **इल्म दिया गया है वो इस क़ुरआन को जो कि आप के रब की तरफ़ से आप के पास भेजा गया है ऐसा समझते हैं वो हक़ है और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले और) **ख़ूबियों वाले अल्लाह** (की रज़ामन्दी) **का रास्ता बताता है(06) और** (आगे फिर क़ियामत का ज़िक्र है कि) **ये काफ़िर** (आपस में) **कहते हैं कि क्या हम तुम को एक ऐसा आदमी बताएं जो तुम को यह** (अजीब) **ख़बर देता है कि जब तुम** (मर कर) **बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाओगे तो** (उसके बाद क़ियामत को)

तुम ज़रूर एक नये जन्म में आओगे(07) पता नहीं इस आदमी ने अल्लाह पर (जान बूझ कर) **झूट बान्धा है या उसको किसी तरह का जुनून** (है कि बेइरादा झूट बोल रहा) **है,** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि हमारे नबी न झूट घड़ने वाले हैं और न उनको जुनून है) **बल्कि जो लोग आख़रत पर यक़ीन नहीं रखते** (वो ही) **अज़ाब और परले दर्जे की गुमराही में** (पड़े हैं और इस गुमराही का असर यह है कि सच्चे भी झूटे और मजनू दिखाई देते) **हैं(08)** (ये लोग दोबारा पैदा करने को हमारी क़ुदरत से दूर समझ रहे हैं) **तो क्या इन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा जो उनके आगे** (भी) **और उनके पीछे** (भी) **मौजूद** (हैं कि जिधर देखो वो ही दिखाई दे रहे हैं बस इन बड़ी चीज़ों को पैदा करने वाला क्या छोटी चीज़ों को दोबारा पैदा नहीं कर सकता और साफ़ दलील के बावजूद भी हटधर्मी से इनकार कर रहे हैं और इनको क़ियामत में क़ियामत के इनकार पर भी सज़ा होगी और हम हर सज़ा पर क़ुदरत रखते) **हैं, अगर हम चाहें तो उनको ज़मीन में धंसा दें या** (अगर चाहें तो) **उन पर आसमान के टुकड़े गिरा दें** (लेकिन इसमें भेद हैं जो मोहलत दे रक्खी है), **इस** (बताई दलील) **में** (अल्लाह की क़ुदरत की) **पूरी दलील है** (मगर) **उस बन्दे के लिए जो** (अल्लाह की तरफ़) **लौ लगाने वाला भी** (हो और हक़ की चाहत भी रखता) **हो** (यानी दलील तो काफ़ी है मगर उनकी तरफ़ से चाहत नहीं इसलिए महरूम हैं)(09)।

नोटः- सारे जहानों का कोई ज़र्रा किसी घड़ी भी उससे बाहर नहीं बस ऐसा इल्म सिवाए अल्लाह के किसी और को हासिल नहीं हो सकता।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ وَالطَّيْرَ ۖ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾ أَنِ اعْمَلْ سَابِغَاتٍ وَقَدِّرْ فِي
السَّرْدِ ۖ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۖ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١﴾ وَلِسُلَيْمَانَ الرِّيحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۖ وَأَسَلْنَا
لَهُ عَيْنَ الْقِطْرِ ۖ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ
عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿١٢﴾ يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِيبَ وَتَمَاثِيلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَاسِيَاتٍ ۚ اعْمَلُوا آلَ
دَاوُدَ شُكْرًا ۚ وَقَلِيلٌ مِنْ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ
تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾

आयत नं० 10 से 14

और हम ने दाऊद (अलैहिस्सलाम) **को अपनी तरफ़ से बड़ी नेमत दी थी,** (जैसा कि हमने

पहाड़ों को हुक्म दिया था कि) **ऐ पहाड़ो! दाऊद के साथ बार-बार तस्बीह करो** (यानी जब ये ज़िक्र करें तुम भी इनका साथ दो) **और** (इसी तरह) **परिन्दों को भी हुक्म दिया** (कि इनके साथ तस्बीह करो, और यह तस्बीह ऐसी होगी कि सुनने वाले भी समझलें और यह आप का मोजिज़ा हुआ) **और** (एक नेमत यह दी कि) **हम ने उनके वास्ते लोहे को** (मोम की तरह) **नर्म कर दिया था(10)** (और यह हुक्म दिया) **कि तुम** (इस लोहे की अच्छी) **पूरी ज़रह बनाओ और** (कड़ियों के) **जोड़ने में** (ठीक) **अन्दाज़** (का ध्यान) **रक्खो और** (जैसे हमने तुम को नेमतें दी हैं उनके शुक्र में) **तुम सब** (यानी दाऊद अलैहिस्सलाम और उनके घर वाले) **नेक काम किया करो,** (और इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रक्खो कि) **मैं तुम्हारे सब के कामों को देख रहा हूं(11) और सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के लिए हवा को ताबे बना दिया कि उस** (हवा) **का सुबह का चलना महीने भर की दूरी थी और** (इसी तरह) **उस का शाम का चलना महीने भर की दूरी** (थी यानी वो हवा सुलेमान अलैहिस्सलाम को इतनी-इतनी दूर पहुंचाती) **थी, और** (एक नेमत उनको यह दी कि) **हम ने उनके लिए ताम्बे की नहर बहादी** (यानी ताम्बे को उसकी कान में पानी की तरह पतला कर दिया ताकि उससे बिना मशीनों के आसानी से चीज़ें बना सकें फिर वो जम जाता यह भी एक मोजिज़ा है), **और** (एक नेमत यह थी कि हमने) **जिन्नात** (को उनका ताबे कर दिया था उन) **में कुछ वो थे जो उनके आगे** (तरह-तरह के) **काम करते थे उनके रब के हुक्म से, और** (उनको यह हुक्म दिया था कि) **उनमें जो आदमी हमारे** (इस) **हुक्म से** (कि सुलेमान अलैहिस्सलाम का कहना मानो) **मुंह फेरेगा** (यानी कहना न मानेगा तो) **हम उस को** (आख़रत में) **दोज़ख़ का अज़ाब चखाएंगे** (यानी जिन्नात में जो ईमान लाएगा और कहना मानेगा वो दोज़ख़ के अज़ाब से बचा रहेगा)**(12) वो जिन्नात उनके लिए वो चीज़ें बनाते जो वो** (बनवाना) **चाहते थे बड़ी-बड़ी इमारतें और तस्वीरें और लगन** (यानी टब ऐसे बड़े) **जैसे हौज़ और** (बड़ी-बड़ी) **देगें जो** (हिलाए न हिल सकें) **एक ही जगह जमी रहें,** (और हमने उन को यह हुक्म दिया कि जैसे हमने तुम को नेमतें भी दी हैं) **ऐ दाऊद के ख़ानदान वालो तुम सब** (इन नेमतों के) **शुक्रिये में नेक काम किया करो, और मेरे बन्दों में शुक्र करने वाले कम ही होते हैं** (इसलिए शुक्र अदा करने से तुम सबसे ऊपर हो जाओगे)(13) **फिर जब हमने उन पर** (यानी सुलेमान अलैहिस्सलाम पर) **मौत का हुक्म जारी कर दिया** (यानी इन्तिक़ाल कर गये) **तो** (इस तरह मौत हुई कि जिन्नात को पता नहीं चला वो यह कि सुलेमान अलैहिस्सलाम मौत के क़रीब असा को दोनों हाथों से पकड़ कर उस पर टेक लगा कर तख़्त पर बैठ गये, और इसी हालत में मौत आ गई और इसी तरह साल भर तक बैठे रहे जिन्नात आप को बैठा देख कर ज़िन्दा समझते रहे पास जाकर

देखने की हिम्मत किसी की न थी और ज़िन्दा समझ कर बदस्तूर काम करते रहे और) **किसी चीज़ ने उनके मरने का पता न बताया मगर दीमक** (कीड़े) **ने कि वो सुलेमान** (अलैहिस्सलाम) **के असा को खाता था** (यहां तक कि एक हिस्सा उसका खा लिया तो वो असा गिर पड़ा उसके गिरने से सुलेमान अलैहिस्सलाम गिर पड़े) **तो जब वो गिर पड़े** (और कीड़े के लकड़ी खाने का अन्दाज़ा लगाने से पता चला कि उनको तो इन्तिक़ाल पाए हुए एक साल हुआ) **तब जिन्नात को** (अपने ग़ैब की बातें जानने के दावे की) **असलीयत पता चली** (वो यह कि) **अगर वो ग़ैब का इल्म जानते होते तो** (साल भर तक) **इस रूसवाई भरी मुसीबत में न रहते** (यानी इतनी मेहनत न करनी पड़ती)(14)।

नोटः- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम लोहे की ज़रह बनाते थे हालांकि इतने बड़े पैग़म्बर और इतने बड़े बादशाह थे मगर अपने गुज़ारे के लिए दस्तकारी करते थे तो किसी भी पेशे को हक़ीर ज़लील समझना गुनाह है और उन पेशा करने वालों की बिरादरी को गिरा हुआ समझना गुनाह है जैसा कि हिन्दुस्तान में रिवाज है।

मसअलाः- हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम की शरीअत में जानदारों की तस्वीरें बनाना और इस्तेमाल करना हराम नहीं था। मगर चूंकि पहली उम्मतों में यह बात देखी गई कि वो तस्वीरें आहिस्ता-आहिस्ता बुत परस्ती का सामान बन गईं इस लिए शरीअते इस्लाम में तस्वीरों का बनाना और इस्तेमाल करना हराम किया गया।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّ شِمَالٍ ۬ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَ اشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ
طَيِّبَةٌ وَّ رَبٌّ غَفُوْرٌ ﴿۱۵﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَ بَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّ
اَثْلٍ وَّ شَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ﴿۱۶﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَ هَلْ نُجٰزِيْۤ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿۱۷﴾ وَ جَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَ بَيْنَ
الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّ قَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَ اَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿۱۸﴾ فَقَالُوْا رَبَّنَا
بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَ مَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ
صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۱۹﴾

आयत नं० 15 से 19

सबा (क़ौम के लोगों) **के लिए** (ख़ुद) **उनके वतन** (की हालत) **में** (अल्लाह की ताबेदारी के लिए) **निशानियां मौजूद थीं,** (उनमें से एक निशानी उनकी सड़क के) **दाएं और बाएं दोनों तरफ़ बाग़ों का सिलसिला था,** (हमने पैग़म्बरों और नसीहत करने वालों के वास्ते से उन को हुक्म दिया कि) **अपने रब की** (दी हुई) **रोज़ी खाओ और** (खाकर) **उस का शुक्र** (करो यानी ताबेदारी) **करो,** (एक तो रहने को) **अच्छा शहर** (जो दुनिया का नफ़ा है) **और** (अगर ग़लती हो जाए तो गुनाह मुआफ़ करने को) **बख़्शने वाला रब** (है जो आख़रत का नफ़ा है तो ऐसी सूरत में उसकी ताबेदारी ज़रूरी) **है (15) सो** (इस पर भी) **उन्होंने** (इस हुक्म से) **मुंह मोड़ लिया तो हम ने उन पर** (अपना अज़ाब इस तरह भेजा कि) **बन्द** (डेम) **का सैलाब छोड़ दिया** (यानी जो पानी बान्ध (डेम) में रूका रहता था बान्ध टूट कर उस का पानी चढ़ आया जिस से उनके दो तरफ़ बाग़ बर्बाद हो गये) **और हमने उनके उन दो तरफ़ा बाग़ों के बदले और दो बाग़ दे दिये जिन में ये चीज़ें रह गईं कड़वे फल और झाऊ और कुछ** (जंगली) **बेर वाली झाड़ियां(16) उन को यह सज़ा हमने उनकी नाशुक्री की वजह से दी, और हम ऐसी सज़ा बड़े नाशुक्रों** (यानी काफ़िरों) **ही को दिया करते** (हैं वर्ना छोटी-छोटी ख़ताओं को तो हम मुआफ़ ही कर दिया करते) **हैं(17) और** (एक नेमत यह थी कि) **हम ने उनके और उन बस्तियों के बीच में जहां हमने पैदावार की बरकत कर रक्खी है बहुत से गांव आबाद कर रक्खे थे जो** (सड़क पर से) **दिखाई देते थे** (कि मुसाफ़िर को सफ़र में घबराहट न हो और कहीं ठहरना चाहे तो वहां जाने में झिजक भी न हो) **और हमने उन देहातों के बीच में उनके चलने का एक ख़ास अन्दाज़ रक्खा** (था यानी एक गांव से दूसरे गांव तक ऐसी दूरी रक्खी थी कि सफ़र में आराम कर सकें और वक़्त पर खा पी सकें ऐसा कोई न कोइ गांव मिल जाता) **था,** (और कहा था कि) **बिना डर और ख़तरे के उन में** (चाहो) **रातों को और** (चाहो) **दिनों को चलो** (कि न ख़तरा लुटेरों का कि पास-पास गांव थे न परीशानी खाने पीने की कि हर जगह हर सामान मिलता था)(18) **सो** (इन नेमतों की शुक्रगुज़ारी और क़द्र उन्होंने नहीं की जैसा कि) **वो कहने लगे या रब हमारे** (देहात पास-पास होने से सफ़र का मज़ा नहीं आता बस) **हमारे सफ़रों में दूरी कर दे** (यानी बीच के देहात उजाड़ दे कि ठहरने का फ़ासला बढ़ जाए ताकि सफ़र का मज़ा आए) **और** (इस नाशुक्री के सिवा) **उन्होंने** (और भी नाफ़रमानियां करके) **अपनी जानों पर ज़ुल्म किया सो हमने उन को कहानियां बना दिया और बिल्कुल तितर बितर कर दिया** (कि कुछ हलाक हो गये कुछ दूर जाकर रहने लगे और वो बस्तियां वीरान हो गईं) **बेशक इस** (क़िस्से) **में**

हर सब्र करने वाले शुक्र करने वाले (यानी मोमिन) **के लिए सीख की बातें हैं**(19)।

وَ لَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢٠ وَ مَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّا
لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَ رَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝٢١

आयत नं० 20 से 21

और सचमुच इबलीस ने अपना गुमान उन लोगों के बारे में सही पाया (यानी उस को जो यह गुमान था कि मैं आदम की औलाद में बहुत सों को गुमराह कर दूंगा क्योंकि यह मिट्टी से और मैं आग से पैदा हुआ हूं उसका यह गुमान सही निकला) **कि ये सब उसी के पीछे चल पड़े सिवाए ईमान वाले लोगों के** (कि उनमें पूरे ईमान वाले तो बिल्कुल बचे रहे और कमज़ोर ईमान वाले चाहे गुनाहों में पड़ गये मगर शिर्क व कुफ़्र से वो भी बचे रहे)(20) **और इबलीस का उन पर कुछ ज़ोर न था सिवाए इसके कि** (बहका सके और) **हम** (खुले तौर पर) **यह देखना चाहते थे कि कौन है जो आख़रत पर ईमान लाता है और कौन है जो** (इबलीस के बहकाने से) **आख़रत के बारे में शक में पड़ा** (है यानी मोमिन काफ़िर का इम्तिहान लेना) **है, और आप का रब हर चीज़ की देख रेख कर रहा** (है जिसमें लोगों का ईमान व कुफ़्र भी दाख़िल है इसलिए हर एक को सही बदला व सज़ा मिलनी) **है**(21)।

नोटः- मालूम हुआ कि शैतान को ऐसी ताक़त नहीं दी गई कि वो इन्सान पर ज़बरदस्ती हावी होकर उसको नाफ़रमानी पर मजबूर करदे लेकिन वो सिर्फ़ बहका सकता है और बहकाना भी इसलिए कि आज़माना है कि कौन उसके बहकाए में आता है कौन दीन पर क़ाइम रहता है।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَ لَا فِي الْاَرْضِ وَ مَا لَهُمْ فِيْهِمَا
مِنْ شِرْكٍ وَّ مَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ۝٢٢ وَ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فُزِّعَ عَنْ
قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٢٣ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّاۤ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٤ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّاۤ اَجْرَمْنَا وَ لَا نُسْـَٔلُ عَمَّا
تَعْمَلُوْنَ ۝٢٥ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَ هُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ۝٢٦ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ

بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ۭ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

आयत नं० 22 से 27

आप (इन लोगों से) **कह दीजिए कि जिन** (माबूदों) **को तुम अल्लाह के सिवा** (ख़ुदाई में साझी) **समझ रहे हो उन को** (अपनी ज़रूरतों के लिए) **पुकारो** (तो सही मालूम हो जाएगा कि उनके बस में क्या है, उनकी हालत तो यह है कि) **तिल भर भी** (कोई चीज़) **उनके बस में नहीं न आसमानों** (की चीज़ों) **में और न ज़मीन** (की चीज़ों) **में और न उन का इन दोनों** (के पैदा करने) **में कोई साझा है और न उनमें से कोई अल्लाह का** (किसी काम में) **मददगार है(22) और** (अगर कोई यह सोचता हो कि ये माबूद ख़ुश हो कर अल्लाह से हमारी सिफ़ारिश कर देंगे तो जान लो कि) **अल्लाह के सामने** (किसी की) **सिफ़ारिश किसी के काम नहीं आती** (बल्कि सिफ़ारिश ही नहीं हो सकती) **सिवाए उस के लिए जिसके बारे में वो** (किसी सिफ़ारिश करने वाले को) **इजाज़त देदे,** (और फ़रिश्तों का तो यह हाल है कि जब उनको कोई हुक्म दिया जाता है तो अल्लाह के रौब की वजह से घबरा कर मदहोश हो जाते हैं) **यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है तो एक दूसरे से पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या हुक्म दिया, वो जवाब देते हैं कि** (उस) **हक़ बात का हुक्म दिया और** (उसके सामने फ़रिश्तों का ऐसा हाल हो जाने में क्या हैरानी है) **वो ऊंची शान वाला सबसे बड़ा है(23) और आप** (उनसे तौहीद की जानकारी के लिए यह भी) **पूछिए कि तुम को आसमान** (से पानी बरसाकर) **और ज़मीन से** (खेती उगाकर) **कौन रोज़ी देता है,** (चूंकि वो भी जानते हैं इसलिए) **आप** (ही) **कह दीजिए कि अल्लाह तआला** (रोज़ी देता है) **और** (यह भी कहिए कि इस तौहीद के मसअले में) **बेशक हम या तुम ज़रूर सीधे रास्ते पर हैं या खुली गुमराही में** (हैं यानी यह तो हो नहीं सकता कि तौहीद और शिर्क दोनो सही और हक़ हों और दोनो तरह के अक़ीदे रखने वाले हक़ पर हों बल्कि ज़रूरी है कि उन दोनों अक़ीदों में से एक सही दूसरा ग़लत हो, सही अक़ीदे के रखने वाले हिदायत पर ग़लत अक़ीदा रखने वाले गुमराही पर होंगे अब तुम सोचलो कि उनमें से कौन सा अक़ीदा सही है और कौन लोग हक़ व हिदायत पर हैं और कौन गुमराही पर) **हैं(24) आप** (उनसे यह भी) **कह दीजिए** (कि हमने खोल कर सही व ग़लत को बयान कर दिया है अब तुम और हम हर एक अपने कामों का ज़िम्मेदार है) **तुम से हमारे जुर्मों की पूछताछ न होगी और हम से तुम्हारे कामों की पूछ न होगी(25) और** (आप उन से यह भी) **कह दीजिए कि** (एक वक़्त ज़रूर आने वाला है जिसमें) **हमारा रब सब को** (एक जगह) **जमा**

करेगा फिर हमारे बीच ठीक-ठीक (खुला) **फ़ैसला कर देगा, और वो बड़ा फ़ैसला करने वाला** (और सब का हाल) **जानने वाला है**(26) **आप** (यह भी) **कहिए कि** (तुम ने अल्लाह तआ़ला की ऊंची शान और बड़ी क़ुदरत की दलीलें सुन लीं और अपने बुतों की बेबसी भी देख ली) **मुझ को ज़रा वो तो दिखाओ जिनको तुमने शरीक बना कर** (इबादत का हक़दार समझ कर) **अल्लाह के साथ मिला रक्खा है हरगिज़** (उस का कोई साझी) **नहीं, बल्कि** (असल में) **वो ही है अल्लाह** (यानी सच्चा माबूद) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला**(27)।

नोटः- यहां दीन के लिए किये जाने वाले मुनाज़रे और बहसो मुबाहिसे का तरीक़ा मालूम हुआ कि मंशा नसीहत की होनी चाहिए और ऐसा तरीक़ा अपनाना चाहिए जिससे मुख़ालिफ़ को नागवारी न हो।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

आयत नं० 28

और हमने तो आप को सारे लोगों के वास्ते (चाहे जिन्नात हों या इन्सान, अरब वाले हों या दुनिया के दूसरे लोग, मौजूद हों या बाद में होने वाले हों सब के लिए) **पैग़म्बर बनाकर भेजा है** (ईमान लाने पर उनको हमारी रज़ामन्दी व सवाब की) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और** (ईमान न लाने पर उनको हमारे गुस्से व अज़ाब से) **डराने वाला लेकिन बहुत से लोग नहीं समझते** (जहालत या हटधर्मी की वजह से इनकार और झुटलाने में लग जाते हैं)(28)।

नोटः- हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे पांच चीज़ें ऐसी दी गईं हैं जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं मिलीं:-

(1)- एक यह कि मेरी मदद अल्लाह तआ़ला ने मुझे ऐसा रौब देकर की है कि एक महीने की दूरी तक लोगों पर मेरा रौब छा जाता है।

(2)- दूसरे यह कि मेरे लिए पूरी ज़मीन को मस्जिद और पाक बना दिया गया है (पहले नबियों की शरीअतों में उनकी इबादत ख़ास इबादतगाहों ही में होती थी उनकी मस्जिदों से बाहर मैदान या घर में इबादत न होती थी और मिट्टी को ऐसा पाक बनाया कि पानी न मिलने की सूरत में मिट्टी से तयम्मुम कर लिया जाए तो वुज़ू की जगह हो जाता है)।

(3)- तीसरे यह कि मेरे लिए माले ग़नीमत हलाल कर दिया गया है मुझ से पहले किसी उम्मत के लिए यह हलाल नहीं था (बल्कि हुक्म यह था कि जंग में जो माल काफ़िरों का हाथ आता उसको जमा करके एक जगह रख दें वहां एक आसमानी आग बिजली वग़ैरह आकर उसको जला देगी और यह जला देना ही उस जिहाद के क़ुबूल होने की निशानी होगी जबकि इस उम्मत के लिए माले ग़नीमत को क़ुरआन के बताए हुए उसूल के हिसाब से बान्ट लेना और अपनी ज़रूरतों में ख़र्च कर लेना जाइज़ कर लिया दिया गया) ।

(4)- चौथे यह कि मुझे शफ़ाअते कुबरा का मक़ाम दिया गया (यानी हश्र के मैदान में जिस वक़्त कोई पैग़म्बर सिफ़ारिश की हिम्मत न करेगा मुझे उस वक़्त सिफ़ारिश का मौक़ा दिया जाएगा) ।

(5)- पांचवे यह कि मुझ से पहले हर नबी अपनी ख़ास क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था मुझे सारी दुनिया की क़ौमों की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजा गया है। (इब्ने कसीर)

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّ لَا
تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَ لَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَ لَوْ تَرٰۤى اِذِ
الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ اِ۟لْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا لَوْ لَاۤ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْۤا اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ
الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ
الَّيْلِ وَ النَّهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَنَاۤ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَ نَجْعَلَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ وَ اَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَ
جَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْۤ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾

आयत नं० 29 से 33

और ये लोग (क़ियामत में जमा होने के बारे में सुनकर) **कहते हैं कि** (क़ियामत के आने का) **वादा कब** (पूरा) **होगा अगर तुम** (यानी नबी और आप के मानने वाले) **सच्चे हो** (तो बताओ)(29) **आप कह दीजिए कि तुम्हारे वास्ते एक ख़ास दिन का वादा** (तय) **है उससे एक घड़ी न पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो** (यानी चाहे हम वक़्त न बताएं जो तुम पूछ रहे हो

मगर आएगी ज़रूर जिसके बारे में पूछने का मतलब तुम्हारा इनकार करना है)(30) **और ये काफ़िर लोग** (दुनिया में तो ख़ूब बातें बनाते हैं और) **कहते हैं कि हम हरगिज़ इस कुरआन पर ईमान न लाएंगे और न इससे पहली किताबों पर, और** (क़ियामत में ये सारी लम्बी चौड़ी बातें ख़त्म हो जाएंगी बस) **अगर आप** (उनकी) **उस वक़्त की हालत देखें** (वो एक डरावनी सूरत दिखाई दे) **जब कि ये ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किये जाएंगे तो एक दूसरे पर बात टालता होगा** (जैसा कोई काम बिगड़ जाने के वक़्त आदत होती है बस) **छोटे दर्जे के लोग** (यानी पीछे चलने वाले) **बड़े लोगों** (यानी अपने सरदारों) **से कहेंगे कि** (हम तो तुम्हारी वजह से बर्बाद हुए) **अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आए होते(31)** (इस पर) **ये बड़े लोग उन छोटे दर्जे के लोगों से कहेंगे कि क्या हम ने तुम को सीधे रास्ते** (पर चलने) **से** (ज़बरदस्ती) **रोका था जब कि वो** (सीधी राह) **तुम को पहुंच चुकी थी नहीं बल्कि तुम ही कुसूरवार** (हो कि असलीयत जानने के बाद भी उसको न माना अब हमारे सर रखते) **हो(32) और** (उसके जवाब में) **ये कम दर्जे के लोग उन बड़े लोगों से कहेंगे कि** (हम यह नहीं कहते कि तुमने ज़बरदस्ती की थी) **नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की कोशिशों ने रोका था जब तुम हमें कहते रहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और उसके साथ** (दूसरों को) **साझी मानें, और** (दिल में दोनों अपने को कुसूरवार समझ कर पछताते होंगे लेकिन) **वो लोग** (अपने इस) **पछतावे को** (एक दूसरे से) **छुपाए रक्खेंगे जब कि** (अपने-अपने कारनामों पर) **अज़ाब** (होता हुआ) **देखेंगे, और हम** (सब) **काफ़िरों की गर्दनों में पट्टे डालेंगे** (और हाथ पैर में जंजीर फिर बन्धा हुआ जहन्नम में डाल दिया जाएगा), **जैसा करते थे वैसा ही तो भरा(33)।**

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِیْ قَرْیَةٍ مِّنْ نَّذِیْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا
وَّ اَوْلَادًا ۙ وَّ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِیْنَ ﴿۳۵﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّیْ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَ یَقْدِرُ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ لَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِیْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰۤی اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا ۫ فَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَ هُمْ فِی الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ الَّذِیْنَ یَسْعَوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیْنَ اُولٰٓئِكَ فِی
الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿۳۸﴾

आयत नं० 34 से 38

और (ऐ पैग़म्बर इन लोगों की जहालत और गुमराही की बातों से आप दुखी न हों क्योंकि यह क़िस्सा अनोखा आप ही के साथ नहीं बल्कि) **हम ने जिस किसी बस्ती में कोई ख़बरदार करने वाला** (पैग़म्बर) **भेजा** (तो) **वहां के ख़ुशहाल लोगों ने** (इस दौर के काफ़िरों की तरह) **ये ही कहा कि हम तो उन हुक्मों का इनकार करते हैं जो तुम को देकर भेजा गया है(34) और** (इन्हीं की तरह) **उन्होंने यह भी कहा कि हम माल और औलाद में तुम से ज़्यादा हैं और** (यह दलील है हमारे इज़्ज़तदार और अल्लाह का हम से राज़ी होने की बस) **हम को कभी अज़ाब न होगा(35) आप** (उन से) **कह दीजिए कि** (किसी के पास माल का ज़्यादा होना उससे अल्लाह के राज़ी होने की निशानी नहीं है बल्कि) **मेरा रब जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है कम देता है** (और उसमें भलाई छुपी होती हैं) **लेकिन** (मालदार होना अल्लाह के राज़ी होने की निशानी नहीं इस बात को) **अक्सर लोग समझते नहीं(36) और** (ऐ काफ़िरों यह भी सुन लो कि) **तुम्हारे माल और औलाद ऐसी चीज़ नहीं जो तुम को दर्जे में हमारा नज़दीकी बना दे हां मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम करे** (ये दोनो चीज़ें तो अल्लाह का नज़दीकी बनाने वाली हैं) **सो ऐसे लोगों के लिए उनके** (नेक) **कामों का दो गुना बदला है** (यानी कामों से ज़्यादा सवाब) **और वो** (जन्नत के) **झरोंकों में चैन से** (बैठे) **होंगे(37) और जो लोग** (इसके उलट सिर्फ़ माल और औलाद पर घमन्ड करते हैं और न ईमान लाते न नेक काम करते हैं बल्कि वो) **हमारी आयतों के बारे में** (उनके झुटलाने की) **कोशिश कर रहे हैं** (नबी को) **हराने के लिए ऐसे लोग अज़ाब में लाए जाएंगे(38)।**

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे मालों को नहीं देखता वो तो तुम्हारे दिलों को और आमाल को देखता है। (इब्ने कसीर)

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٩﴾

आयत नं० 39

आप (मोमिनों से) **यह कह दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में से जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहे कम देता है, और** (ख़र्च में कन्जूसी से माल बढ़ नहीं सकता और शरीअत के हिसाब से ख़र्च करने से घट नहीं सकता इसलिए तुम माल से दिल न लगाओ बल्कि जहां जहां ख़र्च करने का हुक्म है बेधड़क ख़र्च करते रहो कि जितनी रोज़ी नसीब में है इससे वो कम नहीं हो सकती क्योंकि) **जो चीज़ तुम** (अल्लाह के हुक्म के मौक़ों में) **ख़र्च करोगे तो अल्लाह तआला उस का** (आख़रत में तो ज़रूर और अक्सर दुनिया में भी) **बदला देगा और वो सबसे बेहतर रोज़ी देने वाला है**(39)।

नोटः- एक हदीस में है कि नेक काम सदक़ा है और कोई आदमी जो अपनी जान या अपने घर वालों पर ख़र्च करता है वो भी सदक़े के हुक्म में है उस पर भी सवाब है और जो आदमी कुछ ख़र्च करके अपनी आबरू बचाए वो भी सदक़ा है और जो आदमी अल्लाह के हुक्म से कुछ ख़र्च करता है तो अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उसका बदल उसको देगा मगर वो ख़र्च जो मकान बनाने में (ज़रूरत से ज़्यादा हो) या किसी गुनाह के काम में किया हो उसके बदल का वादा नहीं। (क़ुरतबी)

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَٰٓئِكَةِ أَهَٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ۝ قَالُوا۟ سُبْحَٰنَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن
دُونِهِم ۖ بَلْ كَانُوا۟ يَعْبُدُونَ ٱلْجِنَّ ۖ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ ۝ فَٱلْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَ
لَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا۟ ذُوقُوا۟ عَذَابَ ٱلنَّارِ ٱلَّتِى كُنتُم بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

आयत नं० 40 से 42

और (वो दिन न भूलो) **जिस दिन अल्लाह तआला उन सब को** (क़ियामत के मैदान में) **जमा करेगा फिर फ़रिशतों से कहेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत किया करते थे** (फ़रिशतों से यह सवाल मुशरिकों को लाजवाब करने के लिए होगा जो फ़रिशतों को और दूसरों को यह सोचकर पूजते थे कि ये राज़ी होकर हमारी सिफ़ारिश करेंगे)(40) **वो** (फ़रिशते) **कहेंगे कि आप** (शरीक से) **पाक हैं हमारा तो** (सिर्फ़) **आप से ताल्लुक़ है न कि इन से** (यानी न हमने इन से कहा और न इस बात से राज़ी हम तो आप के ताबेदार हैं जो चीज़ आप को नापसन्द है जैसे शिर्क उससे हम

नाख़ुश हैं और असल में ये हमारी इबादत न करते थे) **बल्कि ये लोग शैतानों को पूजा करते थे** (क्योंकि शैतान ही इस बात को उकसाते थे और इससे राज़ी भी थे इसलिए वो ही इन के माबूद हुए) **इनमें अक्सर लोग उन ही** (शैतानों) **का ऐतक़ाद रखते** (थे यानी जान बूझकर भी बहुत से उन को पूजते) **थे** (41) **सो** (काफ़िरों से कहा जाएगा कि जिन से तुम उम्मीदें रखते थे) **आज** (ख़ुद उन के इनकार से भी और उन की बेबसी से भी साबित हुआ कि) **तुम** (सब माबूदों और इबादत करने वालों) **में से न किसी के नफ़ा पहुंचाना बस में है न नुक़सान पहुंचाना** (यानी ये माबूद तुम को कोई नफ़ा नहीं पहुंचा सकते), **और** (उस वक़्त) **हम ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **से कहेंगे कि जिस दोज़ख़ के अज़ाब को तुम झुटलाया करते थे** (अब) **उसका मज़ा चक्खो**(42)।

وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَ قَالُوْا
مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۴۳﴾ وَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَ مَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿۴۴﴾ وَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَ مَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ
مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۴۵﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَ فُرَادٰى ثُمَّ
تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿۴۶﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ
اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿۴۷﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ ﴿۴۸﴾ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ مَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَ مَا يُعِيْدُ ﴿۴۹﴾ قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَ اِنِ
اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ اِلَيَّ رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿۵۰﴾

आयत नं० 43 से 50

और जब इन लोगों के सामने हमारी आयतें जो (हक़ और सीधी राह दिखाने की ख़ूबी में) **साफ़-साफ़ हैं पढ़ी जाती हैं तो ये लोग** (पढ़ने वाले यानी नबी के बारे में) **कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **यह तो बस एक ऐसा आदमी है जो यह चाहता है कि तुम को उन चीज़ों** (की इबादत) **से बाज़ रक्खे जिन को** (बहुत पहले से) **तुम्हारे बड़े पूजते** (आरहे) **थे** (और उनसे रोक कर अपना ताबेदार बनाना चाहता है मतलब उन कम्बख़्तों का यह था कि ये नबी नहीं और इनकी दावत अल्लाह की तरफ़ से नहीं बल्कि इसमें इनका अपना मतलब हुकूमत करना है) **और** (क़ुरआन के

बारे में) **कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **यह तो बस एक घड़ा हुआ झूट** (है यानी इस को अल्लाह का कलाम कहना घड़ी हुई बात) **है, और ये काफ़िर इस हक़ बात** (यानी क़ुरआन) **के बारे में जब कि वो उनके पास पहुंचा** (इस बात पर कि अगर यह घड़ी हुई बात है तो बहुत से समझदार इसे क्यों मानते हैं तो जवाब में) **यह कहते हैं कि यह तो बस एक खुला जादू** (है यानी इसलिए समझदार आदमी भी इसे सुनकर होश खो बैठता है और इसका दीवाना हो जाता) **है(43) और** (इन को तो क़ुरआन और नबी की बड़ी क़द्र करना चाहिए थी क्योंकि उनके लिए तो ये बड़ी नेमतें थी कि) **हम ने** (इस क़ुरआन से पहले) **इन को** (कभी आसमानी) **किताबें नहीं दी थी कि उन को पढ़ते पढ़ाते हों** (जैसे बनी इस्राईल के पास किताबें थी तो इन के हक़ में तो क़ुरआन बिल्कुल एक नई चीज़ थी इसलिए उस की क़द्र करना चाहिए थी) **और** (इसी तरह) **हमने आप से पहले उनके पास कोई ख़बरदार करने वाला** (यानी पैग़म्बर) **नहीं भेजा था** (तो उन के लिए नबी भी एक नई दौलत थी इसलिए उन की भी क़द्र करना चाहिए थी ख़ास कर जब कि उनकी तमन्ना भी थी कि उनके पास कोई नबी आए तो ये उसकी ताबेदारी करें मगर इन लोगों ने फिर भी क़द्र न की बल्कि झुटलाया)(44) **और** (ये लोग झुटलाकर बेफ़िक्र न हो बैठें क्योंकि झुटलाने का वबाल बड़ा सख़्त है जैसा कि) **इन से पहले जो काफ़िर लोग थे उन्होंने** (भी पैग़म्बरों और वही को) **झुटलाया था और ये** (अरब के मुशरिक) **तो उस सामान के जो हमने उनको दे रक्खा था दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचते** (यानी उनकी सी ताक़त उनकी सी उम्रें उनकी सी हुकूमत इनको नहीं मिली जो घमन्ड का सामान होता है सो ये बेचारे किस धोके में हैं) **बस उन्होंने मेरे रसूल को झुटलाया सो** (देखो) **मेरा** (उन पर) **कैसा अज़ाब** (हुआ उनकी दौलत उनके कुछ काम न आई और उनका कैसा अन्जाम) **हुआ(45)** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन से) **यह कहिए कि मैं तुम को सिर्फ़ एक** (छोटी सी) **बात समझाता हूं** (उससे साफ़ समझ में आजाएगा) **वो यह कि तुम** (सिर्फ़) **अल्लाह के वास्ते** (यानी साफ़ दिल से) **खड़े** (यानी तैयार) **हो जाओ** (किसी मौक़े पर) **दो दो और** (किसी मौक़े पर) **एक-एक फिर** (ख़ूब) **सोचो कि** (जैसा दावा मैं करता हूं कि क़ुरआन जैसी एक आयत ही लाकर दिखा दो तो ऐसा दावा या तो नबी कर सकता है या वो जिस की अक्ल में ख़राबी हो जुनून हो गया हो तो) **तुम्हारे इस साथी को** (जो हर वक़्त तुम्हारे सामने रहता है और जिसकी हर बात को देखते हो यानी मुझ को) **जुनून** (तो) **नहीं है,** (और जब दीवाना नहीं है तो) **वो** (तुम्हारा साथी पैग़म्बर है और पैग़म्बर की हैसियत से) **तुम को एक सख़्त अज़ाब के आने से पहले डराने वाला** (है बस इस तरह से पैग़म्बरी का सबूत और उसकी तस्दीक़ बहुत आसान) **है(46)** (और हुकूमत चाहने का जो

इल्ज़ाम है उसके बारे में) **आप कह दीजिए कि मैंने तुम से** (इस तबलीग़ के काम पर) **कुछ बदला मांगा हो तो वो तुम्हारा ही रहा** (यानी तुम से कुछ बदला नहीं चाहता), **मेरा बदला तो बस** (वादे के हिसाब से) **अल्लाह ही के ज़िम्मे है और वो ही हर चीज़ का जानने वाला है**(47) **आप कह दीजिए कि मेरा रब हक़ बात को** (यानी ईमान और उसके सबूत को झूट यानी कुफ़्र और इनकार पर) **हावी कर रहा है** (और) **वो छुपी बातों का जानने वाला** (है उसको सब बातों की पहले से ख़बर) **है**(48) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप कह दीजिए कि** (दीने) **हक़ आगया और झूट** (यानी झूटा दीन) **न करने का रहा न धरने का** (यानी उसका झूट होना बिल्कुल साफ़ हो गया)(49) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि** (जब इस दीन का हक़ होना साबित हो गया तो इससे यह भी ज़रूरी हो गया कि) **अगर** (मान लो) **मैं** (इस हक़ को छोड़ कर) **गुमराह हो जाऊं तो मेरी गुमराही का मुझ ही को नुक़सान होगा** (दूसरों का क्या नुक़सान है) **और अगर मैं** (इस हक़ की ताबेदारी करके) **सीधे रास्ते पर हूं तो यह इस क़ुरआन** (और दीन) **की वजह से है जिसको मेरा रब मेरे पास भेज रहा** (है मतलब यह कि अगर तुम ने हक़ का रास्ता न अपनाया तो तुम भुगतोगे मेरा क्या बिगड़ेगा और अगर राह पर आ गये तो यह राह पर आना इसी सच्चे दीन की ताबेदारी की वजह से होगा बस तुम को चाहिए कि सीधे रास्ते पर आने के लिए इस दीन को अपनाओ और अल्लाह को सब का हाल मालूम) **है,** (वो हर एक को उसके हिसाब से बदला देगा क्योंकि) **वो सब कुछ सुनता** (है और) **बहुत नज़दीक है**(50)।

وَ لَوْ تَرٰۤی اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَ اُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِیْبٍ ﴿۵۱﴾ وَّ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَ اَنّٰی لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍۭ
بَعِیْدٍ ﴿۵۲﴾ وَّ قَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ یَقْذِفُوْنَ بِالْغَیْبِ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ ﴿۵۳﴾ وَ حِیْلَ بَیْنَهُمْ وَ بَیْنَ مَا
یَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِاَشْیَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِیْ شَكٍّ مُّرِیْبٍ ﴿۵۴﴾

आयत नं० 51 से 54

और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अगर आप वो वक़्त देखें** (तो आप को अचम्भा हो) **जब ये** (काफ़िर) **लोग** (क़ियामत के डर व दहशत से) **घबराए फिरेंगे फिर निकल भागने की कोई सूरत न होगी और पास के पास ही से** (यानी फ़ौरन) **पकड़ लिये जाएंगे**(51) **और** (उस वक़्त) **कहेंगे कि हम इस हक़ पर ईमान ले आए** (और जितनी बातें इसमें बताई हैं सब को मान

लिया इसलिए हमारी तौबा क़ुबूल करली जाए चाहे दुनिया में भेज कर या बिना भेजे हुए) **और इतनी दूर जगह से** (ईमान) **उनके हाथ कहां आ सकता** (है यानी ईमान लाने और आमाल की जगह दुनिया थी जो बड़ी दूर हो गई अब आख़िरत है जो आमाल की जगह नहीं फल की जगह है इसमें ईमान कुबूल नहीं होता क्योंकि अब जो ईमान होगा वो ग़ैब पर ईमान नहीं बल्कि देख लेने के बाद) **है(52) जब कि पहले से** (दुनिया में) **ये लोग इस हक़ का इनकार करते रहे और दूर ही से अटकल के तीर चलाते रहे** (यानी बे सोचे समझे दुनिया में तो कुफ़्र करते रहे अब ईमान सूझा है और उसके क़ुबूल होने की आरज़ू है)(53) **और** (चूंकि आख़िरत अमल की जगह नहीं है इसलिए) **उनमें और उन** (के ईमान क़ुबूल होने) **की आरज़ू में एक दीवार कर दी जाएगी** (यानी उनकी आरज़ू पूरी न होगी) **जैसा कि उन के जैसे तरीक़े वालों के साथ** (भी) **ये ही** (बरताव) **किया जाएगा जो उनसे पहले** (कुफ़्र कर चुके) **थे, ये सब बड़े शक में थे जिसने उन को उलझन** (और धोके) **में डाल रक्खा था(54)।**

नोटः- दुनिया में कोई मुजरिम भाग जाए तो उस को तलाश करना पड़ता है लेकिन मैदाने हश्र में सब के सब अपनी ही जगह में गरिफ़्तार कर लिए जाएंगे किसी काफ़िर को भागने का मौक़ा न मिलेगा।

35-सूरत-फ़ातिर

इस मक्की सूरत में '5' रूकू और '45' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ
مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ① مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا
مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ② يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ
اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ڮ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ③

आयत नं० 01 से 03

सभी तारीफ़ (हम्दो सना उसी) **अल्लाह के लिए है जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है जो फ़रिशतों को पैग़ाम ले जाने के लिए बनाने वाला है जिन के दो-दो और तीन-तीन और चार-चार पंख** (हैं पैग़ाम ले जाने से मुराद नबियों के पास वही लाना है और उनके पंख चार से ज़्यादा भी हो सकते) **हैं,** (क्योंकि) **वो पैदाइश में जो चाहता है ज़्यादा कर देता** (है यहां तक कि कुछ फ़रिशतों के छः सौ पंख पैदा किये हैं जैसा कि हदीस में हज़रत जिबरील के बारे में आया) **है, बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ की कुदरत रखने वाला है(01)** (और क़ुदरत वाला भी ऐसा जिस का कोई रोकने वाला नहीं कि वो) **अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोल दे** (जैसे बारिश, खेती और आम रोज़ी) **तो उसका कोई बन्द करने वाला नहीं और जिसको बन्द कर दे तो उस के** (बन्द करने के) **बाद उस का कोई जारी करने वाला नहीं** (लेकिन वो ख़ुद ही ये काम कर सकता है)**, और वो ही ज़बरदस्त** (कुदरत वाला) **हिकमत वाला** (है यानी हर काम हिकमत से करता) **है(02) ऐ लोगो तुम पर जो अल्लाह के अहसान** (और नेमतें) **हैं उन को याद** (करो और उनका शुक्र अदा करो और वो शुक्र यह है कि शिर्क छोड़ दो और सिर्फ़ उस की ही इबादत) **करो,** (कम से कम उसकी दो बड़ी नेमतों को सोचो कि) **क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है जो तुम को आसमान व ज़मीन से रोज़ी देता हो** (यानी उसके सिवा न कोई पैदा करने

वाला और न रोज़ी पहुंचाने वाला, तो बेशक) **उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़** (भी) **नहीं तो** (जब इबादत उसी का हक़ है तो) **तुम** (शिर्क करके) **कहां उल्टे जा रहे हो(03)**।

नोटः- एक हदीस में यह दुआ आई है कि "या अल्लाह जो चीज़ आप किसी को देदें उसका कोई रोकने वाला नहीं और जिसको आप रोकें उसको कोई देने वाला नहीं। आपके इरादे के ख़िलाफ़ किसी करने वाले की कोशिश नहीं चलती। (इब्ने कसीर)

وَ اِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝۴ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ٚ وَ لَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۵ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا
يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ؕ۝۶ اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ۬ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝۷ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۖؗ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝۸

आयत नं० 04 से 08

और (ऐ पैग़म्बर) **अगर ये लोग** (तौहीद व पैग़म्बरी के बारे में) **आप को झुटलाएं तो** (आप ग़म न करें क्योंकि) **आप से पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुटलाए जा चुके हैं** (एक तो इससे तसल्ली हासिल कीजिए), **और** (दूसरी बात यह कि) **सब काम अल्लाह ही के सामने पेश किये जाएंगे** (वो ख़ुद सब समझ लेगा आप क्यों फ़िक्र में पड़े)**(04) ऐ लोगो** (क़ियामत की ख़बर सुन कर अचम्भा मत करना) **अल्लाह तआला का** (यह) **वादा ज़रूर सच्चा है सो ऐसा न हो कि यह दुनिया की ज़िन्दगी तुम को धोके में डाले रक्खे** (कि इसमें खप कर उस आने वाले दिन को भूल जाओ) **और ऐसा न हो कि तुम को धोके बाज़** (शैतान) **धोके में डाल दे** (कि तुम उसके बहकाने में न आजाओ कि अल्लाह तआला तुम को अज़ाब न देगा)**(05) यक़ीन जानो** (वो) **शैतान तुम्हारा दुशमन है सो तुम उस को** (अपना) **दुशमन** (ही) **समझते रहो, वो तो अपने मानने वालों को सिर्फ़ इसलिए** (बुराई की तरफ़) **बुलाता है ताकि वो लोग दोज़ख़ी हो जाएं(06)** (बस) **जो लोग काफ़िर हो गये** (और उसके धोके में फंस गये) **उनके लिए सख़्त अज़ाब है, और जो लोग ईमान ले आए और अच्छे काम किये** (और उसके धोके में नहीं फंसे) **उनके लिए** (गुनाहों की) **बख़शिश और** (ईमान व नेक कामों पर) **बड़ा सवाब है(07)** (और जब काफ़िर व मोमिन का अन्जाम जान

चुके) **तो क्या** (दोनों बराबर हो सकते हैं यानी) **ऐसा आदमी जिस को उसका बुरा काम अच्छा करके दिखाया गया फिर वो उसको अच्छा समझने लगा** (और ऐसा आदमी जो बुरे को बुरा समझता है कहीं बराबर हो सकते हैं), **सो** (इसकी वजह यह है कि) **अल्लाह तआ़ला जिसको चाहता रास्ते से भटका देता है** (उसकी अक़्ल उल्टी हो जाती है) **और जिसको चाहता है सही राह पर लगा देता** (है उसकी समझ सही रहती) **है, तो इस पर अफ़सोस कर करके कहीं आप की जान न जाती रहे** (यानी कुछ अफ़सोस न कीजिए सब्र से बैठे रहिए), **अल्लाह तआ़ला** (वक़्त पर उनसे समझ लेगा क्योंकि उस) **को इनके** (सब) **कामों की ख़बर है**(08)।

नोटः- शैतान इन्सान को यह धोका देता है कि बुरे कामों को अच्छा साबित करके उनमे डाल देता है और वो गुनाह करते हुए यह समझता रहता है कि हम अल्लाह के नज़दीक मक़बूल हैं हमें अज़ाब नहीं होगा। (क़ुरतबी)

وَاللّٰهُ الَّذِیْۤ اَرْسَلَ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَحْیَیْنَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ
النُّشُوْرُ ۝۹ مَنْ كَانَ یُرِیْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِیْعًا ؕ اِلَیْهِ یَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّیِّبُ وَ الْعَمَلُ الصَّالِحُ یَرْفَعُهٗ ؕ وَ
الَّذِیْنَ یَمْكُرُوْنَ السَّیِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ؕ وَ مَكْرُ اُولٰٓئِكَ هُوَ یَبُوْرُ ۝۱۰ وَ اللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ؕ وَ مَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَ لَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَ مَا یُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّ لَا یُنْقَصُ
مِنْ عُمُرِهٖۤ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرٌ ۝۱۱ وَ مَا یَسْتَوِی الْبَحْرٰنِ ۖۗ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَ
هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَ مِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِیًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْیَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَى الْفُلْكَ فِیْهِ
مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۱۲ یُوْلِجُ الَّیْلَ فِی النَّهَارِ وَ یُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ ۙ وَ سَخَّرَ
الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ۖؗ كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا
یَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِیْرٍ ۝۱۳ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا یَسْمَعُوْا تَدْعُوْهُمْ ۚ وَ لَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ
یَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَ لَا یُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِیْرٍ ۝۱۴

आयत नं० 09 से 14

और अल्लाह ऐसा (क़ुदरत वाला) **है जो** (बारिश से पहले) **हवाओं को भेजता है फिर वो** (हवाएं) **बादलों को उठाती हैं फिर हम उस बादल को ज़मीन के सूखे हिस्से की तरफ़ चला**

कर ले जाते हैं (जिससे वहां बारिश होती है) **फिर हम उस** (बादल के पानी) **से ज़मीन को** (पैदावार से) **ज़िन्दा कर देते हैं उसके** (सूखे से) **मुर्दा हो जाने के बाद,** (बस) **इसी तरह** (क़ियामत में इन्सानों का) **जी उठना है(09) जो आदमी** (आख़िरत में) **इज़्ज़त पाना चाहता है तो** (उस को चाहिए कि अल्लाह से इज़्ज़त हासिल करे क्योंकि) **सारी इज़्ज़त अल्लाह के क़ब्ज़े में** (है बस सब अल्लाह के मुहताज हैं और उसके पाने के लिए अल्लाह को राज़ी करे यानी नेक काम करे यह उस को राज़ी करने और इज़्ज़त पाने का तरीक़ा) **है,** (और) **पाक कलमा उसी तक पहुंचता है** (यानी वो उसको क़ुबूल करता है) **और अच्छा काम उस को पहुंचता है** (इसमें ईमान के साथ सभी नेक काम आगये), **और जो लोग** (आप के ख़िलाफ़) **बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं उन को** (आख़िरत में) **सख़्त अज़ाब होगा, और** (दुनिया में भी) **उनकी चाल मिलयामेट हो जाएगी** (यानी उन कोशिशों में उन को कामयाबी न होगी बस ऐसा ही हुआ कि वो इस्लाम को मिटाना चाहते थे ख़ुद ही मिट गये)(10) **और अल्लाह तआ़ला ने तुम को** (यानी तुम्हारे बाप आदम अलैहिस्सलाम को) **मिट्टी से पैदा किया फिर** (औलाद को यानी तुम को) **मनी से पैदा किया फिर तुम को जोड़े-जोड़े बनाया** (यानी कुछ मर्द कुछ औरत यह तो उसकी क़ुदरत है), **और** (इल्म उसका ऐसा है कि) **किसी औरत को पेट में जो बच्चा होता है और जो कुछ जन्म देती है वो सब उस के इल्म से होता** (है यानी उस को पहले से सब की ख़बर होती) **है, और** (इसी तरह) **न किसी की उम्र ज़्यादा** (तय) **की जाती है और न किसी की उम्र कम** (तय) **की जाती मगर यह सब** (तक़दीर की) **एक किताब में** (लिखा हुआ होता) **है, बेशक यह सब कुछ अल्लाह को आसान है(11) और** (आगे क़ुदरत की और निशानियां सुनो कि) **दोनो दरिया बराबर नहीं हैं** (बल्कि) **एक तो मीठा प्यास बुझाने वाला है जिसका पीना भी आसान है और दूसरा कड़वा नमकीन है, और तुम हर एक** (दरिया) **से** (मच्छलियां निकाल कर उनका) **ताज़ा गोश्त खाते हो और** (ऐसे ही) **ज़ेवर** (यानी मोती) **निकालते हो जिसको तुम पहनते हो, और तुम कश्तियों को देखते हो पानी को फाड़ती हुई चलती हैं ताकि तुम** (उन से सफ़र करके) **उसकी रोज़ी तलाश करो और ताकि** (रोज़ी पाकर) **तुम** (अल्लाह का) **शुक्र करो(12)** (और कुछ और नेमतें हैं जैसे यह कि) **वो रात** (के हिस्से) **को दिन** (के हिस्से) **में मिला देता है और दिन** (के हिस्से) **को रात** (के हिस्से) **में मिला देता है** (जिससे दिन और रात घटने बढ़ने से जुड़े फ़ाइदे मिलते हैं) **और** (जैसे यह कि) **उसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है** (उनमें से) **हर एक तय वक़्त** (यानी क़ियामत के दिन) **तक** (इसी तरह) **चलते रहेंगे, ये ही अल्लाह** (जिस की यह शान है) **तुम्हारा रब है उसी की हुकूमत**

है, और उसके सिवा जिन को पुकारते हो वो तो खुजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी हक़ नहीं रखते (यानी कुछ भी उनके बस में नहीं)(13) **अगर तुम** (उन को) **पुकारो तो भी वो** (एक तो) **सुनेंगे नहीं** (बेजान तो सुन ही नहीं सकते और जानदार का मरने के बाद सुनना ज़रूरी नहीं जब अल्लाह चाहे सुना दे जब न चाहे न सुनाए) **और अगर** (मान लो) **सुन भी लें तो तुम्हारा कहना** (पूरा) **न करेंगे, और क़ियामत के दिन वो** (ख़ुद) **तुम्हारे शिर्क करने की मुख़ालफ़त करेंगे, और** (हम ने जो कुछ बताया है उस की सच्चाई में ज़रा शक न करो क्योंकि) **तुम को सारी बातों की ख़बर रखने वाले की बराबर कोई नहीं बताएगा** (बस हमारा बताना सबसे ज़्यादा सही है)(14)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआला किसी क़ौल (बयान) को बिना अमल के और किसी कौल व अमल को बिना नीयत के और किसी कौल व अमल और नीयत को बिना सुन्नत के हिसाब से होने के पूरी तरह क़बूल नहीं करता। (क़ुरतबी)
इससे मालूम हुआ कि पूरी तरह क़ुबूल होने की शर्त सुन्नत के हिसाब से होना है।

मसअलाः- ऊपर आयत से मालूम हुआ कि मोतियों का इस्तेमाल मर्दों के लिए भी जाइज़ है मगर सोने चान्दी के ज़ेवर का इस्तेमाल करना मर्दों के लिए जाइज़ नहीं।

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾
وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۷﴾ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ
وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى
لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿۱۹﴾ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿۲۰﴾ وَلَا الظِّلُّ وَلَا
الْحَرُوْرُ ﴿۲۱﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ ﴿۲۲﴾
اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿۲۳﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿۲۴﴾ وَاِنْ
يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿۲۵﴾ ثُمَّ
اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 15 से 26

ऐ लोगो तुम (ही) **अल्लाह के मुहताज हो और अल्लाह** (तो) **बेनियाज़** (है यानी किसी का मुहताज नहीं और खुद सारी) **ख़ूबियों वाला है**(15) **अगर** (तुम नहीं मानोगे तो खुद नुक़सान उठाओगे मगर अल्लाह को तुम्हारे कामों की कुछ ज़रूरत नहीं अगर) **वो चाहे तो** (तुम्हारे कुफ़्र की सज़ा में) **तुम को फ़ना कर दे और एक नई मख़लूक़ पैदा कर दे** (जो तुम्हारी तरह कुफ़्र व इनकार न करें)(16) **और यह बात अल्लाह को कुछ मुश्किल नहीं** (है लेकिन ख़ास वजह से मोहलत दे रक्खी) **है**(17) **और** (क़ियामत में यह हालत होगी कि) **कोई दूसरे** (के गुनाह) **का बोझ न उठाएगा, और** (खुद तो कोई किसी की मदद क्या करता बल्कि) **अगर कोई बोझ का लदा हुआ** (यानी कोई गुनाहगार) **किसी को अपना बोझ उठाने के लिए बुलाएगा** (भी) **तब भी उसमें से कुछ भी बोझ न हटाया जाएगा चाहे वो आदमी** (जिस को उसने बुलाया था उसका) **नज़दीकी रिश्तेदार ही** (क्यों न हो यानी कोई किसी के गुनाहों का बोझ अपने ज़िम्मे लेकर उसके गुनाहों का बोझ हल्का नहीं कर सकता चाहे कितना ही नज़दीकी) **हो** (बस उस वक़्त पूरा नुक़सान उस कुफ़्र और बुरे कामों का खुद ही भुगतना पड़ेगा), **आप** (ऐ पैग़म्बर उनके इनकार पर जिस की सज़ा एक दिन ज़रूर ये भुगतेंगे इतना ग़म व अफ़सोस क्यों करते हो आप) **तो** (ऐसा डराना जिससे फ़ाइदा हो) **सिर्फ़ ऐसे लोगों को डरा सकते हैं जो बे देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते** (हैं यानी आप के डराने से सिर्फ़ मोमिन फ़ाइदा उठा सकते) **हैं, और जो आदमी** (ईमान लाकर शिर्क व कुफ़्र से) **पाक होता है वो अपने** (नफ़े के) **लिए पाक होता है, और** (जो ईमान नहीं लाता वहां भुगतेगा क्योंकि सब को) **अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है** (बस नफ़ा है तो उनका आप क्यों ग़म करते हैं)(18) **और** (इन लोगों से ईमान लाने की उम्मीद रखना बेकार है क्योंकि) **अन्धा और आंखों वाला बराबर नहीं** (हो सकते)(19) **और न अन्धेरा और रौशनी** (बराबर हो सकते हैं)(20) **और न छांव और धूप** (बराबर हो सकते हैं)(21) **और** (मोमिन व काफ़िर तो ज़िन्दा और मुर्दा जैसे हैं और) **ज़िन्दे और मुर्दे बराबर नहीं हो सकते,** (और जब ये मुर्दे हैं तो मुर्दों को ज़िन्दा करना तो अल्लाह की क़ुदरत में है बन्दे के बस में नहीं बस अगर अल्लाह ही उन को राह पर ले आए तो और बात है क्योंकि) **अल्लाह जिस को चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में** (दफ़्न) **हैं**(22) (लेकिन अगर ये न मानें तो आप ग़म में न पड़िए क्योंकि) **आप तो** (काफ़िरों के हक़ में) **सिर्फ़ डराने वाले हैं**(23) (आप के ज़िम्मे यह नहीं कि वो काफ़िर डर कर मान भी जाएं, और डराना आप का अपनी तरफ़ से नहीं जैसा कि पैग़म्बरी का इनकार करने वाले कहते थे बल्कि

हमारी तरफ़ से है क्योंकि) **हम ही ने आप को सच्चा दीन देकर** (मुसलमानों को) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और** (काफ़िरों को) **डर सुनाने वाला बनाकर भेजा है, और** (यह भेजना कोई अनोखी बात नहीं जैसा काफ़िर कहते थे बल्कि) **कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला** (यानी पैग़म्बर) **न हुआ हो(24) और अगर ये लोग आप को झुटलाएं तो जो लोग इनसे पहले हुए उन्होंने भी** (अपने वक़्त के पैग़म्बरों को) **झुटलाया था** (और) **उन के पास भी उनके पैग़म्बर मोजिज़े और सहीफ़े और रौशन किताबें लेकर आए** (थे यानी कुछ छोटी किताबें और कुछ बड़ी किताबें और कुछ सिर्फ़ मोजिज़े पैग़म्बरी की तस्दीक़ के लिए और पहले पैग़म्बरों के हुक्म लेकर आए) **थे(25) फिर** (जब उन्होंने झुटलाया तो) **मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया सो** (देखो) **मेरा कैसा अज़ाब हुआ** (इसी तरह इनके वक़्त पर इन को सज़ा दूंगा)(26)।

नोटः- सुनाने से मुराद वो सुनाना है जिसका असर और नफ़ा हो वर्ना यूं तो काफ़िरों को सुनाना होता ही रहता था।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَ مِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّ حُمْرٌ
مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَ غَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَ مِنَ النَّاسِ وَ الدَّوَآبِّ وَ الْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا
يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾

आयत नं० 27 से 28

क्या तुम ने इस बात पर नज़र नहीं की कि अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी उतारा फिर हम ने उस (पानी) **से रंग बरंग के फल** (फूल) **उगाए, और** (इसी तरह) **पहाड़ों के भी अलग-अलग हिस्से हैं** (कुछ) **सफ़ेद और** (कुछ) **लाल कि** (फिर) **उन** (सफ़ेद लाल) **के भी रंग अलग-अलग हैं** (कुछ बहुत सफ़ेद और बहुत लाल कुछ हल्के सफ़ेद और हल्के लाल) **और** (कुछ न सफ़ेद न लाल बल्कि) **बहुत काले सियाह(27) और इस तरह इन्सानों और जानवरों और चौपायों** (पालतू जानवरों) **में भी कुछ ऐसे हैं कि उनके रंग अलग-अलग हैं,** (तो जो लोग क़ुदरत की निशानियों के बारे में सोचते हैं उन को अल्लाह तआ़ला की बड़ाई का इल्म होता है और) **अल्लाह से उस के वो ही बन्दे डरते हैं जो** (उस की बड़ाई का) **इल्म रखते हैं, सचमुच अल्लाह तआ़ला** (से डरना भी ज़रूरी है क्योंकि वो) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **है** (कि सब कुछ कर सकता है और

अपने मतलब के लिए भी ज़रूरी है क्योंकि वो डरने वालों के गुनाहों का) **बड़ा बख़्शने वाला है**(28)।

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि "बहुत सी हदीसें याद कर लेना बहुत बातें करना कोई इल्म नहीं बल्कि इल्म वो है जिसके साथ अल्लाह का डर हो"। (इब्ने कसीर)

हज़रत नबी बिन आस रज़ि० ने फ़रमाया "जो अल्लाह से नहीं डरता वो आलिम नहीं"।

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ ﴿٢٩﴾
لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ
فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾
جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿٣٣﴾ وَقَالُوا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ۗ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ لَا
يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۚ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ
صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۗ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيرُ ۗ فَذُوقُوا فَمَا
لِلظّٰلِمِينَ مِنْ نَّصِيرٍ ﴿٣٧﴾

आयत नं० 29 से 37

और जो लोग अल्लाह की किताब (यानी क़ुरआन) **की तिलावत** (अमल के साथ) **करते रहते हैं और** (ख़ास ध्यान के साथ) **नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से छुपाकर और ऐलानिया** (जिस तरह बन पड़ता है नेक कामों में) **ख़र्च करते हैं वो** (अल्लाह के वादे की वजह से सदा के नफ़े वाले) **ऐसे कारोबार के उम्मीदवार हैं जिसमें कभी नुक़सान न होगा** (क्योंकि इस सौदे का ख़रीदार अल्लाह है जिसकी क़द्रदानी में कभी कमी नहीं होती)(29) **ताकि उन को उन** (के नेक कामों) **का बदला** (भी) **पूरा** (पूरा) **दें** (जिसका बयान आगे

आएगा) **और** (बदले के सिवा) **उनको अपनी महरबानी से और ज़्यादा** (भी) **दें** (जैसे एक नेकी का सवाब दस के बराबर), **बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला बड़ा क्द्रदान है** (बस उनके कामों में कुछ कमी रह भी गई तब भी उसकी ऐसी क्द्र की कि बदले के अलावा इनआम भी दिया)(30) **और** (कुरआन मजीद पर अमल करने की बरकत से जो इनआम मिला तो सचमुच कुरआन मजीद ऐसी ही चीज़ है क्योंकि) **यह किताब जो हम ने आप के पास वही के तौर पर भेजी है यह बिल्कुल ठीक है जो कि अपने से पहली किताबों की भी तस्दीक करती** (है कि उन को अल्लाह की भेजी हुई बताती है भले ही बाद में लोगों ने उन्हें बदल दिया) **है,** (और) **क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों की** (हर बात की) **पूरी ख़बर रखने वाला** (और उनके फ़ाइदों को) **ख़ूब देखने वाला है** (इसलिए इस वक़्त ऐसी ही किताब उतारी)(31) **फिर यह किताब हम ने उन लोगों के हाथों में पहुंचाई जिन को हमने** (सारी दुनिया के) **अपने बन्दों में से** (ईमान के ऐतबार से) **पसन्द किया** (यानी मुसलमान) **फिर** (इन चुने हुए लोगों की तीन क़िस्में हैं कि) **कुछ तो इनमें** (कोई गुनाह करके) **अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं और कुछ इनमें** (जो न गुनाह करते हैं और न ज़रूरी इबादतों से बढ़ते हैं) **औसत दर्जे के हैं और कुछ इनमें वो हैं जो अल्लाह की तौफ़ीक़ से नेकियों में तरक़्क़ी किये चले जाते हैं** (कि गुनाहों से भी बचते हैं कि फ़र्ज़ों के साथ नफ़्ली इबादतों की भी हिम्मत करते हैं बस हमने तीनों क़िस्म के मुसलमानों के हाथों में वो किताब पहुंचाई), **यह** (यानी ऐसी किताब का पहुंचा देना अल्लाह की) **बड़ी महरबानी है** (क्योंकि ऐसी किताब पर अमल करने की वजह से कैसे इनआम व सवाब के हक़्दार हो गये)(32) **वो** (महरबानी व इनआम) **बाग़ हैं सदा रहने के जिसमें ये लोग दाख़िल होंगे** (और) **उनको सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और लिबास उनका वहां रेशम का होगा**(33) **और** (वहां दाख़िल होकर) **कहेंगे अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिसने हम से** (सदा के लिए दुःख व) **ग़म दूर किया, बेशक हमारा रब बड़ा बख़्शने वाला क्द्रदान है**(34) **जिसने हम को अपनी महरबानी से सदा रहने के घर में ला उतारा जहां हम को न कोई तकलीफ़ पहुंचेगी और न हम को कोई थकन होगी**(35) **और** (इसके उलट) **जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए दोज़ख़ की आग है न तो उनको मौत ही आएगी कि मर ही जाएं** (और मर कर छूट जाएं) **और न दोज़ख़ का अज़ाब ही उन से हल्का किया जाएगा, हम हर काफ़िर को ऐसी ही सज़ा देते हैं**(36) **और वो लोग उस** (दोज़ख़) **में** (पड़े हुए) **चिल्लाएंगे कि या रब हमारे हम को** (यहां से) **निकाल लीजिए हम** (अब ख़ूब) **अच्छे** (अच्छे) **काम करेंगे जो काम पहले किया करते थे उन को छोड़ कर,** (कहा जाएगा कि) **क्या हम ने**

तुम को इतनी उम्र न दी थी कि जिस को समझना होता वो समझ सकता और (ये ही नहीं बल्कि) **तुम्हारे पास** (हमारी तरफ़ से) **डराने वाला** (यानी पैग़म्बर) **भी पहुंचा था** (चाहे बिना वास्ता या वास्ते से बात पहुंची मगर तुम ने एक न सुनी)**, सो** (अब उस न मानने का) **मज़ा चक्खो कि ऐसे ज़ालिमों का** (यहां) **कोई मददगार** (नहीं हम तो नाराज़ी की वजह से मदद न करेंगे और दूसरे लोग मदद करने की क़ुदरत रखते) **नहीं(37)।**

नोटः- एक हदीस में है कि "रेशमी लिबास न पहनो और सोने चान्दी के बरतनों में पानी न पियो और उनकी पलेट खाने में न बरतो क्योंकि ये चीज़ें दुनिया में काफ़िरों के लिए हैं और तुम्हारे लिए आख़िरत में"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और एक हदीस में है कि "जिस मर्द ने दुनिया में रेशमी कपड़ा पहना वो आख़रत में न पहन सकेगा"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि दुनिया में रेशमी लिबास पहनने वाला मर्द आख़रत में इससे महरूम रहेगा चाहे जन्नत में चला जाए। (मज़हरी)

اِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۳۸﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ ؕ
فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَ لَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَ لَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا
خَسَارًا ﴿۳۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا
غُرُوْرًا ﴿۴۰﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ۬ وَ لَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ
كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۱﴾

आयत नं० 38 से 41

बेशक अल्लाह तआला जानने वाला है आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों का, बेशक वो ही जानने वाला है दिलों की बातों का(38) (और) **वो ही ऐसा है जिसने तुम को ज़मीन में आबाद किया** (इसलिए चाहिए तो यह था कि शुक्र करते यानी ईमान लाते और नेक काम करते मगर

कुछ कुफ़्र और दुशमनी पर उतर आए), **सो** (किसी दूसरे का क्या नुक़्सान है बल्कि) **जो आदमी कुफ़्र करेगा उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा, और काफ़िरों के लिए उनका कुफ़्र उनके रब के नज़्दीक नाराज़ी बढ़ाने वाला ही होता है, और काफ़िरों के लिए उन का कुफ़्र** (आख़िरत में) **नुक़्सान बढ़ाने वाला** (है यानी जन्नत से मायूसी और दोज़ख़ का ईंधन बनना) **है**(39) **आप** (इन काफ़िरों व मुशरिकों से ज़रा यह तो) **कहिए कि तुम अपने जिन घड़े हुए ख़ुदाओं को अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, बताओ उन्होंने ज़मीन का कौन सा हिस्सा बनाया है या उन का आसमान** (बनाने) **में कुछ साझा है** (ताकि अक़्ली दलील से उनका इबादत में हक़्दार होना साबित हो) **या हमने उन** (काफ़िरों) **को कोई किताब दी है** (जिसमें शिर्क के ऐतक़ाद को सही लिखा हो) **कि ये उसकी दलील पर जमे हों,** (नहीं) **बल्कि ये ज़ालिम एक दूसरे से सिर्फ़ धोके की बातों का वादा करते आए हैं** (कि इनके बड़ों ने इनको बेसनद ग़लत बातें बता दीं कि वो अल्लाह के यहां सिफ़ारिश करेंगे जब कि उनके बस में कुछ नहीं बस वो इबादत के हक़्दार नहीं हो सकते)(40) **सच्ची बात यह** (है कि अल्लाह क़ुदरत वाला ही इबादत का हक़्दार) **है कि अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन को** (अपनी क़ुदरत से) **थामे हुए है कि वो अपनी जगह से टले नहीं और अगर** (मान लो) **वो अपनी जगह से हट जाएं तो फिर अल्लाह के सिवा और कोई उनको थाम भी नहीं सकता** (जब उनसे पैदा हुई दुनिया की हिफ़ाज़त नहीं हो सकती तो दुनिया को पैदा करने की क्या उम्मीद की जा सकती है फिर इबादत के हक़्दार कहां? तो चाहिए तो यह था कि इन लोगों को अभी सज़ा दी जाए मगर चूंकि) **वो सहार वाला** (है इसलिए मोहलत दे रक्खी है और इस मोहलत में ये हक़ की तरफ़ आजाएं तो सब पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएं क्योंकि वो) **बख़्शने वाला** (भी) **है**(41)।

وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ
مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ﴿۴۲﴾ اِسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۭ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ۭ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ
اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿۴۳﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ
فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿۴۴﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى
ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿۴۵﴾

आयत नं० 42 से 45

और इन (क़ुरैशी) **काफ़िरों ने** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले) **बड़ी ज़ोरदार क़सम खाई थी कि अगर उनके** (यानी हमारे) **पास कोई ख़बरदार करने वाला** (यानी पैग़म्बर) **आए तो वो** (यानी हम) **हर हर उम्मत से ज़्यादा हिदायत क़ुबूल करने वाले होंगे** (यानी यहूदियों और ईसाइयों की तरह हम न झुटलाएंगे तो पहले से तो यह क़समें खाया करते थे) **फिर जब उन के पास एक पैग़म्बर** (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आ पहुंचे तो बस उनकी नफ़रत ही को तरक़्क़ी हुई(42) दुनिया में अपने को बड़ा समझने की वजह से और बुरी चालें चलने लगे** (यानी घमन्ड की वजह से आप का कहना तो मानते ही न थे बल्कि आप को सताने की फ़िक्र में लग गये), **और** (ये जो कुछ हमारे रसूल के लिए बुरी चालें चल रहे हैं ख़ुद अपना ही नुक़सान कर रहे हैं क्योंकि) **बुरी चालों का** (असली) **वबाल उन चाल चलने वालों ही पर पड़ता है** (चाहे कभी उस को नुक़सान पहुंच जाए जिसको नुक़सान पहुंचाना चाहा लेकिन वो नुक़सान दुनिया का है लेकिन उन ज़ालिमों पर आख़रत का वबाल पड़ेगा), **सो** (जो लोग आप को सताते हैं तो) **क्या ये** (अपने साथ भी अल्लाह तआ़ला के) **उसी दस्तूर के इन्तिज़ार में हैं जो पहले** (काफ़िर) **लोगों के साथ होता रहा है** (यानी अज़ाब व बर्बादी) **सो** (बेशक इनके लिए भी ये ही होना है क्योंकि) **आप अल्लाह के** (इस) **दस्तूर को कभी बदलता हुआ न पाएंगे** (कि उन पर अज़ाब की जगह महरबानी होने लगे) **और** (इसी तरह) **आप अल्लाह के** (इस) **दस्तूर को पलटता हुआ भी न पाएंगे** (कि उनकी जगह दूसरों को अज़ाब होने लगे जो ऐसे न हों मतलब यह कि अल्लाह तआ़ला का वादा है कि काफ़िरों को अज़ाब होगा चाहे दुनिया में भी चाहे सिर्फ़ आख़रत में और अल्लाह का वादा सच्चा होता है)(43) **और** (ये जो समझते हैं कि कुफ़्र पर सज़ा नहीं है तो उन की बड़ी ग़लती है) **क्या ये लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं** (जैसे शाम और यमन के सफ़रों में आद व समूद व क़ौमे लूत की बस्तियां) **जिस में देखते भालते कि जो** (काफ़िर) **लोग इनसे पहले हुए हैं उन का** (आख़री) **अन्जाम** (इसी झुटलाने की वजह से) **क्या हुआ** (कि अज़ाब में पकड़े गये) **हालांकि वो ताक़त में इन से बढ़े हुए थे, और** (किसी में चाहे कितनी ही ताक़त हो लेकिन) **अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई चीज़** (ताक़त वाली) **उस को हरा दे न आसमान में न ज़मीन में,** (क्योंकि) **वो बड़े इल्म वाला** (और) **बड़ी क़ुदरत वाला** (है और दूसरा कोई ऐसा नहीं फिर उसको कौन चीज़ हरा सकती) **है(44) और** (अगर ये इस धोके में हों कि अगर हम को अज़ाब होना होता तो हो चुका होता और इससे अपने शिर्क व कुफ़्र को अच्छा समझें तो यह भी उनकी ग़लती है क्योंकि किसी भेद की

वजह से फ़ौरन अज़ाब नहीं दिया गया वर्ना) **अगर अल्लाह तआला** (इन) **लोगों को इन के** (कुफ़्र के) **कामों की वजह से** (फ़ौरन) **पकड़ करने लगता तो इस ज़मीन पर किसी चलने वाले को न छोड़ता लेकिन अल्लाह तआला उन को तय मुद्दत** (यानी क़ियामत) **तक मोहलत दे रहा है, सो जब उनका वो तय वक़्त आ जाएगा** (उस वक़्त) **अल्लाह तआला अपने बन्दों को आप देख लेगा** (यानी उनमें जो काफ़िर होंगे उन को सज़ा देगा)(45)।

नोटः- हज़रत मुहम्मद बिन काब कहते हैं कि तीन काम ऐसे हैं जिन का करने वाला दुनिया में भी वबाल व अज़ाब से नहीं बचता एक किसी बेगुनाह के हक़ में बुरी चाल चल कर उस को तकलीफ़ पहुंचाना दूसरे आम ज़ुल्म करना और तीसरे वादा तोड़ना। (इब्ने कसीर)

36-सूरत-यासीन

इस मक्की सूरत में ‘5’ रूकू और ‘83’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

یٰسٓ ۚ﴿۱﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِیْمِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۙ﴿۳﴾ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ؕ﴿۴﴾ تَنْزِیْلَ الْعَزِیْزِ الرَّحِیْمِ ۙ﴿۵﴾ لِتُنْذِرَ
قَوْمًا مَّاۤ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿۶﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰۤی اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۷﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِیْۤ
اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِیَ اِلَی الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿۸﴾ وَ جَعَلْنَا مِنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ سَدًّا وَّ مِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا
فَاَغْشَیْنٰهُمْ فَهُمْ لَا یُبْصِرُوْنَ ﴿۹﴾ وَ سَوَآءٌ عَلَیْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۰﴾ اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ
اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَ خَشِیَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَیْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّ اَجْرٍ كَرِیْمٍ ﴿۱۱﴾ اِنَّا نَحْنُ نُحْیِ الْمَوْتٰی وَ نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَ
اٰثَارَهُمْ ۣؕ وَ كُلَّ شَیْءٍ اَحْصَیْنٰهُ فِیْۤ اِمَامٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱۲﴾

आयत नं० 01 से 12

यासीन (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **क़सम है हिकमत भरे क़ुरआन की** (02) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **बेशक आप पैग़म्बरों में से हैं**(03) (और) **सीधे रास्ते पर हैं** (कि इसमें जो आप के पीछे चले अल्लाह तक पहुंच जाए न कि जैसा काफ़िर कहते थे कि आप पैग़म्बर नहीं या यह कहते थे कि यह कलाम तो आप ने ख़ुद घड़ लिया है)(04) **यह क़ुरआन** (तो) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले और) **महरबान अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है**(05) (और आप पैग़म्बर इसलिए बनाए गये हैं) **ताकि आप** (शुरू में) **ऐसे लोगों को** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराएं जिन के बाप दादे** (क़रीब ज़माने में किसी पैग़म्बर के वास्ते से) **नहीं डराए गये थे सो इसी लिए ये अन्जान हैं**(06) (और ये लोग जो नहीं मानते तो आप इसका ग़म न कीजिए क्योंकि) **इनमें अक्सर लोगों पर यह** (नसीबी) **बात साबित हो चुकी है** (कि ये सीधे रास्ते पर नहीं आएंगे) **सो ये लोग हरगिज़ ईमान नहीं** (लाएंगे अलबत्ता कुछ लोग ईमान) **लाएंगे**(07) (और इन लोगों की मिसाल ईमान से दूरी में ऐसी हो गई कि जैसे) **हम ने उन की गर्दनों में** (भारी-भारी) **तौक़** (यानी

पट्टे) **डाल दिये हैं जो ठोड़ियों तक** (पहुंच गये) **है जिससे उन के सर ऊपर को उठे रह गये हैं** (नीचे को नहीं हो सकते जिससे वो रास्ता नहीं देख सकते)(08) **और** (ऐसे ही उनकी मिसाल ईमान से दूरी में ऐसी हो गई कि जैसे) **हम ने एक दीवार उनके सामने कर दी और एक दीवार उनके पीछे कर दी जिससे हम ने** (हर तरफ़ से) **उन को** (पर्दों में) **घेर दिया सो वो** (इस पर्दों के घेरे की वजह से किसी चीज़ को) **नहीं देख सकते(09) और** (इसलिए) **उन के हक़ में आप का** (अज़ाब से) **डराना या न डराना दोनों बराबर हैं ये** (किसी हालत में भी) **ईमान नहीं लाएंगे** (इसलिए आप उनकी फ़िक्र न करें)(10) **बस आप तो** (ऐसा डराना जिससे फ़ाइदा हो) **सिर्फ़ ऐसे आदमी को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और अल्लाह से बेदेखे डरे** (कि डर ही से हक़ की तलाश होती है ये डरते ही नहीं) **सो** (जो डरने वाला हो) **आप उस को** (गुनाहों की मुआफ़ी) **और** (नेक कामों पर) **अच्छे बदले की ख़ुशख़बरी सुना दीजिए** (और इसी साबित हुआ कि गुमराहों को सवाब की जगह अज़ाब होगा)(11) **बेशक हम** (एक दिन) **मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे** (उस वक़्त सब कुछ सामने आजाएगा) **और** (जिन कामों पर सवाब या अज़ाब होगा) **हम** (उन को बराबर) **लिखते जाते हैं वो काम भी जिन को लोग आगे भेजते जाते हैं और वो काम भी जिन** (के असरात) **को पीछे छोड़ जाते** (हैं यानी वो अच्छाइयां या बुराइयां जो बाद में फैलती) **हैं, और हम ने** (तो) **हर चीज़ को** (जो कुछ क़ियामत तक होगा होने से पहले ही तक़दीर की) **एक खुली किताब में लिख दिया था(12)।**

नोटः- एक हदीस में है कि ''जिस आदमी ने कोई अच्छा तरीक़ा जारी किया तो उसको इस का भी सवाब मिलेगा और जितने आदमी उस तरीक़े पर अमल करेंगे उन का भी सवाब उस को मिलेगा बिना इसके कि उन अमल करने वालों के सवाब में कोई कमी आए। और जिसने कोई बुरा तरीक़ा जारी किया तो उसको इसका भी गुनाह होगा और जितने आदमी जब तक उस बुरे तरीक़े पर अमल करते रहेंगे उस का गुनाह भी उस को होता रहेगा बिना इसके कि अमल करने वालों के गुनाहों में कमी आए। (इब्ने कसीर)

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۱۳﴾ اِذْ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا فَعَزَّزْنَا
بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا اِنَّآ اِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ قَالُوْا مَآ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ اَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا تَكْذِبُوْنَ ﴿۱۵﴾ قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ اِنَّآ اِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَمَا عَلَيْنَآ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۷﴾ قَالُوْٓا اِنَّا تَطَيَّرْنَا

بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَ لَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ؕ اَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ؕ بَلْ
اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنْ اَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢٠﴾ ۙ اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا
يَسْـَٔلُكُمْ اَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢١﴾

आयत नं० 13 से 21

और आप इन (काफ़िरों) **के सामने** (नसीहत के लिए) **एक ऐसी बस्ती वालों का क़िस्सा बयान कीजिए, जबकि उस बस्ती में कई पैग़म्बर आए(13) यानी जब कि हम ने उन के पास** (शुरू में) **दो को भेजा सो उन लोगों ने दोनो को झूटा बताया फिर तीसरे** (पैग़म्बर) **से** (उन दोनो की) **ताईद की** (यानी उनकी हिमायत के लिए फिर तीसरे को वहां जाने का हुक्म दिया) **सो उन तीनों ने** (उन बस्ती वालों से) **कहा कि हम तुम्हारे पास** (अल्लाह की तरफ़ से) **भेजे गये हैं** (ताकि तुम को समझाएं कि एक अल्लाह को मानो और बुत परस्ती छोड़ दो)(14) **उन लोगों ने** (यानी बस्ती वालों ने) **कहा कि तुम तो हमारी तरह** (सिर्फ़) **एक आम आदमी हो** (यानी पैग़म्बर नहीं) **और** (तुम्हारी क्या ख़ास बात पैग़म्बरी ही कुछ नहीं और) **अल्लाह तआला ने** (तो) **कोई चीज़** (यानी किताब कभी) **उतारी** (ही) **नहीं तुम सब झूट बोलते हो(15) उन पैग़म्बरों ने कहा कि हमारा रब ख़ूब जानता है कि बेशक हम तुम्हारे पास** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजे गये हैं(16) और हमारी ज़िम्मेदारी तो सिर्फ़** (हुक्मों का) **साफ़-साफ़ पहुंचाना था(17) वो लोग कहने लगे कि हम तो तुम को मनहूस समझते हैं** (या तो इस लिए कहा कि बारिश न होने से सूखा पड़ा था और या इसलिए कहा कि आपस में फूट पड़ गई थी क्योंकि कुछ लोग ईमान लाए बाक़ी लोग उन के दुशमन हो गये और) **अगर तुम** (इस नसीहत के काम से) **बाज़ न आए तो** (याद रक्खो कि) **हम पत्थरों से** (मार-मार कर) **तुम्हारा काम तमाम कर देंगे और** (पत्थर बरसाने से पहले भी) **तुम को सख़्त सज़ाएं देंगे** (यानी और तरह-तरह से सताएंगे नहीं मानोगे तो पत्थर बरसा कर मार डालेंगे)(18) **उन पैग़म्बरों ने कहा तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ ही लगी हुई** (है यानी जिस को तुम नुक़सान व मुसीबत कहते हो उसकी वजह हक़ बात का न मानना है अगर मान जाते तो न ये झगड़े होते और न सूखे के अज़ाब में पकड़े जाते पैग़म्बर के आजाने के बाद उसको न मानना अल्लाह के अज़ाब को दावत देना) **है, क्या इस को नुहूसत समझते हो कि तुम को नसीहत की जाए,** (नहीं) **बल्कि** (असल बात यह है कि) **तुम** (ख़ुद अक़्ल व शरीअत की) **हद से निकल जाने वाले लोग हो** (बस शरीअत की मुख़ालफ़त से तुम पर यह नुहूसत आई)(19) **और** (जब यह बात फैली तो) **एक आदमी**

(जो मुसलमान था) **उस शहर की किसी दूर जगह से** (क़ौम को समझाने के लिए) **दौड़ता हुआ** (यहां) **आया** (और उन लोगों से) **कहने लगा कि ऐ मेरी क़ौम इन पैग़म्बरों के रास्ते पर चलो(20)** (ज़रूर) **ऐसे लोगों की राह पर चलो जो तुम से कोई बदला नहीं मांगते और वो ख़ुद सही रास्ते पर** (हैं यानी फिर इन का कहना क्यों न माना जाए जब कि ये लालची भी नहीं और सही रास्ते पर) **हैं(21)**।

नोटः- क़ुराने करीम में उस बस्ती का नाम नहीं बताया गया है जहां वो पैग़म्बर भेजे गये और न उन बुज़ुर्ग का नाम बताया गया है जो उन पैग़म्बर की ताईद में उस बस्ती वालों को समझाने के लिए आए थे।

وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾ ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ
لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾
قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۭ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰي
قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاۗءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾ اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾
يٰحَسْرَةً عَلَي الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ
الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾ وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾

आयत नं० 22 से 32

और मेरे पास ऐसी कौन सी मजबूरी है कि मैं उस (माबूद) **की इबादत न करूं जिसने मुझ को पैदा किया** (यह ख़ूबी इबादत का हक़दार होने की दलील है) **और तुम सब को** (भी) **उसी के पास लौट कर जाना है** (इसलिए समझदारी इसी में है कि उसके पैग़म्बरों का कहना माना जाए)(22) **क्या मैं अल्लाह को छोड़ कर और ऐसे माबूद बनाऊं** (जिन की बेबसी की यह हालत है) **कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझ को कुछ तकलीफ़ पहुंचाना चाहे तो न उन माबूदों की सिफ़ारिश मेरे कुछ काम आएगी और न वो मुझको** (ख़ुद अपनी क़ुदरत व ज़ोर से इस तकलीफ़ से) **छुड़ा सकें**(23) **अगर मैं ऐसा करूंगा तो खुली गुमराही में जा पड़ूंगा** (यानी अपने ऊपर रख कर दूसरों को सुनाया है यह भी नसीहत का एक तरीक़ा है)(24) **मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ला चुका सो तुम** (भी) **मेरी बात सुन लो** (और ईमान लाओ मगर उन लोगों पर कुछ असर न हुआ बल्कि उस को शहीद कर दिया)(25) **कहा गया** (अल्लाह की तरफ़ से उसके शहीद होते ही कि) **जा जन्नत में दाख़िल हो जा,** (उस वक़्त भी उस को अपनी क़ौम की फ़िक्र हुई) **कहने लगा काश मेरी क़ौम को यह बात मालूम हो जाती**(26) **कि मेरे रब ने** (ईमान और पैग़म्बरों की ताबेदारी की बरकत से) **मुझ को बख़्श दिया और मुझ को इज़्ज़तदारों में शामिल कर दिया** (तो इस बात को जान कर भी वो ईमान ले आते और इस तरह वो भी बख़्शे जाते और इज़्ज़त पाते)(27) **और** (जब उस बस्ती वालों ने पैग़म्बरों और उनके मानने वालों के साथ यह बरताव किया तो हम ने उनसे बदला लिया और बदला लेने के लिए) **हम ने उस** (शहीद) **की क़ौम पर उस** (की शहादत) **के बाद कोई फ़ौज** (फ़रिश्तों की) **आसमान से नहीं उतारी और न हम को उतारने की ज़रूरत थी**(28) (बल्कि उनके हलाक करने के लिए बस) **वो एक सख़्त आवाज़** (फ़रिशते की चीख़) **थी जिससे वो**

सब उसी दम ठन्डे होकर (यानी मर कर) **रह गये**(29) **अफ़सोस** (ऐसे) **बन्दों के हाल पर कि कभी उन के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसकी उन्होंने हंसी न उड़ाई हो**(30) **क्या उन लोगों ने इस पर नज़र नहीं की कि हम उनसे पहले बहुत सी उम्मतें** (इसी झुटलाने और हंसी उड़ाने की वजह से) **हलाक कर चुके कि वो** (फिर) **उन की तरफ़** (दुनिया में) **लौट कर नहीं आते** (अगर इस बारे में सोचते तो झुटलाने व हंसी उड़ाने से बाज़ आजाते)(31) **और** (यह सज़ा तो झुटलाने वालों को दुनिया में दी गई और फिर आख़रत में) **उन सब में कोई ऐसा नहीं जो हमारे सामने हाज़िर न किया जाए** (वहां फिर सज़ा होगी और वो सज़ा सदा के लिए होगी)(32)

नोटः- यहां यह भी सबक़ मिला कि क़ौम की बदसलूकी के बाद भी उन हज़रात ने नसीहतें करना नहीं छोड़ा यहां तक कि जब उन बुज़ुर्ग को शहीद कर दिया गया तब भी उन के दिल से क़ौम की हमदर्दी न गई बल्कि ये तमन्ना कि काश क़ौम को ये मालूम हो जाता कि मेरे रब ने मुझको बख़्श दिया। ये ही वो चीज़ थी जिसने दूसरों के दिल में जगह बना ली और दीन फैला।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۖۚ اَحْيَيْنٰهَا وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ
اَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ۭ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ سُبْحٰنَ
الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ښ نَسْلَخُ
مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۭ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ
قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ
النَّهَارِ ۭ وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ
مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾

आयत नं० 33 से 44

और (हमारी कुदरत की निशानियों में से) **एक निशानी उन लोगों के** (सबूत के) **लिए मुर्दा ज़मीन है** (और उसमें निशानी की बात यह है कि) **हम ने उसको** (बारिश से) **ज़िन्दा किया और हम ने उस** (ज़मीन) **से** (बहुत से) **अनाज निकाले सो उनमें से लोग खाते हैं**(33) **और** (ऐसे ही)

हम ने इस (ज़मीन में) **खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए और उसमें** (बाग़ों को पानी देने के लिए) **नहरें जारी की(34) ताकि** (अनाज की तरह) **लोग बाग़ के फलों में से** (भी) **खाएं और उस** (फल व अनाज) **को उन के हाथों ने नहीं बनाया** (भले ही बीज बोना पानी देना उन्हीं के हाथों हुआ हो मगर बीज से पेड़ और पेड़ से फल पैदा करने में उन का कोई हाथ नहीं ख़ास अल्लाह ही का काम है), **सो** (ऐसे सबूत देख कर भी) **क्या शुक्र नहीं करते** (जिस की पहली सीढ़ी अल्लाह पर ईमान लाना है)(35) **पाक है वो ज़ात जिसने हर चीज़ के जोड़े पैदा किये उस पैदावार के भी जो ज़मीन से उगती हैं और** (ख़ुद) **उन इन्सानों में से भी** (जैसे मर्द और औरत) **और उन चीज़ों में भी जिन को** (आम) **लोग नहीं जानते(36) और एक निशानी इन लोगों के लिए रात** (का वक़्त) **है कि हम इस** (रात) **पर से दिन को उतार लेते हैं तो** (फिर रात आ जाती है और) **वो लोग अन्धेरे में रह जाते हैं(37) और** (एक निशानी) **सूरज** (है कि वो) **अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है, और यह तय किया हुआ है उस** (अल्लाह) **का जो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **इल्म वाला** (है कि अपने इल्म और क़ुदरत से सही इन्तिज़ाम करता) **है(38) और** (एक निशानी) **चान्द** (है कि उस की चाल) **के लिए मन्ज़िलें तय कीं** (कि हर दिन एक मन्ज़िल पूरी करता है) **यहां तक कि** (अपने आख़री फेरे में पतला होता-होता) **ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी** (कि पतली और घूमदार होती है)(39) **न सूरज की मजाल है कि चान्द को** (उसके निकलने के वक़्त यानी रात में जब कि वो चमकता हो) **जा पकड़े** (यानी वक़्त से पहले निकल कर उसको और उसके वक़्त यानी रात को हटाकर दिन बना दे जैसा कि चान्द भी सूरज को उसके रौशन होने के वक़्त नहीं पकड़ सकता कि दिन को हटाकर रात बना दे और उसमें चान्द चमक जाए) **और** (इसी तरह) **न रात दिन** (के तय वक़्त के ख़त्म होने) **से पहले आ सकती है** (जैसे दिन भी रात के तय वक़्त के ख़त्म होने से पहले नहीं आ सकता), **और** (चान्द और सूरज) **दोनो अपने-अपने मदार में** (हिसाब से इस तरह चल रहे हैं जैसे कि) **तैर रहे हैं** (और हिसाब से बाहर नहीं हो सकते कि रात दिन के हिसाब में कोई रूकावट आए)(40) **और एक निशानी उनके लिए यह है कि हम ने उन की औलाद को भरी हुई कशती में सवार किया** (इसमें तीन नेमतों की तरफ़ इशारा है भरी हुई कशती जो डूबने वाली चीज़ है उस को पानी पर तैराना दूसरे उन लोगों को औलाद देना तीसरे कारोबार के लिए माल देना)(41) **और हम ने उनके लिए कशती ही जैसी ऐसी चीज़ें पैदा कीं जिन पर ये लोग सवार होते हैं** (जिन में ज़मीनी सवारियां भी और हवाई जहाज़ भी आगये)(42) **और अगर हम चाहें तो उन को डुबा दें फिर न तो** (जिन चीज़ों को वो पूजते हैं

उनमें से) **कोई उन की फ़रियाद को पहुंचे** (जो डूबने से बचा ले) **और न उन की जान बचाई जाए(43) मगर यह हमारी ही महरबानी है और उन को एक तय वक़्त तक** (दुनिया की ज़िन्दगी से) **फ़ाइदा** (उठाने का मौक़ा) **देना** (है इसलिए मोहलत दे रक्खी) **है(44)**

नोटः- अल्लाह की कुदरत की निशानियां बता कर इन्सान को ईमान की दावत दी गई है।

وَ إِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝٤٥ وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ
رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۝٤٦ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا
أَنُطْعِمُ مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٤٧

आयत नं० 45 से 47

और जब उन लोगों से (तौहीद की दलीलें और उसके न मानने पर आने वाले अज़ाब की ख़बर सुना कर) **कहा जाता है कि तुम लोग उस अज़ाब से डरो जो तुम्हारे सामने** (यानी दुनिया में भी आ सकता) **है और जो तुम्हारे** (मरने के) **बाद** (यानी आख़रत में ज़रूर आने वाला) **है** (यानी अज़ाब से डरो और ईमान ले आओ) **ताकि तुम पर रहमत की जाए** (तो वो इस की ज़रा परवा नहीं करते)(45) **और** (वो तो ऐसे पत्थर दिल हो गये हैं कि) **उनके रब की आयतों में से कोई आयत भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिससे ये मुंह न फेरते हों(46) और** (इसी तरह) **जब** (उन को अल्लाह की नेमतें याद दिला कर) **उन से कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम को दिया है उसमें से** (अल्लाह की राह में फ़क़ीरों ग़रीबों पर) **ख़र्च करो तो** (शरारत और दिल्लगी से) **ये काफ़िर उन मुसलमानों से** (जिन्होंने अल्लाह की राह में ख़र्च करने के लिए कहा था) **यह कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खाने को दें जिन को अगर अल्लाह चाहे तो** (बहुत कुछ) **खाने को देदे तुम खुली ग़लती में** (पड़े) **हो(47)**

नोटः- ऊपर आयत से मालूम हुआ कि काफ़िर लोग भी रोज़ी देने वाला अल्लाह ही को मानते थे मगर मुसलमानों के जवाब में दिल्लगी से यह कहा कि जब अल्लाह रोज़ी देने वाला है तो ग़रीबों को भी देगा हम क्यों दें यानी न ग़रीबों के देने पर मिलने वाले सवाब को देखा और न रोज़ी देने वाले का ही इबादत का हक़दार होना समझा।

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۸﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَ هُمْ
يَخِصِّمُوْنَ ﴿۴۹﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ
اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿۵۱﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۲﴾ اِنْ
كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾ اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِىْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿۵۵﴾ هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِىْ ظِلٰلٍ عَلَى الْاَرَآئِكِ
مُتَّكِــُٔوْنَ ﴿۵۶﴾ لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّ لَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ﴿۵۷﴾ سَلٰمٌ ۣ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿۵۸﴾ وَ امْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا
الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۵۹﴾ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِىْۤ اٰدَمَ اَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۶۰﴾ وَّ اَنِ
اعْبُدُوْنِىْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿۶۱﴾ وَ لَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۲﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ
الَّتِىْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۶۴﴾ اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰۤى اَفْوَاهِهِمْ وَ تُكَلِّمُنَاۤ
اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰۤى اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى
يُبْصِرُوْنَ ﴿۶۶﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَ مَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ
فِى الْخَلْقِ ؕ اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۶۸﴾

आयत नं० 48 से 68

और ये (काफ़िर) **लोग** (इनकार के तौर पर पैग़म्बर और उनके मानने वालों से) **कहते हैं कि यह** (क़ियामत का) **वादा** (जिसकी ख़बर दी जाती है) **कब होगा** (बताओ) **अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो(48)** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि ये जो बार-बार पूछ रहे हैं तो जैसे) **ये लोग बस एक सख़्त आवाज़** (यानी क़ियामत का पहला सूर फूंकने) **के इन्तिज़ार में हैं जो उन** (काफ़िरों) **को आ पकड़ेगी और वो सब** (उस वक़्त) **आपस में** (आम दिनों की तरह) **लड़ झगड़ रहे होंगे(49) सो** (उस आवाज़ के साथ एक दम इस तरह फ़ना हो जाएंगे कि) **न तो वसीयत करने की मोहलत होगी और न अपने घर वालों के पास लौट कर जा सकेंगे** (बल्कि जो जिस हाल में होगा मर कर रह जाएगा)**(50) और** (फिर दोबारा) **सूर फूंका जाएगा तो वो सब यकायक क़ब्रों से** (निकल-निकल) **अपने रब की तरफ़** (यानी जहां हिसाब होगा) **तेज़ी से चलने लगेंगे(51)** (और वहां की हौल व दहशत देख कर) **कहेंगे कि हाय हमारी बद नसीबी हम को हमारी क़ब्रों से किसने**

उठा दिया (कि यहां से तो वहीं आराम में थे, फ़रिशते जवाब देंगे कि) **यह वो ही** (क़ियामत) **है जिस का अल्लाह तआ़ला ने वादा किया था** (मगर तुम ने नहीं माना) **और पैग़म्बर सच कहते थे(52)** (आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि) **वो** (दूसरी बार सूर का फूंका जाना भी पहली बार सूर फूंके जाने की तरह) **बस एक ज़ोर की आवाज़ होगी जिससे यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिये जाएंगे(53) फिर उस दिन किसी आदमी पर ज़रा ज़ुल्म नहीं होगा और बस उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो तुम** (दुनिया में कुफ़्र वग़ैरह) **किया करते थे(54)** (यह तो दोज़ख़ी लोगों का हाल हुआ और) **जन्नती लोग** (उन का हाल यह है कि वो) **बेशक उस दिन अपने** (तफ़रीह के) **कामों में मगन होंगे(55) वो और उन की बीवियां घने सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए बैठे होंगे(56)** (और) **उनके लिए वहां** (हर तरह के) **फल होंगे और जो कुछ मांगेंगे उनको मिलेगा(57)** (और) **उन को महरबान रब की तरफ़ से सलाम कहा जाएगा(58) और** (जहन्नमी लोगों को कहा जाएगा कि) **ऐ** (कुफ़्र करने वाले) **मुजरिमों आज** (ईमान वालों से) **अलग हो जाओ** (क्योंकि उनको जन्नत में भेजना है और तुम को जहन्नम में)**(59) ऐ आदम की औलाद** (और इसी तरह जिन्नात से भी कहा जाएगा) **क्या मैंने तुम को ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना वो तुम्हारा खुला दुशमन है(60) और यह कि मेरी** (ही) **इबादत करना, ये ही सीधा रास्ता** (है इबादत से मुराद हर तरह की ताबेदारी) **है(61) और** (ऐसे ही तुम को शैतान के बारे में यह बात भी बताई थी कि) **वो तुम में** (से) **बहुत से लोगों को गुमराह कर चुका** (है जिनकी गुमराही का अन्जाम भी पहले काफ़िर क़ौमों के अज़ाब के क़िस्सों में बता दिया गया था)**, सो क्या तुम** (इतना भी) **नहीं समझते थे** (कि अगर हम उसके गुमराह करने से गुमराह हो जाएंगे तो हम भी इसी तरह अज़ाब के हक़दार होंगे)**(62) यह** (वो) **जहन्नम है जिसका तुम से** (कुफ़्र करने पर) **वादा किया जाया करता था(63) आज अपने कुफ़्र के बदले इसमें दाख़िल हो जाओ(64) आज हम उनके मुंह पर बन्द लगा देंगे** (जिससे ये झूटे बहाने न कर सकें) **और उनके हाथ हम से बात करेंगे और उनके पैर गवाही देंगे जो कुछ ये लोग किया करते थे(65) और** (यह अज़ाब तो आख़रत में होगा) **अगर हम चाहते तो** (दुनिया ही में उनके कुफ़्र की सज़ा में) **उनकी आंखें मिटा देते** (चाहे आंखो की रौशनी या आंखों ही को) **फिर ये रास्ते की तलाश में दौड़ते फिरते उन को कहां दिखाई देता** (जैसा कि क़ौमे लूत पर ऐसा ही अज़ाब आया था)**(66) और** (इससे बढ़ कर) **अगर हम चाहते तो** (उनके कुफ़्र की सज़ा में) **उनकी सूरतें बदल देते** (जैसे पहले कुछ लोग बन्दर और सुअर हो गये) **इस हालत से कि जहां हैं वहीं रह**

जाते (यानी जानवर बनाने के साथ-साथ अपाहज भी जो अपनी जगह से हिल न सकें) **जिससे ये लोग न आगे को चल सकते हैं और न पीछे को लौट सकते हैं**(67) **और** (इस पर हैरानी न होनी चाहिए देखो) **हम जिसकी उम्र ज़्यादा कर देते हैं** (यानी बहुत बूढ़ा कर देते हैं) **तो उस की हालत को पलट देते हैं** (यानी देखना सुनना समझना हुस्न जमाल और ताक़त सब चीज़ें घटते-घटते उलट जाती हैं जो एक तरह से सूरत का बदलना ही है), **सो क्या** (इस हालत को देख कर भी) **वो लोग नहीं समझते** (जो यह बदलाव कर सकता है दूसरा बदलाव यानी सूरतें भी बदल सकता है तो उन लोगों को इसे देख कर डरना और कुफ़्र को छोड़ देना चाहिए)(68)

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّ قُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿69﴾ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّ يَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى
الْكٰفِرِيْنَ ﴿70﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿71﴾ وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا
رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿72﴾ وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾ وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿74﴾ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿75﴾

आयत नं० 69 से 75

और (ये काफ़िर जो पैग़म्बरी के इनकार के लिए आप को शाइर कहते हैं यह ग़लत है क्योंकि) **हम ने आप को शाइरी** (करने) **का इल्म नहीं दिया और वो** (शाइरी) **आप की शान के लाइक़ भी नहीं, वो** (आप को दिया हुआ इल्म जिस को ये लोग शाइरी कहते हैं वो) **तो बस नसीहत** (की बात है) **और एक आसमानी किताब है जो हुक्मों को खोल कर बयान करने वाली है**(69) **ताकि** (हुक्मों के बयान के असर से) **ऐसे आदमी को ख़बरदार करें जो ज़िन्दा** (दिल रखता) **हो और ताकि काफ़िरों पर** (अज़ाब का) **इल्ज़ाम साबित हो जाए**(70) **क्या इन** (मुशरिक) **लोगों ने यह नहीं देखा कि हम ने उन के** (नफ़े के) **लिए अपने हाथों की बनाई चीज़ों में से चौपाए** (जानवर) **पैदा किये और** (हमारे मालिक बनाने से) **ये लोग उनके मालिक बन रहे हैं**(71) **और** (उसके कुछ नफ़े बताते हैं कि) **हम ने उन जानवरों को इन का ताबेदार बना दिया सो** (वो इनके काम करते हैं जैसा कि) **उनमें कुछ तो उन की सवारियां हैं और कुछ को वो खाते हैं**(72) **और उनमें इन लोगों के लिए और भी नफ़े हैं** (जैसे बाल खाल हड्डी वग़ैरह बहुत से तरीक़ों से काम में लाए जाते हैं) **और** (उनमें इन लोगों के) **पीने की चीज़ें भी हैं** (यानी दूध), **सो क्या** (इस पर

भी) **ये लोग शुक्र नहीं करते** (और शुक्र का सबसे पहला क़दम तौहीद पर ईमान है)(73) **और उन्होंने** (शुक्र व तौहीद के बजाए कुफ़्र व शिर्क अपनाया जैसा कि) **अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद बना रक्खे हैं इस उम्मीद पर कि उन को इन** (माबूदों की तरफ़ से) **मदद मिले**(74) (लेकिन) **वो उन की कुछ मदद कर ही नहीं सकते और** (मदद तो क्या करते और उल्टे) **वो** (माबूद) **उन लोगों के हक़ में एक** (मुख़ालिफ़) **फ़रीक़ हो जाएंगे जो** (हिसाब की जगह लाकर) **हाज़िर किये जाएंगे** (और वहां हाज़िर होकर उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे)(75)

नोटः- हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि इन लोगों ने बुतों को ख़ुदा तो इस लिए बनाया था कि ये उनकी मदद करेंगे और हो यह रहा है कि वो तो इन की मदद करने के क़ाबिल नहीं ख़ुद ये ही लोग जो उनकी इबादत करते हैं ख़ुद ही उनके ख़ादिम और उनके सिपाही बने हुए हैं उनकी हिफ़ाज़त करते हैं कोई उनके ख़िलाफ़ काम करे तो ये उनकी तरफ़ से लड़ते हैं। (क़ुरतबी)

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾ اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ
خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ۭ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾ قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ
اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُ ۙ﴿٧٩﴾ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ
تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾ اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ڲ بَلٰى ۤ وَهُوَ الْخَلّٰقُ
الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾ اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَـيْـــــًٔا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾ فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾

आयत नं० 76 से 83

(जब ये लोग ऐसी साफ़ दलीलें सुनकर भी नहीं मानते) **तो इन लोगों की** (इनकार की) **बातों से आप दुखी न हों, बेशक हम सब जानते हैं जो कुछ ये छुपाते हैं और जो कुछ ऐलानिया करते हैं** (इसलिए तय वक़्त पर इनको इनके कामों की सज़ा मिलेगी)(76) **क्या** (उस) **आदमी को** (जो क़ियामत का इनकार करता है) **यह पता नहीं कि हमने उस को मनी की एक बून्द से पैदा किया** (तो चाहिए तो यह था कि अपनी पैदाइश की शुरू की हालत को देख कर शर्माता और समझ जाता कि दोबारा पैदा कर देना क्या मुश्किल है) **सो** (उसने ऐसा न किया बल्कि) **ऐलानिया ऐतराज़ करने**

लगा(77) और हमारे बारे में तो वो बातें बनाता है और अपनी असल को भूल गया (कि हम ने उसको एक बून्द से पूरा इन्सान बना दिया), **कहता है कि हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा जब कि वो गल चुकी होंगी(78) आप जवाब दे दीजिए कि उन को वो ज़िन्दा करेगा जिसने पहली बार उन को पैदा किया** (है अब दोबारा उनमें ज़िन्दगी पैदा करना क्या मुश्किल) **है, और वो हर तरह का पैदा करना जानता है** (यानी शुरू में किसी चीज़ को पैदा कर देना या पैदा की हुई को फ़ना करके दोबारा पैदा कर देना)(79) **वो ऐसा** (कुदरत वाला) **है कि हरे पेड़ से तुम्हारे लिए आग पैदा कर देता है फिर तुम उससे और आग सुलगा लेते हो** (जैसा कि अरब में एक पेड़ था मरूख़ दूसरा इफ़ार इन दोनो की टहनी को आपस में रगड़ने से आग पैदा हो जाती थी तो जिस कुदरत वाले ने हरे पेड़ के पानी में आग पैदा कर दी तो दूसरी बेजान चीज़ों में ज़िन्दगी पैदा कर देना उसके लिए क्या मुश्किल है)(80) **और जिसने आसमान व ज़मीन पैदा किये हैं क्या वो इसकी कुदरत नहीं रखता कि इन जैसे आदमियों को** (दोबारा) **पैदा करदे, क्यों नहीं** (ज़रूर कर सकता है) **और वो बड़ा पैदा करने वाला ख़ूब जानने वाला है(81)** (और उसकी कुदरत ऐसी है कि) **जब वो किसी चीज़** (के पैदा करने) **का इरादा करता है तो सिर्फ़ इतना कह देता है कि होजा बस वो हो जाती है(82) तो** (इन सब बातों से साबित हो गया कि) **उस की पाक ज़ात है हर चीज़ उसके कब्ज़े में है और तुम सब को उसी के पास लौट कर जाना है** (यानी कियामत के दिन)(83)।

37-सूरत-साफ़्फ़ात

इस मक्की सूरत में '5' रूकू और '182' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ(1) فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۙ(2) فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۙ(3) اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ؕ(4) رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ؕ(5) اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ اِۨلْكَوَاكِبِ ۙ(6) وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ(7) لَا
يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ(8) دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ(9) اِلَّا مَنْ خَطِفَ
الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ (10)

आयत नं० 01 से 10

क़सम है उन फ़रिशतों की जो (इबादत में या अल्लाह का हुक्म सुनने के वक़्त) **सफ़ बान्धकर खड़े होते हैं(01) फिर** (क़सम है) **उन फ़रिशतों की जो** (आसमानी ख़बरें लाने से शैतानों को) **रोकने वाले हैं(02) फिर** (क़सम है) **उन फ़रिशतों की जो ज़िक्र** (यानी अल्लाह की तस्बीह) **पढ़ने वाले हैं(03)** (उन सब की क़सम खाकर कहते हैं कि) **तुम्हारा** (सच्चा) **माबूद एक है(04)** (और इस तौहीद की दलील यह है कि) **वो रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच में** (है यानी उन सब चीज़ों का मालिक) **है और रब है** (सब सितारों के) **निकलने की जगहों का(05)** (और) **हम ही ने रौनक़ दी है इस तरफ़ वाले आसमान को सितारों की सजावट से(06) और** (इन्हीं सितारों से आसमान की ख़बरों की) **हिफ़ाज़त भी की है हर शरारती शैतान से(07)** (और इसी हिफ़ाज़त के इन्तिज़ाम की वजह से) **वो शैतान ऊपर की दुनिया** (यानी फ़रिशतों) **की बातें नहीं सुन सकते** (यानी अक्सर तो मार खाने के डर से दूर ही रहते हैं और अगर कभी इसकी कोशिश करते भी हैं तो जिस तरफ़ भी जाएं) **हर तरफ़ से उन पर मार पड़ती है(08) उन्हें धक्के दे दिये जाते हैं** (यह सज़ा और रूसवाई तो उन्हें दुनिया में मिलती है) **और** (फिर आख़रत में) **उनके लिए** (जहन्नम का) **सदा का अज़ाब होगा** (बस कोई आसमानी ख़बर सुनने से पहले ही उन्हें मार भगाया जाता है वो सुनने का इरादा लेकर आते हैं मगर नाकाम रहते हैं)**(09)**

मगर जो शैतान कुछ ख़बर ले ही भागे तो एक दहकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है (कि उसको जला फूंक देता है इसलिए जो कुछ सुना है उसे दूसरों तक पहुंचाने में नाकाम रहता है ये सारे इन्तिज़ाम अल्लाह तआ़ला की तौहीद के सबूत हैं)(10)

नोटः- एक हदीस मे है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया "तुम (नमाज़ में) इस तरह सफ़बन्दी क्यों नहीं करते जिस तरह फ़रिशते अपने रब के सामने करते हैं" सहाबा ने पूछा फ़रिशते अपने रब के सामने किस तरह सफ़ बन्दी करते हैं तो आप ने जवाब दिया "वो सफ़ों को पूरा करते हैं और सफ़ में मिलकर खड़े होते हैं" (यानी बीच में ख़ाली जगह नहीं छोड़ते)। (तफ़सीर मज़हरी)

और एक हदीस में ताकीद है कि "सीधे रहो आगे पीछे मत हो वर्ना तुम्हारे दिलों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा"। (मुस्लिम)

मसअलाः- हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि- "अल्लाह तआ़ला को हक़ है वो अपनी मख़लूक़ में से जिस चीज़ की चाहे क़सम खाले मगर किसी दूसरे के लिए अल्लाह के सिवा किसी की क़सम खाना जाइज़ नहीं"।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿۱۱﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ
اِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَقَالُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۵﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا
تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿۱۶﴾ اَوَاٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿۱۷﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ﴿۱۸﴾

आयत नं० 11 से 18

(जब तौहीद की दलीलों से पता चल गया कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन, आसमान, चान्द सूरज और सितारे जैसी मख़लूक़ को पैदा करने की क़ुदरत रखते हैं और सब कुछ उसी के क़ब्ज़े में है) **तो आप इन** (आख़रत का इनकार करने वालों) **से पूछिए कि इन का पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है या हमारी पैदा की हुई दूसरी चीज़ों का** (यानी ज़मीन, आसमान, चान्द सितारों का पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है, क्योंकि) **हम ने इन लोगों को** (तो आदम अलैहिस्सलाम के पैदा करने के वक़्त इसी

मामूली) **चिपकती मिट्टी** (यानी लेसदार गारे) **से पैदा किया है** (जिसमें न कुछ ताक़त है न सख़्ती और इन्सान ज़्यादा ताक़तवर और सख़्त नहीं है अब सोचने की बात है कि जब हम ऐसी ताक़तवर और सख़्त चीज़ों को नाहोत से वजूद में लाने की क़ुदरत रखते हैं तो इन्सान जैसी कमज़ोर चीज़ को एक बार मौत देकर दोबारा ज़िन्दा करने पर क्यों क़ुदरत न होगी मगर ऐसी साफ़ दलीलें सुन कर भी ये लोग आख़रत को नहीं मानते)(11) **बल्कि** (इससे बढ़ कर बात यह है कि) **आप तो** (इनके इनकार से) **अचम्भा करते हैं और ये लोग** (इनकार से बढ़कर आख़रत के अक़ीदे की) **हंसी उड़ाते हैं**(12) **और जब उनको** (अक़्ली दलीलों से) **समझाया जाता है तो ये समझते नहीं**(13) **और जब ये कोई मोजिज़ा देखते हैं** (जो आप की पैग़म्बरी साबित करने के लिए उनको दिखाया जाता है जिससे आख़रत का अक़ीदा साबित किया जाए) **तो** (ख़ुद) **उसकी हंसी उड़ाते हैं**(14) **और कहते हैं कि ये तो खुला जादू** (है क्योंकि मोजिज़े को मानने से आप की पैग़म्बरी साबित हो जाएगी और आप को पैग़म्बर मानने के बाद आप का बयान किया हुआ आख़रत का अक़ीदा भी मानना ज़रूरी) **है**(15) (और कहते हैं कि) **भला जब मर गये और मिट्टी और हड्डियां हो गये तो क्या हम** (फिर) **ज़िन्दा किये जाएंगे**(16) **और क्या हमारे पहले बाप दादा भी** (ज़िन्दा होंगे)(17) **आप कह दीजिए कि हां** (ज़रूर ज़िन्दा होंगे) **और तुम रूसवा भी होंगे**(18)

नोटः- मोजिज़ा चूंकि आम लोगों की क़ुदरत से बाहर होता है इसलिए उसको जादू कह कर मानने से इनकार करते हैं हालांकि जादू भी मोजिज़े की बराबरी नहीं कर सकता जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से में हुआ।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنظُرُونَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوا يَا وَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢٠﴾ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم
بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢١﴾ احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٢﴾ مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ
الْجَحِيمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿٢٥﴾ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٦﴾

आयत नं० 19 से 26

बस वो (क़ियामत तो) **एक ज़ोरदार आवाज़ होगी** (यानी दूसरा सूर) **सो** (इससे) **सब यकायक** (ज़िन्दा होकर हैरान से एक दूसरे को) **देखने लगेंगे**(19) **और** (पछताकर) **कहेंगे हाय हमारी बदनसीबी यह तो वो ही हिसाब** (और बदले) **का दिन** (मालूम होता) **है**(20) (कहा जाएगा कि हां)

यह वो ही फ़ैसले का दिन है जिसको तुम झुटलाया करते थे(21) (आगे क़ियामत ही की कुछ बातों का बयान है कि फ़रिश्तों को हुक्म होगा) **जमा कर लो ज़ालिमों को** (यानी जो कुफ़्र व शिर्क फैलाने वाले थे) **और उनके साथियों को** (जो उनका कहा मानते थे) **और उनको भी जिन की ये इबादत किया करते थे**(22) **अल्लाह को छोड़ कर** (यानी शैतान और बुत) **फिर उन सब को दोज़ख़ का रास्ता दिखाओ** (यानी उधर ले जाओ)(23) **और** (फिर यह हुक्म होगा कि अच्छा) **इन को** (ज़रा) **ठहराओ इन से कुछ पूछा जाएगा**(24) (उन से यह सवाल होगा) **अब तुम को क्या हुआ कि** (अज़ाब का हुक्म सुन कर) **एक दूसरे की मदद नहीं** (करते यानी काफ़िरों के बड़े वो इन्सान हों या शैतान जो दुनिया में बहकाया करते थे अब अपने पीछे चलने वालों की मदद नहीं) **करते**(25) (मगर इस सवाल के बाद भी वो मदद न कर सकेंगे) **बल्कि वो सब के सब उस दिन सर झुकाए** (खड़े) **होंगे**(26)

नोटः- दुनिया में अपनी इबादत करवाने वाले झूटे ख़ुदा भी जब जहन्नम में होंगे तो काफ़िरों को उनके बेबस होने का अच्छी तरह पता चल जाएगा।

وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿۲۸﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَ مَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿۳۰﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَاۤ ۖ اِنَّا
لَذَآئِقُوْنَ ﴿۳۱﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿۳۲﴾ فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿۳۳﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۳۴﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ يَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْۤا اٰلِهَتِنَا
لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿۳۶﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَ صَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿۳۸﴾ وَ مَا تُجْزَوْنَ اِلَّا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۴۰﴾

आयत नं० 27 से 40

और (बजाए इसके कि मुशरिक लोग एक दूसरे की मदद कर सकें उनमें उस वक़्त उल्टा झगड़ा होगा और) **वो एक दूसरे की तरफ़ मुंह करके सवाल जवाब** (यानी झगड़ा) **करने लगेंगे**(27) (जैसा कि) **ताबेदार** (अपने बड़ों से) **कहेंगे कि** (हम को तो तुम ने गुमराह किया क्योंकि बहकाने के लिए) **तुम हम पर बड़े ज़ोरों से चढ़-चढ़ कर आते** (थे यानी तुम हम पर ख़ूब ज़ोर डाल कर हमें गुमराह करने की कोशिश किया करते) **थे**(28) **सरदार लोग यह कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम**

ख़ुद ही ईमान नहीं लाए थे(29) और (हम पर नाहक़ इल्ज़ाम लगाते हो क्योंकि) **हमारा तुम पर कोई ज़ोर तो था ही नहीं बल्कि तुम ख़ुद ही सरकशी किया करते थे(30) सो** (जब कुफ़्र करने वाले हम भी थे और तुम भी तो मालूम हुआ कि) **हम सब ही पर हमारे रब की** (पहले ही) **यह बात साबित हो चुकी थी कि हम सब को** (अज़ाब का) **मज़ा चखना है(31) तो** (इसका सामान यह हो गया कि) **हम ने तुम को बहकाया** (जिससे तुम हमारे ज़ोर ज़बरदस्ती के बिना ख़ुद अपनी मर्ज़ी से गुमराह हुए और) **हम ख़ुद भी** (अपनी मर्ज़ी से) **गुमराह थे(32)** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब दोनों फ़रीक़ का कुफ़्र में साझी होना साबित है) **तो वो सब के सब उस दिन अज़ाब में** (भी) **साझी रहेंगे(33)** (और) **हम ऐसे मुजरिमों के साथ ऐसा ही** (बरताव) **किया करते हैं(34) वो लोग ऐसे थे कि** (तौहीद का भी इनकार करते थे और पैग़म्बरी का भी और) **जब उन से** (पैग़म्बर के वास्ते से) **कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं तो** (उसके मानने से) **घमन्ड किया करते थे(35) और कहा करते थे कि क्या हम अपने माबूदों को एक शाइर दीवाने** (के कहने) **की वजह से छोड़ देंगे(36)** (बस इस में तौहीद और पैग़म्बरी दोनों का इनकार हो गया, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि यह पैग़म्बर न शाइर हैं न मजनूं) **बल्कि** (पैग़म्बर हैं कि) **एक सच्चा दीन लेकर आए हैं और** (तौहीद की बातों में) **दूसरे पैग़म्बरों की तस्दीक़ करते** (हैं यानी ऐसे उसूल बताते हैं जिसमें सब पैग़म्बर एक) **हैं(37) बस** (उनसे कहा जाएगा कि) **तुम सब** (छोटों और बड़ों) **को दर्दनाक अज़ाब चखना पड़ेगा(38) और** (इस हुक्म में तुम पर कोई जुल्म नहीं हुआ क्योंकि) **तुम को उसी का बदला मिलेगा जो कुछ तुम** (कुफ़्र वग़ैरह) **किया करते थे(39) हां मगर जो अल्लाह के ख़ास किये हुए बन्दे हैं** (यानी वो ईमान वाले बन्दे जिन्होंने नेक काम किये ऐसे लोग अज़ाब से बचे रहेंगे)(40)

नोटः- किसी के बहकाए में आकर गुनाह करने से बहकाने वाले का गुनाह तो बढ़ जाता है मगर गुनाह करने वाला यह मजबूरी बताकर कि मुझे बहका दिया गया था अज़ाब से नहीं बच सकता अलबत्ता अगर किसी को गुनाह के लिए मजबूर कर दिया गया हो कि अपनी जान बचाने के लिए वो गुनाह कर बैठा हो तो इन्शाअल्लाह उसकी मुआफ़ी की उम्मीद है।

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾ فِي جَنَّٰتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَٰبِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ
عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَعِندَهُمْ

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ
اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾ يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾
قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾ وَ لَوْ لَا
نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَ مَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ
هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾

आयत नं० 41 से 61

उन (अल्लाह के नेक बन्दों) **के वास्ते ऐसी चीज़ें हैं जिन का हाल** (दूसरी सूरतों में) **मालूम** (हो चुका) **है(41) यानी मेवे** (हैं) **और वो लोग बड़ी इज़्ज़त से रहेंगे(42) आराम के बाग़ों में(43) ऊंचे तख़्तों पर आमने सामने बैठे होंगे(44)** (और) **उनके पास ऐसा शराब का प्याला लाया जाएगा** (यानी ग़िलमान लाएंगे) **जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा(45)** (जो देखने में) **सफ़ेद होगी** (और पीने में) **पीने वालों के लिए मज़ेदार होगी(46)** (और) **न उसमें सर का दर्द होगा** (जैसे दुनिया की शराब में होता है) **और न उनकी अक़्ल बहकेगी(47) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी-बड़ी आंखों वाली** (हूरें) **होंगी(48)** (जिन का रंग ऐसा साफ़ होगा कि) **जैसे अन्डे हैं जो** (परों के नीचे) **छुपे हुए हैं** (कि धूल मिट्टी और धब्बे से बचे होते हैं इसमें सफ़ाई बताई गई है)**(49) फिर** (जब सब लोग एक जगह जमा होंगे तो) **एक दूसरे की तरफ़ ध्यान करके बातचीत करेंगे(50)** (उस वक़्त) **उन** (जन्नती लोगों) **में से एक कहने वाला कहेगा कि** (दुनिया में) **मेरा एक साथी था(51) वो** (मुझ से अचम्भे से) **कहा करता था कि क्या तुम आख़रत की ज़िन्दगी को सच मानते हो(52) क्या जब मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम** (दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे और ज़िन्दा करके) **बदला और सज़ा दिये जाएंगे** (यानी वो आख़रत का इनकार करता था इसलिए वो ज़रूर दोज़ख़ में गया होगा)**(53) कहा जाएगा** (अल्लाह की तरफ़ से कि ऐ जन्नत वालो) **क्या तुम झांक कर** (उसको) **देखना चाहते हो** (अगर चाहो तो तुम को इजाज़त है)**(54) सो वो आदमी** (जिसने क़िस्सा बयान किया था) **झांक कर देखेगा तो उस को जहन्नम के बीचो बीच** (पड़ा हुआ) **देखेगा(55)** (उस को वहां देख कर उससे) **कहेगा कि अल्लाह की क़सम तू तो मुझ को बर्बाद ही करने को** (था यानी मुझ को भी आख़रत का न मानने वाला बनाने की कोशिश किया करता) **था(56) और अगर मेरे रब की** (मुझ पर) **महरबानी न होती** (कि

मुझ को उसने सही यक़ीन पर जमाए रक्खा) **तो मैं भी** (तेरी तरह) **गरिफ़्तार लोगों में होता(57)** (और उसके बाद वो जन्नती अपने साथ वालों से ख़ुशी से कहेगा कि) **क्या अब हमें मौत नहीं आएगी(58) सिवाए उस मौत के जो पहले** (दुनिया में) **आचुकी और न हम को अज़ाब होगा(59)** (आगे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि जन्नत की जितनी नेमतें ऊपर बयान की गईं) **ये बेशक बड़ी कामयाबी है(60) ऐसी ही कामयाबी** (हासिल करने) **के लिए अमल करने वालों को अमल करना** (चाहिए यानी ईमान लाना और नेक काम करना) **चाहिए(61)।**

नोटः- ऊपर आयत में जो दो दोस्तों का क़िस्सा बयान किया गया है जिनमें एक मोमिन था और दूसरा काफ़िर इससे एक सबक़ मिलता है कि दोस्ती करने में इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि दोस्ती से दीन और आख़रत का नुक़सान न उठाना पड़े वर्ना फिर सिवाए पछताने के कुछ हाथ न आएगा।

أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿٦٢﴾ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِّلظَّالِمِينَ ﴿٦٣﴾ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ
الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ﴿٦٥﴾ فَإِنَّهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِئُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ
عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلَىٰ
آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٧١﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم مُّنذِرِينَ ﴿٧٢﴾ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ ﴿٧٣﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٧٤﴾

आयत नं० 62 से 74

(अज़ाब और सवाब दोनों का मिलान करके अब बताओ) **भला यह महमानी** (जन्नत की नेमतों की) **बेहतर है** (जो ईमान वालों के लिए है) **या ज़क़्क़ूम का पेड़** (जो काफ़िरों के लिए है)**(62) हम ने उस पेड़ को** (आख़रत की सज़ा बनाने के सिवा दुनिया में भी उन) **ज़ालिमों के लिए इम्तिहान की चीज़ बनाया** (है कि इसको सुनकर तस्दीक़ करते हैं या झुटलाते हैं जैसा कि काफ़िरों ने झुटलाया और हंसी उड़ाई और कहने लगे आग में पेड़ कैसे हो सकता) **है(63)** (इसका जवाब अल्लाह तआला ने यह दिया कि) **वो पेड़ दोज़ख़ की गहराई से निकलता** (है और चूंकि वो ख़ुद आग ही में पैदा होता है इसलिए वहां रहना मुश्किल नहीं जैसे समन्दर नामी जानवर आग ही में पैदा होता है और आग ही में रहता) **है(64) उस के फल** (देखने में) **ऐसे हैं जैसे सांप के फन** (बस ऐसे पेड़ से ज़ालिमों

की महमानी होगी)(65) **तो वो लोग** (भूक की बेचैनी में जब और कुछ न मिलेगा तो) **उससे खाएंगे और** (चूंकि भूक से बेचैन होंगे) **उसी से पेट भरेंगे**(66) **फिर** (जब प्यास से बेचैन होकर पानी मांगेंगे तो) **उन को खौलता हुआ पानी पीप मिला हुआ दिया जाएगा**(67) **फिर** (यह नहीं कि इस मुसीबत से छुटकारा हो जाए बल्कि) **आख़री ठिकाना उन का** (सदा के लिए) **दोज़ख़ ही की तरफ़ होगा**(68) (और उन्हें यह सज़ा इसलिए दी गई कि) **उन्होंने** (अल्लाह के हुक्मों पर चलना नहीं चाहा बल्कि) **अपने बड़ों को गुमराही की हालत में पाया**(69) **फिर ये भी उन्हीं के क़दमों पर दौड़ते** (थे यानी शौक़ और दिलचस्पी से उन्हीं के ग़लत रास्ते पर चलते) **थे**(70) **और इन** (मौजूदा काफ़िरों) **से पहले हो चुके लोगों में भी अक्सर गुमराह हो चुके हैं**(71) **और हम ने उनमें भी ख़बरदार करने वाले** (पैग़म्बर) **भेजे थे**(72) **अब देख लीजिए उन लोगों का कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ जिन को ख़बरदार किया गया था** (और उन्होंने न माना था कि उन पर दुनिया ही में क्या-क्या अज़ाब आए)(73) **हां मगर जो अल्लाह के चुने हुए** (यानी ईमान वाले) **बन्दे थे** (वो इस दुनिया के अज़ाब से भी बचे रहे)(74)

नोटः- किसी को यह शुबह हो कि जहन्नम में पेड़ कैसे हो सकता है तो जब वो पैदा ही जहन्नम में होता है तो अल्लाह तआ़ला ने उस में ऐसी सिफ़त रख दी कि वो आग में जलने के बजाए उस से फलता फूलता है।

وَ لَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَ نَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾ وَ جَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾
وَ تَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

आयत नं० 75 से 82

और हम को नूह (अलैहिस्सलाम) **ने** (मदद के लिए) **पुकारा** (यानी दुआ की) **सो** (हम ने उनकी मदद की और) **हम ख़ूब फ़रियाद सुनने वाले हैं**(75) **और हम ने उन को और उनके लोगों को बड़े भारी ग़म से बचा** (दिया जो काफ़िरों के झुटलाने और सताने से हुआ था कि तूफ़ान से काफ़िरों को डुबा दिया और उनके लोगों को बचा) **दिया**(76) **और हम ने उन्हीं की औलाद को बाक़ी रहने दिया** (और किसी की नस्ल नहीं चली)(77) **और हमने उनके बाद आने वाले लोगों**

में यह बात (बहुत ज़माने के लिए) **रहने दी(78) कि नूह पर सलाम हो सारे जहान वालों में** (यानी ख़ुदा करे सब दुनिया वाले इन्सान, जिन्नात व फ़रिश्ते सलाम भेजा करें)(79) **हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं(80) बेशक वो हमारे ईमानदार बन्दों में से थे(81) फिर हमने दूसरे लोगों को** (यानी काफ़िरों को पानी में) **डुबा दिया(82)**

नोटः- आसमानी किताबों के मानने वाले सभी मज़हबों के लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को अपना बड़ा मानते हैं। और मुसलमान तो क़ियामत तक उन को सलाम भेजते रहेंगे।

وَ اِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿۸۳﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۴﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَا ذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۸۵﴾ اَئِفْكًا
اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿۸۶﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۷﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿۸۸﴾ فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿۸۹﴾ فَتَوَلَّوْا
عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿۹۰﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۹۱﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿۹۲﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿۹۳﴾
فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿۹۴﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿۹۵﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَ مَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا
فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿۹۷﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿۹۸﴾

आयत नं० 83 से 98

और उन्हीं (नूह अलैहिस्सलाम) **के तरीक़े पर चलने वालों में से इब्राहीम भी थे(83)** (उन का वो क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि उन्होंने अपने रब की तरफ़ साफ़ दिल से ध्यान किया** (था साफ़ दिल का मतलब यह है कि उन का दिल ग़लत अक़ीदों और दिखावे से पाक) **था(84) जब कि उन्होंने अपने बाप से और अपनी क़ौम से** (जो बुत परस्त थी) **कहा कि तुम किस** (बेकार) **चीज़ की इबादत किया करते हो(85) क्या झूट-मूट के माबूदों को अल्लाह के सिवा** (माबूद बनाना) **चाहते हो(86) तो सारे जहानों के रब के बारे में तुम क्या सोचते** (हो यानी क्या उसके माबूद होने में कोई शक है अगर शक है तो उसे दूर कर सकते) **हो(87)** (इसी तरह बहस होती रहती थी कि एक बार का क़िस्सा है कि उनका कोई त्यौहार आया क़ौम के लोगों ने उन से भी कहा कि हमारे मेले में चलो) **तो इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने सितारों को एक निगाह डाल कर देखा(88) और कह दिया कि मेरी तबीअत ख़राब है** (इसलिए मेले में नही जा सकता)(89) **बस वो लोग** (उनकी यह मजबूरी सुनकर) **उन को छोड़ कर चले गये** (कि बेबात बीमारी में उनको और उनकी वजह से दूसरों को तकलीफ़ होगी)(90) **उसके बाद यह** (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम) **उनके बुतों में**

जा घुसे और (हंसी करते हुए उन से) **कहने लगे क्या तुम** (ये चढ़ावे जो तुम्हारे सामने रक्खे हैं) **खाते नहीं हो(91)** (और) **तुम को क्या हुआ तुम बोलते भी नहीं(92) फिर उन पर ज़ोरदार हमला किया और मारने लगे** (और कुल्हाड़ी से उन को तोड़ फोड़ दिया)(93) **सो** (उन लोगों को जब इस का पता चला तो) **वो लोग उन के पास** (घबराए हुए गुस्से में) **दौड़ते हुए आए(94)** (और बात चीत शुरू हुई) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा क्या तुम उन चीज़ों को पूजते हो जिन को खुद** (अपने हाथ से) **बनाते हो** (जो तुम्हारा मुहताज हो वो खुदा क्या होगा)(95) **जब कि तुम को और तुम्हारी बनाई हुई चीज़ों को** (सब को) **अल्लाह ही ने पैदा किया है** (तो इबादत उसी की करना चाहिए)(96) **वो लोग** (जब बहस में हार गये तो झल्लाकर आपस में) **कहने लगे कि इब्राहीम के लिए आग का घर बनाओ** (और उसमें आग दहकाकर) **उन को उस दहकती आग में डाल दो(97) बस** (इसी तरह) **उन लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करनी चाही थी** (कि यह हलाक हो जाएंगे) **सो हमने उन्हीं को नीचा दिखा दिया** (जिसका क़िस्सा सूरत अम्बिया में आ चुका है)(98)

नोटः- हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की क़ौम में सितारों के इल्म का बड़ा चर्चा था। वो लोग सितारों को देख कर अपने कामों को तय किया करते थे इसलिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सितारों की तरफ़ देख कर अपनी तबीअत के ख़राब होने का ज़िक्र किया ताकि मेले में न जाने का बहाना हो जाए। वर्ना खुद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम सितारों के इल्म के असर को न मानते थे।

हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि "सितारों के इल्म से इतना इल्म हासिल करो जिससे ज़मीन और समन्दर में रास्ते जान सको इसके बाद रूक जाओ" यानी सितारों की चाल का अपने कामों में असर मानना हमारा तरीक़ा नहीं।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ
مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَىٰ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَىٰ ۚ قَالَ يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۖ
سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّابِرِينَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ
صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ۚ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنَاهُ بِذِبْحٍ عَظِيمٍ ﴿١٠٧﴾ وَ
تَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿١٠٨﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿١٠٩﴾ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١١٠﴾ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١١﴾ وَ
بَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٢﴾ وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۚ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِنَفْسِهِ مُبِينٌ ﴿١١٣﴾

आयत नं० 99 से 113

और इब्राहीम (अलैहिस्सलाम को जब उन लोगों के ईमान लाने की उम्मीद न रही तो) **कहने लगे कि मैं तो** (तुम से हिजरत करके) **अपने रब की** (राह में किसी) **तरफ़ चला जाता हूं वो मुझ को** (अच्छी जगह) **पहुंचा ही देगा(99)** (बस मुल्क शाम जा पहुंचे और यह दुआ की कि) **या रब मेरे मुझ को एक नेक बेटा दे दीजिए(100) तो हमने उनको एक सहार वाले बेटे की ख़ुशख़बरी दी** (और बेटा पैदा हुआ और होशियार हुआ)(101) **तो जब वो लड़का ऐसी उम्र को पहुंचा कि इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने** (एक ख़्वाब देखा कि मैं उस बेटे को अल्लाह के हुक्म से ज़बह कर रहा हूं और गला कटा हुआ देखना साबित नहीं और बस जब आंख खुली तो इसको अल्लाह का हुक्म समझे क्योंकि पैग़म्बरों का ख़्वाब भी वही होता है और इस हुक्म पर अमल करने को तैयार हो गये फिर बेटे की राय जानना भी ज़रूरी समझा इसलिए उससे) **कहा कि बेटा मैं देखता हूं कि मैं तुम को** (अल्लाह के हुक्म से) **ज़बह कर रहा हूं सो तुम भी सोच लो तुम्हारी क्या राय है, वो बोले अब्बा जान** (इसमें मुझ से पूछने की क्या बात है जब आप को अल्लाह की तरफ़ से हुक्म किया गया है तो) **आप को जो हुक्म हुआ है आप** (बिना झिजक) **कीजिए इन्शाअल्लाह आप मुझे सहार करने वालों में से देखेंगे(102) बस जब दोनो ने** (अल्लाह के हुक्म को) **मान लिया और बाप ने बेटे को** (ज़बह करने के लिए) **करवट पर लिटाया(103) और** (चाहते थे कि गला काट डालें और उस वक़्त) **हमने उन को आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम** (शाबाश है)(104) **तुम ने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया** (यानी ख़्वाब में जो हुक्म हुआ था अपनी तरफ़ से उस पर पूरा अमल किया बस अब इन को छोड़ दो तो जान की जान बच गई और ऊंचे दर्जे मिले) **हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं** (कि दोनो जहान का आराम दिया)(105) **बेशक यह था भी बड़ा इम्तिहान** (जिसको सिवाए पूरे ईमान वाले के दूसरा सहार नहीं सकता और इस इम्तिहान में हज़रत इस्माईल भी साथ रहे)(106) **और हमने एक बड़ा जानवर ज़बह करने के लिए उसके बदले में दिया** (कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम से वो ज़बह कराया गया और बड़ा इसलिए कि वो जन्नत से लाया गया था)(107) **और हमने बाद में आने वालों में यह बात उनके लिए रहने दी(108) कि इब्राहीम पर सलाम हो** (जैसा कि उनके नाम के साथ अब तक अलैहिस्सलाम कहा जा रहा है)(109) **हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते** (हैं कि लोग उन्हें दुआएं और सलामती की ख़ुशख़री देते) **हैं(110) बेशक वो हमारे ईमानदार बन्दों में से थे(111) और हम ने** (एक इनआम उन पर यह किया कि) **उन को इसहाक़** (बेटे) **की**

ख़ुशख़बरी दी कि नबी और नेक लोगों में से होंगे(112) **और हमने इब्राहीम पर और इसहाक़ पर बरकतें उतारीं** (उन बरकतों में से एक यह है कि उनकी नस्ल बहुत फैली और उस नस्ल में बहुत से नबी पैदा हुए), **और** (फिर आगे) **उन दोनों की नस्ल में कुछ अच्छे भी हैं और कुछ ऐसे भी हैं** (जो बुरे काम करके) **अपना खुला नुक़सान कर रहे हैं**(113)

नोटः- यहां मालूम हो गया कि सिर्फ़ पैग़म्बर या नेक लोगों की औलाद होना बख़्शिश के लिए काफ़ी नहीं है बल्कि बख़्शिश का असली मदार इन्सान के अक़ीदों और आमाल का सही होने पर है। और यहूदियों का यह समझ लेना कि हम पैग़म्बर की औलाद हैं हमारी तो बख़्शिश हो जाएगी यह अपने आप को धोका देना है।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ
الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾
سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ
لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَ
رَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي
الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

आयत नं० 114 से 132

और हमने मूसा और हारून (अलैहिमुस्सलाम) **पर भी अहसान किया** (कि उन को पैग़म्बरी और दूसरे कमाल दिये)(114) **और हमने उन दोनो को और उनकी क़ौम** (यानी बनी इस्राईल) **को बड़े ग़म** (यानी फ़िरऔन की तरफ़ से पहुंचाई जाने वाली तकलीफ़ों) **से बचा दिया**(115) **और हम ने उन सब की** (फ़िरऔन के मुक़ाबिले में) **मदद की तो** (आख़ीर में) **ये ही लोग जीते** (कि फ़िरऔन को डुबा दिया और इन को हुकूमत मिली)(116) **और हम ने** (फ़िरऔन के डूबने के बाद) **उन दोनो** (साहिबों) **को** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम को असल में और हारून अलैहिस्सलाम को साथ में) **साफ़ किताब दी** (यानी तौरेत कि उसमें हुक्मों को साफ़ बयान किया गया था)(117) **और हमने उनको सीधे रास्ते पर चलाया** (जिसका बड़ा दर्जा यह है कि उन्हें मासूम नबी बनाया)(118) **और हमने उन**

दोनों के बाद आने वाले लोगों में यह बात रहने दी(119) **कि मूसा और हारून पर सलाम हो** (जैसा कि दोनों हज़रात के नामों के साथ आज तक अलैहिस्सलाम लिखा जाता है)(120) **हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते** (हैं कि उनको तारीफ़ और दुआ का हक़्दार बना देते) **हैं**(121) **बेशक वो दोनों हमारे** (पूरे) **ईमानदार बन्दों में से थे** (इसलिए बदला भी पूरा दिया गया)(122) **और इलयास** (अलैहिस्सलाम) **भी** (बनी इस्राईल के) **पैग़म्बरों में से थे**(123) (उन का उस वक़्त का क़िस्सा बताइये) **जब कि उन्होंने अपनी क़ौम** (बनी इस्राईल) **से कहा** (जो कि बुतपरस्ती करते थे) **कि तुम अल्लाह से नहीं डरते**(124) **क्या तुम बअल को** (जो एक बुत का नाम था) **पूजते हो और उस** (की इबादत) **को छोड़े बैठे हो जो सबसे बढ़ कर बनाने वाला** (है क्योंकि और लोग तो उसी की पैदा की हुई चीज़ों का कुछ बना सकते हैं और वो हर चीज़ का पैदा करने वाला है और कोई दूसरा जान नहीं डाल सकता बल्कि वो ही जान डालता) **है**(125) (और वो) **अल्लाह** (सच्चा माबूद) **तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादों का भी रब है**(126) **बस उन लोगों ने** (इस तौहीद के दावे में) **उनको झुटलाया तो** (इस झुटलाने की सज़ा में) **वो लोग** (आख़रत के अज़ाब में) **पकड़े जाएंगे**(127) **मगर जो अल्लाह के ख़ास बन्दे** (यानी ईमान वाले) **थे** (वो सवाब और इनआम में होंगे)(128) **और हमने इलयास के लिए बाद में आने वाले लोगों में** (बहुत ज़माने के लिए) **यह बात रहने दी**(129) **कि इलयासीन पर सलाम हो** (इलयासीन भी इलयास अलैहिस्सलाम का नाम है)(130) **हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं**(131) **बेशक वो हमारे** (पूरे) **ईमानदार बन्दों में से थे**(132)।

नोटः- तख़लीक़ (यानी पैदा करना) अल्लाह तआ़ला की सिफ़त है। किसी दूसरे के लिए यह लफ़्ज़ कहना जाइज़ नहीं। आज के ज़माने में जो रिवाज चल पड़ा है कि शाइरों के कलामों और मुसव्विरों की तस्वीरों को उन की तख़लीक़ कह दिया जाता है वो बिल्कुल जाइज़ नहीं। ख़ालिक़ अल्लाह के सिवा कोई नहीं हो सकता।

وَ اِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ؕ ﴿۱۳۳﴾ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۙ ﴿۱۳۴﴾ اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿۱۳۵﴾ ثُمَّ دَمَّرْنَا
الْاٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ اِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ بِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ وَ اِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ؕ ﴿۱۳۹﴾ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۙ ﴿۱۴۰﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۚ ﴿۱۴۱﴾ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَ هُوَ
مُلِيْمٌ ﴿۱۴۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۙ ﴿۱۴۳﴾ لَلَبِثَ فِىْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۚ ﴿۱۴۴﴾ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَ هُوَ سَقِيْمٌ ۚ ﴿۱۴۵﴾

وَ اَنۡۢبَتۡنَا عَلَیۡہِ شَجَرَۃً مِّنۡ یَّقۡطِیۡنٍ ﴿۱۴۶﴾ۚ وَ اَرۡسَلۡنٰہُ اِلٰی مِائَۃِ اَلۡفٍ اَوۡ یَزِیۡدُوۡنَ ﴿۱۴۷﴾ۚ فَاٰمَنُوۡا فَمَتَّعۡنٰہُمۡ اِلٰی حِیۡنٍ ﴿۱۴۸﴾ؕ

आयत नं० 133 से 148

और बेशक लूत (अलैहिस्सलाम) **भी** (हमारे) **पैग़म्बरों से थे**(133) (उन का उस वक़्त का क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि हम ने उन को और उनके लोगों को सब को** (अज़ाब से) **बचा दिया**(134) **सिवाए उस बुढ़िया** (यानी उन की बीवी) **के कि वो** (अज़ाब के अन्दर) **रह जाने वालों में रह गई**(135) **फिर हम ने और सब को** (जो लूत अलैहिस्सलाम और उनके लोगों के सिवा थे) **हलाक कर दिया** (जिन का क़िस्सा पहले भी आ चुका है)(136) **और** (ऐ मक्का वालो) **तुम उन** (के रहने की जगह) **पर** (मुल्क शाम के सफ़र में) **गुज़रा करते हो** (कभी) **सुबह होते**(137) **और** (कभी) **रात में** (गुज़रा करते हो), **तो क्या** (उन की बर्बादी की निशानियां देख कर भी) **समझते नहीं हो** (कि कुफ़्र का क्या अन्जाम हुआ और जो आगे कुफ़्र करेगा उसके लिए भी ये ही ख़तरा है)(138) **और बेशक यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **भी** (हमारे) **पैग़म्बरों में से थे**(139) (उन का उस वक़्त का क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि** (उन्होंने अपनी क़ौम को ईमान न लाने पर अज़ाब की ख़बर दी और ख़ुद वहां से चले गये और जब तय वक़्त पर अज़ाब के आसार दिखाई दिये तो क़ौम के लोग अपनी ग़लती पर पछताए और ईमान ले आए और वो अज़ाब टल गया, यूनुस अलैहिस्सलाम को जब यह ख़बर हुई तो शर्म की वजह से अपनी राय से अल्लाह तआला की साफ़ इजाज़त के बिना कहीं दूर चले जाने का इरादा करके अपनी जगह से) **भाग कर** (चले, रास्ते में दरिया था, उसमें मुसाफ़िरों से भरी हुई कशती उस) **भरी कशती के पास पहुंचे**(140) (कशती चली तो तूफ़ान आ गया, कशती वाले कहने लगे कि हम में कोई नया क़ुसूरवार है उसको कशती से अलग करना चाहिए उस आदमी का पता लगाने के लिए सब की राय इस पर हुई कि क़ुरा अन्दाज़ी की जाए यानी लाटरी डाली जाए) **सो यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **भी क़ुरा में शामिल हुए तो** (क़ुरा में) **ये ही मुलज़िम ठहरे** (यानी लाटरी में उन्हीं का नाम निकला बस उन्होंने अपने को दरिया में डाल दिया शायद किनारा नज़दीक होगा तैर कर किनारे पर पहुंचने का इरादा होगा बस ख़ुदकुशी का शक न किया जाए)(141) **फिर** (जब दरिया में गिरे तो हमारे हुक्म से) **उन को मच्छली ने** (साबुत) **निगल लिया और ये** (उस वक़्त) **अपनी** (ग़लती पर) **पछता** (रहे थे और ज़बान से भी तस्बीह के साथ तौबा कर) **रहे थे**(142) **सो अगर** (उस वक़्त) **तस्बीह** (व तौबा) **करने वालों में से न होते**(143) **तो क़ियामत तक उसी के पेट में रहते** (मतलब यह कि पेट से निकलना नसीब न होता उस की ख़ुराक बना दिये जाते)(144) **तो** (चूंकि

उन्होंने तस्बीह और तौबा की इसलिए) **हम ने** (उन को इससे बचाए रक्खा और मच्छली के पेट से निकाल कर) **उन को एक मैदान में डाल दिया** (यानी मच्छली को हुक्म दिया कि किनारे पर उगल दे) **और वो उस वक़्त निढाल थे** (क्योंकि मच्छली के पेट में काफ़ी हवा और ख़ुराक न पहुंचती थी)(145) **और हम ने** (धूप से बचाने के लिए) **उन पर एक बेलदार पेड़ भी उगा दिया था** (और कोई पहाड़ी बकरी उन्हें दूध पिला जाती थी)(146) **और उनको एक लाख या उस से भी ज़्यादा लोगों की तरफ़** (शहर नैनवा में) **पैग़म्बर बना कर भेजा था**(147) **फिर वो लोग** (पूरी तरह) **ईमान लाए तो** (ईमान की बरकत से) **हम ने उन को एक ज़माने तक** (यानी उम्र की मुद्दत तक) **ऐश** (आराम) **दिया**(148)।

नोटः- कुरा अन्दाज़ी के ज़रिए न किसी का हक़ साबित किया जा सकता है और न किसी को मुजरिम ठहराया जा सकता है। इससे तो सिर्फ़ कुछ जाइज़ रास्तों में एक रास्ते को चुना जा सकता है जैसे अगर दो बीवियां हैं तो सफ़र में किसे साथ ले जाए ऐसा करने से दूसरी के दिल को ठेस न पहुंचेगी। हज़रत यूनुस के क़िस्से में उस दौर के दस्तूर के हिसाब से तूफ़ान से कशती को बचाने के लिए किसी एक आदमी को दरिया में डाला जाना था किस को डाला जाए यह लाटरी डाल कर तय किया गया जिस में उन का नाम आया।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَ لَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّ هُمْ شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ
اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ
تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَ جَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَ
بَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَ لَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ
الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾ فَاِنَّكُمْ وَ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَ مَا مِنَّآ اِلَّا
لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّ اِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَ اِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾

आयत नं० 149 से 166

(तौहीद की दलीलें तो ऊपर बयान हो चुकी) **तो अब** (इसके बाद) **उन लोगों से** (जो फ़रिशतों और जिन्नात को अल्लाह का साझी ठहराते हैं इस तरह कि फ़रिशतों को नऊज़ुबिल्लाह अल्लाह की

बेटियां और जिन्नात के सरदारों की बेटियों को उन फ़रिशतों की माएं कहते थे सो इन सब से) **पूछिए कि क्या अल्लाह के लिए तो बेटियां** (हों) **और तुम्हारे लिए बेटे** (हों यानी जब अपने लिए बेटे पसन्द करते हो तो इस अक़ीदे में अल्लाह के लिए बेटियां कैसे ठहराते हो बस इस अक़ीदे में एक ख़राबी तो यह है ही)(149) **हां** (दूसरी बात सुनो कि) **क्या हम ने फ़रिशतों को औरत बनाया है और वो** (उनके बनाने के वक़्त) **देख रहे थे** (यानी एक दूसरी बुराई यह है कि फ़रिशतों पर बिना दलील औरत होने का इल्ज़ाम रखते हैं)(150) **ख़ूब सुन लो कि वो लोग अपनी मन घड़त बात की वजह से कहते हैं**(151) **कि** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **अल्लाह औलाद वाला है और वो बेशक** (बिल्कुल) **झूटे** (हैं बस इस अक़ीदे में तीसरी बुराई यह है कि अल्लाह को औलाद वाला बताते) **हैं**(152) **क्या अल्लाह तआ़ला ने बेटों के मुक़ाबिले में बेटियां ज़्यादा पसन्द की हैं**(153) **तुम को क्या हो गया तुम कैसा इन्साफ़ करते** (हो जिसको ख़ुद भी बुरा समझते) **हो**(154) **फिर क्या तुम सोच** (समझ) **से काम नहीं लेते हो** (कि यह अक़ीदा अक़्ल के भी ख़िलाफ़ है)(155) **या तुम्हारे पास** (इस पर) **कोई साफ़ दलील मौजूद है** (यानी आसमानी किताब)(156) **तो तुम अगर** (इसमें) **सच्चे हो तो अपनी वो किताब लाओ**(157) **और इन लोगों ने अल्लाह में और जिन्नात में** (भी) **रिशतेदारी बना रक्खी** (है जिस का झूट होना और भी साफ़ है क्योंकि बीवी जिस काम के लिए होती है उससे अल्लाह तआ़ला पाक) **है, और जिन्नात का तो** (ख़ुद) **यह मानना है कि** (उनमें जो काफ़िर हैं) **वो** (अज़ाब में) **गरिफ़्तार होंगे**(158) (और अज़ाब में गरिफ़्तार क्यों न हों जब कि अल्लाह के बारे में बुरी-बुरी बातें बयान करते हैं, हालांकि) **अल्लाह उन बातों से पाक है जो ये बयान करते हैं**(159) **मगर जो अल्लाह के ख़ास** (यानी ईमान वाले) **बन्दे हैं** (वो उस अज़ाब से बचे रहेंगे)(160) **सो तुम और जिन-जिन की इबादत करते हो**(161) (सब मिलकर भी) **अल्लाह से किसी को फेर नहीं सकते** (जैसी तुम कोशिश किया करते हो)(162) **मगर उसी को जो कि** (अल्लाह के नज़दीक) **जहन्नम में जाने वाला है**(163) **और** (फ़रिशते तो यह कहते हैं कि) **हम में से हर एक** (के काम) **का दर्जा तय है** (उसी के पूरा करने में लगे रहते हैं अपनी राय से कुछ नहीं कर सकते)(164) **और हम** (अल्लाह के सामने हुक्म सुनने के वक़्त या इबादत के वक़्त अदब से) **सफ़ बान्धे खड़े होते हैं**(165) **और हम** (अल्लाह की) **पाकी बयान करने** (यानी तस्बीह पढ़ने) **में लगे रहते** (हैं बस हर तरह ताबेदार बन्दे हैं, सो जब फ़रिशते ख़ुद अपनी बन्दगी का इक़रार कर रहे) **हैं** (तो फिर उनकी इबादत कोरी बेवक़ूफ़ी है बस फ़रिशतों और जिन्नात के बारे में ख़ुदाई का ऐतक़ाद रखना ग़लत साबित हो गया)(166)।

नोटः- इबलीस अपने बुरे अन्जाम को अच्छी तरह जानता है अब जो ख़ुद यह यक़ीन रखता हो कि मुझे अज़ाब में पकड़ा जाना है उसे ख़ुदा का बराबर ठहराना कितनी बड़ी बेवक़ूफ़ी है।

وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ
يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧١﴾ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٢﴾ وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ
الْغَالِبُونَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٤﴾ وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٥﴾ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٦﴾ فَإِذَا نَزَلَ
بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٨﴾ وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿١٧٩﴾ سُبْحَانَ رَبِّكَ
رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾

आयत नं० 167 से 182

और ये लोग (यानी अरब के काफ़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले) **कहा करते थे**(167) **कि अगर हमारे पास कोई नसीहत** (की किताब) **पहले लोगों** (की किताबों) **की तरह आती** (यानी जैसे यहूदियों और ईसाइयों के पास पैग़म्बर और किताबें आईं)(168) **तो** (अगर हमारे लिए ऐसा होता तो) **हम अल्लाह के ख़ास बन्दे होते** (यानी उस किताब की तस्दीक़ और उस पर अमल करते, उनकी तरह न झुटलाते और न मुख़ालफ़त करते)(169) **फिर** (जब वो नसीहत की किताब पैग़म्बर के वास्ते से उनको पहुंची तो) **ये लोग उस का इनकार करने लगे** (और अपना वो वादा तोड़ दिया) **तो** (अच्छा) **अब उनको** (इस का अन्जाम) **मालूम हुआ जाता है** (जैसा कि मरते ही कुफ़्र का अन्जाम सामने आ गया और कुछ सज़ाएं मौत से पहले भी मिल गईं)(170) **और** (आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली है कि चाहे इस वक़्त इन मुख़ालिफ़ों को कुछ ताक़त हासिल है लेकिन यह कुछ दिनों की बात है, क्योंकि) **हमारे ख़ास बन्दों यानी पैग़म्बरों के लिए यह बात पहले ही से तय हो चुकी** (है यानी तक़दीर की किताब में लिखी जा चुकी) **है**(171) **कि उन की मदद की जाएगी**(172) **और** (हमारा तो दस्तूर यह है कि) **हमारा गिरोह कामयाब रहता है**(173) **तो आप** (तसल्ली रखिए और) **थोड़े दिनों तक** (सब्र कीजिए और) **उन** (की मुख़ालफ़त और सताने) **का ध्यान न कीजिए**(174) **और** (ज़रा) **उनको देखते रहिए** (यानी उनकी हालत का ज़रा इन्तिज़ार कीजिए) **सो जल्दी ही ये भी** (अपना अन्जाम) **देख लेंगे**(175) (इस अज़ाब की धमकी पर वो कह सकते थे और अक्सर वो कहा भी करते थे कि ऐसा कब होगा तो इसके जवाब में फ़रमाते हैं कि)

क्या हमारे अज़ाब का तक़ाज़ा कर रहे हैं(176) **सो वो** (अज़ाब) **जब उनके सामने आ उतरेगा तो वो दिन उन लोगों का जिन को** (पहले से) **डराया जा चुका था बहुत बुरा होगा** (कि वो अज़ाब टल न सकेगा)(177) **और** (जब यह बात है कि उन लोगों पर अज़ाब पड़ने वाला है तो) **आप** (तसल्ली रखिए और) **थोड़े ज़माने तक** (सब्र कीजिए और) **उन** (की मुख़ालफ़त और सताने) **का ध्यान न कीजिए**(178) **और** (ज़रा उन की हालत को) **देखते रहिए** (यानी इन्तिज़ार कीजिए) **सो जल्दी ही ये भी देख लेंगे** (यानी आप को तो हमारे कहने से यक़ीन है ही, आंखों से देख कर इन्हें भी यक़ीन आजाएगा)(179) **आप का रब जो बड़ी इज़्ज़त वाला है उन बातों से पाक है जो ये** (काफ़िर) **बयान करते हैं** (बस अल्लाह को उन बातों से पाक ही ठहराओ)(180) **और** (पैग़म्बरों का कहना मानना ज़रूरी समझो क्योंकि हम उनकी शान में यह कहते हैं कि) **सलाम हो पैग़म्बरों पर**(181) **और** (अल्लाह को शिर्क वग़ैरह से पाक समझने के साथ-साथ सारी ख़ूबियों वाला भी समझो, क्योंकि) **सारी ख़ूबियां अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का रब** (और मालिक) **है**(182)।

नोटः- हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कई बार सुना कि आप नमाज़ ख़त्म होने के बाद ये आयतें तिलावत किया करते थे- "सुबहाना रब्बिका......... यानी सूरत साफ़्फ़ात की आख़री तीन आयतें ।

हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि "जो आदमी यह चाहता हो कि क़ियामत के दिन उसे भरपूर पैमाने से सवाब मिले उसे चाहिए कि अपनी हर मजलिस के आख़ीर में ये पढ़े सुबहाना् रब्बिका.......... यानी सूरत साफ़्फ़ात की ये आख़री तीन आयतें।

(तफ़सीर इब्ने कसीर)

38-सूरत-साद

इस मक्की सूरत में ‘5’ रूकू और ‘88’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِی الذِّكْرِ ۝١ بَلِ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا فِیْ عِزَّةٍ وَّ شِقَاقٍ ۝٢ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّ
لَاتَ حِیْنَ مَنَاصٍ ۝٣ وَ عَجِبُوْۤا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ؗ وَ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٤ اَجَعَلَ
الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۖۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝٥ وَ انْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَ اصْبِرُوْا عَلٰۤی اٰلِهَتِكُمْ ۖۚ اِنَّ
هٰذَا لَشَیْءٌ یُّرَادُ ۝٦ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۖۚ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝٧ ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا ؕ
بَلْ هُمْ فِیْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا یَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِیْزِ
الْوَهَّابِ ۝٩ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَیْنَهُمَا ۫ فَلْیَرْتَقُوْا فِی الْاَسْبَابِ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ
مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ عَادٌ وَّ فِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝١٢ وَ ثَمُوْدُ وَ قَوْمُ لُوْطٍ وَّ اَصْحٰبُ
لْـَٔیْكَةِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الْاَحْزَابُ ۝١٣ اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤ وَ مَا یَنْظُرُ هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً مَّا
لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝١٥ وَ قَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ یَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦

आयत नं० 01 से 16

साद (इस का मतलब तो अल्लाह को मालूम है) **कसम है नसीहत भरे कुरआन की** (कि काफ़िर लोग आप की पैग़म्बरी का इनकार करते हुए जो कुछ कह रहे हैं वो ठीक नहीं)(01) **बल्कि** (ख़ुद) **ये काफ़िर** (ही) **बड़ाई के घमन्ड और** (हक़ की) **मुख़ालफ़त में** (पड़े) **हैं**(02) (और हटधर्मी और मुख़ालफ़त का अज़ाब एक दिन उन पर पड़ने वाला है जैसा कि) **इन से पहले बहुत सी उम्मतों को हम** (अज़ाब से) **हलाक कर चुके हैं सो उन्होंने** (तबाही के वक़्त) **बड़ी हाय पुकार की** (और बहुत शोर ग़ुल मचाया) **और** (उस वक़्त शोर गुल करने से क्या होता है क्योंकि) **वो वक़्त छुटकारे का न था** (इसलिए कि जब अज़ाब आ चुके तो तौबा भी कुबूल नहीं होती)(03) **और इन** (कुरैशी)

काफ़िरों ने इस बात पर अचम्भा किया कि उनके पास उन (ही) **में से** (यानी जो कि उनकी तरह इन्सान है) **एक** (पैग़म्बर) **ख़बरदार करने वाला आ गया** (अचम्भे की वजह यह थी कि वो लोग अपनी जहालत की वजह से इन्सान को पैग़म्बरी के लाइक़ नहीं समझते थे), **और** (इस पैग़म्बरी के इनकार में यहां तक पहुंच गये कि) **कहने लगे कि** (नऊ़ज़ुबिल्लाह) **यह आदमी** (मोजिज़े के बारे में) **जादूगर** (और पैग़म्बरी के दावे में) **झूटा है(04)** (और) **क्या** (यह आदमी सच्चा हो सकता है जब कि) **उसने इतने माबूदों की जगह एक ही माबूद रहने दिया** (और सब के माबूद होने का इनकार कर दिया) **सचमुच यह बहुत ही अजीब बात है(05) और** (तौहीद की बातें सुन कर) **इन काफ़िरों के सरदार** (पंचायत से उठकर लोगों से) **यह कहते हुए चले कि** (यहां से) **चलो और अपने माबूदों** (की इबादत) **पर जमे रहो** (क्योंकि एक तो) **यह** (तौहीद की दावत) **कोई मतलब की बात** (लगती है यानी इस बहाने से आप को हुकूमत की चाहत) **है(06)** (दूसरे तौहीद का दावा भी ग़लत और अजीब है क्योंकि) **हम ने तो यह** (तौहीद की) **बात** (अपने) **पहले मज़हब में नहीं सुनी, हो न हो यह** (इस आदमी की) **मन घड़त** (बात) **है(07) क्या हम सब में इसी आदमी** (में कोई ख़ास बात थी कि इसी को पैग़म्बरी मिली और इसी) **पर किताब उतारी गई** (बल्कि किसी सरदार पर उतारी जाती तो हरज न था, आगे अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि अगर किसी और पर उतारी जाती तो ऐसा नहीं कि उसका कहा मान लेते), **बल्कि** (असल बात यह है कि) **ये लोग** (ख़ुद) **मेरी वही की तरफ़ से शक** (यानी इनकार) **में हैं** (यानी पैग़म्बरी ही का इनकार करते हैं ख़ास कर इन्सान को नबी मानने के लिए तैयार नहीं, और यह इनकार भी इसलिए नहीं कि इन के पास कोई दलील है) **बल्कि** (इसकी असल वजह यह है कि) **उन्होंने अभी तक मेरे अज़ाब का मज़ा नहीं चक्खा** (वर्ना सब अक़्ल ठिकाने आजाती)(08) **क्या इन लोगों के पास आप के रब की रहमत के ख़ज़ाने हैं जो बड़ा ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **बहुत देने वाला है** (कि ये जिसको चाहें पैग़म्बरी दें जिसको चाहे न दें और जब इन्होंने पैग़म्बरी नहीं दी तो पैग़म्बर कैसे हो गया)(09) **या** (अगर सारे ख़ज़ाने क़ब्ज़े में नहीं हैं तो) **क्या आसमान और ज़मीन और जो चीज़ें उनके बीच में हैं वो** (सब) **इनके क़ब्ज़े में हैं** (कि जिसे चाहें उसे पैग़म्बरी मिलनी चाहिए अगर ऐसा है) **तो इन को चाहिए कि सीढ़ियां लगा कर** (आसमान पर) **चढ़ जाएं** (और ये ऐसा कर नहीं सकते तो जब इतना भी इनके बस में नहीं तो आसमान और ज़मीन की बातों पर उन का क्या बस चलेगा)(10) **इस जगह पर** (यानी मक्का में) **यह** (पैग़म्बर के ख़िलाफ़ लोगों का) **एक गिरोह है जो** (जल्दी ही) **मात खाजाएगा** (जैसा कि जंगे बद्र में यह ख़बर पूरी हुई)(11) **इन से पहले भी क़ौमे नूह ने और आद ने और**

फ़िरऔन ने जिस (की हुकूमत) **के खून्टे गड़े थे** (पैग़म्बरों को) **झुटलाया था**(12) **और समूद ने और क़ौमे लूत ने और ऐका वालों ने** (भी झुटलाया था, और) **वो गिरोह ये ही** (मुख़ालिफ़) **लोग हैं**(13) **उन सब ने पैग़म्बरों को झुटलाया था** (जैसे ये क़ुरैशी काफ़िर आप को झुटला रहे हैं) **इसलिए मेरा अज़ाब** (उन पर) **आकर रहा** (बस जब जुर्म एक सा है तो वैसे ही अज़ाब से क्यों बेफ़िक्र हैं)(14) **और ये लोग** (जो झुटलाए जाते हैं तो) **बस एक ज़ोर की आवाज़** (यानी क़ियामत का दूसरा सूर फूंके जाने) **के इन्तिज़ार में हैं जो बीच में रूकने का नाम न ले** (यानी लगातार हो)(15) **और ये लोग** (क़ियामत की ख़बर सुन कर पैग़म्बर को झुटलाते हुए और हंसी उड़ाते हुए) **कहते हैं कि हमारे रब** (आख़िरत में जो काफ़िरों को अज़ाब होगा उसमें से) **हमारा हिस्सा हम को हिसाब के दिन से पहले ही देदे** (मतलब यह कि क़ियामत नहीं है और अगर है तो हम को अभी अज़ाब देदे जब अज़ाब नहीं होता तो पता चला कि क़ियामत न आएगी नऊज़ुबिल्लाह)(16)

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۷﴾ اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَ
الْاِشْرَاقِ ﴿۱۸﴾ وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۱۹﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿۲۰﴾

आयत नं० 17 से 20

(ऐ पैग़म्बर) **आप इन लोगों की बातों पर सब्र कीजिए और हमारे बन्दे दाऊद को याद कीजिए जो** (इबादत में जिसमें सब्र भी दाख़िल है) **बड़ी ताक़त वाले** (और हिम्मत वाले) **थे वो बेशक अल्लाह से बहुत लौ लगाने वाले थे**(17) (और हम ने उन को ये नेमतें दी थी एक यह कि) **हम ने पहाड़ों को हुक्म कर रक्खा था कि उनके साथ** (शामिल होकर) **शाम और सुबह तस्बीह किया करें** (कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के तस्बीह के ये वक़्त थे)(18) **और** (इसी तरह) **परिन्दों को भी** (ये ही हुक्म दे रक्खा था) **जो कि** (तस्बीह के वक़्त उन के पास) **जमा हो जाते थे,** (और पहाड़ और परिन्दे वग़ैरह) **सब** (उनके साथ मिल कर) **अल्लाह का ख़ूब ज़िक्र करते**(19) **और** (दूसरी नेमत यह कि) **हम ने उन की हुकूमत को बहुत ताक़त दी थी और** (तीसरी नेमत यह कि) **हम ने उन को हिकमत** (यानी पैग़म्बरी) **और फ़ैसला कर देने वाली बात का सलीक़ा दिया था**(20)।

नोटः- एक हदीस में है कि "अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा नमाज़ दाऊद

(अलैहिस्सलाम) की है और सब से ज़्यादा पसन्दीदा रोज़ा दाऊद (अलैहिस्सलाम) का है वो आधी रात सोते एक तिहाई रात इबादत करते और फिर रात के छटे हिस्से में सो जाते थे। और एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते थे जब दुशमन से उनका मुक़ाबिला हो जाता तो मैदान न छोड़ते थे और बेशक अल्लाह की तरफ़ बहुत लौ लगाने वाले थे"। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿۲۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ
بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿۲۲﴾ اِنَّ هٰذَآ اَخِىْ ۗ لَهٗ تِسْعٌ وَّ
تِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِىَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۗ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِىْ فِى الْخِطَابِ ﴿۲۳﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
اِلٰى نِعَاجِهٖ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِىْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا
هُمْ ۭ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّاَنَابَ ﴿۲۴﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۭ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ
حُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۲۵﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 21 से 26

और क्या आप को उन के मुक़दमे वालों की ख़बर भी पहुंची है (जो दाऊद अलैहिस्सलाम के पास मुक़दमा लाए), **जब कि वो लोग** (दाऊद अलैहिस्सलाम की) **इबादत गाह की दीवार कूद कर अन्दर घुस आए** (क्योंकि दरवाज़े से पहरेदारो ने इसलिए नहीं आने दिया कि वो वक़्त आप की इबादत का था मुक़दमों के फ़ैसले का नहीं)(21) **जब वो दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **के पास आए तो दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **उन** (के इस तरह आने) **से घबरा गये** (कि कहीं ये लोग दुशमन न हों जो क़त्ल के इरादे से इस तरह अकेले में आ घुसे हों) **वो लोग कहने लगे कि आप डरें नहीं हम** (झगड़े के) **दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर** (कुछ) **ज़्यादती की है** (उसके फ़ैसले के लिए हम आए हैं चूंकि पहरेदारों ने दरवाज़े से नहीं आने दिया इसलिए इस तरह आने की ग़लती की) **सो हमारे बीच में इन्साफ़ से फ़ैसला कर दीजिए और बेइन्साफ़ी न कीजिए और हम को** (मुआमले की) **सीधी राह बता दीजिए**(22) (और फिर एक आदमी बोला कि मुक़दमे की सूरत यह है कि) **यह आदमी मेरा** (दीनी) **भाई है** (और) **इसके पास निन्नियानवे** (99) **दुम्बियां हैं और मेरे पास** (कुल)

एक दुम्बी है, अब यह कहता है कि वो भी मुझ को देदो और बात चीत में मुझ को दबाता (है और मेरी बात को मुंह ज़ोरी से चलने नहीं देता) **है(23) दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा यह जो तेरी दुम्बी अपनी दुम्बियों में मिलाने को मांगता है तो सचमुच तुझ पर ज़ुल्म करता है, और अक्सर साझी** (लोगों की आदत है कि) **एक दूसरे पर** (यूंही) **ज़्यादती किया करते हैं सिवाए उनके जो ईमान वाले हैं और नेक काम करते हैं और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं** (और यह बात आपने उसकी तसल्ली के लिए कही जिस पर ज़्यादती हो रही थी), **और दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **को ध्यान आया कि** (इस मुक़दमे को इस तरह पेश करके) **हम ने उन को आज़माया है इसलिए उन्होंने अपने रब के सामने तौबा की और सजदे में गिर गये और** (अल्लाह से) **लौ लगाई(24) सो हम ने उन को उस** (बात) **में मुआफ़ कर दिया, और हमारे यहां उनके लिए** (ख़ास) **नज़दीकी और** (ऊंचे दर्जे की) **नेक अन्जामी** (यानी जन्नत का ऊंचा दर्जा) **है(25) ऐ दाऊद हम ने तुम को ज़मीन पर हाकिम बनाया है इसलिए** (जिस तरह अब तक करते रहे इसी तरह आगे भी) **लोगों में इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करते रहना और** (जिस तरह अब तक कभी मनमर्ज़ी पर नहीं चले इसी तरह आगे भी) **मन मर्ज़ी पर मत चलना कि** (अगर ऐसा करोगे तो) **वो अल्लाह के रास्ते से तुम को भटका देगी,** (और) **जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए सख़्त अज़ाब होगा इस वजह से कि वो हिसाब के दिन को भूले रहे(26)**

नोटः- इस क़िस्से में दाऊद अलैहिस्सलाम का क्या इम्तिहान लिया गया यह बात न क़ुरआन में साफ़ की गई न हदीस में इसलिए इस बारे में अपनी तरफ़ से कुछ कहना ठीक नहीं बस इतना समझ लेना काफ़ी है कि वो हर घड़ी तौबा करने वाले और अल्लाह से लौ लगाने वाले थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ؕ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ۟ؕ ٢٧
اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؗ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ٢٨ كِتٰبٌ
اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ٢٩

आयत नं० 27 से 29

और हम ने आसमान और ज़मीन को और जो चीज़ें उनके बीच में मौजूद हैं उन को

बेकार ही पैदा नहीं किया (बल्कि बहुत सी हिकमतें और भेद छुपे हैं जिन में सब से बड़ी हिकमत यह है कि इन से तौहीद और आख़रत साबित होती है), **यह** (यानी इनको हिकमत से ख़ाली समझना) **उन लोगों की सोच है जो काफ़िर हैं** (क्योंकि जब तौहीद और आख़रत के अन्जाम का इनकार किया तो दुनिया की पैदाइश की सब से बड़ी हिकमत का इनकार कर दिया) **सो काफ़िरों के लिए** (आख़रत में) **बड़ी ख़राबी है यानी दोज़ख़** (क्योंकि वो तौहीद का इनकार करते थे)(27) **हां** (एक ग़लती उनकी यह है कि क़ियामत का इनकार करते हैं जब कि क़ियामत में यह हिकमत है कि नेकों को इनआम और फ़सादियों को सज़ा मिले उनके इनकार का मतलब यह है कि सब बराबर रहें) **तो क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उन की बराबर कर दें जो** (कुफ़्र वग़ैरह करके) **दुनिया में फ़साद करते फिरते हैं, या** (यह कि) **हम परहेज़गारों को बदकारों की बराबर कर देंगे** (यानी ऐसा नहीं हो सकता इसलिए क़ियामत ज़रूर आएगी ताकि नेकों को इनआम और बदकारों को सज़ा मिले इसी तरह तौहीद व आख़रत के साथ पैग़म्बरी पर ईमान रखना भी ज़रूरी है)(28) **यह** (क़ुरआन) **एक बरकत वाली किताब है जिसको हम ने आप पर इसलिए उतारा है ताकि लोग इसकी आयतों में सोचें और ताकि** (सोच कर इसकी सच्चाई मालूम करके इससे) **समझ रखने वाले नसीहत हासिल** (करें इस पर अमल) **करें**(29)।

नोटः- नेकों और बुरों का बराबर न होना आख़रत के हिसाब से है दुनिया में अच्छों और बुरों के इन्सानी हक़ों का बराबर होना अलग बात है।

وَ وَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿۳۰﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿۳۱﴾ فَقَالَ اِنِّيْۤ
اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿۳۲﴾ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَ الْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾

आयत नं० 30 से 33

और हम ने दाऊद (अलैहिस्सलाम) **को सुलेमान** (अलैहिस्सलाम जैसा बेटा) **दिया,** (वो) **बहुत अच्छे बन्दे थे कि** (अल्लाह की तरफ़) **बहुत लौ लगाने वाले थे**(30) (उनका वो क़िस्सा याद कीजिए) **जब कि शाम के वक़्त उनके सामने अच्छी नस्ल के घोड़े लाए गये** (जो जिहाद के लिए रक्खे जाते थे उनके मुआएने में इतनी देर हो गई कि दिन छुप गया और कोई इबादत छुट गई और रौब की वजह से कोई ख़ादिम भी याद न दिला सका)(31) **तो** (जब ध्यान आया तो) **कहने लगे कि**

(अफ़सोस) **मैं इस माल की मुहब्बत में** (लग कर) **अपने रब की याद भुला बैठा** (यानी नमाज़ छूट गई) **यहां तक कि सूरज** (पच्छिम के) **पर्दे में छुप गया**(32) (फिर ख़ादिमों को हुक्म दिया कि) **उन घोड़ों को ज़रा फिर तो मेरे सामने लाओ** (बस वो लाए गये) **तो उन्होंने उन** (घोड़ों) **की पिन्डलियों और गर्दनों पर** (तलवार से) **हाथ साफ़ करना शुरू किया** (यानी उन को ज़बह कर दिया)(33)

नोटः- उन घोड़ों के सुलेमान अलैहिस्सलाम मालिक थे और उन की शरीअत में गाय बकरी व ऊंट की तरह घोड़ों की कुर्बानी भी जाइज़ थी इसलिए उन्होंने इबादत छूटने की भूल को सुधारने के लिए उनको अल्लाह की राह में कुर्बान कर दिया। किसी नेकी की आदत डालने के लिए अपने नफ़्स पर ऐसी सज़ाएं ठहरा देना नफ़्स के सुधार का एक नुस्ख़ा है।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ
مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿۳۶﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ
وَّغَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿۳۸﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾ وَاِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾

आयत नं० 34 से 40

और हम ने सुलेमान (अलैहिस्सलाम) **को** (एक और तरह से भी) **आज़माया और हम ने उनकी कुर्सी पर एक धड़ लाकर डाल दिया फिर उन्होंने** (अल्लाह की तरफ़) **लौ लगाई**(34) (उन्होंने अल्लाह से) **दुआ मांगी कि या रब मेरे मेरा** (पहला) **कुसूर मुआफ़ कर दे और** (आगे के लिए) **मुझ को ऐसी हुकूमत दे कि मेरे सिवा** (मेरे ज़माने में) **किसी को हासिल न हो** (और) **आप बड़े देने वाले हैं** (आप को इस दुआ का कुबूल कर लेना कुछ मुश्किल नहीं)(35) **सो** (हम ने उनकी दुआ कुबूल की और उनकी ख़ता भी मुआफ़ कर दी और) **हम ने हवा को उन के ताबे कर दिया कि वो उनके हुक्म से जहां वो** (जाना) **चाहते नर्मी से चलती** (कि इससे घोड़ों की ज़रूरत न रही)(36) **और जिन्नात को भी उनके ताबे कर दिया यानी इमारत बनाने वालों को भी और** (मोती निकालने के लिए दरिया में) **डुबकी लगाने वालों को भी**(37) **और दूसरे जिन्नात को भी जो ज़ंजीरों में बन्धे रहते थे** (जो काम से जी चुराते होंगे उनके लिए यह सज़ा होगी)(38) **यह**

(सामान देकर उन से कहा गया कि यह) **हमारा इनआम है सो चाहे** (किसी को) **दो या न दो तुम से कुछ हिसाब न लिया जाएगा** (यानी जितना समान तुम को दिया गया है तुम को मालिक बना दिया है दूसरे बादशाहों की तरह सिर्फ़ देखभाल व इन्तिज़ाम की ज़िम्मेदारी नहीं)(39) **और** (सिर्फ़ यह ही नहीं) **उनके लिए हमारे यहां** (ख़ास) **नज़दीकी और** (ऊंचे दर्जे की) **नेक अन्जामी है** (जिसका फल आख़रत में दिखाई देगा)(40)।

नोटः- वो धड़ क्या था और वो इम्तिहान कैसा था यह राज़ के पर्दे में है बस इतना जानना काफ़ी है कि वो हर इम्तिहान में अल्लाह से लौ लगाने वाले थे।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَاۤ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾ اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ
بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَخُذْ بِيَدِكَ
ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

आयत नं० 41 से 44

और आप हमारे बन्दे अय्यूब (अलैहिस्सलाम) **को याद कीजिए, जब कि उन्होंने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझको दुख और तकलीफ़ पहुंचाई** (है रिवायत में है कि हज़रत अय्यूब की बीमारी के ज़माने में एक बार शैतान एक हकीम की सूरत में हज़रत की बीवी को मिला उनके इलाज के लिए उसने कहा कि इनको सेहत हो जाए तो यह कह देना कि तूने इनको शिफ़ा दी यानी अच्छा कर दिया मैं और कुछ इनआम नहीं चाहता। उन्होंने अय्यूब अलैहिस्सलाम से बताया हज़रत ने फ़रमाया कि भली मानस वो तो शैतान था। मैं एहद करता हूं कि अगर अल्लाह तआला ने मुझ को शिफ़ा देदी तो मैं तुझ को सौ क़मचियां मारूंगा मेरी बीमारी से शैतान की इतनी हिम्मत हो गई कि मेरी बीवी से ऐसी बात कहलवाना चाहता है जो शिर्क जैसी) **है**(41) (बस इस बात का उनको बहुत दुख हुआ और उन्होंने और ज़्यादा गिड़गिड़ाकर दुआ की तो उनकी दुआ क़ुबूल कर ली और हुक्म दिया कि) **अपना पैर** (ज़मीन पर) **मारो** (बस उन्होंने ज़मीन पर पैर मारा तो वहां से पानी निकल कर बहने लगा बस हमने उन से कहा) **यह** (तुम्हारे लिए) **ठन्डा पानी है नहाने के लिए** (भी) **और पीने के लिए** (भी यानी इसमें नहाओ और पियो बस नहाए और पिया भी और बिल्कुल अच्छे हो गये)(42) **और हमने उनको उनके घर वाले दे दिये और उनके साथ** (गिनती में) **उतने ही और भी**

(दिये) **अपनी ख़ास रहमत की वजह से और समझदारों के लिए यादगार बनाने के वास्ते** (यानी समझदार याद रक्खें कि अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को कैसा बदला देते हैं)(43) **और** (अब अय्यूब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़सम पूरी करने का इरादा किया मगर चूंकि उनकी बीवी ने उनकी ख़िदमत बहुत की थी और उन्होंने कोई गुनाह भी नहीं किया था इसलिए अल्लाह तआ़ला ने अपनी रहमत से उनके लिए कमी कर दी और फ़रमाया कि ऐ अय्यूब) **तुम अपने हाथ में एक मुट्ठा सींकों का लो** (जिसमें सौ सींके हों) **और** (अपनी बीवी को) **उससे मार लो और** (अपनी) **क़सम न तोड़ो** (जैसा कि ऐसा ही हुआ, आगे अय्यूब अलैहिस्सलाम की तारीफ़ है कि) **बेशक हम ने उन को** (बड़ा) **सब्र करने वाला पाया, अच्छे बन्दे थे, कि** (अल्लाह की तरफ़) **बहुत लौ लगाने वाले थे(44)।**

नोटः- एक हदीस में है कि "जो आदमी एक क़सम खा ले फिर बाद में उसकी राय यह हो कि इस क़सम के ख़िलाफ़ करना ज़्यादा बेहतर है तो उसे चाहिए कि वो ही काम करे जो बेहतर हो और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करे"। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

وَ اذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَ الْاَبْصَارِ ﴿۴۵﴾ اِنَّآ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى
الدَّارِ ﴿۴۶﴾ وَ اِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿۴۷﴾ وَ اذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَ ذَا الْكِفْلِ ؕ وَ كُلٌّ مِّنَ
الْاَخْيَارِ ﴿۴۸﴾ هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۹﴾ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿۵۰﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا
يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّ شَرَابٍ ﴿۵۱﴾ وَ عِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿۵۲﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ
الْحِسَابِ ﴿۵۳﴾ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿۵۴﴾ هٰذَا ؕ وَ اِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿۵۵﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ
الْمِهَادُ ﴿۵۶﴾ هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّ غَسَّاقٌ ﴿۵۷﴾ وَّ اٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖٓ اَزْوَاجٌ ﴿۵۸﴾ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا
بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿۵۹﴾ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۫ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا
رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿۶۱﴾ وَ قَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ
الْاَشْرَارِ ﴿۶۲﴾ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿۶۳﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿۶۴﴾

आयत नं० 45 से 64

और हमारे बन्दों इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब (अलैहिमुस्सलाम) **को याद कीजिए जो हाथों** (से नेक काम करने) **वाले और आंखों** (से देखने वाले यानी दीन की बातों में सोच विचार करने) **वाले थे(45)** (और) **हमने उनको एक ख़ास बात के लिए चुन लिया था कि वो आख़रत** (के घर) **की याद है(46) और वो** (हज़रात) **हमारे यहां चुने हुए और सबसे अच्छे लोगों में से हैं(47) और इस्माईल और अलयसा और ज़ुलकिफ़्ल को भी याद कीजिए, और ये सब भी सबसे अच्छे लोगों में से हैं(48) एक नसीहत की बात तो यह हो चुकी** (इससे मुराद पैग़म्बरों के क़िस्से हैं कि उनमें काफ़िरों के लिए दीन की तबलीग़ और मोमिनों के लिए नेक कामों की तालीम है)**, और** (दूसरी बात आख़रत के अन्जाम के बारे में है कि) **परहेज़गारों के लिए** (आख़रत में) **अच्छा ठिकाना है(49) यानी सदा रहने की जन्नतें जिनके दरवाज़े उनके लिए** (पहले ही से) **खुले हुए होंगे(50) वो उन जन्नतों में तकिया लगाए बैठे होंगे** (और) **वहां** (जन्नत के ख़ादिमों से) **बहुत से फल और पीने की चीज़ें मंगवाएंगे(51) और उनके पास नीची निगाह वाली हम उम्र औरतें** (यानी हूरें) **होंगी(52) यह** (जिस का ज़िक्र हुआ ऐ मुसलमानो) **वो** (नेमत) **है जिसका तुम से हिसाब का दिन आने पर वादा किया जाता है(53) बेशक यह हमारी नेमत है जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं(54) यह बात तो हो चुकी** (जो परहेज़गारों के बारे में थी) **और** (आगे काफ़िरों के बारे में बयान है कि) **सरकशों के लिए** (यानी जो कुफ़्र सिखाने वाले थे उन के लिए) **बुरा ठिकाना है(55) यानी दोज़ख़ उसमें वो दाख़िल होंगे बस** (वो) **बहुत ही बुरी जगह है(56) यह खौलता हुआ पानी और मवाद** (मौजूद) **है वो उस का मज़ा चक्खेंगे(57) और भी इस क़िस्म की** (नागवार और दुख देने वाली) **तरह-तरह की चीज़ें** (मौजूद हैं उनको भी चक्खेंगे और जो उनके पीछे चलने वाले थे उनके लिए भी यानी बड़े और छोटे दोनों के लिए ये ही चीज़ें) **हैं(58) और** (पहले बड़े दोज़ख़ में जाएंगे और फिर पीछे चलने वाले आएंगे तो बड़े आपस में कहेंगे कि लो) **यह एक और गिरोह आ गया जो तुम्हारे साथ** (अज़ाब में साझी होने के लिए जहन्नम में) **घुस रहे हैं उन पर ख़ुदा की मार ये भी दोज़ख़ ही में आ रहे हैं(59) वो** (आने वाले अपने बड़ों से) **कहेंगे बल्कि तुम्हारे ही ऊपर ख़ुदा की मार** (क्योंकि) **तुम ही तो यह** (मुसीबत) **हमारे आगे लाए** (क्योंकि तुम ही ने हम को बहकाया था) **सो जहन्नम बहुत ही बुरा ठिकाना है(60)** (फिर ये पीछे चलने वाले अल्लाह से) **दुआ करेंगे कि या रब हमारे जो आदमी इस** (मुसीबत) **को हमारे आगे लाया हो उस को दोज़ख़ में दो गुना अज़ाब दीजिए(61) और वो लोग** (आपस में) **कहेंगे कि क्या बात**

है हम उन लोगों को (दोज़ख़ में) **नहीं देखते जिन को हम बुरे लोगों में गिना करते थे** (यानी मुसलमानों को बुरा और गिरा हुआ समझा करते थे वो क्यों दिखाई नहीं देते)(62) **क्या हम ने** (नाहक़्) **मज़ाक़् उड़ाया था** (और वो इस क़ाबिल न थे और जहन्नम में नहीं आए) **या** (यह कि जहन्नम में मौजूद हैं मगर) **उन** (के देखने) **से हमारी आंखें चूक रही हैं** (मतलब यह कि अज़ाब के साथ एक और पछतावा होगा कि जिन लोगों को हम बुरा समझते थे वो अज़ाब से बच गये)(63) **यह बात यानी दोज़ख़ी लोगों का आपस में लड़न झगड़ना बिल्कुल सच्ची बात है** (कि ज़रूर होकर रहेगी)(64)।

नोटः- ऊपर आयत में जन्नती लोगों की हम उम्र औरतों का ज़िक्र किया गया है इससे मालूम हुआ कि रिशते में शौहर बीवी की उम्र का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इससे आपस में लगाव पैदा होता है और रिशता ज़्यादा ख़ुशगवार और टिकाऊ हो जाता है।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّ مَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿۶۵﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ
الْغَفَّارُ ﴿۶۶﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿۶۷﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿۶۸﴾ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ
يَخْتَصِمُوْنَ ﴿۶۹﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷۰﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ
طِيْنٍ ﴿۷۱﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿۷۲﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿۷۳﴾ اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ
اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿۷۵﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۷۶﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا
فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿۷۷﴾ وَّ اِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۷۸﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۷۹﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿۸۱﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۲﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ
الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۸۳﴾ قَالَ فَالْحَقُّ ۡ وَ الْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿۸۴﴾ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَ مِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۸۵﴾ قُلْ مَآ
اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّ مَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿۸۶﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۷﴾ وَ لَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿۸۸﴾

आयत नं० 65 से 88

आप कह दीजिए कि (तुम जो पैग़म्बरी और तौहीद का इनकार करते हो तो तुम्हारा ही

नुक़सान है मेरा कुछ नुक़सान नहीं क्योंकि) **मैं तो** (तुम को सिर्फ़ अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला** (पैग़म्बर) **हूं और सिवाए अल्लाह अकेले ज़ोर आवर के कोई इबादत के लाइक़ नहीं है**(65) **वो रब है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो उनके बीच में हैं** (और वो) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और गुनाहों का) **बड़ा बख़्शने वाला है**(66) (ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए यह** (यानी अल्लाह तआ़ला का मुझ को तौहीद और शरीअत के हुक्मों को सिखाने के लिए पैग़म्बर बनाना) **एक बड़ी ख़बर है**(67) **जिस** (का तुम को बड़ा ध्यान करना चाहिए था मगर अफ़सोस कि उस) **से तुम** (बिल्कुल ही) **मुंह मोड़े हुए हो**(68) (आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी साबित करने की एक दलील है वो यह कि) **मुझ को ऊपर की दुनिया** (यानी आसमानों की बहस व बातों) **की** (किसी वास्ते से) **कुछ ख़बर न थी जब कि वो** (आदम की पैदाइश के बारे में) **बात कर रहे थे** (अब मैं जो उस बात चीत का क़िस्सा सुनाता हूं तो सोचने की बात है कि मुझे यह क़िस्सा कहां से पता चला, मैंने अपनी आंख से तो उसे देखा नहीं किताब वालों से भी मेरा ऐसा मेल जोल नहीं जो उन से मालूम कर लेता, यक़ीन की बात है कि मुझे इल्म वही के वास्ते से ही हासिल हुआ है बस मेरी पैग़म्बरी साबित हो गई)(69) **मेरे पास** (जो) **वही** (आती है जिससे आसमानों की बातें भी मालूम होती हैं तो) **सिर्फ़ इस वजह से आती है कि मैं** (अल्लाह की तरफ़ से) **ख़बरदार करने वाला** (बनाकर भेजा गया हूं यानी चूंकि मुझ को पैग़म्बरी मिली है इसलिए वही आती है बस ज़रूरी है कि तुम तस्दीक़ करो कि मैं पैग़म्बर) **हूं**(70) (और आसमानों की वो बात जिस का ऊपर ज़िक्र हुआ है उस वक़्त हुई थी) **जब कि आप के रब ने फ़रिशतों से फ़रमाया कि मैं गारे से एक इन्सान** (के पुतले) **को बनाने वाला हूं**(71) **तो मैं जब उस** (के जिस्म) **को पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी** (तरफ़ से) **जान डाल दूं तो तुम सब उसके आगे सजदे में गिर जाना**(72) **तो** (जब अल्लाह तआ़ला ने उस को बना लिया तो) **सारे के सारे फ़रिशतों ने** (उस को यानी आदम अलैहिस्सलाम को) **सजदा किया**(73) **सिवाए इबलीस के, कि वो घमन्ड में आ गया और काफ़िरों में से हो गया**(74) **अल्लाह तआ़ला ने कहा कि ऐ इबलीस जिस चीज़ को मैं ने अपने हाथों से बनाया** (यानी जिस चीज़ को वजूद में लाने के लिए अल्लाह की ख़ास महरबानी हुई फिर उसके सामने सजदा करने का हुक्म दिया गया तो) **उसको सजदा करने से तुझे किस चीज़ ने रोका, क्या तू घमन्ड में आ गया** (और असल में बड़ा नहीं है) **या यह कि तू** (असल में ऐसे) **बड़े दर्जे वालों में है** (जिसको सजदे का हुक्म करना ही सही नहीं)(75) **कहने लगा कि** (दूसरी बात सही है यानी) **मैं आदम से बेहतर हूं,** (क्योंकि) **आप ने मुझ को आग से पैदा किया है और इस**

(आदम) **को मिट्टी से पैदा किया** (है बस मुझ को इसके सामने सजदा करने का हुक्म देना सही नहीं) **है**(76) (अल्लाह तआला ने) **कहा तो** (अच्छा फिर) **आसमान से निकल क्योंकि बेशक तू** (इस हरकत से) **मरदूद हो गया**(77) **और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी क़ियामत के दिन तक** (और उसके बाद रहमत का सवाल ही नहीं)(78) **कहने लगा** (कि अगर मुझ को आदम की वजह से मरदूद किया है) **तो फिर मुझ को** (जीने की) **मोहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक** (ताकि इन से और इनकी औलाद से ख़ूब बदला लूं)(79) **कहा** (अल्लाह तआला ने जब तू मोहलत मांगता है) **तो** (जा) **तुझ को मोहलत दी गई**(80) **एक तय दिन तक**(81) **कहने लगा** (जब मुझ को मोहलत मिल गई) **तो** (मुझ को भी) **आपकी** (ही) **इज़्ज़त की क़सम** (है) **मैं उन सब को बहकाऊंगा**(82) **सिवाए आप के उन बन्दों के जो उन में चुन लिये गये हैं** (यानी आप ने उन को मेरे असर से बचाए रक्खा)(83) **कहा** (अल्लाह तआला ने) **कि मैं सच कहता हूं और मैं तो** (सदा) **सच ही कहा करता हूं**(84) **कि मैं तुझ से और जो उन में तेरा साथ दे उन सब से जहन्नम को भर दूंगा**(85) (ऐ पैग़म्बर) **आप** (लोगों से) **कह दीजिए कि मैं तुम से इस** (क़ुरआन की तबलीग़) **पर न कुछ बदला चाहता हूं और न मैं बनावट करने वालों में से हूं** (कि ऐसे ही कुछ बनाकर क़ुरआन कह दिया हो और पैग़म्बरी का झूटा दावा किया हो यानी अगर झूट बोलता तो दुनिया का कुछ नफ़ा चाहा होता सो ये दोनों बात नहीं)(86) **यह क़ुरआन तो** (अल्लाह का कलाम और) **दुनिया जहान वालों के लिए बस एक नसीहत** (है जिसकी तबलीग़ के लिए मुझ को पैग़म्बरी मिली है और जिसमें सरासर तुम्हारा ही नफ़ा) **है**(87) **और** (अगर सच्चाई जानने के बावजूद भी तुम नहीं मानते तो) **थोड़े दिनों बाद तुम को इस का हाल मालूम हो जाएगा** (यानी मरने के साथ ही असलीयत खुल जाएगी कि यह हक़ था और इसका इनकार ग़लत था मगर उस वक़्त मालूम होने से कोई फ़ाइदा न होगा)(88)।

नोटः- ऊपर इबलीस के क़िस्से से यह भी मालूम हुआ कि जिस तरह घमन्ड और हसद की वजह से उसने हज़रत आदम को सजदा करने से इनकार कर दिया था उसी तरह अरब के मुशरिक लोग भी हसद और घमन्ड ही की वजह से पैग़म्बर की बात नहीं मान रहे हैं और जो अन्जाम इबलीस का हुआ वो ही उन का भी होना है। (तफ़सीर कबीर)

39-सूरत-ज़ुमर

इस मक्की सूरत में '8' रूकू और '75' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝٢
اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ؕ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ؕ اِنَّ اللّٰهَ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝٣ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ
وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ
الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْغَفَّارُ ۝٥ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ
يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

यह किताब अल्लाह की तरफ़ से उतारी गई है जो ज़बरदस्त (कुदरत वाला) **हिकमत वाला है(01)** (ऐ पैग़म्बर) **हम ने हक़ के साथ इस किताब को आप की तरफ़ उतारा है सो आप** (कुरआन में बताए तरीक़े से) **ख़ालिस ऐतक़ाद करके अल्लाह की इबादत करते रहिए** (जैसा अब तक करते रहे हैं और जब आप पर भी वाजिब है तो औरों पर तो क्यों वाजिब नहीं होगा)**(02) याद रक्खो** (ऐ लोगों) **इबादत** (जो कि शिर्क व दिखावे से) **ख़ालिस** (हो) **अल्लाह ही के लिए है, और जिन लोगों ने** (ख़ालिस इबादत को छोड़ कर) **अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना लिए हैं,** (और कहते हैं) **कि हम तो इनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि ये हमें अल्लाह का नज़दीकी बना दें** (यानी हमारी ज़रूरतों या इबादत को अल्लाह के सामने पेश कर दें जैसे दुनिया में बादशाहों के वज़ीर इस काम के होते हैं), **तो उनके** (और ईमान वालों के) **आपसी झगड़े का**

(क़ियामत के दिन) **अल्लाह तआ़ला** (खुला) **फ़ैसला कर देगा** (कि तौहीद वालों को जन्नत में और शिर्क करने वालों को दोज़ख़ में दाख़िल कर देगा यानी उन लोगों के न मानने पर आप ग़म न करें उन का फ़ैसला वहां होगा, और इसका भी अचम्भा न करें कि सबूतों के बावजूद ये हक़ पर नहीं आते क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी को राह पर नहीं लाता जो** (ज़बान का) **झूटा और** (ऐतक़ाद से) **काफ़िर हो** (यानी मुंह से कुफ़्र की बातें बोलता हो और दिल से कुफ़्र के अक़ीदे पर जमा हो तो उसकी हटधर्मी की वजह से अल्लाह तआ़ला भी उसको हिदायत की तौफ़ीक़ नहीं देता)**(03) अगर** (मान लो) **अल्लाह तआ़ला किसी को औलाद बनाने का इरादा करता** (जैसा कि मुशरिक लोग फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहते थे) **तो** (चूंकि अल्लाह के सिवा सब मख़लूक़ हैं इसलिए) **ज़रूर अपनी मख़्लूक़** (ही) **में से जिस को चाहता** (इस काम के लिए) **चुन लेता** (और वो दूसरी जिन्स से होता जो ऐब की बात है और) **वो** (ऐबों से) **पाक** (है तो उसके औलाद बताना ग़लत) **है,** (तो साबित हो गया कि) **वो अल्लाह एक है** (कि उस का कोई साझी नहीं और) **ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला है कि उस जैसा कोई नहीं) **है(04) उसने ज़मीन और आसमान को हिकमत से पैदा किया वो रात** (के अन्धेरे) **को दिन** (की रौशनी) **पर लपेट देता है** (जिससे दिन छुप जाता है और रात आजाती है) **और दिन** (की रौशनी) **को** (रात के अन्धेरे) **पर लपेट देता है** (जिससे रात ग़ाइब और दिन आ जाता है) **और उसने सूरज और चान्द को काम में लगा रक्खा है, कि** (उनमें) **हर एक तय वक़्त तक चलता रहेगा, याद रक्खो कि** (इन दलीलों के बाद भी अल्लाह को एक मानने से इनकार पर अज़ाब का ख़तरा है क्योंकि) **वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला है लेकिन अगर कोई तौबा कर ले तो) **बड़ा बख़्शने वाला** (भी) **है(05) उसने तुम लोगों को एक जान** (यानी आदम अलैहिस्सलाम) **से पैदा किया** (कि पहले वो अकेला जिस्म पैदा हुआ) **फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया** (यानी हव्वा को पैदा किया फिर उन से सारे इन्सान फैला दिये) **और तुम्हारे** (नफ़े के लिए) **चौपाए जानवरों में आठ जोड़ें पैदा किये** (ख़ास कर उन आठ का ज़िक्र इसलिए कि ये ही ज़्यादा काम में आते हैं)**, वो तुम को मांओं के पेट में एक हालत के बाद दूसरी हालत पर** (और दूसरी के बाद तीसरी हालत पर इसी तरह हालतों पर गुज़ारते हुए) **बनाता है** (और यह बनाना) **तीन अन्धेरों में** (होता है, एक अन्धेरा पेट का दूसरा बच्चे दानी का तीसरा उस झिल्ली का जिसमें बच्चा होता है और इस तरह बनाना उसके इल्म और क़ुदरत के कमाल की दलील है)**, यह है अल्लाह तुम्हारा रब** (जिसकी ख़ूबियां अभी तुमने सुनीं) **उसी की हुकूमत है, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं तो** (इन दलीलों के बाद) **तुम कहां** (दीन से) **फिरे चले जा रहे हो** (बल्कि ज़रूरी है कि एक अल्लाह को

मानो और शिर्क छोड़ दो)(06)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला किसी ऐसी चीज़ को कु़बूल नहीं करते जिसमें किसी ग़ैर को शरीक किया गया हो। (क़ुरतबी)

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۖ وَلَا يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۖ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ
أُخْرَىٰ ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾ وَإِذَا مَسَّ
الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ
أَنْدَادًا لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۚ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ﴿٨﴾ أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ آنَاءَ اللَّيْلِ
سَاجِدًا وَقَائِمًا يَحْذَرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو رَحْمَةَ رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ
إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾ قُلْ يَا عِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ
وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٠﴾

आयत नं० 07 से 10

(ऐ लोगो तुम ने कुफ़्र व शिर्क की बुराई सुन ली उसके बाद) **अगर तुम कुफ़्र** (व शिर्क) **करोगे तो अल्लाह तआ़ला** (का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि वो) **तुम्हारा** (और तुम्हारी इबादत का) **ज़रूरत मन्द नहीं** (कि तुम्हारे इबादत न करने और तौहीद न अपनाने से कुछ उसको नुक़सान पहुंचे), **और** (यह बात ज़रूर है कि) **वो अपने बन्दों के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता** (क्योंकि कुफ़्र से बन्दों को नुक़सान पहुंचता है), **और अगर तुम शुक्र करोगे** (जिसकी पहली सीढ़ी ईमान है) **तो** (उस का कोई नफ़ा नहीं मगर चूंकि तुम्हारा नफ़ा है इसलिए वो) **इसको तुम्हारे लिए पसन्द करता है, और** (हमारे यहां क़ानून है कि) **कोई किसी** (के गुनाह) **का बोझ नहीं उठाता** (इसलिए कुफ़्र करके यह भी न समझना कि हमारा कुफ़्र दूसरे के आमाल नामे में किसी वजह से लिखा जाएगा चाहे वो इस बात की ज़िम्मेदारी लेले), **फिर अपने रब के पास तुम को लौट कर जाना होगा तो वो तुम्हारे सब किये काम तुम को बता** (देगा और सज़ा) **देगा,** (बस यह गुमान भी ग़लत है कि उनके कामों की पेशी का वक़्त न आएगा, और यह भी न गुमान मत करना कि हमारे कुफ़्र की शायद उसको ख़बर न हो बल्कि)

वो दिलों तक की बातों को जानने वाला है(07) और (मुशरिक) **आदमी** (की हालत यह है कि उस) **को जब कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो अपने** (सच्चे) **रब को उसी की तरफ़ लौ लगा कर पुकारने लगता है** (और सब माबूदों को भूल जाता है) **फिर जब अल्लाह तआ़ला उसको अपने पास से** (अमन आसानी की) **नेमत देदेता है तो जिस** (तकलीफ़ को दूर करने) **के लिए पहले से** (अल्लाह को) **पुकार रहा था उस को भूल जाता** (है और बेपरवा हो जाता) **है और अल्लाह के साझी बनाने लगता है जिस का असर** (अपने गुमराह होने के अलावा) **यह होता है कि अल्लाह तआ़ला के रास्ते से दूसरों को** (भी) **भटकाता है** (और अगर उस मुसीबत को याद रखता तो तौहीद पर जमा रहता), **आप** (ऐसे आदमी से) **कह दीजिए कि अपने कुफ़्र की बहार थोड़े दिनों और लूट ले** (फिर अन्जाम कार) **तू दोज़ख़ियों में से होने वाला है(08)** (आगे अकेले अल्लाह को मानने वालों की तारीफ़ व ख़ुशख़बरी है यानी) **भला जो आदमी रात की घड़ियों में** (जो आराम का वक़्त होता है) **सजदा व क़ियाम** (यानी नमाज़) **की हालत में इबादत कर रहा हो** (यह तो उसकी खुली हालत है और दिल का हाल यह हो कि) **आख़रत से डर रहा हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद** (भी) **कर रहा हो** (क्या ऐसा आदमी और वो शिर्क करने वाला बराबर हो सकते हैं कभी नहीं), **आप** (दूसरी तरह) **कहिए कि जानने वाले और न जानने वाले** (कहीं) **बराबर होते हैं** (यानी जानने वाले नेक काम करते हैं और अच्छे व बुरे का अन्जाम बराबर नहीं हो सकता, लेकिन) **वो ही लोग नसीहत मानते हैं जो समझ बूझ रखने वाले हैं(09)** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (मोमिनों को मेरी तरफ़ से) **कह दीजिए कि ऐ मेरे ईमान वाले बन्दों तुम अपने रब से डरते** (रहो यानी पाबन्दी से इबादत करते रहो गुनाहों से बचते) **रहो,** (कि) **जो लोग इस दुनिया में नेकी करते हैं उनके लिए नेक बदला है** (आख़रत में तो ज़रूर और दुनिया में भी दिल का चैन तो ज़रूर और कभी सब कुछ), **और** (अगर वतन में कोई नेकी करने से रूकावट हो तो हिजरत करके दूसरी जगह चले जाओ क्योंकि) **अल्लाह की ज़मीन फैली हुई है,** (और अगर वतन छोड़ने में कुछ तकलीफ़ पहुंचे तो सब्र से काम लो क्योंकि दीन में) **सब्र करने** (और जमे रहने) **वालों को उनका सवाब बेहिसाब ही मिलेगा(10)।**

नोटः- एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन सदक़ा देने वाले आएंगे तो उनके सदक़ों (ख़ैरात) को तौल कर उसके हिसाब से पूरा सवाब दिया जाएगा। इसी तरह नमाज़ और हज वग़ैरह इबादत करने वालों को इबादत को तौल कर हिसाब से उनका पूरा-पूरा सवाब दिया जाएगा। फिर जब मुसीबत

पर सब्र करने वाले आएंगे तो उनके लिए कोई तौल नहीं होगा बल्कि बिना हिसाब व अन्दाज़ा के उनकी तरफ़ सवाब बहा दिया जाएगा क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया...... "इन्नमा युवफ़्फ़स्साबिरूनऺ अजरुहुम बिग़ैरि हिसाब"। यहां तक कि वो लोग जिनकी दुनिया की ज़िन्दगी आराम में गुज़री तमन्ना करने लगेंगे कि काश दुनिया में उनके बदन कैंचियों से काटे गये होते तो हमें भी सब्र का ऐसा ही बदला मिलता।

और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० कहते हैं कि जो आदमी यह चाहता है कि महशर में हिसाब के वक़्त अल्लाह तआ़ला उस पर आसानी कर दें उसको चाहिए कि अल्लाह तआ़ला उसको रात की अन्धेरी में नमाज़ की हालत में पाए इस तरह कि उसको आख़िरत की फ़िक्र भी हो और रहमत की उम्मीद भी।

कुछ हज़रात ने मग़रिब व इशा के बीच के वक़्त को भी रात की (इस बरकत वाली) घड़ी में लिखा है। (क़ुरतबी)

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّیْنَ ﴿۱۱﴾ وَ اُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ
اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِیْنِیْ ﴿۱۴﴾ فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ
قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِیْنَ الَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ اَهْلِیْهِمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِیْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ
فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذٰلِكَ یُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ یٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾ وَ الَّذِیْنَ اجْتَنَبُوا
الطَّاغُوْتَ اَنْ یَّعْبُدُوْهَا وَ اَنَابُوْۤا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ
اَحْسَنَهٗ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِیْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَیْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ
اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِی النَّارِ ﴿۱۹﴾ لٰكِنِ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِیَّةٌ تَجْرِیْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَعْدَ اللّٰهِ لَا یُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِیْعَادَ ﴿۲۰﴾

आयत नं० 11 से 20

(ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि मुझ को** (अल्लाह की तरफ़ से) **हुक्म हुआ है कि मैं**

अल्लाह की इस तरह इबादत करूं कि इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रक्खूं (कि उसमें शिर्क की मिलावट न हो)(11) **और मुझ को** (यह भी) **हुक्म हुआ है कि** (इस उम्मत के लोगों में) **सब मुसलमानों में पहले** (इस्लाम को हक़ मानने वाला) **मैं बनूं** (और साफ़ बात है कि हुक्मों को मानने में नबी का पहला होना ज़रूरी है)(12) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि अगर** (मान लो) **मैं अपने रब का कहना न मानूं तो मैं एक बड़े दिन** (यानी क़ियामत) **के अज़ाब का डर रखता हूं**(13) **और आप** (यह भी) **कह दीजिए कि** (मुझे जिस बात का हुक्म हुआ है मैं तो उसी पर कारबन्द हूं जैसा कि) **मैं तो अल्लाह ही की इबादत इस तरह करता हूं कि इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रखता हूं** (जिसमें शिर्क की ज़रा सी भी मिलावट नहीं)(14) **तो** (चाहिए तो यह था कि तुम भी ऐसे ही ख़ालिस इबादत करो लेकिन अगर तुम नहीं मानते तो तुम जानो और) **अल्लाह को छोड़ कर तुम्हारा दिल जिस चीज़** (की इबादत) **को चाहे उस की इबादत करो** (क़ियामत के दिन उसका मज़ा चक्खोगे, और) **आप उन से** (यह भी) **कह दीजिए कि पूरा नुक़सान उठाने वाले वो ही लोग हैं जो अपनी जानों से और घर वालों से क़ियामत के दिन नुक़सान में रहे** (यानी न अपनी जान से उस को कोई फ़ाइदा पहुंचा और न अपने घर वालों से क्योंकि वो लोग भी अगर उन्हीं की तरह गुमराह थे तो वो भी अज़ाब में गरिफ़्तार होंगे दूसरों को क्या फ़ाइदा पहुंचाएंगे और अगर वो सच्चे मोमिन होकर जन्नत में होंगे तो भी वो काफ़िरों की कोई सिफ़ारिश करके नफ़ा नहीं पहुंचा सकते)**, याद रक्खो कि खुला हुआ नुक़सान ये ही है**(15) **उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के अंगारे होंगे और उनके नीचे से भी आग के अंगारे होंगे, ये वोही** (अज़ाब) **है जिससे अल्लाह अपने बन्दों को डराता** (है और उससे बचने के तरीक़े बताता है जो सच्चे दीन पर चलना) **है,** (सो) **ऐ मेरे बन्दों मुझ से** (यानी मेरे अज़ाब से) **डरो**(16) **और जो लोग शैतान की इबादत से बचते हैं** (यानी उसके कहने में नहीं चलते) **और अल्लाह की तरफ़ लौ लगाते हैं उनके लिए ख़ुशख़बरी है तो आप मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए**(17) **जो** (ऐसे हैं कि अल्लाह के) **कलाम को ध्यान से सुनते हैं फिर उसकी अच्छी बातों पर चलते** (हैं और अल्लाह के हुक्म सभी अच्छे) **हैं, ये ही हैं जिन को अल्लाह ने सीधी राह दिखा दी और ये ही हैं जो अक़्ल वाले हैं**(18) (आगे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली देने के लिए कहा गया है कि इन काफ़िरों को मोमिन बना देना आप के बस से बाहर है इसलिए इस पर कोई ग़म न करें कि) **भला जिस आदमी पर अज़ाब की** (नसीबी) **बात तय हो चुकी, तो क्या आप ऐसे आदमी को जो कि** (अल्लाह के इल्म में) **दोज़ख़ में है** (जहन्म की सज़ा से) **छुड़ा सकते हैं** (यानी जो दोज़ख़ में जाने वाले हैं वो कोशिश

से भी गुमराही से बाज़ न आएंगे इसलिए उन पर अफ़सोस और ग़म बेकार है)(19) **लेकिन जो लोग** (आप से हुक्मों को सुन कर) **अपने रब से डरते रहे उनके लिए** (जन्नत के महलों के) **झरोके हैं जिनके ऊपर और झरोके हैं जो बने बनाए तैयार हैं** (और) **उनके नीचे नहरें बहती हैं, यह अल्लाह ने वादा किया है,** (और) **अल्लाह वादा ख़िलाफ़ी नहीं करता(20)।**

नोटः- अक़्ल का काम तो ये है कि अच्छे और बुरे और हक़ व नाहक़ को पहचाने और अच्छे को अपनाए ।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ
فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٢١﴾ أَفَمَن شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ
فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّن رَّبِّهِ ۚ فَوَيْلٌ لِّلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُم مِّن ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢﴾ اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ
الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَىٰ
ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

आयत नं० 21 से 23

(ऐ लोगो) **क्या तुम ने इस** (बात) **पर नज़र नहीं की अल्लाह तआ़ला ने आसमान से पानी बरसाया फिर उसको ज़मीन के सोतों में पहुंचा**(कर जमा कर)**देता है फिर** (जब नलों कुओं से निकाल लेते हैं तो) **उस** (पानी) **से खेतियां पैदा करता है जिसकी बहुत सी क़िस्में हैं फिर वो खेती बिल्कुल सूख जाती है तो तुम उस को देखते हो कि पीली पड़ गई है फिर** (अल्लाह तआ़ला) **उस को चूरा-चूरा कर देता है, इस** (नमूने) **में समझदार लोगों के लिए बड़ा सबक़** (है कि ये ही हालत हू बहू इन्सान की दुनिया की ज़िन्दगी की है जिसमें लग कर आख़रत को भूल रहा) **है(21) सो जिस आदमी का सीना अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम के** (क़ुबूल करने के) **लिए खोल दिया** (यानी इस्लाम की सच्चाई का उस को यक़ीन आगया) **और वो अपने रब के** (दिये हुए) **नूर** (यानी सीधे रास्ते) **पर** (चल रहा है यानी यक़ीन लाकर उस के मुवाफ़िक़ अमल करने लगा क्या वो आदमी गुमराहों के बराबर) **है, सो जिन लोगों के दिल अल्लाह के ज़िक्र से असर नहीं लेते** (यानी ईमान नहीं लाते) **उन के लिए** (क़ियामत में) **बड़ी तबाही है,** (और दुनिया में) **ये लोग खुली**

गुमराही में (गरिफ़्तार) **हैं**(22) (आगे उस नूर और ज़िक्र का बयान है कि) **अल्लाह तआ़ला ने बड़ा अच्छा कलाम** (यानी क़ुरआन) **उतारा है जो ऐसी किताब है कि** (जिस की बातें) **आपस में मिलती जुलती हैं** (और जिसमें समझाने के लिए कोई-कोई बहुत ज़रूरी बात) **बार-बार दोहराई गई जिससे अपने रब से डरने वालों के बदन कांप उठते हैं फिर उनके बदन और दिल नर्म होकर अल्लाह के ज़िक्र** (यानी अल्लाह की किताब पर अमल करने) **की तरफ़ झुक जाते हैं,** (और) **यह** (क़ुरआन) **अल्लाह की हिदायत है जिसके वास्ते से वो जिसे चाहता है रास्ता दिखा देता है** (जैसे डरने वालों का हाल अभी सुनाया गया) **और अल्लाह जिसको गुमराह करता है उसे कोई रास्ते पर लाने वाला नहीं** (जैसा सख़्त दिल काफ़िरों का हाल अभी सुनाया गया)(23)।

नोटः- एक हदीस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि "जिस बन्दे के बदन पर अल्लाह के डर से बाल खड़े हो जाएं (यानी बदन कांपने लगे) तो अल्लाह तआ़ला उसके बदन को (दोज़ख़ की) आग पर हराम कर देते हैं"।

हज़रत असमा बिन अबीबक्र फ़रमाती हैं कि सहाबा-ए-किराम का आम हाल ये ही था कि जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता तो उनकी आंखों में आंसू आ जाते और बदन पर बाल खड़े हो जाते। (क़ुरतबी)

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَاۗءُ
مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ
اِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

आयत नं० 24 से 31

भला (उस का कैसा बुरा हाल होगा) **जो आदमी क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब को अपने**

चेहरे पर रोकेगा (क्योंकि हाथ पैर तो बन्धे होंगे इसलिए अज़ाब की मार सीधे चेहरे पर होगी), **और ऐसे ज़ालिमों को कहा जाएगा कि जो कुछ तुम किया करते थे** (अब) **उसका मज़ा चक्खो** (तो क्या यह अज़ाब में पकड़ा हुआ और जो ऐसा न हो बराबर हो सकते हैं)(24) **जो लोग इनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने भी** (सच्चाई को) **झुटलाया था सो उन पर अज़ाब इस तरह से आया कि उन्होंने सोचा भी नहीं था(25) इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन को इस ज़िन्दगी में भी रूसवाई का मज़ा चखाया** (कि ज़मीन में धंस जाने और चेहरा बिगड़ जाने और आसमान से पत्थर बरसने जैसे अज़ाब से दुनिया में बदनाम हुए) **और आख़रत का अज़ाब और भी बड़ा है, काश ये लोग समझ जाते(26) और हम ने लोगों** (को समझाने) **के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की** (ज़रूरी) **अच्छी बातें बयान की हैं ताकि ये लोग नसीहत पकड़ें(27)** (जिस की हालत यह है कि) **वो क़ुरआन अरबी** (ज़बान में) **है जिसमें ज़रा भी कमी नहीं** (और ये बातें इसलिए लाई गईं) **ताकि ये लोग** (इन सच्ची और साफ़ बातों को सुन कर) **डरें** (और नेक राह चलें और दूसरों को भी समझाएं बस क़ुरआन के हिदायत होने में तो कोई कमी नहीं कमी न समझने वालों में है)(28) **अल्लाह तआ़ला ने** (अल्लाह को एक मानने वाले और शिर्क करने वाले के बारे में) **एक मिसाल बयान की है कि एक आदमी** (ग़ुलाम) **है जिसमें कई साझी हैं जिनमें आपस में खींचतान** (भी) **है और एक और आदमी है कि पूरा एक ही आदमी का** (ग़ुलाम) **है, क्या दोनों की हालत बराबर** (हो सकती) **है** (और साफ़ बात है कि ये दोनों बराबर नहीं पहला आदमी तकलीफ़ में है कि सदा परीशान रहता है कि किसका कहना मानूं दूसरा आदमी आराम में है कि एक ही से जुड़ा है बस पहली मिसाल शिर्क करने वाले की है कि सदा डांवा डोल रहता है अल्लाह की तरफ़ तो कभी दूसरे माबूदों की तरफ़ फिर दूसरों में भी एक पर तसल्ली नहीं कभी किसी की तरफ़ कभी किसी की तरफ़), **अलहम्दु लिल्लाह** (बस इस मिसाल से हक़ साबित हो गया लेकिन फिर भी ये लोग नहीं मानते) **बल्कि** (मानते तो क्या) **इनमें अक्सर लोग समझते भी नहीं** (क्योंकि समझने का इरादा ही नहीं करते)(29) **आप** (ऐ पैग़म्बर इनके ईमान न लाने पर ग़म न कीजिए क्योंकि दुनिया से आप) **को भी मर जाना है और इन को भी मर जाना है(30) फिर क़ियामत के दिन तुम** (दोनों फ़रीक़ अपने-अपने) **मुक़दमे अपने रब के सामने पेश करोगे** (उस वक़्त खुला फ़ैसला हो जाएगा और फ़ैसला यह होगा कि झूटों को जहन्नम का अज़ाब होगा और सच्चों को बड़ा इनआम मिलेगा)(31)।

नोटः- एक हदीस में है कि जिस आदमी के ज़िम्मे किसी का हक़ है उस को चाहिए कि दुनिया ही में उसको अदा करके या मुआफ़ कराकर बरी हो जाए क्योंकि आख़रत में रूपये पैसे तो होंगे नहीं अगर ज़ालिम के पास कुछ नेकियां हैं तो ज़ुल्म की बराबर उससे लेकर मज़लूम को देदी जाएंगी और अगर उसके पास नेकियां नहीं हैं तो मज़लूम के गुनाह लेकर उस ज़ालिम पर डाल दिये जाएंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

तफ़सीर मज़हरी में है कि ज़ुल्म के बदले में सब नेकियां तो ली जा सकती हैं मगर ईमान नहीं लिया जाएगा और यह आदमी सज़ा भुगतने के बाद फिर जन्नत में जाएगा और फिर सदा उसी में रहेगा।

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَ كَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۲﴾
وَ الَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَ صَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۳۳﴾ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۴﴾ ۚۖ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَ يَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۵﴾

आयत नं० 32 से 35

सो (अब बताओ) **उस आदमी से ज़्यादा बेइन्साफ़** (और नाहक़ बात कहने वाला) **कौन होगा जो अल्लाह पर झूट बान्धे** (यानी अल्लाह तआ़ला के बारे में यह कहे कि उसके साथ दूसरे भी साझी हैं) **और सच्ची बात** (यानी क़ुरआन) **को झुटला दे जबकि वो उसके पास** (पैग़म्बर के वास्ते से) **पहुंची,** (तो) **क्या** (क़ियामत के दिन) **जहन्नम में ऐसे काफ़िरों का ठिकाना न होगा** (यह फ़ैसला तो झूटों का हुआ)(32) **और** (इसके उलट) **जो लोग सच्ची बात लेकर** (अल्लाह की तरफ़ से या पैग़म्बर की तरफ़ से लोगों के पास) **आए और** (ख़ुद भी) **उस को सच जाना तो ये लोग परहेज़गार हैं**(33) (उन का फ़ैसला यह होगा कि) **वो जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उनके रब के पास सब कुछ है, यह बदला है नेक लोगों का**(34) (और यह बदला उनके लिए इसलिए रक्खा गया) **ताकि अल्लाह तआ़ला उन से बुरे कामों को दूर करे और नेक कामों के बदले उन का सवाब दे**(35)।

नोटः- यहां सच्ची बात से मुराद वो तालीमात हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए हैं चाहे वो क़ुरआन हो या क़ुरआन के सिवा दूसरी तालीमात हदीसें । और उन सच्चे लोगों में सब मोमिन दाख़िल हैं जो इसकी तस्दीक़ करने वाले हैं।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَ يُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۶﴾ ۚ وَ مَنْ يَّهْدِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿۳۷﴾ وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ
هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿۳۸﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۹﴾ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَ يَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿۴۰﴾ اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَ مَاۤ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۴۱﴾ ع

आयत नं० 36 से 41

क्या अल्लाह तआ़ला अपने (ख़ास) **बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त) **के लिए काफ़ी नहीं** (यानी वो तो सब ही की हिफ़ाज़त के लिए काफ़ी हैं तो अपने प्यारे ख़ास बन्दे के लिए क्यों काफ़ी न होगा), **और ये लोग आप को उन** (झूटे माबूदों) **से डराते हैं जो अल्लाह के सिवा** (बना रक्खे) **हैं** (हालांकि वो ख़ुद बेजान लाचार हैं और कुछ क़ुदरत भी रखते तो अल्लाह की हिफ़ाज़त के मुक़ाबिले में मजबूर ही होते), **और** (असल बात यह है कि) **जिस को अल्लाह गुमराह करे उसका कोई राह पर लाने वाला नहीं(36) और जिस को अल्लाह सीधी राह पर ले आए उसको कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह तआ़ला** (उनके नज़दीक) **ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **बदला लेने** (पर क़ुदरत रखने) **वाला नहीं है(37) और अगर आप उनसे पूछें कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया है तो ये ही कहेंगे कि अल्लाह ने,** (इसलिए) **आप** (उनसे) **कहिए कि भला** (जब तुम अल्लाह को पैदा करने में अकेला मानते हो तो) **यह बताओ कि अल्लाह के सिवा जिन माबूदों को पूजते हो अगर अल्लाह मुझ को कोई तकलीफ़ पहुंचाना चाहे क्या ये माबूद उसकी दी हुई तकलीफ़ को दूर कर सकते हैं या अल्लाह मुझ पर अपनी महरबानी करना चाहे तो क्या ये माबूद उसकी महरबानी को रोक सकते हैं, आप कह दीजिए कि** (इससे साबित हो गया कि) **मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं** (इसीलिए मैं भी उसी पर भरोसा रखता हूं और तुम्हारी मुख़ालफ़त की कोई परवाह नहीं करता)(38) **आप** (उनसे) **कह दीजिए कि ऐ क़ौम के लोगों** (अगर इस पर भी तुम नहीं मानते तो तुम जानो) **तुम अपने तरीक़े पर चलते रहो मैं भी** (अपने तरीक़े पर) **चल रहा हूं** (यानी जब तुम अपने ग़लत तरीक़े को नहीं छोड़ते तो मैं सही तरीक़े को कैसे छोड़ दूं) **तो अब जल्दी ही तुम को पता चल जाएगा(39) कि वो कौन आदमी है जिस पर** (दुनिया में) **ऐसा अज़ाब आता है जो उसको रूसवा कर देगा और** (मरने के बाद) **उस पर सदा का अज़ाब उतरेगा** (जैसा कि जंगे बद्र में उनको मुसलमानों के हाथों से सज़ा मिली उसके बाद आख़रत का सदा का अज़ाब है)(40) **हम ने यह किताब आप पर लोगों के** (नफ़े के) **लिए सच्चे दीन के साथ उतारी है, सो** (आप का काम इसका पहुंचा देना है फिर) **जो आदमी सही रास्ते पर आएगा तो अपने नफ़े के लिए और जो आदमी गुमराह रहेगा तो उसका गुमराह रहना उसी पर पड़ेगा और आप उन पर** (इस तरह) **ज़िम्मेदार नहीं बनाए गये** (कि उनकी गुमराही की आप से पूछताछ हो तो आप उनकी गुमराही से क्यों दुखी होते हैं)(41)।

नोटः- ऊपर आयत से मालूम हो गया कि जब किसी मुसलमान को किसी गुनाह का काम करने के लिए डराया जाए तो उसे याद कर लेना चाहिए कि उस की हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह काफ़ी है।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَ يُرْسِلُ
الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۴۲﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ اَوَ
لَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿۴۳﴾ قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَ اِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِذَا
هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۴۵﴾

आयत नं० 42 से 45

अल्लाह ही खींच लेता है उन जानों को (जिनकी मौत का वक़्त आ गया है) **उनकी मौत के वक़्त** (पूरी तरह कि ज़िन्दगी बिल्कुल ख़त्म हो जाए) **और उन जानों को भी जिन को मौत नहीं आई उनके सोने के वक़्त** (मगर यह पूरी तरह नहीं बल्कि एक हैसियत से ज़िन्दगी बाक़ी रहती है मगर समझ बूझ नहीं रहती और मौत की सूरत में न समझ बूझ रहती है और न ज़िन्दगी), **फिर उन जानों को तो** (बदन की तरफ़ लौटने से) **रोक लेता है जिन पर मौत का हुक्म दे चुका है और बाक़ी जानों को** (जो नींद की वजह से ठहराई गईं थी और अभी उनकी मौत का वक़्त नहीं आया) **एक तय वक़्त के लिए आज़ाद कर देता है** (कि फिर जाकर बदन में उसी तरह काम करने लगे), **इस बात में उन लोगों के लिए जो सोचने समझने वाले हैं** (अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत और तौहीद की) **दलीलें हैं(42) हां क्या** (तौहीद की साफ़ दलीलें होते हुए) **उन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरों को** (माबूद) **बना रक्खा है जो** (उनकी) **सिफ़ारिश** (करेंगे जैसा कि मुशरिक लोग अपने बुतों के बारे में कहा करते थे कि ये अल्लाह के यहां हमारी सिफ़ारिश) **करेंगे, आप कह दीजिए कि चाहे ये** (तुम्हारे बनाए हुए) **कुछ भी क़ुदरत न रखते हों और कुछ भी इल्म न रखते हों** (क्या फिर भी तुम ये ही समझते चले जाओगे कि ये तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे)(43) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि सिफ़ारिश तो सारी अल्लाह के बस में है** (बिना उसकी इजाज़त के किसी फ़रिशते या इन्सान की मजाल नहीं कि किसी की सिफ़ारिश कर सके और अल्लाह तआ़ला की इजाज़त सिफ़ारिश के लिए दो शर्तों के साथ है एक तो सिफ़ारिश करने वाला अल्लाह के नज़दीक मक़बूल हो दूसरे जिसकी

सिफ़ारिश की जाए वो बख़्शिश के क़ाबिल हो तो शैतानों को तो सिफ़ारिश करने का हक़ नहीं और फ़रिशते या पैग़म्बर मुशरिक की सिफ़ारिश कर नहीं सकते, और अल्लाह तआला की यह शान है कि) **सारे आसमानों व ज़मीन में उसी का राज है, फिर तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे** (इसलिए सब को छोड़ कर उसी से डरो उसी की इबादत करो)(44) **और** (तौहीद की साफ़ दलीलें मालूम होने के बावजूद काफ़िरों व मुशरिकों का हाल यह है कि) **जब सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है** (कि वो बिना किसी की साझेदारी के सारी दुनिया की हर चीज़ और हर काम का मालिक है) **तो उन लोगों के दिलों में घुटन होती है जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते, और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र आता है** (चाहे सिर्फ़ उन्हीं का ज़िक्र हो या अल्लाह के ज़िक्र के साथ उन का भी ज़िक्र हो) **तो उसी वक़्त वो लोग ख़ुश हो जाते हैं**(45)

नोटः- हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि सोने के वक़्त इन्सान की रूह उसके बदन से निकल जाती है। मगर एक किरण रूह की बदन में रहती है जिससे वो ज़िन्दा रहता है और उसी से ख़्वाब देखता है और जागने के वक़्त आंख झपकने से भी कम वक़्त में वो रूह बदन में वापस आजाती है।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ
يَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٦ وَ لَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّ مِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ بَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ۝٤٧ وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٤٨ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ
عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٩ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٥٠ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ۙ
وَ مَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٥١ اَوَ لَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢ ع

आयत नं० 46 से 52

आप (उनकी मुख़ालफ़त से दुखी न होइये और अल्लाह से दुआ में यह) **कहिए कि या अल्लाह आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले छुपे और खुले के जानने वाले आप ही** (क़ियामत के दिन) **अपने बन्दों के बीच उन बातों में फ़ैसला कर देंगे जिन में वो आपस में झगड़ते थे** (यानी आप इन मुख़ालिफ़ों की फ़िक्र में न पड़िये बल्कि उन का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द कीजिए वो ख़ुद साफ़ फ़ैसला कर देंगे)(46) **और** (उस फ़ैसले के वक़्त यह हालत होगी कि) **अगर ज़ुल्म** (यानी शिर्क व कुफ़्र) **करने वालों के पास दुनिया भर की सारी चीज़ें हों और उन चीज़ों के साथ उतनी चीज़ें और भी हों तो वो लोग क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूट जाने के लिए** (बेझिजक) **उन को देने लगें** (भले ही ली न जाएं), **और अल्लाह की तरफ़ से उनको वो बात पेश आएगी जिसको उन्होंने सोचा भी न था** (क्योंकि एक तो आख़िरत का इनकार करते थे फिर उसमें भी यह दावा करते थे कि वहां भी उनको इज़्ज़त व दौलत मिलेगी)(47) **और** (उस वक़्त) **उनको अपने सारे बुरे काम नज़र आजाएंगे और जिस** (अज़ाब) **की वो हंसी उड़ाया करते थे वो उनको आघेरेगा**(48) (वैसे तो मुशरिक अल्लाह के सिवा दूसरों के ज़िक्र से ख़ुश और सिर्फ़ अल्लाह के ज़िक्र से भागता है) **फिर जिस वक़्त** (उस मुशरिक) **आदमी को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो** (जिनके ज़िक्र से ख़ुश हुआ करता था उन सब को छोड़ कर सिर्फ़) **हम को पुकारता है** (जिससे पहले भागता था) **फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से कोई नेमत दे देते हैं तो** (उस तौहीद पर जिसका हक़ होना ख़ुद उसके इक़रार से साबित हो चुका था जमा नहीं रहता बल्कि यह) **कहता है कि यह तो मुझ को** (मेरे) **हुनर से मिली** (है और अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत में लग जाता) **है, बल्कि वो** (नेमत अल्लाह की दी हुई और उसकी तरफ़ से इन्सान का) **एक इम्तिहान है** (कि देखें इसके मिलने पर हम को भूल जाता है और कुफ़्र करता है या याद रखता है और शुक्र करता है और इसी आज़माने में कुछ नेमतों में कमाई और कोशिश का वास्ता भी रख दिया इससे और ज़्यादा आज़माया जाता है कि देखें इस पर नज़र करता है या असल पर) **लेकिन अक्सर लोग** (इस बात को) **समझते नहीं** (इसलिए इसको अपनी कोशिश का फल बताते हैं और शिर्क में पड़े रहते हैं)(49) **यह बात** (कुछ) **उन लोगों ने भी कही थी जो इन से पहले हुए हैं** (जैसे नमरूद व फ़िरऔन और क़ारून कि अल्लाह की नेमतों को अपना हुनर समझते थे) **सो उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई** (और अज़ाब को रोक न सकी)(50) **फिर उनकी सभी बुराइयां उन पर आ पड़ीं** (और सज़ा पाई), **और** (इस ज़माने के लोग यह न सोचें कि जो कुछ होना था पहलों के साथ हो चुका

बल्कि) **इनमें भी जो ज़ालिम हैं उन पर उन की बुराइयां पड़ने वाली हैं और यह** (अल्लाह तआला को) **हरा नहीं सकते** (जैसा कि जंगे बद्र में ख़ूब सज़ा हुई)(51) **क्या इन लोगों को यह मालूम नहीं हुआ कि अल्लाह ही जिस को चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और वो ही** (जिसके लिए चाहता है) **कम भी कर देता है, इस** (ज़्यादा या कम देने) **में** (सोचने से) **ईमान वालों के लिए** (कि समझदार होते हैं इस बात पर) **निशानियां** (यानी दलीलें) **हैं** (कि असल देने वाला वो ही है बस इन दलीलों को जो आदमी समझ लेगा न वो नेमत को अपना हुनर समझेगा और न शिर्क करेगा)(52)।

नोटः- हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रह० फ़रमाते हैं कि मुझे क़ुरआने करीम की एक ऐसी आयत मालूम है कि उस को पढ़ कर आदमी जो दुआ करता है क़ुबूल होती है। फिर ये ही आयत बताई आयत नं० 46:

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۴۶﴾

"क़ुलिल्लाहुम्मा फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि आलिमल ग़ैबि वश्शहादति अन्त् तहकुमु बैन् इबादिक् फ़ी मा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून"।

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ
الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵۳﴾ وَ اَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَ اَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿۵۴﴾ وَاتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿۵۵﴾ اَنْ تَقُوْلَ
نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَ اِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿۵۶﴾ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ
مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۵۷﴾ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۸﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ
فَكَذَّبْتَ بِهَا وَ اسْتَكْبَرْتَ وَ كُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۵۹﴾ وَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ
اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۶۰﴾ وَ يُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۫ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۶۱﴾

आयत नं० 53 से 61

नोटः- कुछ लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा था कि हम इतने बड़े-बड़े गुनाह कर चुके हैं अब अगर मुसलमान हो भी गये तो क्या हमारी तौबा क़ुबूल हो सकेगी इस पर ये आयतें उतरीं किः-

आप (इन सवाल करने वालों के जवाब में मेरी तरफ़ से) **कह दीजिए कि ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने** (कुफ़्र व शिर्क करके) **अपने ऊपर ज़्यादतियां की हैं कि तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद मत हो,** (और यह न सोचो कि ईमान लाने के बाद पिछले गुनाहों पर पकड़ होगी तो यह बात नहीं बल्कि) **यक़ीन जानो अल्लाह तआ़ला** (इस्लाम की बरकत से) **सारे** (पिछले) **गुनाहों को** (चाहे कुफ़्र व शिर्क ही क्यों न हों) **मुआफ़ कर देगा, बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला बड़ी रहमत करने वाला है(53) और** (कुफ़्र से तौबा करने के लिए) **तुम अपने रब की तरफ़ लौ लगाओ और** (इस्लाम क़ुबूल करने में) **उस का कहना मानो इससे पहले कि** (इस्लाम न लाने की सूरत में) **तुम पर** (अल्लाह का) **अज़ाब आजाए** (और) **फिर** (उस वक़्त किसी की तरफ़ से) **तुम्हारी कोई मदद न कीजाए** (यानी जैसा इस्लाम लाने की सूरत में सब कुफ़्र व शिर्क मुआफ़ हो जाएगा इसी तरह इस्लाम न लाने की सूरत में इस कुफ़्र व शिर्क पर अज़ाब होगा जिसका कोई हटाने वाला नहीं)(54) **और** (जब इस्लाम न लाने का यह अन्जाम है तो) **तुम** (को चाहिए कि) **अपने रब के पास से आए हुए** (सभी) **अच्छे-अच्छे हुक्मों पर चलो इससे पहले कि तुम पर अचानक** (आख़िरत का) **अज़ाब आजाए और तुम को** (उस का) **ध्यान भी न हो(55)** (और यह इस्लाम लाने का हुक्म इसलिए दिया जाता है कि) **कभी** (कल क़ियामत के दिन) **कोई आदमी कहने लगे कि अफ़सोस मेरी उस ग़लती पर जो मैंने अल्लाह के** (हुक्मों के) **बारे में की और मैं तो अल्लाह के हुक्मों पर हंसता ही रहा(56) या कोई यह कहने लगे कि अगर अल्लाह तआ़ला** (दुनिया में) **मुझ को हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में से होता** (मगर हिदायत ही न हुई इसलिए ये सारे क़ुसूर हुए जिसमें मैं मजबूर हूं)(57) **या कोई अज़ाब को देख कर यह कहने लगे काश मेरा** (दुनिया में) **फिर जाना हो जाए फिर मैं नेक बन्दों में हो जाऊं(58)** (अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं तुझे हिदायत) **क्यों नहीं** (दी गई) **बेशक तेरे पास मेरी आयतें पहुंची थी सो तूने उनको झुटलाया और** (झुटलाना किसी शक से न था बल्कि) **तूने घमन्ड किया और** (यह भी नहीं कि बाद में बदल जाता बल्कि सदा) **काफ़िरों में शामिल रहा** (और इसलिए तेरा यह कहना ग़लत है कि मुझे हिदायत नहीं पहुंची)(59) **और** (ऐ पैग़म्बर) **आप क़ियामत के दिन उन लोगों के चेहरे सियाह देखेंगे जिन्होंने अल्लाह पर झूट बोला था** (इसमें दो बातें आ गईं जो बात अल्लाह ने नहीं कही जैसे शिर्क उस को यह कहना अल्लाह ने कही है और जो बात अल्लाह ने कही जैसे क़ुरआन उसको यह कहना अल्लाह ने नहीं कही है), **क्या उन घमन्डियों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है** (जो कि घमन्ड और मुख़ालफ़त से झुटलाएं)(60) **और जो लोग** (शिर्क व कुफ़्र से) **बचते थे अल्लाह तआ़ला उन को कामयाबी के**

साथ (जहन्नम से) **बचाएगा, उन को** (ज़रा) **तकलीफ़ न पहुंचेगी और न उन्हें किसी बात का ग़म होगा** (क्योंकि जन्नत में ग़म नहीं है)(61)

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि सूरत ज़ुमर की यह आयत (नं० 53) गुनाहगारों के लिए क़ुरआन की सब आयतों से ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली है।

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۡ وَّ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا
قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾

आयत नं० 62 से 67

अल्लाह ही पैदा करने वाला है हर चीज़ का और वो ही हर चीज़ का रखवाला है(62) **उसी के क़ब्ज़े में कुन्जियां हैं सारे आसमानों और ज़मीन की** (यानी इन सब चीज़ों का पैदा करने वाला और इनकी हिफ़ाज़त करने वाला वो ही है और मालिक भी वो ही है तो जब वो ही पैदा करने वाला और मालिक है इस बात को तो सभी मानते हैं तो इबादत भी उसी की होनी चाहिए), **और जो लोग** (इस पर भी) **अल्लाह की आयतों को नहीं मानते वो बड़े नुक़सान में रहेंगे**(63) (और ये लोग ख़ुद तो कुफ़्र व शिर्क करते ही थे अब इन का हौसला यहां तक बढ़ा कि आप को भी अपने तरीक़े पर लाने की कोशिश करते हैं तो) **आप कह दीजिए कि ऐ जाहिलो** (ऊपर की दलीलों से तौहीद का पूरा सबूत और कुफ़्र व शिर्क का ग़लत होना साबित हो जाने के बाद) **फिर भी तुम मुझ को अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत करने के लिए कहते हो**(64) (और आप कुफ़्र व शिर्क कैसे कर सकते हैं जब कि) **आप की तरफ़ भी और जो पैग़म्बर आप से पहले आ चुके हैं उन की तरफ़ भी यह वही भेजी जा चुकी है कि** (हर उम्मती को पहुंचा दें कि) **अगर तू शिर्क करेगा तो तेरा किया कराया काम सब बर्बाद हो जाएगा और तू नुक़सान उठाएगा** (इसलिए तू कभी शिर्क के पास न जाना)(65) **बल्कि अल्लाह ही की इबादत करना और** (उसी का) **शुक्र अदा करते रहना** (और जब पैग़म्बर ये ही बात समझाने के लिए भेजे गये तो वो ख़ुद शिर्क कैसे कर सकते

हैं)(66) **और** (अफ़सोस है कि) **उन लोगों ने अल्लाह तआ़ला की बड़ाई व क़द्र न पहचानी जैसा कि पहचानना चाहिए था, हालांकि सारी ज़मीन उसी की मुट्ठी में होगी क़ियामत के दिन और सारे आसमान लिपटे हुए होंगे उसके दाहिने हाथ में** (यानी उस की क़ुदरत की कोई हद नहीं, और) **वो पाक है और बहुत ऊपर है उनके शिर्क से**(67)

नोटः- अल्लाह तआ़ला की मुट्ठी और हाथ से क्या मुराद है इसे जानने की कोशिश को भी मना किया गया है बस इस पर ईमान लाना कि जो कुछ इससे अल्लाह तआ़ला की मुराद हो वो हक़ और सही है।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ
يَّنْظُرُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِايْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ
هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۷۰﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى
جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ
اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۱﴾ قِيْلَ
ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۲﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ
زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿۷۳﴾ وَ
قَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَ
تَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۵﴾

आयत नं० 68 से 75

और (क़ियामत के दिन जब) **सूर में फूंक मारी जाएगी तो सारे आसमान और ज़मीन वालों के होश उड़ जाएंगे** (फिर ज़िन्दा तो मर जाएंगे और मुर्दों की रूहें बेहोश हो जाएंगी) **मगर जिस को अल्लाह चाहे** (वो इस बेहोशी और मौत से बचा रहेगा)**, फिर उस** (सूर) **में दोबारा फूंक मारी जाएगी तो अचानक सब के सब** (होश में आकर रूहों का ताल्लुक़ जिसमों से होकर क़ब्रों से

निकल) **खड़े हो जाएंगे** (और) **चारों तरफ़ देखने लगेंगे** (जैसा कि किसी अजीब हादसे के वक़्त होता है)(68) **और** (फिर अल्लाह तआ़ला हिसाब के लिए ज़मीन पर अपनी शान के मुनासिब जलवा करेंगे और) **ज़मीन अपने रब के नूर से चमक जाएगी और** (सब का) **आमाल नामा** (हर एक के सामने) **रख दिया जाएगा और पैग़म्बर और गवाह हाज़िर किये जाएंगे और सब** (लोगों) **में** (कामों के हिसाब से) **ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न होगा** (कि कोई नेकी छुपा ली जाए या कोई बुराई बढ़ा दी जाए)(69) **और हर आदमी को उस के कामों का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा** (कि नेक काम घटाए न जाएंगे और बुरे काम बढ़ाए न जाएंगे) **और वो सब के कामों को अच्छी तरह जानता है** (बस उस को हर एक के हिसाब से बदला देना कुछ मुश्किल नहीं)(70) **और** (फ़ैसला यह होगा कि) **जो काफ़िर हैं वो जहन्नम की तरफ़ गिरोह बनाकर** (धक्के देकर बेइज़्ज़ती के साथ) **ले जाए जाएंगे, यहां तक कि जब दोज़ख़ के पास पहुंचेगे तो** (उस वक़्त) **उसके दरवाज़े खोल दिये जाएंगे और उनसे दोज़ख़ के दरोग़ा** (फ़रिशते झिड़कते हुए) **कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम ही लोगों में से पैग़म्बर न आए थे** (कि उन से फ़ाइदा उठाना कुछ मुश्किल न था और) **जो तुम को तुम्हारे रब की आयतें पढ़ कर सुनाया करते थे और तुम को तुम्हारे इस दिन के आने से ख़बरदार किया करते थे, वो काफ़िर कहेंगे कि हां** (पैग़म्बर भी आए थे और उन्होंने ख़बरदार भी किया था) **लेकिन अज़ाब की बात काफ़िरों पर** (जिनमें हम भी दाख़िल हैं) **सच होकर रही** (यानी अपने जुर्म का इक़रार करेंगे)(71) **कहा जाएगा** (यानी वो फ़रिशते उन काफ़िरों से कहेंगे) **कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ** (और) **सदा उसमें रहा करो बस** (अल्लाह के हुक्मों से) **घमन्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है** (फिर उस के बाद वो जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे और दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे यह तो काफ़िरों का हाल हुआ)(72) **और जो लोग अपने रब से डरते थे** (जिसकी पहली सीढ़ी ईमान है फिर आगे उसके बहुत से दर्जे हैं) **वो गिरोह-गिरोह होकर** (नेकियों के हिसाब से) **जन्नत की तरफ़** (शौक़ दिलाकर जल्दी) **ले जाए जाएंगे, यहां तक कि जब उस** (जन्नत) **के पास पहुंचेगे और उसके दरवाज़े** (पहले से) **खुले हुए होंगे** (जैसे महमान के लिए पहले से दरवाज़ा खोल दिया जाता है) **और वहां के दरोग़ा** (फ़रिशते) **उन से** (इज़्ज़त और तारीफ़ से) **कहेंगे कि अस्सलामु अलैकुम तुम मज़े में रहो सो इस** (जन्नत) **में सदा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ** (उस वक़्त उसमें दाख़िल हो जाएंगे)(73) **और** (दाख़िल होकर) **कहेंगे कि अल्लाह का** (लाख-लाख) **शुक्र है जिसने हम को इस ज़मीन का मालिक बना दिया कि हम जन्नत में जहां चाहें रहें** (यानी हर आदमी को बड़ी जगह मिलेगी और सैर के लिए दूसरे

जन्नती के दर्जे में भी जा सकेंगे) **बस** (नेक) **काम करने वालों का अच्छा बदला है(74) और फ़रिश्तों को देखेंगे कि** (हिसाब के वक़्त) **अर्श को घेरे हुए अपने रब की तस्बीह व हम्द करते होंगे और सारे बन्दों में ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और** (इस फ़ैसले के ठीक होने पर हर तरफ़ से जोश के साथ ये ही आवाज़ होगी और) **कहा जाएगा कि सारी ख़ूबियां अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है(75)।**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि जन्नती हज़रात को मुलाक़ात के लिए एक दूसरे के महलों में जाने की इजाज़त भी होगी भले ही उनके दर्जे अलग-अलग हों।

40-सूरत-मुमिन

इस मक्की सूरत में ‘9’ रूकू और ‘85’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۙ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ۙ ذِي الطَّوْلِ ؕ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۪ وَ هَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَ جٰدَلُوْا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَ كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْۤا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۘ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَ مَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ
يَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَ
قِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾ رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِۣالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ
ذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۙ ﴿٨﴾ وَ قِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَ مَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾

आयत नं० 01 से 09

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ़ से जो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **हर चीज़ का जानने वाला है(02)** (जो) **गुनाह मुआफ़ करने वाला और तौबा का कुबूल करने वाला है** (और) **सख़्त सज़ा देने वाला** (और) **बड़ी ताक़त वाला है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं, उसी के पास** (सब को) **जाना है(03)** (होना तो यह चाहिए था कि इसका इनकार न किया जाए मगर फिर भी) **अल्लाह तआ़ला की इन आयतों में** (यानी कुरआन में) **वो ही लोग** (नाहक़ के) **झगड़े निकालते हैं जो इसका इनकार करते हैं** (और इसलिए उनको फ़ौरन सज़ा दी जाती मगर उनको इस पर जल्द सज़ा न होना एक ढील

है) **सो उन लोगों का शहरों में** (अमन से दुनिया के कारोबार के लिए) **चलना फिरना आप** (लोगों) **को शक में न डाले** (कि इससे यह समझ लिया जाए कि ये इसी तरह सज़ा व अज़ाब से बचे रहेंगे और आराम से रहेंगे बल्कि इन की पकड़ ज़रूर होगी चाहे दुनिया में भी और आख़रत में भी या सिर्फ़ आख़रत में)(04) **इन से पहले नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने और दूसरे गिरोहों ने भी जो उन के बाद हुए** (जैसे आद व समूद ने सच्चे दीन को) **झुटलाया था और हर उम्मत** (में से जो लोग ईमान न लाए थे उन्हों)**ने अपने पैग़म्बर के गरिफ़्तार करने का इरादा किया** (कि पकड़ कर क़त्ल कर दें) **और नाहक़ के झगड़े निकाले ताकि उस नाहक़ से हक़ को मिटा दें सो मैंने** (आख़िर) **उन को पकड़ लिया, सो** (देखो) **मेरी तरफ़ से** (उन को) **कैसी सज़ा हुई(05) और** (जिस तरह उन को दुनिया में सज़ा हुई) **इसी तरह सभी काफ़िरों पर आप के रब की यह बात साबित हो चुकी है कि वो लोग** (आख़रत में) **दोज़ख़ी होंगे** (यानी यहां भी सज़ा हुई और वहां भी होगी इसी तरह इन काफ़िरों को भी सज़ा होने वाली है चाहे दोनो जगह या सिर्फ़ आख़रत में)(06) **जो फ़रिशते** (ख़ुदाई) **अर्श को उठाए हुए हैं और जो फ़रिशते उस को घेरे हुए हैं वो अपने रब की तस्बीह व हम्द करते रहते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए** (इस तरह) **बख़्शिश की दुआ किया करते हैं कि या रब हमारे आप की रहमत और इल्म हर चीज़ पर छाया हुआ है** (तो ईमान वालों पर तो ख़ास रहमत होगी) **तो उन लोगों को बख़्श दीजिए जिन्होंने** (शिर्क व कुफ़्र से) **तौबा कर ली है और आप के रास्ते पर चलते हैं और उन को जहन्नम के अज़ाब से बचा लीजिए(07) या रब हमारे और** (दोज़ख़ से बचाकर) **उन को सदा रहने की जन्नतों में दाख़िल कर दीजिए जिसका आपने उनसे वादा किया है और उनके मां बाप और बीवियों और औलाद में जो** (जन्नत के) **लाइक़** (यानी मोमिन) **हों** (चाहे उन मोमिनों के दर्जे के न हों) **उन को भी दाख़िल कर दीजिए, बेशक आप ज़बरदस्त** (कुदरत वाले) **हिकमत वाले** (हैं कि मुआफ़ करने की क़ुदरत रखते हैं और हिकमत से हर एक के मुनासिब दर्जा देते) **हैं(08) और** (यह भी दुआ है कि) **उन को** (क़ियामत के दिन हर तरह की) **तकलीफ़ से बचाइये, और आप जिस को उस दिन तकलीफ़ से बचालें तो उस पर आप ने** (बहुत) **महरबानी की, और यह** (अज़ाब से बचाना और जन्नत में दाख़िल करना) **बड़ी कामयाबी है(09)**

नोटः- एक हदीस में है कि जो शुरू दिन में आयतुल कुर्सी और सूरत मोमिन की पहली तीन आयतें (हामीम से इलैहिल मसीर तक) पढ़ले वो उस दिन हर बुराई और तकलीफ़ से बचा रहेगा। (तिरमिज़ी)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠ قَالُوْا
رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَ اَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝١١ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا
دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۗ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢

आयत नं० 10 से 12

जो लोग काफ़िर हुए (वो जब दोज़ख़ में जाकर अपने शिर्क व कुफ़्र पर पछताएंगे और अफ़सोस करेंगे और ख़ुद उन को अपने से सख़्त नफ़रत होगी उस वक़्त) **उन को पुकार कहा जाएगा कि जैसी तुम को** (इस वक़्त) **अपने से नफ़रत है इससे बढ़कर अल्लाह को** (तुम से उस वक़्त) **नफ़रत** (होती) **थी जब कि तुम** (दुनिया में) **ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे फिर** (भी) **तुम नहीं माना करते थे** (इस तरह उनके पछतावे को और बढ़ाया जाएगा)(10) **वो लोग कहेंगे या रब हमारे** (हम जो दोबारा ज़िन्दा होने का इनकार किया करते थे अब हम को अपनी ग़लती पता चल गई जैसा कि देख लिया कि) **आपने हम को दो बार मुर्दा रक्खा** (एक बार पैदा होने से पहले कि हम बेजान चीज़ थे और दूसरी बार मौत से मुर्दा हुए) **और दोबार ज़िन्दगी दी** (एक दुनिया की ज़िन्दगी और दूसरी आख़रत की ज़िन्दगी) **सो हम ग़लतियों का इक़रार करते हैं तो क्या** (यहां से) **निकलने की कोई सूरत है**(11) (निकलने की इजाज़त न होना) **इसलिए कि जब सिर्फ़ अल्लाह का नाम लिया जाता था** (यानी तौहीद की बात होती थी) **तो तुम इनकार किया करते थे और अगर उसके साथ किसी को साझी किया जाता था तो तुम मान लेते थे, इसलिए यह फ़ैसला अल्लाह का** (किया हुआ) **है जो ऊंची शान वाला** (और) **सबसे बड़ा है** (यानी अल्लाह की बड़ाई के हिसाब से यह जुर्म बड़ा था इसलिए फ़ैसले में सज़ा भी बड़ी हुई यानी सदा का जहन्नम)(12)

नोटः- जो लोग दुनिया में आख़रत और वहां की ज़िन्दगी का इनकार करते हैं वहां अपनी ग़लती का इक़रार करेंगे मगर फिर कोई फ़ाइदा नहीं।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ۗ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ۝١٣ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝١٤ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝١٥ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۗ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۗ لِلّٰهِ

الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَ
اَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ۬ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّ لَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ﴿١٨﴾ؕ
يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَ مَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾ وَ اللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ
بِشَىْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ؒ اَوَ لَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّاقٍ ﴿٢١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِىٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

आयत नं० 13 से 22

वो (अल्लाह) **ही है जो तुम को अपनी** (क़ुदरत की) **निशानियां दिखाता है** (ताकि तुम इन से तौहीद पर दलील पकड़ो) **और** (वो ही है जो) **आसमान से तुम्हारे लिए रोज़ी भेजता** (है यानी बारिश भेजता है जिससे पैदावार होती) **है, और** (इन निशानियों से) **सिर्फ़ वो ही आदमी नसीहत माना करता है जो** (अल्लाह की तरफ़) **ध्यान लगाता है(13) तो** (जब तौहीद के पक्के सबूत मौजूद हैं तो) **तुम लोग अल्लाह को ख़ालिस ऐतक़ाद करके** (यानी तौहीद के साथ) **पुकारो** (और मुसलमान हो जाओ) **चाहे काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे** (इसकी परवाह न करो)(14) **वो ऊंचे दर्जों वाला है वो अर्श का मालिक है वो अपने बन्दों में से जिस पर चाहे वही यानी अपना हुक्म भेजता है ताकि वो** (पैग़म्बर लोगों को) **जमा होने के दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **से ख़बरदार करे(15) जिस दिन सब लोग** (अल्लाह के सामने) **आ मौजूद होंगे** (कि) **उनकी बात अल्लाह से छुपी न रहेगी, आज के दिन किस की हुकूमत होगी, अल्लाह ही की होगी जो अकेला है** (और) **और ज़ोर आवर है(16) आज हर आदमी को उस के किये** (हुए कामों) **का बदला दिया जाएगा, आज** (किसी पर) **कुछ ज़ुल्म न होगा, अल्लाह तआ़ला बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है(17) और** (इसलिए) **आप एक नज़दीक आने वाली मुसीबत के दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **से डराइये जिस वक़्त** (ग़म से) **घुट-घुट कर कलेजे मुंह को आजाएंगे,** (उस दिन) **ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **का न दिली दोस्त और न कोई सिफ़ारिशी होगा जिस का कहा माना जाए(18)** (और) **वो** (अल्लाह ऐसा है कि) **आंखों की चोरी को** (भी) **जानता है और उन** (बातों) **को भी जो सीनों में छुपा रक्खी हैं** (जिन को दूसरा नहीं जानता मतलब यह कि वो बन्दों के सभी खुले और छुपे कामों की ख़बर रखता है जिस पर सज़ा या सवाब मिलना है)(19) **और अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर**

देगा, और अल्लाह के सिवा जिन को ये लोग पुकारा करते हैं वो किसी तरह का भी फ़ैसला नहीं कर सकते, (क्योंकि) **अल्लाह ही सब कुछ जानने वाला सब कुछ देखने वाला है**(20) (और ये लोग जो इन खुली दलीलों के बाद भी इनकार करते हैं तो) **क्या इन लोगों ने मुल्क में चल फिर कर नहीं देखा कि जो** (काफ़िर) **लोग इनसे पहले हो चुके हैं** (इस कुफ़्र की वजह से) **उन का कैसा अन्जाम हुआ, वो लोग ताक़त और उन निशानियों में जो ज़मीन पर छोड़ गये हैं** (जैसे इमारतें और बाग़ वग़ैरह) **इन** (लोगों) **से बहुत बढ़े हुए थे फिर उनके गुनाहों की वजह से अल्लाह ने उन्हें पकड़ा** (यानी अज़ाब भेजा), **और उनका कोई अल्लाह से बचाने वाला न हुआ**(21) (और) **यह** (अज़ाब में) **पकड़ना इस वजह से हुआ कि उनके पास उनके पैग़म्बर खुली निशानियां** (यानी मोजिज़े जो पैग़म्बरी का सबूत होते हैं) **लेकर आते रहे फिर** (भी) **उन्होंने न माना तो अल्लाह तआ़ला ने उन को पकड़ा, बेशक वो बड़ा ताक़त वाला सख़्त सज़ा देने वाला है** (जब इन मौजूदा काफ़िरों में भी वो ही अज़ाब का हक़दार बनाने वाली बातें मौजूद हैं तो ये पकड़ से कैसे बच सकते हैं)(22)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٢٣﴾ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا
جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا
فِي ضَلَالٍ ﴿٢٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۖ إِنِّي أَخَافُ أَن يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَن يُظْهِرَ
فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُم مِّن كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَ
قَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَن يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُم بِالْبَيِّنَاتِ
مِن رَّبِّكُمْ ۖ وَإِن يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِن يَكُ صَادِقًا يُصِبْكُم بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا
يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يَا قَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ فَمَن يَنصُرُنَا مِن بَأْسِ
اللَّهِ إِن جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ الَّذِي آمَنَ
يَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُم مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِن
بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾ وَيَا قَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾ يَوْمَ تُوَلُّونَ
مُدْبِرِينَ مَا لَكُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِن

قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ
كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۚ﴿٣٤﴾ اِلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ
مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ
ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَ
كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ
يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ
الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى
النَّارِ ﴿٤١﴾ تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۫ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا
جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ
هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾
فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَ
يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

आयत नं० 23 से 46

और हम ने भेजा मूसा (अलैहिस्सलाम) **को अपने हुक्म और खुली दलील** (यानी मोजिज़ा) **देकर(23) फ़िरऔन और हामान और क़ारून के पास तो उन लोगों** (में से कुछ ने या सब) **ने कहा कि** (नऊज़ुबिल्लाह) **यह जादूगर** (और) **झूटा है** (जादूगर मोजिज़े में कहा और झूटा पैग़म्बरी के दावे में)(24) **फिर** (उसके बाद) **जब वो** (आम) **लोगों के पास सच्चा दीन जो हमारी तरफ़ से था लेकर आए** (जिस पर कुछ लोग मुसलमान भी हो गये) **तो उन लोगों ने** (आपस में मशवरा किया और) **कहा कि जो लोग इनके साथ** (होकर) **ईमान ले आए हैं उन के बेटों को क़त्ल कर दो** (ताकि उनकी गिनती और ज़ोर न बढ़े जिससे हुकूमत जाने का डर है) **और** (क्योंकि औरतों से ऐसा ख़तरा नहीं है दूसरे हमारे घरों में काम के लिए भी चाहिए इसलिए) **उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रहने दो, और उन काफ़िरों की चाल नाकाम रही** (जैसा कि आख़ीर में मूसा अलैहिस्सलाम ही

कामयाब हुए)(25) **और फ़िरऔन ने** (दरबार वालों से) **कहा कि लाओ मैं मूसा को क़त्ल कर डालूं और उस को चाहिए कि अपने रब को** (मदद के लिए) **पुकार ले मुझे डर है कि वो** (कहीं) **तुम्हारा दीन** (न) **बदल डाले या मुल्क में कोई फ़साद** (न) **फैला दे** (कि एक नुक़सान दीन का है और दूसरा दुनिया का)(26) **और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (जो यह बात सुनी तो) **कहा मैं अपने और तुम्हारे** (यानी सब के) **रब की पनाह लेता हूं हर सर फिरे आदमी** (की बुराई) **से जो हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता** (और इसलिए हक़ का मुक़ाबिला करता है)(27) **और** (वहां मौजूद) **एक मोमिन आदमी ने जो कि फ़िरऔन के ख़ानदान में से थे** (और अब तक) **अपना ईमान छुपाए हुए थे** (यह मशवरा सुन कर लोगों से) **कहा क्या तुम एक आदमी को** (सिर्फ़) **इस बात पर क़त्ल करते हो कि वो कहता कि मेरा रब अल्लाह है हालांकि वो तुम्हारे रब की तरफ़ से** (इस दावे पर) **दलीलें** (भी) **लेकर आया है** (यानी मोजिज़े भी दिखाता है जो पैग़म्बरी के दावे की सच्चाई की दलील) **है, और अगर** (मान लो) **वो झूटा ही हो तो उस का झूट उसी पर पड़ेगा** (और आप ही अल्लाह की तरफ़ से रूसवा हो जाएगा क़त्ल करने की क्या ज़रूरत) **और अगर वो सच्चा हुआ तो** (ईमान न लाने पर) **जिस** (अज़ाब) **की वो ख़बर दे रहा है उसमें से कुछ तो तुम पर** (ज़रूर ही) **पड़ेगा** (तो इस सूरत में क़त्ल करने से और ज़्यादा मुसीबत अपने सर लेना है), **अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी को हिदायत नहीं देता** (यानी कामयाब नहीं करता) **जो** (अपनी) **हद से बढ़ जाने वाला** (और) **बहुत झूट बोलने वाला हो** (चाहे कुछ दिन उसकी बात चल जाए मगर अन्जाम नाकामी है)(28) **ऐ मेरे भाइयों आज तो तुम्हारा राज है इस ज़मीन में तुम हाकिम हो, लेकिन अल्लाह के अज़ाब में हमारी कौन मदद करेगा अगर** (इनके क़त्ल करने से) **वो हम पर आपड़ा** (जैसा इनके सच्चा होने की सूरत में इस का ख़तरा है), **फ़िरऔन ने** (ये बातें सुनकर जवाब में) **कहा कि मैं तो तुम को वो ही राय दूंगा जो ख़ुद समझ रहा हूं** (कि इन का क़त्ल कर देना ही ठीक है) **और मैं तुम को भलाई का रास्ता बताता हूं(29) और उस मोमिन ने** (जब देखा कि नर्मी की नसीहत से काम नहीं चलता तो डराने के लिए) **कहा कि साहिबो मुझे डर है कि तुम पर भी दूसरी उम्मतों जैसा बुरा दिन न आजाए(30) जैसा कि नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम और आद और समूद और बाद वालों** (यानी क़ौमे लूत) **का हाल हुआ था, और अल्लाह तआ़ला तो बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं चाहता** (लेकिन जब तुम काम ही ऐसे करोगे तो ज़रूर सज़ा पाओगे)(31) **और** (यह डराना था दुनिया के अज़ाब से आगे आख़रत के अज़ाब से डराना है कि) **साहिबो मुझ को तुम पर उस दिन का डर है जिसमें चीख़ पुकार मची**

होगी(32) **जिस दिन** (हिसाब की जगह से) **पीठ फेर कर** (दोज़ख़ की तरफ़) **लौटोगे** (और उस वक़्त) **तुम को अल्लाह** (के अज़ाब) **से कोई बचाने वाला न होगा** (और यह बातें ऐसी हैं कि ईमान ले आना चाहिए लेकिन) **जिस को अल्लाह गुमराह करे उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं**(33) **और इससे पहले तुम लोगों** (यानी तुम्हारे बड़ों) **के पास यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम तौहीद व पैग़म्बरी की) **दलीलें लेकर आ चुके हैं तो तुम** (यानी तुम्हारे बड़े) **उन बातों में भी बराबर शक** (व इनकार) **ही में** (पड़े) **रहे जो वो तुम्हारे पास लेकर आए थे, यहां तक कि जब वो इन्तिक़ाल कर गये तो तुम कहने लगे कि बस अब अल्लाह किसी पैग़म्बर को न भेजेगा** (कि जब इन को नहीं माना तो दूसरे को भेजने से क्या फ़ाइदा तो सदा के लिए यह झगड़ा ख़त्म हो गया, असली मंशा पैग़म्बरी का इनकार है)**, इसी तरह अल्लाह तआ़ला आपे से बाहर हो जाने वाले** (और) **शक करने वाले लोगों को ग़लती में डाले रखता है**(34) **जो अपने पास किसी सनद के मौजूद हुए बिना झगड़े निकाला करते हैं, इस बात से अल्लाह तआ़ला को बड़ी नफ़रत है और मोमिनों को भी, और** (जिस तरह तुम्हारे दिलों पर बन्द लगा रक्खा है) **इसी तरह अल्लाह तआ़ला हर घमन्डी सितमगर के दिल पर बन्द लगा देता है** (कि वो सही बात समझ नहीं सकता ये नसीहतें उन बुज़ुर्ग मोमिन की हैं जो फ़िरऔन के ख़ानदान में से हैं)(35) **और फ़िरऔन ने** (जो ये लाजवाब बातें सुनीं तो उस मोमिन को कुछ जवाब न दे सका मगर हटधर्मी से) **कहा ऐ हामान मेरे लिए एक ऊंची इमारत बनवाओ** (मैं उस पर चढ़ कर देखूंगा) **शायद मैं उन रास्तों तक पहुंच जाऊं**(36) **जो आसमान के रास्ते हैं फिर** (वहां जाकर) **मूसा के ख़ुदा को झांक कर देखूं और मैं तो मूसा को** (उस के दावे में) **झूटा समझता हूं, और इसी तरह फ़िरऔन के** (और) **बुरे काम भी उसको अच्छे लगते थे और** (सीधे) **रास्ते से रूक गया, और** (मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबिले में बड़ी-बड़ी चालें चलीं मगर) **फ़िरऔन की हर चाल बेकार गई** (किसी में कामयाब न हुआ)(37) **और उस मोमिन ने** (फिर) **कहा कि ऐ भाइयों तुम मेरे रास्ते पर चलो मैं तुम को ठीक-ठीक रास्ता बताता हूं**(38) **ऐ भाइयों यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस थोड़े दिनों की है, और** (असल) **रहने की जगह तो आख़िरत है**(39) (जहां बदला देने का क़ानून यह है कि) **जो आदमी गुनाह करता है तो उस को उसी के बराबर बदला दिया जाएगा और जो नेक काम करता है चाहे मर्द हो या औरत शर्त यह है कि मोमिन हो ऐसे लोग जन्नत में जाएंगे** (और) **वहां उन को बेहिसाब रोज़ी मिलेगी**(40) **और** (यह भी कहा) **ऐ मेरे भाइयों यह क्या बात है कि मैं तुम को बख़्शिश** (यानी अज़ाब से बचाव के रास्ते) **की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझ को दोज़ख़** (के

रास्ते) **की तरफ़ बुलाते हो**(41) (यानी) **तुम मुझ को इस बात की तरफ़ बुलाते हो कि** (अल्लाह की पनाह) **मैं अल्लाह के साथ कुफ्ऱ करूं और ऐसी चीज़ को उस का साझी बनाऊं जिसके** (साझी होने की) **मेरे पास कोई दलील भी नहीं, और मैं तुम को उस ज़बरदस्त** (ताक़त वाले और) **गुनाह बख़्शने वाले** (अल्लाह) **की तरफ़ बुलाता हूं**(42) **यक़ीनी बात है कि तुम जिस चीज़ की** (इबादत की) **तरफ़ मुझ को बुलाते हो वो न तो दुनिया में** (किसी दुनिया की ज़रूरत के लिए) **पुकारे जाने के लाइक़ है और न** (अज़ाब दूर करने के लिए) **आख़रत ही में और** (यक़ीनी बात है कि) **हम सब को अल्लाह के पास जाना है और** (यक़ीनी बात है कि) **जो लोग** (बन्दगी की) **हद से निकल रहे हैं** (जैसे अल्लाह के सिवा दूसरों की इबादत करने वाले) **वो सब दोज़ख़ी होंगे**(43) **सो** (अब तो मेरा कहना तुम्हारे जी को नहीं लगता मगर) **आगे चलकर तुम मेरी बात को याद करोगे, और** (क्योंकि उस मोमिन को यह ख़तरा पहले से है कि ये लोग इस नसीहत पर मेरे ख़िलाफ़ हो जाएंगे इसलिए यह भी कहा कि) **मैं अपना काम अल्लाह को सौंपता हूं, अल्लाह तआ़ला सब बन्दों का** (ख़ुद) **रखवाला है** (मैं तुम से बिलकुल नहीं डरता)(44) **फिर अल्लाह तआ़ला ने उस** (मोमिन) **को उन की बुरी चालों से बचाए रक्खा और फ़िरऔन** (और उस) **के लोगों को तकलीफ़ देने वाले अज़ाब ने आ घेरा**(45) **वो लोग** (उस दुनिया में) **सुबह व शाम आग के सामने लाए जाते हैं** (और उन को बताया जाता है कि तुम क़ियामत के दिन इसमें दाख़िल किये जाओगे) **और जिस दिन क़ियामत आजाएगी** (हुक्म होगा) **फ़िरऔन** (और उस) **के लोगों को बहुत सख़्त अज़ाब में दाख़िल करो**(46)।

नोटः- एक हदीस में है कि "इन्सान के बदन में एक गोश्त का टुकड़ा (यानी दिल) ऐसा है जिसके ठीक होने से सारा बदन ठीक हो जाता है और उसके ख़राब होने से सारा बदन ख़राब हो जाता है"। (क़ुरतबी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि फ़िरऔन वालों की रूहें काले परिन्दों की शकल में हर दिन सुबह व शाम दो बार जहन्नम के सामने लाई जाती हैं और जहन्नम को दिखाकर उनसे कहा जाता है कि तुम्हारा ठिकाना यह है। (मज़हरी)

एक हदीस में है कि सिद्दीक़ीन चन्द हैं एक हबीब नज्जार जिसका ज़िक्र सूरत यासीन में है दूसरे मूमिन आले फ़िरऔन तीसरे अबूबक्र और वो उन सब में अफ़ज़ल हैं। (क़ुरतबी)

وَ اِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا
نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿۴۷﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿۴۸﴾ وَ قَالَ الَّذِيْنَ فِى النَّارِ
لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿۴۹﴾ قَالُوْٓا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ
قَالُوْا بَلٰى ؕ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿۵۰﴾

आयत नं० 47 से 50

और (वो वक़्त भी याद रक्खो) **जब कि काफ़िर लोग दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो छोटे दर्जे के लोग** (यानी पीछे चलने वाले) **बड़े दर्जे के लोगों से** (यानी जिन की वो दुनिया में बात माना करते थे) **कहेंगे कि हम** (दुनिया में) **तुम्हारे कहने में चलते थे क्या तुम हम से आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो** (यानी जब तुम ने दुनिया में हमें अपना ताबेदार बना रक्खा था तो आज तुम्हें हमारी मदद करना चाहिए)(47) **वो बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही दोज़ख़ में हैं** (यानी हम अपना ही अज़ाब कम नहीं कर सकते तो तुम्हारा क्या करेंगे) **अल्लाह तआ़ला** (अपने) **बन्दों के बीच** (खुला) **फ़ैसला कर चुका** (है अब इसको बदलने की किस में हिम्मत) **है**(48) **और** (उसके बाद) **जितने लोग दोज़ख़ में होंगे** (यानी बड़े और पीछे चलने वाले सब मिलकर) **दोज़ख़ के दारोग़ा फ़रिशतों से कहेंगे कि तुम ही अपने रब से दुआ करो कि किसी दिन तो हम से अज़ाब हलका कर दे** (यानी एक दिन की तो अज़ाब से छुट्टी मिल जाया करे)(49) **फ़रिशते कहेंगे कि** (यह बताओ) **क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पैग़म्बर मोजिज़े लेकर नहीं आते रहे** (और दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा नहीं बताते रहे थे), **दोज़ख़ी कहेंगे हां आते तो रहे थे** (मगर हमने उनका कहना न माना), **फ़रिशते कहेंगे कि तो फिर** (हम तुम्हारे लिए दुआ नहीं कर सकते क्योंकि काफ़िरों के लिए दुआ करने की हम को इजाज़त नहीं है) **तुम ही** (अगर जी चाहे तो ख़ुद) **दुआ कर लो, और** (तुम्हारी दुआ का भी कुछ नतीजा न होगा क्योंकि) **काफ़िरों की दुआ** (आख़रत में) **बेअसर है** (क्योंकि आख़रत में कोई दुआ बिना ईमान के क़ुबूल नहीं हो सकती और ईमान का मौक़ा दुनिया ही में था वो तुम खो चुके)(50)

नोटः- दुनिया में तो काफ़िरों की दुआ भी क़ुबूल हो सकती है जैसे कि सबसे बड़े काफ़िर इबलीस की सबसे बड़ी दुआ क़ियामत तक ज़िन्दा रहने की क़ुबूल कर ली गई मगर आख़रत में बिना ईमान के दुआ क़ुबूल नहीं हो सकती।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝٥١ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ
مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝٥٢ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
الْكِتٰبَ ۝٥٣ هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ۝٥٤ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ۝٥٥ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ مَّا
هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝٥٦ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَ
لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٧ وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ۬ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا
الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٥٨ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٩ وَقَالَ
رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ۝٦٠ ع

आयत नं० 51 से 60

हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िनदगी में भी मदद करते हैं (जैसा ऊपर मूसा अलैहिस्सलाम के क़िस्से से मालूम हुआ) **और उस दिन भी जिसमें गवाही देने वाले** (फ़रिशते जो कि आमाल नामे लिखते थे और क़ियामत के दिन इस बात की गवाही देंगे कि पैग़म्बरों ने बात पहुंचा दी थी और काफ़िरों ने झुटलाया बस वो फ़रिशते गवाही के लिए) **खड़े होंगे(51) जिस दिन ज़ालिमों** (यानी काफ़िरों) **को उनका बहाने बनाना नफ़ा न देगा और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना है** (बस इस तरह आप और आप के पीछे चलने वाले भी कामयाब होंगे और दुशमन रूसवा और बर्बाद होंगे तो आप तसल्ली रखिए)(52) **और** (आप से पहले) **हम मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हिदायत नामा** (यानी तौरेत) **दे चुके हैं और** (फिर) **हम ने वो किताब बनी इस्राईल को पहुंचाई थी(53) वो हिदायत और नसीहत** (की किताब) **थी समझदारों के लिए** (इसी तरह आप भी पैग़म्बर हैं और आप के मानने वाले भी बनी इस्राईल की तरह आपकी किताब की ख़िदमत करेंगे और जैसे उनमें समझदार तस्दीक़ करने वाले और मानने वाले थे और कमसमझ इनकार करने वाले और मुख़ालिफ़ और इसी तरह आप की उम्मत में भी दोनों तरह के लोग हैं)(54) **सो** (इससे भी) **आप** (तसल्ली रखिए और काफ़िरों की तकलीफ़ों पर) **सब्र कीजिए बेशक अल्लाह का वादा** (बिल्कुल) **सच्चा है और** (अगर सब्र में कुछ कमी हो गई तो) **अपनी** (उस) **ग़लती की मुआफ़ी मांगिए और सुबह और शाम** (यानी पाबन्दी से) **अपने रब की हम्द के**

साथ तस्बीह करते रहिए(55) जो लोग बिना किसी सनद के कि उनके पास मौजूद हो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकाला करते हैं (इसकी वजह शक नहीं बल्कि) **उनके दिलों में निरी बड़ाई** (ही बड़ाई) **है कि वो उस तक कभी पहुंचने वाले नहीं** (क्योंकि वो अपने को बड़ा समझते हैं इसलिए कहना मानने में शर्म आती है वो ख़ुद दूसरों ही को अपना ताबेदार बनाना चाहते हैं लेकिन उनको यह बड़ाई नसीब न होगी बल्कि जल्दी ही रूसवा होंगे) **सो** (जब ये ख़ुद बड़ाई चाहते हैं तो आप से जलते हैं और दुशमनी में सब कुछ करेंगे लेकिन) **आप** (डरें नहीं बल्कि उनकी बुराई से) **अल्लाह की पनाह मांगते रहिए, बेशक वो ही है सब कुछ सुनने वाला सब कुछ देखने वाला(56) बेशक आसमानों और ज़मीन का** (शुरू में) **पैदा करना आदमियों के** (दोबारा) **पैदा करने से ज़्यादा बड़ा काम है** (जिसने इतना बड़ा काम किया उसके लिए छोटा काम क्या मुश्किल) **लेकिन अक्सर लोग** (इतनी सी बात) **नहीं समझते(57) और** (समझने वाले ऐसे हैं जैसे आंखों वाले और न समझने वाले ऐसे हैं जैसे अन्धे और) **बराबर नहीं हो सकता अन्धा और देखने वाला और** (ऐसे ही) **वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और बुरे काम करने वाले** (बराबर नहीं हो सकते), **तुम लोग बहुत ही कम समझते हो(58) क़ियामत तो ज़रूर ही आकर रहेगी उस** (के आने) **में किसी तरह का शक है ही नहीं मगर अक्सर लोग** (दलीलों को न सोचने की वजह से उसको) **नहीं मानते(59) और तुम्हारे रब ने कह दिया है कि** (दूसरों को ज़रूरत के लिए मत पुकारो बल्कि) **मुझ को पुकारो मैं** (सिवाए नामुनासिब बात के) **तुम्हारी** (हर) **दुआ क़ुबूल कर लूंगा, जो लोग** (सिर्फ़) **मेरी इबादत से** (जिसमें मुझ से दुआ मांगना भी दाख़िल है) **मुंह मोड़ते हैं** (और दूसरों को पुकारते और उनकी इबादत करते हैं यानी जो लोग शिर्क करते हैं) **वो जल्द ही** (यानी मरते ही) **रूसवा होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे(60)**

नोटः- एक हदीस में है कि दुआ मोमिन का हथियार है और दीन का सतून और आसमान व ज़मीन का नूर है। (हाकिम)

मसअलाः- किसी गुनाह या रिशतेदारी तोड़ने की दुआ मांगना हराम है वो दुआ अल्लाह तआ़ला के नज़दीक क़ुबूल भी नहीं होती।

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ
النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿۶۱﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۶۲﴾ كَذٰلِكَ یُؤْفَكُ
الَّذِیْنَ كَانُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿۶۳﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً وَّ صَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۴﴾ هُوَ الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۵﴾ قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَیِّنٰتُ مِنْ رَّبِّیْ ؗ وَ اُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۶﴾ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ
یُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَ لِتَبْلُغُوْۤا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰۤى اَمْرًا
فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۶۸﴾ ع

आयत नं० 61 से 68

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे (नफ़े के) **लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और उसी ने दिन को** (देखने के लिए) **रौशन बनाया** (ताकि आसानी से रोज़गार करो), **बेशक अल्लाह तआ़ला की लोगों पर बड़ी ही महरबानी है** (कि उनकी भलाई का कैसा ध्यान रक्खा) **लेकिन अक्सर आदमी** (इन नेमतों का) **शुक्र नहीं करते** (बल्कि उल्टा शिर्क करते हैं)(61) **यह अल्लाह है तुम्हारा रब** (जिसका ज़िक्र हुआ न वो जिन को तुम ने घड़ रक्खा है) **वो हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, सो** (तौहीद के सबूत के बाद) **तुम लोग कहां** (शिर्क करके) **उल्टे चले जा रहे हो**(62) (और) **इसी तरह वो** (पहले) **लोग भी उल्टे चला करते थे जो अल्लाह की** (बनाई व उतारी) **निशानियों का इनकार किया करते थे**(63) **अल्लाह ही है जिसने ज़मीन को तुम्हारे ठहरने की जगह बनाया और आसमान को** (ऊपर) **छत** (की तरह) **बनाया और तुम्हारी सूरत बनाई सो अच्छी सूरत बनाई** (जैसा कि सब जानते हैं कि इन्सान का नक़्शा सबसे अच्छा है) **और तुम को अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दीं,** (बस) **यह अल्लाह है तुम्हारा रब सो बड़ी ऊंची शान वाला है अल्लाह जो सारे जहान का रब है**(64) **वो ही** (सदा से है और सदा) **ज़िन्दा** (रहने वाला) **है उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं सो तुम** (सब) **ख़ालिस ऐतक़ाद करके उसको पुकारा** (करो और शिर्क न किया) **करो, सारी**

ख़ूबियां उसी अल्लाह के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है(65) (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन मुशरिकों को सुनाने के लिए) **कह दीजिए कि मुझ को इससे मना किया गया है कि मैं उन** (माबूदों) **की इबादत करूं जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो जबकि मेरे पास मेरे रब की निशानियां आ चुकीं** (मतलब यह कि शिर्क से मुझे मना किया गया है), **और मुझ को यह हुक्म हुआ है कि मैं** (सिर्फ़) **सारे जहानों के रब के सामने** (इबादत में) **गर्दन झुका दूं** (मतलब यह कि मुझ को तौहीद का हुक्म हुआ है)(66) **वो ही है जिसने तुम को** (यानी तुम्हारे बाप आदम को) **मिट्टी से पैदा किया फिर** (आगे उन की नस्ल को) **मनी से फिर जमे हुए ख़ून से फिर तुम को बच्चा करके** (मां के पेट से) **निकालता है फिर** (तुम को ज़िन्दा रखता है) **ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंचो फिर** (तुम को और ज़िन्दा रखता है) **ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और कोई-कोई तुम में से** (इन उम्रों यानी जवानी और बुढ़ापे से) **पहले ही मर जाता है और ताकि तुम सब** (अपने-अपने नसीबी) **तय वक़्त तक पहुंचा जाओ और** (यह सब कुछ इसलिए किया) **ताकि तुम लोग** (इन बातों को सोच कर अल्लाह तआला की तौहीद को) **समझो(67) वो ही है जो ज़िन्दगी देता और मौत देता है, फिर जब वो किसी काम को** (अचानक) **पूरा करना चाहता है तो बस उसके बारे में** (इतना) **कह देता है कि हो जा बस वो हो जाता है(68)**

नोटः- अल्लाह तआला ने रात को ऐसी चीज़ बनाया कि सब एक साथ आराम कर लेते हैं अगर सब के आराम का वक़्त अलग-अलग होता तो लोगों को कामों में बड़ी परीशानी होती।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ ۖ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾ إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾ فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾
ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَل لَّمْ نَكُن نَّدْعُو مِن قَبْلُ شَيْئًا ۚ
كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾ ذَٰلِكُم بِمَا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾
ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ
بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿٧٧﴾ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا
عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ
قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٨﴾

आयत नं० 69 से 78

क्या आपने उन लोगों (की हालत) **को नहीं देखा जो अल्लाह तआ़ला की आयतों में झगड़े निकालते हैं,** (हक़ से) **कहां फिरे चले जा रहे हैं**(69) **जिन लोगों ने इस किताब** (यानी क़ुरआन) **को झुटलाया और उस चीज़ को भी** (झुटलाया) **जो हम ने अपने पैग़म्बरों को देकर भेजा था** (इसमें किताबें और हुक्म और मोजिज़े सब आगये क्योंकि अरब के मुशरिक और किसी पैग़म्बर को भी नहीं मानते थे) **सो उनको अभी** (यानी क़ियामत में कि नज़दीक है) **पता लग जाएगा**(70) **जब कि पट्टे उनकी गर्दनों में होंगे और** (उन पट्टों में बन्धी होंगी) **जंजीरें,** (और उन ज़ंजीरों से) **उन को घसीटा जाएगा**(71) **खौलते हुए** (गर्म) **पानी में, फिर ये आग में झोंक दिये जाएंगे**(72) **फिर उनसे पूछा जाएगा वो कहा गये दूसरे माबूद**(73) (जिन को तुम पूजा करते थे) **अल्लाह के सिवा** (यानी वो तुम्हारी मदद क्यों नहीं करते), **वो कहेंगे कि वो सब ग़ाइब हो गये बल्कि** (सच बात तो यह है कि) **हम इससे पहले** (दुनिया में जो बुतों को पूजते थे तो अब पता चला कि) **किसी को भी नहीं पूजते** (थे यानी मालूम हुआ कि वो कोई चीज़ नहीं) **थे,** (आगे अल्लाह तआ़ला बताते हैं कि) **अल्लाह तआ़ला इसी तरह काफ़िरों को ग़लती में फ़ंसाए रखते** (हैं कि जिस चीज़ के न होने का वहां इक़रार करेंगे आज यहां उनकी इबादत में लगे) **हैं**(74) (आगे कहा जाएगा कि) **यह** (सज़ा) **उसके बदले में है कि तुम दुनिया में नाहक़ ख़ुशियां मनाते थे और उसके बदले में है कि तुम इतराते थे**(75) (और इससे पहले उनको हुक्म होगा कि) **जहन्नम के दरवाज़ों में सदा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ,** (क्योंकि अल्ला की आयतों से) **घमन्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है**(76) **बस** (जब उन से इस तरह बदला लिया जाएगा तो) **आप** (थोड़ा) **सब्र कीजिए बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, फिर जिस** (अज़ाब) **का हम उन से वादा कर रहे हैं** (कि कुफ़्र का नतीजा अज़ाब है) **उसमें कुछ थोड़ा सा** (अज़ाब) **अगर हम आप को दिखादें** (यानी आप की ज़िन्दगी में उन पर अज़ाब आजाए) **या** (उसके आने से पहले ही) **हम आप को उठालें** (फिर चाहे बाद में अज़ाब आए या न आए) **सो** (हर हालत में) **हमारे ही पास उन को आना** (होगा और उस वक़्त ज़रूर उन पर अज़ाब) **होगा (77) और** (इस बात को याद करके भी तसल्ली पाइये कि) **हम ने आप से पहले बहुत से पैग़म्बर भेजे जिन में कुछ तो वो हैं जिन का हम ने आप से बयान किया और कुछ वो हैं जिन का हमने आप से बयान नहीं किया, और** (इतनी बात सब में एक है कि) **किसी पैग़म्बर से यह न हो सका कि कोई मोजिज़ा बिना अल्लाह की इजाज़त के ले आए** (और उम्मत की हर मांग पूरी कर सके सो कुछ इसलिए भी

उनको झुटलाते रहे, इसी तरह ये लोग आप को झुटलाते हैं तो आप तसल्ली रखिये और सब्र कीजिए), **फिर जिस वक़्त अल्लाह का हुक्म** (अज़ाब के लिए) **आएगा** (चाहे दुनिया में या आख़िरत में) **ठीक-ठीक** (खुला) **फ़ैसला हो जाएगा और उस वक़्त झूट पर चलने वाले नुक़्सान में रह जाएंगे**(78)

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ (۷۹) وَ لَكُمْ فِیْهَا مَنَافِعُ وَ لِتَبْلُغُوْا عَلَیْهَا
حَاجَةً فِیْ صُدُوْرِكُمْ وَ عَلَیْهَا وَ عَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ (۸۰) وَ یُرِیْكُمْ اٰیٰتِهٖ فَاَیَّ اٰیٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ (۸۱) اَفَلَمْ
یَسِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَیَنْظُرُوْا كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْۤا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَ اَشَدَّ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا
فِی الْاَرْضِ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ (۸۲) فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ
الْعِلْمِ وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ (۸۳) فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَ كَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ
مُشْرِكِیْنَ (۸۴) فَلَمْ یَكُ یَنْفَعُهُمْ اِیْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ فِیْ عِبَادِهٖ ۚ وَ خَسِرَ
هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ (۸۵)

आयत नं० 79 से 85

अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए जानवर बनाए ताकि उनमें कुछ पर सवारी करो और उनमें कुछ (ऐसे हैं कि उन को) **खाते भी हो**(79) **और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत से फ़ाइदे हैं** (कि उनके बाल और ऊन काम आती है) **और** (इसलिए बनाए) **ताकि तुम उन पर** (सवार होकर) **अपने मतलब** (की जगह) **तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में है** (जैसे किसी से मिलने के लिए जाना कारोबार के लिए जाना) **और** (सवार होने में कुछ उनही की ख़ास बात नहीं बल्कि) **उन पर** (भी) **और कशती पर** (भी) **सवार होते हो**(80) **और** (इनके सिवा) **तुम को अपनी** (कुदरत की) **और निशानियां दिखाता रहता** (है जैसा कि हर बनाई हुई चीज़ उस की कुदरत की एक निशानी) **है फिर तुम अल्लाह की कौन-कौन सी निशानियों का इनकार करोगे**(81) (और ये लोग जो सबूतों के बाद भी तौहीद का इनकार करते हैं तो क्या इन को शिर्क के अन्जाम की ख़बर नहीं और) **क्या इन लोगों ने मुल्क में चल फिर कर नहीं देखा कि जो** (मुशरिक) **लोग इनसे पहले हो चुके हैं** (इस शिर्क की वजह से) **उन का कैसा अन्जाम हुआ,** (हालांकि) **वो लोग इन से**

(गिनती में भी) **ज़्यादा थे और बढ़े हुए थे ताक़त और यादगारों में** (भी) **जो कि ज़मीन में छोड़ गये हैं** (जैसे इमारतें) **सो उन की** (यह सब) **कमाई उनके कुछ काम न आई** (और अल्लाह के अज़ाब से बच न सके)(82) **बस जब उन के पैग़म्बर उन के पास खुली दलीलें लेकर आए तो वो लोग अपने** (उस रोज़गारी) **इल्म पर इतराने लगे जो उनके पास था** (यानी रोज़गार को असल समझा और उसकी जानकारी पर खुश हुए और आख़रत के इल्म की हंसी उड़ाई) **और** (इसके नतीजे में) **उन पर वो अज़ाब आपड़ा जिसकी हंसी उड़ाते थे(83) फिर जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा तो कहने लगे** (अब) **हम अल्लाह अकेले पर ईमान लाए और उन सब चीज़ों का इनकार कर दिया जिन को हम उसके साथ साझी ठहराते थे(84) लेकिन जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो उनके ईमान लाने से फ़ाइदा नहीं हुआ** (क्योंकि वो ईमान लाना मजबूरी का है और बन्दे का ईमान आज़ादी और मर्ज़ी से होना चाहिए)**, अल्लाह तआ़ला ने अपना ये ही दस्तूर बनाया हुआ है जो उसके बन्दों में पहले से होता चला आया है और उस वक़्त** (यानी जब कि ईमान का नफ़ा न हुआ) **काफ़िर नुक़सान में रह गये** (बस इन मुशरिकों को भी यह समझ कर डरना चाहिए उनके लिए भी ये ही होगा फिर बिगड़ी बात न बन सकेगी)(85)

नोटः- एक हदीस में है कि "अल्लाह तआ़ला बन्दे की तौबा उस वक़्त से पहले-पहले क़ुबूल करते हैं जिस वक़्त तक मौत का ग़रगरा न आजाए (यानी मौत की निशानी सामने आजाए)"। इसी तरह आसमानी अज़ाब सामने आजाने के बाद किसी की तौबा और ईमान क़ुबूल नहीं होता।

(इब्ने कसीर)

41-सूरत-हामीम सजदा

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '54' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۚ ﴿۱﴾ تَنۡزِيۡلٌ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۚ ﴿۲﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتۡ اٰيٰتُهٗ قُرۡاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوۡمٍ يَّعۡلَمُوۡنَ ۙ ﴿۳﴾ بَشِيۡرًا وَّ نَذِيۡرًا ۚ
فَاَعۡرَضَ اَكۡثَرُهُمۡ فَهُمۡ لَا يَسۡمَعُوۡنَ ﴿۴﴾ وَ قَالُوۡا قُلُوۡبُنَا فِىۡۤ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ اِلَيۡهِ وَ فِىۡۤ اٰذَانِنَا وَقۡرٌ وَّ مِنۡۢ
بَيۡنِنَا وَ بَيۡنِكَ حِجَابٌ فَاعۡمَلۡ اِنَّنَا عٰمِلُوۡنَ ﴿۵﴾ قُلۡ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمۡ يُوۡحٰۤى اِلَىَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمۡ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ
فَاسۡتَقِيۡمُوۡۤا اِلَيۡهِ وَ اسۡتَغۡفِرُوۡهُ ؕ وَ وَيۡلٌ لِّلۡمُشۡرِكِيۡنَ ۙ ﴿۶﴾ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡتُوۡنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمۡ بِالۡاٰخِرَةِ هُمۡ كٰفِرُوۡنَ ﴿۷﴾
اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ﴿۸﴾ ع

आयत नं० 01 से 08

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **यह कलाम बड़े महरबान बहुत रहम वाले** (अल्लाह) **की तरफ़ से उतारा हुआ है(02) यह** (कलाम) **एक किताब है जिसकी आयतें साफ़- साफ़ बयान की गई हैं यानी ऐसा कुरआन है जो अरबी** (ज़बान में है ताकि अरब के लोग आसानी से समझ लें क्योंकि पहले उन को ही समझना) **है** (और) **ऐसे लोगों के लिए** (नफ़ा देने वाला है) **जो समझदार** (हैं यानी हुक्म तो सब के लिए हैं मगर उनसे नफ़ा वो ही लोग उठाते हैं जो समझबूझ रखते) **हैं(03)** (कुरआन मानने वालों को) **खुशख़बरी देने वाला है और** (न मानने वालों को अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला सो** (चाहिए तो यह था कि सभी इस पर ईमान लाते मगर) **अक्सर लोगों ने** (इससे) **मुंह मोड़ रक्खा है फिर वो सुनते ही नहीं(04) और** (जब आप उनको सुनाते हैं तो) **वो लोग कहते हैं कि जिस बात की तरफ़ आप हम को बुलाते हैं हमारे दिल उससे पर्दों में हैं** (यानी आप की बात हमारी समझ में नहीं आती) **और हमारे कानों में डाट** (लगी) **है और हमारे और आप के बीच में एक पर्दा है इसलिए आप अपना काम किये जाइये हम अपना काम कर रहे** (हैं यानी हम से मानने की उम्मीद न रखिये हम अपने तरीक़े को छोड़ने

वाले नहीं) **हैं(05)** (ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि** (तुम्हें ईमान पर मजबूर कर देना तो मेरे बस की बात नहीं, क्योंकि) **मैं भी तुम ही जैसा इन्सान हूं** (ख़ुदा नहीं जो दिलों को बदल सकूं लेकिन फ़र्क़ यह है कि) **मुझ पर यह वही उतरती है कि तुम्हारा माबूद एक ही** (है और यह वही ऐसी है कि हर आदमी सोचे तो इसका सही होना उसकी समझ में आ सकता) **है** (और जबकि मेरी पैग़म्बरी और वही मोजिज़ों से साबित हो चुकी तो मेरी बात मानना सब पर फ़र्ज़ है) **इसलिए उस** (सच्चे माबूद) **की तरफ़ सीध बान्ध लो** (यानी उसके सिवा किसी की इबादत की तरफ़ ध्यान न करो) **और उससे मुआफ़ी** (मांगो यानी पहले शिर्क के कामों से तौबा करो और अपनी ग़लती की मुआफ़ी) **मांगो, और** (ऐसे) **मुशरिकों के लिए बड़ी ख़राबी है(06) जो** (पैग़म्बरी की दलीलों के देखने और तौहीद की दलीलों को सुनने के बावजूद अपने ग़लत तरीक़े को नहीं छोड़ते और) **ज़कात नहीं देते और वो आख़रत का इनकार ही करते रहते हैं(07)** (और इसके उलट) **जो लोग ईमान ले आए और उन्होंने नेक काम किये उनके लिए** (आख़रत में) **ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म नहीं होगा(08)**

नोटः- मोमिन जिन नेक कामों का आदी होता है अगर किसी बीमारी या सफ़र या किसी मजबूरी से किसी वक़्त वो नेक काम छूट भी जाए तो भी उस का सवाब रोका नहीं जाता बल्कि अल्लाह तआला फ़रिशतों को हुक्म देते हैं कि मेरा बन्दा जो नेक काम अपनी तन्दरूस्ती और फ़ुर्सत के वक़्त में पाबन्दी से किया करता था उसकी मजबूरी की हालत में भी वो नेक काम उसके किये बिना भी उसके आमाल नामे में लिखे जाते रहें। "लहुम अजरून ग़ैरू ममनून"। (मज़हरी)

قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِیْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِیْ یَوْمَیْنِ وَ تَجْعَلُوْنَ لَهٗۤ اَنْدَادًا ؕ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۚ۝۹ وَ جَعَلَ
فِیْهَا رَوَاسِیَ مِنْ فَوْقِهَا وَ بٰرَكَ فِیْهَا وَ قَدَّرَ فِیْهَاۤ اَقْوَاتَهَا فِیْۤ اَرْبَعَةِ اَیَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآىِٕلِیْنَ ۝۱۰ ثُمَّ اسْتَوٰۤی
اِلَی السَّمَآءِ وَ هِیَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَ لِلْاَرْضِ ائْتِیَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَاۤ اَتَیْنَا طَآىِٕعِیْنَ ۝۱۱ فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ
سَمٰوٰتٍ فِیْ یَوْمَیْنِ وَ اَوْحٰی فِیْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ ۖۗ وَ حِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ
الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ۝۱۲

आयत नं० 09 से 12

आप (उन लोगों से) **कह दीजिए कि क्या तुम लोग ऐसे अल्लाह का इनकार करते हो जिसने ज़मीन को** (इतनी बड़ी होने के बावजूद) **दो दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा कर दिया और**

तुम (दूसरों को इबादत में) **उसके साझी बनाते हो, वो** (अल्लाह जिस की कुदरत ऐसी है) **सारे जहानों का रब है(09) और उसने ज़मीन में उसके ऊपर उभरे हुए पहाड़ बना दिये और उस** (ज़मीन) **में फ़ाइदे की चीज़ें रख दीं** (जैसे खेती और जानवर) **और उस** (ज़मीन) **में उस** (के रहने वालों) **की ख़ुराकें बनाईं** (कि हर इलाक़े के लोगों के लिए उनके हिसाब से चीज़ें पैदा की यह सब) **चार दिन में** (हुआ दो दिन में ज़मीन दो दिन पहाड़ जो गिनती में) **पूरे हैं, पूछने वालों के लिए** (यानी उन लोगों के लिए जो दुनिया के पैदा होने के बारे में पूछते हैं)(10) **फिर** (ये सब कुछ पैदा करके) **आसमान** (के बनाने) **की तरफ़ ध्यान किया और वो उस वक़्त धुंआ सा था सो उससे और ज़मीन से कहा कि तुम दोनों** (को हमारा हुक्म मानने की तरफ़ आना तो ज़रूर पड़ेगा अब तुम चाहे) **ख़ुशी से आओ या ज़बरदस्ती से, दोनो ने कहा कि हम ख़ुशी से** (उन हुक्मों के लिए) **हाज़िर हैं(11) सो दो दिन में उसके सात आसमान बना दिये और** (क्योंकि सातों आसमानों को फ़रिशतों से आबाद कर दिया गया था इसलिए) **हर आसमान में उस के मुनासिब अपना हुक्म** (फ़रिशतों को) **भेज दिया** (यानी जिन फ़रिशतों से जो काम लेना था वो उनको बता दिया), **और हम ने इस नज़दीक वाले आसमान को सितारों से सजाया और** (शैतानों को आसमानी ख़बरें चोरी करने से रोकने के लिए) **उसकी हिफ़ाज़त की, यह तय किया हुआ है** (अल्लाह) **ज़बरदस्त** (कुदरत वाले) **ख़बरदार का(12)**

नोटः- ज़मीन व आसमान ने कहा कि हम ख़ुशी से हाज़िर हैं। ज़मीन की तरफ़ से यह जवाब ज़मीन के उस हिस्से ने दिया था जिस पर बैतुल्लाह (ख़ाना काबा) की तामीर हुई। और आसमान के हिस्से ने जो बैतुल्लाह के ऊपर आसमान में है जिस को बैतुल मामूर (एहले आसमान का काबा) कहा जाता है। (इब्ने कसीर)

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ ﴿۱۳﴾ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَیْنِ اَیْدِیْهِمْ وَ
مِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓىِٕكَةً فَاِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ فَاَمَّا عَادٌ
فَاسْتَكْبَرُوْا فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَ قَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَ لَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِیْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ
مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَ كَانُوْا بِاٰیٰتِنَا یَجْحَدُوْنَ ﴿۱۵﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِیْحًا صَرْصَرًا فِیْۤ اَیَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِیْقَهُمْ
عَذَابَ الْخِزْیِ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ؕ وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰی وَ هُمْ لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۶﴾ وَ اَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَیْنٰهُمْ

فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ نَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ وَ يَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ
سَمْعُهُمْ وَ اَبْصَارُهُمْ وَ جُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَ قَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا
اللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّ هُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَ مَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ
عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَ لَآ اَبْصَارُكُمْ وَ لَا جُلُوْدُكُمْ وَ لٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَ ذٰلِكُمْ
ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَ اِنْ
يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَ قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ حَقَّ
عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾

आयत नं० 13 से 25

फिर (तौहीद की दलीलें सुन कर भी) **अगर ये लोग** (तौहीद से) **मुंह फेरते हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तुम को ऐसे सख़्त अज़ाब से डराता हूं जैसा आद व समूद पर** (शिर्क व कुफ़्र की वजह से) **अज़ाब आया था(13)** (और उन का क़िस्सा उस वक़्त हुआ था) **जबकि** (उन को समझाने के लिए) **उन के पास उनके आगे से भी और उनके पीछे से भी पैग़म्बर आए** (यानी उनको समझाने की हर तरह कोशिश की गई और उन पैग़म्बरों ने ये ही कहा) **कि सिवाए अल्लाह के और किसी की इबादत न करो, उन्होंने जवाब दिया कि** (तुम जो अल्लाह की तरफ़ से आने का और तौहीद की तरफ़ बुलाने का दावा करते हो ये ही ग़लत है क्योंकि) **अगर हमारा रब चाहता** (कि किसी को पैग़म्बन बनाकर भेजे) **तो फ़रिशतों को भेजता इसलिए हम उस** (तौहीद) **का** (भी) **इनकार करते हैं जिस को देकर** (तुम्हारे दावे से) **तुम** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजे गये हो(14) फिर आद** (का क़िस्सा तो यह हुआ वो लोग) **दुनिया में नाहक़ घमन्ड करने लगे और** (जब अज़ाब की बात सुनी तो) **कहने लगे वो कौन है जो ताक़त में हम से ज़्यादा है** (कि वो हमें ऐसे अज़ाब में पकड़े और हम उसे दूर न कर सकें, आगे जवाब है कि) **क्या उन लोगों को यह नज़र न आया कि जिस अल्लाह ने उन को पैदा किया है वो ताक़त में उन से बहुत ज़्यादा है,** (मगर इसके बावजूद भी वो ईमान न लाए) **और हमारी आयतों का इनकार करते रहे(15) तो हम ने उन पर एक तेज़ आंधी ऐसे दिनों में भेजी जो** (अज़ाब आने की वजह से उनके हक़ में) **मनहूस थे ताकि हम उन**

को इस दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई के अज़ाब का मज़ा चखा दें, और आख़रत का अज़ाब और भी ज़्यादा रूसवा करने वाला है और (उस अज़ाब के वक़्त किसी तरफ़ से भी) **उन को मदद न पहुंचेगी(16) और वो जो समूद थे तो** (उनकी हालत यह हुई कि) **हमने उन को** (पैग़म्बर के वास्ते से) **सीधा रास्ता बताया उन्होंने गुमराही को हिदायत के मुक़ाबिले में पसन्द किया तो उन को रूसवाई के अज़ाब की आफ़त ने पकड़ लिया उनके बुरे कामों की वजह से(17) और हमने** (उस अज़ाब से) **उन लोगों को बचा दिया जो ईमान लाए और हम से डरते थे(18) और** (आगे आख़रत के अज़ाब का ज़िक्र है कि उन को वो दिन भी याद दिलाइये) **जिस दिन अल्लाह के दुशमन** (यानी काफ़िर लोग) **दोज़ख़ की तरफ़ जमा कर**(ने) **के**(लिए हिसाब की जगह) **लाए जाएंगे फिर** (ज़्यादा होने की वजह से) **वो रोके जाएंगे** (ताकि पीछे रहने वाले साथ हो जाएं)**(19) यहां तक कि जब वो** (सब जमा होकर) **उस** (दोज़ख़) **के पास पहुंच जाएंगे** (यानी हिसाब की जगह जहां से दोज़ख़ पास ही नज़र आएगी और हिसाब शुरू होगा) **तो उनके कान और आंखें और उनकी खालें उनके ख़िलाफ़ उनके कामों की गवाही देंगे(20) और** (इस वक़्त) **वो लोग** (हैरानी से) **अपने जिस्म के हिस्सों से कहेंगे कि तुम ने हमारे ख़िलाफ़ क्यों गवाही दी** (हम तो दुनिया में सब कुछ तुम्हारे ही आराम के लिए करते थे)**, वो** (हिस्से) **जवाब देंगे हम को उस** (क़ुदरत वाले ने) **बोलने की ताक़त दी और उसी ने तुम को पहली बार पैदा किया था और उसी के पास फिर** (दोबारा ज़िन्दा करके) **लाए गये हो** (तो हम ऐसे बड़े और क़ुदरत वाले के पूछने पर हक़ बात कैसे छुपा सकते थे इसलिए गवाही देदी)**(21) और** (आगे अल्लाह तआला काफ़िरों को कहेंगे कि) **तुम** (दुनिया में) **इस बात से तो अपने को** (किसी तरह) **छुपा** (और बचा) **ही न सकते थे कि तुम्हारे कान और आंखे और खालें तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही दें लेकिन तुम** (इसलिए बुराई से न बचे कि) **इस गुमान में रहे कि अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे बहुत से कामों की ख़बर भी नहीं(22) और तुम्हारे इसी गुमान ने जो कि तुम ने अपने रब के साथ किया था तुम को बर्बाद किया** (क्योंकि इस गुमान से कुफ़्र के काम किये जिसकी वजह से बर्बाद हुए) **फिर तुम** (सदा के) **नुक़सान में पड़ गये(23) सो** (इस हालत में) **अगर ये लोग** (उस बर्बादी व नुक़सान पर) **सब्र करें** (यानी शिकायत न करें) **तब भी दोज़ख़ ही उन का ठिकाना है** (यह नहीं कि सब्र पर रहम हो जाए जैसा कि दुनिया में अक्सर ऐसा हो जाता था) **और अगर वो मजबूरी बताना चाहेंगे तो भी क़ुबूल न होगी(24) और हम ने** (दुनिया में) **उन** (काफ़िरों) **के लिए कुछ साथ रहने वाले** (शैतान) **लगा दिये थे सो उन्होंने उनके अगले पिछले कामों को उन की नज़र में सजा रक्खा था** (इसलिए

उनको करते थे) **और** (कुफ़्र पर जमे रहने की वजह से) **उन के हक़ में भी उन लोगों के साथ अल्लाह की बात** (यानी अज़ाब का वादा) **पूरा होकर रहा जो इनसे पहले जिन्नात और इन्सान** (काफ़िर) **हुए हैं, बेशक वो भी नुक़सान में रहे**(25)

नोटः- हदीसों से साबित है कि कोई दिन या रात अपने आप में मनहूस नहीं है क़ौमे आद पर आने वाले तूफ़ान के दिनों को मनहूस कहने का मतलब यह है कि ये दिन उस क़ौम के हक़ में उनके बुरे कामों की वजह से मनहूस हो गये थे इस का यह मतलब नहीं कि ये दिन सब के लिए मनहूस हों। (बयानुल क़ुरआन)

हदीसः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "आने वाला दिन इन्सान को यह आवाज़ देता है कि मैं नया दिन हूं और जो कुछ तू मेरे अन्दर अमल करेगा मैं क़ियामत में उस पर गवाही दूंगा। इसलिए तुझे चाहिए कि मेरे ख़त्म होने से पहले-पहले कोई नेकी करे कि मैं उसकी गवाही दूं। और अगर मैं चला गया तो फिर तू मुझे कभी न पाएगा"। इसी तरह हर रात इन्सान को ये ही आवाज़ देती है। (क़ुरतबी)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَٰذَا الْقُرْآنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ۝٢٦ فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا
شَدِيدًا وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٢٧ ذَٰلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارُ ۖ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ ۖ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝٢٨ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ
نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝٢٩

आयत नं० 26 से 29

और ये काफ़िर (आपस में) **यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को सुनो ही नहीं और** (अगर पैग़म्बर सुनाने भी लगें तो) **उसके बीच में शोर मचा दिया करो शायद** (इस चाल से) **तुम ही हावी रहो** (और पैग़म्बर हार कर चुप हो जाएं)(26) **तो** (उन के इस नापाक इरादे के बदले में) **हम उन काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे और उन को उनके बुरे-बुरे कामों की सज़ा देंगे**(27) **ये ही सज़ा है अल्लाह के दुशमनों की यानी दोज़ख़, उनके लिए वहां सदा रहने का**

घर होगा, इस बात के बदले में कि वो हमारी आयतों का इनकार किया करते थे(28) **और** (जब अज़ाब में गरिफ़्तार होंगे तो) **वो काफ़िर कहेंगे या रब हमारे हम को वो दोनों शैतान और इन्सान दिखा दीजिए जिन्होंने हम को गुमराह किया था हम उन को अपने पैरों के नीचे रोन्द डालें ताकि वो ख़ूब रूसवा** (हों यानी उनको उस वक़्त उन लोगों पर ग़ुस्सा आएगा जिन्होंने उनको दुनिया में बहकाया था आदमी भी और शैतान भी चाहे एक-एक हों या बहुत से) **हों** (और यूं तो ये गुमराह करने वाले भी जहन्नम में ही होंगे मगर उस बातचीत के वक़्त वो उनके सामने नहीं होंगे)(29)

नोटः- ऊपर आयत से पता चला कि क़ुरआन की तिलावत में रूकावट डालने की नीयत से शोर करना तो कुफ़्र की निशानी है इससे ये भी पता चला कि चुप होकर सुनना वाजिब और ईमान की निशानी है।

मसअलाः- जहां लोग अपने काम धन्दों में लगे हों और क़ुरआन की तरफ़ कोई ध्यान न दे रहे हों वहां क़ुरआन सुनाना ठीक नहीं जैसा कि आजकल होटलो बाज़ारों और गाड़ियों में होता है कि टेप रिकार्ड चला देते हैं क़ुरआन की तिलावत हो रही है और सुनता कोई नहीं।

(मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ
الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ وَ
لَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَ
قَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَ
بَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾ وَإِمَّا
يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

आयत नं० 30 से 36

जिन लोगों ने (दिल से) **इक़रार कर लिया कि हमारा** (सच्चा) **रब** (सिर्फ़) **अल्लाह है** (मतलब यह है कि शिर्क छोड़ कर तौहीद अपनाई) **फिर** (उस पर) **जमे रहे** (यानी उस को छोड़ा

नहीं) **उन पर** (अल्लाह की तरफ़ से रहमत व ख़ुशख़बरी के) **फ़रिशते उतरेंगे** (पहले मौत के वक़्त फिर क़ब्र में फिर क़ियामत में और कहेंगे) **कि तुम न** (आख़िरत की हालतों से) **डरो और न** (दुनिया के छोड़ने पर) **ग़म करो** (क्योंकि आगे तुम्हारे लिए इसका अच्छा बदला और अमन चैन है) **और तुम जन्नत** (के मिलने) **पर ख़ुश रहो जिसका तुम से वादा किया जाया करता था(30) हम तुम्हारे साथी थे दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी रहेंगे** (दुनिया में फ़रिशतों का साथी होना यह है कि वो इन्सान के दिल में नेक कामों की बात डालते थे और मुसीबत के वक़्त सब्र व तसल्ली फ़रिशतों के साथ का असर होता है और आख़िरत में साथी होना तो आमने सामने खुलकर होगा), **और तुम्हारे लिए इस** (जन्नत) **में जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है और ऐसे ही तुम्हारे लिए उसमें जो मांगोगे मौजूद है** (यानी जो कुछ ज़बान से मांगोगे वो तो मिलेगा ही बल्कि मांगने की भी ज़रूरत न होगी जिस चीज़ को तुम्हारा दिल चाहेगा मौजूद हो जाएगी)(31) **यह महमानी होगी बख़्शने वाले महरबान की तरफ़ से** (यानी ये नेमतें इज़्ज़त के साथ इस तरह मिलेंगी जिस तरह महमानों को मिलती हैं)(32) **और उससे बेहतर किसकी बात हो सकती है जो** (लोगों को) **अल्लाह की तरफ़ बुलाए और** (ख़ुद भी) **नेक काम करे और** (यह भी) **कहे कि मैं ताबेदारों में से हूं** (यानी बन्दगी को अपनी इज़्ज़त समझे घमन्डियों की तरह इससे शर्म न करे)(33) **और** (चूंकि दीन की दावत और लोगों के सुधार का इरादा करने वालों को अक्सर जाहिलों की तरफ़ से तकलीफ़ों का सामना होता है इसलिए आगे उन को ज़ुल्म के मुक़ाबिले में इन्साफ़ और बुराई के बदले में भलाई करने की नसीहत की जाती है कि) **भलाई और बुराई बराबर नहीं होती** (है बल्कि हर एक का असर अलग-अलग) **है,** (तो) **आप नेक बरताव से** (बुराई का) **बदला दीजिए फिर यकायक** (आप देखेंगे कि) **आप में और जिस आदमी में दुशमनी थी वो ऐसा हो जाएगा जैसा कोई दिली दोस्त होता** (है यानी बुराई का बदला बुराई से देने में तो दुशमनी बढ़ती है और भलाई करने से दुशमनी अक्सर घटती) **है(34) और यह बात उन्हीं लोगों को नसीब होती है जो सब्र से काम लेते हैं और यह बात उसी को मिलती है जो बड़े नसीब वाला है(35) और अगर** (ऐसे वक़्त में) **आप को शैतान की तरफ़ से** (ग़ुस्से का) **कुछ वसवसा आने लगे तो** (फ़ौरन) **अल्लाह से पनाह मांग लिया कीजिए, बेशक वो ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है(35)**

नोटः- एक हदीस में है कि अज़ान और तकबीर के बीच में जो दुआ की जाती है वो रद्द नहीं होती (यानी ज़रूर क़ुबूल होती है)। (मज़हरी)

एक रिवायत में है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को किसी ने गाली दी या बुरा कहा तो आप ने उस के जवाब में कहा कि अगर तुम अपने कलाम में सच्चे हो कि मैं मुजरिम ख़तावार और बुरा हूं तो अल्लाह तआ़ला मुझे मुआफ़ कर दे और अगर तुम ने झूट बोला है तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें मुआफ़ कर दे। (क़ुरतबी)

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ
اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿۳۷﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا
یَسْئَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِیْۤ
اَحْیَاهَا لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۳۹﴾

आयत नं० 37 से 39

और उसी की (क़ुदरत व तौहीद की) **निशानियों में से हैं रात और दिन और सूरज और चान्द,** (बस) **तुम लोग न सूरज को सजदा करो और न चान्द को और** (सिर्फ़) **उस अल्लाह को सजदा करो जिस ने इन** (सब) **को पैदा किया अगर** (सचमुच) **तुम को अल्लाह की इबादत करनी** (है यानी अगर अल्लाह की इबादत करनी है तो वो सिर्फ़ उसी सूरत में हो सकती है कि उसके साथ किसी दूसरे की इबादत न करो मुशरिकों की तरह अल्लाह की इबादत के साथ दूसरों को इबादत में साझी कर दिया तो फिर वो अल्लाह की इबादत नहीं रहती) **है(37) फिर अगर ये लोग** (तौहीद की इबादत अपनाने और अपने बड़ों की रस्म शिर्क को छोड़ने से शर्म और) **घमन्ड करें तो** (उनकी नासमझी है क्योंकि) **जो फ़रिशते आप के रब के पास हैं वो रात दिन उसकी तस्बीह करते हैं और वो** (इससे ज़रा) **नहीं उकताते** (जब अल्लाह के नज़दीकी फ़रिशते जो उन लोगों से लाखो गुना इ़ज़्ज़तदार हैं उन को शर्म नहीं तो इन बेवक़ूफ़ों को शर्म करने का क्या मौक़ा है)(38) **और उसकी** (क़ुदरत व तौहीद की) **निशानियों में से एक यह है कि तुम ज़मीन को देखते हो कि मुरझाई पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो उभरती और फूलती है,** (तो इससे साबित हुआ कि) **जिसने ज़मीन को** (उसके मुनासिब) **ज़िन्दा कर दिया वो ही मुर्दों को ज़िन्दा कर देगा, बेशक वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है(39)**

नोटः- इबादत की नीयत से अल्लाह के सिवा किसी को भी सजदा करना कुफ़्र व शिर्क है जो कभी भी किसी भी शरीअत में जाइज़ नहीं रहा। और इ़ज़्ज़त व इकराम की नीयत से किसी इन्सान को सजदा करना पहली शरीअतों में जाइज़ था जैसा कि हज़रत यूसुफ़ अलैकिहस्सलाम के क़िस्से में आता है मगर हमारी शरीअत में यह हुक्म बदल दिया गया और अल्लाह के सिवा किसी को सजदा करना हराम है।

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۗ أَفَمَنْ يُلْقَىٰ فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ
اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۖ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾
لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ
قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا
فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ
وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ
أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِلْعَبِيدِ ﴿٤٦﴾

आयत नं० 40 से 46

बेशक जो लोग हमारी आयतों के बारे में टेढ़ा रास्ता अपनाते हैं (यानी हमारी आयतों पर ईमान लाने और अमल करने के बजाए उनको झुटलाते हैं) **वो लोग हम से छुप नहीं सकते** (उनको हम जहन्नम का अज़ाब देंगे), **सो भला जो आदमी जहन्नम में डाला जाए** (जैसे काफ़िर) **वो अच्छा है या वो आदमी जो क़ियामत के दिन अमन चैन के साथ** (जन्नत में) **आए,** (आगे उनको डराने के लिए कहा जाता है कि) **जो जी चाहे** (ख़ूब) **कर लो वो तुम्हारा सब कुछ किया हुआ देख रहा है** (एक बार ही सज़ा देगा)(40) **जो लोग इस क़ुरआन का जबकि वो उनके पास पहुंचता है इनकार करते हैं** (उनमें समझ की कमी है) **और** (इस क़ुरआन में कोई कमी नहीं क्योंकि) **यह** (क़ुरआन) **बड़ी इ़ज़्ज़त वाली किताब है**(41) **जिसमें झूट बात न उसके सामने से आ सकती है और न उसके पीछे से** (यानी यह सब का सब अल्लाह का उतारा हुआ है इसमें कोई

झूट बात मिलाई नहीं जा सकती), **यह उस** (अल्लाह) **की तरफ़ से उतारा हुआ है जो हिक्मतों वाला सब तारीफ़ों वाला है(42)** (ऐ पैग़म्बर) **आप को वो ही बातें** (झुटलाने व सताने की) **कही जाती हैं जो आप से पहले पैग़म्बरों को कही गई हैं** (उन्होंने सब्र किया था आप भी सब्र कीजिए, और इससे भी तसल्ली पाइये कि) **आप का रब बड़ा बख़्शने वाला और दर्दनाक सज़ा देने वाला है** (बस अगर ये मुख़ालिफ़ बाज़ आकर तौबा करें तो मुआफ़ी वर्ना इनको सज़ा दूंगा फिर आप किसलिए परीशान हों)(43) **और** (ये लोग एक शक यह करते हैं कि क़ुरआन का कुछ हिस्सा अजमी यानी अरबी के सिवा दूसरी ज़बान में भी होना चाहिए था तो बात यह है कि) **अगर हम इस को** (कुछ या सारा) **अजमी** (ज़बान का) **क़ुरआन बनाते** (तो भी ये उसको न मानते बल्कि उस पर भी ऐतराज़ करते और) **यह कहते कि इस की आयतें** (इस तरह) **साफ़-साफ़ क्यों नहीं बयान की गईं** (कि हम समझ लेते यानी अरबी में क्यों नहीं आया, और यह कहते कि) **यह क्या बात है कि अजमी किताब और पैग़म्बर अरबी** (है यानी हर तरह ऐतराज़ करना) **है,** (ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए तो** (नेक कामों का) **रास्ता दिखाने वाला है और** (बुरे कामों से जो रोग दिलों में पैदा हो जाते हैं जब इस क़ुरआन के हुक्मों पर चला जाए तो यह उन रोगों से) **शिफ़ा है, और जो लोग** (सच्चाई जानने के बावजूद हटधर्मी से) **ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है** (जिससे हक़ को इन्साफ़ से नहीं सुनते) **और** (इसी कमी की वजह से) **वो क़ुरआन उनके हक़ में नाबीनाई** (है यानी अन्धेरों में भटकने का सामान है जैसे सूरज से दुनिया की रौशनी मिलती है लेकिन चमगादड़ को अन्धा कर देता) **है,** (और) **ये लोग** (हक़ बात सुनने के बावजूद नफ़ा न उठाने की वजह से ऐसे हैं जैसे) **किसी दूर जगह से पुकारे जा रहे** (हों कि आवाज़ सुनते हों मगर समझते न) **हों(44) और** (इसी तरह) **हम ने मूसा को भी किताब दी थी सो उसमें भी फूट पड़ी** (यानी किसी ने माना किसी ने न माना यह कोई नई बात आप के लिए नहीं हुई बस आप ग़म न करें), **और** (ये इनकार करने वाले अज़ाब के ऐसे हक़दार हैं कि) **अगर एक बात आप के रब की तरफ़ से पहले ही से तय न हो चुकी होती** (कि पूरा अज़ाब इन को आख़िरत में दूंगा) **तो उन का** (साफ़) **फ़ैसला** (दुनिया ही में) **हो चुका होता, और ये लोग** (दलीलों के बावजूद) **अभी तक उस** (फ़ैसले यानी आने वाले अज़ाब) **की तरफ़ से ऐसे शक में** (पड़े) **हैं जिसने उन को उलझन में डाल रक्खा है** (कि उनको अज़ाब का यक़ीन ही नहीं आता)(45) **जो आदमी नेक काम करता है वो अपने नफ़े के लिए** (यानी वहां उसका नफ़ा और सवाब पाएगा) **और जो आदमी बुरा काम करता है उस का नुक़सान** (यानी अज़ाब) **उसी पर पड़ेगा, और आप का रब बन्दों**

पर ज़ुल्म करने वाला नहीं (कि कोई नेकी, घटा दी जाए या कोई बुराई बढ़ा दी जाए)(46)

नोटः- कुफ़्र की एक क़िस्म इलहाद है जिसमें इन्सान कुरआन और उसकी आयतों पर ईमान व तस्दीक़ का दावा करे मगर उनके माइने अपनी तरफ़ से ऐसे घड़े जो कुरआन व सुन्नत के हुक्मों और आलिमों के ख़िलाफ़ हों और जिससे कुरआन का मतलब ही उलट जाए ऐसे काफ़िर को मुलहिद कहते हैं ।

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۚ
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۝۴۷ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ
وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ۝۴۸ لَا يَسْئَمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوْسٌ قَنُوْطٌ ۝۴۹ وَ
لَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ
اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝۵۰ وَاِذَآ
اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ۝۵۱ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍ بَعِيْدٍ ۝۵۲ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ۗ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝۵۳ اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ
رَبِّهِمْ ۗ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ۝۵۴

आयत नं० 47 से 54

(और जिस क़ियामत में किये कामों का बदला मिलना है उस) **क़ियामत के इल्म का हवाला अल्लाह ही की तरफ़ दिया जा सकता है** (यानी इस सवाल के जवाब में कि क़ियामत कब आएगी ये ही कहा जाएगा कि इस का इल्म अल्लाह ही को है लोगों को इसका पता न होने का यह मतलब नहीं कि नहीं आएगी), **और** (क़ियामत ही की क्या ख़ास बात है हर चीज़ का उस को इल्म है यहां तक कि) **कोई फल अपने गुच्छे में से नहीं निकलता और न किसी औरत के पेट में बच्चा रहता है और न उसके कोई बच्चा पैदा होता है मगर यह सब उसकी जानकारी से होता है, और जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन** (मुशरिकों) **को पुकारेगा** (और कहेगा) **कि** (जिन को तुम ने मेरा साझी बना रक्खा था वो) **मेरे शरीक** (अब) **कहां हैं** (उन को बुलाओ तुम को इस मुसीबत से बचाएं) **वो कहेंगे कि** (अब तो) **हम आप से ये ही कहते हैं कि हम में कोई** (उस अक़ीदे का) **दावेदार नहीं** (यानी अपनी ग़लती का इक़रार करेंगे मगर उस वक़्त इक़रार करने से छुटकारा न होगा)(47) **और जिन-जिन को ये लोग पहले से** (यानी दुनिया में) **पूजा करते थे वो सब ग़ाइब हो जाएंगे और** (यह देख कर) **ये लोग समझ लेंगे कि उनके लिए बचाव का कोई रास्ता नहीं है** (उस वक़्त झूटे ख़ुदाओं का बेबस होना और अकेले अल्लाह का हक़ होना मालूम हो जाएगा)(48) **इन्सान** (जो तौहीद व ईमान से ख़ाली है उस) **का** (हाल यह है कि किसी सूरत) **तरक़्क़ी की चाहत**

से उस का जी नहीं भरता, और अगर उस को कुछ तकलीफ़ पहुंचती है तो ना उम्मीद होकर आस तोड़ देता (है और यह बहुत नाशुक्री और अल्लाह से बदगुमानी की निशानी) **है(49) और** (जब तकलीफ़ दूर हो जाती है तो उस वक़्त उस की यह हालत है कि) **अगर हम उस को किसी तकलीफ़ के बाद जो उस को पहुंची थी अपनी महरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो कहता है कि यह तो मेरे लिए होना ही चाहिए था** (क्योंकि मेरी कोशिशें और फ़नकारी ऐसी ही थी और यह भी नाशुक्री और घमन्ड है) **और** (इस नेमत में यहां तक फूलता और भूलता है कि ऐसा भी कहता है कि) **मैं नहीं समझता कि क़ियामत आएगी और अगर** (मान लो आई भी और) **मैं अपने रब के पास पहुंचाया भी गया** (जैसा नबी कहते हैं) **तो मेरे लिए उसके पास भी भलाई ही है** (क्योंकि मैं हक़ पर हूं और इसका हक़दार हूं जबकि क़ियामत का इनकार कुफ़्र है और क़ियामत के आने पर इनआम का गुमान धोका है) **तो** (ये लोग यहां जो चाहे दावा कर लें अब जल्द ही) **हम इन काफ़िरों को उनके** (ये) **सब कारनामे ज़रूर बता देंगे, और उनको सख़्त अज़ाब का मज़ा चखा देंगे(50) और** (इसी तरह कुफ़्र व शिर्क का एक असर यह है कि) **जब हम** (ऐसे) **आदमी को नेमत देते हैं तो** (हम से और हमारे हुक्मों से) **मुंह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है** (जो बड़ी नाशुक्री है) **और जब उस को तकलीफ़ पहुंचती है तो** (नेमत छिन जाने पर बेसब्री से घबरा कर) **ख़ूब लम्बी चौड़ी दुआएं करता है(51)** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन इनकार करने वालों से) **कहिए कि** (सारे सबूतों के बावजूद भी अगर तुम कुरआन और पैग़म्बर को नहीं मानते तो) **भला यह बताओ कि अगर यह कुरआन अल्लाह के यहां से आया हो और फिर तुम इस का इनकार करो तो ऐसे आदमी से ज़्यादा कौन ग़लती में होगा जो** (इसकी) **मुख़ालफ़त में बहुत दूर निकल गया हो** (इसलिए इनकार में जल्दबाज़ी न करो बल्कि सोच समझ से काम लो ताकि हक़ बात समझ में आजाए)**(52) हम जल्द ही उन को अपनी** (कुदरत की) **निशानियां** (जो कि सबूत हों कुरआन की सच्चाई पर) **उनके आस पास में भी दिखाएंगे** (कि कही हुई ख़बर के हिसाब से सारा अरब जीता जाएगा) **यहां तक कि** (इन ख़बरों के पूरा होने से) **उन पर खुल जाएगा कि वो कुरआन हक़** (है कि उसकी पहले से कही बात किस तरह सच्ची हो रही) **है,** (अगर ये लोग आप का इनकार करें तो ग़म न करें) **क्या आप के रब की बात** (आप की सच्चाई की गवाही और तसल्ली के लिए) **काफ़ी नहीं कि वो हर चीज़ का गवाह** (है और उसने जगह-जगह आप की पैग़म्बरी की गवाही दी) **है(53) याद रक्खो कि वो लोग अपने रब के सामने जाने के बारे में शक में पड़े** (हैं इसलिए दिल में नहीं डरते और इनकार करते) **हैं,** (मगर) **याद रक्खो कि वो हर चीज़ को** (अपने इल्म के) **घेरे में**

लिए हुए है (बस इनके शक व शुबह को भी जानता है और उस पर सज़ा देगा)(54)।

नोटः- लम्बी दुआएं मांगना तो पसन्दीदा है जैसा कि हदीसों में आया है यहां काफ़िर की बेसब्री का बयान है कि नेमतें मिलने पर इतरा जाता है और मुसीबत आने पर बहुत घबरा जाता है जब कि मोमिन नेमतों पर शुक्र करता है और मुसीबतों पर सब्र करता है और दोनों हालतों में दुआ करता है।

42-सूरत-शूरा

इस मक्की सूरत में ‘5’ रूकू और ‘53’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ﴿۱﴾ عٓسٓقٓ ﴿۲﴾ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳﴾ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿۴﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ
يَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿۵﴾ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ
عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿۶﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَ
تُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ﴿۷﴾ وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۸﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُـحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۹﴾

आयत नं० 01 से 09

हामीम(01) ऐन सीन क़ाफ़ (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)**(02) इसी तरह** (ऐ पैग़म्बर) **आप पर और जो** (पैग़म्बर) **आप से पहले हो चुके हैं उनपर अल्लाह तआला जो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला) **हिकमत वाला है** (दूसरी सूरतों और किताबों की) **वही भेजता रहा** (है जिस तरह दीनी ज़रूरत के लिए यह सूरत आप पर उतारी जा रही) **है(03) उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और वो ही सब से ऊपर और बड़ी शान वाला है(04)** (उसकी बड़ी शान को अगर कुछ ज़मीन वाले न पहचानें और न मानें मगर आसमानों में उसकी बड़ाई को पहचानने वाले फ़रिशते इतने ज़्यादा हैं कि) **ऐसा लगता है कि आसमान** (उनके बोझ की वजह से) **अपने ऊपर से फट पड़ेंगे** (कि बोझ उधर ही पड़ता है) **और** (वो) **फ़रिशते अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते हैं और ज़मीन वालों के लिए** (उनके गुनाहों की) **मुआफ़ी मांगते हैं, याद रक्खो कि अल्लाह ही मुआफ़ करने वाला रहमत करने वाला है(05) और जिन लोगों ने**

अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना रक्खे हैं अल्लाह तआ़ला उन (के बुरे कामों) **को देख भाल रहा है** (जिसकी सज़ा उनको मुनासिब वक़्त पर मिलेगी)**, और तुम उनके** (कामों के) **ज़िम्मेदार नहीं हो(06) और हम ने इसी तरह** (जैसा कि आप देख रहे हैं) **आप पर अरबी क़ुरआन वही से भेजा है ताकि आप** (सबसे पहले) **मक्के के रहने वालों को और जो लोग इसके आस पास हैं उन को डराएं और** (यह डराना भी एक बड़ी चीज़ से है यानी) **जमा होने के दिन से डराएं** (मुराद इससे क़ियामत का दिन है जिसमें सब एक मैदान में जमा होंगे) **जिसमें ज़रा शक नहीं,** (जिसमें फ़ैसला यह होगा कि) **एक गिरोह जन्नत में** (दाख़िल) **होगा और एक गिरोह दोज़ख़ में** (दाख़िल) **होगा** (बस आप का काम इतना ही है कि उस दिन से उन को डराएं)**(07) और** (रहा उन का ईमान लाना या न लाना यह अल्लाह की मर्ज़ी पर है) **अगर अल्लाह तआ़ला चाहता इन सब को एक ही तरीक़े का बना देता** (यानी सब को ईमान नसीब हो जाता) **लेकिन** (इसमें कुछ भेद हैं जो उसने ऐसा नहीं चाहा बल्कि) **वो जिस को चाहता है** (ईमान देकर) **अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है** (और जिस को चाहता है उसके कुफ़्र व शिर्क पर छोड़ देता है कि वो रहमत में दाख़िल नहीं होता)**, और** (उन) **ज़ालिमों का** (जो कुफ़्र व शिर्क में गरिफ़्तार हैं क़ियामत के दिन) **कोई हिमायती और मददगार नहीं(08) क्या इन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे रखवाले बना रक्खे हैं** (सच तो यह है कि) **अल्लाह तआ़ला ही रखवाला** (बनाने का हक़दार) **है और वो ही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, और वो ही हर चीज़ पर क़ुदरत रखता** (है तो रखवाला बनाने के लाइक़ वो ही है जो हर चीज़ पर यहां तक कि मुर्दों को ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता) **है(09)**

नोटः- तमाम रूए ज़मीन में मक्के का एक ख़ास मक़ाम है जैसा कि हिजरत के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्के को मुख़ातिब करके फ़रमया कि "तू मेरे नज़दीक अल्लाह की सारी ज़मीन से बेहतर है और सारी ज़मीन से ज़्यादा प्यारा है। अगर मुझे इस ज़मीन से निकाला न जाता तो मैं अपनी मर्ज़ी से कभी इस ज़मीन को न छोड़ता"। (मसनद)

وَ مَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَىْءٍ فَحُكْمُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّىْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۖۗ وَ اِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝١٠ فَاطِرُ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّ مِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ
شَىْءٌ ۚ وَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝١١ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ
شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۝١٢

आयत नं० 10 से 12

और (आप उन लोगों से जो तौहीद के बारे में झगड़ते और बहस करते हैं कहिए कि) **जिस-जिस बात में तुम** (हक़ पर चलने वालों के साथ) **झगड़ते हो उस** (सब) **का फ़ैसला अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द है** (वो यह है कि दुनिया में दलीलों और मोजिज़ों से तौहीद का हक़ होना साबित कर दिया और आख़िरत में ईमान वालों को जन्नत में और ईमान न लाने वालों को जहन्नम में डाला जाएगा), **यह अल्लाह** (जिसकी यह शान है) **मेरा रब है** (और तुम्हारी मुख़ालफ़त से जो किसी तकलीफ़ व नुक़सान के पहुंचने का ख़तरा हो सकता है उसके बारे में) **उसी पर भरोसा रखता हूं और** (दुनिया व दीन के सब कामों में) **उसी की तरफ़ लौ लगाता हूं(10) वो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है,** (और तुम्हारा भी पैदा करने वाला है जैसा कि) **उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जोड़े बनाए और** (इसी तरह) **चौपाए जानवरों के जोड़े बनाए** (और) **उसी से वो तुम्हारी नस्ल चलाता है,** (वो ऐसी ख़ूबियों वाला है कि) **कोई चीज़ उसके बराबर नहीं और वो ही हर बात का सुनने वाला देखने वाला** (है जबकि दूसरों का सुनना देखना उसके मुक़ाबिले कुछ भी नहीं) **है(11) उसी के क़ब्ज़े में हैं कुन्जियां आसमानों और ज़मीन की** (बस) **वो जिसको चाहे ज़्यादा रोज़ी देता है और** (जिसको चाहे) **कम देता है, बेशक वो हर चीज़ का पूरा जानने वाला** (है हर एक को उसकी भलाई के हिसाब से देता) **है(12)**

नोटः- फ़ैसले के अल्लाह के सुपुर्द होने का मतलब यह है कि क़ुरआन और हदीस (यानी शरीअत) के हुक्मों को माने और आम आदमी जो क़ुरआन व हदीस को समझ नहीं सकते उन के हक़ में मुफ़्ती का फ़तवा ही शरीअत का हुक्म कहलाता है।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ
اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَ
يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿۱۴﴾
فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَ
اُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ
يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾

आयत नं० 13 से 15

अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के वास्ते वो ही दीन तय किया जिस का उसने नूह (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म दिया था और जिसको हमने आप के पास वही के वास्ते से भेजा है और जिस का हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा** (अलैहिमुस्सलाम) **को हुक्म दिया था** (और उनकी उम्मतों को यह कहा था) **कि इस दीन को क़ाइम रखना** (यानी इस पर जमे रहना) **और इसमें फूट न डालना** (कि किसी बात पर ईमान लाए और किसी बात पर ईमान न लाए या कोई ईमान लाए और कोई न लाए और शरीअत के किसी हुक्म को न बदलना, बस चाहिए तो यह था कि इसके क़ुबूल करने में हिचक न होती मगर फिर भी) **मुशरिकों को वो बात** (यानी तौहीद) **बड़ी भारी लगती है जिसकी तरफ़ आप उन को बुला रहे हैं,** (और इसी के साथ यह भी कि) **अल्लाह अपनी तरफ़ जिस को चाहे खींच लेता** (है यानी सच्चा दीन क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ देता) **है और जो आदमी** (अल्लाह की तरफ़) **लौ लगाए उसे अपने पास पहुंचा देता है(13) और वो लोग जब कि उनके पास** (सही) **इल्म आ चुका था सिर्फ़ आपस की ज़िद्द** (और दुशमनी) **से अलग-अलग हो गये** (इस तरह कि पहले माल व दौलत और इ़ज़्ज़त व हुकूमत की चाहत में मतलब अलग-अलग हुए फिर फ़िरक़े बन गये फिर आहिस्ता-आहिस्ता मज़हब अलग-अलग हो जाता है), **और** (ये लोग इस ग़लती पर अज़ाब के ऐसे हक़दार हो गये थे कि) **अगर आप के रब की तरफ़ से एक ख़ास वक़्त तक के लिए** (मोहलत देने की) **एक बात पहले से तय न हो चुकी होती** (कि उनको अज़ाब आख़रत में होगा) **तो** (दुनिया ही में) **उन** (के झगड़ों) **का फ़ैसला हो चुका होता** (यानी अज़ाब से फ़ैसला कर दिया जाता), **और जिन लोगों को उन** (पहली उम्मतों) **के बाद किताब दी गई है** (यानी पैग़म्बर के ज़माने के मुशरिक कि आप के वास्ते से उनको क़ुरआन पहुंचा) **वो** (लोग) **उस** (किताब) **की तरफ़ से ऐसे शक में पड़े हैं जिसने** (उनको) **उलझन में डाल रक्खा** (है मतलब यह कि पहली उम्मतों में से कुछ ने जैसे इनकार किया था इसी तरह अब इनकी नौबत आई) **है(14) सो आप** (किसी के इनकार से दिल थोड़ा न कीजिए बल्कि जिस तरफ़ आप उनको पहले से बुला रहे हैं) **उसी तरफ़** (उन को बराबर) **बुलाते रहिए और जिस तरह आप को** (बुलाने का) **हुक्म हुआ है** (उस पर) **जमे रहिए और उनकी** (ग़लत) **मर्ज़ी पर न चलिए** (यानी वो मुख़ालफ़त करके यह चाहते हैं कि हम को कहना छोड़ दें तो आप छोड़िए नहीं), **और आप कह दीजिए कि** (मैं जिस बात की तरफ़ तुम को बुलाता हूं मैं ख़ुद भी उस पर अमल करता हूं तो) **अल्लाह ने जितनी किताबें उतारी हैं** (जिन में क़ुरआन भी दाख़िल है) **मैं** (उन) **सब पर ईमान लाता हूं और मुझ को यह**

(भी) **हुक्म हुआ है कि** (अपने और) **तुम्हारे बीच में इन्साफ़** (रक्खूं यानी यह नहीं कि तुम को तकलीफ़ में डालूं और ख़ुद आज़ाद रहूं बल्कि जिस चीज़ को तुम पर वाजिब व ज़रूरी कहूं अपने ऊपर भी उस को वाजिब) **रक्खूं,** (और इस पर भी अगर नर्म न हों तो आख़री बात यह है कि) **अल्लाह हमारा भी मालिक है और तुम्हारा भी मालिक** (है यानी वो सब का हाकिम) **है,** (और) **हमारे किये काम हमारे लिए और तुम्हारे किये काम तुम्हारे लिए, हमारी तुम्हारी कुछ बहस नहीं, अल्लाह** (जो सब का मालिक है क़ियामत में) **हम सब को जमा करेगा और** (इसमें शक नहीं कि) **उसी के पास जाना है** (वो सब का फ़ैसला किये कामों के हिसाब से कर देगा इस वक़्त तुम से बहस बेकार है हां तबलीग़ किये जाएंगे)(15)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "जो आदमी मुसलमानों की जमाअत से एक बालिश्त भी जुदा हुआ उसने इस्लाम का हलक़ाए-अक़ीदत अपने गले से निकाल दिया"। (अबूदाऊद)

और एक हदीस में फ़रमाया कि "अल्लाह का हाथ जमाअत पर है"। (तिरमिज़ी)

और एक जगह फ़रमाया कि शैतान इन्सानों के लिए भेड़िया है जैसे बकरियों के गल्ले (रेवड़) के पीछे भेडिया लगता है तो वो उसी बकरी को पकड़ता है जो अपनी डार और गल्ले से पीछे या इधर उधर रह जाए। इसलिए तुम्हें चाहिए कि जमाअ़त के साथ रहो अलग न हो। (तफ़सीर मज़हरी)

وَ الَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ عَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿١٦﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَ الْمِيْزَانَ ؕ وَ مَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿١٧﴾
يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيْنَ
يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍۭ بَعِيْدٍ ﴿١٨﴾

आयत नं० 16 से 18

और जो लोग अल्लाह तआ़ला (के दीन) **के बारे में** (मुसलमानों से) **झगड़े निकालते** (और बहसें करते) **हैं जब कि लोग उस** (की बात) **को मान चुके** (हैं यानी बहुत से समझदार आदमी मुसलमान होकर उसको मान चुके) **हैं उन लोगों की बहस उन के रब के नज़दीक झूट** (और

ग़लत) **है और उन पर** (अल्लाह की तरफ़ से) **गुस्सा** (पड़ने वाला) **है और उनके लिए** (क़ियामत में) **सख़्त अज़ाब** (होने वाला) **है** (और उससे बचने का तरीक़ा ये ही है कि अल्लाह को और उस के दीन को मानो यानी उसकी किताब पर चलो)(16) **अल्लाह ही है जिसने** (उस) **किताब** (यानी क़ुरआन) **को और** (उसमें) **इन्साफ़** (का जो ख़ास हुक्म है उस) **को उतारा** (जब यह किताब अल्लाह की है तो किताब को माने बिना अल्लाह को मानने का ऐतबार नहीं जैसे कुछ ग़ैर मुस्लिम जो अल्लाह को तो मानने का दावा करते हैं मगर क़ुरआन को नहीं मानते वो बख़्शिश के लिए काफ़ी नहीं), **और** (ये लोग जो आप से क़ियामत का तय वक़्त पूछते हैं तो) **आप को** (इसकी) **क्या ख़बर** (लेकिन आप को इस का पता न होने का यह मतलब नहीं कि नहीं आएगी बल्कि ज़रूर आएगी और) **अजब नहीं कि क़ियामत नज़दीक हो**(17) (मगर) **जो लोग उस का यक़ीन नहीं रखते** (वो उस दिन से डरने के बजाए हंसी उड़ाते व इनकार करते हुए) **उसका तक़ाज़ा करते हैं** (कि वो जल्दी क्यों नहीं आ जाती) **और जो लोग यक़ीन रखने वाले हैं वो उससे** (कांपते और) **डरते हैं और ऐतक़ाद रखते हैं कि वो हक़** (है यानी उस का आना यक़ीनी) **है, याद रक्खो कि** (इन दोनों क़िस्म के लोगों में पहली क़िस्म के लोग यानी) **जो लोग क़ियामत** (का इनकार करते हैं और उस) **के बारे में झगड़ते** (व बहस करते) **हैं बड़ी दूर** (दराज़) **की गुमराही में** (पड़े) **हैं**(18)।

नोटः- मोमिनों का क़ियामत से डरना ऐतक़ादी है कि उसकी होलनाकी को सोच कर उससे घबराते हैं। और जिन पर अल्लाह की मुलाक़ात का शौक़ तारी हो जाए उससे उनकी घबराहट दब जाती है।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ
حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾

आयत नं० 19 से 20

अल्लाह तआ़ला (के सामने पेश होने यानी आख़रत को जो लोग भुला बैठे हैं दुनिया की नेमतों पर इतराकर और यह समझते हैं और कहते हैं कि अगर हमारे ये काम अल्लाह की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होते तो हम को यह ऐश व आराम क्यों देते अच्छी तरह समझ लो यह उन की भूल है ये दुनिया की दौलत व नेमत अल्लाह के राज़ी होने की दलील नहीं बल्कि इस की वजह तो यह है कि अल्लाह तआ़ला दुनिया में आम तौर से) **अपने बन्दों पर महरबान है** (इसी आम रहमत की वजह से सब को रोज़ी देता है सहत व तन्दरूस्ती देता है जो छुपी भलाई व हिकमत की वजह से कम व ज़्यादा भी

होती है कि) **जिस को** (जितनी) **चाहता है रोज़ी देता** (है मगर रोज़ी सब को देता) **है और** (दुनिया में इस महरबानी से यह समझ लेना कि उन का तरीक़ा ठीक है और आख़रत में भी महरबानी जारी रहेगी सरासर धोका है वहां तो उनके बुरे कामों पर अज़ाब होगा जो कोई मुश्किल नहीं क्योंकि) **वो ताक़त वाला और ज़बरदस्त है**(19) (बस उनकी सारी ख़राबियों की जड़ दुनिया पर इतराना है उन को चाहिए कि इससे बाज़ आजाएं और आख़रत की फ़िक्र करें क्योंकि) **जो आदमी आख़रत की खेती चाहता हो हम उसको उस की खेती में तरक़्क़ी देंगे** (नेक काम खेती और उस पर मिलने वाला सवाब उस का फल है और उसकी तरक़्क़ी यह है कि सवाब बढ़ कर मिलेगा, जैसा कि क़ुरआन में कहा गया है कि एक नेकी का बदला दस गुना मिलेगा) **और जो दुनिया की खेती चाहता हो** (यानी सारी कोशिश व महनत दुनिया के लिए हो आख़रत के लिए कुछ कोशिश न करे) **तो हम उसको कुछ दुनिया** (अगर चाहें) **दे देंगे और आख़रत में उस को कुछ हिस्सा** (नहीं क्योंकि उस की शर्त ईमान है वो उनमें है) **नहीं**(20)।

नोटः- मौलाना अब्दुल ग़नी फूलपुरी रह० लिखते हैं कि हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की रह० ने फ़रमाया कि जो आदमी सुबह को सत्तर (70) बार पाबन्दी से यह आयत पढ़ा करे वो रिज़्क़ की तंगी से बचा रहेगा। और फ़रमाया कि बहुत तजरबे वाला अमल है।

आयत ये ही है आयत नं० "19" यानी

اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿۱۹﴾

अल्लाहु लतीफ़ुम बि इबादिही यरज़ुक़ु मंय्यशाउ, वहुवल क़विय्युल अज़ीज़०

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۱﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿۲۲﴾ ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ
اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ
حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾

आयत नं० 21 से 23

(सच्चा दीन तो अल्लाह का तय किया हुआ है मगर जो लोग उसको नहीं मानते तो) **क्या उनके** (बनाए हुए खुदाई में) **कुछ साझी हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन तय कर दिया जिस की अल्लह ने इजाज़त नहीं दी** (मतलब यह है कि कोई हस्ती ऐसी नहीं अल्लाह के ख़िलाफ़ उसके बनाए हुए दीन का ऐतबार किया जा सके), **और अगर** (अल्लाह की तरफ़ से) **एक फ़ैसले की बात** (तय) **न होती** (यानी यह कि उन पर असल अज़ाब मौत के बाद होगा) **तो** (दुनिया ही में) **उन का** (खुला) **फ़ैसला हो चुका होता, और** (आख़रत में) **इन ज़ालिमों को ज़रूर दर्दनाक अज़ाब होगा(21)** (उस दिन) **आप इन ज़ालिमों को देखेंगे कि अपने** (बुरे) **कामों** (के अज़ाब) **से डर रहे होंगे और वो उन पर** (ज़रूर) **पड़ कर रहेगा** (यह तो काफ़िरों का हाल होगा), **और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये** (होंगे) **वो जन्नत के बाग़ों में** (दाख़िल) **होंगे वो जिस चीज़ को चाहेंगे अपने रब के पास उन को मिलेगी, ये ही बड़ा इनआम** (है न कि वो फ़ना होने वाली ऐश आराम जो दुनिया में मौजूद) **है(22) ये ही है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों को दे रहा है जो ईमान लाए और अच्छे काम किये,** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन काफ़िरों से यह) **कहिए कि मैं तुम से और कुछ मतलब नहीं चाहता सिवाए रिशतेदारी की मुहब्बत के** (यानी इतना चाहता हूं कि तुम से जो मेरी रिशतेदारी है उस का तो ध्यान करो और मुझे न सताओ और मेरी बात को तसल्ली के साथ सुन लो फिर अगर दिल चाहे तो मानलो और कुछ शक हो तो साफ़ कर लो), **और** (मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुनाते हैं यानी) **जो आदमी कोई नेकी करेगा हम उस** (नेकी) **में ख़ूबी और ज़्यादा कर** (देंगे यानी उस पर जितना सवाब मिलना चाहिए हम उससे ज़्यादा सवाब) **देंगे, बेशक अल्लाह तआ़ला** (ताबेदार बन्दों के गुनाहों का) **बड़ा बख़्शने वाला** (और उनकी नेकियों की) **बड़ी क़द्र करने वाला** (और सवाब देने वाला) **है(23)**

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَ يَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَ يُحِقُّ الْحَقَّ
بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ يَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَ
يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ۙ وَ يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَ الْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 24 से 26

क्या ये लोग (आप के बारे में नऊज़ुबिल्लाह) **यह कहते हैं कि इन्होंने अल्लाह पर झूट बोहतान बान्ध रक्खा है** (कि पैग़म्बर होने और वही आने का झूटा दावा किया है) **सो** (उन की यह बात घड़ी हुई है अगर अल्लाह की पनाह आप सच्चे नबी न होते तो अल्लाह यह करामाती कलाम आप की ज़बान पर जारी नहीं कर सकते थे जैसा कि) **अल्लाह** (को यह भी क़ुदरत हासिल है कि) **अगर** (वो) **चाहे तो आप के दिल पर बन्द लगा दे** (और यह कलाम आप के दिल पर न उतरे न बाक़ी रहे बल्कि छिन जाए और आप बिल्कुल भूल जाएं और ऐसी सूरत में कलाम ज़बान पर ही नहीं आसकता)**, और अल्लाह तआ़ला** (की यह आदत है कि वो पैग़म्बरी के) **बातिल** (यानी झूटे दावे) **को मिटाया करता है** (चलने नहीं देता यानी ऐसा झूटा दावा करने वाला मोजिज़े नहीं दिखा सकता) **और** (पैग़म्बरी के) **हक़** (यानी सच्चे दावे) **को अपने हुक्मों से साबित** (और हावी) **किया करता है** (बस आप सच्चे और वो झूटे हैं)**, बेशक वो** (यानी अल्लाह तआ़ला) **दिलों** (तक) **की बातें जानता है** (बस अल्लाह तआ़ला को इनके अक़ीदे और किये काम सब की ख़बर है उन सब पर सज़ा देंगे)(24) **और** (जो लोग अपने कुफ़्र और बुरे कामों से तौबा करलें उन्हें मुआफ़ कर देगा क्योंकि) **वो ऐसा** (रहमत वाला) **है कि अपने बन्दों की** (सच्ची) **तौबा क़ुबूल करता है और वो** (उस तौबा की बरकत से) **सभी** (पिछले) **गुनाह मुआफ़ कर देता है और जो कुछ तुम करते हो वो उस** (सब) **को जानता है** (बस उस को यह भी मालूम है कि तौबा सच्चे दिल से की है या नहीं)(25) **और** (जब कोई आदमी कुफ़्र से तौबा करके मुसलमान हो गया तो उस की जो इबादतें पहले क़ुबूल न होती थी अब क़ुबूल होने लगेंगी क्योंकि अल्लाह तआ़ला) **उन लोगों की इबादत** (जिसमें दिखावा न हो) **क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये** (वो इबादतें ये ही नेक काम हैं और उन को क़ुबूल करने का मतलब यह है कि उन को सवाब देता है) **और उन को अपनी महरबानी से और ज़्यादा** (सवाब) **देता है, और जो लोग कुफ़्र** (के काम) **कर रहे हैं** (और ईमान नहीं लाए) **उन के लिए सख़्त अज़ाब** (तय) **है**(26)

नोटः- जो आदमी पैग़म्बरी का झूटा दावा करे उसके हाथ से कोई जादू कामयाब नहीं होता जब तक कि वो पैग़म्बरी का दावा न करे जादू चलता है, पैग़म्बरी का दावा करने के बाद उसका जादू अल्लाह तआ़ला चलने नहीं देते ताकि किसी को उस जादू में मोजिज़े का शुबह न हो जाए।

तौबा की हक़ीक़तः

एक यह कि जिस गुनाह को फ़िलहाल कर रहा है उसको छोड़ दे। दूसरे यह कि पहले जो गुनाह हुआ उस पर पछताए और तीसरे यह कि आगे कभी ऐसा न करने का पक्का इरादा करले। और कोई शरई फ़र्ज़ छोड़ा हुआ है तो उसे अदा करने में लग जाए। और अगर किसी का हक़ वाजिब है तो उसे अदा करे या मुआफ़ कराए।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۷﴾ وَ
هُوَ الَّذِیْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِیُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۸﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰی جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾ وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا
كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۰﴾ وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِی الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّ
لَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿۳۲﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰی ظَهْرِهٖ ؕ
اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۳۳﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۴﴾ وَّ يَعْلَمَ الَّذِيْنَ
يُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿۳۵﴾

आयत नं० 27 से 35

और (अल्लाह तआ़ला की हिकमत की निशानियों में से है कि उसने सब लोगों को ज़्यादा माल नहीं दिया क्योंकि) **अगर अल्लाह तआ़ला अपने सब बन्दों के लिए रोज़ी ज़्यादा कर देता तो वो दुनिया में** (अक्सर) **शरारत करने लगते** (क्योंकि जब सारे इन्सान मालदार होते और कोई किसी का मुहताज न होता तो कोई भी किसी से न दबता) **लेकिन** (यह भी नहीं किया कि बिल्कुल ही किसी को कुछ न दिया हो बल्कि) **जितनी रोज़ी चाहता है** (मुनासिब) **अन्दाज़ से** (हर एक के लिए) **उतारता है,** (क्योंकि) **वो अपने बन्दों** (की भलाइयों) **को जानने वाला** (और उन का हाल) **देखने वाला है (27) और वो ऐसा** (रहमत वाला) **है जो** (कभी-कभी) **लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत** (के आसार दुनिया में) **फैलाता है** (आसार से मुराद खेती और फल फूल हैं)**, और वो** (सब का) **रखवाला** (और) **तारीफ़ों वाला है(28) और उसकी** (कुदरत की) **निशानियों में से पैदा करना है आसमानों का और ज़मीन का और** (उन) **जानदारों का जो**

उसने ज़मीन व आसमान में फैला रक्खे हैं, और वो जब चाहे (उन्हें दोबारा ज़िन्दा करके) **जमा कर लेने की कुदरत रखता है** (जैसा कि क़ियामत में होगा)(29) **और** (वो बदला लेने वाला मगर साथ ही मुआफ़ करने वाला भी जैसा कि) **तुम को** (ऐ गुनाहगारो) **जो कुछ मुसीबत** (असल में) **पहुंचती है वो तो तुम्हारे ही हाथों के किये हुए कामों से** (पहुंचती है और फिर भी हर गुनाह पर नहीं बल्कि किसी-किसी गुनाह पर) **और बहुत** (से गुनाहों) **को मुआफ़ ही कर देता है** (चाहे दोनो जहान में या सिर्फ़ दुनिया में)(30) **और** (अगर वो सब पर पकड़ने लगे तो) **तुम ज़मीन** (के किसी हिस्से) **में** (पनाह लेकर उसको) **हरा नहीं सकते, और** (ऐसे वक़्त में) **अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई हिमायती व मददगार नहीं** (हो सकता)(31) **और उसकी** (कुदरत की) **निशानियों में से जहाज़ हैं समन्दर में** (ऐसे ऊंचे-ऊंचे) **जैसे पहाड़** (यानी उन का समन्दर में चलना उस की कुदरत की दलील है)(32) **अगर वो चाहे तो हवा को ठहरा दे तो वो** (जहाज़) **समन्दर की सतह पर खड़े के खड़े रह जाएं** (यह उसी का काम है कि हवा को चलाता है और उससे वो जहाज़ चलते हैं), **बेशक इसमें** (कुदरत के सबूत वाली) **निशानियां हैं हर सब्र करने वाले व शुक्र करने वाले** (यानी मोमिन) **के लिए**(33) (बस वो अगर चाहे तो हवा को रोक कर जहाज़ों को खड़ा कर दे) **या** (अगर वो चाहे ज़ोर की हवा चला कर) **उन जहाज़ों** (के सवारों) **को उन के** (बुरे) **कामों की वजह से तबाह कर दे और** (उनमें) **बहुत से लोगों को छोड़ दे** (यानी उस वक़्त न डूबें चाहे आख़रत में सज़ा पाएं)(34) **और** (उस तबाही के वक़्त) **उन लोगों को जो कि हमारी आयतों में झगड़े निकालते** (और बहसें करते) **हैं पता चल जाएगा कि** (अब) **उनके लिए बचाव** (की सूरत) **नहीं** (क्योंकि ऐसे वक़्त में वो भी अपने बनाए हुए माबूदों को लाचार समझते थे)(35)।

नोटः- कुछ हदीसों से साबित है कि जिन गुनाहों पर कोई सज़ा दुनिया में देदी जाती है मोमिन के लिए उससे आख़रत में मुआफ़ी हो जाती है। जैसा कि हाकिम ने हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत किया है। (मज़हरी)

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ﴿۳۶﴾
وَ الَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ وَ اِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ۚ﴿۳۷﴾ وَ الَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۖ وَ اَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۖ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۚ﴿۳۸﴾ وَ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ

يَنْتَصِرُوْنَ ۝٣٩ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠ وَ
لَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝٤١ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ
يَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤٢ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝٤٣

आयत नं० 36 से 43

सो (ऊपर तुम सुन चुके हो कि दुनिया की हर तमन्ना पूरी नहीं होती और चाहने की चीज़ आख़रत है तो दुनिया की चीज़ों में से) **जो कुछ तुम को दिया दिलाया गया है वो सिर्फ़** (कुछ दिनों की) **दुनिया की ज़िन्दगी के बरतने के लिए है** (कि उम्र के ख़ातमे के साथ उसका भी ख़ातमा हो जाएगा) **और जो** (बदला व सवाब आख़रत में) **अल्लाह के यहां है वो कहीं बेहतर और बाक़ी रहने वाला है** (यानी सदा रहने वाला है बस दुनिया की चाहत छोड़ कर आख़रत की चाहत करो मगर आख़रत के पाने के लिए कम से कम शर्त तो ईमान लाना और कुफ़्र छोड़ना है और आख़रत के पूरे दर्जों के लिए सभी ज़रूरी हुक्मों को अपनाना और सभी गुनाहों को छोड़ना ज़रूरी है बस) **वो** (सवाब जो ऊपर बताया गया) **उन लोगों के लिए है जो ईमान ले आए और अपने रब पर भरोसा करते हैं(36) और जो बड़े गुनाहों से और** (ख़ासकर) **बेहयाई की बातों से** (ज़्यादा) **बचते हैं और जब उनको गुस्सा आता है तो मुआफ़ कर देते हैं(37) और जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ के पाबन्द हैं और उनका हर** (ख़ास) **काम** (जिसमें अल्लाह की तरफ़ से कोई तय हुक्म न हो) **आपस के मशवरे से होता है, और हमने जो कुछ उन को दिया है उनमें से** (नेक कामों में) **ख़र्च करते हैं(38) और जो ऐसे** (इन्साफ़ वाले) **हैं कि जब उन पर** (किसी तरफ़ से कुछ) **ज़ुल्म होता है तो वो** (अगर बदला लेते हैं तो) **बराबर का बदला लेते हैं** (ज़्यादती नहीं करते और यह मतलब नहीं कि मुआफ़ नहीं करते)**(39) और** (बराबर का बदला लेने के लिए हमने यह इजाज़त दे रक्खी है कि) **बुराई का बदला बुराई है वैसी ही** (शर्त यह है कि वो काम अपने आप में गुनाह न हो) **फिर** (बदला लेने की इजाज़त के बावजूद) **जो आदमी मुआफ़ कर दे और** (आपस के मुआमले का) **सुधार करले** (जिससे दुशमनी जाती रहे और दोस्ती हो जाए) **तो उस का सवाब** (वादे के हिसाब से) **अल्लाह के ज़िम्मे है,** (और जो बदला लेने में ज़्यादती करने लगे तो यह सुन ले कि) **बेशक अल्लाह तआ़ला ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता(40) और जो** (ज़्यादती न करे बल्कि) **अपने ऊपर ज़ुल्म हो चुकने के बाद बराबर का बदला लेले तो ऐसे**

लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं(41) इल्ज़ाम तो सिर्फ़ उन लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं (चाहे शुरू में या बदला लेने के वक़्त) **और नाहक़ दुनिया में सरकशी** (और घमन्ड) **करते** (फिरते) **हैं, ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब** (तय) **है(42) और जो आदमी** (दूसरे के ज़ुल्म पर) **सब्र करे और मुआफ़ कर दे यह बेशक बड़े हिम्मत के कामों में से** (है यानी ऐसा करना बेहतर है और हिम्मत के कामों में से) **है(43)**

नोटः- एक हदीस में हज़रत हसन रज़ि० से रिवायत है कि "जब कोई क़ौम मशवरे से काम करती है तो ज़रूर उस को सही रास्ते की तरफ़ हिदायत कर दी जाती है"। (बुख़ारी)

हज़रत इब्राहीम नख़ई रह० ने फ़रमाया कि जहां यह ख़तरा हो कि मुआफ़ करने से ज़ालिम का हौसला बढ़ेगा वो और नेक लोगों को सताएगा वहां बदला लेना बेहतर होगा और जहां ज़ुल्म करने वाला अपनी ग़लती पर पछता रहा हो और ज़ुल्म पर उसकी हिम्मत बढ़ने का ख़तरा न हो तो वहां मुआफ़ कर देना बेहतर है। (क़रतबी)

وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ
سَبِيْلٍ ۚ﴿۴۴﴾ وَ تَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَ قَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ
الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَ اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿۴۵﴾ وَ مَا كَانَ
لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ﴿۴۶﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّ مَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ
اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَ اِنْ
تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿۴۸﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ
يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۙ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًا ۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ
اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

आयत नं० 44 से 50

और (गुमराह लोगों का हाल यह होगा कि) **जिसको अल्लाह तआ़ला गुमराह कर दे तो**

उसके बाद उस आदमी का (दुनिया में भी) कोई काम बनाने वाला नहीं (कि उसको राह पर ले आए), और (क़ियामत में भी बुरा हाल होगा जैसा कि उस दिन) आप (उन) ज़ालिमों को देखेंगे कि जिस वक़्त उन को अज़ाब नज़र आजाएगा (बहुत पछताते हुए) कहते होंगे क्या (दुनिया में) वापस जाने की कोई सूरत (हो सकती) है (ताकि फिर अच्छे काम करके आएं)(44) और आप उन को इस हाल में देखेंगे कि वो दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे मारे तौहीन के झुके हुए होंगे (और वो उस को) नीची नज़र से देखते होंगे (जैसे डरा हुआ आदमी देखा करता है), और (उस वक़्त) ईमान वाले (अपने बचने का शुक्र करने के लिए और उनको बुरा भला कहते हुए) कहेंगे कि पूरे नुक़सान वाले वो लोग हैं जो अपनी जानों से और अपने घर वालों से (आज) क़ियामत के दिन नुक़सान में पड़े, याद रक्खो कि ज़ालिम (यानी मुशरिक व काफ़िर) लोग सदा के अज़ाब में (गरिफ़्तार) रहेंगे(45) और (वहां) उन के कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह से अलग (होकर) उनकी मदद करें, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस (के बचाव) के लिए कोई रास्ता ही (नहीं यानी न मजबूरी जिताना न किसी की मदद बस कुछ भी) नहीं(46) (आगे काफ़िरों को कहा जाता है कि ऐ लोगो जब) तुम (ने क़ियामत का हाल सुन लिया तो) अपने रब का हुक्म (ईमान वग़ैरह का) मान लो इससे पहले कि ऐसा दिन आजाए जिसे अल्लाह की तरफ़ से टाला न जाएगा (यानी जिस तरह दुनिया में अज़ाब हट जाता है आख़रत में ऐसी कोई सूरत न होगी), न तुम को उस दिन कोई (और) पनाह मिलेगी और न तुम्हारे बारे में कोई (अल्लाह से) रोक टोक करने वाला (है कि इतना ही पूछले कि यह हाल क्यों बनाया गया) है(47) फिर अगर ये लोग (यह सुनकर भी) मुंह फेरें (और ईमान न लाएं) तो (आप फ़िक्र में न पड़ें क्योंकि) हमने आप को उन पर पहरेदार बनाकर नहीं भेजा (जिससे पूछताछ हो कि आप की देख रेख में उन से ये काम क्यों हुए, बल्कि) आप के ज़िम्मे तो सिर्फ़ (हुक्म का) पहुंचा देना है (जिस को आप कर रहे हैं फिर आप इससे ज़्यादा फ़िक्र क्यों करें), और (उनके हक़ से मुंह फेरने की वजह अल्लाह से ताल्लुक़ की कमज़ोरी है जिसकी निशानी यह है कि) हम जब (इस क़िस्म के) आदमी को कुछ अपनी महरबानी का मज़ा चखा देते हैं तो वो उस पर (इतरा कर) ख़ुश हो जाता है (और नेमत देने वाले पर निगाह करके शुक्र नहीं करता) और अगर (ऐसे) आदमी पर उन के (उन बुरे) कामों के बदले में जो पहले अपने हाथों कर चुके हैं कोई मुसीबत आजाती है तो (ऐसा) आदमी नाशुक्री करने लगता (है और ऐसा नहीं करता कि गुनाहों से तौबा करके मुआफ़ी के साथ इबादतों में लग कर अल्लाह की तरफ़ लौ लगाए और ये दोनो हालतें इस बात की निशानी हैं कि उसका ताल्लुक़ अपने

मज़ों से ज़्यादा और अल्लाह तआ़ला के साथ कम या बिल्कुल ही नहीं है और इसी से वो कुफ़्र में गरिफ़्तार हुआ) **है(48) अल्लाह ही का राज है सारे आसमानों में और ज़मीन में, वो जो चाहता है पैदा करता है,** (बस) **जिसको चाहता है बेटियां देता है और जिसको चाहता है बेटे देता है(49) या उन को** (जिसके लिए चाहता है) **जमा कर देता है** (कि) **बेटे भी** (देता है) **और बेटियां भी और जिसको चाहे बेऔलाद रखता है, बेशक वो बड़ा जानने वाला बड़ी कुदरत वाला है(50)।**

नोटः- हज़रत वासिला बिन असक़ा रज़ि० ने फ़रमाया कि जिस औरत की कोख से पहला बच्चा लड़की पैदा हो वो मुबारक होती है। (क़ुरतबी)

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ
عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ
جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ
مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾

आयत नं० 51 से 53

और किसी इन्सान की (दुनिया में) **यह शान नहीं कि अल्लाह तआ़ला उससे बातें करें मगर** (तीन तरीक़े से) **या तो इलहाम से** (कि दिल में कोई अच्छी बात डाल दें) **या पर्दे के बाहर से** (कुछ बात सुनादे जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के साथ हुआ) **या किसी फ़रिश्ते को भेज दे कि वो अल्लाह के हुक्म से जो अल्लाह चाहता है वो वोही बात पहुंचा देता है,** (इसकी वजह यह है कि) **वो बड़ी ऊंची शान वाला है** (मगर जब तक वो ताक़त न दे कोई बात नहीं कर सकता है मगर इसके साथ) **बड़ी हिकमत वाला** (भी) **है** (इसलिए बन्दों की भलाई से उसने बात करने के ये तीन तरीक़े रक्खे हैं)(51) **और** (जिस तरह इन्सान के साथ बात करने का तरीक़ा बयान किया गया है) **इसी तरह हमने आप के पास** (भी) **वही यानी अपना हुक्म भेजा** (है और आप को नबी बनाया) **है,** (और इस वही से आप को इतना बड़ा इल्म मिला वर्ना इससे पहले) **आप को न यह ख़बर थी कि** (अल्लाह की) **किताब क्या चीज़ है और न यह ख़बर थी कि ईमान** (का सबसे ऊंचा दर्जा जिस पर अब है) **क्या चीज़ है** (यूं ईमान नबी को पैग़म्बरी से पहले भी हासिल होता है) **लेकिन हम**

ने (आप को पैग़म्बरी और क़ुरआन दिया और) **इस क़ुरआन को** (पहले आप के लिए और फिर दूसरों के लिए) **एक नूर बनाया** (जिससे आप को यह बड़ा इल्म और ऊंचा दर्जा मिला और) **जिससे हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं हिदायत करते हैं** (बस इसके बड़ा नूर होने में कोई शक नहीं अब जो अन्धा ही हो वो इस नूर से नफ़ा नहीं उठाता बल्कि इसका इनकार करता है जैसा ये ऐतराज़ करने वाले)**, और इसमें कोई शक नहीं कि आप** (इस क़ुरआन और वही के वास्ते से आम लोगों को) **एक सीधे रास्ते की हिदायत कर रहे हैं**(52) **यानी उस अल्लाह के रास्ते की कि उसी का है जो कुछ है आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है,** (आगे उन हुक्मों को मानने और न मानने वालों के सवाब व अज़ाब का ज़िक्र है कि) **याद रक्खो सब काम उसी की तरफ़ लौटेंगे** (बस वो सब पर सवाब व अज़ाब देगा)(53)।

नोटः- यहूदियों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि हम आप पर कैसे ईमान ले आएं जब कि आप न अल्लाह तआ़ला को देखते हैं और न उस से आमने सामने बात करते हैं जैसे कि मूसा अलैहिस्सलाम बात करते और अल्लाह तआ़ला को देखते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह कहना ग़लत है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला को देखा है इस पर ये आयत उतरी जिस का मतलब यह है कि किसी इन्सान के लिए अल्लाह तआ़ला से आमने सामने बात करना इस दुनिया में मुमकिन नहीं ख़ुद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने भी आमने सामने बात नहीं की बल्कि पर्दे के पीछे से सिर्फ़ आवाज़ सुनी।

43-सूरत-ज़ुख़रफ़

इस मक्की सूरत में '7' रूकू और '89' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۚ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ ﴿٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۚ ﴿٣﴾ وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ
حَكِيْمٌ ۗ ﴿٤﴾ اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾ وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾ وَ
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾

आयत नं० 01 से 08

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **क़सम** (है) **इस साफ़** (साफ़ बयान करने वाली) **किताब की(02) कि हम ने इसे अरबी ज़बान का कुरआन बनाया है ताकि** (ऐ अरब वालो) **तुम** (आसानी से) **समझ लो(03) और वो हमारे पास लोहे महफ़ूज़ में बड़े ऊंचे दर्जे की और हिकमत भरी किताब है** (बस जब वो समझने में आसान और ख़ास हमारी हिफ़ाज़त में और मोजिज़ों की वजह से बड़े रूतबे वाली और हिकमत की बातों से भरी है तो ऐसी किताब को ज़रूर मानना चाहिए लेकिन अगर तुम न मानो तब भी हम इसको भेजना न छोड़ेंगे)(04) **क्या हम तुम से इस नसीहत** (नामे) **को** (सिर्फ़) **इस बात पर हटा लेंगे कि तुम** (ताबेदारी की) **हद से बढ़ जाने वाले हो** (और इसको नहीं मानते यानी चाहे तुम मानो या न मानो नसीहत बराबर की जाएगी ताकि मानने वालों को नफ़ा हो और न मानने वालों पर सज़ा का सबूत पक्का हो जाए)(05) **और हम पहले लोगों में** (उनके झुटलाने के बावजूद) **बहुत से नबी भेजते रहे** (यह नहीं हुआ कि उनके झुटलाने की वजह से पैग़म्बरी का सिलसिला बन्द हो जाता)(06) **और** (ऐ पैग़म्बर जैसे हमने उनके झुटलाने की परवाह नहीं की इसी तरह आप भी कुछ परवाह और ग़म न कीजिए, क्योंकि) **उन** (पहले) **लोगों** (का भी यह हाल था कि उन) **के पास कोई नबी ऐसा नहीं आया जिस की उन्होंने हंसी न उड़ाई हो(07) फिर हमने उन लोगों को जो इन** (मक्का वालों) **से ज़्यादा ज़ोर आवर थे** (झुटलाने और हंसी उड़ाने की सज़ा में) **बर्बाद कर डाला और पहले लोगों की यह हालत हो चुकी** (है बस न

आप ग़म करें कि इन का भी ऐसा ही हाल होना है और न ये बेफ़िक्र हों कि नमूना मौजूद) **है**(08)।

नोटः- ऊपर आयत से मालूम हुआ कि जो आदमी दावत व तबलीग़ का काम करता हो उसे काम में लगे रहना चाहिए मायूस होकर नहीं बैठना चाहिए।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝٩ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ
مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝١٠ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً
مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ۝١١ وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝١٢
لِتَسْتَوُوا عَلٰى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا
كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ۝١٣ وَإِنَّا إِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝١٤ وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝١٥
أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّأَصْفٰكُمْ بِالْبَنِينَ ۝١٦ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ
مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيمٌ ۝١٧ أَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝١٨ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِينَ هُمْ
عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ إِنٰثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝١٩ وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمٰنُ مَا
عَبَدْنٰهُمْ ۗ مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝٢٠ أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ
مُسْتَمْسِكُونَ ۝٢١ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا اٰبَاءَنَا عَلٰى أُمَّةٍ وَّإِنَّا عَلٰى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُونَ ۝٢٢ وَكَذٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ
قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا ۙ إِنَّا وَجَدْنَا اٰبَاءَنَا عَلٰى أُمَّةٍ وَّإِنَّا عَلٰى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ۝٢٣ قٰلَ
أَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِأَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَاءَكُمْ ۗ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كٰفِرُونَ ۝٢٤ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝٢٥

आयत नं० 09 से 25

और अगर आप इन (मुशरिकों) **से पूछें कि आसमानों व ज़मीन को किसने पैदा किया है तो वो ज़रूर ये ही कहेंगे कि उन को ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले और) **जानने वाले** (अल्लाह) **ने पैदा किया है** (तो जिस हस्ती ने अकेले इतनी बड़ी चीज़ें पैदा की हों तो इबादत भी अकेले उसी की करनी चाहिए)(09) **जिसने तुम्हारे** (आराम के) **लिए ज़मीन को फ़र्श** (की तरह) **बनाया और उस**

(ज़मीन) **में उसने तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि** (उन रास्तों पर चलकर) **तुम** (आसानी से) **अपने ठिकाने तक पहुंच सको**(10) **और जिसने आसमान से एक** (ख़ास) **अन्दाज़ से पानी उतारा फिर हम ने उस** (पानी) **से सूखी ज़मीन को** (नई) **ज़िन्दगी दी** (तो समझ लेना चाहिए कि) **इसी तरह तुम** (भी अपनी क़ब्रों से) **निकल जाओगे**(11) **और जिसने सब चीज़ों के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए वो कशतियां और चौपाए जानवर बनाए जिन पर तुम सवार होते हो**(12) **ताकि तुम उन** (कशतियों और जानवरों) **की पीठ** (और फ़र्श) **पर जम कर** (तसल्ली से) **बैठो फिर जब उस पर बैठ चुको तो अपने रब की** (इस) **नेमत को** (दिल से) **याद करो और** (ज़बान से) **यह कहो कि उसकी ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे बस में कर दिया और हम तो ऐसे** (ताक़तवर और हुनरमन्द) **न थे जो उन को बस में कर लेते** (क्योंकि जानवर से ज़्यादा ताक़त नहीं और कशतियों को चलाना उसी ने इलहाम से सिखाया)(13) **और हम को अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है** (इसलिए इस पर सवार होकर हम शुक्र से बेपरवाई या घमन्ड नहीं करते)(14) **और** (तौहीद के सबूतों के बावजूद) **इन लोगों ने** (शिर्क अपनाया कि फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहते हैं और उनकी इबादत करते हैं बस एक ख़राबी यह हुई कि उन्होंने) **अल्लाह के बन्दों में से** (जो मख़लूक़ होते हैं) **अल्लाह की औलाद ठहराई** (जब कि अल्लाह की कोई औलाद नहीं हो सकती), **बेशक** (ऐसा) **इन्सान खुला नाशुक्रा** (है कि अल्लाह तआ़ला के साथ इतना बड़ा कुफ़्र करता है कि उसको औलाद वाला बताता) **है**(15) (और दूसरी ख़राबी यह कि ये लोग लड़की के पैदा होने को ऐब की बात समझते हैं और फिर अल्लाह के लिए बेटियां मानते हैं तो) **क्या अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ में से** (तुम्हारी सोच से अपने लिए तो) **बेटियां पसन्द कीं और तुम्हारे लिए बेटे चुने**(16) **हालांकि** (तुम बेटियों को इतना बुरा समझते हो कि) **जब तुम में से किसी को उस** (बेटी के होने) **की ख़बर दी जाती है जिसको अल्लाह के नाम लगा रक्खा** (है यानी उस की औलाद बना रक्खा) **है तो** (इतना नाराज़ होता है कि) **सारे दिन उस का चेहरा उतरा रहता है और वो दिल ही दिल में घुटता रहता है**(17) (हालांकि लड़की होना कोई ऐब की बात नहीं लेकिन तुम तो उसे कमज़ोर व कमसमझ मानते हो तो) **क्या** (अल्लाह तआ़ला ने औलाद बनाने के लिए लड़की को पसन्द किया है) **जो कि बनाव सिंघार में परवरिश पाए** (कि ज़ेवर और सजने संवरने में औरतों को ज़्यादा दिलचस्पी होती है जो निशानी है समझबूझ कम होने की) **और जो** (कमज़ोर होने की वजह से) **बहस मुबाहिसे में अपनी बात खुल कर भी नहीं कह सकती** (जैसा कि आम तौर से देखा भी जाता है यह दूसरी ख़राबी हुई)(18) **और** (तीसरी ख़राबी यह है कि) **उन्होंने फ़रिशतों को जो अल्लाह के** (मख़लूक़)

बन्दे हैं (चूंकि वो दिखाई नहीं देते इसलिए बिना अल्लाह के बताए उनके बारे में कुछ बात मालूम नहीं हो सकती और अल्लाह ने कहीं उनको औरत नहीं बताया लेकिन इन्होंने बिना दलील फ़रिशतों को) **औरत बना रक्खा है, क्या ये उनके पैदा होने के वक़्त मौजूद** (थे और देख रहे) **थे, बस उनका यह दावा** (जो बिना दलील है आमाल नामे में) **लिख लिया जाता है और** (क़ियामत में) **उनसे पूछताछ होगी(19) और वो लोग यह कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला** (इस बात को खुशी से) **चाहता** (कि फ़रिशतों की इबादत न हो यानी इस इबादत से वो नाराज़ होता) **तो हम** (कभी) **उनकी इबादत न करते** (क्योंकि वो करने ही न देता बल्कि जबरन रोक देता जब नहीं रोका तो पता चला कि वो इनकी इबादत करने से ख़ुश है), **उन को इस** (बात) **की कुछ ख़बर नहीं** (है) **सिर्फ़ अटकलें दौड़ाते हैं** (क्योंकि अल्लाह तआ़ला का किसी काम को बन्दों की मर्ज़ी पर छोड़ देना इस बात का सबूत नहीं कि वो इस काम पर राज़ी भी है)**(20) क्या हम ने उन को इस** (क़ुरआन) **से पहले कोई किताब दे रक्खी है कि ये** (इस दावे में) **उससे दलील लाते हैं(21)** (कुछ नहीं) **बल्कि वो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादों को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उनके पीछे-पीछे रास्ता चल रहे हैं(22) और** (जिस तरह की बातें ये लोग कर रहे हैं) **इसी तरह हमने आप से पहले किसी बस्ती में कोई पैग़म्बर भेजा तो वहां के ख़ुशहाल लोगों ने** (शुरू में और ताबेदारों ने बाद में) **ये ही कहा कि हमने अपने बाप दादों को एक तरीक़े पर पाया है और हम भी उन्हीं के पीछे-पीछे चले जा रहें हैं(23)** (इस पर) **उनके** (उस) **पैग़म्बर ने** (उनसे) **कहा कि क्या** (बाप दादों की रस्मों पर ही चलते रहोगे) **अगर मैं उससे अच्छा** (सही) **ठिकाने पर पहुंचा देने वाला तरीक़ा तुम्हारे पास लाया हूं कि जिस पर तुमने अपने बाप दादों को पाया हो, वो** (दुशमनी से) **कहने लगे कि हम तो उस** (दीन) **को मानते ही नहीं जिस को देकर** (तुम्हारे दावे में) **तुम को भेजा गया है(24) सो** (जब दुशमनी हद से बढ़ गई तो उस वक़्त) **हम ने उन से बदला लिया सो देखिए झुटलाने वालों का कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ(25)।**

नोटः- हज़रत अ़ली रज़ि० से रिवायत है कि सवारी पर चढ़ते वक़्त "बिस्मिल्लाह" कहे फिर सवार हो जान के बाद "अलहम्दुलिल्लाह" कहे और उसके बाद यह पढ़े "सुबहानल्लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा व माकुन्ना लहू मुक़रिनीन। व इन्ना इला रब्बिना लमुनक़लिबून"। (क़ुरतबी)

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۶﴾ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿۲۷﴾ وَ
جَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلْ مَتَّعْتُ هٰۤؤُلَآءِ وَ اٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَ
رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۹﴾ وَ لَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّ اِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَ قَالُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى
رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿۳۱﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
وَ رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَ رَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾

आयत नं० 26 से 32

और (वो वक़्त याद कीजिए) **जब कि इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने बाप से और अपनी क़ौम से कहा था कि मैं उन चीज़ों** (की इबादत) **से अलग हूं जिन की तुम इबादत करते हो(26) मगर हां** (उस अल्लाह से ताल्लुक़ रखता हूं) **जिसने मुझ को पैदा किया फिर वो ही मुझ को** (दीन व दुनिया की भलाई का) **रास्ता दिखाता है** (मतलब यह कि इन लोगों को इब्राहीम अलैहिस्सलाम का हाल याद करना चाहिए कि वो ख़ुद भी तौहीद के मानने वाले थे)(27) **और** (वसीयत से) **वो उस** (अक़ीदे) **को अपनी औलाद में** (भी) **बाक़ी रहने वाली बात कर गये** (यानी अपनी औलाद को भी वसीयत की जिस का असर कुछ-कुछ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने तक भी बराबर रहा यहां तक कि जहालत के ज़माने में भी अरब में कुछ लोग शिर्क से नफ़रत करते थे और यह वसीयत उन्होंने इसलिए की थी) **ताकि** (हर ज़माने में मुशरिक) **लोग** (तौहीद वालों से तौहीद का अक़ीदा सुन-सुन कर शिर्क से) **बाज़ आते रहें(28)** (मगर ये लोग फिर भी बाज़ नहीं आते और इस तरफ़ ध्यान नहीं करते) **बल्कि मैंने** (जो) **उन को और उनके बाप दादों को** (दुनिया का) **ख़ूब सामान दिया है** (उसमें मस्त होकर बेपरवा हो रहे हैं) **यहां तक कि** (उसी बेपरवाई की नींद से जगाने के लिए) **सच्चा क़ुरआन** (जो मोजिज़ा होने की वजह से अपनी सच्चाई की आप ही दलील है) **और साफ़-साफ़ बताने वाला रसूल** (अल्लाह की तरफ़ से) **आया(29) और जब उनके पास यह सच्चा क़ुरआन पहुंचा** (और उसका करिशमा दिखाई दिया) **तो कहने लगे कि यह जादू है और हम इसको नहीं मानते(30) और** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में काफ़िर लोग) **कहने लगे कि यह क़ुरआन** (अगर अल्लाह का कलाम है तो) **इन दोनो बस्तियों** (यानी मक्का और ताइफ़ के रहने वालों) **में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा** (गया यानी पैग़म्बर के लिए बड़ी शान वाला होना ज़रूरी है और इनके पास न माल है न हुकूमत तो ये पैग़म्बर नहीं हो सकते

और न इन को पैग़म्बर बनाया) **गया(31)** (अल्लाह तआला उनके इस शक को दूर करने के लिए कहते हैं कि) **क्या ये लोग आप के रब की** (ख़ास) **रहमत** (यानी पैग़म्बरी) **को** (खुद) **बांटना चाहते** (हैं कि पैग़म्बरी हमारी राय से दी जानी चाहिए यह चाहते) **हैं,** (यह ना समझी है क्योंकि) **दुनिया की ज़िन्दगी में** (तो) **उन की रोज़ी हम ने** (ही) **बांट रक्खी है और** (उस बांटने में) **हमने एक को दूसरे पर बढ़त दे रक्खी है ताकि** (उससे यह फ़ाइदा हो कि) **एक दूसरे से काम लेता** (रहे और दुनिया का इन्तिज़ाम चलता) **रहे, और** (खुली और यक़ीनी बात है कि) **आप के रब की** (ख़ास) **रहमत** (यानी पैग़म्बरी) **तो उस** (दुनिया की दौलत व हुकूमत) **से कहीं बेहतर है जिसको ये लोग समेटते फिरते हैं** (बस जब दुनिया के रोज़गार को उनकी राय पर नहीं बांटा गया जो छोटे दर्जे की चीज़ है तो पैग़म्बरी जो ऊंचे दर्जे की चीज़ है वो क्योंकर उनकी राय पर दी जाती)(32)।

नोटः- हज़रत अब्दुल वहाब शरानी रह० ने फ़रमाया कि औलाद के सुधार के लिए सबसे ज़्यादा कारगर अमल यह है कि मां बाप उनके दीनी सुधार के लिए दुआ की पाबन्दी करें। अफ़सोस है कि इस आसान तदबीर से आजकल बेपरवाई आम होती जा रही है और इसके बुरे अन्जाम को मां बाप खुद देख रहे हैं।

وَلَوْلَآ أَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا
يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾ وَزُخْرُفًا ۚ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ
الْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾

आयत नं० 33 से 35

और (ये काफ़िर लोग पैग़म्बरी के लिए माल व दौलत की ज़्यादती को शर्त समझते हैं जबकि पैग़म्बरी बड़ी शान की चीज़ है और दुनिया की दौलत व हुकूमत हमारे नज़दीक ऐसी गिरी हुई चीज़ है कि) **अगर यह बात न होती कि** (क़रीब-क़रीब) **सभी आदमी एक ही तरीक़े के** (यानी काफ़िर) **हो जाएंगे तो जो लोग अल्लाह के साथ कुफ़्र करते हैं** (और अल्लाह के सख़्त नापसन्दीदा हैं) **हम उन** (सब) **के लिए उनके घरों की छतें चान्दी की कर देते और ज़ीने भी** (चान्दी के कर देते) **जिन पर चढ़ा** (उतरा) **करते(33) और उनके घरों के दरवाज़े भी** (चान्दी के कर देते) **और तख़्त भी** (चान्दी के कर देते) **जिन पर तकिया लगा कर बैठते हैं(34) और** (ये ही चीज़ें) **सोने की भी**

(कर देते यानी कुछ चान्दी की कुछ सोने की, मगर यह सामान सब काफ़िरों को इसलिए नहीं दिया कि अक्सर लोगों में माल की हिर्स छाई हुई है बस कुछ थोड़े से आदमियों को छोड़ कर क़रीब-क़रीब सभी कुफ़्र अपना लेते इसलिए सब काफ़िरों को ज़्यादा दौलत नहीं दी और साफ़ बात है कि दुशमनों को इतना माल नहीं दिया करते इससे पता चला कि दुनिया का माल व दौलत कोई बड़ी चीज़ नहीं है बस वो पैग़म्बरी के रूतबे के लिए कोई चीज़ नहीं तो पैग़म्बर के लिए माल व दौलत को शर्त समझना नासमझी है बस यह कहना कि पैग़म्बर कोई दुनिया में बड़ा माना जाने वाला आदमी होना चाहिए बेअसल है पैग़म्बर के लिए जिन ख़ूबियों की ज़रूरत है वो हुज़ूर में कमाल दर्जा मौजूद हैं), **और ये सब** (साज़ो सामान जिस का ऊपर ज़िक्र हुआ) **कुछ भी नहीं सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी की कुछ दिन की बहार** (है फिर फ़ना हो जानी) **है, और आख़रत** (जो सदा के लिए और इससे बेहतर है वो) **आप के रब के यहां परहेज़गारों के लिए है**(35)।

नोटः- एक हदीस में है कि "अगर दुनिया अल्लाह के नज़दीक मच्छर के एक पर के बराबर भी दर्जा रखती तो अल्लाह तआ़ला किसी काफ़िर को उससे पानी का एक घूंट भी न देता"। (तिरमिज़ी)

इससे मालूम हुआ कि न माल व दौलत का ज़्यादा होना कोई बड़ाई की चीज़ है न इस की कमी इन्सान का रूतबा कम होने की निशानी है।

وَ مَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾ وَ اِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَ
يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِىْ وَ بَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَ
لَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَ مَنْ
كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِىْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ
مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِىْٓ اُوْحِىَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَ اِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَ لِقَوْمِكَ ۚ وَ
سَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَ سْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 36 से 45

और जो आदमी अल्लाह की नसीहत (यानी कुरआन और वही) **से** (जान बूझकर) **अन्धा बन जाए** (जैसे ये काफ़िर हैं कि सारी दलीलों के होते हुए जहालत से काम लेते हैं) **हम उस पर**

एक शैतान तैनात कर देते हैं बस वो (हर वक़्त) **उसके साथ रहता है**(36) **और वो** (साथ रहने वाले शैतान) **उन** (क़ुरआन से मुंह फेरने वालों) **को** (बराबर दीन के) **रास्ते से रोकते रहते हैं** (और साथ रहने का ये ही असर है) **और ये लोग** (दीन से दूर होने के बावजूद) **यह समझते हैं कि वो** (यानी हम) **सही रास्ते पर** (हैं सो उन का ग़म क्यों किया जाए जिन की गुमराही की यह सूरत और यह हालत हो उनके राह पर आने की क्या उम्मीदें) **हैं**(37) (और जल्दी ही यानी क़ियामत में उनकी आंखें खुल जाएंगी क्योंकि यह बेपरवाई दुनिया तक है) **यहां तक कि जब ऐसा आदमी हमारे पास आएगा** (और अपनी ग़लती पता चलेगी) **तो** (उस साथी शैतान से) **कहेगा कि काश मेरे और तेरे बीच में** (दुनिया में) **पूरब और पच्छिम के बराबर दूरी होती** (क्यों) **कि तू बहुत बुरा साथी था** (कि तूने मुझको गुमराह किया मगर यह पछतावा उस वक़्त काम न आएगा)(38) **और** (उनसे कहा जाएगा कि) **जब कि तुम** (दुनिया में) **कुफ़्र कर चुके थे तो आज यह बात** (भी) **तुम्हारे काम न आएगी कि तुम** (और शैतान) **सब अज़ाब में साझी हो** (जैसे दुनिया में कभी-कभी दूसरे को मुसीबत में साथ देख कर कुछ तसल्ली हो जाती है वहां अज़ाब बहुत ज़्यादा सख़्त होगा इसलिए दूसरे की तरफ़ ध्यान भी न होगा हर आदमी अपने को ही ज़्यादा मुसीबत में समझेगा)(39) **तो** (आप जब जान चुके कि उनके रास्ते पर आने की कोई उम्मीद नहीं तो) **क्या आप** (ऐसे) **बहरों को सुना सकते हैं या** (ऐसे) **अन्धों को और उन लोगों को जो कि खुली गुमराही में** (पड़े) **हैं रास्ते पर ला सकते हैं** (यानी उनको राह पर लाना आप के बस से बाहर है आप पीछे न पड़ें)(40) **फिर** (उनकी यह सरकशी ख़ाली जाने वाली नहीं बल्कि इस पर ज़रूर सज़ा होने वाली है चाहे आप की ज़िन्दगी में हो या आप के बाद हो, बस) **अगर हम** (दुनिया से) **आप को उठालें तो भी हम उन** (काफ़िरों) **से बदला लेने वाले हैं**(41) **या अगर उनसे जो हम ने अज़ाब का वादा कर रक्खा है वो** (आप की ज़िन्दगी में उन पर लाकर) **आप को** (भी) **दिखा दें तब भी** (कुछ मुश्किल नहीं क्योंकि) **वो हमारे बस में है** (मतलब यह कि अज़ाब ज़रूर होगा चाहे कब ही हो)(42) **तो आप** (तसल्ली रखिए और) **उस क़ुरआन को मज़बूती से थामे रहिए जो आप पर वही से भेजा गया है** (क्योंकि) **आप बेशक सीधे रास्ते पर हैं** (मतलब यह कि अपना काम किये जाइये और दूसरों के काम का ग़म न कीजिए)(43) **और यह क़ुरआन आप के लिए और आप की क़ौम के लिए बड़ी इ़ज़्ज़त की चीज़ है और जल्द ही** (क़ियामत के दिन) **तुम सब से पूछा जाएगा** (कि तुम ने इसका क्या हक़ अदा किया)(44) **और** (काफ़िरों को सब से बड़ा ऐतराज़ तौहीद के अक़ीदे पर है इसके बारे में कहते हैं कि) **आप उन सब पैग़म्बरों से जिन को हमने आप से पहले भेजा है पूछ लीजिए** (यानी

उन की किताबों का जो हिस्सा मौजूद है उसमें पता कर लीजिए) **कि क्या हमने अल्लाह** (रहमान) **के सिवा** (कभी भी) **दूसरे माबूद ठहरा दिये थे कि उनकी इबादत की जाए** (मुराद इससे दूसरों को सुनाना है कि जिस का जी चाहे पता कर ले और किताबों में देखने को पैग़म्बरों से पूछना कह दिया गया है)(45)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि इ़ज़्ज़त और नेक नामी क़द्र की चीज़ है जिस पर शुक्र अदा करता रहे। मगर नेक काम अल्लाह की रज़ा के लिए करे नाम के लिए नहीं वर्ना रिया (दिखावा) हो जाएगा।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ
مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۫ وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَ
قَالُوْا يٰٓاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ
يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِىْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِىْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِىْ ۚ اَفَلَا
تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَآ اُلْقِىَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ
اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا
انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

आयत नं० 46 से 56

और हमने मूसा (अलैहिस्सलाम) **को अपनी निशानियां** (यानी मोजिज़े) **देकर फ़िरऔन के और उसके सरदारों के पास भेजा था सो उन्होंने** (उन लोगों के पास आकर) **कहा कि मैं सारे जहानों के रब** (अल्लाह) **की तरफ़ से** (तुम लोगों की हिदायत के लिए) **पैग़म्बर** (होकर आया) **हूं** (मगर फ़िरऔन और उसके लोगों ने नहीं माना)(46) **फिर** (हमने दूसरी निशानियां सज़ाओं की सूरत में उनकी पैग़म्बरी साबित करने के लिए दिखाईं जैसे सूखा पड़ना मगर उन लोगों की फिर भी यह हालत रही कि) **जब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **उनके पास हमारी** (वो) **निशानियां लेकर आए तो वो यकायक उन** (मोजिज़ों) **पर हंसने लगे** (कि ऐसी बातें तो वैसे भी हो जाती हैं जैसे तूफ़ान आना या सूखा पड़ना हालांकि उनका मोजिज़ा होना साफ़ दिखाई देता जैसा कि उस मुसीबत का सिर्फ़ दीन के मुख़ालिफ़ों पर आना और मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ से मुसीबत का दूर हो जाना)(47) **और हम उनको जो**

निशानी दिखलाते थे वो दूसरी निशानी से बढ़ कर होती थी (मतलब यह कि एक से एक बढ़कर निशानी दिखाई), **और हमने** (उन निशानियों से) **उन लोगों को अज़ाब में पकड़ा था ताकि वो** (अपने कुफ़्र से) **बाज़ आजाएं** (यानी वो निशायिां पैग़म्बरी की दलील भी थी और उनके लिए सज़ा भी थी मगर वो लोग बाज़ न आए जबकि मुसीबत दूर होने पर बाज़ आने का वादा भी कर लेते थे)(48) **और उन्होंने** (मूसा अलैहिस्सलाम से हर निशानी पर यह) **कहा कि ऐ जादूगर हमारे लिए अपने रब से उस बात की दुआ कर दीजिए जिसका उसने आप से वादा कर रक्खा है** (और वो बात है हमारे बाज़ आजाने पर मुसीबत का दूर कर देना हम वादा करते हैं कि अगर आप इस अज़ाब को दूर करादें तो) **हम ज़रूर राह पर आजाएंगे**(49) **फिर** (जब) **हमने वो अज़ाब उनसे हटा दिया तब ही उन्होंने** (अपना) **वादा तोड़ दिया**(50) **और फ़िरऔन ने** (यह सोच कर कभी मोजिज़े देख कर आम लोग मुसलमान हो जाएं) **अपनी क़ौम में मुनादी कराई** (और उस मुनादी में) **यह बात कही** (यानी कहलवाई) **कि ऐ मेरी क़ौम क्या मिस्र की हुकूमत मेरे हाथ में नहीं है और** (देखो) **ये नहरें मेरे** (महल के) **नीचे बह रही हैं क्या तुम** (ये चीज़ें) **देखते नहीं हो**(51) (और मूसा अलैहिस्सलाम के पास कुछ भी सामान नहीं तो मैं बेहतर और बात मानने के क़ाबिल हूं या मूसा अलैहिस्सलाम) **बल्कि मैं** (ही) **बेहतर हूं उस आदमी से** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम से) **जो कि कुछ इज़्ज़तदार** (भी) **नहीं और साफ़ बोल नहीं सकता**(52) (और यह आदमी अपने आप को पैग़म्बर बताता है) **तो इसके** (हाथों में) **सोने के कंगन क्यों नहीं डाले गये** (जैसा दुनिया के बादशाहों की आदत है कि जब किसी पर ख़ास महरबानी करते हैं तो उसको आम दरबार में सोने के कंगन पहनाते हैं मतलब यह कि अगर इस आदमी को पैग़म्बरी मिलती तो ख़ुदा की तरफ़ से उसके हाथ में सोने के कंगन होते) **या फ़रिशते इसके साथ पर बान्ध कर आए होते** (जैसा कि शाही हाकिमों का जुलूस इसी शान से निकलता है)(53) **बस उसने** (ऐसी बातें करकर के) **अपनी क़ौम को बेवक़ूफ़ बनाया और वो उसके कहने में आगये,** (और) **वो लोग** (कुछ पहले से भी) **शरारत के भरे थे** (इस वजह से फ़िरऔन की बातों का उन पर ज़्यादा असर हुआ)(54) **फिर जब उन लोगों ने** (बराबर कुफ़्र व मुख़ालफ़त करके) **हम को ग़ुस्सा दिलाया तो हमने उन सब को डुबो दिया**(55) (और) **हमने उनको एक गई गुज़री क़ौम और आने वाले लोगों के लिए सीख का सामान बना दिया** (कि आने वाली नस्ल एक दूसरे को सुनाती कि उन्होंने ऐसे बुरे काम किये और उनका ऐसा अन्जाम हुआ)(56)।

नोटः- मक्के के काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह ऐतराज़ किया कि आप मालदार नहीं हैं यहां उस का जवाब दे दिया गया कि फ़िरऔन और उसकी क़ौम ने भी ये ही ऐतराज़ मूसा अलैहिस्सलाम पर किया था मगर उनका अन्जाम क्या हुआ।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝٥٧ وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۭ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا
جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝٥٨ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ ۝٥٩ وَلَوْ
نَشَاۗءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰۗىِٕكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ۝٦٠ وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۭ هٰذَا
صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٦١ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٦٢ وَلَمَّا جَاۗءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ۝٦٣ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَ
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٦٤ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ
يَوْمٍ اَلِيْمٍ ۝٦٥

आयत नं० 57 से 65

और (एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा कि अल्लाह के सिवा जिस किसी की इबादत की जाती है उनमें से किसी में कोई भलाई नहीं इस पर कुछ लोगों ने यह ऐतराज़ किया कि ईसाई लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इबादत करते हैं मगर उनके बारे में आप कहते हैं कि उनमें भलाई ही भलाई थी इसके जवाब में अल्लाह तआला कहते हैं कि) **जब मरयम के बेटे** (ईसा अलैहिस्सलाम) **के बारे में मिसाल दी गई तो यकायक आप की क़ौम के लोग उस** (ऐतराज़ के सुनने) **से** (मारे ख़ुशी के) **चिल्लाने लगे(57) और** (उस ऐतराज़ करने वाले के साथ मिलकर) **कहने लगे कि** (बताइये आप के नज़दीक) **हमारे माबूद ज़्यादा बहतर हैं या ईसा** (अलैहिस्सलाम बेहतर हैं मतलब यह कि आप ईसा अलैहिस्सलाम को तो यक़ीन से बेहतर समझते हैं तो जब उनकी इबादत हुई तो उनमें भी भलाई नहीं यानी आप जिनको भला कहते हैं उनकी भी इबादत हुई इससे साबित हुआ कि शिर्क सही है)**, उन लोगों ने जो यह** (अजीब ऐतराज़) **आप से बयान किया है तो सिर्फ़ झगड़ने के** (लिए न कि सच्चाई जानने के) **लिए,** (और उनका झगड़ना कुछ इसी ऐतराज़ के साथ नहीं) **बल्कि ये लोग** (अपनी आदत से) **झगड़ालू ही** (हैं कि अक्सर बातों में झगड़े निकालते)

हैं(58) (आगे जवाब है यानी) **ईसा** (अलैहिस्सलाम) **तो सिर्फ़ एक ऐसे बन्दें हैं जिन पर हमने** (पैग़म्बरी देकर अपना) **इनआम किया और उनको बनी इस्राईल के लिए** (पहले और दूसरों के लिए बाद में) **हमने** (अपनी कुदरत का) **एक नमूना बनाया था** (ताकि लोग यह समझ लें कि अल्लाह तआला को इस तरह बिना बाप के पैदा करना भी कुछ मुश्किल नहीं)(59) **और** (हम तो इससे ज़्यादा कामों की कुदरत रखते हैं कि) **अगर हम चाहते तो हम तुम से फ़रिशतों को पैदा कर देते** (जिस तरह तुम से तुम्हारे बच्चे पैदा होते हैं) **कि वो ज़मीन पर** (इन्सान की तरह) **एक के बाद दूसरे रहा करते** (यानी पैदाइश भी इन्सानों की तरह होती और मौत भी बस बिना बाप के पैदा होना ईसा अलैहिस्सलाम के माबूद होने की दलील नहीं बन सकता)(60) **और वो** (यानी ईसा अलैहिस्सलाम) **क़ियामत के यक़ीन की निशानी हैं** (कि जब ऐसे पैदा हो सकते हैं तो क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होना भी हैरानी की बात नहीं) **तो तुम लोग उस** (के आने में) **शक न करो और** (तौहीद व आख़रत के बारे में) **तुम लोग मेरा कहना मानो,** (जिस बात की तरफ़ मैं तुम को बुलाता हूं) **यह सीधा रास्ता है**(61) **और तुम को शैतान** (इस राह पर आने से) **रोकने न पाए वो बेशक तुम्हारा खुला दुशमन है**(62) **और** (आगे हज़रत ईसा के कलाम से तौहीद की तस्दीक़ और शिर्क के बुरा होने का बयान है कि) **जब ईसा** (अलैहिस्सलाम खुले-खुले) **मोजिज़ लेकर आए तो उन्होंने** (लोगों से) **कहा कि मैं तुम्हारे पास समझ की बातें लेकर आया हूं** (और इसलिए आया हूं ताकि तुम्हारे अक़ीदे का सुधार करूं) **ताकि कुछ बातें** (जाइज़ व नाजाइज़ की) **जिन में तुम झगड़ते हो तुम से बयान कर दूं** (जिस से शक दूर होकर झगड़ा ख़त्म हो जाए) **तो तुम लोग अल्लाह से डरो** (और मेरी पैग़म्बरी का इनकार न करो क्योंकि यह अल्लाह की मुख़ालफ़त है) **और मेरा कहना मानो**(63) (और ईसा अलैहिस्सलाम ने यह भी कहा कि) **बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा भी रब है तो** (सिर्फ़) **उसी की इबादत करो,** (और) **ये ही** (तौहीद) **सीधा रास्ता है**(64) **सो** (ईसा अलैहिस्सलाम के तौहीद के इस साफ़ बयान के बावजूद फिर भी) **बहुत से गिरोहों ने** (इस बारे में) **आपस में फूट डाल ली** (यानी तौहीद के ख़िलाफ़ तरह-तरह के मज़हब बना लिए) **सो इन ज़ालिमों** (यानी मुशरिकों) **के लिए एक दर्द भरे दिन के अज़ाब से बड़ी ख़राबी** (होने वाली) **है** (बस हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने तो खुद तौहीद की तरफ़ बुलाया इसलिए उनकी इबादत करना शिर्क के सही होने की दलील नहीं बन सकता)(65)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि बुराई उन माबूदों की की गई जो ख़ुद अपनी इबादत किये जाने को पसन्द करते हों जैसे शैतान। और जो ख़ुद अल्लाह की इबादत करते और दूसरों को भी ये ही कहते उनमें बुराई नहीं। हां उनकी इबादत करना बुरा है जैसे पैग़म्बर और फ़रिशते।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا
الْمُتَّقِيْنَ ﴿۶۷﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿۶۸﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿۶۹﴾
اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿۷۰﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ
الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۷۱﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۷۲﴾
لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۷۳﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿۷۴﴾ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَ
هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۷۶﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ
اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿۷۷﴾

आयत नं० 66 से 77

ये लोग (सच्चाई जानने के बावजूद ग़लती पर जमे हुए हैं तो इसका मतलब यह हुआ कि) **बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वो उन पर अचानक आपड़े और उनको ख़बर भी न हो(66)** (और क़ियामत ऐसी चीज़ है कि दुनिया के) **सब दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुशमन हो जाएंगे सिवाए अल्लाह से डरने वालों** (यानी ईमान वालों) **के(67)** (और उन मोमिनों से कहा जाएगा कि) **ऐ मेरे बन्दो तुम पर आज कोई डर** (की बात पड़ने वाली) **नहीं और न तुम्हें कोई ग़म होगा(68) यानी वो बन्दे जो हमारी आयतों पर ईमान लाए थे और हमारा कहना मानते थे(69) तुम और तुम्हारी** (ईमानदार) **बीवियां ख़ुशी-ख़ुशी जन्नत में दाख़िल हो जाओ(70)** (और जन्नत में) **उनके पास सोने की पलेटें** (खाने की चीज़ों से भरी हुई) **और गलास** (पीने की चीज़ों से भरे हुए) **लाए जाएंगे** (यानी ग़िलमान लाएंगे) **और वहां वो चीज़ें मिलेंगी जिन को जी चाहेगा और जो आंखों को अच्छी लगें और** (उनसे कहा जाएगा कि) **तुम यहां सदा रहोगे(71) और** (यह भी कहा जाएगा कि) **यह वो जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिये गये** (तुम से कभी न ली जाएगी) **अपने नेक कामों के बदले में(72)** (और) **तुम्हारे लिए इसमें बहुत से फल हैं जिन**

में से खा रहे हो(73) (आगे काफ़िरों का ज़िक्र है कि) **बेशक मुजरिम** (यानी काफ़िर) **लोग दोज़ख़ के अज़ाब में सदा रहेंगे**(74) **वो** (अज़ाब) **उन** (पर) **से हल्का न किया जाएगा और वो उसी** (अज़ाब) **में मायूस पड़े रहेंगे**(75) **और** (आगे अल्लाह तआला कहते हैं कि) **हमने उन पर** (ज़रा) **ज़ुल्म नहीं किया** (कि नाहक़ अज़ाब दिया हो) **लेकिन ये खुद ही ज़ालिम थे** (कि कुफ़्र व शिर्क करके अपना नुक़सान कर लिया)(76) **और** (जब वो छुटकारे से बिल्कुल मायूस हो जाएंगे उस वक़्त मौत की तमन्ना करेंगे और दोज़ख़ के दारोग़ा मालिक नाम के फ़रिशते को) **पुकारेंगे कि ऐ मालिक** (तुम ही दुआ करो कि) **तुम्हारा रब** (हम को मौत देकर) **हमारा काम ही तमाम कर दे, वो** (फ़रिशता) **जवाब देगा कि तुम सदा इसी हाल में रहोगे** (न यहां से निकलोगे और न मरोगे)(77)।

नोटः– ऐतबार उस दोस्ती का है जो आख़रत में बाक़ी रहे और वो दोस्ती वो है जो अल्लाह के लिए हो।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَمْ اَبْرَمُوْۤا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿۷۹﴾ اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا
لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَ نَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَ رُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۸۰﴾ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖۗ فَاَنَا اَوَّلُ
الْعٰبِدِيْنَ ﴿۸۱﴾ سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى
يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّ فِي الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۴﴾ وَ
تَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَيْنَهُمَا ۚ وَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾ وَ لَا
يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَ هُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَ لَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ
خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾ وَ قِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَ قُلْ
سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾

आयत नं० 78 से 89

(और ऊपर जिन सज़ाओं का बयान हुआ उनकी वजह यह है कि) **हम ने सच्चा दीन** (जिसका ज़रूरी हिस्सा तौहीद व पैग़म्बरी का यक़ीन है) **तुम्हारे पास पहुंचाया लेकिन तुम में अक्सर आदमी सच्चे दीन से नफ़रत रखते हैं**(78) **हां क्या उन्होंने** (पैग़म्बर को नुक़सान पहुंचाने के बारे में) **मन बना लिया है सो हमने भी एक फ़ैसला ले लिया है** (और खुली बात है कि अल्लाह के सामने

उनकी बात चल नहीं सकती इसलिए आप बचे रहे और वो नाकाम और आख़िर को जंगे बद्र में हलाक हुए)(79) (ये लोग जो आप को नुक़सान पहुंचाने के लिए छुप कर साज़िशें करते हैं) **क्या वो यह समझते हैं कि हम उनकी चुपके-चुपके** (कही हुई) **बातों को और उनके** (छुप कर किये) **मशवरों को नहीं सुनते,** (बल्कि) **हम ज़रूर सुनते हैं और** (इसके अलावा) **हमारे फ़रिशते** (जो कामों के लिखने वाले) **उनके पास हैं वो भी लिखते हैं(80) आप** (इन मुशरिकों से) **कहिए कि** (तुम जो अल्लाह के औलाद बताते हो तो) **अगर** (मानलो) **अल्लाह के औलाद हो तो सब से पहले उसकी इबादत करने वाला मैं हूं** (यानी उसके कोई औलाद नहीं है)(81) **आसमानों और ज़मीन का मालिक जो कि अर्श का मालिक है उन बातों से पाक है जो ये** (मुशरिक) **लोग** (उसके बारे में) **बयान कर रहे हैं(82)** (जब ये लोग सच्चाई जानने के बाद भी अपनी दुशमनी से बाज़ नहीं आते) **तो आप उनको इसी धन्धे और खेल तमाशे में रहने दीजिए** (यानी न उनकी मुख़ालफ़त की परवाह कीजिए और न उनके ईमान न लाने का ग़म कीजिए) **यहां तक कि वो अपने उसी दिन से जा मिलें जिस का उनसे वादा किया जाता है** (उस वक़्त सब असलीयत पता चल जाएगी)(83) **और वो ही ज़ात जो आसमानों में भी इबादत के क़ाबिल है और ज़मीन में भी इबादत के क़ाबिल है, और वो ही बड़ी हिकमत वाला और बड़े इल्म वाला** (है और कोई इल्म व हिकमत में उस का साझी नहीं बस इबादत भी ख़ालिस उसी के लिए) **है(84) और बड़ी शान है उसकी जिसकी हुकूमत है आसमानों और ज़मीन में और उनके बीच की सारी चीज़ों में, और उसी के पास क़ियामत का इल्म है** (जिसकी किसी को ख़बर नहीं) **और तुम सब उसी के पास लौट कर जाओगे** (और उसको हिसाब दोगे)(85) **और** (उस वक़्त ख़ुदाई में किसी का साझी न होना ऐसा साबित हो जाएगा कि) **अल्लाह के सिवा जिन माबूदों को ये लोग पुकारते हैं वो सिफ़ारिश** (तक) **न कर सकेंगे हां जिन लोगों ने हक़ बात** (मानी यानी कलमे का) **इक़रार किया था और वो** (दिल से) **तस्दीक़ भी किया करते थे** (वो अलबत्ता अल्लाह के हुक्म से ईमान वालों की सिफ़ारिश कर सकेंगे मगर इससे काफ़िरों को क्या फ़ाइदा)(86) **और अगर आप उनसे पूछें कि उनको** (यानी तुम को) **किस ने पैदा किया है तो ये ही कहेंगे कि अल्लाह ने** (पैदा किया है) **तो** (साफ़ बात है कि इबादत का हक़दार वो ही हो सकता है जो पैदा करने की क़ुदरत रखता है फिर भी) **ये लोग** (ख़ुदा जाने) **किधर उल्टे चले जाते हैं(87) और** (जिस तरह अल्लाह तआ़ला को क़ियामत की ख़बर है उसी तरह) **उस को पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के इस कहने की भी ख़बर है कि या रब मेरे ये लोग ऐसे हैं कि** (मेरे इतना समझाने पर भी) **ईमान नहीं लाते** (इससे सज़ा की सख़्ती

और बढ़ गई बस समझ लेना चाहिए कैसा सख़्त अज़ाब होगा)(88) **तो** (जब आप को मालूम हो गया कि उनका अन्जाम यह होने वाला है तो) **आप उनसे बेपरवाह रहिए** (यानी उनके ईमान की ऐसी उम्मीद न रखिए जो बाद में दुख हो) **और** (अगर वो आप से मुख़ालफ़त और जहालत की बात करें तो आप बुराई दूर करने के लिए) **यह कह दीजिए कि तुम को सलाम करता** (हूं और कुछ नहीं कहता और न कुछ वास्ता रखता) **हूं,** (और आप कुछ दिनों सब्र कीजिए) **सो उन को अभी** (मरते ही) **पता चल जाएगा**(89)।

नोटः- यहां सलाम से मुराद ख़ूबसूरती के साथ अलग हो जाना है। इस आयत को दलील बनाकर काफ़िरों को सलाम जाइज़ ठहराना दुरूस्त नहीं। (रूहुल मआनी)

44-सूरत-दुख़ान

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '59' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۚ۩ ﴿۱﴾ وَ الۡکِتٰبِ الۡمُبِیۡنِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰہُ فِیۡ لَیۡلَۃٍ مُّبٰرَکَۃٍ اِنَّا کُنَّا مُنۡذِرِیۡنَ ﴿۳﴾ فِیۡہَا یُفۡرَقُ کُلُّ اَمۡرٍ حَکِیۡمٍ ۙ﴿۴﴾
اَمۡرًا مِّنۡ عِنۡدِنَا ؕ اِنَّا کُنَّا مُرۡسِلِیۡنَ ۚ﴿۵﴾ رَحۡمَۃً مِّنۡ رَّبِّکَ ؕ اِنَّہٗ ہُوَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ ۙ﴿۶﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ
مَا بَیۡنَہُمَا ۘ اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِیۡنَ ﴿۷﴾ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ یُحۡیٖ وَ یُمِیۡتُ ؕ رَبُّکُمۡ وَ رَبُّ اٰبَآئِکُمُ الۡاَوَّلِیۡنَ ﴿۸﴾ بَلۡ ہُمۡ فِیۡ
شَکٍّ یَّلۡعَبُوۡنَ ﴿۹﴾

आयत नं० 01 से 09

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह को मालूम है)(01) **क़सम है इस साफ़** (साफ़ मतलब बयान करने वाली) **किताब की(02) कि हमने इस को** (लोहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर) **एक बरकत वाली रात** (याने शबे क़द्र) **में उतारा है** (क्योंकि) **हम** (महरबानी की वजह से अपने बन्दों को) **ख़बरदार करने वाले थे** (यानी हमने यह चाहा कि उनको नुक़सान से बचाने के लिए भलाई-बुराई पर ख़बरदार करें इसलिए क़ुरआन को उतारा गया)(03) **इस रात में हर हिकमत वाला मुआमला तय किया जाता है(04) हमारे हुक्म से** (यानी साल भर के सारे काम जिस तरह हम चाहते हैं तय करके फ़रिशतों के सुपुर्द कर दिये जाते हैं, और यह क़ुरआन इसलिए उतारा गया कि) **हम आप को पैग़म्बर बनाने वाले थे(05) उस महरबानी की वजह से जो आप के रब की तरफ़ से है** (ताकि आप के वास्ते से अपने बन्दों को ख़बरदार करें), **बेशक वो बड़ा सुनने वाला बड़ा जानने वाला** (है इसलिए बन्दों का ध्यान रखता) **है(06)** (और वो ऐसा है) **जो कि मालिक है आसमानों और ज़मीन का और जो** (मख़लूक़) **इन दोनों के बीच में है उसका भी, अगर आप यक़ीन लाना चाहते** (हैं तो ये तौहीद की दलीलें यक़ीन लाने के लिए काफ़ी) **हैं(07) उसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वो ही ज़िन्दगी देता है और वो ही मौत देता है, वो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले गुज़रे हुए बाप दादों का भी रब है(08)** (और चाहिए तो यह था कि वो लोग मान लेते मगर

ये लोग फिर भी नहीं मानते) **बल्कि वो** (तौहीद की तरफ़ से) **शक में** (पड़े) **हैं** (और दुनिया के) **खेल** (कूद) **में लगे हुए हैं** (आख़रत की फ़िक्र नहीं जो सच्चे दीन को तलाश करें इस बारे में सोचें)(09)।

नोटः- एक हदीस में है कि "जो आदमी जुमा की रात में सूरत दुख़ान पढ़ले तो सुबह को उसके गुनाह मुआफ़ हो चुके होंगे"।

और एक हदीस में है कि "जिस आदमी ने जुमा की रात या दिन में सूरत दुख़ान पढ़ ली अल्लाह तआ़ला उसके लिए जन्नत में घर बनाएंगे"। (क़ुरतबी)

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۱۰﴾ يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ
اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَ قَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۳﴾ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ قَالُوْا مُعَلَّمٌ
مَّجْنُوْنٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿۱۵﴾ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۱۶﴾

आयत नं० 10 से 16

(और जब ये लोग सच्चाई साबित हो जाने के बाद भी नहीं मानते) **तो आप** (उनके लिए) **उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए कि आसमान की तरफ़ एक दिखाई देने वाला धुंआ पैदा हो**(10) **जो इन सब लोगों पर छाजाए, यह** (भी) **एक दर्दनाक सज़ा** (है जो उनको होगी इससे मुराद अनाज का अकाल है जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बददुआ से एक बार मक्के में और एक बार मदीने में हुआ और भूक की सख़्ती में आसमान ज़मीन के बीच आंखों के सामने धुंआ सा दिखाई देता) **है**(11) (उस वक़्त ये लोग कहेंगे कि) **या रब हमारे हम से इस मुसीबत को दूर कर दीजिए हम ज़रूर ईमान ले आएंगे**(12) (मगर ये वादा सच्चे दिल से नहीं करते क्योंकि) **उन को** (इससे) **कब नसीहत होती है** (जिससे उनके ईमान की उम्मीद की जाए) **हालांकि** (इससे पहले) **उनके पास साफ़-साफ़ बयान करने वाला पैग़म्बर आया**(13) **फिर भी ये लोग उससे मुंह फेरे रहे और ये ही कहते रहे कि** (किसी दूसरे इन्सान का) **सिखाया हुआ है** (और) **दीवाना** (है बस जब इतने बड़े पैग़म्बर के आने पर जिसकी पैग़म्बरी दलीलों से साबित है ये लोग ईमान नहीं लाए तो अकाल दूर होने पर इन से ईमान लाने की कब उम्मीद) **है**(14) (मगर) **हम** (दलील पूरी करने के लिए अच्छा) **कुछ**

दिनों के लिए उस अज़ाब को हटा देंगे (मगर) **तुम फिर अपनी उसी** (पहली) **हालत पर आजाओगे** (जैसा कि ऐसा ही हुआ भी)(15) **बेशक** (इस अज़ाब के टलने की मुद्दत सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी तक है फिर मरने के बाद जो मुसीबत आएगी उसका कही ख़ात्मा नहीं बस) **जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे** (उस दिन) **हम** (पूरा) **बदला लेंगे** (यानी आख़रत में पूरी सज़ा होगी)(16)

नोटः- कुछ सहाबा ने दुख़ान (धुएं) को क़ियामत की निशानियों में से बताया है।

وَ لَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِیْمٌ ﴿١٧﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَیَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ
اَمِیْنٌ ﴿١٨﴾ وَّ اَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّیْۤ اٰتِیْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿١٩﴾ وَ اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾ وَ
اِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِیْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِیْ لَیْلًا اِنَّكُمْ
مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَ اتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ﴿٢٥﴾ وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ
كَرِیْمٍ ﴿٢٦﴾ وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِیْهَا فٰكِهِیْنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِیْنَ ﴿٢٨﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَیْهِمُ السَّمَآءُ وَ
الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِیْنَ ﴿٢٩﴾ وَ لَقَدْ نَجَّیْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِیْنِ ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
عَالِیًا مِّنَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿٣١﴾ وَ لَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿٣٢﴾ وَ اٰتَیْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰیٰتِ مَا فِیْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِیْنٌ ﴿٣٣﴾

आयत नं० 17 से 33

और हमने इन से पहले फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया था और (वो आज़माना यह था कि कौन ईमान लाता है और कौन नहीं लाता इसलिए) **उनके पास एक इज़्ज़तदार पैग़म्बर** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम) **आए थे**(17) (और उन्होंने आकर फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम से कहा) **कि इन अल्लाह के बन्दों** (यानी बनी इस्राईल) **को** (जिन को तुम तरह-तरह से सता रहे हो) **मेरे हवाले कर दो** (और उनसे अलग हो जाओ कि मैं जहां और जिस तरह ठीक हो इन को आज़ाद करके रक्खूं), **मैं तुम्हारी तरफ़** (अल्लाह का) **एक अमानतदार पैग़म्बर** (बनकर आया हूं बस तुम को मेरी बात मानना चाहिए क्योंकि मैं कोई बात वही से घटाता बढ़ाता नहीं जो हुक्म होता है पहुंचाता) **हूं**(18) **और यह** (भी कहा) **कि तुम अल्लाह से सरकशी मत करो मैं तुम्हारे सामने एक खुली हुई दलील** (अपनी पैग़म्बरी की) **पेश करता हूं** (यानी असा और चमकते हाथ का मोजिज़ा)(19) **और** (जब फ़िरऔन और फ़िरऔन वालों ने न माना बल्कि आपस में क़त्ल का मशवरा हुआ उस वक़्त आप ने

सुन कर कहा कि) **मैं अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह लेता हूं इससे कि तुम लोग मुझ को पत्थर बरसा कर क़त्ल करो(20) और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से अलग ही रहो** (यानी मुझ को तकलीफ़ मत पहुंचाओ क्योंकि मुझको तो कोई नुक़सान न पहुंचेगा यह मुझ से अल्लाह का वादा है लेकिन तुम्हारा जुर्म और बढ़ जाएगा मगर वो कब मानने वाले थे)(21) **तब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने रब से दुआ की कि ये बड़े सख़्त मुजरिम लोग हैं** (कि जुर्मों से बाज़ नहीं आते अब इनका फ़ैसला कर दीजिए कहा कि हमने दुआ क़ुबूल की और उनके फ़ैसले का वक़्त आगया)(22) **तो** (कहा गया कि) **अब मेरे बन्दो** (यानी बनी इस्राईल) **को तुम रात ही रात में लेकर चले जाओ** (क्यों कि) **तुम लोगों का** (फ़िरऔन की तरफ़ से) **पीछा** (भी) **किया जाएगा** (इसलिए रात में निकल जाने से इतनी दूर तो निकल जाओगे कि ये पीछा करके तुम को पकड़ न सकें)(23) **और** (रास्ते में जो दरिया बीच में आएगा) **तुम उस दरिया को** (पहले असा मारना कि वो सूख कर रास्ता देदेगा फिर पार होने के बाद यह फ़िक्र न करना कि शायद फ़िरऔन भी इसी तरह पार हो जाएगा बल्कि तुम उसको उसी तरह) **ठहरा हुआ छोड़ देना,** (क्योंकि इसमें यह हिकमत है कि) **उन** (फ़िरऔनियों) **की सारी फ़ौज** (उस दरिया में) **डुबोई जाएगी** (इस तरह कि वो उसमें घुसेंगे और जब उसमें आजाएंगे तो चारों तरफ़ से पानी आ मिलेगा बस ऐसा ही हुआ कि मूसा अलैहिस्सलाम पार हो गये और फ़िरऔनी डूब गये)(24) **वो लोग छोड़ गये कितने ही बाग़ और** (कितनी ही) **नहरें(25) और** (कितनी ही) **खेतियां और** (कितने ही) **शानदार मकान(26) और** (कितने ही) **आराम के सामान जिनमें वो ख़ुश रहा करते थे** (छोड़ गये)(27) **इसी तरह** (हुआ यह क़िस्सा) **और हमने एक दूसरी क़ौम** (यानी बनी इस्राईल) **को उन का मालिक बना दिया(28) सो** (क्योंकि वो बहुत ही बुरे थे और नफ़रत के क़ाबिल थे इसलिए) **न तो उन पर आसमान और ज़मीन को रोना आया और न उनको** (अज़ाब से कुछ और) **मुहलत दी गई** (यानी अगर कुछ और जीते तो जहन्नम के अज़ाब से कुछ और दिन बचे रहते)(29) **और हमने** (इस तरह) **बनी इस्राईल को रूसवाई के अज़ाब से बचा लिया(30) यानी फ़िरऔन** (के ज़ुल्म व सितम) **से** (बचा लिया), **सचमुच वो** (फ़िरऔन) **बड़ा सरकश** (और बन्दगी की) **हद से निकल जाने वालों में से था** (एक नेमत तो बनी इस्राईल पर यह हुई)(31) **और** (इसके अलावा) **हमने बनी इस्राईल को** (और भी नेमतें देकर) **अपने इल्म** (और हिकमत) **की रू से** (कुछ बातों में सभी) **दुनिया जहान वालों पर** (या सभी बातों में उस ज़माने के लोगों पर) **बड़ाई दी(32) और हमने उन को** (अपनी क़ुदरत की) **ऐसी** (बड़ी-बड़ी) **निशानियां दीं जिनमें खुला इनआम** (पाया जाता) **था** (यानी जो नेमतें उनको दी गईं वो क़ुदरत की

दलील भी थी जैसे फ़िरऔन से बचाना और किताबें और मोजिज़े)(33)।

नोटः- हज़रत अली रज़ि० का बयान है कि नेक आदमी के मरने पर ज़मीन व आसमान रोते हैं। (इब्ने कसीर)

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ ﴿٣٥﴾ فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾ وَمَا
خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّ يَوْمَ
الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَنْ مَوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ﴿٤١﴾ إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ ۚ
إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٤٢﴾

आयत नं० 34 से 42

ये लोग (क़ियामत की सख़्ती की ख़बरें सुन कर क़ियामत का इनकार करते हैं और) **कहते हैं** (34) **कि आख़री हालत बस ये ही हमारा दुनिया का मरना है और हम दोबारा ज़िन्दा न होंगे** (यानी आख़रत की ज़िन्दगी का इनकार करते हैं)(35) **सो** (ऐ मुसलमानो) **अगर तुम** (आख़रत के दावे में) **सच्चे हो तो** (इन्तिज़ार कौन करे अभी) **हमारे बाप दादों को** (ज़िन्दा करके) **ला मौजूद करो** (36) (आगे इन की कुफ़्र की बातों पर डराया गया है कि इन को ज़रा सोचना चाहिए कि) **ये लोग** (ताक़त व ज़ोर में) **ज़्यादा बढ़े हुए हैं या** (यमन के बादशाह) **तुब्बा की क़ौम और जो क़ौमें उन से पहले हो चुकी हैं** (जैसे आद व समूद यानी ये क़ौमें ज़्यादा बढ़ी हुई थीं, मगर) **हमने उन को** (भी) **हलाक कर दिया** (सिर्फ़ इसलिए कि) **वो मुजरिम लोग थे** (तो ये लोग अगर शरारतों से बाज़ न आएंगे तो ये क्योंकर अपने को बचा लेंगे)(37) **और** (आगे क़ियामत की सच्चाई और हिकमत का बयान है कि) **हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है उस को बेफ़ाइदा** (खेल तमाशे के लिए) **पैदा नहीं किया**(38) (बल्कि) **हमने उन दोनों को** (उन की दूसरी मख़्लूक़ों समीत) **किसी हिकमत** (और ख़ास मतलब) **ही से बनाया है** (जैसे अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत की दलील होना) **लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते** (कि जो हस्ती इतनी बड़ी चीज़ों को शुरू में पैदा करने की क़ुदरत रखती है वो उन को दोबारा पैदा करने पर भी क़ुदरत रखती है)(39) **बेशक फ़ैसले का दिन** (यानी क़ियामत का दिन) **इन सब** (के दो बारा ज़िन्दा होने और इनआम व सज़ा

मिलने) **का तय वक़्त है** (जो अपने वक़्त पर ज़रूर होगा)(40) **जिस दिन कोई ताल्लुक़ वाला किसी ताल्लुक़ वाले के ज़रा काम न आएगा और न** (ही किसी की तरफ़ से जैसे उनके बनाए हुए ख़ुदाओं की तरफ़ से) **उन की कुछ मदद की जाएगी**(41) **हां मगर जिस पर अल्लाह रहम करे** (कि रहमत से उसके हक़ में अल्लाह की इजाज़त से की गई सिफ़ारिश काम आएगी और अल्लाह उसका मददगार होगा), **वो** (अल्लाह) **ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **है** (काफ़िरों से बदला लेगा) **महरबान है** (मुसलमानों पर रहम करेगा)(42)

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ الْحَمِيمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ
سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هَٰذَا مَا
كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ﴿٥٠﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾ يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَ
إِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا
يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

आयत नं० 43 से 59

बेशक ज़क़्क़ूम (नाम) **का पेड़**(43) **बड़े मुजरिम** (यानी काफ़िर) **का खाना होगा**(44) (देखने में) **तेल की तिलछट जैसा होगा** (और) **वो पेट में** (ऐसा) **जोश मारेगा**(45) **जैसे तेज़ गर्म पानी खौलता है**(46) (और फ़रिशतों को हुक्म होगा कि) **इसको पकड़ो घसीटते हुए दोज़ख़ के बीचो बीच तक ले जाओ**(47) **फिर उसके सर के ऊपर तकलीफ़ देने वाला गर्म पानी छोड़ दो**(48) (और उससे हंसी उड़ाते हुए कहा जाएगा कि) **ले चख! तू बड़ा इज़्ज़तदार ज़ोर आवर है**(49) (और दोज़ख़ियों से कहा जाएगा कि) **यह वो चीज़ है जिसमें तुम शक** (व इनकार) **किया करते थे**(50) (आगे ईमान वालों का ज़िक्र है कि) **बेशक अल्लाह से डरने वाले अमन** (चैन) **की जगह में होंगे**(51) **यानी बाग़ों में और नहरों में**(52) (और) **वो सुन्दुस व इस्तबरक़** (यानी दोनों क़िस्म की रेशम) **का लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे**(53) (और यह बात) **इसी तरह है और हम उन की गोरी-गोरी बड़ी आंखों वाली** (यानी बहुत ख़ूबसूरत) **हूरों से शादी कर देंगे**(54) (और) **वहां तसल्ली से हर क़िस्म के फल मंगाते होंगे**(55) (और) **वहां वो सिवाए उस मौत के**

जो दुनिया में आ चुकी थी और मौत का मज़ा न चक्खेंगे (यानी मरेंगे नहीं) **और अल्लाह तआ़ला उन को दोज़ख़** (के अज़ाब) **से** (भी) **बचा लेगा(56)** (और) **यह सब कुछ आप के रब की महरबानी से होगा, बड़ी कामयाबी ये ही है(57)** (और ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप का काम इतना है कि आप इनको कहते रहिए) **सो** (इसी वास्ते) **हमने इस क़ुरआन को आप की ज़बान** (अरबी) **में आसान कर दिया ताकि ये** (इसको समझ कर इससे) **नसीहत पाएं(58) तो** (अगर ये लोग न मानें तो) **आप** (इन पर मुसीबतों के आने का) **इन्तिज़ार कीजिए ये लोग भी** (आप पर मुसीबतें आने का) **इन्तिज़ार कर रहे हैं** (बस आप तबलीग़ से ज़्यादा फ़िक्र में न पड़िए न मुख़ालफ़त पर दुख कीजिए, उन का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द करके सब्र कीजिए वो ख़ुद समझ लेगा)(59)।

नोटः- आख़रत की ज़िन्दगी के बाद कभी मौत नहीं आएगी तो जन्नती लोगों के लिए यह ख़ुशी की ख़बर होगी मगर दोज़ख़ी लोगों के लिए तकलीफ़ की क्योंकि वो तो वहां मौत की तमन्ना करेंगे।

45-सूरत-जासिया

इस मक्की सूरत में ‘4’ रूकू और ‘37’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٢ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣ وَ فِيْ
خَلْقِكُمْ وَ مَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٤ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝٥ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا
عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَ اٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٧ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى
عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨ وَ اِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا اتَّخَذَهَا
هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٩ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا وَّ لَا مَا اتَّخَذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠ هٰذَا هُدًى ۚ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ
رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١١

आयत नं० 01 से 11

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है)(01) **यह अल्लाह की तरफ़ से उतारी हुई किताब है जो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **हिकमत वाला है** (और जब यह ऐसी किताब है तो इसकी बातों को ध्यान से सुनना चाहिए)(02) **बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए** (कुदरत और तौहीद की) **बहुत सी दलीलें हैं**(03) **और** (इसी तरह) **खुद तुम्हारे और उन जानवरों के पैदा करने में जिन को** (ज़मीन पर) **फैला रक्खा है** (कुदरत व तौहीद की) **दलीलें हैं उन लोगों के** (समझाने के) **लिए जो यक़ीन रखते हैं**(04) **और** (इसी तरह) **रात और दिन के आने जाने में और** (इसी तरह) **उस रोज़ी** (के सामान) **में जिस को अल्लाह तआ़ला ने आसमान से उतारा** (यानी बारिश) **फिर उस** (बारिश) **से ज़मीन को हरा भरा किया उसके सूख जाने के बाद और** (इसी तरह) **हवाओं के बदलने में** (कि कभी परवा है कभी पछवा कभी गर्म कभी ठन्डी यानी

इन सब चीज़ों में कुदरत व तौहीद की) **दलीलें** (मौजूदा) **हैं उन लोगों के लिए जो समझ से काम लेते हैं(05) ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम आप को सही-सही पढ़ कर सुनाते हैं** (जिससे पैग़म्बरी साबित है लेकिन इतनी बड़ी दलील के बावजूद भी अगर ये लोग नहीं मानते) **तो फिर अल्लाह और उस की** (ऐसी) **आयतों के बाद और कौन सी बात** (इससे बढ़ कर होगी जिस) **पर ये लोग ईमान लाएंगे(06)** (आगे आख़रत का बयान है कि) **बड़ी ख़राबी होगी हर ऐसे आदमी के लिए जो** (अक़ीदे की बातों में) **झूटा हो** (और करतूतों से) **गुनाहगार हो(07) जो** (इसके बावजूद कि) **अललाह की आयतों को सुनता** (भी) **है जब कि वो उसके सामने पढ़ी जाती हैं** (और) **फिर भी वो घमन्ड करता हुआ** (अपने कुफ़्र पर) **इस तरह डटा रहता है जैसे उस ने उन** (आयतों) **को सुना ही नहीं सो ऐसे आदमी को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दीजिए(08) और** (ऐसे आदमी की शरारत का यह हाल है कि) **जब वो हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पाता है तो उस की हंसी उड़ाता है, ऐसे लोगों के लिए** (आख़रत में) **रूसवा करने वाला अज़ाब** (होने वाला) **है(09)** (यानी) **उनके आगे जहन्नम** (आ रही) **है और** (उस वक़्त) **न तो उनके वो चीज़ें ज़रा काम आएंगी जो** (दुनिया में) **कमा गये थे** (उसमें माल और किये काम सब आगये) **और न वो** (काम आएंगे) **जिन को उन्होंने अल्लाह के सिवा रखवाला** (और माबूद) **बना रक्खा था और उनके लिए बड़ा अज़ाब होगा(10)** (क्योंकि) **यह कुरआन सारा का सारा हिदायत** (और मानने क़ाबिल) **है और** (फिर भी) **जो लोग अपने रब की** (इन) **आयतों को नहीं मानते उनके लिए सख़्ती का दर्दनाक अज़ाब होगा(11)**

اَللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ فِیْهِ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ سَخَّرَ
لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ قُلْ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا
یَغْفِرُوْا لِلَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ اَیَّامَ اللّٰهِ لِیَجْزِیَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ
اَسَآءَ فَعَلَیْهَا ؗ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۵﴾

आयत नं० 12 से 15

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे (फ़ाइदे के) **लिए समन्दर को काम में लगा दिया है कि उसके हुक्म से इसमें कशतियां चलें और ताकि** (उन कशतियों में सफ़र करके) **तुम उसकी रोज़ी**

तलाश करो और ताकि (वो रोज़ी पाकर) **तुम शुक्र करो**(12) **और** (इसी तरह) **जितनी चीज़ें आसमानों में हैं और जितनी चीज़ें ज़मीन में हैं उन सब को अपनी तरफ़ से** (यानी अपने हुक्म और महरबानी से) **तुम्हारे काम में लगा रक्खा है, बेशक इन बातों में उन लोगों के लिए** (क़ुदरत की) **दलीलें हैं जो सोच समझ से काम लेते हैं**(13) (और काफ़िरों की शरारतों पर कभी-कभी मुसलमानों को गुस्सा आजाया करता था इसलिए उन को सहार से काम लेने का हुक्म है कि) **आप ईमान वालों से कह दीजिए कि उन लोगों को मुआफ़ करें जो अल्लाह तआ़ला के मुआमलों** (यानी आख़रत की सज़ा व सवाब) **का यक़ीन नहीं रखते ताकि अल्लाह तआ़ला एक क़ौम को** (यानी मुसलमानों को) **उनके** (इस नेक) **काम का** (अच्छा) **बदला दे**(14) (क्योंकि वहां का क़ानून यह है कि) **जो आदमी नेक काम करता है सो अपने ही फ़ाइदे** (व सवाब) **के लिए** (करता है)**, और जो आदमी बुरा काम करता है वो अपना ही नुक़सान करता है, फिर** (सब अच्छे व बुरे काम करने के बाद) **तुम को अपने रब के पास लौट कर जाना** (है बस वहां तुम को तुम्हारे अच्छे काम व बरताव का अच्छा बदला और तुम्हारे मुख़ालिफ़ों को उनके कुफ़्र व गुनाह पर सख़्त सज़ा दी जाएगी इसलिए तुम्हारे लिए यहां मुआफ़ कर देना ही बेहतर) **है**(15)

नोटः- समन्दर को काम में लगाने से इस तरफ़ भी इशारा पाया जाता है कि समन्दर में इन्सानों के काम की बहुत सी चीज़ें पाई जाती हैं। और आज साइंसदां बहुत से ख़ज़ाने समन्दर से निकल रहे हैं जैसे पैट्रोलियम और बहुत सी कानें।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَ
اٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ
بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَ لَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَ
اللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

आयत नं० 16 से 20

और (पैग़म्बरी कोई अनोखी चीज़ नहीं जो उस का इनकार किया जाए जैसा कि इससे पहले) **हमने बनी इस्राईल को** (आसमानी) **किताब और हिकमत** (यानी हुक्मों का इल्म) **और पैग़म्बरी दी**

थी (यानी उनमें पैग़म्बर पैदा किये थे) **और हमने उनको पाकीज़ा चीज़ें खाने को दी थी** (जैसा कि मन्ना सलवा और मुल्क शाम का मालिक बनाया) **और हमने** (कुछ बातों में जैसे दरिया में रास्ता देना बादल का साया कर देना वग़ैरह) **उनको दुनिया जहान वालों पर बड़ाई दी(16) और हमने उनको दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं** (यानी उनको बड़े साफ़ मोजिज़े दिखाए) **सो** (चाहिए तो यह था कि ख़ूब ताबेदारी करते मगर) **उन्होंने इल्म आने के बाद ही आपस में फूट डाली आपस की ज़िद्दा ज़िद्दी की वजह से** (मतलब यही कि जिस इल्म की वजह से फूट ख़त्म होनी चाहिए थी उन्होंने उससे ही आपस में फूट डाली), **आप का रब उनके आपस में क़ियामत के दिन उन बातों में** (खुला) **फ़ैसला कर देगा जिन में आपस में झगड़ते** (और बहसते) **थे(17) फिर** (बनी इस्राईल में पैग़म्बरी का दौर ख़त्म होने के बाद) **हमने आप को** (पैग़म्बरी दी और आप को) **दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया सो आप उसी तरीक़े पर चले जाइये** (यानी अमल में भी और तबलीग़ में भी) **और इन जाहिलों की मर्ज़ी पर न चलिए** (यानी उन की मर्ज़ी तो यह है कि आप तबलीग़ छोड़ दें और इसलिए ये तरह-तरह से परीशान करते हैं ताकि आप तंग होकर तबलीग़ छोड़ दें)(18) **और ये लोग अल्लाह के मुक़ाबिले में आप के ज़रा काम नहीं आ सकते** (बस उनका कहना न होने पाए), **और ज़ालिम लोग एक दूसरे के दोस्त होते हैं** (और एक दूसरे का कहना मानते हैं) **और अल्लाह दोस्त है परहेज़गारों का** (और परहेज़गार उसका कहना माना करते हैं और आप परहेज़गारों के सरदार हैं)(19) **यह क़ुरआन** (जो आप को मिला है यह) **आम लोगों के लिए नसीहत और हिदायत का सामान है और यक़ीन** (यानी ईमान) **लाने वालों के लिए बड़ी रहमत** (का सामान) **है(20)।**

नोटः- ऊपर आयत से यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े को ही मानना और उस पर चलना वाजिब है। पहली शरीअतों के हुक्म को उस वक़्त तक नहीं माना जा सकता जब तक क़ुरआन व सुन्नत से वो साबित न होजाए।

اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ اجْتَرَحُوا السَّیِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْیَاهُمْ وَ مَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَ لِتُجْزٰی كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۲۲﴾

आयत नं० 21 से 22

ये (क़ियामत का इनकार करने वाले) **लोग जो बुरे-बुरे काम** (कुफ़्र व शिर्क व ज़ुल्म व गुनाह) **करते** (रहते) **हैं क्या यह समझते हैं कि हम उन को उन लोगों के बराबर रक्खेंगे जो ईमान लाए और नेक काम किये हैं कि उन सब का जीना और मरना बराबर हो जाए** (यानी मोमिन लोग जिस तरह दुनिया में मज़े न उठा सके इसी तरह मौत के बाद भी आराम न पाएं और काफ़िर लोग जैसे इस ज़िन्दगी में अज़ाब और तकलीफ़ों से बचे रहे इसी तरह मरने के बाद भी अज़ाब से बचे रहें तो आख़रत के इनकार का मतलब यह है कि नेकों को कहीं नेकी का फल न मिले और बुरों को कभी बुराई की सज़ा न मिले), **ये ग़लत बात कहते हैं(21) और अल्लाह तआला ने आसमान और ज़मीन को हिकमत के साथ पैदा किया** (यानी इनका पैदा करना बेमतलब नहीं एक हिकमत तो यह है कि जो इतनी बड़ी चीज़ों को पहली बार पैदा कर सकता है उसके लिए दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है इससे क़ियामत व आख़रत का वजूद साबित होता है) **और** (दूसरी हिकमत यह है कि) **ताकि हर आदमी को उसके किये का बदला दिया जाए** (और यह सब जानते हैं कि दुनिया में पूरा बदला है नहीं इसलिए आख़रत का होना ज़रूरी हो गया) **और** (इस बदले में) **उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा(22)**

नोटः- बता दिया गया कि इस दुनिया को अल्लाह तआला ने इम्तिहान के लिए बनाया है कि कौन कैसे काम करता है, यह फल मिलने की जगह नहीं फल मिलने की जगह आख़रत है कि अच्छे कामों का अच्छा अन्जाम बुरे कामों का बुरा अन्जाम।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهُ هَوٰىهُ وَأَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهِ
غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا
يُهْلِكُنَآ إِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا
كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّآ أَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يَجْمَعُكُمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

आयत नं० 23 से 26

सो क्या (तौहीद व आख़िरत के इन साफ़ बयानों के बाद) **आपने उस आदमी की हालत भी देखी जिसने अपना ख़ुदा अपने मन की चाहतों को बना रक्खा है** (कि जो दिल में आता है उसी के पीछे चलता रहता है) **और अल्लाह तआ़ला ने उस को समझबूझ के बावजूद गुमराह कर दिया है** (कि हक़ को सुना और समझा भी मगर मनमर्ज़ी पर चलकर गुमराह होगया) **और** (अल्लाह तआ़ला ने) **उसके कान और दिल पर बन्द लगा दिया है और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया है** (कि मनमर्ज़ी पर चलने में समझ जाती रही), **सो ऐसे आदमी को अल्लाह के** (गुमराह कर देने के) **बाद कौन राह पर लाए,** (आगे इनकार करने वालों को कहा गया कि) **क्या तुम** (इन बातों को सुन कर) **फिर भी नहीं समझते** (यानी ऐसा समझना जिससे नफ़ा हो)(23) **और ये** (क़ियामत का इनकार करने वाले) **लोग यह कहते हैं कि सिवाए हमारी इस दुनिया की ज़िन्दगी के और कोई ज़िन्दगी** (आख़िरत में) **नहीं है हम** (ये ही एक मरना) **मरते हैं और** (ये ही एक जीना) **जीते हैं** (मतलब यह कि मौत की तरह ज़िन्दगी भी दुनिया ही में है) **और हम को सिर्फ़ ज़माने** (के चक्कर) **से मौत आ जाती है** (मतलब यह कि ज़माना गुज़रने के साथ-साथ बदन की ताक़त ख़र्च होती रहती है और धीरे-धीरे घटते-घटते मौत आ जाती है यानी आख़िरत की ज़िन्दगी नहीं होगी) **और इन लोगों के पास इस पर कोई दलील नहीं है सिर्फ अटकली बात कर रहे हैं** (यानी आख़िरत की ज़िन्दगी के इनकार पर कोई दलील नहीं)(24) **और** (न सच्चे दीन वालों की दलील का वो कुछ जवाब दे सकते हैं बस) **जिस वक़्त** (इस बारे में) **उनके सामने हमारी साफ़ आयतें पढ़ी जाती हैं** (जो बात साबित करने के लिए काफ़ी हैं) **तो उनका** (इस पर) **सिवाए इसके और कोई जवाब नहीं होता कि कहते हैं कि हमारे बाप दादों को** (ज़िन्दा करके) **सामने लाओ अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो**(25) **आप** (उनके जवाब में) **यह कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम को** (जब तक चाहता है) **ज़िन्दा रखता है फिर** (जब चाहेगा) **तुम को मौत देगा फिर क़ियामत के दिन जिस** (के आने) **में ज़रा शक नहीं तुम को** (ज़िन्दा करके) **जमा करेगा** (बस दावा उस दिन में ज़िन्दा करने का है और दुनिया में मुर्दों को ज़िन्दा न करने से उस दिन में ज़िन्दा करने का इनकार साबित नहीं होता) **लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते** (और बिना दलील सच्चाई का इनकार करते हैं)(26)।

नोटः- हदीसों में आया है कि ज़माने को बुरा न कहो इसलिए कि जो कुछ भी होता है वो अल्लाह के हुक्म ही से होता है। (मआ़रिफुल क़ुरआन)

وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَ تَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ
جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ
بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ
رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۰﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ السَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ
نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّ مَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ قِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ
نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۴﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَ
لَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۳۶﴾ وَ لَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۪ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۳۷﴾

आयत नं० 27 से 37

और (ऊपर जो कहा गया है कि अल्लाह तुम को महशर में जमा करेगा तो इसको कुछ मुश्किल न समझा जाए क्योंकि) **अल्लाह ही का राज है आसमानों में और ज़मीन में** (वो जो चाहे करे बस तुम्हें मौत के बाद ज़िन्दा करके जमा करना भी उसके लिए कोई मुश्किल नहीं), **और जिस दिन क़ियामत आएगी उस दिन झूटे** (यानी सच्चे दीन को न मानने वाले) **नुक़सान उठाएंगे(27) और आप** (उस दिन) **हर फ़िरक़े को देखोगे कि** (डर की वजह से) **घुटनों के बल गिरा हुआ है, हर फ़िरक़ा अपने आमाल नामे** (में लिखे हुए कामों के हिसाब) **की तरफ़ बुलाया जाएगा,** (और उनसे कहा जाएगा) **आज तुम को तुम्हारे किये का बदला मिलेगा(28)** (और कहा जाएगा कि) **यह** (आमाल नामा) **हमारा** (लिखाया हुआ) **रजिस्टर है जो तुम्हारे बारे में ठीक-ठीक बोल रहा** (है यानी तुम्हारे किये कामों को दिखा रहा) **है,** (और) **हम** (दुनिया में) **तुम्हारे** (सब) **कामों को** (फ़रिशतों से) **लिखवाते जाते थे** (और यह उन्हीं का रजिस्टर है)**(29) सो** (हिसाब के बाद फ़ैसला यह होगा कि) **जो लोग ईमान लाए थे और उन्होंने अच्छे काम किये थे तो उनको उनका रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, और यह खुली हुई कामयाबी है(30) और जो लोग काफ़िर थे** (उन से कहा

जाएगा कि) **क्या मेरी आयतें तुम को पढ़ कर नहीं सुनाई जाती थी सो तुमने** (उनके मानने से) **घमन्ड किया था और** (इस वजह से) **तुम बड़े मुजरिम थे(31) और** (तुम्हारा यह हाल था कि) **जब** (तुम से) **कहा जाता था कि अल्लाह का वादा** (दोबारा ज़िन्दा करके सज़ा व बदला देने का) **सच है और क़ियामत में कोई शक नहीं है तो तुम** (बहुत बेपरवाई से) **कहा करते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है** (बस सुनने सुनाने से) **सिर्फ़ एक ख़्याल सा तो हम को भी होता है और हम को** (उसका) **यक़ीन नहीं(32) और** (उस वक़्त) **उनके सभी कामों की बुराइयां खुल कर सामने आजाएंगी और जिस** (अज़ाब) **का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे वो उनको आघेरेगा(33) और** (उन से) **कहा जाएगा कि आज हम तुम को भुलाए देते हैं** (यानी रहमत से दूर किये देते हैं जिस को भुलाना कहा गया) **जैसा तुमने अपने इस दिन के आने को भुला रक्खा था और** (आज से) **तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं(34) यह** (सज़ा) **इस वजह से है कि तुमने अल्लाह तआला की आयतों की हंसी उड़ाई थी और तुम को दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रक्खा था** (कि उस में लग कर आख़रत से बिल्कुल बेपरवाह बल्कि इनकारी हो गये थे)**, सो आज ये लोग न तो दोज़ख़ से निकाले जाएंगे और न उनसे मुआफ़ी मांगने को कहा** (जाएगा यानी तौबा करके अल्लाह को राज़ी करने का मौक़ा न दिया) **जाएगा(35)** (जब ये सारी बातें सुन लीं) **तो** (उनसे यह भी समझ में आगया कि) **सारी तारीफ़े अल्लाह के लिए** (साबित) **हैं जो रब है आसमानों का और रब है ज़मीन का** (बल्कि) **वो तो रब है सारे जहानों का(36) और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में, और वो ही ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला है(37)।**

46-सूरत-अहक़ाफ़

इस मक्की सूरत में '4' रूकू और '35' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٢ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ
وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝٣ قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا
خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝٤ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ
دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝٥ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

हामीम (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है)(01) **यह किताब अल्लाह ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाले और) **हिकमत वाले की तरफ़ से भेजी गई है** (इसलिए इसकी बातों को सोचना समझना चाहिए)(02) **हमने आसमानों और ज़मीन को और उन चीज़ों को जो उनके बीच में हैं** (ख़ास मतलब और) **हिकमत के साथ और ख़ास मुद्दत** (तक) **के लिए पैदा किया है, और जो लोग काफ़िर हैं उन को जिस चीज़ से डराया जाता है** (जैसा कि तौहीद के इनकार पर तुम को क़ियामत में अज़ाब होगा) **वो उससे मुंह फेरते हैं** (और तौहीद को नहीं मानते)(03) **आप** (उन से तौहीद के बारे में) **कहिए कि यह तो बताओ जिन चीज़ों की तुम अल्लाह** (की तौहीद) **को छोड़ कर इबादत करते हो** (उन के इबादत का हक़दार होने की क्या दलील है अगर अक़्ली दलील है तो) **मुझ को यह दिखाओ कि उन्होंने कौन सी ज़मीन पैदा की है या उन का आसमानों** (के पैदा करने) **में कुछ हिस्सा** (है और साफ़ बात है कि तुम भी उन को ख़ालिक़ यानी पैदा करने वाला नहीं मानते जो कि इबादत का हक़दार होने की दलील हो सकती है बल्कि मख़लूक़ यानी पैदा किय हुए कहते हो जो कि इबादत के हक़दार नहीं हो सकते, बस अक़्ली दलील तो नहीं) **है,** (और अगर तुम्हारे पास

किताबी दलील है तो) **मेरे पास कोई** (सही) **किताब लाओ** (जिसमें शिर्क का हुक्म हो और) **जो इस** (क़ुरआन) **से पहले की हो** (क्योंकि क़ुरआन में तो शिर्क को मना किया गया है) **या** (अगर किताब न हो तो) **कोई और** (भरोसेमन्द) **इल्मी बयान** (जो ज़बानी) **सुनते चले आए हों** (और किताब में दर्ज न हो वो लाओ) **अगर तुम** (शिर्क के दावे में) **सच्चे** (हो मतलब यह कि वो दलील ऐतबार की हो किसी नबी की किताब हो या उनका ज़बानी बयान) **हो(04) और** (साफ़ बात है कि ऐसी कोई दलील पेश नहीं कर सकता फिर) **उस आदमी से ज़्यादा कौन गुमराह होगा जो** (दलील से लाचार होने और उसके ख़िलाफ़ दलील होने के बावजूद) **अल्लाह को छोड़ कर ऐसे माबूद को पुकारे जो क़ियामत तक भी उसका कहना न करे और उनको इनके पुकारने** (तक) **की भी ख़बर न हो (05) और** (फिर) **जब** (क़ियामत में) **सब आदमी** (हिसाब के लिए) **जमा किये जाएंगे तो वो** (माबूद) **उन** (इबादत करने वालों) **के दुशमन हो जाएं और उनकी इबादत ही का इनकार कर बैठें** (बस ऐसे माबूदों की इबादत करने से बढ़ कर क्या ग़लती है)(06)।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا سِحْرٌ مُبِينٌ ﴿٧﴾ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ
قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ
وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٨﴾ قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا
يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٩﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ
بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَآمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠﴾

आयत नं० 07 से 10

और जब हमारी साफ़-साफ़ आयतें (जो कि मोजिज़ा होने की वजह से पैग़म्बरी की दलील हैं) **इन** (पैग़म्बरी का इनकार करने वाले) **लोगों के सामने पढ़ी जाती हैं तो ये काफ़िर लोग इस सच्ची बात के बारे में जब कि वो उन तक पहुंचती है यह कहते हैं कि यह खुला जादू** (है जब कि इसकी मिसाल नहीं हो सकती और जादू की मिसाल हो सकती) **है(07)** (और इससे बढ़कर और सुनो) **क्या ये लोग यह कहते हैं कि इस आदमी ने** (यानी पैग़म्बर आपने) **इस** (क़ुरआन) **को** (नऊज़ुबिल्लाह) **अपनी तरफ़ से बना लिया** (है और अल्लाह का बता दिया) **है,** (आगे इस बात का जवाब है कि) **आप कह दीजिए कि अगर मैंने इसको अपनी तरफ़ से बना लिया** (होगा और

अल्लाह का बता दिया) **होगा तो** (अल्लाह तआ़ला लोगों को धोके से बचाने के लिए मुझ को पैग़म्बरी के झूटे दावे पर जल्द ही हलाक कर देगा) **फिर** (उस वक़्त) **तुम** (या और) **लोग मुझ को अल्लाह** (के अज़ाब) **से ज़रा भी बचा सकते** (नहीं मुझ को अज़ाब न होना दलील है इस बात की कि मैं अपने पैग़म्बरी के दावे में झूटा) **नहीं,** (और जब मैं झूटा नहीं तो यह समझ लो कि) **वो ख़ूब जानता है तुम कुरआन** (के बारे) **में जो जो बातें बना रहे हो** (इसलिए तुम को सज़ा होगी), **मेरे और तुम्हारे बीच** (सच और झूट का फ़ैसला करने के लिए) **वो काफ़ी गवाह** (यानी ख़बर रखने वाला) **है** (इसलिए अगर मैं झूटा हूंगा मुझ को फ़ौरन अज़ाब देगा और अगर तुम झूटे होंगे तो तुम को जल्द या देर से अज़ाब देगा), **और** (अगर कोई यह समझे कि अगर हम गुनाहगार हैं तो हम पर अज़ाब क्यों नहीं आया तो) **वो बड़ा बख़्शने वाला है** (इसलिए दुनिया में कभी-कभी काफ़िरों पर अज़ाब नहीं भी आता और) **बड़ी रहमत वाला** (है इसलिए दुनिया में मोहलत दी जाती) **है**(08) (आगे पैग़म्बरी के सबूत के लिए कहते हैं कि) **आप कह दीजिए कि मैं कोई अनोखा पैग़म्बर तो नहीं हूं** (कि तुम्हें अचम्भा हो क्योंकि मुझ से पहले बहुत से पैग़म्बर आ चुके हैं जिन की ख़बर तुमने भी बराबर सुनी है) **और** (न मैं ग़ैब की बातों का दावा करता हूं बल्कि सिर्फ़ वो ही बातें जानता हूं जो वही से बता दी गई हैं यहां तक कि) **मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और न** (यह पता कि) **तुम्हारे साथ** (क्या किया जाएगा), **मैं तो सिर्फ़ उसी** (हुक्म) **पर चलता हूं जो मेरे पास वही के वास्ते से आता है** (और उसी की तबलीग़ भी करता हूं और अगर तुम इस को नहीं मानते तो मेरा कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **मैं तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूं**(09) **आप कह दीजिए कि तुम मुझ को यह बता दो कि अगर यह कुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो और** (फिर) **तुम ने इसका इनकार कर दिया और** (किसी दलील से इसका अल्लाह की तरफ़ से होने की तस्दीक़ भी हो जाए जैसे) **बनी इस्राईल** (के आलिमों) **में से कोई** (भरोसेमन्द) **गवाह इस जैसी किताब** (यानी इस किताब के अल्लाह के तरफ़ से होने) **पर गवाही देकर ईमान ले आए और तुम** (बेइल्म होने के बावजूद इस किताब पर ईमान लाने से) **घमन्ड ही में रहो** (तो इस सूरत में तुम से ज़्यादा बेइन्साफ़ कौन होगा), **बेशक अल्लाह तआ़ला बेइन्साफ़ लोगों को** (उनकी दुशमनी की वजह से) **सीधा रास्ता नहीं दिखाता** (बल्कि सदा गुमराही में रहते हैं और गुमराही का अन्जाम आग है)(10)।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَاۤ اِلَيْهِ ؕ وَ اِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَاۤ اِفْكٌ
قَدِيْمٌ ⑪ وَ مِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰۤى اِمَامًا وَّ رَحْمَةً ؕ وَ هٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ

ظَلَمُوْا ۖ وَ بُشْرٰی لِلْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۲﴾

आयत नं० 11 से 12

और ये काफ़िर ईमान वालों (के ईमान लाने) **के बारे में यह कहते हैं कि अगर यह कुरआन** (जिस पर ये लोग ईमान लाए हैं) **कोई अच्छी** (यानी सच्ची) **चीज़ होता तो ये** (कम दर्जे के) **लोग उस की तरफ़ हम से आगे न बढ़ते** (यानी हम लोग अक़्लमन्द हैं और ये कम अक़्ल और सच बात को पहले अक़्लमन्द माना करता है अगर यह हक़ होता तो हम पहले मानते और जब हम ने नहीं माना तो यह हक़ नहीं क्या बेतुकी बातें करते हैं), **और जब** (दुशमनी व घमन्ड की वजह से) **इन लोगों को कुरआन से हिदायत नसीब नहीं हुई तो** (अपनी दुशमनी और ज़िद की वजह से) **ये ही कहेंगे कि ये वो ही पुराने ज़माने का झूट है(11) और इस** (कुरआन) **से पहले मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की किताब** (आचुकी) **है जो** (मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत के लिए) **राह दिखाने वाली** (थी) **और** (ख़ास कर ईमान वालों के लिए) **रहमत थी, और** (जिस तरह तौरेत में इसकी ख़बर दी गई है) **यह** (उसी तरह की) **एक किताब है जो उस** (की दी हुई ख़बर) **को सच्चा करती है** (और) **अरबी ज़बान में** (है) **ज़ालिमों को डराने के लिए और नेक लोगों को ख़ुशख़बरी देने के लिए** (उतरी है)(12)।

नोटः– हज़रत उमर रज़ि० जब तक मुसलमान नहीं हुए थे और उनकी एक बान्दी मुसलमान हो गई थी ये उसको उसके इस्लाम लाने पर मारते और धमकाते थे कि किसी तरह इस्लाम को छोड़ दे और कुरैशी काफ़िर कहा करते थे कि इस्लाम कोई अच्छी चीज़ होती तो कम दर्जे की औरत इसमें हम से आगे न होती इस पर ये आयतें उतरीं। (मज़हरी)

اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِیْنَ
فِیْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَ وَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّ وَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ
وَ حَمْلُهٗ وَ فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰۤی اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِیْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ
نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَ عَلٰی وَالِدَیَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ ۚۛ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَ
اِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۵﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ سَیِّاٰتِهِمْ فِیْۤ اَصْحٰبِ

الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ
خَلَتِ الْقُرُونُ مِن قَبْلِي ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا
خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۖ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا ۖ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ
بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾

आयत नं० 13 से 20

जिन लोगों ने (सच्चे दिल से) **कहा कि हमारा रब अल्लाह है** (यानी पैग़म्बर के बताए तरीक़े पर तौहीद को माना) **फिर** (उस पर) **जमे रहे** (यानी उस को छोड़ा नहीं) **तो** (उसका नतीजा यह है कि) **उन लोगों पर** (आख़रत में) **कोई डर** (की बात होने वाली) **नहीं और न वो** (वहां) **दुखी होंगे**(13) (और) **ये लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें सदा-सदा रहेंगे उन नेक कामों के बदले में जो कि वो करते थे** (जिनमें से ईमान लाने और उस पर जमे रहने का ऊपर ज़िक्र है)(14) **और** (जिस तरह हमने अल्लाह के हक़ों को वाजिब किया इसी तरह बन्दों के हक़ों को भी वाजिब किया है इसलिए) **हमने इन्सान को अपने मां बाप के साथ अच्छा बरताव करने का हुक्म दिया है,** (और ख़ास कर मां के साथ और ज़्यादा क्योंकि) **उस की मां ने उस को बड़ी तकलीफ़ के साथ पेट में रक्खा और फिर बड़ी तकलीफ़ के साथ जन्म दिया, और उसको पेट में रखना और उस का दूध छुड़ाना** (अक्सर) **तीस महीने** (में पूरा होता है इतने दिनों तरह-तरह की मुसीबत उठाती है और इन परीशानियों में बाप भी कुछ न कुछ साझी रहता) **है,** (बस इतने दिनों तक उन्हीं के साये में पलता है) **यहां तक कि जब** (परवान चढ़ते हुए) **अपनी जवानी** (की उम्र) **को पहुंच जाता है और** (फिर बालिग़ होने के बाद एक ज़माने में जब) **चालीस साल** (की उम्र) **को पहुंचता है तो** (जो नेक होता है वो) **कहता है कि या रब मेरे मुझ को इसकी तौफ़ीक़ दीजिए कि मैं आप की उन नेमतों का शुक्र किया करूं जो आपने मुझ को और मेरे मां बाप को दी हैं** (अगर मां बाप भी मुसलमान हैं तब तो दीन की नेमत भी वर्ना दुनिया की नेमत तो है ही) **और** (वो यह भी कहता है कि मुझ को इस की भी पाबन्दी नसीब कीजिए कि) **मैं नेक काम किया करूं जिससे आप ख़ुश हों और मेरी औलाद मेरे** (नफ़े के) **लिए नेक बना दीजिए** (दुनिया का नफ़ा

यह कि देख कर आंखें ठन्डी हों और दीनी नफ़ा यह कि सवाब हो, और) **मैं आप के सामने** (अपने गुनाहों से) **तौबा करता हूं और मैं** (आप का) **ताबेदार हूं**(15) **ये वो लोग हैं कि हम उनके नेक कामों को कुबूल कर लेंगे और उन के गुनाहों को मुआफ़ कर देंगे** (तो) **वो जन्नती लोगों में से होंगे,** (और यह सब) **उस सच्चे वादे की वजह से** (हुआ) **जिस का उन से** (दुनिया में) **वादा किया जाता था**(16) **और** (आगे बुरे लोगों के बारे में बयान है कि) **जिसने** (अल्लाह के और बन्दों के दोनों के हक़ों को बर्बाद कर दिया जब कि उसने) **अपने** (मुसलमान) **मां बाप से कहा** (जब कि उस को भी वो इस्लाम की दावत दे रहे हों) **कि अफ़सोस है तुम पर क्या तुम मुझ को यह वादा** (यानी ख़बर) **देते हो कि मैं** (क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होकर) **क़ब्र से निकाला जाऊंगा हालांकि मुझ से पहले बहुत सी उम्मतें हो चुकीं** (जिन को हर ज़माने में उनके पैग़म्बर ऐसी ख़बर देते चले आए मगर आज तक कोई बात सामने नहीं आई इससे पता चला कि ये सब बातें ही बातें हैं) **और वो दोनो** (घबराकर) **अल्लाह से फ़रियाद कर रहे हैं** (और उससे कह रहे हैं कि) **अफ़सोस है तुझ पर ईमान ले आ** (और क़ियामत को भी सच समझ) **बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो यह** (इस पर भी) **कहता है कि ये बेसनद बातें पहलों से कही चली आती हैं** (मतलब यह कि ऐसा बदनसीब है कि कुफ़्र और मां बाप से बदसलूकी दोनो ख़ताओं का मुजरिम है)(17) **ये वो लोग हैं कि इनके बारे में भी उन लोगों के साथ अल्लाह का बयान** (यानी अज़ाब का वादा) **पूरा होकर रहा जो इनसे पहले जिन्नात और इन्सान** (काफ़िर) **हो चुके हैं, बेशक ये** (सब) **नुक़सान में रहे**(18) **और** (दोनो गिरोहों में से) **हर एक** (गिरोह) **के लिए उनके** (अलग-अलग) **कामों की वजह से अलग-अलग दर्जे** (किसी को जन्नत के किसी को दोज़ख़ के) **मिलेंगे, और** (अलग-अलग दर्जे इसलिए मिलेंगे) **ताकि अल्लाह तआला सब को उनके कामों का पूरा-पूरा बदला दे और उन पर** (किसी तरह का) **ज़ुल्म नहीं होगा**(19) **और** (उस दिन को याद रक्खो) **जिस दिन काफ़िर लोग आग के सामने लाए जाएंगे,** (और उन से कहा जाएगा कि) **तुम अपने मज़े की चीज़ें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में पा चुके** (यहां कोई मज़ा तुम को नसीब न होगा) **और उनको ख़ूब बरत चुके** (यहां तक कि उनमें पड़ कर हम को भी भूल गये) **इसलिए आज तुम्हें रूसवाई भरी सज़ा दी जाएगी इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक़ घमन्ड किया करते थे** (घमन्ड से मुराद ऐसा घमन्ड है जो ईमान से रोके रक्खे क्योंकि सदा का अज़ाब उसी के लिए ख़ास है) **और इस वजह से कि तुम कहना नहीं माना करते थे** (इसमें कुफ़्र ज़ुल्म सभी गुनाह आ गये)(20)

हदीसः- एक हदीस में है कि "जो आदमी अल्लाह तआला से थोड़ी रोज़ी लेने पर राज़ी हो जाए तो अल्लाह तआला भी उसके थोड़े अमल पर राज़ी हो जाते हैं"। (मज़हरी)

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि हमल की कम से कम मुद्दत "६" माह और दूध पिलाने की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत दो साल है।

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ؕ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖۤ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا
اللّٰهَ ؕ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۲۱﴾ قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ
كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۲﴾ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ٘ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّاۤ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُوْنَ ﴿۲۳﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ؕ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ؕ
رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۴﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَیْءٍۭ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰۤى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِی
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۲۵﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَاۤ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ٘ فَمَاۤ اَغْنٰی
عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُهُمْ وَلَاۤ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ ۙ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا
بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۲۶﴾

आयत नं० 21 से 26

और आप क़ौमे आद के भाई (यानी हूद अलैहिस्सलाम) **का** (इन से) **ज़िक्र कीजिए, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम को अहक़ाफ़** (नाम की जगह) **में** (जहां वो आबाद थे) **इस** (बात) **पर** (अल्लाह के अज़ाब से) **डराया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत मत करो** (वर्ना तुम पर अज़ाब आजाएगा) **और** (यह ऐसी ज़रूरी और सही बात है कि) **उन** (हूद अलैहिस्सलाम) **से पहले और उनके बाद** (इस बारे में) **बहुत से ख़बरदार करने वाले** (पैग़म्बर अब तक) **हो चुके हैं,** (और हूद अलैहिस्सलाम ने कहा कि) **मुझ को तुम पर एक बड़े** (सख़्त) **दिन के अज़ाब का ख़तरा है** (अगर उस से बचना है तो एक अल्लाह को मान लो)(21) **वो कहने लगे क्या तुम हमारे पास इस इरादे से आए हो कि हम को हमारे माबूदों से फेर दो सो** (हम तो फिरने वाले हैं नहीं बाक़ी) **अगर तुम सच्चे हो तो जिस** (अज़ाब) **का तुम हम से वादा करते हो उस को हम पर ले आओ**(22) **उन्होंने कहा कि पूरा इल्म तो अल्लाह ही को है** (कि अज़ाब कब आएगा), **और मुझ को तो**

जो पैग़ाम देकर भेजा गया है मैं तुम को वो पहुंचा देता हूं (बस उसमें मुझ से यह भी कहा गया कि तुम पर अज़ाब आएगा मैंने तुम को ख़बर कर दी इससे ज़्यादा न मुझे पता है और न कुछ मेरे बस में है) **लेकिन मैं तुम को देखता हूं कि तुम लोग जहालत की बातें करते** (हो कि एक तो तौहीद को नहीं मानते फिर अपने मुंह से मुसीबत मांगते) **हो**(23) (बस उन्होंने किसी तरह न माना तो) **फिर** (जब अज़ाब आया तो शुरू में एक बादल उठा तो) **उन लोगों ने जब उस बादल को अपनी घाटियों की तरफ़ आता देखा तो कहने लगे यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा,** (कहा गया कि) **नहीं** (बरसने वाला बादल नहीं) **बल्कि यह वो ही** (अज़ाब) **है जिस की तुम जल्दी मचाते थे** (कि वो अज़ाब जल्दी लाओ, और उस बादल में) **एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है**(24) **वो** (आंधी) **हर चीज़ को** (जिसके हलाक करने का हुक्म होगा) **अपने रब के हुक्म से हलाक कर देगी तो** (वो आंधी इन्सानों और जानवरों को उठा-उठा कर पटक देती थी जिससे) **वो ऐसे** (तबाह) **हो गये कि सिवाए उनके मकानों के और कुछ** (आदमी और जानवर) **न दिखाई देता था, हम** (ऐसे) **मुजरिमों को ऐसे ही सज़ा दिया करते हैं**(25) **और हमने उन को** (यानी क़ौमे आद के लोगों) **को उन बातों की ताक़त दी थी कि तुम को उन बातों की ताक़त नहीं दी और हमने उनको कान और आंख और दिल** (सब ही कुछ) **दिये थे, सो चूंकि वो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे इसलिए** (जब उन पर अज़ाब आया है तो) **न उन के कान उन के ज़रा काम आए और न उनकी आंखें और न उनके दिल और जिस** (अज़ाब) **की वो हंसी उड़ाया करते थे उसी ने उन को आघेरा** (यानी न उनकी ताक़त उनको अज़ाब से बचा सकी और न चालाकी बस तुम्हारी तो क्या हैसियत है)(26)।

وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَ صَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَلَوْ لَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَ ذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَ مَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۸﴾

आयत नं० 27 से 28

और हमने तुम्हारे आस पास की और बस्तियां भी (इस कुफ़्र व शिर्क की वजह से) **बर्बाद की हैं** (जैसे समूद व क़ौमे लूत) **और हमने** (हलाक करने से) **पहले** (उन के समझाने के लिए) **बार-बार अपनी निशानियां** (उनको) **बता दी थीं ताकि वो** (कुफ़्र व शिर्क से) **बाज़ आएं** (मगर बाज़ न आए और हलाक हुए)(27) **सो अल्लाह के सिवा जिन-जिन चीज़ों को उन्होंने अल्लाह तआ़ला**

की नज़दीकी पाने के लिए अपना माबूद बना रक्खा था (कि ये मुसीबत में हमारे काम आएंगे बर्बादी व अज़ाब के वक़्त) **उन्होंने उनकी मदद क्यों न की, बल्कि वो सब उन से ग़ाइब हो गये, और वो** (माबूद और सिफ़ारिशी समझना) **सिर्फ़ उन की घड़ी हुई झूट बात है** (और सच में वो सिफ़ारिशी या माबूद तो थे नहीं)(28)

नोटः- मुल्क शाम और यमन को जाते हुए ये उजड़ी हुई बस्तियां मक्के वालों के रास्ते में पड़ती थीं।

وَ اِذْ صَرَفْنَاۤ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ یَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْۤا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِیَ وَ لَّوْا اِلٰی
قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِیْنَ ﴿۲۹﴾ قَالُوْا یٰقَوْمَنَاۤ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰی مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ یَهْدِیْۤ اِلَی
الْحَقِّ وَ اِلٰی طَرِیْقٍ مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۳۰﴾ یٰقَوْمَنَاۤ اَجِیْبُوْا دَاعِیَ اللّٰهِ وَ اٰمِنُوْا بِهٖ یَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَ یُجِرْكُمْ مِّنْ
عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۳۱﴾ وَ مَنْ لَّا یُجِبْ دَاعِیَ اللّٰهِ فَلَیْسَ بِمُعْجِزٍ فِی الْاَرْضِ وَ لَیْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِیَآءُ ؕ اُولٰٓىِٕكَ فِیْ
ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۳۲﴾

आयत नं० 29 से 32

और (इन से उस वक़्त का क़िस्सा ज़िक्र कीजिए) **जब कि हम जिन्नात में से एक गिरोह को आप की तरफ़ ले आए जो** (अख़ीर में यहां पहुंच कर) **कुरआन सुनने लगे थे बस जब वो लोग कुरआन** (के पढ़े जाने की जगह) **के पास पहुंचे तो** (आपस में) **कहने लगे कि चुप रहो** (और इस कलाम को सुनो) **फिर जब कुरआन पढ़ा जा चुका** (यानी जितना उस वक़्त पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ में पढ़ना था पूरा हो चुका) **तो वो लोग** (उस पर ईमान ले आए और) **अपनी क़ौम के पास** (उसकी) **ख़बर पहुंचाने के लिए वापस गये**(29) (और जाकर उन से) **कहने लगे ऐ भाइयों हम एक** (अजीब) **किताब सुन कर आए हैं जो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के बाद उतरी है जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करती है जो सच्चे दीन और सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाती** (है यह तो दीन इस्लाम के हक़ होने की तस्दीक़) **है**(30) (आगे उस के कुबूल करने की नसीहत है कि) **ऐ भाइयों तुम अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना मानो** (मुराद बुलाने वाले से कुरआन या नबी आलीशान हैं) **और** (कहना मानना यह है कि) **उस पर ईमान ले आओ** (इसमें इशारा है कि वो ईमान की तरफ़ बुलाते हैं न कि किसी दुनियावी मतलब की तरफ़ बस तुम अगर ऐसा करोगे तो) **अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा और तुम को**

दर्दनाक अज़ाब से बचाएगा(31) और जो आदमी अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले का कहना न मानेगा तो वो ज़मीन (के किसी हिस्से) **में** (भाग कर अल्लाह को) **हरा नहीं सकता** (यानी इस तरह कि हाथ न आए) **और** (जैसा वो खुद नहीं बच सकता इसी तरह) **अल्लाह के सिवा और कोई उसका हिमायती भी न होगा** (कि वो उसको बचा सके, और) **ऐसे लोग खुली गुमराही में** (पड़े) **हैं** (कि बुलाने वाले के सच्चा होने के सबूतों के बावजूद फिर भी उसका कहना न मानें)(32)।

नोटः- जिन्नात के कुरआन सुनने का क़िस्सा हदीसों में इस तरह आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़म्बरी मिलने के वक़्त जब जिन्नात को आसमानी ख़बरें सुनने से रोक दिया गया तो जिन्नात में इस बात का चर्चा हुआ कि पता करना चाहिए ऐसी कौन सी बात दुनिया में हुई है जिसकी वजह से जिन्नात को आसमानी ख़बरों से रोक दिया गया है। जिन्नात की बहुत सी टोलियां इस बात का पता लगाने के लिए दुनिया में फैल गईं एक गिरोह अरब की तरफ़ भी गया और उस जगह पहुंचा जहां हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे कुरआन सुन कर कहने लगे कि बस वो नई बात ये ही है जो हमारे और आसमानी ख़बरों के बीच रूकावट बनी है। बस वो ईमान ले आए और दूसरों को भी नसीहत की । हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस क़िस्से की बाद में ख़बर हुई।

اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ لَمْ يَعْىَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۳﴾ وَ يَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ رَبِّنَا ؕ قَالَ
فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۴﴾ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَ لَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿۳۵﴾ ع

आयत नं० 33 से 35

क्या उन लोगों ने यह न जाना कि जिस अल्लाह ने सारे आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनके पैदा करने में ज़रा नहीं थका वो इस पर (तो और भी) **कुदरत रखता है कि मुर्दों को** (क़ियामत में) **ज़िन्दा कर दे,** (और उसे इस पर कुदरत) **क्यों न हो बेशक वो** (तो) **हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है(33) और जिस दिन** (क़ियामत आएगी और) **काफ़िर**

लोग दोज़ख़ के सामने लाए जाएंगे, (और उनसे पूछा जाएगा कि) **क्या यह दोज़ख़ सच नहीं है** (जैसा कि दुनिया में इसका इनकार किया करते थे), **वो कहेंगे कि हम को अपने रब की क़सम ज़रूर सच है, कहा जाएगा** (अच्छा) **अपने कुफ़्र के बदले में** (जिसमें दोज़ख़ का इनकार भी आगया) **उस** (दोज़ख़) **का अज़ाब चक्खो**(34) (जब उन से कुफ़्र का बदला लिया जाना मालूम हो गया) **तो** (ऐ पैग़म्बर) **आप** (वैसा ही) **सब्र कीजिए जैसा और हिम्मत वाले पैग़म्बरों ने सब्र किया था और उन लोगों के लिए** (अज़ाब की) **जल्दी न कीजिए** (जिसको आप मुसलमानों की तसल्ली के लिए चाहते थे), **जिस दिन ये लोग उस चीज़ को** (यानी अज़ाब को) **देखेंगे जिस का उनसे वादा किया जाता है तो** (उस वक़्त अज़ाब की सख़्ती से दुनिया की लम्बी उम्र छोटी लगेगी और ऐसा लगेगा कि) **जैसे ये लोग** (दुनिया में) **दिन भर में एक घड़ी रहे हैं,** (आगे काफ़िरों को कहा गया कि) **यह** (अल्लाह की तरफ़ से बात साबित करने के लिए) **पहुंचा देना है** (जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से हो चुका) **सो** (इसके बाद) **वो ही बर्बाद होंगे जो कहना न मानेंगे** (क्योंकि तबलीग़ के बाद कोई मजबूरी न रही और पैग़म्बर का इसमें कोई नुक़सान नहीं)(35)

47-सूरत-मुहम्मद

इस मदनी सूरत में '4' रूकू और '38' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝١ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى
مُحَمَّدٍ وَّ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ اَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢ ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا
الْبَاطِلَ وَ اَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣

आयत नं० 01 से 03

जो लोग (खुद भी) **काफ़िर हुए और** (दूसरों को भी) **अल्लाह के रास्ते से रोका** (जैसा कि काफ़िरों के सरदारों की आदत थी कि जान माल से हर तरह की कोशिश इस्लाम का रास्ता रोकने में करते थे सो) **अल्लाह ने उनके किये काम बेकार कर दिये** (यानी जिन कामों को वो नेक समझ रहे हैं वो ईमान न होने की वजह से कुबूल नहीं बल्कि उनमें से कुछ और उल्टे गुनाह हैं जैसे अल्लाह के रास्ते पर चलने से रोकने में ख़र्च करना)(01) **और** (इसके उलट) **जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और** (उनके ईमान की हालत यह है कि) **वो उस सब पर ईमान लाए जो मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर उतारा गया है और वो** (जो उतारा गया है वो) **उनके रब के पास से** (आया हुआ) **सच्चा दीन है** (जिसका मानना ज़रूरी है तो) **अल्लाह तआ़ला उनके गुनाह उन पर से उतारेगा** (यानी मुआफ़ कर देगा) **और** (दोनों जहान में) **उनकी हालत ठीक रक्खेगा** (दुनिया में तो इस तरह कि उन को नेक कामों की तौफ़ीक़ बढ़ती जाएगी और आख़िरत में इस तरह कि उनको अज़ाब से छुटकारा और जन्नत में दाख़िला मिलेगा)(02) **ये** (मोमिनों की ख़ुशहाली और काफ़िरों की बदहाली) **इस वजह से है कि काफ़िर तो ग़लत रास्ते पर चले और ईमान वाले सही रास्ते पर चले जो उनके रब की तरफ़ से** (आया है इसलिए ये कामयाब हुए और वो नाकाम क्योंकि सही रास्ते का अन्जाम कामयाबी और ग़लत रास्ते का नाकामी) **है,** (और जैसे यह हालत बयान की गई) **अल्लाह तआ़ला इसी तरह लोगों के** (नफ़े व हिदायत के) **लिए उन** (लोगों) **के हालात**

बयान करता है (ताकि शौक़ दिला कर और डर सुनाकर दोनों तरीक़ों से हिदायत की जाए)(03)।

नोटः- यह सूरत "मुहम्मद" हिजरत के फ़ौरन बाद उतरी है जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों को मक्के में बहुत सताया गया और हिजरत करके मदीना जाने का हुक्म हुआ और फिर ज़ालिमों से जंग करने की यानी जिहाद की इजाज़त दी गई।

فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً
حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ وَالَّذِينَ
قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا
لَهُمْ ﴿٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَ
أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ
آمَنُوا وَأَنَّ الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَىٰ لَهُمْ ﴿١١﴾

आयत नं० 04 से 11

(इस आयत में जिहाद के हुक्मों का ज़िक्र है) **सो जब तुम्हारा** (दुशमन) **काफ़िरों से मुक़ाबिला हो जाए तो उनकी गर्दनें मारो, यहां तक कि जब तुम उनका ख़ूब ख़ून बहा चुको** (जिस की हद यह है कि दुशमनों का ज़ोर टूट जाए और जंग बन्द करने से मुसलमानों के नुक़सान या काफ़िरों के हावी होने का ख़तरा न रहे) **तो** (उस वक़्त दुशमनों को क़ैद करके) **ख़ूब मज़बूत बान्ध लो फिर उसके बाद** (चाहे) **बिना फ़िदया लिये** (अहसान करके) **छोड़ देना और या फ़िदया** (यानी जुर्माना) **लेकर छोड़ देना** (और यह क़ैद और क़त्ल का हुक्म उस वक़्त तक है) **जब तक कि लड़ने वाले** (दुशमन) **अपने हथियार न रख दें** (यानी जब जीत हो जाए या समझौता हो जाए तो फिर न क़त्ल जाइज़ है न क़ैद) **यह हुक्म** (जिहाद का जो बताया गया इसी तरह) **पूरा करना, और** (यह जिहाद का तरीक़ा ख़ास हिकमतों की वजह से तय किया गया है वर्ना) **अगर अल्लाह तआला चाहता तो उन से** (ख़ुद ही आसमानी और ज़मीनी अज़ाब भेज कर) **बदला ले लेता** (जैसे पहली उम्मतों में इसी

तरह बदला लिया किसी पर पत्थर बरसे किसी पर हवा का तूफ़ान आया किसी को डुबोया गया अगर ऐसा होता तो तुम को जिहाद न करना पड़ता) **लेकिन** (तुम को जिहाद करने का हुक्म इसलिए दिया) **ताकि तुम्हें एक दूसरे के वास्ते से आज़माए** (मुसलमानों का इम्तिहान यह कि कौन अल्लाह के हुक्म पर जान देने को तैयार है और काफ़िरों का इम्तिहान यह कि जंग की तकलीफ़ से सबक़ लेकर कौन सच्चा दीन क़ुबूल करता है), **और** (जिहाद में मारा जाना भी नाकामी नहीं क्योंकि) **जो लोग अल्लाह की राह** (यानी जिहाद) **में मारे जाते हैं अल्लाह तआ़ला उनके** (नेक) **कामों को** (जिन में यह जिहाद भी दाख़िल है) **बर्बाद न** (करेगा बल्कि आख़रत में उसका सवाब अता) **करेगा(04)** (और) **अल्लाह तआ़ला उनको मन्ज़िल पर पहुंचा देगा और उनकी हालत** (क़ब्र, हश्र और पुलसिरात और आख़रत की सब जगहों में) **ठीक रखेगा** (कहीं कोई ख़राबी और नुक़सान उन को न पहुंचेगा)(05) **और** (मन्ज़िल पर पहुंचने का बयान यह है कि) **उनको जन्नत में दाख़िल करेगा जिस की उनको पहचान करा देगा** (कि हर जन्नती अपने-अपने मकान में बिना किसी तलाश व पूछताछ के आसानी से जा पहुंचेगा इससे साबित हुआ कि जिहाद में दिखाई देने वाली नाकामी यानी अपना क़त्ल हो जाना भी बड़ी कामयाबी है)(06) **ऐ ईमान वालो अगर तुम अल्लाह** (के दीन) **की मदद करोगे तो वो तुम्हारी मदद करेगा** (जिसका नतीजा दुनिया में भी दुशमनों पर जीत चाहे शुरू में ही या कुछ वक़्त के बाद) **और** (इसी तरह दुशमनों के मुक़ाबिले में) **तुम्हारे पांव जमा देगा(07) और जो लोग काफ़िर हैं उनके लिए** (दोनों जहान में नुक़सान है कि दुनिया में जब कि वो मोमिनों से मुक़ाबिला करें) **तबाही** (और हार) **है और** (आख़रत में) **उनके** (भले) **कामों को बर्बाद कर** (देगा कोई सवाब न) **देगा(08)** (और काफ़िरों का) **यह** (नुक़सान और बर्बादी) **इस वजह से हुई कि उन्होंने अल्लाह के उतारे हुए हुक्मों को नापसन्द किया** (अक़ीदे से भी और अमल से भी) **सो अल्लाह ने उनके कामों को** (कुफ़्र की वजह से) **बर्बाद कर दिया(09)** (और ये लोग अल्लाह के अज़ाब से नहीं डरते) **क्या ये लोग मुल्क में चले फिरे नहीं और उन्होंने देखा नहीं कि जो लोग उन से पहले हो चुके हैं उन का अन्जाम कैसा हुआ, कि अल्लाह तआ़ला ने उन पर कैसी तबाही डाली** (जो उनके उजड़े हुए महलों व मकानों से नज़र आती है), **और** (इनको भी इससे बेफ़िक्र न होना चाहिए कि अपने कुफ़्र से बाज़ न आए तो) **इन काफ़िरों के लिए इसी क़िस्म की बातें होने वाली हैं(10) यह** (मुसलमानों की कामयाबी और काफ़िरों की तबाही) **इस वजह से है कि अल्लाह तआ़ला मुसलमानों का रखवाला है और काफ़िरों का कोई** (ऐसा) **रखवाला नहीं** (है कि अल्लाह के मुक़ाबिले में उनके काम बना सके इसलिए वो दोनो जहान में नाकाम रहते हैं और मुसलमानों को अगर

कभी दुनिया में वक़्ती नाकामी भी हो जाए तो अन्जाम कार कामयाबी होगी और आख़िरत की कामयाबी तो यक़ीनी है ही इसलिए मुसलमान सदा कामयाब और काफ़िर नाकाम रहता) **है**(11)।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَ
يَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَ النَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿۱۲﴾ وَ كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْۤ
اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿۱۳﴾ اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَ اتَّبَعُوْۤا
اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۴﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ
طَعْمُهٗ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ۬ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَ لَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَ
مَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَ سُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿۱۵﴾

आयत नं० 12 से 15

बेशक अल्लाह तआ़ला उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे से नहरें बहती होंगी, और जो लोग काफ़िर हैं वो** (दुनिया में) **ऐश कर रहे हैं और** (आख़िरत से बेफ़िक्र होकर) **इस तरह खाते** (पीते) **हैं जिस तरह चौपाए खाते हैं** (कि वो नहीं सोचते कि हम को क्यों खिलाया पिलाया जाता है और हमारे ज़िम्मे उसका क्या हक़ वाजिब है) **और जहन्नम उन लोगों का** (आख़री) **ठिकाना है**(12) **और** (आप के मुख़ालिफ़ों को दुनिया की ऐश पर धोका न खाना चाहिए क्योंकि) **बहुत सी बस्तियां ऐसी थीं जो ताक़त में आप की इस बस्ती से बढ़ी हुई थीं जिसके रहने वालों ने आप को घर से बेघर कर दिया कि हमने उन को** (अज़ाब से) **हलाक कर दिया सो उनका कोई मददगार न हुआ** (तो ये बेचारे क्या चीज़ हैं इनको घमन्ड न करना चाहिए क्योंकि जब अल्लाह तआ़ला चाहें उनका सफ़ाया कर सकते हैं और आप उनकी कुछ दिनों की ऐश से दुखी न हों क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने तय वक़्त पर उनको भी सज़ा देने वाले हैं)(13) **तो जो लोग अपने रब के साफ़ रास्ते पर हों क्या वो उन आदमियों की तरह हो सकते हैं जिनके बुरे काम उनको भले मालूम होते हैं और जो अपनी चाहतों के पीछे चलते** (हैं यानी जब दोनों के काम अलग-अलग हैं तो अन्जाम भी अलग होना ज़रूरी है हक़ पर चलने वाले सवाब के और ग़लत रास्ते पर चलने वाले अज़ाब के हक़दार) **हैं**(14)

(जिस का बयान यह है कि) **परहेज़गारों से जिस जन्नत का वादा किया जाता है उसका हाल यह है, कि उसमें बहुत सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं जिन में ज़रा बदलाव नहीं होगा** (न बू में न रंग में न मज़े में), **और बहुत सी नहरें दूध की हैं जिसका ज़ाइक़ा नहीं बदलेगा और बहुत सी नहरें शराब की जो पीने वालों को मज़ेदार मालूम होगी, और बहुत सी नहरें हैं शहद की जो** (मैल कुचैल से) **बिल्कुल साफ़ होगा, और उनके लिए वहां हर क़िस्म के फल होंगे और** (उसमें दाख़िल होने से पहले) **उनके रब की तरफ़ से** (गुनाहों की) **बख़्शिश होगी, क्या ऐसे लोग उन जैसे हो सकते हैं जो सदा दोज़ख़ में रहेंगे और गर्म** (खौलता हुआ) **पानी उनको पीने को दिया जाएगा तो वो उनकी आन्तों के टुकड़े-टुकड़े कर देगा**(15)

नोटः- जन्नत की चीज़ों को दुनिया की चीज़ों से मिलान करके नहीं सोचा जा सकता वहां की हर चीज़ का मज़ा व नफ़ा कुछ और ही होगा जिस की दुनिया में कोई मिसाल नहीं । वहां की शराब में न नशा होगा न बदबू न कड़वाहट न कोई नुक़सान।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰۤى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۗ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْۤا اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿۱۷﴾
فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿۱۸﴾
فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَ
مَثْوٰىكُمْ ﴿۱۹﴾

आयत नं० 16 से 19

और (ऐ पैग़म्बर) **कुछ आदमी** (यानी मुनाफ़िक़ लोग) **ऐसे हैं कि वो आप की** (नसीहतों की) **तरफ़ कान लगा**(कर सुन)**ते हैं** (लेकिन दिल से बिल्कुल ध्यान नहीं करते) **यहां तक कि जब वो लोग आप के पास से** (उठ कर मजलिस से) **बाहर जाते हैं तो दूसरे** (सहाबा) **इल्म वालों से कहते हैं कि हज़रत ने अभी** (जब हम मजलिस में थे) **क्या बात कही थी** (उन का यह कहना भी हंसी उड़ाना ही है यानी यह कहना चाहते हैं कि हम आप की बातों को ध्यान से नहीं सुनते) **ये वो लोग है कि अल्लाह तआला ने उनके दिलों पर बन्द लगा दिया है** (हिदायत से दूर हो गये)

और अपनी मन चाही बातों पर चलते हैं(16) **और** (उन्हीं की क़ौम में से) **जो लोग राह पर हैं** (यानी मुसलमान हो चुके हैं) **अल्लाह तआ़ला उनको** (हुक्मों के सुनने के वक़्त) **और ज़्यादा हिदायत कर देता है** (कि वो उन नये हुक्मों पर भी ईमान लाते हैं) **और उनको परहेज़गारी की तौफ़ीक़ देदेता है**(17) **सो** (ये मुनाफ़िक़ लोग जो क़ुरआन सुन कर भी असर नहीं लेते ऐसा लगता है कि) **ये लोग बस क़ियामत का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वो उन पर अचानक आजाए** (यानी अब नहीं समझते तो क्या क़ियामत में समझेंगे) **सो** (याद रक्खो कि क़ियामत भी नज़दीक है जैसा कि) **उसकी** (बहुत सी) **निशानियां तो आ चुकी हैं** (जैसे ख़ुद आख़री नबी का आना चान्द के टुकड़े होने का मोजिज़ा और बहुत सी) **तो जब क़ियामत उनके सामने आ ही जाएगी उस वक़्त उन को समझना कहां नसीब** (होगा यानी उसका कोई नफ़ा नहीं) **होगा**(18) **तो** (जब आप अल्लाह तआ़ला के ताबेदार बन्दों और बाग़ियों दोनो का हाल व अन्जाम सुन चुके तो ऐ पैग़म्बर) **आप इसका** (पूरी तरह) **यक़ीन रखिए कि सिवाए अल्लाह के और कोई इबादत के क़ाबिल नहीं** (यानी दीन के सभी हुक्मों की पाबन्दी रखिए) **और** (अगर कभी कोई ख़ता हो जाए जो आप की शान से गुनाह की बात तो नहीं हो सकती फिर भी) **आप अपनी ख़ता की मुआफ़ी मांगते रहिए और सब मुसलमान मर्दों और सब मुसलमान औरतों के लिए भी** (बख़्शिश की दुआ मांगते रहिए), **और** (यह भी याद रहे कि) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे चलने फिरने और रहने सहने की** (यानी सब बातों की) **ख़बर रखता है**(19)

नोटः- एक हदीस में है कि "ला इलाहा इल्लल्लाह और इस्तिग़फ़ार की कसरत किया करो क्योंकि इबलीस कहता है कि मैंने लोगों को गुनाहों में डाल कर हलाक किया तो उन्होंने मुझे कलमाए लाइलाहा इल्लल्लाह कह कर हलाक किया जब मैंने यह देखा तो मैंने उनको ऐसी ग़लत बातों के पीछे लगा दिया जिन को वो नेकी समझकर करते हैं जैसे आम बिदअतों का ये ही हाल है उससे उनको तौबा की भी तौफ़ीक़ नहीं होती। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

وَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ لَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّ ذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۚ﴿۲۰﴾ طَاعَةٌ وَّ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۟ فَاِذَا
عَزَمَ الْاَمْرُ ۟ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ﴿۲۱﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَ

تُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَ اَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾ اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ
عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ
وَ اَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ
اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ اَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ
اَسْخَطَ اللّٰهَ وَ كَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ
اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَ لَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَ لَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ
اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَ الصّٰبِرِيْنَ ۙ وَ نَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

आयत नं० 20 से 31

और ईमान वाले कहते रहते हैं कि कोई (नई) **सूरत क्यों नहीं उतरी** (अगर उतर जाए तो उस पर भी ईमान लाकर सवाब पाएं) **तो जिस वक़्त कोई साफ़-साफ़** (हुक्मों वाली) **सूरत उतरती है और** (अगर) **उसमें जिहाद का भी** (साफ़-साफ़) **ज़िक्र होता है तो जिन लोगों के दिलों में** (निफ़ाक़ की) **बीमारी है आप उन लोगों को देखते हैं कि वो आप की तरफ़ इस तरह** (सहमे हुए) **देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छाई हो** (इस तरह देखने की वजह डर और बुज़दिली है कि अब अपने ईमान के दावे को निभाने के लिए जिहाद में जाना पड़ेगा और मुसीबत आई)**, सो** (वो जो इस तरह अल्लाह के हुक्म से जी चुराते हैं तो असलीयत यह है कि) **उनकी जल्दी ही कमबख़्ती आने वाली** (है चाहे दुनिया में भी किसी मुसीबत में गरिफ़्तार हों वर्ना मौत के बाद तो ज़रूरी ही) **है(20)** (और यूं तो ताबेदारी और चापलूसी की बहुत सी बातें बनाते हैं मगर) **उनकी ताबेदारी और बातचीत** (की असलीयत) **मालूम है** (जो जिहाद का हुक्म आने के बाद सब पर खुल गई) **फिर** (जिहाद का हुक्म आने के बाद) **जब सारा काम** (और लड़ाई का सामान) **तैयार ही हो जाता है तो** (उस वक़्त भी) **अगर ये लोग** (ईमान के दावे में) **अल्लाह से सच्चे रहते** (यानी ईमान के दावों के तक़ाज़ों को पूरा करते हुए सच्चे दिल से जिहाद करते) **तो उनके लिए बहुत अच्छा होता** (यानी शुरू में अगर मुनाफ़िक़ थे तो अख़ीर ही में तौबा कर लेते तब भी ईमान क़ुबूल हो जाता)(21) **सो** (जिहाद से बचने में एक दुनिया का नुक़सान भी है कि) **अगर तुम** (और इसी तरह सब जिहाद से) **अलग रहो तो तुम से क्या उम्मीद रक्खी जाए कि तुम** (सभी लोग) **दुनिया में फ़साद मचा**

दो और आपस में नज़दीकी रिशते तोड़ (दो यानी जिहाद से बड़ा फ़ाइदा इन्साफ़ क़ाइम होना है वर्ना फ़सादी लोग छा जाएं इन्साफ़ ख़त्म हो जाए अगर तुम इसको छोड़) **दो**(22) (आगे मुनाफ़िक़ के बारे में है कि) **ये वो लोग हैं जिन को अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर कर दिया** (इसलिए उसके हुक्मों पर चलना नसीब न हुआ) **फिर** (रहमत से दूर करने का यह असर हुआ कि) **उनको** (अल्लाह के हुक्मों को सुनने से) **बहरा कर दिया और** (सच्चे दीन की राह देखने से) **उन** (के दिल) **की आंखों को अन्धा कर दिया**(23) (और क़ुरआन में इन हुक्मों की दलीलें मौजूद हैं) **तो क्या ये लोग क़ुरआन** (के हुक्मों के बारे) **में सोचते नहीं** (इसलिए इन की समझ में नहीं आता) **या** (सोचते तो हैं मगर) **दिलों पर ताले लग रहे हैं** (यानी दिल ऐसा सख़्त हो गया कि अच्छे बुरे की हिस नहीं रही(24) **जो लोग** (सच्चे दीन से) **पीठ फेर कर हट गये बावजूद इसके कि सीधा रास्ता उनको** (दलीलों से) **साफ़ मालूम हो गया** (तो) **शैतान ने उन को बहका दिया है, और उन को दूर-दूर की उम्मीदें दिलाईं** (कि ईमान लाने से फ़लां-फ़लां फ़ाइदे जाते रहेंगे)(25) **यह सब इस वजह से हुआ कि इन लोगों ने ऐसे लोगों से जो कि अल्लाह के उतारे हुए हुक्मों को** (हसद की वजह से) **नापसन्द करते हैं** (यानी यहूदियों के सरदार जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हसद करते थे और सच्चाइ जान लेने के बावजूद नहीं मानते थे तो उनसे मुनाफ़िक़ों ने) **यह कहा कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे** (यानी दिल से इस्लाम को न मानेंगे मगर दिखावे में मानते रहेंगे) **और** (भले ही इस क़िस्म की बातें ये मुनाफ़िक़ लोग छुप कर करते हैं मगर) **अल्लाह तआ़ला उनकी छुप कर बातें करने को** (ख़ूब) **जानता** (है और कुछ बातों की वही से आप को ख़बर कर देता) **है**(26) (और ये जो ऐसी हरकतें कर रहे हैं) **तो** (उस वक़्त) **क्या हाल होगा जब कि फ़रिशते उन की जान** (इस तरह) **निकालते होंगे कि उनके चेहरों पर और पीठों पर मारते जाते होंगे**(27) (और) **यह** (सज़ा) **इस वजह से** (होगी) **कि ये उस तरीक़े पर चले जिससे अल्लाह नाराज़ है और जिन बातों से वो राज़ी है उनसे नफ़रत किया करते थे इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उनके सब** (भले) **काम** (शुरू ही से) **बर्बाद कर दिये** (बस इस सज़ा के हक़दार हो गये)(28) **जिन लोगों के दिलों में** (निफ़ाक़ की) **बीमारी है** (और वो उस को छुपाने की कोशिश करते हैं) **क्या ये लोग यह समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला कभी उन की दिली दुशमनी को** (लोगों पर) **न खोलेगा**(29) **और हम** (तो) **अगर चाहते तो आप को उन का पूरा पता बता देते तो आप उनको उन के हुलिये से पहचान लेते, और** (चाहे हमने किसी वजह से नहीं बताया मगर) **आप उनको बात करने के ढंग से अब भी ज़रूर पहचान लेंगे, और अल्लाह तआ़ला तुम**

सब के किये कामों को जानता है (बस मुसलमानों को उन की सच्चाई पर इनआम और मुनाफ़िक़ों को उनके झूट और धोके पर सज़ा देगा)(30) **और हम** (जिहाद जैसे सख़्त हुक्म देकर) **ज़रूर तुम सब को आज़माएंगे ताकि हम** (खुले तौर पर भी) **उन लोगों को मालूम** (और अलग) **करलें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और जो** (जिहाद में) **जमे रहने वाले हैं और ताकि तुम्हारी हालतों की भी जांच करलें**(31)।

नोटः- हज़रत सूबान की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो आदमी यह चाहता हो कि उसकी उम्र ज़्यादा हो और रोज़ी में बरकत हो उसको चाहिए कि रिश्तेदारों के साथ अच्छा सलूक (व हमदर्दी) करे। (तिरमिज़ी)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا
اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا
أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا
تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾ إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا
فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هَا أَنْتُمْ هَٰؤُلَاءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَمِنْكُمْ مَنْ
يَبْخَلُ وَمَنْ يَبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَفْسِهِ وَاللَّهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا
غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

आयत नं० 32 से 38

बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने (दूसरों को भी) **अल्लाह के रास्ते** (यानी सच्चे दीन) **से रोका और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की मुख़ालफ़त की बावजूद इसके कि उन को** (दीन का) **रास्ता** (दलीलों से) **नज़र आ चुका था ये लोग अल्लाह** (के दीन) **को कुछ नुक़सान न पहुंचा सकेंगे** (बल्कि यह दीन हर हाल में पूरा होकर रहेगा और ऐसा ही हुआ), **और अल्लाह तआ़ला उन की कोशिशों को** (जो सच्चे दीन को मिटाने के लिए कर रहे हैं) **मिटा देगा**(32)

ऐ ईमान वालो अल्लाह का कहना मानो और (चूंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह ही का हुक्म बताते हैं इसलिए) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **का** (भी) **कहना मानो और** (काफ़िरों की तरह अल्लाह व रसूल की मुख़ालफ़त करके) **अपने किये कामों को बर्बाद मत करो**(33) **बेशक जो लोग काफ़िर हुए और उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका फिर वो काफ़िर रह कर मर** (भी) **गये तो अल्लाह तआ़ला उन को कभी न बख़्शेगा**(34) (और जब मालूम हो गया कि मुसलमान अल्लाह के प्यारे हैं और काफ़िरों से नफ़रत है) **तो** (ऐ मुसलमानो) **तुम** (काफ़िरों के मुक़ाबिले में) **हिम्मत न हारो और** (हिम्मत हार कर उन को) **सुलह की तरफ़ न बुलाओ और तुम ही कामयाब रहोगे** (और वो नाकाम क्योंकि तुम प्यारे हो और उन से नफ़रत है) **और अल्लाह तुम्हारे साथ है** (यह तो तुम को दुनिया की कामयाबी हुई) **और** (आख़रत में यह कामयाबी होगी कि अल्लाह तआ़ला) **तुम्हारे नेक कामों** (के सवाब) **में हरगिज़ कमी न करेगा**(35) **यह दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ एक खेल तमाशा है** (अगर इसमें जान और माल को अपने फ़ाइदे के लिए बचाना चाहे तो फ़ाइदा ही कितने दिन का है) **और अगर तुम ईमान लाओ और परहेज़गार रहो तो** (तुम को अपने पास से नफ़ा पहुंचाएगा इस तरह कि) **तुम को तुम्हारे बदले देगा और** (तुम से कोई नफ़ा न चाहेगा और) **तुम से तुम्हारे माल** (तक भी अपने नफ़े के लिए) **नहीं** (मांगेगा और न ही तुम्हारे जान माल ख़र्च करने से अल्लाह का कोई नफ़ा हो सकता है जब तुम से ऐसी चीज़ नहीं मांगता जिसका देना आसान है तो जान जिसका देना मुश्किल है वो तो क्यों) **मांगेगा**(36) (और) **अगर** (आज़माने के लिए) **तुम से तुम्हारे माल मांगे फिर सब कुछ मांगले तो तुम** (में से बहुत से) **कन्जूसी करने लगो** (यानी देना पसन्द न करो) **और** (उस वक़्त) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दिलों की नागवारी खोल दे** (कि देने से इनकार कर दो)(37) **हां तुम लोग ऐसे हो कि तुम को अल्लाह की राह में** (जिस का नफ़ा तुम्हारे लिए यक़ीनी है थोड़ा सा हिस्सा माल का) **ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है** (और बाक़ी सारा तुम्हारे क़ब्ज़े में छोड़ दिया जाता है) **तो** (उस पर भी) **कुछ तुम में से वो हैं जो कन्जूसी करते हैं, और जो आदमी** (ऐसी जगह ख़र्च करने से) **कन्जूसी करता है तो वो** (असल में) **ख़ुद अपने** (ही नफ़े) **से कन्जूसी करता** (है यानी अपना ही सदा के नफ़े का नुक़सान करता) **है, और** (नहीं तो) **अल्लाह तआ़ला तो किसी का मुहताज नहीं** (ताकि उसके नुक़सान का शुबह हो) **और** (बल्कि) **तुम सब** (उसके) **मुहताज हो** (और तुम्हारी ज़रूरत के लिए ही तुम को ख़र्च करने का हुक्म किया गया क्योंकि आख़रत में तुम को सवाब की ज़रूरत होगी और तरीक़ा उस का ये ही काम हैं) **और अगर तुम** (हमारे हुक्मों से) **मुंह फेरोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम**

पैदा कर देगा (और) **फिर वो तुम जैसे** (मुंह फेरने वाले) **न होंगे** (बल्कि कहना मानने वाले होंगे यह काम उन से लिया जाएगा)(38)

नोटः- ऊपर आयत में काफ़िरों से सुलह और समझौते को जो मना किया गया है यह वो सुलह है जिसका मन्शा बुज़दिली ऐश परस्ती और अल्लाह की राह में जिहाद करने से फरार हो लेकिन अगर मुसलमानों की भलाई सुलह में देखी जाए तो सुलह कर लेने में कोई हरज नहीं जैसा कि दूसरी आयत में आया है- यानी अगर काफ़िर सुलह की तरफ झुक जाएं तो आप भी झुक जाइये।

48-सूरत-फ़तह

इस मदनी सूरत में '4' रूकू और '29' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِنَّا فَتَحۡنَا لَكَ فَتۡحًا مُّبِیۡنًا ۙ﴿۱﴾ لِّیَغۡفِرَ لَكَ اللّٰہُ مَا تَقَدَّمَ مِنۡ ذَنۡۢبِكَ وَ مَا تَاَخَّرَ وَ یُتِمَّ نِعۡمَتَہٗ عَلَیۡكَ وَ
یَہۡدِیَكَ صِرَاطًا مُّسۡتَقِیۡمًا ۙ﴿۲﴾ وَّ یَنۡصُرَكَ اللّٰہُ نَصۡرًا عَزِیۡزًا ﴿۳﴾

आयत नं० 01 से 03

(ऐ पैग़म्बर) **बेशक हमने** (इस सुलह हुदैबिया से) **आप को एक खुली हुई जीत देदी**(01) (और जीत इस लिए दी गई) **ताकि** (दीन की तबलीग़ आसान हो जाए और कसरत से लोग इस्लाम में दाख़िल हों और इससे आप का सवाब बहुत बढ़ जाए और उसकी बरकत से) **अल्लाह तआ़ला आप की सब अगली पिछली ग़लतियां मुआफ़ कर दे और आप पर** (जो अल्लाह तआ़ला) **अपने अहसान** (करता आता है जैसे आप को पैग़म्बरी दी, क़ुरआन दिया बहुत से इल्म दिये बहुत से कामों का सवाब दिया उन अहसानों) **को पूरा कर दे और आप को** (बिना किसी रोक टोक के दीन के) **सीधे रास्ते पर ले चले** (क्योंकि काफ़िर दीन की राह में रूकावट डालते थे अब यह रूकावट न रहेगी)(02) **और अल्लाह आप को ऐसी जीत दे जिसमें इ़ज़्ज़त ही इ़ज़्ज़त हो** (यानी जिसके बाद आप को कभी किसी से दबना न पड़े बस ऐसा ही हुआ कि सारे अरब पर आप का क़ब्ज़ा हो गया)(03)।

नोटः- हिजरत के छटे साल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़्वाब देखा कि सहाबा के साथ उमरा कर रहे हैं सहाबा ख़्वाब सुन कर उमरा करने के लिए जाने को तैयार हो गये जब मक्के के नज़दीक पहुंचे तो मक्के के काफ़िरों ने अन्दर दाख़िल होने से रोक दिया जंग का माहौल बन गया हुज़ूर ने सहाबा से जिहाद के लिए बैत ली जिसे "बैते रिज़वान" कहते हैं बाद में इस बात पर सुलह हो गई कि इस साल तो बिना उमरा किये वापस चले जाएं और अगले साल उमरा

करने आएं कुछ और भी शर्तें थीं जो देखने में दब कर की हुई सुलह थी मगर मुसलमानों की और दीन की भलाई की ख़ातिर हुज़ूर ने उसे मान लिया । सहाबा को इस तरह दबकर कीजाने वाली सुलह से बहुत दुःख हुआ इस पर ये आयतें उतरीं इस सुलह को सुलह हुदैबिया कहते हैं बाद में वो छुपी भलाइयां सब के सामने आगईं ।

هُوَ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ السَّكِيۡنَةَ فِىۡ قُلُوۡبِ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ لِيَزۡدَادُوۡۤا اِيۡمَانًا مَّعَ اِيۡمَانِهِمۡ‌ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوۡدُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيۡمًا حَكِيۡمًا ۙ ﴿۴﴾ لِّيُدۡخِلَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا وَ
يُكَفِّرَ عَنۡهُمۡ سَيِّاٰتِهِمۡ‌ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنۡدَ اللّٰهِ فَوۡزًا عَظِيۡمًا ۙ ﴿۵﴾ وَّيُعَذِّبَ الۡمُنٰفِقِيۡنَ وَالۡمُنٰفِقٰتِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ
وَالۡمُشۡرِكٰتِ الظَّآنِّيۡنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوۡءِ‌ؕ عَلَيۡهِمۡ دَآٮِٕرَةُ السَّوۡءِ‌ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ وَلَعَنَهُمۡ وَاَعَدَّ لَهُمۡ
جَهَنَّمَ‌ؕ وَسَآءَتۡ مَصِيۡرًا ﴿۶﴾ وَلِلّٰهِ جُنُوۡدُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ‌ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيۡزًا حَكِيۡمًا ﴿۷﴾

आयत नं० 04 से 07

वो (अल्लाह) **ऐसा है जिसने मुसलमानों के दिलों में सहार पैदा की** (कि जंग का हुक्म हुआ तो तैयार हो गये सुलह की बात हुई तो मान ली) **ताकि उनके पहले ईमान के साथ उनका ईमान और ज़्यादा हो** (क्योंकि रसूल की ताबेदारी से ईमान का नूर ज़्यादा होता है), **और आसमान व ज़मीन की सब फ़ौजें** (जैसे फ़रिशते और सब मख़लूकें) **अल्लाह ही की** (फ़ौजें) **हैं** (इसलिए काफ़िरों की हार और दीन इस्लाम की जीत के लिए वो तुम्हारे जिहाद का मुहताज नहीं वो अगर चाहे तो फ़रिशतों की फ़ौजें भेजदे), **और अल्लाह तआला** (छुपी भलाइयों का) **बड़ा जानने वाला हिकमत वाला है** (जब जंग में भलाई होती है उसका हुक्म देता है और जब जंग न करने में भलाई होती है उसका हुक्म देता है इसलिए मुसलमानों को चाहिए दोनों हालतों में रसूल के हुक्म के ताबे रहें)**(04)** **ताकि अल्लाह तआला** (इस ताबेदारी की वजह से) **मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी जिनमें सदा-सदा रहेंगे और ताकि** (इस ताबेदारी की वजह से) **उनके गुनाह दूर करदे, और यह** (जो कुछ बताया गया) **अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है(05) और** (यह तसल्ली व सहार काफ़िरों के दिल पर नहीं उतारी गई) **ताकि अल्लाह तआला मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को** (उनके कुफ़्र की वजह से) **अज़ाब दे जो कि अल्लाह के साथ बुरे-बुरे गुमान रखते हैं,** (दुनिया में) **उन पर बुरा वक़्त**

पड़ने वाला है (जैसा कि कुछ दिनों बाद ही क़त्ल और गरिफ़्तार हुए और मुनाफ़िक़ों की सारी उम्र पछताने व परीशानी में कटी कि इस्लाम बढ़ता था और वो घटते जाते थे यह तो दुनिया में हुआ) **और** (आख़रत में) **अल्लाह तआ़ला उन पर ग़ुस्सा होगा और उनको रहमत से दूर कर देगा और उनके लिए उसने दोज़ख़ तैयार कर रक्खी है, और वो बहुत ही बुरा ठिकाना है(06) और आसमान व ज़मीन की सब फ़ौजें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला है अगर चाहता इन सब का एक दम सफ़ाया कर देता कि ये इसके हक़दार हैं लेकिन चूंकि वो) **हिकमत वाला** (है इसलिए सज़ा में मोहलत देता) **है(07)।**

नोटः- ऊपर आयतों में सहाबा किराम पर जिन इनामों का ज़िक्र किया गया है वो चूंकि ईमान और रसूल की ताबेदारी की वजह से मिले इस हैसियत से जो भी मुसलमान ईमान व ताबेदारी में पूरा होगा वो इन इनामों का हक़दार होगा।

إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوا بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً
وَأَصِيلًا ﴿٩﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ ٱللَّهَ يَدُ ٱللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ
نَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَٰهَدَ عَلَيْهُ ٱللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾

आयत नं० 08 से 10

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **हम ने आप को** (उम्मत के कामों पर क़ियामत के दिन) **गवाही देने वाला और** (दुनिया में मुसलमानों के लिए) **ख़ुशख़बरी देने वाला और** (काफ़िरों के लिए) **डराने वाला बनाकर भेजा है(08)** (और ऐ मुसलमानों हम ने उनको इसलिए रसूल बनाकर भेजा है) **ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उस** (के दीन) **की मदद करो और उस की इज़्ज़त करो** (अक़ीदे से भी और अमल से भी कि उसका कहना मानो), **और सुबह शाम उस** (अल्लाह) **की तस्बीह करते रहो** (अगर इस तस्बीह की तफ़सीर नमाज़ से की जाए तो सुबह शाम की फ़र्ज़ नमाज़ें मुराद होंगी वर्ना आम ज़िक्र मुराद होगा)**(09) जो लोग आप से** (हुदैबिया के दिन इस बात पर) **बैत कर रहे हैं** (यानी आप के हाथ पर एहद कर चुके हैं कि जिहाद से भागेंगे नहीं) **तो वो** (असल में) **अल्लाह तआ़ला से बैत कर रहे हैं** (क्योंकि इरादा आप से इस पर बैत करने का है कि अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को पूरा करेंगे, और जब यह बात है

तो जैसे) **अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है फिर** (बैत के बाद) **जो आदमी एहद तोड़ेगा** (यानी बजाए ताबेदारी के मुख़ालफ़त करेगा) **तो उस के एहद तोड़ने का वबाल उसी पर पड़ेगा और जो आदमी उस बात को पूरा करेगा जिस पर** (बैत में) **अल्लाह से एहद किया है तो जल्दी ही अल्लाह तआ़ला उस को बड़ा बदला देगा**(10)।

नोटः- बैत किसी ख़ास काम पर एहद लेने का नाम है इसका पुराना और सुन्नत तरीक़ा आपस में एहद करने वालों का हाथ पर हाथ रखना है मगर हाथ पर हाथ रखना शर्त और ज़रूरी नहीं। जिस काम का किसी से एहद किया जाए उस की पाबन्दी शरीअत से वाजिब व ज़रूरी है और उसके ख़िलाफ़ करना हराम है।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَ اَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا
لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١١ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰۤى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّ زُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ
قُلُوْبِكُمْ وَ ظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ وَ كُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ۝١٢ وَ مَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ فَاِنَّاۤ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
سَعِيْرًا ۝١٣ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٤

आयत नं० 11 से 14

जो गांव के लोग (इस हुदैबिया के सफ़र से) **पीछे रह गये** (सफ़र में साथ नहीं गये) **वो जल्द ही** (जब कि आप मदीना पहुंचेंगे) **आप से** (बात बनाते हुए) **कहेंगे कि** (हम जो आप के साथ नहीं गये इसकी वजह यह हुई कि) **हम को हमारे माल और घर वालों ने फ़ुर्सत न लेने दी** (यानी उनकी ज़रूरतों में लगे रहे) **तो हमारे लिए** (इस ग़लती की) **मुआफ़ी की दुआ कर दीजिए,** (आगे अल्लाह तआ़ला उनको झूटा बताते हैं कि) **ये लोग अपनी ज़बान से वो बात कहते हैं जो उनके दिल में नहीं है,** (आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को समझाया है कि ये लोग जब आप से यह मजबूरी बताएं तो) **आप कह दीजिए कि** (अगर यह मजबूरी सच भी होती तो अल्लाह व रसूल के हुक्म के सामने कुछ भी नहीं दूसरे) **वो कौन है अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए** (नफ़े नुक़सान में) **जिस का बस चलता हो अगर अल्लाह तआ़ला तुम को कोई नुक़सान या नफ़ा पहुंचाना**

चाहे (यानी तुम्हारी जान या माल और घर वालों में जो नफ़ा या नुक़सान नसीब में लिखा जा चुका उसे कौन बदल सकता है), **अल्लाह तआ़ला** (ने जो कि) **तुम्हारे सब कामों को जानता** (है मुझको वही से ख़बर दी है कि तुम झूटे हो और तुम्हारी ग़ैर हाज़िरी की वजह वो नहीं जो तुम ने बयान की) **है(11) बल्कि** (असल वजह यह है कि) **तुमने यह समझा कि पैग़म्बर और मुसलमान अपने घर वालों में कभी लौट कर न आएंगे** (बल्कि दुशमन सब का सफ़ाया कर देंगे) **और यह बात तुम्हारे दिलों को अच्छी लगती** (थी अल्लाह व रसूल से दुशमनी की वजह से तुम्हारी दिली तमन्ना भी) **थी और तुमने बुरे-बुरे गुमान किये और तुम** (उन बुरे गुमानों की वजह से जो कि कुफ़्र की बातें हैं) **बर्बाद होने वाले लोग हो गये(12) और** (अगर इन बातों को सुनकर तुम अब भी दिल से ईमान ले आओ तो ठीक वर्ना) **जो आदमी अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान न लाएगा तो काफ़िरों के लिए दोज़ख़ तैयार कर रक्खी है(13) और** (इस क़ानून पर किसी को अचम्भा न होना चाहिए क्योंकि) **सारे आसमानों व ज़मीन की हुकूमत अल्लाह ही की है, वो जिसको चाहे बख़्श दे और जिसको चाहे सज़ा दे और** (काफ़िर माना कि सज़ा का हक़दार होता है लेकिन) **अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला बहुत महरबान** (है कि वो भी सच्चे दिल से ईमान ले आए तो उसको भी बख़्श देता) **है(14)**

नोटः- ऊपर आयत में उन गांव वालों का ज़िक्र है जिनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुदैबिया के सफ़र में साथ चलने का हुक्म किया था मगर उन्होंने बहानाबाज़ी से काम लिया बाद में उनमें से कुछ हज़रात ने तौबा कर ली थी और सच्चे मुसलमान हो गये थे।

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ
اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا
قَلِيْلًا ۝١٥ قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ
فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٦ لَيْسَ
عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٧

आयत नं० 15 से 17

(मुसलमानो) **जो लोग** (हुदैबिया के सफ़र से) **पीछे रह गये वो जल्दी ही जब** (ख़ैबर की) **ग़नीमत** (के माल) **लेने जाओगे** (मतलब यह कि ख़ैबर जीतने के लिए चलोगे जहां जीत में ग़नीमत का माल मिलने वाला है) **तो** (ये लोग तुम से) **कहेंगे कि हम को भी इजाज़त दो कि हम तुम्हारे साथ चलें** (यह कहने की वजह माल का लालच था जो अन्दाज़े से पता चलता था जब कि हुदैबिया के सफ़र में परीशानी बल्कि हलाक होने की उम्मीद थी, इसके बारे में अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **वो लोग यह चाहते हैं कि अल्लाह के हुक्म को बदल दें** (यानी अल्लाह का हुक्म यह था कि उस जंग में सिर्फ़ वो लोग जाएं जो हुदैबिया और बैते रिज़वान में शरीक थे उनके सिवा और कोई न जाए ख़ास कर उन लोगों में जो जाने से रूके और बहाना बाज़ी की), **तो आप कह दीजिए कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते** (यानी तुम्हारी यह बात नहीं मानी जा सकती क्योंकि इसमें अल्लाह के हुक्म को बदलने का गुनाह है क्योंकि) **अल्लाह ने पहले से यही ही कह दिया है** (यानी हुदैबिया से वापसी ही में अल्लाह तआ़ला ने यह हुक्म दे दिया था कि ख़ैबर की जंग में हुदैबिया वालों के सिवा कोई न जाएगा और जब आप उनको यह जवाब देंगे) **तो वो लोग कहेंगे** (कि हमारे साथ न लेने को जो अल्लाह का हुक्म बताया जाता है बात यह नहीं) **बल्कि तुम लोग हमसे जलते हो** (इसलिए हमारा साझी होना पसन्द नहीं हालांकि मुसलमानों में हसद का सवाल नहीं), **बल्कि ख़ुद ये लोग बहुत कम बात समझते हैं** (अगर समझ पूरी होती तो अल्लाह के इस हुक्म की वजह समझ में आजाती कि हुदैबिया वालों ने बड़े ख़तरों और बड़े इम्तिहान का काम किया था)(15) **आप इन पीछे रह जाने वाले गांव वालों से** (यह भी) **कह दीजिए कि** (अगर एक ख़ैबर में न गये तो न सही सवाब पाने के और भी मौक़े आने वाले हैं जैसा कि) **जल्दी ही तुम लोग ऐसे लोगों** (से लड़ने) **की तरफ़ बुलाए जाओगे जो सख़्त लड़ने वाले होंगे** (मुराद इससे ईरान व रोम की जंगे हैं क्योंकि उन की फ़ौजें ट्रेनिंग ली हुई और जंगी सामान से लैस थी कि) **या तो उनसे लड़ते रहो या वो** (इस्लाम के) **ताबेदार हो जाएं** (मतलब यह कि तुम उस काम के लिए बुलाए जाओगे) **तो** (उस वक़्त) **अगर तुम कहना मानोगे** (और उनसे जिहाद करोगे) **तो तुम को अल्लाह तआ़ला नेक बदला देगा और अगर तुम उस वक़्त भी मुंह फेरोगे जैसा इसके पहले** (हुदैबिया में) **मुंह फेर चुके हो तो दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा**(16) (लेकिन मजबूर लोग इस जिहाद के हुक्म से अलग हैं जैसा कि) **न अन्धे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है, और जो आदमी भी अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानेगा** (अल्लाह) **उसको ऐसी**

जन्नतों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और जो आदमी (हुक्म से) **मुंह फेरेगा उस को दर्दनाक अज़ाब की सज़ा देगा**(17)।

नोटः- सिर्फ़ हुदैबिया वालों को ही जंगे ख़ैबर में जाने का जो हुक्म बयान हुआ है उस का कुरआन में कहीं साफ़ ज़िक्र नहीं बल्कि यह हुक्म पैग़म्बर के वास्ते से मालूम हुआ। इससे पता चला कि कुरआन के हुक्मों के अलावा जो हुक्म रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस में आए हैं वो भी इस आयत के हिसाब से अल्लाह के हुक्म में दाख़िल हैं जो बेदीन लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस को दीन की दलील नहीं मानते ये आयतें उनके समझने के लिए काफ़ी हैं।

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَ
اَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۱۸﴾ وَّ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ
كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَ كَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ۚ وَ لِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَ يَهْدِيَكُمْ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿۲۰﴾ وَّ اُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿۲۱﴾

आयत नं० 18 से 21

यक़ीन जानो अल्लाह उन मुसलमानो से (जो सफ़र में आप के साथ हैं) **ख़ुश हुआ जबकि ये लोग** (हुदैबिया के दिन) **आप से पेड़ के नीचे** (जिहाद में जमे रहने पर) **बैत कर रहे थे और उनके दिलों में जो कुछ** (सच्चाई और एहद को पूरा करने का इरादा) **था अल्लाह को वो भी मालूम था और** (उस बैत को बैते रिज़वान कहते हैं और उस वक़्त) **अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों में इतमीनान** (और सुकून) **पैदा कर दिया** (जिससे उनको अल्लाह का हुक्म मानने में ज़रा झिजक नहीं हुई) **और** (इसके साथ ही) **उन को** (इनआम में) **हाथों हाथ एक जीत देदी** (मुराद इससे ख़ैबर की जीत है)(18) **और** (उस जीत में) **बहुत सी** (माली) **ग़नीमतें भी** (दीं) **जिनको ये लोग ले रहे हैं, और अल्लाह तआ़ला बड़ा ज़बरदस्त** (कुदरत वाला) **और बड़ा हिकमत वाला** (है कि अपनी कुदरत और हिकमत से जिसके लिए ठीक समझता है जीत देदेता) **है**(19) (और कुछ इस ख़ैबर की जीत पर ही बस नहीं बल्कि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम से** (और भी) **बहुत सी** (माली) **ग़नीमतों का वादा कर रक्खा है जिन को तुम लोगे सो** (उनमें से) **हाथों हाथ तुम को यह देदी और**

(इसके देने के लिए ख़ैबर और उनके हिमायती) **लोगों के हाथ तुम से रोक दिये** (यानी सब के दिलों पर रौब डाल दिया कि उनको ज़्यादा ज़ोर दिखाने की हिम्मत न हुई और आराम से जीत गये), **और ताकि यह** (क़िस्सा) **ईमान वालों के लिए** (दूसरे वादों के सच्चा होने का) **एक नमूना हो जाए** (यानी अल्लाह के वादों के सच्चा होने पर और ज़्यादा ईमान पक्का हो जाए) **और ताकि** (इस नमूने से) **तुम को** (आगे के लिए हर काम में) **एक सीधे रास्ते पर डाल दे** (मुराद इस रास्ते से अल्लाह पर भरोसा है यानी सदा के लिए इस क़िस्से को सोच कर अल्लाह पर भरोसे से काम लिया करो)(20) **और एक जीत और भी** (मिलने वाली) **है जो** (इस वक़्त तक) **तुम्हारे क़ाबू में नहीं आई** (यानी मक्के की जीत मगर) **अल्लाह तआ़ला उसको** (अपनी क़ुदरत के) **घेर में लिए हुए है** (जब चाहेगा तुम को देदेगा), **और** (उसी की क्या ख़ास बात है) **अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है**(21)।

नोटः- ऊपर आयत में बैते रिज़वान में शरीक होने वाले मुसलमानों के बारे में अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी हो जाने की ख़ुशख़बरी दी है और अल्लाह तआ़ला जिससे राज़ी हो जाए फिर उससे नाराज़ नहीं होते। और एक हदीस में बैते रिज़वान में शरीक होने वाले मुसलमानों के बारे में आया है कि तुम लोग सारी रूए ज़मीन के इन्सानों से बेहतर हो। और एक हदीस में है कि जिन लोगों ने उस पेड़ के नीचे बैत की है उनमें कोई जहन्नम में न जाएगा। (मज़हरी)

तो जिन हज़रात के बारे में अल्लाह तआ़ला ने रज़ामन्दी और मग़फ़िरत का ऐलान कर दिया है उनसे अगर कोई ग़लती या गुनाह भी हो जाए तो इस आयत की रू से उनकी मुआफ़ी का ऐलान है इसलिए उनमें से किसी को बुरा समझना इस आयत की मुख़ालफ़त है। जो लोग हज़रत अबूबक्र व हज़रत उमर रज़ि० या दूसरे सहाबा पर मुनाफ़िक़ हो जाने का इल्ज़ाम लगाते हैं जैसा कि राफ़ज़ियों का तरीक़ा है वो इस आयत की मुख़ालफ़त करते हैं।

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ
مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ﴿٢٤﴾ هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ
تَطَئُوهُمْ فَتُصِيبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ لِيُدْخِلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوا لَعَذَّبْنَا

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ
اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

आयत नं० 22 से 26

और (काफ़िरों की हार के ऐसे सामान मौजूद थे कि) **अगर** (तुम में यह सुलह न होती बल्कि) **तुम से ये काफ़िर लड़ते तो ज़रूर पीठ फेर कर भाग जाते फिर उनको कोई यार मददगार न मिलता**(22) (और) **अल्लाह तआ़ला ने** (काफ़िरों के लिए) **ये ही दस्तूर कर रक्खा है जो पहले से चला आता** (है कि मुक़ाबिले में सच्चों की जीत हुई और झूटे हारे हैं और अगर किसी छुपी भलाई की वजह से इसमें देर हो जाए तो और बात) **है और आप अल्लाह के दस्तूर में** (किसी आदमी की तरफ़ से) **बदलाव न पाएंगे** (कि अल्लाह तआ़ला कोई काम करना चाहे और कोई उस को न होने दे)(23) **और वो ऐसा है कि उसने उनके हाथ तुम से** (यानी तुम्हारे क़त्ल से) **और तुम्हारे हाथ उन** (के क़त्ल) **से ख़ास मक्के** (के पास) **में** (यानी हुदैबिया में) **रोक दिये जब कि वो तुम को उन पर क़ाबू दे चुका था** (यह क़िस्सा उस वक़्त का है जब कि सहाबा ने मक्के वालों के पचास लोगों को पकड़ लिया था और मक्के वालों ने हज़रत उस्मान और उनके साथियों को मक्के में रोक लिया अगर मुसलमान मक्के वालों को क़त्ल कर देते तो मक्के वाले मुसलमानों को और इस तरह जंग छिड़ जाती मगर अल्लाह ने दिलों में ऐसी बात डाली कि जंग न होने दी), **और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों को** (उस वक़्त) **देख रहा था** (और उन कामों के नतीजों को जानता था इसलिए ऐसा काम नहीं होने दिया जिससे जंग छिड़ जाए)(24) **ये वो लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम को** (उमरा करने के लिए) **ख़ाना काबा से रोका और क़ुरबानी के जानवर जो** (हुदैबिया में) **रूके हुए थे उन को उनके मौक़े में पहुंचने से रोका, और** (ये ऐसी बातें थीं जिनकी वजह से उनको सज़ा देना ज़रूरी थी) **अगर** (मक्के में उस वक़्त) **बहुत से मुसलमान मर्द और बहुत सी मुसलमान औरतें न होतीं जिन की तुम को ख़बर भी न थी यानी उनके पिस जाने का डर न होता जिस पर उनकी वजह से तुम को भी बेख़बरी में** (दुख व तकलीफ़ का) **नुक़सान पहुंचता** (अगर यह बात न होती) **तो काम तमाम कर दिया जाता, लेकिन इसलिए नहीं किया गया ताकि अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत में जिसको चाहे दाख़िल करे** (बस जंग न होने से उन मुसलमानों की जान बची और तुम उनके क़त्ल के गुनाह और फिर उस पर दुःख व अफ़सोस से बचे लेकिन)

अगर ये (मुसलमान मक्के से) **हट गये होते तो उन** (मक्के वालों) **में जो काफ़िर थे हम उन को** (मुसलमानों के हाथ से) **दर्दनाक सज़ा देते**(25) (और उन काफ़िरों की सज़ा की एक और वजह भी थी) **जब कि उन काफ़िरों ने नासमझी की ज़िद रक्खी** (इस ज़िद से मुराद वो शर्तें हैं जो सुलह और समझौता होने में रूकावट डाल रहीं थीं) **सो** (ऐसी सूरत में मुसलमान जोश में आकर लड़ पड़ते मगर) **अल्लाह तआला ने अपने रसूल को और मोमिनों को अपनी तरफ़ से सहार दी** (जिसकी वजह से उन्होंने सब्र से काम लिया और सुलह हो गई) **और** (उस वक़्त) **अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक़्वा** (व परहेज़गारी) **की बात पर जमाए रक्खा और वो** (मुसलमान) **उस** (तक़्वे की बात) **के** (दुनिया में भी) **ज़्यादा हक़्दार हैं और** (आख़रत में भी) **उस** (सवाब) **के लाइक़ हैं, और अल्लाह हर चीज़ को ख़ूब जानता है**(26)।

नोटः- इमाम क़ुरतबी रह० ने फ़रमाया कि अगर बेख़बरी में किसी मुसलमान के हाथों कोई मुसलमान मारा जाए वो गुनाह तो नहीं मगर एक ऐब शर्म और पछतावे की बात है अल्लाह तआला ने अपने रसूल के सहाबा की इससे भी हिफ़ाज़त की। इससे मालूम हुआ कि सहाबा किराम के साथ अल्लाह का मुआमला यह है कि वो पैग़म्बरों की तरह मासूम तो नहीं मगर आम तौर पर उनको ख़ताओं और ऐबों से बचाने का क़ुदरती इन्तिज़ाम हो जाता है।

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَ
مُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۲۷﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ
بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿۲۸﴾ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗۤ
اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ
وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۚ وَ مَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ۛ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۲۹﴾

आयत नं० 27 से 29

बेशक अल्लाह तआला ने अपने रसूल को सच्चा ख़्वाब दिखाया है जो इसी तरह होना

है तुम लोग ख़ाना काबा में इन्शाअल्लाह ज़रूर जाओगे अमन व अमान के साथ कि बिना किसी डर ख़ौफ़ के तुम में कोई सर मुन्डाता होगा कोई बाल कटाता होगा (यानी छोटे कराता होगा जैसा कि अगले साल ऐसा ही हुआ), **बस** (इस साल से देरी की वजह यह है कि) **अल्लाह तआ़ला को वो बातें** (और हिकमतें) **मालूम हैं जो तुम नहीं जानते** (उन हिकमतों में से एक यह भी है) **कि इस** (ख़्वाब के पूरा होने) **से पहले तुम को एक नज़दीकी जीत** (ख़ैबर की) **देदी** (ताकि उससे पहले मुसलमानों को ताक़त और सामान हासिल हो जाए और वो पूरी तसल्ली से उमरा अदा करें जैसा कि ऐसा ही हुआ)(27) **वो अल्लाह ऐसा है कि उसने अपने रसूल को हिदायत** (का सामान यानी क़ुरआन) **और सच्चा दीन** (इस्लाम) **देकर भेजा है ताकि उस** (दीन) **को सभी दीनों से ऊपर रक्खे, और** (नासमझ लोग अगर आप के नाम के साथ रसूल न लिखना चाहें जैसा कि सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मुशरिकों की तरफ़ से हुआ तो आप ग़म न करें क्योंकि आप की पैग़म्बरी पर) **अल्लाह काफ़ी गवाह है**(28) (अल्लाह ने आप की पैग़म्बरी को खुली दलीलों और मोजिज़ों से साबित कर दिया है कि) **मुहम्मद** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग आप के साथ रहे हैं** (चाहे कम वक़्त रहे हों या ज़्यादा यानी सभी सहाबा ऐसे हैं कि) **वो काफ़िरों के मुक़ाबिले में तेज़** (और मज़बूत) **हैं** (और) **आपस में महरबान** (और नर्म) **हैं** (और) **तुम उन्हें देखोगे कि कभी रूकू कर रहे हैं कभी सजदा कर रहे हैं** (और) **अल्लाह तआ़ला की महरबानी और ख़ुशी** (यानी सवाब और नज़दीकी) **की कोशिश में लगे हुए हैं, उन** (की बन्दगी) **के आसार** (उनके) **सजदे के असर से उनके चेहरों पर दिखाई देते** (हैं यानी वो नूर के आसार जो परहेज़गार मुसलमान के चेहरे पर दिखाई देते) **हैं, ये उन की ख़ूबियां तौरेत में हैं और इन्जील में उनकी यह ख़ूबी** (लिखी) **है कि जैसे खेती कि उसने** (पहले ज़मीन से) **कोंपल निकाली फिर उसने** (मिट्टी व पानी और हवा से ख़ूराक पाकर अपनी) **उस** (कोंपल) **को मज़बूत किया** (यानी यह खेती जान पकड़ गई) **फिर वो खेती और मोटी हुई फिर अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई कि** (अपने हरे भरे होने से) **किसानों को भली मालूम होने लगी** (इसी तरह सहाबा में पहले कमज़ोरी थी फिर रोज़ाना ताक़त बढ़ती गई और अल्लाह तआ़ला ने सहाबा किराम को यह तरक़्क़ी इसलिए दी) **ताकि उन** (की हालत) **से काफ़िरों** (के दिलों) **को** (हसद में) **जलादे,** (और आख़रत में) **उन साहिबों से जो कि ईमान लाए हैं और नेक काम कर रहे हैं अल्लाह तआ़ला ने** (गुनाहों की) **बख़शिश और** (नेक कामों पर) **बड़े सवाब का वादा कर रक्खा है**(29)।

नोटः- ऊपर आयत में बताया गया कि इन्शाअल्लाह ख़ाना काबा में अमन के साथ दाख़िल हो जाओगे इससे मालूम हुआ कि कोई भी काम करने का इरादा करते वक़्त इन्शाअल्लाह कहना चाहिए।

ऊपर आयतों में सहाबा किराम की फ़ज़ीलतों का बयान है....और....रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "तमाम ज़मानों में मेरा ज़माना बेहतर है (यानी सहाबा किराम) उसके बाद उस ज़माने के लोग बेहतर हैं जो मेरे ज़माने से मुत्तसिल हैं (यानी ताबईन किराम जिन्होंने सहाबा को देखा) फिर वो जो उन से मुत्तसिल हैं (यानी तबे ताबईन जिन्होंने ताबईन को देखा)" (बुख़ारी)

एक हदीस में इरशाद है कि "मेरे सहाबा को बुरा न कहो । क्योंकि (उनके ईमान की वजह से उनका हाल यह है कि) अगर तुम में से कोई आदमी अल्लाह की राह में उहद पहाड़ की बराबर सोना ख़र्च करदे तो वो उनके ख़र्च किये हुए एक मुद (किलो) की बराबर भी नहीं हो सकता और न आधे मुद की बराबर"। (बुख़ारी)

हज़रत जाबिर रज़ि० की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "अल्लाह तआ़ला ने मेरे सहाबा को सारे जहान में से पसन्द फ़रमाया है फिर मेरे सहाबा में मेरे लिए चार को पसन्द फ़रमाया है अबूबक्र, उमर, उस्मान व अली रज़ियल्लाहु अन्हुम। (अबुबज़ार)

एक हदीस में है कि "मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह से डरो। मेरे बाद उनको ऐतराज़ का निशाना न बनाओ (बुरा न कहो) क्योंकि जिस आदमी ने उन से मुहब्बत की तो मेरी मुहब्बत के साथ उनसे मुहब्बत की और जिसने उनसे दुशमनी रक्खी तो मेरी दुशमनी के साथ उनसे दुशमनी रक्खी। और जिसने उनको तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई और जिसने मुझे तकलीफ़ दी उसने अल्लाह को तकलीफ़ पहुंचाई। और जो अल्लाह को तकलीफ़ पहुंचाने का इरादा करे तो क़रीब है कि अल्लाह उसको अज़ाब में पकड़ लेगा। (जमाउल फ़वाइद)

49-सूरत-हुजुरात

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '18' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۱ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ
وَ اَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝۲ اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ
لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝۳ اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝۴ وَ
لَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۵

आयत नं० 01 से 05

ऐ ईमान वालो अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त) **से पहले तुम** (किसी बात या काम में) **आगे न बढ़ा करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारी सब बातों को) **सुनने वाला** (और तुम्हारे कामों को) **जानने वाला है(01)** (और) **ऐ ईमान वालो तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की आवाज़ से ऊंची मत किया करो और न उनसे ऐसे खुल कर बोला करो जैसे आपस में खुलकर बोलते हो** (यानी न तो आपस में आप के सामने ऊंची आवाज़ से बोलो और न आप से बात करते हुए बराबर की आवाज़ से बोलो) **कभी तुम्हारे सब किये काम बर्बाद हो जाएं और तुम को पता भी न चले** (क्योंकि तेज़ आवाज़ में बोलने से पैग़म्बर को नागवारी और तकलीफ़ हो सकती है और अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुंचाना सभी कामों को बर्बाद कर देने वाला है)(02) **बेशक जो लोग अपनी आवाज़ों को रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के सामने धीमी रखते हैं ये वो लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआ़ला ने तक़्वे के लिए चुन लिया** (है यानी उनके दिलों में परहेज़गारी के ख़िलाफ़ कोई चीज़ आती ही नहीं) **हैं, उन लोगों के लिए बख़्शिश और बड़ा सवाब है(03)** (और) **जो लोग**

हुजरों के बाहर से आप को पुकारते हैं उनमें से अक्सर को समझ नहीं है (कि समझ होती तो आप का अदब करते इस तरह नाम लेकर बाहर से पुकारने की हिम्मत न करते)(04) **और अगर ये लोग** (ज़रा) **सब्र** (और इन्तिज़ार) **करते यहां तक कि आप ख़ुद उनके पास आजाते तो यह उनके लिए अच्छा होता** (क्योंकि यह अदब की बात थी), **और** (अगर अब भी तौबा करलें तो मुआफ़ हो जाए क्योंकि) **अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है**(05)

नोटः- कुछ सहाबा ने किसी मुआमले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मशवरा करने से पहले अपनी राय देना शुरू कर दी थी और आपस में ज़ोर से बोलने लगे जिस पर शुरू की आयतें उतारीं। और कुछ देहाती लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घर के बाहर दरवाज़े पर नाम लेकर आवाज़ देना शुरू कर दिया जिस पर उन्हें अदब सिखाया गया और बाद वाली आयतों में ताकीद की गई।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْۤا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦

आयत नं० 06

ऐ ईमान वालो अगर कोई शरारती आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए (जिसमें किसी की कोई शिकायत हो) **तो** (पहले) **अच्छी तरह खोजबीन कर लिया करो** (ताकि असलीयत पता चल जाए) **कहीं ऐसा न हो कि किसी क़ौम को नासमझी से कोई नुक़सान पहुंचा दो फिर अपने किये पर पछताना पड़े**(06)

नोटः- हज़रत वली बिन उक़बा रज़ि० को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़बीला बनू मुस्तलक़ के पास ज़कात वसूल करने भेजा वो लोग बहुत से इकट्ठे होकर बस्ती से बाहर उनको लेने आए क्योंकि उस क़बीले से उनकी पुरानी दुशमनी थी इसलिए यह समझा कि ये तो लड़ने आए हैं बस वापस लौट गये और अपने अन्दाज़े से कह दिया कि वो ज़कात नहीं देना चाहते बल्कि लड़ाई के लिए तैयार हैं। जब हज़रत ख़ालिद को भेजकर पता कराया तो बात कुछ और निकली इस पर ये आयतें उतरीं यानी जब एक सहाबी को बात समझने में ग़लती हो सकती है तो फिर

आम आदमी का तो ज़िक्र ही क्या और ख़ासकर शरारती और फ़ासिक़ आदमी का तो क्या ऐतबार उससे तो बहुत ज़्यादा अहतियात की ज़रूरत है इसलिए सदा के लिए एक तरीक़ा बता दिया गया।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ﴿۷﴾ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۸﴾

आयत नं० 07 से 08

और जान लो कि तुम में अल्लाह के रसूल (मौजूद हैं जो अल्लाह की बड़ी नेमत) **हैं,** (इस नेमत का शुक्र यह है कि किसी बात में रसूल के ख़िलाफ़ मत करो चाहे दुनिया ही की बात क्यों न हो और यह मत चाहो कि दुनिया की बातों में खुद पैग़म्बर हमारी राय मानें क्योंकि) **बहुत सी बातें ऐसी होती हैं कि अगर वो उसमें तुम्हारा कहना माना करें तो तुम को बड़ा नुक़सान पहुंचे लेकिन अल्लाह तआ़ला ने** (तुम को मुसीबत से बचा लिया इस तरह से कि) **तुम को ईमान** (के ऊंचे दर्जे) **की मुहब्बत दी और उस** (के पाने) **की तुम्हारे दिलों में चाहत पैदा कर दी और कुफ़्र और बड़े गुनाहों और आम गुनाहों से तुम को नफ़रत देदी** (जिससे तुम को हर वक़्त रसूल को राज़ी करने की लगन रहती है जिससे तुम उन हुक्मों को मान लेते हो जो रसूल को राज़ी करने वाले हैं), **ऐसे लोग** (जो ईमान का ऊंचा दर्जा चाहते हैं) **सीधे रास्ते पर हैं**(07) **अल्लाह तआ़ला की महरबानी और इनआम से, और अल्लाह तआ़ला** (ने जो ये हुक्म दिये हैं तो वो उनकी भलाइयों को) **जानने वाला** (है और चूंकि) **हिकमत वाला** (है इसलिए इन हुक्मों को वाजिब कर दिया) **है**(08)।

नोटः- जिन बातों में मशवरा किया जाए उनमें अपनी राय देना तो ठीक है लेकिन यह कोशिश करना कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम्हारी राय पर ही अमल करें यह ठीक नहीं।

وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۹﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۰﴾

आयत नं० 09 से 10

और अगर मुसलमानों में दो गिरोह आपस में लड़ पड़ें तो उनके बीच में सुलह (करादो यानी झगड़े की बुनियाद को दूर करके लड़ाई बन्द) **करादो, फिर अगर** (सुलह की कोशिश के बाद भी) **उनमें का एक गिरोह दूसरे पर ज़्यादती करे** (और लड़ाई बन्द न करे) **तो उस गिरोह से लड़ो जो ज़्यादती करता है यहां तक कि वो अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए** (यानी लड़ाई बन्द कर दे)**, फिर अगर** (वो) **ज़्यादती करने वाला** (गिरोह अल्लाह के हुक्म की तरफ़) **लौट आए** (यानी लड़ाई बन्द करदे) **तो उन दोनों के बीच इन्साफ़ के साथ सुलह करादो** (यानी शरीअत की हदों में उस मुआमले को तय करादो सिर्फ़ लड़ाई बन्द करने को काफ़ी न समझो वर्ना फिर भी झगड़ा हो सकता है) **और इन्साफ़ का ध्यान रक्खो, बेशक अल्लाह तआला इन्साफ़ वालों को पसन्द करता है(09)** (और आपसी सुलह और मिलाप का हुक्म इसलिए दिया गया है कि) **मुसलमान तो सब** (दीनी रिशते से एक दूसरे के) **भाई हैं इसलिए अपने दो भाइयों के बीच सुलह करा दिया करो** (ताकि यह इस्लामी बिरादरी बनी रहे) **और** (सुलह के वक़्त) **अल्लाह से डरते रहा करो** (यानी शरीअत की हदों का ध्यान रक्खा करो) **ताकि तुम पर रहमत की जाए(10)।**

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० से सहाबा के आपसी झगड़ों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि "ऐसी लड़ाई थी जिसमें सहाबा मौजूद थे और हम ग़ाइब। वो पूरे हालात को जानते थे और हम नहीं जानते। जिस बात पर सभी सहाबा एक राय हैं हम उसमें उनके पीछे चलते हैं। और जिस बात में वो एक राय नहीं उनमें झगड़ा है उसमें चुप रहते हैं।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّن قَوْمٍ عَسَىٰٓ أَن يَكُونُوا۟ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّن نِّسَآءٍ عَسَىٰٓ أَن
يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۖ وَلَا تَلْمِزُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا۟ بِٱلْأَلْقَٰبِ ۖ بِئْسَ ٱلِٱسْمُ ٱلْفُسُوقُ بَعْدَ ٱلْإِيمَٰنِ ۚ
وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلظَّٰلِمُونَ ⑪

आयत नं० 11

ऐ ईमान वालों न मर्दों को मर्दों पर हंसना चाहिए हो सकता है कि (जिन पर हंसते हैं) **वो उन** (हंसने वालों) **से** (अल्लाह के नज़दीक) **बहतर हों** (फिर वो कैसे गिरा हुआ समझते हैं) **और**

न औरतों को औरतों पर हंसना चाहिए हो सकता है कि (जिन पर हंसती हैं) **वो उन** (हंसने वालियों) **से** (अल्लाह के नज़दीक) **बेहतर हों** (फिर वो कैसे गिरा हुआ समझती हैं), **और तुम एक दूसरे को ताना न दिया करो और न एक दूसरे को बुरे नाम** (यानी चिड़ाने वाले नाम) **से पुकारो,** (क्योंकि ये सब बातें गुनाह की हैं और) **ईमान लाने के बाद** (मुसलमान पर) **गुनाह का नाम लगना** (ही) **बुरा है** (तो इससे बचो), **और जो** (इन हरकतों से) **बाज़ न आएंगे तो वो ज़ुल्म करने वाले** (और बन्दों के हक़ों को बर्बाद करने वाले) **हैं** (जो सज़ा ज़ालिमों को मिलेगी वो ही उन को मिलेगी)(11)

नोटः- एक हदीस में है कि "जो आदमी किसी मुसलमान को ऐसे गुनाह पर शर्मिन्दा करे जिससे उसने तौबा कर ली है तो अल्लाह ने अपने ज़िम्मे लिया है कि उसको उसी गुनाह में डालकर दुनिया व आख़रत में रूसवा करेगा"। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया "कि मैं अगर किसी कुत्ते की भी हंसी उड़ाऊं तो मुझे डर होता है कि कुत्ता न बना दिया जाऊं"। (क़रतबी)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ ٱلظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ ٱلظَّنِّ إِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم
بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَٱتَّقُوا ٱللَّهَ إِنَّ ٱللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

आयत नं० 12

ऐ ईमान वालो बहुत से गुमानों से बचा करो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं (जैसे किसी के बारे में बिना सबूत के बुराई की बात सोच लेना) **और** (किसी के ऐब की) **खोजबीन न किया करो और किसी की ग़ीबत** (यानी पीठ पीछे बुराई) **भी न किया करो,** (आगे ग़ीबत की बुराई है कि) **क्या तुम में कोई इस बात को पसन्द करता है कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाले उस को तो तुम** (ज़रूर) **बुरा समझते हो** (तो समझ लो कि किसी भाई की ग़ीबत भी इसी के जैसी है) **और अल्लाह से डरते रहो** (ग़ीबत छोड़ दो तौबा करलो), **बेशक अल्लाह तआला बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला महरबान है**(12)

नोटः- एक हदीस में है कि मुसलमानों की ग़ीबत न करो और उनके ऐबों की खोजबीन न करो क्योंकि जो आदमी मुसलमानों के ऐबों की खोजबीन करता है अल्लाह तआला उसके ऐबो की तलाश

करता है और जिसके ऐबों की तलाश अल्लाह तआ़ला करे उसको उसके घर के अन्दर भी रूसवा कर देता है। (क़ुरतबी)

एक हदीस में है कि ग़ीबत का कफ़्फ़ारा यह है कि जिसकी ग़ीबत की गई है उसके लिए अल्लाह तआ़ला से मुआफ़ी की दुआ करे और ऐसे कहे या अल्लाह हमारे और उसके गुनाहों को मुआफ़ कर दीजिए। (मज़हरी)

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

आयत नं० 13

ऐ लोगो हमने तुम (सब) **को एक मर्द और एक औरत** (यानी आदम व हव्वा) **से पैदा किया है** (इस लिए इसमें तो सब इन्सान बराबर हैं) **और** (फिर जिस बात में फ़र्क़ रक्खा है कि) **तुम को अलग-अलग क़ौमें और** (फिर उन क़ौमों में) **अलग-अलग ख़ानदान बनाया** (यह सिर्फ़ इसलिए) **ताकि एक दूसरे को पहचान सको** (जिसमें बहुत सी भलाईयां छुपी हैं न इसलिए कि एक दूसरे पर बड़ाई जिताओ, क्योंकि) **अल्लाह के नज़दीक तुम सब में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो सब से ज़्यादा परहेज़गार हो,** (और परहेज़गारी का पूरा हाल किसी को मालूम नहीं बल्कि उसके हाल को) **अल्लाह तआ़ला ख़ूब जानने वाला और पूरा ख़बरदार है** (इसलिए किसी ख़ानदान और क़ौम पर घमन्ड न करो)(13)

नोटः- यह आयत फ़तह मक्का के मौक़े पर उस वक़्त उतरी जब कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल हबशी रज़ि० को अज़ान का हुक्म दिया मक्के के क़ुरैशी जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे उनमें से एक ने कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि मेरे बाप पहले ही इन्तिक़ाल कर गये उनको यह बुरा दिन देखना नहीं पड़ा। और एक ने कहा कि क्या मुहम्मद (स०अ०व०) को इस काले कव्वे के सिवा कोई आदमी नहीं जुड़ा जो मस्जिदे काबा में अज़ान दे। अबुसुफ़यान बोले कि मैं कुछ नहीं कहता क्योंकि मुझे ख़तरा है कि मैं कुछ कहूंगा तो आसमानों का मालिक उनको ख़बर कर देगा। तो जिबरील अलैहिस्सलाम आए और हुज़ूर को इस सारी बात की ख़बर दी आप ने उन लोगों को बुलाकर पूछा कि तुमने कहा था उन्होंने इक़रार कर लिया

उसी पर यह आयत उतरी जिसने बता दिया कि बड़ाई व इ़ज़्ज़त असल में ईमान और परहेज़गारी है जिससे तुम लोग ख़ाली हो और हज़रत बिलाल में मौजूद हैं इसलिए वो तुमसे बेहतर और इ़ज़्ज़तदार हैं। (मज़हरी)

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَ لٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَ لَمَّا يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَ اِنْ
تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَ جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَ اَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ
اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَمُنُّوْنَ
عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾

आयत नं० 14 से 18

ये (कुछ) **देहाती लोग** (आप के पास आकर अहसान जिताते हुए) **कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप कह दीजिए कि तुम ईमान तो नहीं लाए** (क्योंकि उसके लिए दिल से मानना ज़रूरी है और वो है नहीं) **लेकिन** (हां) **यह कहो कि** (हम मुख़ालफ़त छोड़ कर) **ताबेदार हो गये और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ** (इसलिए ईमान का दावा मत करो), **और** (अब तक तुम ईमान तो नहीं लाए लेकिन अब भी) **अगर तुम अल्लाह व रसूल का** (सब बातों में) **कहना मान लो** (जिसमें यह भी दाख़िल है कि दिल से ईमान ले आओ) **तो अल्लाह तुम्हारे किये कामों** (के सवाब) **में से** (जो कि ईमान के बाद होंगे) **ज़रा भी कम न करेगा** (बल्कि सब का पूरा-पूरा सवाब देगा, क्योंकि) **बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है**(14) (सुनो) **पूरे ईमान वाले** (तो) **वो लोग हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर** (ईमान पर जमे भी रहे यानी उम्र भर कभी) **शक नहीं किया और अपने माल व जान से अल्लाह के रास्ते में** (यानी दीन के लिए) **महनत उठाई** (जिसमें जिहाद हिजरत सब आगया), **ये लोग** (पूरे) **सच्चे हैं**(15) (सो) **आप** (उनसे) **कह दीजिए कि** (तुम जो ईमान का दावा करते हो) **क्या अल्लाह तआ़ला को अपने दीन** (क़ुबूल करने) **की ख़बर देते हो, हालांकि अल्लाह को तो सब आसमानों और ज़मीन की सब चीज़ों की** (पूरी) **ख़बर है, और** (अलावा आसमान व ज़मीन के) **अल्लाह** (और भी) **सब चीज़ों को**

जानता (है तो उसको कोई क्या बताएगा उसको तो तुम्हारे ईमान न लाने का हाल मालूम) **है**(16) (और) **ये लोग अपने इस्लाम लाने का आप पर अहसान रखते** (हैं कि देखिए हम बिना लड़ाई झगड़े के मुसलमान हो गये और दूसरे लोग बहुत परीशान करके मुसलमान हुए ये बेअदबी की बातें) **हैं,** (तो) **आप कह दीजिए कि मुझ पर अपने इस्लाम लाने का अहसान न रक्खो** (कि तुम्हारे इस्लाम लाने से मेरा क्या नफ़ा होगा और इस्लाम न लाने से मेरा क्या नुक़सान हो गया अगर तुम सच्चे होते तो तुम्हारी ही आख़रत का नफ़ा था और झूटे होने में भी तुम्हारा ही दुनिया का नफ़ा है पकड़ से बच गये तो मुझ पर अहसान रखना ना समझी है) **बल्कि अल्लाह तुम पर अहसान रखता है कि उसने तुम को ईमान की हिदायत दी अगर तुम** (इस ईमान के दावे में) **सच्चे हो**(17) (और यह याद रक्खो कि) **अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन की सभी छुपी बातों को जानता है, और** (इसीलिए) **तुम्हारे सब कामों को भी जानता** (है और उसी के हिसाब से तुम को बदला देगा फिर उसके सामने बातें बनाने से क्या फ़ाइदा) **है**(18)।

नोटः- क़बीला बनी असद के कुछ आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और माली मदद हासिल करने के लिए अपने मुसलमान हो जाने का ऐलान किया जबकि दिल से इस्लाम नहीं लाए थे और अपने मुसलमान हो जाने का अहसान भी रखना चाहा जिस पर ये आयतें उतरीं।

50-सूरत-क़ाफ़

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '45' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ۚ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ۚ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا
وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا
بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾ اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا
مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۙ ﴿٧﴾ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى
لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ۙ ﴿٩﴾ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا
طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ۙ ﴿١٠﴾ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ
اَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ۙ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ۙ ﴿١٣﴾ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۭ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۭ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۧ ﴿١٥﴾

आयत नं० 01 से 15

काफ़ (इसका मतलब तो अल्लाह को पता है) **क़सम है क़ुरआन मजीद की** (जिसका मरतबा दूसरी किताबों से बड़ा है कि हमने आप को क़ियामत के अज़ाब से डराने के लिए भेजा है मगर इन लोगों ने नहीं माना)(01) **बल्कि** (उनको) **इस बात पर अचम्भा हुआ कि उनके पास उन्हीं** (की जिन्स इन्सानों) **में से एक** (क़ियामत के दिन से) **डराने वाला** (पैग़म्बर) **आगया तो** (इस पर) **काफ़िर लोग कहने लगे कि** (इन्सान का पैग़म्बर होना और दोबारा ज़िन्दा होने का दावा करना) **यह** (एक) **अजीब बात है**(02) (भला) **जब हम मर गये और मिट्टी हो गये तो क्या दोबारा ज़िन्दा होंगे यह** (दोबारा ज़िन्दा होना) **तो** (हमारी समझ से) **बहुत दूर है**(03) (यानी हैरानी इस पर है कि मरने और मिट्टी हो जाने के बाद हवा पानी व मिट्टी में बिखरे हुए जिस्म के हिस्सों को कैसे जमा

किया जाएगा तो इसके जवाब में अल्लाह तआला कहते हैं कि) **हम उनके उन हिस्सों को जानते हैं जिनको मिट्टी** (खाती है और) **कम करती है और** (हमने उन सब बातों को तक़दीर की किताब में लिख लिया था और) **हमारे पास** (वो) **किताब हिफ़ाज़त से** (मौजूद है जिसमें एक-एक बात लिखी) **है**(04) (मगर ये लोग फिर भी बेवजह अचम्भे में हैं) **बल्कि सच्ची बात** (यानी पैग़म्बरी और आख़रत की ज़िन्दगी) **को जब कि वो उनके पास पहुंचती है झुटलाते हैं बस वो एक डांवा डोल हालत में हैं** (कि कभी अचम्भा है कभी झुटलाना है)(05) **क्या उन लोगों** (को हमारी क़ुदरत का इल्म नहीं और क्या उन्हों)**ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा कि हमने उस को कैसा** (ऊंचा और बड़ा) **बनाया और** (सितारों से) **उसको सजाया और उसमें कोई दरार तक नहीं** (जैसा कि अक्सर इमारतों में ज़्यादा ज़माना होने के बाद दरार पड़ जाया करती है)(06) **और ज़मीन** (में क़ुदरत की निशानी यह है कि उस) **को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ों को जमा दिया और उसमें हर क़िस्म की अच्छी-अच्छी चीज़ें उगाईं**(07) **ताकि वो अल्लाह से लौ लगाने वाले हर बन्दे के लिए नसीहत और समझ** (यानी हमारी क़ुदरत को पहचानने) **का सामान हो**(08) **और** (हमारी क़ुदरत का इससे भी पता चलता है कि) **हमने आसमान से बरकत वाला पानी बरसाया फिर उससे उगाए बाग़ और खेती का अनाज**(09) **और खजूर के ऊंचे-ऊंचे पेड़ जिनके गुफ्फे ख़ूब गुन्धे हुए होते हैं**(10) **बन्दों को रोज़ी देने के लिए और** (इस तरह) **हमने उस** (बारिश) **से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया,** (बस) **इसी तरह** (समझ लो कि मुर्दों का) **ज़मीन** (यानी क़ब्रों) **से निकलना होगा**(11) (और इनका झुटलाना कोई नई बात नहीं) **इन से पहले झुटला चुके हैं नूह की क़ौम और असहाबुर्रस्स और समूद**(12) **और आद और फ़िरऔन और क़ौमे लूत**(13) **और असहाबे ऐका और तुब्बा की क़ौम,** (यानी) **सब ने** (अपने-अपने) **पैग़म्बरों को झुटलाया था इसलिए मेरा अज़ाब से डराना सच होकर रहा** (कि उन सब पर अज़ाब आकर रहा इसी तरह इन झुटलाने वालों पर अज़ाब आएगा चाहे दुनिया में भी या सिर्फ़ आख़रत में)(14) **क्या हम पहली बार के पैदा करने में थक गये** (कि दोबारा ज़िन्दा न कर सकें) **बल्कि ये लोग नये सिरे से पैदा करने की तरफ़ से** (बे दलील) **शक में पड़े हुए हैं**(15)।

नोटः- हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ज्र की नमाज़ में अक्सर सूरत 'क़ाफ़' तिलावत फ़रमाते थे (यह सूरत ख़ासी बड़ी है) मगर इसके बावजूद नमाज़ हलकी रहती थी। (क़ुरतबी)

यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी तिलावत का ख़ास असर था कि बड़ी से बड़ी सूरत और लम्बी से लम्बी नमाज़ भी पढ़ने वालों पर हलकी रहती थी।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ﴿١٦﴾ إِذْ يَتَلَقَّى
الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ
الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۖ ذَٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ
مَعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ
قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾ مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُرِيبٍ ﴿٢٥﴾ الَّذِي
جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَٰكِنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ
بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ
لِلْعَبِيدِ ﴿٢٩﴾

आयत नं० 16 से 29

और (क़ियामत में मुर्दों के ज़िन्दा करने की कुदरत पर दलील के लिए कहते हैं कि) **हमने** (ही तो) **इन्सान को पैदा किया है और उसके जी में जो बातें आती रहती हैं हम उन** (तक) **को** (भी) **जानते हैं** (तो जो काम हाथ पैर और ज़बान से होते हैं उन का जानना तो और भी आसान है), **और** (बल्कि) **हम** (तो) **उसके इतना नज़दीक हैं कि उसकी गर्दन की रग से भी ज़्यादा** (जिसके कटने से इन्सान मर जाता है इस लिए उसके हालात को अच्छी तरह जानते हैं)(16) **जब** (कामों को) **लिखने वाले दो फ़रिशते** (इन्सान के कामो को) **लिखते रहते हैं जो कि दाहिनी और बाईं तरफ़ बैठे रहते** (हैं और बराबर हर काम को लिखते रहते) **हैं**(17) (यहां तक कि) **वो कोई बोल मुंह से नहीं निकालने पाता मगर उसके पास ही एक पेहरेदार तैनात होता** (है अगर नेकी का काम हो तो दाहिने वाला लिखता है और बुराई का काम हो तो बाईं तरफ़ वाला लिखता) **है**(18) **और** (होशियार हो जाओ) **मौत की सख़्ती सचमुच** (नज़दीक) **आपहुंची** (यानी हर आदमी की मौत नज़दीक ही है), **यह** (मौत) **वो चीज़ है जिससे तू बिदकता** (और भागता) **था**(19) **और** (क़ियामत के दिन दोबारा) **सूर फूंका जाएगा** (जिससे सब ज़िन्दा हो जाएंगे), **यह वो दिन होगा जिस** (दिन के अज़ाब) **से** (लोगों को) **डराया जाता था**(20) **और हर आदमी** (क़ियामत के मैदान में) **इस तरह आएगा कि**

उसके साथ (दो फ़रिशते होंगे जिनमें) **एक** (तो क़ियामत के मैदान की तरफ़) **उसको अपने साथ लाएगा और एक** (उसके कामों का) **गवाह होगा(21)** (और उनमें जो काफ़िर होगा उससे कहा जाएगा कि) **तू इस दिन से अन्जान था** (यानी इसको न मानता था) **सो हम ने तुझ पर से तेरा पर्दा** (बेपरवाई और इनकार का) **हटा दिया** (और क़ियामत दिखा दी) **सो आज** (तो) **तेरी नज़र बड़ी तेज़ है** (कि देखने समझने में कोई रूकावट नहीं काश तू दुनिया में भी इस पर्दे को हटा देता तो तेरे दिन भले होते)(22) **और** (इसके बाद कामों को लिखने वाला) **फ़रिशता जो उसके साथ रहता था कहेगा कि यह वो** (आमालनामा) **है जो मेरे पास तैयार है(23)** (हुक्म दिया जाएगा कि) **हर ऐसे आदमी को दोज़ख़ में डाल दो जो कुफ़्र करने वाला हो और** (सच्चे दीन से) **ज़िद रखता हो(24)** (और) **नेक काम से रोकता हो** (और बन्दगी की) **हद से बाहर हो जाने वाला हो** (और दीन में) **शक पैदा करने वाला हो(25) जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद बना रक्खा हो ऐसे आदमी को सख़्त अज़ाब में डाल दो(26)** (उस वक़्त काफ़िर अपने बचाव के लिए गुमराह करने वालो पर इल्ज़ाम रखेंगे तो) **वो शैतान जो उसके साथ रहता था कहेगा कि या रब हमारे मैंने इसको** (जबरन) **गुमराह नहीं किया था लेकिन** (बात यह है कि) **यह ख़ुद ही परले दर्जे की गुमराही में पड़ा हुआ था** (मैंने बहकाया ज़रूर था मगर ज़बरदस्ती नहीं की थी)(27) **कहा जाएगा मेरे सामने झगड़े की बातें मत करो** (कि बेफ़ाइदा हैं) **और मैं तो पहले ही तुम्हारे पास अज़ाब की धमकी भेज चुका था** (कि जो कुफ़्र के काम करेगा चाहे ख़ुद या किसी के बहकाने से सब को उनकी ग़लतियों के हिसाब से जहन्नम की सज़ा दूंगा)(28) **मेरे यहां** (वो) **बात** (सज़ा की धमकी की) **बदली नहीं जाएगी** (बल्कि तुम सब दोज़ख़ में झोंके जाओगे) **और मैं** (इस फ़ैसले में) **बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं हूं** (बल्कि बन्दों ने ख़ुद ऐसे ग़लत काम किये जिसकी सज़ा आज भुगत रहे हैं)(29)

नोटः- एक हदीस में है कि इन्सान कभी-कभी कोई भलाई की बात बोलता है जिससे अल्लाह तआ़ला राज़ी होता है मगर यह उसको मामूली बात समझ कर बोलता है उस को पता भी नहीं होता कि उसका सवाब कहां तक पहुंचा कि अल्लाह तआ़ला उसके लिए अपना सदा का राज़ी नामा क़ियामत तक के लिए लिख देते हैं। इसी तरह इन्सान कोई बात अल्लाह की नाराज़ी की (मामूली समझ कर) ज़बान से निकाल देता है उसको गुमान भी नहीं होता कि उसका गुनाह व वबाल कहां तक पहुंचेगा। अल्लाह उसकी वजह से अपनी सदा की नाराज़ी क़ियामत तक के लिए लिख

देते हैं। (इब्ने कसीर)

हज़रत अक्लमा रह० कहते हैं कि इस हदीस ने मुझे बहुत सी बातें ज़बान से निकालने से रोक दिया है। (इब्ने कसीर)

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾ هَٰذَا مَا
تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ﴿٣٢﴾ مَّنْ خَشِيَ الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ﴿٣٣﴾ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ
الْخُلُودِ ﴿٣٤﴾ لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾

आयत नं० 30 से 35

(और वो दिन लोगों को याद दिलाइये) **जिस दिन कि हम** (काफ़िरों को) **दोज़ख़** (में दाख़िल करने के बाद उस) **से कहेंगे कि तू भर गई और वो कहेगी कुछ और भी है** (यह पूछना शायद काफ़िरों को और ज़्यादा डराने के लिए हो)(30) **और जन्नत** (का बयान यह है कि वो) **परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी कि कुछ** (भी) **दूर न रहेगी**(31) (और परहेज़गारों से कहा जाएगा कि) **यह वो चीज़ है जिसका तुम से** (यह) **वादा किया जाता था कि वो हर ऐसे आदमी के लिए है जो** (अल्लाह की तरफ़ दिल से) **लौ लगाने वाला** (और नेक कामों की) **पाबन्दी करने वाला हो**(32) (मतलब यह कि) **जो अल्लाह से बेदेखे डरता हो और ध्यान लगाने वाला दिल लेकर** (अल्लाह के पास) **आएगा**(33) (उन को हुक्म होगा कि) **इस जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह दिन है सदा रहने** (के लिए हुक्म होने) **का**(34) **उन को जन्नत में सब कुछ मिलेगा जो चाहेंगे और हमारे पास** (उन की चाही हुई चीज़ों से) **और भी ज़्यादा** (नेमत है कि वहां तक जन्नती का ध्यान भी न पहुंचेगा जैसा कि हदीस में है कि जन्नत की नेमतें ऐसी हैं जिन को न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल में उस का ध्यान आया उन नेमतों में से एक नेमत अल्लाह तआ़ला का दीदार) **है**(35)।

नोटः- हज़रत अबूहुरैराह रज़ि० की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ''जो आदमी शुरू दिन में चार रकअतें (इशराक की) पढ़ले वो अव्वाब (लौ लगाने वाला) और हफ़ीज़ (नेक कामों की पाबन्दी करने वाला) है। (क़ुरतबी)

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ۭ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ۝٣٦ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ ۝٣٧ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ
سِتَّةِ اَيَّامٍ ڰ وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ۝٣٨ فَاصْبِرْ عَلٰي مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ
الْغُرُوْبِ ۝٣٩ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝٤٠

आयत नं० 36 से 40

और हम इन (मक्के वालों) **से पहले बहुत सी उम्मतों को** (कुफ़्र की सज़ा में) **हलाक कर चुके हैं जो ताक़त में इन से** (कहीं) **ज़्यादा थे और** (दुनिया का सामान बढ़ाने के लिए) **सारे शहरों को छानते फिरते** (थे यानी ताक़त के साथ रोज़गार में भी बड़ी तरक़्क़ी किये हुए) **थे,** (लेकिन जब हमारा अज़ाब आया तो उनको) **कहीं भागने की जगह भी न मिली** (यानी किसी तरह बच न सके)(36) **इस** (क़िस्से) **में उस आदमी के लिए बड़ी नसीहत का सामान है जिसके पास** (समझने वाला) **दिल हो या** (कम से कम यह हो कि) **वो** (दिल से) **ध्यान करके बात सुन लेता** (हो और सुनने के बाद उस बात को मान लेता) **हो**(37) **और** (ऐ क़ियामत का इनकार करने वालो हमारी कुदरत ऐसी है कि) **हमने आसमानों को और ज़मीन को और जो कुछ उनके बीच में है उस सब को छः** (6) **दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया और हम को कुछ थकन न हुई** (फिर इन्सान को दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है)(38) **सो** (ऐ पैग़म्बर) **इन की बातों पर सब्र कीजिए** (यानी इनकार पर ग़म न कीजिए) **और** (ग़म बान्टने के लिए) **अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते रहिए** (इसमें नमाज़ भी दाख़िल है) **सूरज निकलने से पहले** (जैसे फ़ज्र की नमाज़) **और** (सूरज) **छुपने से पहले** (जैसे ज़ुहर व अस्र की नमाज़)(39) **और रात में भी उसकी तस्बीह किया कीजिए** (इसमें मग़रिब व इशा की नमाज़ें आ गईं) **और फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद भी** (इसमें नफ़्लें और ज़िक्र आगये मतलब यह हुआ कि अल्लाह के ज़िक्र में और उसकी फ़िक्र में लगे रहिए ताकि उन की कुफ़्र की बातों की तरफ़ ध्यान ही न हो)(40)

नोटः- एक हदीस में है कि "जो आदमी हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 33 बार सुबहानल्लाह 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह, 33 बार अल्लाहु अकबर और एक बार "लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर" पढ़ लिया करे तो उसकी ख़ताएं मुआफ़ कर दी जाएंगी चाहे वो दरिया की लहरों के बराबर हों"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِن مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾ إِنَّا
نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذَٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ
أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَن يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 41 से 45

और (ऐ लोगो इस बात को ध्यान से) **सुनो** (कि) **जिस दिन एक पुकारने वाला फ़रिशता** (यानी इसराफ़ील अलैहिस्सलाम सूर की आवाज़ से मुर्दों को क़ब्र से निकालने के लिए) **पास ही से पुकारेगा** (पास का मतलब यह है कि वो आवाज़ सब को ऐसे पहुंचेगी जैसे कोई पास से पुकार रहा है)(41) **जिस दिन उस आवाज़ को सचमुच सब सुन लेंगे, यह दिन होगा** (क़ब्रों से) **निकलने का**(42) **हम ही** (अब भी) **ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मौत भी** (देते हैं) **और हमारी तरफ़ फिर लौट कर आना है**(43) **जिस दिन ज़मीन उन** (मुर्दों) **पर से खुल जाएगी जब कि वो** (निकल कर क़ियामत के मैदान की तरफ़) **दौड़ते होंगे, यह जमा कर लेना हमारे लिए आसान है**(44) **जो कुछ ये लोग** (क़ियामत के बारे में) **कह रहे हैं हम ख़ूब जानते हैं** (हम ख़ुद समझ लेंगे आप ग़म न करें) **और आप उन पर** (अल्लाह की तरफ़ से) **ज़बरदस्ती करने वाले** (बनाकर) **नहीं** (भेजे गये) **हैं** (बल्कि सिर्फ़ अज़ाब से डराने वाले और दीन की बात पहुंचाने वाले हैं जब यह बात है) **तो आप क़ुरआन के वास्ते से** (सब को और ख़ास कर) **ऐसे आदमी को नसीहत करते रहिए जो मेरी धमकी** (अज़ाब की) **से** (डरता हो मतलब यह कि बात सब को पहुंचाई जाएगी मगर नसीहत वो ही लेता है जो अल्लाह के अज़ाब से) **डरता हो**(45)।

नोटः- हज़रत क़तादा रह० इस आयत को पढ़ कर यह दुआ मांगते थे या अल्लाह हमें उन लोगों में दाख़िल कर दीजिए जो आप के अज़ाब की धमकी से डरते हैं और आप के वादे के उम्मीदवार हैं या वादा पूरा करने वाले या रहमत वाले।

51-सूरत-ज़ारियात

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '60' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۙ﴿۱﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۙ﴿۲﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۙ﴿۳﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۙ﴿۴﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۙ﴿۵﴾ وَّ
اِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۶﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ﴿۷﴾ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ﴿۸﴾ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ؕ﴿۹﴾ قُتِلَ
الْخَرّٰصُوْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۙ﴿۱۱﴾ يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿۱۲﴾ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ﴿۱۳﴾
ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿۱۵﴾ اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمْ
رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ؕ﴿۱۶﴾ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ
يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَفِيْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿۱۹﴾ وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَفِيْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا
تُبْصِرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿۲۲﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَاۤ اَنَّكُمْ
تَنْطِقُوْنَ ﴿۲۳﴾

आयत नं० 01 से 23

क़सम है हवाओं की जो धूल उड़ाती हैं(01) फिर उन बादलों की जो (बारिश का) **बोझ उठाते हैं(02) फिर उन कशतियों की जो नर्मी से चलती हैं(03) फिर उन फ़रिशतों की जो** (हुक्म के हिसाब से दुनिया में) **चीज़ें बांटते** (हैं जैसा कि जहां जितनी बारिश का हुक्म होता है बादलों से उतना ही पहुंचाते हैं जिससे पैदावार होती है, मां के पेट में बच्चे की सूरत नर व मादा पूछ कर बनाते) **हैं(04)** (आगे इन सब क़समों का जवाब है कि) **तुम से जिस** (क़ियामत) **का वादा किया जाता है वो बिल्कुल सच है(05) और बेशक इन्साफ़ ज़रूर होने वाला है(06) क़सम है आसमान की जिसमें** (फ़रिशतों के चलने के) **रास्ते हैं(07) कि तुम** (सब) **लोग** (क़ियामत के बारे में) **अलग-अलग** (राय रखते) **हो** (कोई तस्दीक़ करता है कोई झुटलाता है)(08) **इस** (क़ियामत और उसके फ़ैसले के यक़ीन) **से वो ही** (बदनसीब) **मुंह फेरता है जिसको** (कामयाबी ही से) **फिरना होता**

है(09) **बर्बाद हो जाएं बेसनद बातें करने वाले** (यानी जो क़ियामत का बेदलील इनकार करते हैं)(10) **जो कि जहालत** (और बेपरवाई) **में** (सब कुछ) **भुला बैठे हैं**(11) (और हंसी उड़ाते हुए जल्दी मचाते हुए) **पूछते हैं कि इन्साफ़ का दिन कब होगा**(12) (आगे जवाब है कि वो उस दिन होगा) **जिस दिन** (कि) **वो लोग आग पर तपाए जाएंगे**(13) (और कहा जाएगा कि) **अपनी** (शरारतों की) **सज़ा का मज़ा चक्खो, ये ही है जिसकी तुम जल्दी मचाया करते थे**(14) (आगे ईमान वालो और तस्दीक़ करने वालों के सवाब का ज़िक्र है कि) **बेशक परहेज़गार लोग** (जन्नत के) **बाग़ों और नहरों में होंगे**(15) (और) **उनके रब ने उनको जो** (सवाब) **दिया होगा वो उसको** (ख़ुशी-ख़ुशी) **ले रहे होंगे,** (और क्यों न हो) **वो लोग इससे पहले** (यानी दुनिया में) **नेक काम करने वाले थे**(16) **वो लोग** (फ़र्ज़ व वाजिब अदा करने के साथ-साथ नफ़्लों की भी पाबन्दी करते थे जैसा कि) **रात के वक़्त बहुत कम सोते** (थे यानी रातों में जाग कर इबादत करते) **थे**(17) **और** (इसके बावजूद अपनी इबादत पर नज़र न करते थे बल्कि) **अख़ीर रात में** (अपने को इबादत में कमी करने वाला समझ कर) **मुआफ़ी मांगते थे**(18) **और** (माली इबादत का यह हाल था कि) **उनके मालों में मांगने वालों और न मांगने वालों** (यानी सभी ग़रीबों) **का हक़** (था यह ख़ैरात ज़कात के अलावा है और बिना अहसान जिताए ऐसी पाबन्दी से देते थे जैसे यह उन पर वाजिब) **था**(19) **और यक़ीन लाने** (की कोशिश करने और चाहत रखने) **वालों के लिए** (क़ियामत के सबूत के लिए) **ज़मीन में बहुत सी निशानियां** (और दलीलें) **हैं**(20) **और ख़ुद तुम्हारे अपने वजूद में भी** (दलीलें मौजूद हैं)**, तो क्या तुम को** (फिर भी) **दिखाई नहीं देता** (यानी क्या फिर भी नहीं समझते)(21) **और तुम्हारी रोज़ी और जो तुम से** (क़ियामत के बारे में) **वादा किया जाता है** (उन) **सब** (का तय वक़्त) **आसमान** (में तक़दीर की किताब) **में** (लिखा हुआ) **है** (जिस तरह रोज़ी कब मिलेगी मालूम नहीं मगर जो नसीब में है मिलेगी ज़रूर इसी तरह क़ियामत के आने के वक़्त का पता न होने का मतलब यह नहीं कि नहीं आएगी बल्कि ज़रूर आएगी)(22) **तो क़सम है आसमान और ज़मीन के रब की कि वो** (फ़ैसले का दिन) **सच है** (और ऐसा यक़ीनी) **जैसा तुम बातें कर रहे हो** (कभी इसमें शक नहीं होता इसी तरह इसको यक़ीनी समझो)(23)।

नोटः- एक हदीस में है कि कोई आदमी (नसीब में लिखी) अपनी तय रोज़ी से बचने और भागने की भी कोशिश करे तो रोज़ी उसके पीछे-पीछे भागेगी। जैसे इन्सान मौत से भाग नहीं सकता ऐसे ही रोज़ी से भी भाग नहीं सकता । (क़ुरतबी)

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٤﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿٢٥﴾ ۚ
فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَاۗءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿٢٦﴾ ۙ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ۡ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا
تَخَفْ ۭ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا
كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٠﴾

आयत नं० 24 से 30

(ऐ पग़म्बर) **क्या इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **के इज़्ज़तदार महमानों का क़िस्सा आप तक पहुंचा है(24) जब कि वो** (महमान) **उनके पास आए फिर उनको सलाम किया, इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने भी** (जवाब में) **कहा सलाम,** (और दिल में सोचा कि) **अन्जान लोग** (मालूम होते) **हैं(25) फिर चुपके से अपने घर वालों के पास गये और तन्दरूस्त बछड़ा** (यानी उस का तला हुआ गोश्त) **लाए(26)** (और) **उसको उन के पास** (यानी सामने) **लाकर रक्खा** (चूकि वो फ़रिशते थे क्यों खाते उस वक़्त इब्राहीम अलैहिस्सलाम को शक हुआ और) **कहने लगे कि आप लोग खाते क्यों नहीं(27)** (जब फिर भी न खाया) **तो उनसे दिल में डरे** (कि ये लोग कहीं मुख़ालिफ़ों और दुशमनों में से न हों), **उन्होंने कहा कि तुम डरो नहीं** (हम आदमी नहीं फ़रिशते हैं), **और** (यह कह कर) **उन को एक बेटे की ख़ुशख़बरी दी जो बड़ा आलिम** (यानी नबी) **होगा** (क्योंकि मख़लूक़ में सबसे ज़्यादा इल्म नबियों को होता है मुराद इससे इसहाक़ अलैहिस्सलाम हैं)**(28) इतने में उन की बीवी** (हज़रत सारा जो कहीं खड़ी सुन रहीं थी औलाद की ख़बर सुन कर) **ज़ोर से बोलती आईं फिर** (जब फ़रिशतों ने उनको भी यह ख़बर सुनाई तो अचम्भे से) **माथे पर हाथ मारा और कहने लगीं कि** (एक तो में) **बुढ़िया** (फिर) **बांझ** (इस वक़्त बच्चा पैदा होना भी अचम्भे की बात है)(29) **फ़रिशते कहने लगे कि** (अचम्भा मत करो) **तुम्हारे रब ने ऐसा ही कहा है,** (और) **कुछ शक नहीं कि वो बड़ा हिकमत वाला बड़ा जानने वाला है** (यानी भले ही यह बात अचम्भे की है मगर तुम तो पैग़म्बर के घर में रहती हो और समझदार हो यह जान कर कि अल्लाह का हुक्म है अचम्भा न होना चाहिए)(30)

नोटः- बच्चा होने की ख़ुशख़बरी के बाद जब हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम पैदा हुए उस वक़्त उनकी मां हज़रत सारा की उम्र 99 साल और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र 100 साल की थी। (क़रतबी)

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٣١ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝٣٢ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِّنْ طِيْنٍ ۝٣٣ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ۝٣٤ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٣٥ فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا
غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٣٦ وَ تَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٣٧ وَ فِيْ مُوْسٰٓى اِذْ
اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٨ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَ قَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝٣٩ فَاَخَذْنٰهُ وَ جُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ
فِي الْيَمِّ وَ هُوَ مُلِيْمٌ ۝٤٠ وَ فِيْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ۝٤١ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا
جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ۝٤٢ وَ فِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ۝٤٣ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ
الصّٰعِقَةُ وَ هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٤٤ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّ مَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ۝٤٥ وَ قَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ
كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝٤٦

आयत नं० 31 से 46

इब्राहीम (अलैहिस्सलाम पैग़म्बरी शान से समझ गये कि फ़रिशते किसी और ख़ास काम से भी आए हैं इसलिए उनसे) **कहने लगे** (कि) **अच्छा** (यह) **तो** (बताओ कि) **तुम को क्या ख़ास काम है ऐ फ़रिशतो(31) फ़रिशतों ने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम** (यानी क़ौमे लूत) **की तरफ़ भेजे गये हैं(32) ताकि हम उन पर कंकर के पत्थर बरसाएं(33) जिन पर आप के रब के पास से ख़ास निशानी भी है** (और वो) **हद से बढ़ जाने वालों के लिए** (है)(34) **फिर** (जब उन बस्तियों पर अज़ाब का वक़्त नज़दीक आया तो) **हमने जितने ईमान वाले थे सब को वहां से अलग कर दिया(35) सो सिवाए मुसलमानों के एक घर के और और कोई घर** (मुसलमानों का) **हमने नहीं पाया** (यानी वहां कोई और घर मुसलमानों का नहीं था)(36) **और हमने इस क़िस्से में** (सदा के लिए) **ऐसे लोगों के लिए** (नसीहत की) **निशानी रहने दी जो दर्दनाक अज़ाब से डरते रहें(37) और** (आगे मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन का क़िस्सा सुनो कि) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **के क़िस्से में भी नसीहत का सामान है जब कि हमने उन को फ़िरऔन के पास एक खुली हुई दलील** (यानी मोजिज़ा) **देकर भेजा(38) तो उसने दरबारियों के साथ मुंह फेर लिया और कहने लगा कि यह जादूगर या दीवाना है(39) सो हमने उस को और उसकी फ़ौज को पकड़ कर दरिया में फेंक दिया** (यानी डुबो दिया) **और उसने काम ही बुरा किया था(40) और** (आगे आद का क़िस्सा सुनो कि) **आद के क़िस्से में भी नसीहत** (का सामान) **है जब कि हम ने उन पर**

नामुबारक (यानी मिटा देने वाली) **आंधी भेजी(41)** (वो) **जिस चीज़ पर गुज़रती थी** (यानी जिस चीज़ के हलाक करने का हुक्म था) **उस को ऐसा कर छोड़ती थी जैसे कोई चीज़ गल कर चूरा-चूरा हो जाती है(42) और** (आगे समूद का क़िस्सा सुनो कि) **समूद के क़िस्से में** (भी) **नसीहत** (का सामान) **है जब कि उनसे कहा गया** (यानी सालिह अलैहिस्सलाम ने कहा कि) **और थोड़े दिनों चैन कर लो** (यानी कुफ़्र से बाज़ नहीं आओगे तो कुछ दिनों बाद हलाक होंगे)(43) **तो** (इस डराने पर भी) **उन लोगों ने अपने रब के हुक्म के मानने से इनकार किया तो उनको अज़ाब ने आपकड़ा और वो देखते रह गये(44) सो न तो खड़े ही हो सके** (बल्कि औंधे मुंह गिर गये) **और न** (हमसे) **बदला ले सके(45) और उनसे पहले नूह की क़ौम का ये ही हाल हो चुका था,** (यानी इस वजह से कि) **वो बड़े नाफ़रमान लोग** (थे वो भी हलाक किये गये) **थे(46)**

नोटः- क़ौमे लूत पर जो पत्थर बरसाए गये उन पर अल्लाह की तरफ़ से ख़ास निशानी लगी हुई थी बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि हर पत्थर पर उस आदमी का नाम लिखा हुआ था जिसको हलाक करने के लिए यह भेजा गया और वो जिस तरफ़ भागा उस पत्थर ने उस का पीछा किया।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَیْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَیْنِ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّیْ لَكُمْ
مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ﴿٥١﴾ كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٥٢﴾ اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ
بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٥٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿٥٤﴾ وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿٥٥﴾

आयत नं० 47 से 55

और हमने आसमान को (अपनी) **क़ुदरत से बनाया और हम बड़ी क़ुदरत वाले हैं(47) और हमने ज़मीन को फ़र्श** (की तरह) **बनाया तो हम** (कैसे) **अच्छे बिछाने वाले** (हैं यानी उसमें कैसे-कैसे नफ़े रखते) **हैं(48) और हर चीज़ को दो क़िस्म का बनाया ताकि तुम** (इन चीज़ों से तौहीद को) **समझो(49) सो** (ऐ पैग़म्बर इन से कह दीजिए कि जब सब चीज़ों से साबित है कि बनाने वाला एक है तो तुम को चाहिए कि) **तुम अल्लाह ही की** (तौहीद की) **तरफ़ दौड़ो,** (और) **मैं** (भी)

तुम्हारे (समझाने के) **वास्ते अल्लाह की तरफ़ से साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला** (होकर आया) **हूं** (कि तौहीद का इनकार करने वालों को अज़ाब देगा)(50) **और** (फिर समझाता हूं कि) **अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाओ, मैं तुम्हारे** (समझाने के) **वास्ते अल्लाह की तरफ़ से साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला** (होकर आया) **हूं**(51) (आगे हुज़ूर को तसल्ली है कि बेशक आप पैग़म्बर हैं और इनके झुटलाने और इनकार करने का ग़म न कीजिए क्योंकि) **इसी तरह जो** (काफ़िर) **लोग इनसे पहले हो चुके हैं उनके पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसको उन्होंने** (यानी सबने या कुछ ने) **जादूगर या दीवाना न कहा हो**(52) **क्या एक दूसरे को इस बात की वसीयत करते चले आए थे** (जो सबने एक सी बात कही) **बल्कि** (वजह इसके कहने कि यह हुई कि) **ये सब के सब सरकश** (और नाफ़रमान) **लोग हैं**(53) **तो** (जब पहले लोग भी ऐसे हुए हैं तो) **आप इनकी तरफ़ ध्यान न** (कीजिए यानी इनके झुटलाने की परवाह और ग़म न) **कीजिए क्योंकि आप पर किसी तरह का इल्ज़ाम नहीं**(54) **और** (तसल्ली से अपने काम में लगे रहिए और) **समझाते रहिए क्योंकि समझाना ईमान** (लाने) **वालों को** (भी और जो पहले से मोमिन हैं उनको भी) **नफ़ा देता है**(55)।

नोटः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह की तरफ़ दौड़ने से मुराद यह है कि अपने गुनाहों से भागो अल्लाह की तरफ़ तौबा करके। और हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया नफ़्स व शैतान गुनाहों की तरफ़ बुलाने वाले हैं और बहकाने वाले हैं तुम उनसे भाग कर अल्लाह की पनाह लो तो वो तुम्हें उनकी बुराई से बचा लेंगे । (क़ुरतबी)

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعِمُونِ ﴿٥٧﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ
الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٨﴾ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنُوبًا مِثْلَ ذَنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونِ ﴿٥٩﴾ فَوَيْلٌ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

आयत नं० 56 से 60

और मैंने जिन्नात और इन्सान को (असल में) **इसी वास्ते पैदा किया है कि मेरी इबादत किया करें** (मतलब यह कि शरई हुक्म उनसे इबादत कराना है)(56) **मैं उन से** (मख़लूक़ की) **रोज़ी**

नहीं चाहता और न यह चाहता कि वो मुझ को खिलाया करें(57) **अल्लाह ख़ुद ही सब को रोज़ी देने वाला है** (तो हम को इस की ज़रूरत ही क्या थी कि हम लोगों को रोज़ी पहुंचाना उनके ज़िम्मे करते और वो) **ज़ोर आवर बहुत ताक़त वाला है** (कि उसमें कमज़ोरी और लाचारी और किसी क़िस्म की ज़रूरत का शक तक भी नहीं तो उनके खाना मांगने का कोई सवाल ही नहीं)(58) **सो** (अगर ये लोग अब भी शिर्क व कुफ़्र पर जमे रहेंगे तो सुन रक्खें कि) **इन ज़ालिमों की** (सज़ा की) **भी बारी** (आने वाली) **है जैसे उनके** (पहले) **साथियों की बारी** (आई) **थी** (यानी हर मुजरिम ज़ालिम की सज़ा के लिए अल्लाह के यहां ख़ास वक़्त तय है कभी दुनिया व आख़िरत दोनों में कभी सिर्फ़ आख़िरत में) **तो मुझ से जल्दी** (अज़ाब लाने) **की मांग न करें** (जैसा कि उनकी आदत है कि अज़ाब की धमकी सुनकर झुटलाने के लिए जल्दी लाने की मांग करने लगते हैं)(59) **बस** (जब वो बारी के दिन आएंगे जिसमें सबसे सख़्त क़ियामत का दिन है तो) **इन काफ़िरों के लिए उस दिन के आने से बड़ी ख़राबी होगी जिसका उनसे वादा किया जाता है।**(60)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि इन्सान की पैदाइश का असल मक़सद इबादत करना है सिर्फ़ अपने पैदा करने वाले की । अल्लाह तआ़ला उससे अपना या अपनी मख़लूक़ का कोई नफ़ा नहीं चाहते।

52-सूरत-तूर

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '49' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الطُّوْرِ ۙ﴿۱﴾ وَ كِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۙ﴿۲﴾ فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۙ﴿۳﴾ وَّ الْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۙ﴿۴﴾ وَ السَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ﴿۵﴾ وَ الْبَحْرِ
الْمَسْجُوْرِ ۙ﴿۶﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾ يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۙ﴿۹﴾ وَّ تَسِيْرُ الْجِبَالُ
سَيْرًا ؕ﴿۱۰﴾ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ﴿۱۱﴾ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ
دَعًّا ؕ﴿۱۳﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿۱۴﴾ اَفَسِحْرٌ هٰذَاۤ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۚ﴿۱۵﴾ اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْۤا اَوْ
لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ نَعِيْمٍ ۙ﴿۱۷﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَاۤ
اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَ وَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿۱۸﴾ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِيْٓئًۢا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۙ﴿۱۹﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ
عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَ زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿۲۰﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ اتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ
ذُرِّيَّتَهُمْ وَ مَاۤ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿۲۱﴾ وَ اَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّ
لَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿۲۲﴾ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَ لَا تَاْثِيْمٌ ﴿۲۳﴾ وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ
لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿۲۴﴾ وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ قَالُوْۤا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْۤ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿۲۶﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ
عَلَيْنَا وَ وَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿۲۸﴾

आयत नं० 01 से 28

क़सम है तूर (पहाड़) **की(1) और उस लिखी हुई किताब की(2) जो खुले हुए काग़ज़ में** (लिखी है मुराद इससे आमाल नामा) **है(3) और** (क़सम है) **बैते मामूर की** (जो सातवें आसमान में फ़रिशतों का काबा है)(4) **और** (क़सम है) **ऊँची छत** (की यानी आसमान) **की(5) और** (क़सम है पानी से) **भरे हुए समन्दर की(6)** (आगे क़सम का जवाब है कि) **बेशक आप के रब का अज़ाब ज़रूर होकर रहेगा(7) कोई उसको रोक नहीं सकता(8)** (और यह उस दिन होगा) **जिस दिन**

आसमान थरथराने लगेगा(9) और पहाड़ (अपनी जगह से) **हट जाएंगे** (मुराद क़ियामत का दिन है)(10) **तो उस दिन उनकी बड़ी ख़राबी होगी जो** (सच्चे दीन को) **झुटलाने वाले हैं**(11) (और) **जो इस** (झुटलाने के) **काम में बेहूदगी से लगे हुए हैं** (जिससे वो अज़ाब के हक़दार हो गये)(12) **उस दिन उनको दोज़ख़ की आग की तरफ़ धक्के देकर लाएंगे**(13) (और उनको दोज़ख़ दिखाकर कहा जाएगा कि) **यह वो ही दोज़ख़ है जिसको तुम झुटलाया करते** (थे यानी जिन आयतों में इसकी ख़बर थी उनको झुटलाते थे और उन आयतों को जादू कहा करते) **थे(14) तो क्या यह** (भी) **जादू है** (देख कर बताओ) **या यह कि तुम को** (अब भी) **दिखाई नहीं देता** (जैसा दुनिया में दिखाई न देने की वजह से इनकार करते थे)(15) **दाख़िल हो जाओ** (अब) **इसमें फिर चाहे** (इसकी) **सहार करना या सहार न करना तुम्हारे लिए दोनो बराबर हैं** (न ये ही होगा कि तुम्हारे चीख़ पुकार करने से छुटकारा हो जाए और न ये ही होगा कि तुम्हारे सहार करने पर तरस खाकर निकाल दिया जाए बल्कि सदा उसी में रहना होगा), **और जैसा तुम करते थे वैसा ही बदला दिया जाएगा(16) परहेज़गार लोग बेशक** (जन्नत के) **बाग़ों और ऐश के सामान में होंगे**(17) (और) **उन को जो चीज़ें** (ऐश व आराम की) **उनके रब ने दी होंगी, और उनका रब उन को दोज़ख़ के अज़ाब से बचाएगा**(18) (और जन्नत में दाख़िल करके कहेगा कि) **ख़ूब खाओ और पियो मज़े के साथ अपने** (उन नेक) **कामों के बदले में** (जो दुनिया में किया करते थे)(19) **तकिया लगाए हुए तख़्तों पर** (आराम करेंगे) **जो बराबर बिछाए हुए हैं और हम उनकी बड़ी आंखों वाली** (यानी ख़ूबसूरत) **हूरों से शादी कर देंगे(20) और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया** (यानी वो भी ईमान लाए भले ही नेकियों में वो अपने बाप दादा के दर्जे को नहीं पहुंचे लेकिन उनके बाप दादा की इज़्ज़त और उनको ख़ुश करने के लिए) **हम उनकी औलाद को भी** (दर्जे में) **उनके साथ शामिल कर देंगे और** (इस शामिल करने के लिए) **हम उन** (जन्नती बड़ों) **की नेकियों में से कोई चीज़ कम नहीं** (करेंगे यानी औलाद की नेकियां बढ़ाने के लिए बाप दादा की नेकियों में कमी न की जाएगी कि उन से लेकर इनको दें बल्कि अपने पास से देकर बराबर) **करेंगे,** (लेकिन इसके लिए ईमान शर्त है काफ़िर औलाद को बड़ों के ईमान से नफ़ा नहीं हो सकता क्योंकि काफ़िरों में से) **हर आदमी अपने** (कुफ़्र के) **कामों में** (दोज़ख़ में) **गरिफ़्तार रहेगा** (छुटकारे की कोई सूरत नहीं होगी)(21) **और** (आगे फिर ईमान वाले जन्नती लोगों के बारे में है कि) **हम उनको फल और गोश्त जैसा वो पसन्द करेंगे लगातार देते चले जाएंगे**(22) (और) **वहां आपस में** (ऐसे) **शराब के पियालों पर** (दोस्ताना) **छीना झपटी भी किया करेंगे कि उस** (शराब)

में न बेहूदा बात होगी (क्योंकि नशा न होगा) **और न कोई गुनाह** (की बात)(23) **और उनके पास** (चीज़ें लाने के लिए) **ऐसे लड़के आएं जाएंगे जो ख़ास उन ही** (की ख़िदमत) **के लिए होंगे** (और ख़ूबसूरती में ऐसे होंगे) **जैसे कि वो हिफ़ाज़त से रक्खे हुए मोती हैं** (कि उन पर ज़रा धूल गर्द नहीं होती और चमक दमक ख़ूब होती है)(24) **और** (ख़ुश होकर) **वो** (आपस में) **एक दूसरे की तरफ़ ध्यान करके बात करेंगे**(25) (और बात चीत में) **यह भी कहेंगे कि** (भाई) **हम तो इससे पहले घर** (यानी दुनिया) **में** (अन्जाम से) **बहुत डरा करते थे**(26) **सो अल्लाह ने हम पर बड़ा अहसान किया और हम को दोज़ख़ के अज़ाब से बचा लिया**(27) (और) **हम इससे पहले** (यानी दुनिया में) **उससे दुआएं मांगा करते थे** (कि हम को दोज़ख़ से बचा कर जन्नत में ले जाए सो अल्लाह ने दुआ क़ुबूल करली), **बेशक वो बड़ा अहसान करने वाला महरबान है**(28)

नोटः- हदीस में है कि मैराज की रात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सातवें आसमान पर पहुंचे तो उन को बैते मामूर की तरफ़ ले जाया गया (बैते मामूर सातवें आसमान पर फ़रिशतों का काबा है) जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिशते इबादत के लिए दाख़िल होते हैं फिर कभी उनको दोबारा यहां पहुंचने की नौबत नहीं आती (क्योंकि हर दिन दूसरे नये फ़रिशतों का नम्बर होता है) । (इब्ने कसीर)

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّ لَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ
تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ اَمْ هُمُ
الْخٰلِقُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿٣٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ
الْمُصَۜيْطِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَ لَكُمُ
الْبَنُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤١﴾ اَمْ
يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ؕ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٣﴾ وَ اِنْ
يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ
يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا وَّ لَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَ اِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَ

لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۝ وَمِنَ
الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۝

आयत नं० 29 से 49

सो (ऐ पैग़म्बर जैसा कि लोगों को समझाना आप की ज़िम्मेदारी है तो) **आप** (लोगों को) **समझाते रहिए क्योंकि आप अपने रब की महरबानी से न तो काहिन** (यानी जिन्नात से पूछ कर ग़ैब की ख़बरें बताने वाले) **हैं और न दीवाने** (हैं मतलब यह कि आप पैग़म्बर) **हैं** (और पैग़म्बर का काम सदा नसीहत करते रहना है चाहे लोग कुछ ही बकें)(29) **हां क्या ये लोग** (आपके बारे में) **यह** (भी) **कहते हैं कि यह शाइर हैं** (और) **हम इनके बारे में मौत के हादसे का इन्तिज़ार कर रहे** (हैं यानी आप शाइर हैं जिस तरह और शाइर लोग मर कर ख़त्म हो गये आप भी उन्हीं में के एक) **हैं** (इसी तरह आप भी हलाक हो जाएंगे तो इस्लाम का क़िस्सा ख़त्म हो जाएगा)(30) **आप कह दीजिए कि** (अच्छा) **तुम इन्तिज़ार कर लो मैं भी तुम्हारे साथ इन्तिज़ार में** (हूं यानी तुम मेरा अन्जाम देखो मैं तुम्हारा अन्जाम देखता) **हूं** (इसमें इशारा है कि मेरा अन्जाम कामयाबी है और तुम नाकाम रहोगे यह दीन नहीं मिटेगा)(31) **क्या इन की अक़्लें इन को ये ही बात सिखाती हैं या यह है कि ये शरारती लोग हैं**(32) **हां क्या वो यह** (भी) **कहते हैं कि इन्होंने इस** (क़ुरआन) **को ख़ुद बना लिया है** (यह बात नहीं है) **बल्कि** (यह बात सिर्फ़ इस वजह से कहते हैं कि) **ये लोग** (हटधर्मी की वजह से इस पर) **ईमान नहीं लाते**(33) (अच्छा अगर यह इनका बनाया हुआ है) **तो ये लोग** (भी बहुत पढ़े लिखे हैं) **इस तरह का कोई कलाम** (बनाकर) **ले आएं अगर ये** (इस दावे में) **सच्चे हैं**(34) (आगे तौहीद का बयान है कि ये लोग जो तौहीद का इनकार करते हैं तो) **क्या ये लोग बिना किसी पैदा करने वाले के आप से आप ही पैदा हो गये या ये ख़ुद अपने पैदा करने वाले हैं**(35) **या उन्होंने आसमान व ज़मीन को पैदा किया** (है मतलब यह कि जब पैदा करने वाला एक है तो माबूद भी एक ही होना ज़रूरी) **है बल्कि ये लोग** (जहालत की वजह से तौहीद का) **यक़ीन नहीं लाते**(36) (आगे पैग़म्बरी के बारे में बयान है कि) **क्या इन लोगों के पास तुम्हारे रब** (की नेमतों और रहमतों) **के ख़ज़ाने हैं** (जिनमें पैग़म्बरी भी दाख़िल है कि जिसको चाहे पैग़म्बरी देदो) **या ये लोग** (पैग़म्बरी के महकमे के) **हाकिम हैं** (कि जिसे चाहें पैग़म्बरी दिलवा दें जो ये लोग इस बारे में मशवरे देते हैं कि पैग़म्बर फ़लां अमीर या फलां सरदार होना चाहिए था)(37) **या इन लोगों के पास कोई सीढ़ी है कि उस पर** (चढ़ कर आसमान की) **बातें सुन लिया करते हैं** (और अगर

मान लो कहें कि हां हम आसमान पर चढ़ कर वहां की बातें सुन आते हैं) **तो इन में जो** (वहां की) **बातें सुन आता हो** (इस दावे पर) **कोई साफ़ दलील पेश करे(38)** (आगे फिर तौहीद के बारे में एक ख़ास बात है कि जो लोग फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां बताकर शिर्क करते हैं तो हम उनसे पूछते हैं कि) **क्या अल्लाह के लिए बेटियां** (ठहराई जाएं) **और तुम्हारे लिए बेटे हैं** (यानी अपने लिए तो वो चीज़ पसन्द करते हो जिसे बड़े दर्जे की समझते हो और अल्लाह के लिए वो जिसे कम दर्जे की समझते हो)(39) **क्या आप उनसे** (तबलीग़ पर) **कुछ बदला मांगते हैं कि वो तावान उन लोगों को भारी लगता** (है इसलिए आप का पैग़म्बर होना नागवार) **है(40)** (वो लोग जो यह कहते हैं कि एक तो क़ियामत होगी नहीं और अगर मान लो होगी तो हम वहां भी अच्छे रहेंगे तो) **क्या उनके पास ग़ैब का इल्म है कि ये** (उसको) **लिख लेते हैं(41) क्या ये लोग** (पैग़म्बर के साथ) **कुछ बुराई करने का इरादा रखते हैं, सो ये काफ़िर ख़ुद ही** (उस) **बुराई** (के वबाल) **में गरिफ़्तार होंगे** (जैसा कि इस इरादे में नाकाम हुए और जंगे बद्र में मारे गये)(42) **क्या इन का अल्लाह के सिवा कोई माबूद है, अल्लाह उनके शिर्क से पाक है(43) और** (ये कहते हैं कि आप पैग़म्बर हैं तो इस के सबूत के लिए हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो मगर वो ऐसे हटधर्मी हैं कि) **अगर** (उनका यह मांगा हुआ मोजिज़ा आ भी जाए और) **वो आसमान के टुकड़े को देख** (भी) **लें कि गिरता हुआ आ रहा है तो** (उस को भी) **यह कह दें कि यह तो गहरा बादल** (है बस ऐसा मोजिज़ा दिखाने से कोई फ़ाइदा नहीं) **है(44) सो** (जब ये लोग ऐसे बाग़ी हैं तो इन से ईमान की उम्मीद करके ग़म में न पड़िए बल्कि) **उनको** (उन्ही की हालत पर) **रहने दीजिए यहां तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें जिसमें उनके होश उड़ जाएंगे** (मुराद क़ियामत का दिन है)(45) **जिस दिन उनकी चालें** (जो दुनिया में इस्लाम की मुख़ालफ़त और अपनी कामयाबी के बारे में किया करते थे) **उन के कुछ भी काम न आएंगी और न** (कहीं से) **उन को मदद मिलेगी** (न तो लोगों की तरफ़ से और न अल्लाह की तरफ़ से)(46) **और** (आख़रत में तो उन पर यह मुसीबत आएगी ही लेकिन) **इन ज़ालिमों के लिए इस** (अज़ाब) **से पहले भी अज़ाब होने वाला है** (यानी दुनिया में जैसे अकाल पड़ना जंग में मारा जाना) **लेकिन इनमें अक्सर लोगों को पता नहीं(47) और** (जब आप को मालूम हो गया कि हम उनकी सज़ा के लिए एक वक़्त तय कर चुके हैं तो) **आप अपने रब के इस फ़ैसले पर सब्र से बैठे रहिए** (और इन लोगों के लिए ख़ुदाई अज़ाब की जल्दी न कीजिए जो मुसलमानों की मर्ज़ी और उनकी मदद के लिए चाहते थे और न यह सोचिए कि कहीं इस मुहलत में आप को नुक़सान न पहुंचा दें क्योंकि) **आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं** (फिर क्या डरना जैसा कि

ऐसा ही हुआ) **और** (अगर उनके कुफ़्र का ग़म दिल पर आए तो उस का इलाज यह है कि अल्लाह का ध्यान कीजिए जैसे कि) **उठते वक़्त अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह किया कीजिए** (जैसे तहज्जुद में और मजलिस से उठते वक़्त)(48) **और रात** (के किसी हिस्से) **में भी उस की तस्बीह किया कीजिए** (जैसे इशा के वक़्त) **और सितारों के छुप जाने के बाद भी** (जैसे सुबह की नमाज़ में बस अपने दिल को इधर लगाए रखिए फिर फ़िक्र व ग़म सवार न होगा)(49)

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी रात को जाग गया और उसने ये कलमे पढ़े तो जो दुआ करेगा कुबूल की जाएगी वो कलमे ये हैं:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

लाइलाहृ इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर ।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ○

सुबहानल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि वला इलाहृ इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौलृ वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि

फिर अगर उसने नमाज़ पढ़ने का इरादा किया और वुज़ू करके नमाज़ पढ़ी तो उसकी नमाज़ कुबूल की जाएगी । (इब्ने कसीर)

53-सूरत-नज्म

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '62' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ﴿١﴾ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ﴿٢﴾ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ﴿٣﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ﴿٤﴾ عَلَّمَهٗ
شَدِيْدُ الْقُوٰى ﴿٥﴾ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلٰى ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ
أَدْنٰى ﴿٩﴾ فَأَوْحٰى إِلٰى عَبْدِهٖ مَا أَوْحٰى ﴿١٠﴾ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأٰى ﴿١١﴾ أَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿١٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً
أُخْرٰى ﴿١٣﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿١٤﴾ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوٰى ﴿١٥﴾ إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ﴿١٦﴾ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا
طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَأٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

आयत नं० 01 से 18

क़सम है सितारे की जब वो छुपने लगे (इसमें इशारा है कि जिस तरह सितारे से दुनिया में रास्ता पता करते हैं उसी तरह दीन का रास्ता पैग़म्बर से मालूम करें)(1) **ये तुम्हारे** (हर वक़्त के) **साथ** (और सामने) **रहने वाले** (पैग़म्बर जिन की आदतों और सच्चाई को तुम जानते हो) **न** (सीधे) **रास्ते से भटके और न ग़लत रास्ते पर चले** (यानी तुम जो उन को पैग़म्बरी के दावे और इस्लाम की दावत में बेराह समझते हो यह बात नहीं बल्कि आप सच्चे पैग़म्बर हैं)(2) **और ये अपनी मनमर्ज़ी से कुछ नहीं बोलते** (जैसा तुम लोग कहते हो कि इन्होंने कुरआन खुद बना लिया है)(3) **उनका बयान तो ख़ालिस वही है जो उनके पास भेजी जाती** (है चाहे लफ़्ज़ों की भी हो जो कुरआन कहलाता है चाहे सिर्फ़ माइने मतलब की हो और लफ़्ज़ पैग़म्बर के हों जो सुन्नत कहलाती) **है**(4) (आगे वही के आने का रास्ता बताते हैं कि) **उन को एक फ़रिशता** (यह वही अल्लाह की तरफ़ से) **सिखाता है जो बड़ा ताक़तवर है**(5) (और वो) **पैदाइशी ताक़तवर** (है मतलब यह कि यह कलाम न किसी शैतान के वास्ते से आप तक पहुंचा और न शैतान बीच में दख़ल दे सकता है बल्कि वो आप के पास फटक भी नहीं सकता) **है,** (और आपने उस फ़रिशते को बहुत बार दूसरी

सूरत में देखा) **फिर** (एक बार ऐसा भी हुआ कि) **वो फ़रिशता** (अपनी) **असली सूरत पर** (आपके सामने) **आया(6) और ऐसी हालत में** (सामने आया) **कि वो** (आसमान के) **ऊंचे किनारे पर था(7) फिर वो फ़रिशता** (आप के) **नज़दीक आया फिर और नज़दीक आया(8) सो** (नज़दीकी की वजह से) **दो कमानों के बराबर दूरी रह गई बल्कि और भी कम** (दूरी रह गई यानी बहुत ही नज़दीक हो गया)(9) **फिर अल्लाह तआ़ला ने** (उस फ़रिशते के वास्ते से) **अपने बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर वही उतारी जो कुछ उतारनी थी(10)** (आगे बयान है कि हुज़ूर ने हज़रत जिब्रील को पूरी तरह पहचान लिया यानी) **दिल ने देखी हुई चीज़ में ग़लती नहीं की(11) तो क्या इन** (पैग़म्बर) **से उनकी देखी** (भाली) **हुई चीज़ में झगड़ते हो(12) और उन्होंने** (यानी पैग़म्बर ने तो) **उस फ़रिशते को एक और बार भी** (असली सूरत में) **देखा है(13)** (यानी मैराज की रात में) **सिदरतुल मुन्तहा** (नाम के पेड़) **के पास** (जो सातवे आसमान में है)(14) **उसके पास जन्नतुल मावा** (यानी जन्नती लोगों का घर) **है(15) जब उस सिदरतुल मुन्तहा को लिपट रही थीं जो चीज़ें लिपट रहीं थीं** (यानी यह देखना उस वक़्त हुआ, और वो चीज़ क्या थी एक रिवायत में है कि सोने के परवाने थे और एक रिवायत में है कि फ़रिशते थे जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत को आए थे)(16) **निगाह** (पैग़म्बर की उस वक़्त) **न तो हटी** (बल्कि उन चीज़ों को ख़ूब देखा) **और** (जिन चीज़ों के देखने का हुक्म जब तक न हुआ) **न** (उनकी तरफ़ देखने को आप की निगाह) **बढ़ी** (यानी इजाज़त से पहले नहीं देखा मतलब यह कि उन अजीब चीज़ों को देख कर चकराए नहीं)(17) **उन्होंने** (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने) **अपने रब की** (क़ुदरत की) **बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं** (मगर हर चीज़ के देखने में आप की ये ही शान रही कि न तो निगाह हटी और न हद से आगे बढ़ी और यह शान पैग़म्बर ही की हो सकती है)(18)

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने हदीस बयान की कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील अमीन को इस हालत में देखा कि उन के छः सौ पर थे । (बुख़ारी)

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَ الْعُزّٰى ﴿١٩﴾ وَ مَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ﴿٢٠﴾ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَ لَهُ الْاُنْثٰى ﴿٢١﴾ تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ﴿٢٢﴾
اِنْ هِيَ اِلَّاۤ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَاۤ اَنْتُمْ وَ اٰبَآؤُكُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَ مَا
تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾ؕ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾ۖ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَ الْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾ع وَ كَمْ

مِّنْ مَّلَكٍ فِى السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِىْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿۲۶﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿۲۷﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ
الظَّنَّ لَا يُغْنِىْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ﴿۲۸﴾ ۚ

आयत नं० 19 से 28

(ऐ मुशरिको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा नबी साबित हो जाने के बाद तुम फिर भी तौहीद को छोड़ कर बुतों की पूजा करते हो तो) **भला क्या तुमने** (इन बुतों के बारे में) **सोचा** (भी) **है** (ताकि तुम को पता चले कि वो इबादत के क़ाबिल हैं या नहीं जैसे) **लात और इ़ज़्ज़ा के बारे में(19) और एक तीसरे मनात के बारे में(20)** (और एक और बात भी सोचने की है कि तुम जो फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां बताकर उनकी इबादत करते हो तो) **क्या तुम्हारे लिए तो बेटे हों और अल्लाह के लिए बेटियां** (हों यानी जिन लड़कियों को तुम शर्म की बात समझते हो वो अल्लाह के लिए ठहराई जाएं)(21) **इस हालत में तो यह बहुत बेढंगा बान्टना हुआ** (कि अच्छी चीज़ तुम्हारे हिस्से में आई बुरी चीज़ अल्लाह के हिस्से में यह दस्तूर के हिसाब से कहा वर्ना अल्लाह का बेटा बताना भी बेढ़ंगी बात है)(22) **ये** (बनाए हुए माबूद तो) **बस नाम ही नाम हैं जिन को तुम ने और तुम्हारे बाप दादों ने** (आप ही) **ठहरा लिया है अल्लाह तआ़ला ने तो उन** (के माबूद होने) **की कोई दलील भेजी नहीं,** (बल्कि) **ये लोग** (इस बारे में) **सिर्फ़ अटकली बातों पर और अपनी मनमर्ज़ी पर चल रहे हैं हालांकि उनके पास उनके रब की तरफ़ से** (पैग़म्बर के वास्ते से सही बात की) **हिदायत आ चुकी है(23)** (आगे इसका बयान है कि तुमने जो बुतों को इसलिए माबूद माना है कि ये अल्लाह के पास तुम्हारी सिफ़ारिश करेंगे सिर्फ़ धोका है सोचो कि) **क्या इन्सान को उस की हर तमन्ना मिल जाती है(24)** (ऐसा नहीं है क्योंकि हर तमन्ना) **अल्लाह ही के क़ब्ज़े में है आख़रत** (की भी) **और दुनिया** (की भी बस वो जिस को चाहें पूरा कर दें तो यह तमन्ना कि बुतों की सिफ़ारिश मान ली जाएगी पूरी न होगी)(25) **और** (बेचारे बुत तो क्या सिफ़ारिश करते उस दरबार में तो ईमान वालों की भी बिना अल्लाह की इजाज़त के कुछ नहीं चलती जैसा कि) **बहुत से फ़रिशते आसमानों में मौजूद हैं उनकी सिफ़ारिश ज़रा भी काम नहीं आ सकती** (बल्कि सिफ़ारिश हो नहीं सकती) **मगर इसके बाद कि अल्लाह तआ़ला जिसके लिए चाहें इजाज़त देदें और** (उसके लिए सिफ़ारिश करने से) **राज़ी हों(26)** (आगे इसका बयान है कि फ़रिशतों को

अल्लाह तआला की बेटियां कहना कुफ़्र है कि) **जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं रखते** (बल्कि उसके इनकार की वजह से काफ़िर हैं) **वो फ़रिशतों को** (अल्लाह की) **बेटी का नाम देते हैं**(27) **हालांकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं, सिर्फ़ बेअसल बातों पर चल रहे हैं और बेशक बेअसल बातें हक़ बात** (के सबूत) **में ज़रा काम नहीं आ सकतीं**(28)

नोटः- अरब के मुशरिकों के बुत जिनकी वो पूजा करते थे अनगिनत थे मगर उनमें से तीन ज़्यादा मशहूर थे । लात, मनात और इज़्ज़ा। ये अलग-अलग क़बीलों के बुत थे ।

فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَ لَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ
اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِیَ الَّذِيْنَ
اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَ يَجْزِیَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَ الْفَوَاحِشَ اِلَّا
اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَ اِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِیْ بُطُوْنِ
اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾

आयत नं० 29 से 32

(जब इन से मानने की उम्मीद नहीं) **तो आप ऐसे आदमी से अपना ध्यान हटा लीजिए जो हमारी नसीहत का ध्यान न करे और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा कुछ और चाहता ही** (नहीं जिसकी वजह यह है कि आख़रत पर ईमान) **नहीं**(29) **उन लोगों की समझ की हद बस यह** (दुनिया की ज़िन्दगी तक) **ही है,** (तो उन की फ़िक्र न कीजिए उन का मुआमला अल्लाह के हवाला कीजिए बस) **तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है और वो ही उस को भी ख़ूब जानता है जो सीधे रास्ते पर** (है बस इल्म तो उस का ऐसा) **है**(30) **और** (कुदरत उस की ऐसी है कि) **जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है वो सब अल्लाह का है अन्जाम कार यह है कि बुरा काम करने वालों को उन के** (बुरे) **काम के बदले में** (ख़ास) **बदला देगा और नेक काम करने वालों को उनके नेक कामों के बदले में** (ख़ास) **बदला देगा**(31) (आगे नेक लोगों का बयान है कि) **वो लोग ऐसे हैं कि बड़े गुनाहों से और** (उसमें) **बेहयाई की बातों से** (ख़ास कर ज़्यादा) **बचते हैं मगर हल्के हल्के गुनाह** (कभी-कभी हो जाएं तो

और बात है मगर वो उन से भी तौबा कर लेते हैं), **बेशक आप के रब की बख़्शिश बहुत बड़ी** (है कि अगर वो चाहे तो सिवाए कुफ़्र व शिर्क के और गुनाहों को सिर्फ़ महरबानी से मुआफ़ कर देता है तो छोटे गुनाहों के मुआफ़ होने में तो और ज़्यादा उम्मीद) **है, वो तुम को** (और तुम्हारी हालतों को उस वक़्त से) **ख़ूब जानता है जब तुम को** (यानी तुम्हारे सब के बाप आदम अलैहिस्सलाम को) **ज़मीन** (की मिट्टी) **से पैदा किया था** (इस वास्ते से तुम भी मिट्टी से पैदा हुए) **और जब तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे** (और इन दोनों हालतों में तुम को ख़ुद अपनी कोई जानकारी न थी और हम को इल्म था बस इसी तरह अब भी तुम्हारा ख़ुद अपने से अन्जान होना और हमारा जानकार होना कोई अचम्भे की बात नहीं जब यह बात है) **तो तुम अपने को पाक साफ़** (व नेक) **न समझा करो** (क्योंकि) **परहेज़गारों** (और नेक लोगों) **को वो ही ख़ूब जानता है** (कि फ़लां परहेज़गार है फलां नहीं भले ही देखने मे दोनो नेक काम करते हैं)(32)

नोटः- एक हदीस में है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक दूसरे आदमी की तारीफ़ की आपने मना फ़रमाया। और फ़रमाया कि तुम्हें किसी की तारीफ़ करना ही हो तो इन लफ़्ज़ों से करो कि मेरी जानकारी में यह आदमी नेक परहेज़गार है और मैं यह नहीं कह सकता कि अल्लाह के नज़दीक भी वो ऐसा ही पाक साफ़ है जैसा मैं समझ रहा हूं।

اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ تَوَلّٰىۙ ﴿۳۳﴾ وَ اَعْطٰى قَلِيْلًا وَّ اَكْدٰى ﴿۳۴﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿۳۵﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِىْ
صُحُفِ مُوْسٰىۙ ﴿۳۶﴾ وَ اِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰۤىۙ ﴿۳۷﴾ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰىۙ ﴿۳۸﴾ وَ اَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰىۙ ﴿۳۹﴾
وَ اَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿۴۰﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰىۙ ﴿۴۱﴾ وَ اَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰىۙ ﴿۴۲﴾ وَ اَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَ
اَبْكٰىۙ ﴿۴۳﴾ وَ اَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَ اَحْيَاۙ ﴿۴۴﴾ وَ اَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَ الْاُنْثٰىۙ ﴿۴۵﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿۴۶﴾ وَ اَنَّ
عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰىۙ ﴿۴۷﴾ وَ اَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَ اَقْنٰىۙ ﴿۴۸﴾ وَ اَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰىۙ ﴿۴۹﴾ وَ اَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا ا۟لْاُوْلٰىۙ ﴿۵۰﴾
وَ ثَمُوْدَاۡ فَمَاۤ اَبْقٰىۙ ﴿۵۱﴾ وَ قَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَ اَطْغٰىؕ ﴿۵۲﴾ وَ الْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰىۙ ﴿۵۳﴾
فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰىۚ ﴿۵۴﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿۵۵﴾ هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿۵۶﴾ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُۚ ﴿۵۷﴾ لَيْسَ لَهَا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌؕ ﴿۵۸﴾ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَۙ ﴿۵۹﴾ وَ تَضْحَكُوْنَ وَ لَا تَبْكُوْنَۙ ﴿۶۰﴾ وَ اَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿۶۱﴾
فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَ اعْبُدُوْا۩ ﴿۶۲﴾

आयत नं० 33 से 62

नोटः- कोई आदमी मुसलमान हो गया था उसके साथी ने उस को बुरा भला कहा कि तूने अपने बाप दादा के दीन को क्यों छोड़ दिया उसने कहा कि मैं अल्लाह के अज़ाब से डरता हूं वो बोला कि तू मुझ को कुछ देदे तो मैं आख़रत का तेरा अज़ाब अपने सर पर रख लूंगा तू अज़ाब से बच जाएगा बस उसने कुछ दे दिया उसने और मांगा तो कुछ खींचतान के बाद कुछ और भी दे दिया और बाक़ी की तहरीर गवाहों के साथ लिखदी इसके बाद ये आयतें उतरीं:-

(ऐ पैग़म्बर) **भला आपने ऐसे आदमी को भी देखा जिसने** (सच्चे दीन से) **मुंह फेर लिया** (यानी इस्लाम से हट गया)(33) **और थोड़ा माल दिया और** (फिर) **बन्द कर दिया** (यानी जिस आदमी से माल देने का वादा अपने मतलब के वास्ते किया था वो भी पूरा न दिया ऐसा कन्जूस आदमी दूसरे को नफ़ा पहुंचाने के लिए क्या ख़र्च करेगा जब अपने ही मतलब के लिए पूरा ख़र्च न कर सका)(34) **क्या ऐसे आदमी के पास** (किसी सही वास्ते से) **ग़ैब का इल्म** (पहुंचा) **है कि उस को देख रहा है** (जिससे पता चल गया कि वो आदमी मेरी तरफ़ से मेरे गुनाहों का अज़ाब अपने सर लेकर मुझे अज़ाब से बचा देगा)(35) **क्या उस को उन बातों की ख़बर नहीं मिली जो मूसा** (अलैहिस्सलाम पर उतरी किताब) **के पन्नों में है**(36) **और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम पर उतरी किताब) **के** (पन्नों में भी) **जिन्होंने हुक्मों की पूरी पाबन्दी की**(37) (और वो बात) **यह** (है) **कि कोई आदमी किसी का गुनाह अपने ऊपर** (इस तरह से) **नहीं ले सकता** (कि गुनाह करने वाला बरी हो जाए फिर यह आदमी कैसे समझ गया कि मेरा सारा गुनाह वो आदमी अपने सर रख लेगा)(38) **और यह** (बात है) **कि इन्सान को** (ईमान के बारे में) **सिर्फ़ अपनी ही कमाई मिलेगी** (यानी किसी दूसरे का ईमान उसके काम न आएगा और ज़िम्मेदारी लेने वाले उस आदमी के पास तो ईमान भी नहीं)(39) **और यह** (बात है) **कि इन्सान की कोशिश बहुत जल्द देखी जाएगी**(40) **फिर उस को पूरा बदला दिया जाएगा** (इसके बावजूद यह आदमी अपने सुधार की कोशिश से कैसे बेपरवा हो गया)(41) **और यह** (बात है) **कि** (सब को) **आप के रब ही के पास पहुंचना है** (फिर वो आदमी कैसे निडर हो गया)(42) **और यह** (बात है) **कि वो ही हंसाता और रूलाता है**(43) **और यह कि वो ही मौत देता है और ज़िन्दगी देता है**(44) **और यह कि उसी ने नर और मादा के जोड़े पैदा किये**(45) (और पैदा किये) **मनी** (की बून्द) **से जब** (उसे बच्चे दानी में) **डाला जाता है**(46) **और यह** (बात है) **कि दोबारा पैदा करना** (भी) **उस के ज़िम्मे है** (यानी ऐसा ज़रूर होने वाला है

तो उस आदमी के निडर होने की वजह यह भी न होनी चाहिए कि क़ियामत न आएगी)(47) **और यह** (बात है) **कि वो ही मालदार करता है** (यानी दौलत देता है) **और ख़ज़ाना देता** (है यानी दौलत को बचाकर रखता और बाक़ी रखता) **है(48) और यह** (बात है) **कि वो ही मालिक है शिअरा सितारे का भी** (जिस की इबादत जहालत के ज़माने में कुछ लोग करते थे)(49) **और यह** (बात है) **कि उसने पुराने ज़माने की क़ौमे आ़द को** (उसके कुफ़्र की वजह से) **हलाक किया(50) और समूद को भी** (उनमें से) **किसी को बाक़ी न छोड़ा(51) और उनसे पहले नूह** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम को** (हलाक किया), **बेशक वो सबसे बढ़ कर ज़ालिम और शरारती थे** (कि साढ़े नौ सौ साल की नसीहत में भी राह पर न आए)(52) **और** (लूत अलैहिस्सलाम की) **पलटी हुई बस्तियों को भी** (उसी ने) **फेंक मारा था(53) फिर उन बस्तियों को घेर लिया जिस चीज़ ने घेर लिया** (यानी ऊपर से पत्थर बरसना शुरू हुए, बस यह आदमी अगर इन क़िस्सों को सोचता तो कुफ़्र के अज़ाब से डरता और बेफ़िक्र न होता)(54) **सो** (ऐ इन्सान ये सब नसीहतें तेरे लिए हिदायत का सामान होने की वजह से अल्लाह की नेमतें हैं तो) **तू अपने रब की कौन सी नेमत में शक** (व इनकार) **करता रहेगा** (और इन बातों की तस्दीक़ करके नफ़ा न उठाएगा)(55) **ये** (पैग़म्बर) **भी पहले पैग़म्बरों की तरह एक** (ख़बरदार करने वाले) **पैग़म्बर हैं(56)** (इन को मान लो क्योंकि) **वो जल्दी आने वाली चीज़** (यानी क़ियामत) **नज़दीक आ पहुंची है(57)** (और जब वो आएगी तो) **अल्लाह के सिवा कोई उसका हटाने वाला नहीं** (बस किसी के भरोसे बेफ़िक्र न होना चाहिए)(58) **सो क्या** (ऐसी डर की बातें सुन कर भी) **तुम लोग इस** (ख़ुदाई) **कलाम से अचम्भा करते हो(59) और** (मज़ाक़ उड़ाते हुए) **हंसते हो और** (अज़ाब के डर से) **रोते नहीं हो(60) और तुम** (ताबेदारी से) **घमन्ड करते हो(61) सो** (इस घमन्ड और बेपरवाई से बाज़ आओ और पैग़म्बर जैसे सिखाते हैं ऐसे) **अल्लाह की ताबेदारी करो और** (सिर्फ़ उसी की) **इबादत करो** (ताकि तुम बख़्शे जाओ)(62)

नोटः- एक हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि सूरत नज्म की आख़री आयत पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सजदा किया और आप को देख मजलिस में हाज़िर सब मुसलमानों और मुशरिकों ने सजदा किया यहां तक कि मौजूद जिन्नात ने भी सजदा किया सिवाए एक बूढ़े के जिसने ज़मीन से एक मुट्ठी मिट्टी की उठा कर माथे से लगाली और कहा कि मुझे ये ही काफ़ी है । हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने उस बूढ़े को कुफ़्र की हालत में मरा हुआ देखा है । इसमें इशारा इस तरफ़ है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

के साथ जिन मुशरिकों ने भी सजदा कर लिया था भले ही उस सजदे का सवाब उन्हें न मिला मगर यह असर छोड़ा गया कि बाद में उन सब को इस्लाम व ईमान की तौफ़ीक़ हो गई सिर्फ़ एक आदमी कुफ़्र पर मरा जिसने सजदा नहीं किया था । (बुख़ारी)

54-सूरत-क़मर

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '55' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَ انْشَقَّ الْقَمَرُ ۝١ وَ اِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَ يَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝٢ وَ كَذَّبُوْا وَ اتَّبَعُوْٓا
اَهْوَآءَهُمْ وَ كُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣ وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۝٤ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ
النُّذُرُ ۝٥ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦ خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ
جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝٧ مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨

आयत नं० 01 से 08

क़ियामत नज़दीक आ पहुंची (जिस में झुटलाने पर बड़ी मुसीबत आएगी) **और** (उस की एक निशानी भी आगई जैसा कि) **चान्द फट** (गया यानी दो टुकड़े हो गया और इससे क़ियामत के नज़दीक होने की तस्दीक़ इस तरह होती है कि शक़्क़े क़मर यानी चान्द के दो टुकड़े होना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है जिससे आप की पैग़म्बरी साबित होती है और सच्चे नबी ने क़ियामत के नज़दीक होने की ख़बर दी है तो क़ियामत का नज़दीक होना साबित हो) **गया(1) और** (चाहिए तो यह था कि) **ये लोग** (इससे असर लेते लेकिन इनकी हालत यह है कि) **अगर कोई मोजिज़ा देखते हैं तो टाल देते हैं और कहते हैं कि यह जादू है जो अभी ख़त्म हो जाता है(2) और इन लोगों ने** (झूट पर जमे रह कर सच्चाई को) **झुटलाया और अपनी मनमर्ज़ी पर चले** (और हटधर्मी से सच्चाई को झुटलाया) **और** (ये जो मोजिज़ों को जादू कहते हैं जिसका असर जल्दी ख़त्म हो जाया करता है तो बात यह है कि) **हर काम** (अपनी असली हालत पर आकर) **ठहर जाता** (है तो कुछ दिनों में पता चल जाएगा कि यह फ़ना हो जाने वाला जादू है या बाक़ी रहने वाला हक़) **है(3) और इन लोगों के पास** (तो पहली उम्मतों की भी) **ख़बरें इतनी पहुंच चुकी हैं कि उनमें नसीहत का बहुत सामान है(4) यानी ऊंचे दर्जे की समझदारी** (हासिल हो सकती) **है सो** (इनकी यह हालत है कि) **ख़बरदार करने वाली चीज़ें इन को कुछ फ़ाइदा ही नहीं देती(5)** (और जब यह हाल है) **तो**

(ऐ पैग़म्बर) **आप भी उनकी परवाह न कीजिए** (जब वो क़ियामत आएगी ख़ुद मालूम हो जाएगा), **जिस दिन एक बुलाने वाला फ़रिशता** (उनको) **एक नागवार चीज़ की तरफ़ बुलाएगा**(6) (उस दिन) **उनकी आंखें** (रूसवाई और डर के मारे) **झुकी हुई होंगी** (और) **क़ब्रों से इस तरह निकल रहे होंगे जैसे टिड्डी फैल जाती है**(7) (और फिर निकल कर) **बुलाने वाले की तरफ़** (यानी हिसाब की जगह जहां जमा होने को पुकारा है) **दौड़े चले जा रहे होंगे,** (और वहां की सख़्तियां देख कर) **काफ़िर कहते होंगे कि यह दिन बड़ा सख़्त है**(8)

नोटः- मक्के के काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आप की पैग़म्बरी के लिए मोजिज़े की निशानी की मांग की तो अल्लाह तआ़ला ने आप की सच्चाई के सबूत के लिए यह शक़्क़ुल क़मर का मोजिज़ा दिखाया कि चान्दनी रात में चान्द के दो टुकड़े होकर एक पूरब की तरफ़ दूसरा पच्छिम की तरफ़ चला गया और दोनों टुकड़ों के बीच में पहाड़ दिखाई देने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सब हाज़िर लोगों से कहा कि देखो और गवाही दो। जब सब लोगों ने साफ़ तौर पर यह मोजिज़ा देख लिया तो ये दोनो टुकड़े फिर आपस में मिल गये। इस खुले हुए मोजिज़े का इनकार तो किसी आंखों वाले से नहीं हो सकता था मगर मुशरिक लोग कहने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सारी दुनिया पर जादू नहीं कर सकते बाहर मुल्क से आने वाले लोगों का इन्तिज़ार करो वो क्या कहते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० बताते हैं "कि बाद में बाहर से आने वाले सभी मुसाफ़िरों से उन लोगों ने पूछताछ की तो सब ने ऐसा ही चान्द के दो टुकड़े देखने का इक़रार किया"।

हिन्दुस्तान की मशहूर इतिहास की किताब "तारीख़ फ़रिशता" में लिखा है कि हिन्दुस्तान में महाराजा मालीबार ने यह वाक़िया ख़ुद अपनी आंखों से देखा और अपने रोज़नामचे (डाइरी) में लिखवाया और ये ही वाक़िया उनके मुसलमान होने की वजह बना।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝٩ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠
فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢ وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى
ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٣ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝١٤ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٥ فَكَيْفَ
كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٦ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٧

आयत नं० 09 से 17

इन लोगों से पहले नूह (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने झुटलाया यानी हमारे** (ख़ास) **बन्दे** (नूह अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया और कहा कि ये दीवाने हैं और नूह** (अलैहिस्सलाम) **को** (उनकी तरफ़ से) **धमकी भी दी गई(9) तो नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने रब से दुआ की कि मैं बेबस हूं** (उन लोगों का मुक़ाबिला नहीं कर सकता) **तो आप** (इन से) **बदला ले लीजिए** (यानी उनको हलाक कर दीजिए)(10) **बस हम ने मूसलाधार बरसने वाले पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिये(11) और ज़मीन से पानी जारी कर दिया फिर** (आसमान और ज़मीन का) **पानी उस काम के** (पूरा होने के) **लिए मिल गया जो** (अल्लाह के यहां) **तय हो चुका था** (यानी दोनो पानी मिलकर तूफ़ान बढ़ा जिसमें सब डूब गये)(12) **और हम ने नूह** (अलैहिस्सलाम) **को** (तूफ़ान से बचाने के लिए) **तख़्तों और कीलों वाली कशती पर** (मोमिनों के साथ) **सवार किया(13) जो कि हमारी देख रेख में** (पानी पर) **बहती थी, यह सब कुछ उस** (पैग़म्बर) **का बदला लेने के लिए किया जिस की नाक़द्री की गई थी** (यानी झूटा बताया गया था)(14) **और हमने इस क़िस्से को** (नसीहत की) **एक निशानी बना दिया तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है(15) फिर** (देखो) **मेरा अज़ाब और मेरा डराना कैसा हुआ** (यानी जिस अज़ाब से डराया गया वो आकर रहा)(16) **और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने** (को सब के लिए और ख़ास कर अरब वालों) **के लिए आसान कर दिया तो क्या कोई** (इस क़ुरआन से) **नसीहत हासिल करने वाला है** (यानी मक्के के काफ़िरों को ख़ास कर इन क़िस्सों से डरना चाहिए)(17)

नोटः- क़ुरआन करीम को आसान कर देने का मतलब यह है कि उस को हिफ़्ज़ याद करने और उसकी नसीहतों से सबक़ लेने की हद तक उस को आसान कर दिया गया है जिससे हर आलिम व जाहिल एक सा फ़ाइदा उठा सकता है इसका यह मतलब नहीं कि क़ुरआन करीम से मसअले और हुक्म निकालना भी ऐसा आसान हो। वो एक अलग और मुश्किल हुनर है जिसमें उमरें ख़र्च करने वाले बड़े आलिमों को ही हिस्सा मिलता है हर एक का वो मैदान नहीं। इससे उन लोगों की ग़लती साफ़ हो गई जो इस आयत का सहारा लेकर क़ुरआन का पूरा इल्म तरीक़े से हासिल किये बिना आलिम बनना और मसअले निकालना चाहते हैं कि वो खुली गुमराही का रास्ता है।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝١٨ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝١٩ تَنْزِعُ
النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ۝٢٠ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝٢١ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدَّكِرٍ ۝٢٢ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝٢٣ فَقَالُوْۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝٢٤ ءَاُلْقِيَ
الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ۝٢٥ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ۝٢٦ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ
فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۝٢٧ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝٢٨ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ
فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ۝٢٩ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝٣٠ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ
الْمُحْتَظِرِ ۝٣١ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٣٢ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۭ بِالنُّذُرِ ۝٣٣ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ
حَاصِبًا اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ۝٣٤ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ۝٣٥ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ
بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ۝٣٦ وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَاۤ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝٣٧ وَلَقَدْ
صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣٨ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ ۝٣٩ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٤٠ وَ
لَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝٤١ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝٤٢

आयत नं० 18 से 42

आद की क़ौम ने (भी अपने पैग़म्बर को) **झुटलाया तो** (उस का क़िस्सा सुनो कि) **मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ**(18) (और वो क़िस्सा यह है कि) **हमने उन पर एक तेज़ आँधी भेजी लगातार नुहूसत के दिन में** (यानी वो दिन उसके वास्ते सदा के लिए मनहूस रहा कि उस दिन जो अज़ाब आया तो क़ब्र के अज़ाब से जुड़ गया और फिर आख़रत के अज़ाब से मिल कर कभी ख़त्म न होगा)(19) **वो आंधी लोगों को** (उनकी जगह से) **इस तरह उखाड़ कर फेंकती थी जैसे वो उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं**(20) **सो** (देखो) **मेरा अज़ाब और डराना कैसा** (होलनाक) **हुआ**(21) **और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है क्या काई नसीहत हासिल करने वाला है**(22) **समूद** (की क़ौम) **ने** (भी) **पैग़म्बरों को झुटलाया** (क्योंकि एक पैग़म्बर को झुटलाना सब पैग़म्बरों को झुटलाना है)(23) **कहने लगे क्या हम ऐसे आदमी के पीछे चलें जो हमारी जिन्स का इन्सान है** (और वैसे भी) **अकेला है** (यानी या फ़रिशता होता तो हम दीन में बात मानते या फ़ौजफ़र्रा वाला कोई सरदार होता तो दुनिया की बातों में कहा मानते और अगर हम ऐसी

हालत में कहा मानेंगे) **तो इस सूरत में हम बड़ी ग़लती और** (बल्कि) **दीवानगी में पड़ जाएंगे**(24) **क्या हम सब में से** (चुन कर) **इसी** (आदमी) **पर वही उतारी है** (हरगिज़ ऐसा नहीं) **बल्कि यह बड़ा झूटा और डींग मारने वाला है**(25) (अल्लाह तआ़ला ने अपने पैग़म्बर सालिह अलैहिस्सलाम से कहा इनके बकने पर ग़म न करो) **उन को जल्दी ही** (यानी मरते ही) **पता चल जाएगा कि झूटा डींग मारने वाला कौन था**(26) (और ये लोग पैग़म्बरी के सबूत के लिए जो ऊंटनी का मोजिज़ा मांगा करते थे तो) **हम** (इनकी मांग पर पत्थर में से) **ऊंटनी को निकालने वाले हैं उन** (के ईमान) **को आज़माने के लिए इसलिए उन** (की हरकतों) **को देखते रहो और सब्र से काम लो**(27) **और** (जब ऊंटनी पैदा हो तो) **इन लोगों को यह बता देना कि** (कुंए का) **पानी बान्ट दिया गया है** (यानी तुम्हारे जानवर और ऊंटनी की बारी तय हो गई है) **हर एक बारी वाला अपनी बारी में हाज़िर हो** (यानी ऊंटनी अपनी बारी में पानी पिये और जानवर अपनी बारी में बस ऊंटनी पैदा हुई और सालिह अलैहिस्सलाम ने इसी तरह कह दिया)(28) **सो** (इस बारी से लोग तंग आ गये और) **उन्होंने** (उस के क़त्ल करने के लिए) **अपने साथी** (क़ुदार) **को बुलाया तो उसने** (ऊंटनी पर) **वार किया और** (उसको) **मार डाला**(29) **सो** (देखो) **मेरा अज़ाब और डराना कैसा हुआ**(30) (वो यह कि) **हमने उन पर एक ही चीख़** (फ़रिशते की) **भेजी सो वो** (उससे) **ऐसे हो गये जैसे कान्टों की बाड़ का चूरा** (यानी खेत की हिफ़ाज़त के लिए जो कान्टों की बाड़ लगाते हैं और कुछ दिन बाद सब चूरा-चूरा हो जाता है इसी तरह वो हलाक और तबाह हो गये)(31) **और हमने क़ुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है तो क्य कोई नसीहत हासिल करने वाला है**(32) (और) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम ने भी पैग़म्बरों को झुटलाया** (क्योंकि एक नबी को झुटलाना सब को झुटलाना है)(33) **हमने उन पर पत्थरों की बारिश की सिवाए लूत** (अलैहिस्सलाम) **के घर वालों के** (यानी सिवाए मोमिनों के), **कि उन को रात के आख़री हिस्से में** (बस्ती से बाहर करके अज़ाब से) **बचा लिया था**(34) **अपनी तरफ़ से महरबानी करके, जो शुक्र करता है** (यानी ईमान लाता है) **हम उस को ऐसा ही बदला दिया करते** (हैं कि अज़ाब से बचा लेते) **हैं**(35) **और** (अज़ाब आने से पहले) **लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने उनको हमारी पकड़ से डराया था सो उन्होंने** (इस) **ख़बरदार करने में झगड़े पैदा किये** (यानी यक़ीन न लाए)(36) **और** (जब लूत अलैहिस्सलाम के पास हमारे फ़रिशते महमान की शक्ल में आए और उन लोगों को हसीन लड़कों के आने का पता चला तो यहां आकर) **उन लोगों ने लूत** (अलैहिस्सलाम) **से उनके महमानों को बुरी नीयत से लेना चाहा** (जिससे लूत अलैहिस्सलाम शुरू में घबराए मगर वो फ़रिशते थे) **तो हमने उन** (लोगों) **की**

आंखों को अन्धा कर दिया (और उन से कहा गया कि) **लो मेरे अज़ाब और डराने का मज़ा चक्खो(37) और** (फिर) **सुबह सवेरे ही उन पर सदा का अज़ाब आ पहुंचा(38)** (और फिर कहा गया कि) **लो मेरे डराने और अज़ाब का मज़ा चक्खो(39) और हमने कुरआन को नसीहत हासिल करने के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है(40) और** (फ़िरऔन और) **फ़िरऔन वालों के पास भी डराने की बहुत सी चीज़ें** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़े और नसीहतें) **पहुंची(41)** (लेकिन) **उन लोगों ने हमारी सारी निशानियों को झुटलाया** (यानी मूसा अलैहिस्सलाम की पैग़म्बरी को झुटलाया) **तो हमने उनको ज़बरदस्त कुदरत वाले की पकड़ में पकड़ा** (यानी जब हमने उनको अज़ाब में पकड़ा तो हमारी पकड़ से उनको कोई बचा नहीं सका)(42)

नोटः- कुरआन में यह जुमला बार-बार लाया गया है कि अल्लाह के अज़ाब से बचने का रास्ता कुरआन है और कुरआन को नसीहत व सबक़ हासिल करने की हद तक हमने बहुत आसान कर दिया है। बड़ा बदनसीब और महरूम है जो इससे फ़ाइदा न उठाए।

اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِى الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَ
يُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَ السَّاعَةُ اَدْهٰى وَ اَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِىْ ضَلٰلٍ وَّ سُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ
يُسْحَبُوْنَ فِى النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ؕ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَ مَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ
كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَآ اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَ كُلُّ شَىْءٍ فَعَلُوْهُ فِى الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾ وَ كُلُّ صَغِيْرٍ وَّ
كَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِىْ جَنّٰتٍ وَّ نَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

आयत नं० 43 से 55

(ये काफ़िरों के क़िस्से और कुफ़्र की वजह से उन पर होने वाले अज़ाब के क़िस्से तुमने सुन लिये अब जब कि तुम भी कुफ़्र के काम करते हो तो तुम्हारे अज़ाब से बचने की कोई वजह नहीं) **क्या तुम में जो काफ़िर हैं वो** (पहले लोगों से) **बेहतर हैं** (जिस की वजह से तुम्हें अज़ाब न हो) **या तुम्हारे लिए** (आसमानी) **किताबों में कोई मुआफ़ी** (नामा लिख दिया) **है** (इसलिए जुर्म के बावजूद सज़ा न हो)(43) **या** (उनमें कोई ऐसी ताक़त है जो उन को अज़ाब से बचा ले जैसा) **ये लोग कहते हैं कि हमारा गिरोह कामयाब रहेगा(44) जल्दी ही** (उनका) **यह गिरोह मात खाएगा और पीठ**

फेर कर भागेंगे (और यह ख़बर जंगे बद्र व अहज़ाब में पूरी हुई)(45) **बल्कि** (दुनिया के इस अज़ाब से बड़ा अज़ाब) **क़ियामत** (में होगा कि) **उनका** (असल) **वादा** (वो ही) **है और क़ियामत** (को कोई हल्की चीज़ न समझो बल्कि वो) **बड़ी सख़्त और नागवार चीज़ है**(46) (और क़ियामत ज़रूर आने वाली है इसके इनकार में) **ये मुजरिम लोग** (यानी काफ़िर) **बड़ी ग़लती और बेअक़्ली में** (पड़े) **हैं**(47) (और इस ग़लती का पता उस दिन चलेगा) **जिस दिन ये लोग अपने मुंह के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे,** (तो उनसे कहा जाएगा कि) **दोज़ख़** (की आग के लगने) **का मज़ा चक्खो**(48) (और अगर इनको यह शक हो कि क़ियामत अभी क्यों नहीं आ जाती तो वजह इसकी यह है कि) **हमने हर चीज़ को तय वक़्त के साथ पैदा किया है** (जिसे हम जानते हैं)(49) **और** (जब उसका वक़्त आजाएगा तो उस वक़्त) **हमारा हुक्म** (उसके बारे में) **बस ऐसा एक बारगी होगा जैसे आंख का झपकना**(50) **और** (अगर तुम को यह शक हो कि हमारा तरीक़ा अल्लाह के नज़दीक नापसन्द नहीं तो अगर क़ियामत आ भी जाए तो कोई फ़िक्र नहीं तो जान लो कि) **हम तुम्हारे तरीक़े वाले लोगों को** (अपने अज़ाब से पहले ही) **हलाक कर चुके हैं** (जो दलील है इस तरीक़े के नापसन्द होने की) **तो क्या** (इस दलील से) **कोई नसीहत लेने वाला है**(51) **और** (यह भी नहीं कि उनके बुरे कामों का पता न चले बल्कि) **जो कुछ भी ये लोग करते हैं सब** (अल्लाह तआ़ला को मालूम है) **आमाल नामों में** (भी लिखा) **है**(52) **और** (यह नहीं कि कुछ लिखा गया हो कुछ रह गया हो बल्कि) **हर छोटी और बड़ी बात** (इसमें) **लिखी हुई है**(53) (और जो) **परहेज़गार लोग** (हैं वो जन्नत के) **बाग़ों में और नहरों में होंगे**(54) **एक अच्छी जगह में क़ुदरत वाले बादशाह के पास** (यानी जन्नत के साथ अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी भी होगी)(55)

नोटः- तक़दीर के मसअले का इनकार करने वाला काफ़िर है और जो फ़िरक़े हेरफेर के साथ इनकार करते हैं वो फ़ासिक़ यानी बड़े गुनाहगार हैं। एक हदीस में है कि हर उम्मत में कुछ लोग मजूसी (आग के पुजारी) होते हैं इस उम्मते मुहम्मदिया के मजूसी वो लोग हैं जो तक़दीर का इनकार करते हैं ऐसे लोग बीमार पड़ें तो उनकी बीमार पुरसी को न जाओ और मरजाएं तो उनके कफ़न दफ़न में शरीक न हो। (रूहुल मआनी)

55-सूरत-रहमान

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '78' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلرَّحۡمٰنُ ﴿۱﴾ عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ ﴿۲﴾ خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ ﴿۳﴾ عَلَّمَهُ الۡبَیَانَ ﴿۴﴾ اَلشَّمۡسُ وَ الۡقَمَرُ بِحُسۡبَانٍ ﴿۵﴾ وَّ النَّجۡمُ وَ الشَّجَرُ
یَسۡجُدٰنِ ﴿۶﴾ وَ السَّمَآءَ رَفَعَهَا وَ وَضَعَ الۡمِیۡزَانَ ﴿۷﴾ اَلَّا تَطۡغَوۡا فِی الۡمِیۡزَانِ ﴿۸﴾ وَ اَقِیۡمُوا الۡوَزۡنَ بِالۡقِسۡطِ وَ لَا
تُخۡسِرُوا الۡمِیۡزَانَ ﴿۹﴾ وَ الۡاَرۡضَ وَضَعَهَا لِلۡاَنَامِ ﴿۱۰﴾ فِیۡهَا فَاکِهَةٌ وَّ النَّخۡلُ ذَاتُ الۡاَکۡمَامِ ﴿۱۱﴾ وَ الۡحَبُّ ذُو
الۡعَصۡفِ وَ الرَّیۡحَانُ ﴿۱۲﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿۱۳﴾ خَلَقَ الۡاِنۡسَانَ مِنۡ صَلۡصَالٍ کَالۡفَخَّارِ ﴿۱۴﴾ وَ خَلَقَ الۡجَآنَّ
مِنۡ مَّارِجٍ مِّنۡ نَّارٍ ﴿۱۵﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿۱۶﴾ رَبُّ الۡمَشۡرِقَیۡنِ وَ رَبُّ الۡمَغۡرِبَیۡنِ ﴿۱۷﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا
تُکَذِّبٰنِ ﴿۱۸﴾ مَرَجَ الۡبَحۡرَیۡنِ یَلۡتَقِیٰنِ ﴿۱۹﴾ بَیۡنَهُمَا بَرۡزَخٌ لَّا یَبۡغِیٰنِ ﴿۲۰﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿۲۱﴾ یَخۡرُجُ مِنۡهُمَا
اللُّؤۡلُؤُ وَ الۡمَرۡجَانُ ﴿۲۲﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿۲۳﴾ وَ لَهُ الۡجَوَارِ الۡمُنۡشَئٰتُ فِی الۡبَحۡرِ کَالۡاَعۡلَامِ ﴿۲۴﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ
رَبِّکُمَا تُکَذِّبٰنِ ﴿۲۵﴾

आयत नं० 01 से 25

रहमान (यानी बड़ी रहमतों वाला है वो अल्लाह जिसकी नेमतें अनगिनत हैं)(1) **सिखाया जिस ने** (अपने बन्दों को) **कुरआन** (यानी एक बड़ी नेमत यह है कि कुरआन उतारा कि उसके बन्दे उस पर ईमान लाएं और उसके हुक्मों पर चलकर सदा की ऐश व आराम का सामान हासिल करें)(2) **उसी ने इन्सान को पैदा किया**(3) (फिर) **उस को बोलना सिखाया**(4) (और उसके हुक्म से) **सूरज और चान्द हिसाब के साथ** (चलते) **हैं**(5) **और बेलदार पौधे और तनेदार पेड़ दोनो** (अल्लाह के) **ताबेदार** (हैं सूरज और चान्द का चलना तो इसलिए नेमत है कि दिन रात व सर्दी गर्मी और महीना व साल का हिसाब इसी पर है जिसके नफ़े मालूम हैं और पेड़ पौधों में अल्लाह तआला ने हज़ारों फ़ाइदे रक्खे हैं ये भी बड़ी नेमतें) **हैं**(6) **और** (एक नेमत यह है कि) **उसी ने आसमान को ऊंचा किया** (जिसके बहुत से फ़ाइदों में एक फ़ाइदा यह है कि उस को देख कर इन्सान उसके बनाने वाले की

क़ुदरत को सोचे) **और** (एक नेमत यह है कि) **उसी ने** (दुनिया में) **तराज़ू रख दी(7) ताकि तुम तोलने में कमी ज़्यादती न करो(8)** (और इस नेमत का शुक्र करो कि) **इन्साफ़ के साथ वज़न को ठीक रक्खो और तौल में कमी न करो(9) और** (एक नेमत यह है कि) **उसी ने मख़लूक़ के** (फ़ाइदे के) **वास्ते ज़मीन को बनाया(10) कि उस में फल हैं और खजूर के पेड़ हैं जिन**(के फल) **पर पर्दा** (चढ़ा) **होता है(11) और** (उसमें) **भूसे वाला अनाज और ख़ुशबूदार फल** (भी) **हैं(12) सो** (ऐ इन्सानों और जिन्नात इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(13)** (और एक नेमत यह है कि) **उसी ने इन्सान** (की असल यानी आदम अलैहिस्सलाम) **को ठीकरे की तरह** (खनखन) **बजती मिट्टी से पैदा किया(14) और जिन्नात** (की पहली असल) **को ख़ालिस आग से पैदा किया** (जिसमें धुआं न था फिर दोनो की नस्ल चली)(15) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(16)** (और) **वो दोनो पूरब और दोनो पच्छिम का** (सच्चा) **मालिक है** (सर्दी व गर्मी में सूरज निकलने व छुपने के किनारे बदल जाते हैं इसलिए दो पूरब व पच्छिम कहे गये और रात दिन की नेमतें इसी पर हैं)(17) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(18)** (और एक नेमत यह है कि) **उसने दो दरियाओं को** (ऐसे) **मिलाया कि** (देखने में) **आपस में मिले हुए हैं(19)** (और असल में) **उन दोनो के बीच में एक** (क़ुदरती) **पर्दा है कि** (इस वजह से) **दोनो** (अपनी) **हद से बढ़ नहीं सकते(20) तो** (इन नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(21)** (और दरियाओं की एक नेमत यह है कि) **उन दोनों से मोती और मूंगा** (यानी छोटा मोती) **निकलते हैं(22) तो** (ऐ इन्सानों और जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(23) और** (एक नेमत यह है कि) **उसी के** (क़ब्ज़े में) **हैं जहाज़ जो समन्दर में पहाड़ों की तरह ऊंचे खड़े** (नज़र आते हैं उनके फ़ाइदे भी खुले) **हैं(24) तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों और जिन्नात) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(25)**

नोटः- इस सूरत में एक आयत "फ़बिअय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान" बार-बार आई है जिसको नसीहत के लिए बार-बार लाया गया है और हर बार नई बात समझाई गई है। अरबी ज़बान में इस तरह की मिसालें मिल जाती हैं कि एक बात बार-बार दोहराई जाए।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾ وَّ يَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَ الْاِكْرَامِ ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾ سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّ نُحَاسٌ
فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ وَّ لَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ
الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَ الْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ
يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَ بَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾

आयत नं० 26 से 45

(जितनी नेमतें तुमने सुनी हैं तुम को तौहीद व ताबेदारी से उनका शुक्र अदा करना चाहिए और कुफ़्र व गुनाहों से नाशुक्री न करना चाहिए क्योंकि इस जहान के फ़ना होने के बाद दूसरा जहान आने वाला है जहां ईमान व कुफ़्र का बदला व सज़ा मिलनी है बस कहा गया कि) **जितने** (जिन्नात व इन्सान) **ज़मीन पर मौजूद हैं सब फ़ना हो जाएंगे(26) और** (सिर्फ़) **आप के रब की ज़ात जो बड़ाई वाली और अहसान** (करने) **वाली है बाक़ी रह जाएगी(27)** (और चूंकि दुनिया के फ़ना हो जाने की ख़बर देना भी इन्सान को ईमान की दौलत देता है यह भी एक बड़ी नेमत है) **तो** (ऐ जिन्नात व इन्सानो) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(28)** (वो ऐसी शान वाला है कि) **उसी से** (अपनी-अपनी ज़रूरतें) **सब आसमान व ज़मीन वाले मांगते हैं, वो हर वक़्त किसी न किसी काम में रहता** (है यानी वो हर वक़्त करम व अहसान करता रहता) **है(29)** (यह भी एक बड़ी नेमत है) **तो तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(30) ऐ जिन्नात व इन्सानों हम जल्दी ही तुम्हारे** (हिसाब के) **लिए ख़ाली हो जाते** (हैं यानी हिसाब लेने वाले) **हैं(31)** (और यह ख़बर देना भी एक नेमत है) **तो तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(32)** (और यह भी नहीं हो सकता कि कोई हिसाब की जगह से निकल जाए तो) **ऐ इन्सानों और जिन्नात के गिरोह अगर तुम से यह हो सके कि आसमान और ज़मीन की हदों से कहीं बाहर निकल जाओ तो** (हम भी देखें) **निकलो,** (मगर)

बिना ज़ोर के (निकल नहीं सकते और ज़ोर है नहीं तो) **निकल नहीं सकते**(33) (और यह बताना भी बड़ी नेमत है) **तो तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(34) (ऐ इन्सान व जिन्नात मुजरिमो) **तुम दोनों पर** (क़ियामत के दिन) **आग का शोला और धुवां छोड़ा जाएगा फिर तुम** (उसको) **हटा न सकोगे**(35) (और यह बताना भी हिदायत के लिए एक नेमत है) **तो तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(36) **जब** (क़ियामत आएगी जिस मे) **आसमान फट जाएगा और ऐसा लाल हो जाएगा जैसे लाल चमड़ा**(37) (यह ख़बर देना भी नेमत है) **तो तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(38) **फिर उस दिन न किसी इन्सान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा और न किसी जिन्न से** (बल्कि फ़रिशतों के पास सब लिखा हुआ है)(39) **सो** (यह ख़बर देना भी एक नेमत है तो) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(40) (आगे बताते हैं कि फ़रिशतों को मुजरिमों को पहचानने के लिए किसी पूछताछ की ज़रूरत न होगी बल्कि) **मुजरिम लोग अपने हुलिये से पहचाने जाएंगे** (जैसे चेहरे का काला होना आंखों का नीला होना) **फिर** (उनके) **सर के बाल और पैर पकड़ लिए** (जाएंगे और घसीट कर जहन्नम में डाल दिये) **जाएंगे**(41) (और यह ख़बर देना भी एक नेमत है) **तो तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(42) **यह है वो जहन्नम जिसे मुजरिम लोग** (यानी तुम) **झुटलाते थे**(43) **वो लोग दोज़ख़ के और गर्म खौलते हुए पानी के चक्कर लगाते** (होंगे यानी कभी आग का अज़ाब होगा और कभी खौलते पानी के अज़ाब में) **होंगे**(44) (और यह ख़बर देना भी नेमत है) **तो** (इन तमाम नेमतों के बावजूद ऐ जिन्नात व इन्सानो) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(45)

नोटः- एक हदीस में है कि अपनी दुआ में "या ज़लजलालि वल इकराम" को याद रक्खो और उसके साथ दुआ किया करो (क्योंकि उससे दुआ के क़ुबूल होने की ज़्यादा उम्मीद है)। (मज़हरी)

وَ لِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَاۤ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِیْهِمَا عَیْنٰنِ تَجْرِیٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِیْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَیِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕیْنَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآىِٕنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَ جَنَا الْجَنَّتَیْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِیْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ یَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَ لَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَیِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَ الْمَرْجَانُ ﴿۵۸﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۵۹﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿۶۰﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۱﴾ وَ مِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿۶۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۳﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿۶۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۵﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿۶۶﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۷﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّ نَخْلٌ وَّ رُمَّانٌ ﴿۶۸﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۶۹﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿۷۰﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۱﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي
الْخِيَامِ ﴿۷۲﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۳﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَ لَا جَآنٌّ ﴿۷۴﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۵﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّ عَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿۷۶﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿۷۷﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ
ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿۷۸﴾

आयत नं० 46 से 78

और (आगे जन्नती लोगों का बयान है कि जन्नती लोग दो क़िस्म के हैं ख़ास और आम बस) **जो आदमी** (ख़ास मोमिनों में से हो और) **अपने रब के सामने खड़ा होने से** (हर वक़्त) **डरता रहता हो** (और डर कर गुनाहों से बचता रहता हो और यह शान ख़ास मोमिनों की ही है मतलब यह कि जो ऐसा परहेज़गार हो) **उसके लिए** (जन्नत में) **होंगे** (दो बाग़ यानी हर परहेज़गार के लिए) **दो बाग़(46) तो** (ऐ इन्सानो व जिन्नात इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(47)** (और वो) **दोनो बाग़ टहनियों से भरे** (होंगे यानी घना साया भी होगा और फल भी ज़्यादा) **होंगे(48) तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(49)** (और) **उन दोनो बाग़ों में दो नहरें** (पानी की) **बहती होंगी(50) तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(51)** (और) **उन दोनो बाग़ों में हर फल की दो क़िस्में होंगी** (कि इसमें ज़्यादा मज़ा है कभी एक क़िस्म का मज़ा लिया कभी दूसरी क़िस्म का)**(52) तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(53)** (और) **वो लोग तकिया लगाए रेशमी क़ालीनों पर बैठे होंगे, और दोनों बाग़ों का फल बहुत नज़दीक होगा** (कि खड़े, बैठे लेटे हर तरह आसानी से हाथ आसकता है)**(54) तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे(55)** (और) **उन** (बाग़ों के मकानों और महलों) **में नीची निगाह वाली** (यानी हूरें) **होंगी कि उन** (जन्नती) **लोगों से पहले जिन्हें न तो किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने** (यानी कुंवारी होंगी)**(56) तो** (ऐ इन्सानो व

जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(57) (और रंग उन का ऐसा साफ़ होगा कि) **जैसे वो हीरा मोती हैं**(58) **तो** (ऐ इन्सानो व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(59) **अच्छाई का बदला सिवाए अच्छाई के और क्या हो सकता है** (उन्होंने नेक काम किये इसलिए अच्छा बदला मिला)(60) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(61) **और** (आगे आम मोमिनों के बाग़ों का बयान है यानी) **उन दोनो बाग़ों से कम दर्जे में दो बाग़ और हैं** (जो आम मोमिनों के लिए हैं और हर एक को दो दो मिलेंगे)(62) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(63) (और आगे उन बाग़ों की ख़ूबी का बयान है कि) **वो दोनो बाग़ गहरे हरे रंग के होंगे**(64) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(65) **उन दोनो बाग़ों में दो चश्मे होंगे कि जोश मारते होंगे** (यानी ऐसे कुंवे कि उनका पानी खुद उबल रहा होगा)(66) **तो** (ऐ इन्सानों और जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(67) **उन दोनो बाग़ों में फल और खजूरें और अनार होंगे**(68) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(69) (और) **उन** (बाग़ों के मकानों में) **अच्छी** (आदत वाली) **ख़ूबसूरत औरतें** (यानी) **हूरें होंगी**(70) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात इतनी नेमतों के बावजूद) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(71) **वो औरतें गोरे रंग वाली होंगी** (और) **ख़ेमों** (यानी मकानों) **में हिफ़ाज़त से रक्खी हुई होंगी**(72) **तो** (ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(73) (और) **इन** (जन्नती) **लोगों से पहले जिन्हें न तो किसी इन्सान ने छुआ होगा और न किसी जिन्न ने** (यानी कुंवारी होंगी)(74) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानो व जिन्नात) **तुम अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(75) (और) **वो** (जन्नती) **लोग हरे रंग के कामदार ख़ूबसूरत कपड़ों** (के क़ालीनों) **पर तकिया लगाए बैठे होंगे**(76) **तो** (इतनी नेमतों के बावजूद ऐ इन्सानों व जिन्नात) **तुम दोनो अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों का इनकार करोगे**(77) **बड़ा बरकत वाला नाम है आप के रब का जो बड़ाई वाला** (भी है) **और अहसान** (करने) **वाला** (है तो उसकी ज़ात कैसी होगी जिसका नाम ही बरकतों वाला) **है**(78)

नोटः- अपने रब के सामने खड़ा होने से मुराद यह है कि हर वक़्त इस बात का ध्यान रखता हो कि मेरे हर काम को अल्लाह तआ़ला देख रहे हैं। इसे मुराक़िबा कहते हैं।

56-सूरत-वाक़िआः

इस मक्की सूरत में '3' रूकू और '96' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۘ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ۙ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ۙ﴿٤﴾ وَّ بُسَّتِ
الْجِبَالُ بَسًّا ۙ﴿٥﴾ فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ۙ﴿٦﴾ وَّ كُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ؕ﴿٧﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ
الْمَيْمَنَةِ ؕ﴿٨﴾ وَ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ؕ﴿٩﴾ وَ السّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۚ﴿١٠﴾ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ﴿١١﴾ فِیْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿١٣﴾ وَ قَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ﴿١٤﴾ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۙ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا
مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۙ﴿١٧﴾ بِاَكْوَابٍ وَّ اَبَارِيْقَ ۙ وَ كَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ﴿١٨﴾ لَّا
يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَ لَا يُنْزِفُوْنَ ۙ﴿١٩﴾ وَ فَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ﴿٢٠﴾ وَ لَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ؕ﴿٢١﴾ وَ حُوْرٌ عِيْنٌ ۙ﴿٢٢﴾
كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۚ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّ لَا تَاْثِيْمًا ۙ﴿٢٥﴾ اِلَّا قِيْلًا
سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ؕ﴿٢٧﴾ فِیْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ﴿٢٨﴾ وَّ طَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ﴿٢٩﴾ وَّ ظِلٍّ
مَّمْدُوْدٍ ۙ﴿٣٠﴾ وَّ مَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۙ﴿٣١﴾ وَّ فَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۙ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّ لَا مَمْنُوْعَةٍ ۙ﴿٣٣﴾ وَّ فُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ؕ﴿٣٤﴾ اِنَّاۤ
اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۙ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۙ﴿٣٦﴾ عُرُبًا اَتْرَابًا ۙ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ﴿٣٩﴾ وَ
ثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ﴿٤٠﴾ وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَاۤ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ؕ﴿٤١﴾ فِیْ سَمُوْمٍ وَّ حَمِيْمٍ ۙ﴿٤٢﴾ وَّ ظِلٍّ مِّنْ
يَّحْمُوْمٍ ۙ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّ لَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ۚ﴿٤٥﴾ وَ كَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ
الْعَظِيْمِ ۚ﴿٤٦﴾ وَ كَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا وَّ عِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿٤٧﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ
اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَ الْاٰخِرِيْنَ ۙ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ
الْمُكَذِّبُوْنَ ۙ﴿٥١﴾ لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ۙ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ۚ﴿٥٣﴾ فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ۚ﴿٥٤﴾
فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ؕ﴿٥٥﴾ هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ؕ﴿٥٦﴾

आयत नं० 01 से 56

जब क़ियामत आएगी(1) **जिसके आने में कोई झूट नहीं** (बल्कि उस का आना बिल्कुल सही और सच है)(2) **तो वो** (कुछ को) **नीचा कर देगी** (और कुछ को) **ऊंचा कर** (देगी यानी काफ़िरों की रूसवाई और मोमिनों की इ़ज़्ज़त उस दिन दिखाई) **देगी**(3) **जब कि ज़मीन को सख़्त ज़लज़ला आएगा**(4) **और पहाड़ बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाएंगे**(5) **फिर वो उड़ती हुई धूल बन जाएंगे**(6) **और तुम** (सब लोग जो इस वक़्त मौजूद हो या पहले हो चुके हैं या बाद में आने वाले हैं सब) **तीन क़िस्म के हो जाओगे** (ख़ास मोमिन, आम मोमिन और काफ़िर लोग)(7) **तो** (उन में एक) **जो दाहिने वाले हैं कैसे अच्छे हैं दाहिने वाले** (यानी जिनके आमाल नामे दाहिने हाथ में दिये जाएंगे यानी आम मोमिन लोग ख़ास भी उनमें शामिल हैं मगर उन का बयान अलग से है)(8) **और** (दूसरे) **जो बाएं वाले हैं वो बाएं वाले कैसे बुरे हैं** (यानी जिनके आमाल नामे बाएं हाथ में दिये जाएंगे यानी काफ़िर लोग)(9) **और** (तीसरे) **जो ऊंचे दर्जे के हैं वो तो ऊंचे दर्जे के ही हैं**(10) (और) **वो** (अल्लाह तआ़ला के साथ) **नज़दीकी रखने वाले** (हैं इसमें सभी ऊंचे दर्जे के नेक लोग दाख़िल) **हैं**(11) **ये** (अल्लाह के नज़दीकी) **लोग आराम के बाग़ों में होंगे**(12) **इन का बड़ा गिरोह तो पहले लोगों में से होगा**(13) **और थोड़े बाद के लोगों में से होंगे** (पहले लोगों से मुराद हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले के लोग और बाद वालों से मुराद बाक़ी क़ियामत तक के लोग)(14) **वो** (अल्लाह के नज़दीकी) **लोग सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर**(15) **तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे**(16) **और उनके पास** (ख़िदमत के लिए) **ऐसे लड़के फिरते होंगे जो सदा लड़के ही रहेंगे**(17) (वो लड़के आते जाते होंगे) **ऐसी शराब के पियाले, जग और जाम लेकर**(18) **जिससे उन को न सर दर्द होगा और न उस से उनके होश उड़ेंगे**(19) **और ऐसे फल जिन को वो पसन्द करें**(20) **और परिन्दों का गोश्त जो वो चाहेंगे**(21) **और उनके लिए गोरी-गोरी बड़ी आंखों वाली औरतें** (यानी हूरें) **होंगी**(22) (जिन का रंग ऐसा साफ़ होगा) **जैसे** (हिफ़ाज़त से) **छुपा कर रक्खा हुआ मोती**(23) **यह बदला होगा उनके नेक कामों का**(24) (और वो) **उस** (जन्नत) **में न बकवास सुनेंगे न बेहूदा बात** (सुनेंगे यानी शराब पीकर या वैसे भी ऐसी चीज़ें न पाई जाएंगी जो नागवारी हो)(25) **बस** (हर तरफ़ से) **सलाम ही सलाम की आवाज़ आएगी** (जो कि दलील इ़ज़्ज़त और ख़ुशी की है)(26) **और जो दाहिने वाले हैं वो दाहिने वाले कैसे अच्छे होंगे**(27) **वो उन बाग़ों में होंगे जहां बिना कांटों की बेरियां होंगी**(28) **और तह पर तह केले होंगे**(29) **और लम्बा-लम्बा साया होगा**(30) **और बहता हुआ**

पानी होगा(31) और बहुत सारे फल होंगे(32) जो न ख़त्म होंगे (जैसे दुनिया के फल फ़सल पूरी होने पर ख़त्म हो जाते हैं) **और न उन को रोक टोक होगी** (जैसे दुनिया में बाग़ वाले उसकी रोकथाम करते हैं)(33) **और ऊंचे-ऊंचे फ़र्श होंगे** (जिन पर बैठेंगे)(34) **हम ने** (वहां की) **उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है(35) यानी हमने उनको ऐसा बनाया है कि वो कुंवारियां हैं** (यानी मर्द से मिलाप के बाद फिर कुंवारी हो जाएंगी)(36) **मुहब्बत करने वाली** (और जन्नत वालों की) **हम उम्र हैं(37) ये सब चीज़ें दाहिने वालों के लिए हैं(38) इन** (दाहिने वालों) **का एक बड़ा गिरोह पहले लोगों में से होगा(39) और एक बड़ा गिरोह बाद वाले लोगों में से होगा(40) और** (आगे काफ़िरों और उनके अज़ाब का बयान है कि) **जो बाएं वाले हैं वो बाएं वाले कैसे बुरे हैं(41) वो लोग आग में होंगे और खौलते हुए पानी में(42) और काले धुंए के साये में(43) जो न ठन्डा होगा और न आराम देने वाला होगा** (यानी साये से आराम व ठन्डक और ख़ुशी मिलती है मगर उस में न होगी)(44) **वो लोग इससे पहले** (यानी दुनिया में) **बड़ी ख़ुशहाली में रहते थे(45) और** (इसलिए) **बड़े भारी गुनाह** (यानी शिर्क व कुफ़्र) **पर जमे रहते** (थे मतलब यह कि ईमान नहीं लाते) **थे(46) और यह कहा करते थे कि जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियां** (होकर) **रह गये तो क्या** (इसके बाद) **हम दोबारा ज़िन्दा किये जाएंगे(47) और क्या** (ज़िन्दा होंगे) **हमारे पहले बाप दादे भी(48)** (और यह सवाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के काफ़िर लोग भी करते थे इसलिए कहा गया कि ऐ पैग़म्बर) **आप कह दीजिए कि सब पहले और बाद वाले लोग(49) जमा किये जाएंगे एक तय दिन के वक़्त पर(50) फिर** (जमा होने के बाद) **तुम को ऐ गुमराहो झुटलाने वालो(51) ज़क़्क़ूम** (नाम के) **पेड़ से खाना होगा(52) फिर उससे पेट भरना होगा(53) फिर उस पर खौलता हुआ पानी पीना होगा(54) फिर पीना भी प्यासे ऊंटो का सा(55)** (बस) **उन लोगों की क़ियामत के दिन यह महमानी होगी(56)।**

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि "जो आदमी हर रात में सूरत वाक़िआः पढ़ा करे उसको कभी फ़ाक़ा नहीं होगा"। (इब्ने कसीर)

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿۵۷﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿۵۸﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿۵۹﴾ نَحْنُ
قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿۶۰﴾ عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَ
لَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿۶۲﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿۶۳﴾ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ
الزّٰرِعُوْنَ ﴿۶۴﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿۶۵﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿۶۷﴾
اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿۶۸﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿۶۹﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا
فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿۷۱﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ﴿۷۲﴾ نَحْنُ
جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿۷۳﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۷۴﴾

आयत नं० 57 से 74

हमने तुम को (पहली बार) **पैदा किया है** (जिस को तुम भी मानते हो) **तो फिर तुम** (तौहीद और क़ियामत की) **तस्दीक़ क्यों नहीं करते(57) अच्छा फिर यह बताओ तुम जो** (औरतों की बच्चे दानी में) **मनी** (की बून्द) **पहुंचाते हो(58) उस को तुम** (इन्सान) **बनाते हो या हम बनाने वाले** (हैं और साफ़ बात है कि हम ही बनाने वाले) **हैं(59) और हम ही ने तुम्हारे बीच में मौत को** (तय वक़्त पर) **ठहरा रक्खा है** (मतलब यह कि बनाना और उस बनाए हुए को ख़ास वक़्त तक बाक़ी रखना यह सब हमारा ही काम है) **और हम इससे लाचार नहीं हैं(60) कि तुम्हारी जगह तो तुम जैसे और** (आदमी) **पैदा कर दें और तुम को ऐसी सूरत बनादें जिन को तुम जानते भी** (नहीं यानी जैसे आदमी से जानवर की सूरत में बदल देना जिस का गुमान भी) **नहीं(61) और तुम अपनी पहली पैदाइश को जानते हो** (कि वो हमारी क़ुदरत से है) **फिर तुम क्यों नहीं समझते** (कि समझ कर इस नेमत का शुक्र अदा करो और क़ियामत में दोबारा ज़िन्दा होने का भी यक़ीन करलो)**(62) अच्छा फिर यह बताओ तुम जो कुछ** (बीज वग़ैरह ज़मीन में) **बोते हो(63) उस को तुम उगाते हो या हम उगाने वाले हैं** (यानी ज़मीन में बीज डालने में तो तुम्हारा कुछ हाथ है भी लेकिन उसको ज़मीन से निकालना यह किसका काम है)**(64) अगर हम चाहें तो उस** (पैदावार) **को चूरा-चूरा कर डालें फिर तुम भोंचक्के रह जाओ(65) कि** (अब के तो) **हम पर तावान ही पड़ गया** (यानी लागत भी गई)**(66) बिल्कुल ही महरूम रह** (गये यानी बेनसीब हो) **गये(67) अच्छा यह बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो(68) उस को बादलों से तुम बरसाते हो या हम**

बरसाने वाले हैं(69) (फिर उस पानी को पीने के क़ाबिल बनाना हमारी दूसरी नेमत है कि) **अगर हम चाहें उस को कड़वा कर डालें तो तुम शुक्र क्यों नहीं करते** (और बड़ा शुक्र तौहीद का यक़ीन व कुफ़्र का छोड़ना है)(70) **अच्छा फिर यह बताओ जिस आग को तुम सुलगाते हो**(71) **उस के पेड़ को** (या जिन चीज़ों से यह आग पैदा होती है उन चीज़ों को) **तुम ने पैद किया है या हम पैदा करने वाले हैं**(72) **हमने उस** (आग) **को** (दोज़ख़ की आग या अपनी क़ुदरत की) **यादगारी की चीज़** (बनाया है) **और मुसाफ़िरों** (और सब लोगों) **के लिए फ़ाइदे की चीज़ बनाया है**(73) **तो** (जिस की ऐसी क़ुदरत है) **अपने** (उस) **बड़ी शान वाले रब की तस्बीह कीजिए**(74)।

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿۷۵﴾ وَ اِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿۷۶﴾ اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿۷۷﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿۷۸﴾
لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿۷۹﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۰﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿۸۱﴾ وَ تَجْعَلُوْنَ
رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۸۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿۸۳﴾ وَ اَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ
مِنْكُمْ وَ لٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ فَلَوْ لَاۤ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿۸۶﴾ تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۸۷﴾ فَاَمَّاۤ اِنْ
كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ وَّ رَيْحَانٌ ۙ۬ وَّ جَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿۸۹﴾ وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۰﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ
مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿۹۱﴾ وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿۹۳﴾ وَّ تَصْلِيَةُ
جَحِيْمٍ ﴿۹۴﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿۹۵﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿۹۶﴾

आयत नं० 75 से 96

(और तुम जो इस क़ुरआन को नहीं मानते जिसमें क़ियामत में ज़िन्दा हेकर उठने की ख़बर है) **तो मैं क़सम खाता हूं सितारों के छुपने की**(75) **और अगर तुम समझो तो यह एक बड़ी क़सम है**(76) (और क़सम इस बात की खाता हूं कि) **यह** (क़ुरआन जो पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरता है अल्लाह की तरफ़ से उतरने की वजह से) **बड़ी इज़्ज़त वाला क़ुरआन है**(77) **जो एक हिफ़ाज़त की किताब** (यानी तक़दीर की किताब) **में** (पहले से) **लिखा है**(78) (और वो किताब ऐसी है कि) **सिवाए उसको पाक फ़रिशतों के** (कि गुनाहों से बिल्कुल पाक हैं) **कोई** (शैतान वग़ैरह) **हाथ नहीं लगाने पाता** (इस की आयतों पर ख़बरदार होना तो दूर की बात है बस वहां से आना ख़ास फ़रिशते ही के वास्ते से है और ये ही पैग़म्बरी है और शैतान इसको ला नहीं सकते)(79)

बस (साबित हुआ कि) **यह सारे जहानों के रब का भेजा हुआ है(80) तो** (जब इसका अल्लाह की तरफ़ से आना साबित है तो) **क्या तुम लोग इस कलाम से बेपरवाई करते हो** (और इसकी तस्दीक़ नहीं करते)(81) **और तुमने इसी को अपना रोज़गार बना लिया है कि** (इस को) **झुटलाते** (हो और तौहीद व क़ियामत का भी इनकार करते) **हो(82) तो** (अगर यह इनकार सच है तो) **जिस वक़्त** (मरने के नज़दीक किसी आदमी की) **रूह हलक़ तक आ पहुंचती है(83) और तुम उस वक़्त** (पास बैठे मजबूर) **तका करते हो(84) और हम** (उस वक़्त) **उस** (मरने वाले) **आदमी के तुम से भी ज़्यादा नज़दीक होते** (हैं यानी तुम से भी ज़्यादा उस आदमी के हाल को जानते हैं क्योंकि तुम सिर्फ़ बाहरी हालत को देखते हो और हम उस की अन्दर की हालत को भी जानते) **हैं लेकिन तुम** (इस बात को अपनी जहालत व कुफ़्र की वजह से) **समझते नहीं हो(85) तो** (असलीयत में) **अगर तुम्हारा हिसाब-किताब होने वाला नहीं है** (जैसा तुम समझते हो)(86) **तो तुम उस रूह को** (बदन की तरफ़) **फिर क्यों नहीं लौटा लाते हो** (जिस की उस वक़्त तुम को तमन्ना भी हुआ करती है) **अगर** (इस क़ियामत के इनकार में) **तुम सच्चे हो(87)** (यह तो साबित हो चुका कि क़ियामत अपने वक़्त पर ज़रूर आएगी) **फिर** (जब क़ियामत आएगी तो) **जो आदमी अल्लाह का नज़दीकी होगा** (जिनका ऊपर बयान हुआ है)(88) **उसके लिए तो चैन है और** (इ़ज़्ज़त की) **रोज़ी और आराम की जन्नत है(89) और जो आदमी दाहिने वालों में से होगा** (जिनका ऊपर ज़िक्र आया है)(90) **तो उस से कहा जाएगा कि तेरे लिए** (हर आफ़त और ख़तरे से) **सलामती है कि तू दाहिने वालों में से है(91) और जो आदमी झुटलाने वालों** (और) **गुमराहों में से होगा(92) तो खौलते हुए पानी से उसकी दावत होगी(93) और दोज़ख़ में दाख़िल होना होगा(94) बेशक यह** (जो कुछ बताया गया) **बिल्कुल सच** (और) **यक़ीनी बात है(95) तो** (जिस की ऐसी क़ुदरत है) **अपने** (उस) **बड़ी शान वाले रब के नाम की तस्बीह कीजिए(96)।**

नोटः- एक हदीस में है कि क़ुरआन को वो आदमी न छुए जो पाक न हो । (इब्ने कसीर)

मसअलाः- बेवुज़ू या नापाकी की हालत में क़ुरआन को छूना जाइज़ नहीं अलबत्ता बेवुज़ू बिना छुए पढ़ना जाइज़ है लेकिन नापाकी की हालत में पढ़ना भी जाइज़ नहीं । (मज़हरी)

मसअलाः- क़ुरआन मजीद का ग़िलाफ़ जो जिल्द के साथ सिला हुआ हो उसको भी बिना वुज़ू हाथ

लगाना जाइज़ नहीं अलबत्ता कुरआन मजीद का जुज़दान जो अलग कपड़े का होता है अगर उसमें कुरआन बन्द है तो उस जुज़दान के साथ कुरआन करीम को हाथ लगाना बिना वुज़ू इमाम अबु हनीफ़ा रह० के नज़दीक जाइज़ है मगर इमाम मालिक रह० और इमाम शाफ़ई रह० के नज़दीक ये भी नाजाइज़ है । (मज़हरी)

मसअलाः- जो कपड़ा आदमी ने पहना हुआ है उसकी आसतीन या दामन से कुरआन मजीद को बिना वुज़ू छूना जाइज़ नहीं । अलबत्ता अलग रूमाल या चादर से छुआ जा सकता है । (मज़हरी)

57-सूरत-हदीद

इस मदनी सूरत में '4' रूकू और '29' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢ هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٣ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا
يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاۗءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٤ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٥ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۭ وَهُوَ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

अल्लाह की तस्बीह करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में (मख़्लूक़) **हैं, और वो ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **हिकमत वाला है(1) उसी का राज है आसमानों और ज़मीन में, वो ही ज़िन्दगी देता है और** (वो ही) **मौत देता है, और वो ही हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है(2) वो ही** (सब मख़्लूक़ से) **पहले है और वो ही** (सब के फ़ना होने के) **बाद** (भी रहेगा) **और वो ही** (अपने वजूद के सबूतों से) **सामने है और वो ही** (अपनी ज़ात में बहुत) **छुपा है** (यानी कोई उस की ज़ात को नहीं जान सकता)**, और वो हर चीज़ का पूरी तरह जानने वाला है(3)** (और) **वो ऐसा** (कुदरत वाला) **है कि उसने आसमान और ज़मीन को छः दिन** (के बराबर वक़्त) **में पैदा किया फिर अर्श पर** (अपनी शान के लाइक़) **क़ाइम हुआ,** (और) **वो सब कुछ जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाख़िल होती है** (जैसे बारिश) **और जो चीज़ उसमें से निकलती है** (जैसे पेड़ पौधे) **और जो चीज़ आसमान से उतरती है और जो चीज़ चढ़ती है** (जैसे फ़रिशते उतरते चढ़ते हैं और हुक्म जो उतारे जाते हैं और बन्दों के किये काम और इबादतें

चढ़ते हैं), **और वो** (हर बात की ख़बर रखता है और हर वक़्त) **तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम लोग कहीं भी हो** (यानी तुम किसी जगह उससे छुप नहीं सकते), **और वो तुम्हारे सब कामों को भी देखता है**(4) **उसी की हुकूमत है आसमानों और ज़मीन की, और अल्लाह की तरफ़ सब काम लौट जाएंगे** (यानी क़ियामत में पेश हो जाएंगे इसी में तौहीद के साथ क़ियामत का भी सबूत हो गया)(5) **वो ही रात** (के कुछ हिस्से) **को दिन में दाख़िल करता है** (जिससे दिन बड़ा हो जाता है) **और वो ही दिन** (के कुछ हिस्से) **को रात में दाख़िल करता** (है जिस से रात बड़ी हो जाती) **है, और** (इस कुदरत के साथ उसका इल्म ऐसा है कि) **वो दिलों की बातों** (तक) **को जानता है**(6)

नोटः- सूरत "हदीद" से लेकर सूरत "तग़ाबुन" तक पांचों सूरतों को मुसब्बिहात कहते हैं । तिरमिज़ी में हज़रत अरबाज़ रजि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को सोने से पहले ये मुसब्बिहात पढ़ा करते थे।

اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ اَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ اَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ
كَبِيْرٌ ۝ وَ مَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَ قَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖۤ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَ مَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ
اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْا ؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
الْحُسْنٰى ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَ لَهٗۤ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝

आयत नं० 07 से 11

तुम लोग अल्लाह पर और उसके पैग़म्बर पर ईमान लाओ और (ईमान लाकर) **जिस माल में तुम को उसने दूसरों का वारिस बनाया है उसमें से** (उसकी राह में) **ख़र्च** (करो इस में इस तरफ़ इशारा है कि यह माल तुम से पहले किसी और के पास था और तुम्हारे बाद किसी दूसरे के पास चला जाएगा बस जब यह सदा रहने वाली चीज़ नहीं तो इस को जोड़-जोड़ कर रखने से बेहतर है कि ज़रूरी कामों में ख़र्च) **करो, तो** (इस हुक्म के मुवाफ़िक़) **जो लोग तुम में से ईमान ले आएं और** (ईमान लाकर अल्लाह की राह में) **ख़र्च करें उन को बड़ा सवाब है**(7) **और** (जो लोग ईमान

न लाएं उनसे हम पूछते हैं कि) **तुम्हारे लिए कौन सी वजह है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते** (इसी में पैग़म्बर पर ईमान लाना भी आगया) **हालांकि** (ईमान लाने के सबूत मौजूद हैं वो यह कि) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन की पैग़म्बरी दलीलों से साबित है) **तुम को इस बात की तरफ़ बुला रहे हैं कि तुम अपने रब पर** (उसी के बताए तरीक़े पर) **ईमान लाओ और** (दूसरी बात यह कि) **ख़ुद अल्लाह ने तुम से** (ईमान लाने का मीसाक़ में) **एहद लिया था** (जिसका कुछ असर तुम्हारी फ़ितरत में भी मौजूद है और अल्लाह के रसूल जो कि मोजिज़े और दलीलें लेकर आए उन्होंने भी इसको याद दिलाया तो) **अगर तुम को ईमान लाना** (हो तो ये सबूत काफ़ी हैं वर्ना फिर ईमान लाने के लिए किस बात का इन्तिज़ार करते) **हो**(8) (और) **वो ऐसा** (महरबान) **है कि अपने** (ख़ास) **बन्दे** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर साफ़-साफ़ आयतें भेजता है ताकि वो** (ख़ास बन्दा) **तुम को** (कुफ़्र व जहालत के) **अन्धेरों से** (ईमान और इल्म की) **रौशनी की तरफ़ लाए, और बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारा हमदर्द और तुम पर महरबान है** (कि उसने ऐसा अन्धेरियों से निकालने वाला तुम्हारी तरफ़ भेजा)(9) **और तुम्हारे लिए कौन सी वजह है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते हालांकि सब आसमान व ज़मीन आख़ीर में अल्लाह ही का रह जाएगा** (जब सब मालिक मर जाएंगे और वो ही रह जाएगा बस जब सब माल एक दिन छोड़ना है तो ख़ुशी से क्यों न दिया जाए कि सवाब भी हो, आगे ख़र्च करने वालों के दर्जों का बयान है कि) **जो लोग मक्के की जीत से पहले** (अल्लाह के रास्ते में) **ख़र्च कर चुके और** (अल्लाह के रास्ते में) **लड़ चुके** (और जो कि मक्के की जीत के बाद लड़े और ख़र्च किया दोनो) **बराबर नहीं,** (बल्कि) **वो लोग दर्जे में उन लोगों से बड़े हैं जिन्होंने** (मक्के की जीत के) **बाद में ख़र्च किया और लड़े, और** (वैसे) **अल्लाह तआ़ला ने भलाई** (यानी सवाब) **का वादा सब से कर रक्खा है, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है** (इसलिए सवाब दोनो वक़्त के कामों पर देंगे)(10) **कोई आदमी है जो अल्लाह तआ़ला को अच्छी तरह** (यानी सच्चे मन से) **क़र्ज़ के तौर पर दे फिर अल्लाह तआ़ला उस** (दिये हुए सवाब) **को उस आदमी के लिए बढ़ाता चला जाए और उसको इ़ज़्ज़त का सवाब मिले**(11)।

नोटः- अल्लाह तआ़ला ने लोगों के पैदा होने से पहले ही वजूद में आने वाली सभी रूहों को जमा करके उनसे अपने रब और माबूद होने का इक़रार और एहद लिया था इसको मीसाक़ कहते हैं जिसका ज़िक्र क़ुरआन में "अलस्तु बिरब्बिकुम क़ालू बला" अलफ़ाज़ में आया है।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۲﴾ يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَ الْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ
بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَ ظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ لٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ
اَنْفُسَكُمْ وَ تَرَبَّصْتُمْ وَ ارْتَبْتُمْ وَ غَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَ غَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْيَوْمَ لَا
يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّ لَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ يَاْنِ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَ مَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ لَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ
فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾ اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَ الْمُصَّدِّقٰتِ وَ اَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ
لَهُمْ وَ لَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿۱۸﴾ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَ الشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ
لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَ نُوْرُهُمْ ؕ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿۱۹﴾

आयत नं० 12 से 19

(वो दिन भी याद कीजिए) **जिस दिन आप मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को देखेंगे कि उनका नूर उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ़ दौड़ता** (होगा यह नूर पुलसिरात पर से गुज़रने के लिए उन के साथ) **होगा** (और उनसे कहा जाएगा कि) **आज तुम्हें ख़ुशख़बरी है ऐसे बाग़ों की जिनके नीचे नहरें बहती होंगी जिनमें वो सदा रहेंगे,** (और) **यह बड़ी कामयाबी है(12)** (और यह वो दिन होगा) **जिस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मुसलमानों से** (पुलसिरात पर) **कहेंगे कि** (ज़रा) **हमारा इन्तिज़ार करलो कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रौशनी हासिल करलें** (यह उस वक़्त होगा जब कि मुसलमान अपने किये कामों व ईमान की बरकत से बहुत आगे बढ़ जाएंगे और मुनाफ़िक़ अन्धेरे में पीछे रह जाएंगे वो मुसलमानों से ठहरने के लिए कहेंगे) **उन को जवाब दिया जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ फिर** (वहां से) **रौशनी तलाश करो** (यानी जहां नूर बांटा गया था वहां जाकर लो वो उधर जाएंगे जब वहां भी कुछ न मिलेगा फिर इधर ही आएंगे), **फिर** (मुसलमानो के पास न पहुंच सकेंगे बल्कि) **उन के** (और मुसलमानों के) **बीच में**

एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा (भी) **होगा, जिसके अन्दर की तरफ़ रहमत होगी और बाहर की तरफ़ अज़ाब होगा** (यानी अन्दर की तरफ़ जन्नत और बाहर की तरफ़ दोज़ख़ होगी)(13) **ये** (मुनाफ़िक़) **उन** (मुसलमानों) **को पुकारेंगे कि क्या** (दुनिया में) **हम तुम्हारे साथ न थे** (यानी दीन के कामों और इबादतों में तुम्हारे साथ रहा करते थे तो आज भी दोस्ती करना चाहिए), **वो** (मुसलमान) **कहेंगे कि** (हां) **थे तो सही लेकिन** (ऐसा होना किस काम का क्योंकि सिर्फ़ दिखावे में साथ थे और दिल की हालत तुम्हारी यह थी कि) **तुम ने अपने को गुमराही में फंसा रक्खा था और** (वो गुमराही यह थी कि तुम पैग़म्बर और मुसलमानो से दुशमनी रखते थे और उन पर मुसीबत आने के) **तुम इन्तिज़ार** (और तमन्ना) **में रहा करते थे और** (इस्लाम के सच्चा दीन होने में) **तुम शक करते थे और तुम को तुम्हारी झूटी तमन्नाओं ने धोके में डाल रक्खा था** (कि इस्लाम मिट जाएगा और यह कि हमारा मज़हब सच्चा है) **यहां तक कि तुम पर अल्लाह का हुक्म आपहुंचा** (यानी मौत आ पहुंची और तौबा भी न की) **और तुम को धोका देने वाले** (यानी शैतान) **ने अल्लाह के साथ धोके में डाल रक्खा था** (वो यह कि अल्लाह तआ़ला हमारी पकड़ न करेगा बस इन कुफ़्र की बातों की वजह से तुम्हारा दिखावे का साथ बख़शिश के लिए काफ़ी नहीं)(14) **बस आज न तुम से कोई बदला लिया जाएगा और न काफ़िरों से** (एक तो बदला देने के लिए तुम्हारे पास कोई चीज़ है नहीं लेकिन मानलो अगर होती तब भी जुर्माने में न ली जाती क्योंकि यह फ़ैसले की जगह है इबादतों की नहीं, और) **तुम सब का ठिकाना दोज़ख़ है, वो ही तुम्हारी** (सदा के लिए) **साथी है, और वो** (असल में) **बुरा ठिकाना है**(15) **क्या ईमान वालों** (में से जो लोग ज़रूरी इबादतों में कमी करते हैं जैसे गुनाहगार मुसलमान उन) **के लिए** (अब भी) **इस बात का वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत और जो सच्चा दीन** (अल्लाह की तरफ़ से) **उतरा है उसके सामने झुक जाएं** (यानी दिल से ज़रूरी इबादतों की पाबन्दी और गुनाहों के छोड़ने का इरादा कर लें) **और उन लोगों की तरह न हो जाएं जिनको इनसे पहले** (आसमानी) **किताब मिली थी** (यानी यहूदी व ईसाई कि वो अपनी किताबों को छोड़ कर गुनाहों में लग गये) **फिर** (उसी हालत में) **उन को एक लम्बा ज़माना गुज़र गया** (और तौबा न की) **फिर** (इस तौबा न करने से) **उन के दिल** (बहुत ही) **सख़्त हो गये** (कि पछतावा भी न होता था), **और** (इस की नौबत यहां तक पहुंची कि उसी सख़्ती की वजह से) **बहुत से आदमी उनके** (आज) **काफ़िर हैं** (मतलब यह कि मुसलमान को जल्द तौबा कर लेनी चाहिए क्योंकि कभी-कभी फिर तौबा की तौफ़ीक़ नहीं रहती और कभी-कभी कुफ़्र तक नौबत पहुंच जाती है)(16) **अच्छी तरह जान लो कि अल्लाह तआ़ला** (की ऐसी

शान है कि वो) **ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने** (यानी सूख जाने) **के बाद ज़िन्दा** (यानी हरा भरा) **कर देता** (है बस इसी तरह तौबा से मुर्दा दिल को ज़िन्दा और ठीक कर देता) **है,** (बस मायूस न होना चाहिए क्योंकि) **हमने तुम से** (इसकी) **निशानियां** (खोल कर) **बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो(17) बेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें और ये** (ख़ैरात करने वाले) **अल्लाह को सच्चे मन के साथ क़र्ज़ दे रहे हैं उस ख़ैरात** (के सवाब) **को उनके लिए बढ़ा दिया जाएगा और** (बढ़ाने के साथ) **उनके लिए इज़्ज़त का बदला है(18) और जो लोग अल्लाह पर और उसके पैग़म्बरों पर** (पूरा) **ईमान रखते हैं** (यानी दिल से ईमान के साथ हुक्मों की पाबन्दी पूरी करते हैं) **ऐसे ही लोग अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शहीद हैं** (यानी उन का दर्जा ऐसा है)**, उनके लिए** (जन्नत में) **उन का** (ख़ास) **बदला और** (पुल सिरात पर) **उनका** (ख़ास) **नूर होगा, और** (आगे काफ़िरों का बयान है कि) **जो लोग काफ़िर हुए और हमारी आयतों को झुटलाया ये ही लोग दोज़ख़ी हैं(19)**

नोटः- पुल सिरात के पास अल्लाह तआला हर मोमिन को नूर देंगे और हर मुनाफ़िक़ को भी मगर जिस वक़्त ये पुल सिरात पर पहुंच जाएंगे तो मुनाफ़िक़ों का नूर छीन लिया जाएगा। और यह नूर दुनिया के नूर की तरह नहीं होगा कि उससे दूसरा भी फ़ाइदा उठा सके बल्कि जिस तरह कोई अन्धा आदमी दूसरे की आंखों की रोशनी से फ़ाइदा नहीं उठा सकता इसी तरह मोमिनों के उस नूर से कोई काफ़िर या फ़ासिक़ फ़ाइदा नहीं उठा सकेगा। (इब्ने कसीर)

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ
غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ۭ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ
مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ۭ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾ سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ
عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ
وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾

आयत नं० 20 से 21

तुम अच्छी तरह जान लो कि (आख़रत के मुक़ाबिले में) **दुनिया की ज़िन्दगी** (हरगिज़ तवज्जो की चीज़ नहीं क्योंकि) **वो सिर्फ़ खेल तमाशा और** (एक दिखावे की सजावट) **और आपस में एक दूसरे पर बड़ाई जिताना** (ताक़त व हुस्न में और दुनिया के हुनर व कमाल में) **और माल और औलाद में एक का दूसरे से अपने को ज़्यादा बताना** (है यानी दुनिया की असलीयत यह है कि बचपन खेल कूद में और जवानी सिंगार व बड़प्पन में और बुढ़ापे में माल व औलाद को गिनवाना और यह सब फ़ना हो जाने वाला) **है,** (जिस की मिसाल ऐसी है) **जैसे बारिश** (का बरसना) **है कि उस की पैदावार** (खेती) **किसान को अच्छी लगती है फिर वो** (खेती) **सूख जाती है तो उस को तुम पीली देखते हो फिर वो चूरा-चूरा हो जाती** (है इसी तरह दुनिया कुछ दिनों की बहार) **है, और आख़रत** (की हालत यह है कि उस) **में** (दो चीज़ें हैं एक तो काफ़िरों के लिए) **सख़्त अज़ाब है और** (दूसरी ईमान वालों के लिए) **अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और रज़ामन्दी** (है और ये दोनो बाक़ी हैं बस आख़रत तो बाक़ी) **है, और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़** (फ़ना हो जाने वाली है जैसे मान लो कि एक) **धोके का सामान है(20)** (बस जब दुनिया फ़ना हो जाने वाली और आख़रत बाक़ी रहने वाली है जो ईमान से नसीब होती है तो तुम को चाहिए कि) **तुम अपने रब की बख़्शिश की तरफ़ दौड़ो और ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसका फैलाव आसमान और ज़मीन के फैलाव के बराबर है** (और) **वो उन लोगों के वास्ते तैयार की गई है जो अल्लाह पर और उसके पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं,** (और) **यह** (बख़्शिश और रज़ामन्दी) **अल्लाह की महरबानी है वो अपनी महरबानी जिसको चाहे दे, और अल्लाह बड़ी महरबानी वाला है** (यानी अपने नेक कामों पर ग़ुरूर न हो बल्कि अल्लाह की महरबानी पर नज़र रक्खे)(21)

नोटः- जन्नत की तरफ़ दौड़ने से मुराद नेक कामों में कोशिश करना है। जैसा कि हज़रत अली रज़ि० ने अपनी नसीहतों में फ़रमाया कि तुम मस्जिद में सबसे पहले जाने वाले और सब से आख़िर में निकलने वाले बनो। (रूह)

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرٌ ۚ﴿۲۲﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۙ﴿۲۳﴾ اِلَّذِيْنَ
يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۴﴾ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا

بِالْبَيِّنٰتِ وَ اَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَ اَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّ
مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَ رُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿25﴾

आयत नं० 22 से 25

कोई मुसीबत जो दुनिया में आती है या ख़ास तुम्हारी जानों में वो (सब) **एक किताब** (यानी तक़दीर की किताब) **में लिखी है** (उस वक़्त से) **जब कि हमने उन जानों को पैदा भी नहीं किया** (था यानी लोगों को पैदा करने से पहले ही तक़दीर की किताब में सब कुछ लिख दिया) **था,** (और होने से पहले किताब में लिख देना) **यह अल्लाह के नज़दीक आसान काम है**(22) (और हमने यह बात इसलिए बता दी है) **ताकि जो चीज़ तुम से जाती रहे** (माल औलाद या तन्दरूस्ती) **तुम उस पर** (ज़्यादा) **ग़म न करो** (कि दीन के कामों में रूकावट बन जाए) **और ताकि जो चीज़ तुम को दी है** (उसके बारे में ये ही समझ कर कि अल्लाह तआला ने अपनी महरबानी से हम को दी है) **उस पर इतराओ नहीं, और अल्लाह किसी इतराने वाले शेख़ीबाज़ को पसन्द नहीं करता**(23) (आगे कन्जूसी की बुराई है कि) **जो ऐसे हैं कि** (दुनिया की मुहब्बत की वजह से) **ख़ुद भी** (अल्लाह को पसन्द बातों में ख़र्च करने से) **कन्जूसी करते हैं** (चाहे अपनी मनचाही बातों व गुनाहों में कितना ही ख़र्च करें) **और** (यह गुनाह भी करते हैं कि) **दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं, और** (ये ही दुनिया की मुहब्बत कभी दीन से भी हटा देती है जिसके बारे में यह धमकी है कि) **जो आदमी** (सच्चे दीन से) **मुंह मोड़ेगा तो अल्लाह तआला** (का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि उस) **को किसी** (के मालों और इबादत) **की ज़रूरत नहीं** (और) **वो** (ख़ुद अपनी ज़ात में) **तारीफ़ के क़ाबिल है**(24) **हमने** (इसी आख़रत के सुधार के लिए) **अपने पैग़म्बरों को खुली निशानियां देकर भेजा और हमने उनके साथ किताब को और** (उस किताब में ख़ास कर) **इन्साफ़ करने** (के हुक्म) **को उतारा ताकि लोग** (अल्लाह और बन्दों के हक़ों के बारे में) **इन्साफ़ पर रहें** (इसमें सारी शरीअत आ गई)**, और हमने लोहे को पैदा किया है जिसमें सख़्त रौब** (रक्खा) **है** (ताकि इससे दुनिया का इन्तिज़ाम ठीक रहे कि डर से बहुत सी बुराइयां दूर होती हैं) **और लोगों के दूसरे फ़ाइदे भी हैं** (जैसे बहुत से औज़ार लोहे से बनते हैं) **और** (इस लिए लोहा पैदा किया) **ताकि अल्लाह तआला** (खुले तौर पर) **जान ले कि** (उस अल्लाह को) **बेदेखे उस की और उसके पैग़म्बरों की** (यानी दीन की) **कौन मदद करता** (है क्योंकि जिहाद में भी काम आता है तो यह भी आख़रत का नफ़ा) **है,** (और जिहाद का हुक्म इस लिए नहीं कि अल्लाह तआला उस का मुहताज है क्योंकि) **अल्लाह तआला**

(ख़ुद) **ज़बरदस्त ताक़त वाला** (है बल्कि तुम्हारे सवाब के लिए) **है**(25)।

नोटः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया कि हर इन्सान अपनी फ़ितरत से कुछ चीज़ों से ख़ुश होता है कुछ से दुखी। लेकिन होना यह चाहिए कि जिस को कोई मुसीबत पेश आए वो उस पर सब्र करके आख़रत का सवाब कमाए। और जो कोई आराम व ख़ुशी पेश आए वो उस पर शुक्र गुज़ार होकर सवाब हासिल करे। (हाकिम)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّ اِبْرٰهِيْمَ وَ جَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَ الْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ
فٰسِقُوْنَ ۝٢٦ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَ قَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَ اٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَ جَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّ رَحْمَةً ؕ وَ رَهْبَانِيَّةَ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا
حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَ كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٢٧ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَ
اٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝٢٨ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ
يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٢٩

आयत नं० 26 से 29

और हमने (लोगों के इसी आख़रत के सुधार के लिए) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **और इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को पैग़म्बर बनाकर भेजा और हमने उनकी औलाद में पैग़म्बरी और किताब जारी रक्खी** (यानी उनकी औलाद में भी कुछ पैग़म्बर और उनमें से कुछ किताब वाले पैग़म्बर बनाए) **तो** (जिन लोगों के पास ये पैग़म्बर आए) **उन लोगों में से कुछ तो सीधे रास्ते पर आए और बहुत से उनमें कहना मानने वाले न थे।**(26) **फिर उनके बाद और पैग़म्बरों को एक के बाद दूसरे भेजते रहे** (जैसे मूसा अलैहिस्सलाम के बाद तौरेत के हुक्मों की पाबन्दी कराने के लिए बहुत से पैग़म्बर आए) **और उनके बाद** (फिर शरीअत के साथ) **मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिस्सलाम) **को भेजा और हमने उन को इन्जील दी और** (उनकी उम्मत में दो क़िस्म के लोग हुए एक उनका कहना मानने वाले यानी उन पर ईमान लाने वाले और दूसरे इनकार करने वाले और) **जिन लोगों ने उनका कहना माना** (यानी पहली क़िस्म के लोग) **हमने उनके दिलों में** (एक दूसरे के साथ) **हमदर्दी और रहम दिली पैदा कर दी, और** (हमारी तरफ़ से तो उन लोगों को सिर्फ़ हुक्मों पर चलने का हुक्म

हुआ था लेकिन उनमें कुछ वो हुए कि) **उन्होंने रहबानियत** (यानी दुनिया को छोड़ कर जोगी बन जाने के तरीक़े) **की ख़ुद नई बात निकाली** (इरादा तो यह था कि जब लोगों के बीच रह कर शरीअत पर चलना मुश्किल हो रहा है तो दुनिया से बिल्कुल अलग होकर एक तरफ़ इबादत करेंगे) **हमने उन पर इस को वाजिब न किया था लेकिन उन्होंने अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के वास्ते** (अपने दीन को बचाए रखने के लिए) **इसको अपना लिया था तो** (फिर उन राहिबों यानी जोगियों में ज़्यादा वो हुए कि) **उन्होंने उस** (रहबानियत) **को पूरी तरह न निबाहा** (यानी सूरत तो राहिबों की बना ली और अपनी मनमर्ज़ी की बातों पर चलते रहे)**, तो** (उन राहिबों में जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हुए उन पर ज़रूरी था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाएं तो) **उनमें से जो** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर) **ईमान लाए हमने उनको उन का सवाब** (वादा किया हुआ) **दिया** (मगर ऐसे कम थे) **और ज़्यादा उनमें नाफ़रमान हैं** (कि आप पर ईमान नहीं लाए)(27) **ऐ** (ईसा अलैहिस्सलाम पर) **ईमान रखने वालो तुम अल्लाह से डरो और उसके रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **पर ईमान ले आओ अल्लाह तआ़ला तुम को अपनी रहमत से** (सवाब के) **दो हिस्से देगा और तुम को ऐसा नूर देगा कि तुम उसको लिए हुए चलते फिरते होंगे** (यानी ऐसा ईमान देगा जो हर वक़्त साथी रहेगा यहां से पुल सिरात तक) **और तुम को बख़्श देगा** (क्योंकि इस्लाम लाने से कुफ़्र के दिनों के सब गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं)**, और अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है**(28) (और ये दौलतें तुम को इसलिए देगा) **ताकि** (क़ियामत के दिन) **किताब वालों को** (यानी जो ईमान नहीं लाए उनको) **यह बात मालूम हो जाए कि वो लोग अल्लाह की महरबानी के किसी हिस्से को** (बिना ईमान लाए) **पा नहीं सकते और** (यह भी मालूम हो जाए कि) **महरबानी अल्लाह के हाथ में है वो जिसको चाहे देदे** (बस मुसलमानों को चाहा तो उन्हीं को दी)**, और अल्लाह तआ़ला बड़ी महरबानी वाले** (हैं मतलब यह कि उनका ग़रूर टूट जाए कि वो इस हालत में भी अपने को महरबानी और बख़्शिश का हक़दार समझते) **हैं**(29)।

नोटः- ऊपर आयत से मालूम हो गया कि किताब वाले जो सिर्फ़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर तो ईमान रक्खें मगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न रक्खें इस हालत में वो अल्लाह की किसी महरबानी के हक़दार नहीं जब तक आख़री नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान न ले आएं।

58-सूरत-मुजादिला

इस मदनी सूरत में '3' रूकू और '22' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَ تَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَ اللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝١ اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ؕ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ وَلَدْنَهُمْ ؕ وَ
اِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَ زُوْرًا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ۝٢ وَ الَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ؕ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٣
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ؕ
ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَ قَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٥ يَوْمَ
يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَ نَسُوْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

नोटः- इस सूरत की शुरू की आयतें उतरने की वजह एक ख़ास क़िस्सा है कि एक बार हज़रत औस ने अपनी बीवी हज़रत ख़ौला को यह कह दिया कि तू मेरे लिए मेरी मां जैसी है यानी हराम है इसको ज़िहार कहते हैं। इस्लाम से पहले अगर कोई अपनी बीवी को ज़िहार कर दे तो वो औरत अपने शौहर के लिए सदा के लिए हराम हो जाती थी फिर निकाह की कोई सूरत न थी। हज़रत ख़ौला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास इसका शरई हुक्म जानने के लिए पहुंची उस वक़्त इस बारे में कोई हुक्म नहीं आया था। हज़रत ख़ौला कहती रहीं कि जब मेरे शौहर ने तलाक़ का नाम भी नहीं लिया तो तलाक़ कैसे हो जाएगी। उनके बार-बार सवाल करने को बहस कहा गया। फिर वो अल्लाह तआला से अपनी परीशानी की फ़रियाद करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं:-

बेशक अल्लाह तआला ने उस औरत की बात सुन ली जो आपसे अपने शौहर के बारे में बहस कर रही थी और (अपने दुःख व ग़म की) **अल्लाह तआला से फ़रियाद करती थी, और अल्लाह तआला तुम दोनों की बातें सुन रहा था,** (और) **अल्लाह तआला** (तो) **सब कुछ सुनने वाला सब कुछ देखने वाला है** (तो उसकी बात को कैसे न सुनता)(01) **तुम में जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं** (जैसे कह देते हैं कि तू मेरी मां की जगह है तो यह कहने से) **वो** (बीवियां) **उनकी माएं नहीं** (हो जाती) **हैं, उनकी माएं तो बस वो ही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया है, और वो** (जो कि बीवियों को मां कह देते हैं) **बेशक एक बुरी और झूट बात कहते हैं** (इसलिए गुनाह ज़रूर होगा), **और** (अगर इस ग़लती को सुधार लें और इस गुनाह की मुआफ़ी चाहें तो वो गुनाह मुआफ़ भी हो जाएगा क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआला मुआफ़ कर देने वाले बख़्श देने वाले हैं**(02) **और जो लोग अपनी बीवियों के साथ ज़िहार करते हैं फिर अपनी कही हुई बात को लौटाना चाहते हैं** (यानी बीवियों से मिलाप चाहते हैं) **तो उनके ज़िम्मे एक ग़ुलाम या बान्दी का आज़ाद करना है इससे पहले कि दोनो** (मियां-बीवी) **आपस में मिलाप करें, इस** (जुर्माने का हुक्म करने) **से तुम को नसीहत की जाती है** (ताकि आगे को ध्यान रक्खें), **और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है**(03) **फिर जो कोई ऐसा न कर सके** (कि ग़ुलाम, बान्दी आज़ाद करे) **तो उस के ज़िम्मे लगातार दो महीने के रोज़े हैं इससे पहले कि दोनो** (मियां बीवी) **आपस में मिलाप करें फिर जिससे यह भी न हो सके तो उसके ज़िम्मे साठ ग़रीबों को खाना खिलाना है, यह हुक्म इसलिए** (बयान किया गया) **है ताकि** (इस हुक्म से जुड़ी भलाइयां पाने के अलावा) **अल्लाह और रसूल पर ईमान** (भी) **ले आओ** (यानी उन हुक्मों की तस्दीक़ भी करो कि ईमान से जुड़े फ़ाइदे भी हासिल हों), **और ये अल्लाह की** (बान्धी हुई) **हदें** (हैं यानी अल्लाह के क़ानून) **हैं, और काफ़िरों के लिए** (जो कि इन हुक्मों की तस्दीक़ नहीं करते ख़ासकर) **सख़्त दर्दनाक अज़ाब होगा**(04) (और कुछ इसी हुक्म की बात नहीं बल्कि) **जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं** (चाहे किसी हुक्म में करें जैसे मक्के के काफ़िर) **वो** (दुनिया में भी) **ऐसे रूसवा होंगे जैसे इन से पहले लोग रूसवा हुए** (जैसा कि कई जंगों में ऐसा ही हुआ) **और** (सज़ा कैसे न हो क्योंकि) **हमने साफ़-साफ़ आयतें उतारी हैं** (तो उनके इनकार पर सज़ा होनी ज़रूरी है), **और** (यह सज़ा तो दुनिया में होगी और) **काफ़िरों को** (आख़रत में भी) **रूसवाई का अज़ाब होगा**(05) (और यह अज़ाब उस दिन होगा) **जिस दिन उन सब को अल्लाह तआला दोबारा ज़िन्दा करेगा फिर उन सब का किया हुआ उनको बता देगा,** (क्योंकि) **अल्लाह तआला ने उसको**

लिख कर रक्खा है और ये लोग उस को भूल गये हैं, और अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर ख़बरदार है (चाहे उनके काम हों या और कुछ हो)(06)।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِن نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ
إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنٰى مِن ذٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝٧ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَ
يَتَنٰجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوٰنِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ ۖ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ ۙ وَيَقُولُونَ فِي
أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۖ فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝٨ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا
إِذَا تَنٰجَيْتُمْ فَلَا تَتَنٰجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوٰنِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنٰجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ
الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝٩ إِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝١٠ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوا
يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۖ وَإِذَا قِيلَ انشُزُوا فَانشُزُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ ۙ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ۚ وَ
اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝١١ يٰأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نٰجَيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۚ
ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝١٢ ءَأَشْفَقْتُمْ أَن تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۚ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَ
اللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝١٣

आयत नं० 07 से 13

क्या आप ने नहीं देखा (यानी इस पर ध्यान नहीं किया) **कि अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है,** (और) **तीन आदमी अकेले में कोई बात ऐसी नहीं कर पाते जिसमें चौथा वो** (यानी अल्लाह तआ़ला) **न हो और न पांच की** (ऐसी बात) **होती है जिसमें छटा वो न हो और न इस** (गिनती) **से कम** (में होती है जैसे दो या चार आदमियों में) **और न इससे ज़्यादा** (में होती है जैसे छः या सात या ज़्यादा आदमियों में) **मगर वो** (हर हालत में) **उन लोगों के साथ होता है** (चाहे) **वो लोग कहीं भी हों, फिर उन** (सब) **को**

क़ियामत के दिन उनके किये हुए काम बता देगा, बेशक अल्लाह तआ़ला को हर बात की पूरी ख़बर है(07) क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा कि जिन को छुप कर बातें करने से मना कर दिया था (मुराद यहूदी और मुनाफ़िक़ हैं जो मुसलमानों को तकलीफ़ पहुंचाने के लिए ऐसी साज़िशें करते थे, मगर) **फिर** (भी) **वो वो ही काम करते हैं जिन से उनको मना कर दिया गया था और गुनाह और ज़ुल्म और रसूल की नाफ़रमानी की बातें करते हैं, और वो लोग** (ऐसे हैं कि) **जब आप के पास आते हैं तो आप को ऐसे तरीक़े से सलाम करते हैं जिस** (तरीक़े) **से अल्लाह ने आप को सलाम नहीं किया** (यानी अस्सलामु अलैकुम कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम कहते थे जिसका मतलब बददुआ है) **और अपने जी में** (या अपने आपस में) **कहते हैं कि** (अगर ये पैग़म्बर हैं तो) **अल्लाह तआ़ला हम को हमारे इस कहने पर** (जिसमें सरासर आप की बेअदबी है फ़ौरन) **सज़ा क्यों नहीं देता,** (आगे इस बात का जवाब है कि फ़ौरन अज़ाब न आने में कुछ भेद हैं और) **उन** (की सज़ा) **के लिए जहन्नम काफ़ी है उसमें ये लोग** (ज़रूर) **दाख़िल होंगे तो वो बुरा ठिकाना है(08)** (आगे ईमान का दावा करने वालों को इस बात से रोका गया है कि) **ऐ ईमान वालो जब तुम** (किसी ज़रूरत से) **छुप कर बातें करो तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की बात मत करो और भलाई के कामों की और परहेज़गारी की बातें करो, और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम सब जमा किये जाओगे(09) ऐसी बातें तो शैतान की तरफ़ से** (यानी उसके बहकाने से होती) **हैं ताकि मुसलमानों को दुख तकलीफ़ में डाले** (जैसा यहूदी और मुनाफ़िक़ करते थे) **और** (आगे उन मुसलमानों को तसल्ली है कि दुखी न हुआ करें क्योंकि) **वो** (शैतान) **बिना अल्लाह के इरादे के उन** (मुसलमानों) **को** (ज़रा भी) **नुक़सान नहीं पहुंचा सकता** (मतलब यह कि अगर मान लो वो शैतान के बहकाने से तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई चाल चल रहे हैं तब भी वो नुक़सान अल्लाह की मर्ज़ी के बिना तुम को नहीं पहुंच सकता फिर क्यों फ़िक्र में पड़ते हो)**, और मुसलमानों को** (हर बात में) **अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए(10)** (आगे मजलिस में बाद में आने वालों को जगह देने का अदब सिखाया गया है कि) **ऐ ईमान वालो जब तुम से कहा जाए** (यानी पैग़म्बर या मजलिस का बड़ा कहे) **कि मजलिस में जगह खोल दो** (यानी मिल कर बैठ जाओ ताकि आने वाले को भी जगह मिल जाए) **तो तुम जगह खोल दिया करो** (और आने वाले को जगह दे दिया करो) **अल्लाह तआ़ला तुम को** (जन्नत में) **खुली जगह देगा, और जब** (किसी ज़रूरत से) **यह कहा जाए कि** (मजलिस से) **उठ जाओ तो उठ जाया करो अल्लाह तआ़ला** (इस हुक्म के मानने की वजह से) **तुम में ईमान वालों के और** (ईमान वालों में) **उन लोगों के जिनको** (दीन का)

इल्म (ज़्यादा) **दिया गया है** (आख़रत के) **दर्जे ऊंचे कर देगा, और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर** (है कि किस का काम ईमान व दिल की सच्चाई के साथ) **है(11) ऐ ईमान वालो जब तुम रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **से अकेले में बात करना चाहो तो अपनी उस बात से पहले कुछ ख़ैरात** (ग़रीबों को) **दे दिया करो, यह तुम्हारे लिए** (सवाब हासिल करने के वास्ते) **बेहतर है और** (गुनाहों से) **पाक होने का अच्छा सामान** (है और मुनाफ़िक़ बेवजह सताने से रूकेंगे और इसमें उनका इम्तिहान भी) **है, फिर अगर तुम्हारे पास** (ख़ैरात करने के लिए) **कुछ न हो** (और अकेले में बात करने की ज़रूरत हो) **तो अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला बहुत महरबान** (है इस सूरत में उसने तुम को मुआफ़ कर दिया) **है(12) क्या तुम** (में के कुछ लोग) **अकेले में अपनी बात करने से पहले ख़ैरात करने से डर गये, तो** (अच्छा) **जब तुम** (इसको) **न कर सके और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे हाल पर महरबानी की** (कि बिल्कुल इस को मुआफ़ कर दिया क्योंकि जिन लोगों को बात करने से रोकने के लिए ऐसा किया गया यानी मुनाफ़िक़ व यहूदी वो कन्जूसी की वजह से रूक गये जो बेबात वक़्त ख़राब किया करते थे) **तो तुम** (दूसरी इबादतों के पाबन्द रहो यानी) **नमाज़ के पाबन्द रहो और** (जिन पर ज़कात वाजिब है) **ज़कात दिया करो और अल्लाह व रसूल का कहना माना करो, और अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है(13)।**

नोटः- कुछ लोग अपनी तसल्ली और मशवरे के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अकेले में बात करना चाहते थे मुनाफ़िक़ों ने यह चाल चली कि अकेले में बात करने के लिए वक़्त लेकर देर तक बात करते थे। इससे परीशानी के साथ-साथ हुज़ूर का क़ीमती वक़्त बर्बाद होता था। अल्लाह तआ़ला ने आप से बोझ हल्का करने के लिए यह हुक्म उतारा कि अकेले में पैग़म्बर से बात करने के लिए कुछ ख़ैरात करें मुनाफ़िक़ लोग अपनी कंजूसी की वजह से ऐसा न कर सके इस तरह परीशान करने से रूक गये। फिर ग़रीब मुसलमानों की ज़रूरत का ध्यान करते हुए यह हुक्म बदल दिया गया और लोगों को पहले की तरह ज़रूरत में बात करने की इजाज़त दे दी गई मगर मुनाफ़िक़ राज़ खुल जाने के डर से फिर भी रूके रहे।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ
يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۴﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۵﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝۱۶ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝۱۷ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَ
يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ؕ اَلَاۤ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ۝۱۸ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ
حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝۱۹ اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗۤ اُولٰٓئِكَ فِي
الْاَذَلِّيْنَ ۝۲۰ كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝۲۱ لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ
يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَ اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَ يُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ
عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۲۲ ع

आयत नं० 14 से 22

क्या आपने उन लोगों को नहीं देखा जो कि ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिनसे अल्लाह सख़्त नाराज़ है (मुराद इससे मुनाफ़िक़ लोग और यहूदी व दूसरे काफ़िर हैं), **ये** (मुनाफ़िक़) **लोग न तो** (पूरे-पूरे) **तुम में हैं और न** (पूरे-पूरे) **उनही में** (बल्कि देखने में तो तुम से मिले हुए हैं और दिल से काफ़िरों के साथ हैं) **और झूटी बात पर क़समें खा जाते** (हैं वो झूटी बात ये ही है कि हम मुसलमानों में शामिल) **हैं और वो** (ख़ुद भी) **जानते** (हैं कि हम झूटे) **हैं(14) अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रक्खा है,** (क्योंकि) **बेशक वो** (कुफ़्र शिर्क जैसे) **बुरे-बुरे काम किया करते थे(15)** (और उन्हीं बुरे कामों में से एक बुरा काम यह है कि) **उन्होंने अपनी** (उन झूटी) **क़समों को** (अपने बचाव के लिए) **ढाल बना रक्खा है** (ताकि मुसलमान हम को मुसलमान समझ कर हमारी जान व माल से न उलझें) **फिर** (दूसरों को भी) **अल्लाह की राह** (यानी दीन से) **रोकते रहते** (है यानी बहकाते रहते) **हैं तो** (इस वजह से) **उनके लिए रूसवा कर देने वाला अज़ाब होने वाला है(16)** (और जब वो अज़ाब होने लगेगा तो) **उनके माल और औलाद अल्लाह** (के अज़ाब) **से उनको ज़रा न बचा सकेंगे,** (और) **ये लोग दोज़ख़ी हैं,** (और) **वो लोग उस** (दोज़ख़) **में सदा-सदा रहेंगे(17)** (और वो अज़ाब उस दिन होगा) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला उन सब को दोबारा ज़िन्दा करेगा तो ये उसके सामने भी** (झूटी) **क़समें खा जाएंगे जिस तरह तुम्हारे सामने क़समें खा जाते हैं और यह समझेंगे कि हम किसी अच्छी हालत में हैं** (कि इस

झूटी क़सम से बच जाएंगे), **याद रक्खो ये लोग बड़े ही झूटे हैं** (कि अल्लाह के सामने भी झूट बोलने से न चूके)(18) **उन पर शैतान ने पूरी तरह क़ब्ज़ा कर लिया है** (कि उसके कहने पर चल रहे हैं) **तो उसने उनको अल्लाह की याद भुला दी** (यानी उस के हुक्मों को छोड़ बैठे), **ये लोग शैतान का गिरोह है, अच्छी तरह सुन लो कि शैतान का गिरोह ज़रूर बर्बाद होने वाला है** (आख़रत में तो ज़रूर और कभी दुनिया में भी)(19) **जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं ये लोग** (अल्लाह के नज़दीक) **बहुत ज़लील लोगों में हैं**(20) (और) **अल्लाह ने यह बात** (पहले ही) **लिख दी है कि मैं और मेरे पैग़म्बर हावी रहेंगे, बेशक अल्लाह तआला ज़बरदस्त ताक़त वाला** (है इसलिए वो जिसको चाहता है जिता देता) **है**(21) (और) **जो लोग अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर** (पूरा-पूरा) **ईमान रखते हैं आप उन को न देखेंगे कि वो ऐसे लोगों से दोस्ती रक्खें जो अल्लाह और उसके रसूल के मुख़ालिफ़ हैं चाहे वो उनके बाप या बेटे या उनके भाई या उनके ख़ानदान वाले ही क्यों न हों, उन लोगों के दिल में अल्लाह तआला ने ईमान जमा दिया है और उन** (के दिलों) **को अपने नूरे करम से ताक़त दी है, और** (आख़रत में) **उन को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती होंगी जिनमें वो सदा रहेंगे, अल्लाह तआला उन से राज़ी होगा और वो अल्लाह से राज़ी होंगे, ये लोग अल्लाह का गिरोह है, ख़ूब सुन लो कि अल्लाह ही का गिरोह कामयाब होने वाला है**(22)।

नोटः- काफ़िरों के साथ अच्छा सलूक व हमदर्दी और भलाई करना और उन पर अहसान करना और अच्छे अख़लाक़ से पेश आना इन्सानी फ़र्ज़ है। और उनसे कारोबारी मुआमला करने और समाजी मेल जोल की भी इजाज़त है ये बातें दिली दोस्ती में दाख़िल नहीं। और जो मुसलमान दीन के ख़िलाफ़ काम करते हैं और बड़े गुनाहों में गरिफ़्तार हैं उन के साथ भी किसी मुसलमान को दोस्ती नहीं रखनी चाहिए।

59-सूरत-हश्र

इस मदनी सूरत में '3' रूकू और '24' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي
الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ۝٢ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِي
الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝٣ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤ مَا
قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥

आयत नं० 01 से 05

नोटः- कुछ यहूदी क़बीलों के साथ मुसलमानों ने सुलह का समझौता कर रक्खा था मगर उन्होंने ग़द्दारी की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल की साज़िश रची तो उनको जिला वतनी (देश बदर) की सज़ा दी गई इन आयतों में उस का बयान हैः-

अल्लाह की तस्बीह करते हैं सब जो कुछ आसमानों और ज़मीन में (मख़्लूक़ें) **हैं, और वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **हिकमत वाला है(01) वो ही है जिसने** (इन) **किताब वाले काफ़िरों** (यानी क़बीला बनू नसीर के यहूदियों) **को उनके घरों से पहली बार उखाड़ करके निकाल दिया** (यानी यह मुसीबत उन पर पहली बार आई है), **तुम ने** (ऐ मुसलमानो उन का साज़ो-सामान देख कर) **यह सोचा भी न था कि वो** (कभी अपने घरों से) **निकलेंगे और** (ख़ुद) **वो यह समझे हुए थे कि उनके क़िले उन को अल्लाह** (के अज़ाब) **से बचा लेंगे** (यानी अपने क़िलों की मज़बूती पर उन्हें ऐसी तसल्ली थी कि उनमें रहते हुए उन्हें कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता) **सो उन पर**

अल्लाह (का अज़ाब) **ऐसी जगह से पहुंचा कि उन को ध्यान** (और गुमान) **भी न था** (कि बेसरो सामान वाले मुसलमानों के हाथों निकाले गये), **और उनके दिलों में** (अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों का) **रौब डाल दिया** (कि उस रौब की वजह से निकलने का इरादा किया और उस वक़्त यह हालत थी कि) **अपने घरों को ख़ुद अपने हाथों से भी और मुसलमानों के हाथों से भी उजाड़ रहे** (थे यानी ख़ुद भी कड़ी तख़्ता ले जाने के वास्ते अपने मकानों को तोड़ रहे थे और मुसलमान भी उनकी ग़द्दारी की वजह से उनके दिलों को ठेस पहुंचाने के लिए तोड़ते) **थे तो ऐ समझदारों** (इस हालत को देख कर) **सबक़ लो** (कि अल्लाह व रसूल की मुख़ालफ़त का अन्जाम कभी-कभी दुनिया में भी बहुत बुरा होता है)(02) **और अगर अल्लाह तआ़ला उनके नसीब में देश बदर होना न लिख चुका होता तो उनको दुनिया ही में** (क़त्ल की) **सज़ा देता, और** (भले ही दुनिया में क़त्ल की सज़ा से बच गये लेकिन) **उन के लिए आख़रत में दोज़ख़ का अज़ाब** (तैयार) **है**(03) (और) **यह** (दुनिया व आख़रत की सज़ा) **इस वजह से है कि उन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की, और जो आदमी अल्लाह** (और रसूल) **की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाला है**(04) (आगे उस ऐतराज़ का जवाब है कि मुसलमानों ने जो उन को क़िलों से बाहर निकलने को मजबूर करने के लिए उनके बाग़ों के कुछ पेड़ काट दिये और कुछ जला दिये थे वो कहते थे कि मुसलमानों ने ऐसा बुरा काम क्यों किया तो) **जो खजूरों के पेड़ तुमने काट दिये** (या जो जला दिये) **या उनको अपनी जड़ों पर** (उसी तरह) **खड़ा रहने दिया तो** (यह सब कुछ) **अल्लाह ही के हुक्म** (और मर्ज़ी) **से था** (ताकि) **काफ़िरों को रूसवा** (और ज़लील) **करे** (यानी दोनो बातों में भलाई छुपी है कि काटने से उनका दिल दुखेगा और न काटने से भी जलेंगे कि हमारे बाद इनको मुसलमान बरतेंगे)(05)।

नोटः- पेड़ों के काट देने व जला देने या उसी तरह छोड़ देने को अल्लाह का हुक्म और मर्ज़ी बताया गया इससे मालूम हुआ कि सहाबा किराम के मशवरे और फ़ैसले शरीअत के हुक्म हैं।

وَ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰی رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَیْهِ مِنْ خَیْلٍ وَّ لَا رِكَابٍ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ یُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰی مَنْ
یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝ مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰی رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰی فَلِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِی الْقُرْبٰی
وَ الْیَتٰمٰی وَ الْمَسٰكِیْنِ وَ ابْنِ السَّبِیْلِ ۙ كَیْ لَا یَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَیْنَ الْاَغْنِیَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَ مَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَ
مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ۝ لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِیْنَ الَّذِیْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ

دِيَارِهِمْ وَ أَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّنَ اللهِ وَ رِضْوَانًا وَّ يَنْصُرُونَ اللهَ وَ رَسُولَهٗ ۚ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ ۝٨ وَ
الَّذِيْنَ تَبَوَّءُو الدَّارَ وَ الْإِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَ لَا يَجِدُونَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً
مِّمَّآ أُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ وَ لَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٩
وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْإِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا
غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٠

आयत नं० 06 से 10

और (उनके मालों का हुक्म यह है कि) **जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल को उन से दिलवा दिया सो** (उसमें तुम को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ी जैसा कि) **तुम ने उस** (के हासिल करने) **पर न घोड़े दौड़ाए और न ऊंट** (मतलब यह कि न सफ़र की मेहनत हुई कि दूर जाना पड़े और न जंग की इस माल में माले ग़नीमत की तरह तुम हक़दार नहीं) **लेकिन अल्लाह तआ़ला** (की आदत है कि) **अपने रसूलों को** (अपने दुशमनों में से) **जिस पर चाहे हावी कर देता** (है यानी सिर्फ़ रौब से हरा देता है जिसमें किसी को कुछ मेहनत नहीं करनी पड़ती ऐसा ही यहां हुआ इस माल में पूरा हक़ व इख़्तियार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ही) **है, और अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर पूरी कुदरत है(06) जो कुछ अल्लाह तआ़ला** (इसी तरह) **अपने रसूल को दूसरी बस्तियों के** (काफ़िर) **लोगों से दिलवादे तो** (उसमें भी तुम्हारा कोई मालिकाना हक़ नहीं बल्कि) **वो** (भी) **अल्लाह का हक़ है** (यानी वो जिस तरह चाहे उसमें हुक्म दे जैसा कि और चीज़ों में भी उसी का हक़ है) **और रसूल का** (हक़ है कि अल्लाह ने उन को हर तरह का हक़ दे दिया है) **और** (रसूल के) **रिशतेदारों का** (हक़ है) **और यतीमों का** (हक़ है) **और ग़रीबों का** (हक़ है) **और मुसाफ़िरों का** (हक़ है यानी इन सब पर पैग़म्बर की मर्ज़ी से ख़र्च किया जाएगा और यह हुक्म इसलिए दिया गया) **ताकि वो** (मालेफ़ई) **तुम्हारे मालदारों के क़ब्ज़े में न आजाए** (जैसा कि जहालत के ज़माने में जंगों में हासिल हुए सब माल बड़े लोग खा जाते थे और ग़रीबों को कुछ न मिलता था इसलिए अल्लाह तआ़ला ने रसूल की राय पर रक्खा और ख़र्च के मौक़े भी बता दिये), **और** (जब यह मालूम हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की राय पर होने में भेद व हिकमत है तो) **रसूल तुम को जो कुछ दे दिया करें वो ले लिया करो और जिस चीज़** (के लेने) **से तुम को रोक दें तुम रुक जाया करो** (और ये ही हुक्म है सभी कामों और हुक्मों में भी) **और अल्लाह से**

डरो, बेशक अल्लाह तआ़ला (मुख़ालफ़त करने पर) **सख़्त सज़ा देने वाला है(07)** (और यूं तो माले फ़ई में सब ग़रीबों का हक़ है लेकिन) **उन ग़रीब मुहाजिरों का** (ख़ास कर) **हक़ है जो अपने घरों से और अपने मालों से** (सताकर व जबरन) **अलग कर दिये गये** (यानी काफ़िरों ने उन को इतना तंग किया कि घर बार छोड़ कर चले जाने पर मजबूर हुए और इस हिजरत से) **वो अल्लाह तआ़ला की महरबानी** (यानी जन्नत) **और रज़ामन्दी के चाहने वाले हैं** (किसी दुनियावी मतलब से हिजरत नहीं की) **और वो** (लोग) **अल्लाह और उसके रसूल** (के दीन) **की मदद करते हैं,** (और) **ये ही लोग** (ईमान के) **सच्चे हैं(08) और** (ऐसे ही) **उन लोगों का** (भी हक़ है) **जो इस जगह** (यानी मदीने) **में** (मुहाजिरों के आने से) **पहले ही से ईमान के साथ रहते हैं** (मुराद इससे अन्सारी हज़रात है जो पहले ही से मदीने में रहते थे और मुहाजिरों के मदीने आने से पहले ईमान ला चुके थे) **जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरों को** (माले ग़नीमत में से) **जो कुछ मिलता है उससे ये** (अन्सार मुहब्बत की वजह से) **अपने दिलों में कोई तंगी नहीं पाते और** (बल्कि इससे भी बढ़ कर मुहब्बत करते हैं कि खाने पीने में उनको) **अपने से आगे रखते हैं चाहे उन पर फ़ाक़ा ही हो** (यानी ख़ुद कभी-कभी भूके बैठे रहते हैं और मुहाजिरों को खिला देते हैं), **और** (सचमुच) **जो आदमी अपने जी के लालच से बचाया गया** (जैसे ये लोग हैं) **ऐसे ही लोग कामयाब होने वाले हैं(09) और उन लोगों का** (भी इस माले फ़ई में हक़ है) **जो इन** (मुहाजिरों व अन्सार) **के बाद आए** (या आएंगे) **जो दुआ करते हैं कि या रब हमारे हम को बख़्श दे और हमारे भाइयों को** (भी) **जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और हमारे दिलों में ईमान वालों की तरफ़ से बैर न होने दीजिए या रब हमारे आप बड़े हमदर्द व महरबान हैं(10)**

नोटः- दुश्मनों से जिहाद में जंग के बाद जो जंगी सामान व माल मिलता है उसे माले ग़नीमत कहते हैं और बिना जंग किये जो माल मिल जाए उसे माले फ़ई कहते हैं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ نَافَقُوْا یَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَىٕنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَ
لَا نُطِیْعُ فِیْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّ اِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ یَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۱﴾ لَىٕنْ اُخْرِجُوْا لَا
یَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَ لَىٕنْ قُوْتِلُوْا لَا یَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَ لَىٕنْ نَّصَرُوْهُمْ لَیُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۫ ثُمَّ لَا یُنْصَرُوْنَ ﴿۱۲﴾

لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿۱۳﴾ لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ
قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّ قُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿۱۴﴾ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۵﴾ كَمَثَلِ
الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶﴾ فَكَانَ
عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۷﴾

आयत नं० 11 से 17

क्या आपने इन मुनाफ़िक़ों की हालत नहीं देखी कि अपने (मज़हबी) **भाइयों** (यानी) **किताब वाले** (यहूदी) **काफ़िरों से कहते हैं** (यानी कहते थे) **कि** (हम हर हाल में तुम्हारे साथ हैं बस) **अगर तुम** (अपने वतन से जबरन) **निकाले गये तो हम** (भी) **तुम्हारे साथ** (अपने वतन से) **निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में हम कभी किसी का कहना न मानेंगे** (यानी हम को चाहे कोई कैसा ही समझाए कि तुम्हारा साथ न दें लेकिन हम न मानेंगे) **और अगर तुम में किसी की लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि वो बिल्कुल झूटे हैं(11) अगर वो** (यहूदी) **निकाले गये तो ये** (मुनाफ़िक़ लोग) **उनके साथ नहीं निकलेंगे और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद न करेंगे, और अगर** (मान लो) **उन की मदद भी की** (और लड़ाई में शरीक हुए) **तो पीठ फेर कर भागेंगे फिर** (इनके भाग जाने के बाद) **उन** (यहूदियों) **की कोई मदद न होगी** (यानी जो मददगार थे वो तो भाग गये और दूसरा भी कोई मददगार न होगा बस अन्जामकार मात खाएंगे जैसा कि ऐसा ही हुआ)(12) **बेशक तुम लोगों का डर इन** (मुनाफ़िक़ों) **के दिलों में अल्लाह से भी ज़्यादा है** (यानी अल्लाह से सचमुच डरते तो कुफ़्र छोड़ कर ईमान लाते लेकिन तुम्हारे डर की वजह से काफ़िरों का साथ न देंगे, और) **यह** (उनका तुम से डरना और अल्लाह से न डरना) **इस वजह से है कि वो ऐसे लोग हैं कि** (कुफ़्र की वजह से अल्लाह तआला की शान को) **समझते नहीं(13)** (और ये यहूदी और मुनाफ़िक़ अलग-अलग तो तुम्हारे मुक़ाबिले की क्या हिम्मत करते) **ये लोग** (तो) **सब मिलकर भी तुम से न लड़ेंगे मगर हिफ़ाज़त वाली बस्तियों में या** (क़िले की) **दीवार की आड़ में,** (बात यह है कि) **उन की लड़ाई आपस** (ही) **में बड़ी तेज़ है** (मगर मुसलमानों के मुक़ाबिले में कोई चीज़ नहीं), **तुम उन को इकट्ठे समझते हो हालांकि उनके दिल अलग-अलग हैं** (यानी चाहे मुसलमानों की दुशमनी में एक हो रहे हैं मगर ख़ुद भी तो उनमें

मज़हबी झगड़ा है), **यह** (दिलों की फूट) **इस वजह से है कि वो ऐसे लोग हैं जो** (दीन की) **समझ नहीं रखते**(14) **इन** (यहूदियों) **की मिसाल** (तो) **उन लोगों की सी है जो इन से कुछ पहले हुए हैं** (यानी बनी क़रीज़ा के यहूदी) **जो** (दुनिया में भी) **अपनी करतूत का मज़ा चख चुके हैं** (कि उनकी ग़द्दारी की उन को सज़ा दी गई थी) **और** (आख़रत में भी) **उन के लिए दर्दनाक अज़ाब** (होने वाला) **है**(15) (और इन मुनाफ़िक़ों की) **मिसाल शैतान की सी है** (पहले तो) **इन्सान से कहता है कि तू काफ़िर होजा फिर जब वो काफ़िर हो जाता** (है और कुफ़्र की सज़ा में पकड़ होती) **है** (चाहे दुनिया में चाहे आख़रत में) **तो** (उस वक़्त साफ़ जवाब दे देता है और) **कह देता है कि मेरा तुझ से कोई वास्ता नहीं मैं तो अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहानों का रब है**(16) **तो आख़री अन्जाम दोनों का यह हुआ कि दोनो दोज़ख़ में गये जहां सदा रहेंगे** (एक गुमराह होने की वजह से दूसरा गुमराह करने की वजह से), **और ज़ालिमों की ये ही सज़ा है** (बस जिस तरह शैतान ने इन्सान को बहकाया फिर धोका दिया इसी तरह इन मुनाफ़िक़ों ने यहूदी बनी नज़ीर को धोका दिया और दोनो मुसीबत में फंसे)(17)।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾ وَلَا
تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۱۹﴾ لَا يَسْتَوِيْۤ اَصْحٰبُ النَّارِ وَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿۲۰﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ
اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَ
الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ
الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ
يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۴﴾ ع

आयत नं० 18 से 24

ऐ ईमान वालो (तुम ने कहना न मानने वालों का अन्जाम सुन लिया तो तुम) **अल्लाह से डरते रहो और हर आदमी देख भाल ले कि कल** (क़ियामत) **के वास्ते उसने क्या** (सामान) **भेजा** (है यानी नेक कामों में कोशिश करो जो कि आख़रत की जमा पून्जी) **है, और** (गुनाहों से बचते रहो और) **अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की ख़बर** (है

बस गुनाहों से सज़ा का डर) **है(18) और तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जिन्होंने अल्लाह** (के हुक्मों) **से बेपरवाई की** (यानी हुक्मों के ख़िलाफ़ चले) **तो** (उस का असर यह हुआ कि) **अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद उन की जान से उन को बेपरवा बना दिया** (यानी उन की ऐसी समझ मारी गई कि ख़ुद अपने असली नफ़े को न समझा और न हासिल किया), **ये ही लोग नाफ़रमान** (हैं और नाफ़रमानी की सज़ा पाने वाले) **हैं(19)** (और ऊपर जिन दो क़िस्म के लोगों का ज़िक्र हुआ यानी एक वो जो परहेज़गार हैं वो जन्नती हैं दूसरे नाफ़रमान वो दोज़ख़ी हैं और) **जन्नत वाले और दोज़ख़ वाले आपस में बराबर नहीं,** (बल्कि) **जो जन्नत वाले हैं वो लोग कामयाब** (हैं बस तुम को जन्नत वाले होना चाहिए न कि दोज़ख़ वाले क्योंकि दोज़ख़ वाले नाकाम) **हैं(20)** (और ये क़ुरआन की नसीहतें हैं जो कि ऐसा है कि) **अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतार देते** (और उसमें समझने का माद्दा रख देते और बुराई का माद्दा न रखते) **तो तुम उस को देखते कि अल्लाह के डर से दब जाता और फट जाता** (यानी क़ुरआन का ऐसा असर है मगर इन्सान अपने मज़ों के चक्कर में असर नहीं लेता बस उसको चाहिए कि नेक काम करे और बुराई से रूके ताकि क़ुरआन की नसीहत का उस पर असर हो), **और हम ये मिसालें लोगों के** (नफ़े के) **लिए बयान करते हैं ताकि वो सोचें** (और नफ़ा उठाएं)(21) **वो अल्लाह ऐसा है कि उसके सिवा कोई और माबूद** (बनने के लाइक़) **नहीं वो जानने वाला है छुपी चीज़ों का और खुली चीज़ों का, वो ही बड़ा महरबान रहम वाला है(22)** (और अच्छी तरह जान लो कि) **वो अल्लाह ऐसा** (माबूद) **है कि उसके सिवा कोई और माबूद** (बनने के लाइक़) **नहीं, वो बादशाह है** (सब ऐबों से) **पाक है सलामती वाला है** (अपने बन्दों को डर की चीज़ों से) **अमन देने वाला है** (अपने बन्दों की डर की चीज़ों से) **देख रेख करने वाला है** (यानी मुसीबत भी नहीं आने देता और आई हुई को भी दूर कर देता है) **ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **है ख़राबी का ठीक कर देने वाला है बड़ी शान वाला है, अल्लाह तआ़ला** (जिसकी यह शान है) **लोगों के शिर्क से पाक है(23) वो अल्लाह** (सच्चा माबूद है) **पैदा करने वाला है ठीक-ठीक बनाने वाला है सूरत** (शकल) **बनाने वाला है उसके अच्छे-अच्छे नाम** (हैं जो अच्छी-अच्छी ख़ूबियों की दलील) **हैं, सब चीज़ें उसी की तस्बीह करती हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं, और वो ही ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला और) **हिकमत वाला** (है बस ऐसी शान वाले के हुक्मों को मानना ज़रूरी) **है(24)**

नोटः- एक हदीस में है कि जो सुबह के वक़्त तीन बार **"अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अलीम मिनश्शैतानिर्रजीम"** और उसके बाद तीन बार सूरत हश्र की आख़री तीन आयतें पढ़ले तो अल्लाह तआ़ला सत्तर हज़ार फ़रिशते तैनात कर देते हैं जो शाम तक उसके लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं। अगर उस दिन में वो मर गया तो शहादत की मौत मिलेगी। और जिसने शाम को ये ही कलमे तीन बार पढ़ लिये तो ये ही दर्जा उस को मिलेगा। (मज़हरी)

वो आयतें ये हैं:-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ
الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾ ع

"अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अलीम मिनश्शैतानिर्रजीम"

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाह् इल्लाहू, आ़लिमुल ग़ैबि वश्शहादति हुवर्रहमानुर्रहीम० हुवल्लाहुल्लज़ी ला इलाह् इल्लाहू, अलमलिकुल कुद्दूसुस्सलामुल मूमिनुल मुहैमिनुल अ़ज़ीज़ुल जब्बारुल मुतकब्बिर, सुब्हान अल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून० हुवल्लाहुल ख़ालिकुल बारिउल मुसव्विरु लहुल अस्माउल हुस्ना, युसब्बिहु लहू माफ़िस्समावाति वलअर्ज़, वहुवल अ़ज़ीज़ुल हकीम०

60-सूरत-मुमतहिना

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '13' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَ عَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَ قَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ
مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَ اِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَ
ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۖۗ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖۗ وَ اَنَا اَعْلَمُ بِمَاۤ اَخْفَيْتُمْ وَ مَاۤ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَ مَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١ اِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّ يَبْسُطُوْۤا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَ اَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَ
وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ؕ۝٢ لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ ۚۛ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚۛ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ اِنَّا بُرَءٰٓؤُا
مِنْكُمْ وَ مِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۫ كَفَرْنَا بِكُمْ وَ بَدَا بَيْنَنَا وَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَ الْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى
تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗۤ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَ مَاۤ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ رَبَّنَا
عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَ اِلَيْكَ اَنَبْنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝٤ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ اغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ
اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ الْيَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَ مَنْ
يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦

आयत नं० 01 से 06

नोटः- हज़रत हातिब रज़ि० हिजरत करके मदीना आ गये थे और उनके घर वाले मक्का में थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब मक्का पर हमला करने का इरादा किया तो इस बात को राज़ में रक्खा और तैयारी शुरू कर दी। हज़रत हातिब ने एक ख़त मक्का जाने वाली एक औरत को दे दिया जिसमें इस हमले की ख़बर दी गई थी और यह सोचा कि जीत तो हर सूरत में मुसलमानों ही की होगी इस ख़बर से दुशमन ख़ुश होकर मेरे घर वालों को न सताएंगे और यह

फ़िक्र इसलिए हुई कि मक्के में उनके ख़ानदान के लोग नहीं थे वो यमन के रहने वाले थे। उन्होंने यह काम मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने के इरादे से नहीं किया था। अल्लाह तआ़ला ने वही से इस बात की ख़बर हुज़ूर को देदी और हुज़ूर ने हज़रत अली को भेजा वो ख़त रास्ते ही से उस औरत से छीन लाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सारी बात जान कर हज़रत हातिब को इस ग़लती पर मुआफ़ कर दिया। उस मौक़े पर ये आयतें उतरीं:-

ऐ ईमान वालो तुम मेरे दुशमनों और अपने दुशमनों को दोस्त मत बनाओ कि उनसे दोस्ती दिखाने लगो (यानी चाहे दिल से दोस्ती न हो मगर ऐसा दोस्ताना बरताव भी मत करो) **हालांकि तुम्हारे पास जो सच्चा दीन आ चुका है वो उस का इनकार करते हैं** (जिससे उन का अल्लाह का दुशमन होना मालूम हुआ), **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को और तुम को इस वजह से कि तुम अपने रब अल्लाह पर ईमान ले आए शहर** (मक्का) **से निकाल चुके** (हैं तो वो तुम्हारे भी दुशमन) **हैं,** (तो ऐसे लोगों से दोस्ती मत करो जो सिर्फ़ अल्लाह ही के दुशमन नहीं बल्कि तुम्हारे भी दुशमन हैं) **अगर तुम मेरे रास्ते में जिहाद करने के लिए और मेरी रज़ामन्दी ढूंडने के लिए** (अपने घरों से) **निकले हो, तुम उनसे चुपके-चुपके दोस्ती की बातें करते हो** (यानी एक तो दोस्ती ही बुरी चीज़ है फिर छुप कर ख़त भेजना यह और ज़्यादा बुरा है) **हालांकि मैं सब चीज़ों को जानता हूं तुम जो कुछ छुपाकर करते हो और जो कुछ ऐलानिया करते हो** (इसलिए भी ऐसी बातों से रूकना चाहिए), **और** (आगे इस बात पर धमकी है कि) **जो आदमी तुम में ऐसा** (काम) **करेगा वो सीधे रास्ते से बहक गया(01)** (और वो तुम्हारे ऐसे सख़्त दुशमन हैं कि) **अगर तुम उनके हाथ आजाओ तो** (फ़ौरन) **तुम से दुशमनी का बरताव करने लगें और तुम पर बुराई के साथ हाथ और ज़बान चलाने लगें** (यह तो दुनिया का नुक़सान है) **और** (दीनी नुक़सान यह है कि) **वो चाहते हैं कि तुम भी काफ़िर** (ही) **हो जाओ(02)** (और अगर तुम को दोस्ती के बारे में अपने घर वालों का ध्यान हो तो ख़ूब समझ लो कि) **तुम्हारे रिशतेदार और औलाद क़ियामत के दिन तुम्हारे** (कुछ) **काम न आएंगे अल्लाह** (ही) **तुम्हारे बीच फ़ैसला करेगा, और अल्लाह तुम्हारे कामों को ख़ूब देखता** (है बस अगर तुम्हारे काम सज़ा के क़ाबिल होंगे तो उस सज़ा से औलाद और रिशतेदार बचा न सकेंगे फिर उनके लिए अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ करना बहुत बुरा काम) **है(03)** (और) **तुम्हारे लिए इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **और उनके साथियों में अच्छा नूमना है** (यानी इस बारे में काफ़िरों से ऐसा बरताव करना चाहिए जैसा उन्होंने किया) **जब कि उन**

सब ने अपनी क़ौम (के लोगों) से कह दिया कि हम तुम से और जिन को तुम अल्लाह के सिवा माबूद समझते हो उन से कोई वास्ता नहीं रखते, हम तुम्हारा (यानी तुम्हारे दीन का) इनकार करते हैं और हमारे और तुम्हारे बीच सदा के लिए दुशमनी और बैर पैदा हो गया है जब तक तुम सिर्फ़ एक अल्लाह पर ईमान न लाओ (बस उन्होंने काफ़िरों से वास्ता ख़त्म कर दिया) लेकिन इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) की इतनी बात तो अपने बाप से हुई थी कि मैं आप के लिए अल्लाह से मुआफ़ी की दुआ ज़रूर मांगूंगा और तुम्हारे लिए (इससे ज़्यादा) कोई बात अल्लाह के सामने मेरे बस में (नहीं कि दुआ क़ुबूल करालूं या ईमान न लाने के बावजूद तुम को अज़ाब से बचालूं यहां मुआफ़ी की दुआ का मतलब यह है कि यह दुआ करना कि वो ईमान लाकर मुआफ़ी के हक़दार बन जाएं जिस की सब को इजाज़त है जो असल में वास्ता ख़त्म करने के ख़िलाफ़) नहीं, (और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दुआ की कि) या रब हमारे हम (काफ़िरों से वास्ता ख़त्म करने के ऐलान के बारे में) आप पर भरोसा करते हैं और (आप ही हमारी सभी मुश्किलों में मदद और काफ़िरों के सताने से हिफ़ाज़त करेंगे और ईमान लाने में) आप ही की तरफ़ लौ लगाते हैं और (ऐतक़ाद रखते हैं कि) आप ही की तरफ़ (सब को) लौटाना है(04) (और) या रब हमारे हम को काफ़िरों के आज़माने का सामान न बना (यानी हम पर वो ज़ुल्म न करने पाएं) और हमारे गुनाह मुआफ़ कर दीजिए या रब हमारे बेशक आप ज़बरदस्त (क़ुदरत वाले) हिकमत वाले हैं(05) बेशक उन लोगों में (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनके मानने वालों में) तुम्हारे लिए यानी ऐसे आदमी के लिए अच्छा नमूना है जो अल्लाह (के सामने जाने) का और क़ियामत के दिन (के आने) का ऐतक़ाद रखता हो, और जो आदमी (इस हुक्म से) मुंह फेरेगा सो (उसी का नुक़सान होगा, क्योंकि) अल्लाह तआला (तो) बिल्कुल बेपरवा (यानी उसको किसी की ज़रूरत नहीं और) सब तारीफ़ों वाला है(06)।

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَ بَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَ اللّٰهُ قَدِيْرٌ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ لَا
يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ لَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَ تُقْسِطُوْۤا
اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَ اَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ
دِيَارِكُمْ وَ ظٰهَرُوْا عَلٰۤى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَ مَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

आयत नं० 07 से 09

(और उनसे दुशमनी की ख़बर से मुसलमानों को कुछ दुख हो सकता था इसलिए ख़ुशख़बरी है कि) **अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है** (यानी उधर से वादा है) **कि तुम में और उन लोगों में जिनसे तुम्हारी दुशमनी है दोस्ती पैदा करा दे** (चाहे कुछ ही से सही यानी उन को मुसलमान करदे जिससे दुशमनी दोस्ती में बदल जाए), **और** (इसको कुछ मुश्किल न समझो क्योंकि) **अल्लाह बड़ी क़ुदरत वाला है** (जैसा कि मक्के की जीत के दिन बहुत आदमी ख़ुशी से मुसलमान हो गये), **और** (अब तक जो किसी से इस हुक्म के ख़िलाफ़ ग़लती हो गई जिससे वो अब तौबा कर चुका है तो) **अल्लाह तआ़ला** (उसके लिए) **बख़्शने वाला रहमत करने वाला है(07)** (और) **अल्लाह तआ़ला तुम को उन लोगों के साथ अहसान और इन्साफ़ का बरताव करने से मना नहीं करता जो तुम से दीन के बारे में नहीं लड़े और तुम को तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, बेशक अल्लाह तआ़ला इन्साफ़ का बरताव करने वालों से मुहब्बत रखते हैं(08)** (अलबत्ता) **सिर्फ़ उन लोगों के साथ दोस्ती** (यानी भलाई व अहसान) **करने से अल्लाह तआ़ला तुम को मना करता है जो तुम से दीन के बारे में लड़े हों और तुम को तुम्हारे घरों से निकाला हो और** (अगर निकाला न भी हो लेकिन) **तुम्हारे निकालने में** (निकालने वालों की) **मदद की हो और जो लोग ऐसों से दोस्ती** (का बरताव यानी भलाई और अहसान का बरताव) **करेंगे तो वो लोग गुनाहगार होंगे(09)**

नोटः- जिन काफ़िरों से मुसलमानों को किसी नुक़सान का ख़तरा हो उन से दोस्ती जाइज़ नहीं। जिनसे ख़तरा न हो उनके साथ अहसान व भलाई का बरताव करना जाइज़ है और इन्साफ़ हर हाल में हर आदमी के लिए ज़रूरी और वाजिब है।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ
مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ؕ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ؕ وَاٰتُوْهُمْ مَّاۤ اَنْفَقُوْا ؕ وَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَاۤ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ؕ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقْتُمْ وَ
لْيَسْـَٔلُوْا مَاۤ اَنْفَقُوْا ؕ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠ وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ
اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَاۤ اَنْفَقُوْا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اَنْتُمْ بِهٖ
مُؤْمِنُوْنَ ۝١١ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰۤى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا

يَزْنِيْنَ وَ لَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَ لَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَ اَرْجُلِهِنَّ وَ لَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ
مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿۱۳﴾

आयत नं० 10 से 13

नोटः- सुलह हुदैबिया के मौक़े पर जो शर्तें रक्खी गईं थीं उनमें एक शर्त यह भी थी कि जो मर्द काफ़िरों में से मुसलमानों की तरफ़ चला जाए उस को वापस किया जाए बस कुछ मुसलमान मर्द वापस कर दिये गये फिर कुछ औरतें मुसलमान होकर आईं उनके रिश्तेदारों ने उनकी वापसी की मांग की इस पर ये आयतें उतरीं जिसमें औरतों को वापस करने से मना कर दिया गया और उनके मुसलमान होने का इम्तिहान करने को कहा गयाः-

ऐ ईमान वालो जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें (काफ़िरों के मुल्क से) **हिजरत करके आएं तो तुम उन** (के मुसलमान होने) **का इम्तिहान कर लिया करो** (जिसका तरीक़ा आगे आता है, और इस इम्तिहान में ज़ाहिरी इम्तिहान को काफ़ी समझो क्योंकि) **उनके** (असली) **ईमान को** (तो) **अल्लाह ही बेहतर जानता है** (तुम तो इसको जान ही नहीं सकते), **बस अगर उन को** (इस इम्तिहान की रू से) **मुसलमान समझो तो उन को काफ़िरों की तरफ़ वापस मत करो,** (क्योंकि) **न तो वो औरतें उन काफ़िरों के लिए हलाल हैं और न वो काफ़िर उन औरतों के लिए हलाल हैं** (क्योंकि मुसलमान औरत का निकाह काफ़िर मर्द से बिल्कुल नहीं रहता), **और उन काफ़िरों ने जो कुछ** (महर की सूरत में उन औरतों पर) **ख़र्च किया हो वो उनको अदा कर दो, और तुम को उन औरतों से निकाह करने में कुछ गुनाह न होगा जब कि तुम उन के महर उन को देदो, और** (ऐ मुसलमानों) **तुम काफ़िर औरतों के रिशतों को बाक़ी न रक्खो** (यानी जो तुम्हारी बीवियां काफ़िरों की तरफ़ कुफ़्र की हालत में रह गईं उन का निकाह तुम से ख़त्म हो गया) **और** (इस सूरत में) **जो कुछ तुम ने** (उन औरतों के महर में) **ख़र्च किया हो** (उन काफ़िरों से) **मांग लो और** (इसी तरह) **जो कुछ उन काफ़िरों ने** (महर की सूरत में) **ख़र्च किया हो वो तुम से मांग लें, यह** (जो कुछ कहा गया) **अल्लाह का हुक्म है** (इसको मानो), **वो तुम्हारे बीच में** (ऐसा ही ठीक) **फ़ैसला करता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला** (और) **हिकमत वाला है(10) और अगर तुम्हारी बीवियों में से कोई बीवी काफ़िरों में रह जाने से** (बिल्कुल ही) **तुम्हारे हाथ न आए**

(यानी न वो मिले और न उसके महर का बदला मिले और) **फिर** (काफ़िरों को महर देने की) **तुम्हारी नौबत आए** (यानी तुम्हारे ज़िम्मे किसी काफ़िर का महर देना हो) **तो** (तुम वो महर उन काफ़िरों को न दो बल्कि) **जिन** (मुसलमानों) **की बीवियां हाथ से निकल गईं** (जिन का अभी ज़िक्र हुआ तो) **जितना** (महर) **उन्होंने** (उन बीवियों पर) **ख़र्च किया था उस के बराबर** (उस देनदारी की रक़म में से) **तुम उन को देदो, और डरते रहो अल्लाह से जिस पर तुम ईमान रखते हो**(11) (और आगे इम्तिहान का तरीक़ा बताते हैं कि) **ऐ पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **जब मुसलमान औरतें आप के पास इन बातों पर बैत करने के लिए आएं कि वो अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी और न बदकारी करेंगी और न अपने बच्चों को क़त्ल करेंगी और न कोई बदनामी की औलाद लाएंगी जिस को अपने हाथों और अपने पैरों के बीच** (अपने शौहर से जनी हुई होने का दावा करके) **बनालें** (जैसे जहालत के ज़माने में किसी का बच्चा उठाकर अपना बता देती थी या और किसी से बदकारी की और उससे होने वाले बच्चे को शौहर का बता दिया) **और शरीअत की बातों में वो आप के ख़िलाफ़ न करेंगी** (इसमें शरीअत के सब हुक्म आगये बस अगर वो औरतें इन शर्तों को मानलें जिनका ऐतक़ाद ईमान की शर्त है और पाबन्दी ईमान का कमाल दर्जा है) **तो आप उनको बैत कर लिया कीजिए और उनके लिए अल्लाह से** (पिछले गुनाहों की) **मुआफ़ी मांगिए, बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है**(12) **ऐ ईमान वालो उन लोगों से** (भी) **दोस्ती मत करो जिन पर अल्लाह तआ़ला ने ग़ज़ब किया है** (यानी जिन पर सख़्त नाराज़ हुआ मुराद यहूदी लोग हैं) **कि वो आख़रत** (की भलाई व सवाब) **से ऐसे नाउम्मीद हो गये हैं जैसे काफ़िर लोग जो क़ब्रों में** (दफ़्न) **हैं** (आख़रत के सवाब से) **ना उम्मीद** (हैं क्योंकि यहूदी जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा नबी होना जानते थे मगर हसद की वजह से नहीं मानते थे इसी तरह वो यह भी जानते थे कि रसूल को न मानने पर बख़्शिश नहीं होगी जैसे काफ़िर मरने के बाद अपना अन्जाम देख लेते) **हैं**(13)।

नोटः- हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि औरतों की यह बैत सिर्फ़ ज़बानी हुई। मर्दों की बैत में जो हाथ पर हाथ रखने का दस्तूर है औरतों की बैत में ऐसा नहीं किया गया। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ ने कभी किसी ग़ैर महरम के हाथ को नहीं छुआ। (मज़हरी)

61-सूरत-सफ्फ़

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '14' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝٢ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝٣ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا
كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤ وَ اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَ قَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ
اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَ اِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ
يٰبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ
بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَ هُوَ يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ
اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ
كُلِّهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٩ ع

आयत नं० 01 से 09

सब चीज़ें अल्लाह की तस्बीह करती हैं जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं और वो ही ज़बरदस्त (कुदरत वाला और) **हिकमत वाला** (है बस जो ऐसी शान वाला हो उस की ताबेदारी हर हुक्म में ज़रूरी) **है(01)** (एक बार कुछ मुसलमानों ने आपस में बाप चीत की कि अगर हम को पता चल जाए कि अल्लाह को कौन सा नेक काम ज़्यादा पसन्द है तो हम उसी काम को करें जब कि इससे पहले जंग उहद में कुछ लोग जिहाद से भाग चुके थे इस पर कहा गया कि) **ऐ ईमान वालो ऐसी बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो(02) अल्लाह के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि ऐसी बात कहो जो करो नहीं(03) अल्लाह तआला तो उन लोगों को**

(ख़ास कर) **पसन्द करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिल कर लड़ते हैं जैसे वो एक इमारत है जिसमें सीसा पिलाया गया** (हो यानी जिस तरह यह इमारत मज़बूत होती है कि टूटती नहीं इसी तरह वो जिहाद करने वाले दुशमन के मुक़ाबिले से हटते नहीं मतलब यह कि अल्लाह के नज़दीक सबसे प्यारा काम तो यह जिहाद है फिर वो भारी क्यों लगा कि जंगे उहद में भाग गये थे बस ऐसी दावे की बात क्यों करते) **हो(04) और** (आगे फ़सादी काफ़िरों से जिहाद की वजह बयान करते हैं कि वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम** (के लोगों) **मुझ को क्यों तकलीफ़ पहुंचाते हो हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ** (पैग़म्बर होकर) **आया हूं** (वो तकलीफ़ सरकशी और मुख़ालफ़त है)**, फिर जब** (इस समझाने पर भी) **वो लोग टेढ़े ही रहे** (और राह पर न आए) **तो अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों को और** (ज़्यादा) **टेढ़ा कर दिया** (यानी बुराई में बढ़ते चले गये भलाई की तौफ़ीक़ नहीं हुई)**, और अल्लाह तआ़ला** (का दस्तूर है कि वो) **ऐसे नाफ़रमानों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं देता** (इसी तरह ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ें पहुंचाते हैं इसलिए उनका टेढ़ापन ज़्यादा होता जाता है सुधार की उम्मीद नहीं रही बस उनका फ़साद मिटाने के लिए जिहाद का हुक्म दिया गया)**(05) और** (इसी तरह वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारे पास अल्लाह का भेजा हुआ** (पैग़म्बर होकर) **आया हूं कि मुझसे पहले जो तौरेत** (आ चुकी) **है मैं उस की तस्दीक़ करने वाला हूं और मेरे बाद जो एक रसूल आने वाले हैं जिनका** (मुबारक) **नाम अहमद होगा मैं उनकी ख़ुशख़बरी देने वाला हूं, फिर जब** (ये सब बातें बता कर अपनी पैग़म्बरी के सबूत के लिए) **वो** (ईसा अलैहिस्सलाम) **उन लोगों के पास खुली निशानियां लाए तो वो लोग** (उन मोजिज़ों के बारे में) **कहने लगे कि यह खुला जादू** (है और जादू बता कर पैग़म्बरी को झुटलाया इसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम के बाद फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी के ज़माने में मौजूद काफ़िरों ने आप को झुटलाया और मुख़ालफ़त की और यह बड़ा ज़ुल्म है बस इस ज़ुल्म को मिटाने के लिए जिहाद का हुक्म दिया गया) **है(06) और** (सच में) **उस आदमी से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूट बान्धे जब कि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता हो, और अल्लाह ऐसे ज़ालिम लोगों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं दिया करता** (है अल्लाह पर झूट बान्धना यह है कि पैग़म्बरी को झुटलाना, जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ से हो उस का इनकार करना और जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ से न हो उस को अल्लाह की तरफ़ से बताना दोनों बातें अल्लाह पर झूट बान्धना) **है(07)**

ये लोग यह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर (यानी दीन इस्लाम) **को अपने मुंह से** (फूंक मार कर) **बुझा दें हालांकि अल्लाह अपने** (इस) **नूर को कमाल तक पहुंचा कर रहेगा चाहे काफ़िर लोग कैसा ही बुरा मानें(08) वो अल्लाह ऐसा है जिसने** (इसी नूर को पूरा करने के लिए) **अपने रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को हिदायत** (का सामान यानी कुरआन) **और सच्चा दीन** (यानी इस्लाम) **देकर** (दुनिया में) **भेजा है ताकि इस** (दीन) **को सभी** (दूसरे) **दीनों से ऊपर कर दे चाहे मुशरिक लोग कैसा ही बुरा मानें(09)।**

मसअलाः- ऐसे काम का दावा करना जिस के करने का इरादा ही न हो और उसको करना ही न हो तो यह बड़ा गुनाह और अल्लाह की सख़्त नाराज़ी की वजह है। और जहां यह सूरत न हो बल्कि इरादा करने का हो वहां भी अपनी ताक़त व हिम्मत पर भरोसा करके दावा करना मना और मकरूह है।

नोटः- आख़री नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम मुहम्मद भी था और अहमद भी और भी बहुत से नाम थे मगर इन्जील में आप का नाम अहमद बताया गया। इस की वजह यह भी हो सकती है कि अहमद नाम रखने का दस्तूर नहीं था वो आप की ज़ात ही के साथ ख़ास था।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ
تُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَ اَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ
وَ يُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢ وَ
اُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْۤا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ فَاٰمَنَتْ طَّآىِٕفَةٌ
مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ وَ كَفَرَتْ طَّآىِٕفَةٌ ۚ فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤

आयत नं० 10 से 14

(आगे जिहाद के आख़रत व दुनिया में मिलने वाले फल का बयान है कि) **ऐ ईमान वालो क्या मैं तुम को ऐसा कारोबार बता दूं जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले**(10) (वो यह है कि) **तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बहुत ही बेहतर है अगर तुम कुछ समझ रखते हो**(11) (जब ऐसा करोगे तो) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह मुआफ़ करेगा और तुम को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी और ऐसे अच्छे मकानों में** (दाख़िल करेगा) **जो सदा रहने के बाग़ों में** (बने) **होंगे, यह बड़ी कामयाबी है**(12) **और** (इस आख़रत के असली फल के सिवा) **एक और फल** (दुनिया का) **भी है कि तुम उस को** (भी ख़ास कर) **पसन्द करते हो,** (यानी) **अल्लाह की तरफ़ से मदद और जल्दी मिलने वाली जीत, और** (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (इन सभी बातों की) **ईमान वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए** (जैसा कि मुसलमानों की होने वाली जीतों से ख़ुशख़बरी पूरी हुई)(13) **ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह के** (दीन के) **मददगार हो जाओ** (उस तरीक़े से जो तुम्हारी शरीअत में है यानी जिहाद) **जैसा कि** (ईसा अलैहिस्सलाम के साथी यानी हवारीयीन अपनी शरीअत की रू से दीन के मददगार हुए थे जब कि बहुत से लोग ईसा अलैहिस्सलाम के दुशमन और मुख़ालिफ़ थे और जब कि) **मरयम के बेटे ईसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (उन) **हवारीयीन से कहा कि अल्लाह के वास्ते मेरा कौन मददगार होता है वो हवारी बोले हम अल्लाह** (के दीन) **के मददगार हैं** (जैसा कि उन्होंने दीन की यह मदद की कि उसके फैलाने में कोशिश की) **सो** (उस कोशिश के बाद) **बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोग काफ़िर ही रहे,** (फिर उनमें आपस में टकराव हुआ) **तो हमने ईमान वालों की उन के दुशमनों के मुक़ाबिले में हिमायत की तो वो कामयाब हो गये** (इसी तरह तुम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दीन के लिए कोशिश करो और जिहाद करो)(14)।

नोटः- सहाबा किराम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऐसी मदद और दीन की ऐसी ख़िदमत की कि उसकी मिसाल पहली उम्मतों में नहीं मिलती। उन्होंने दीन के लिए सारी दुनिया से दुशमनी ख़रीदी उन की तकलीफ़ें सहीं। अपनी जान व माल और औलाद को दीन पर क़ुरबान किया और अन्जामकार अल्लाह तआ़ला ने अपनी मदद भेजी। और सब दुशमनों पर उनको हावी कर दिया और दुनिया की हुकूमत दी।

62-सूरत-जुमआ

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '11' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

یُسَبِّحُ لِلّٰہِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ الۡمَلِکِ الۡقُدُّوۡسِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَکِیۡمِ ﴿۱﴾ ہُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ
رَسُوۡلًا مِّنۡہُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتِہٖ وَ یُزَکِّیۡہِمۡ وَ یُعَلِّمُہُمُ الۡکِتٰبَ وَ الۡحِکۡمَۃَ ٭ وَ اِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ
مُّبِیۡنٍ ﴿۲﴾ وَّ اٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ ؕ وَ ہُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ﴿۳﴾ ذٰلِکَ فَضۡلُ اللّٰہِ یُؤۡتِیۡہِ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ
اللّٰہُ ذُو الۡفَضۡلِ الۡعَظِیۡمِ ﴿۴﴾ مَثَلُ الَّذِیۡنَ حُمِّلُوا التَّوۡرٰىۃَ ثُمَّ لَمۡ یَحۡمِلُوۡہَا کَمَثَلِ الۡحِمَارِ یَحۡمِلُ اَسۡفَارًا ؕ بِئۡسَ
مَثَلُ الۡقَوۡمِ الَّذِیۡنَ کَذَّبُوۡا بِاٰیٰتِ اللّٰہِ ؕ وَ اللّٰہُ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۵﴾ قُلۡ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ ہَادُوۡۤا اِنۡ
زَعَمۡتُمۡ اَنَّکُمۡ اَوۡلِیَآءُ لِلّٰہِ مِنۡ دُوۡنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الۡمَوۡتَ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ﴿۶﴾ وَ لَا یَتَمَنَّوۡنَہٗۤ اَبَدًۢا بِمَا
قَدَّمَتۡ اَیۡدِیۡہِمۡ ؕ وَ اللّٰہُ عَلِیۡمٌۢ بِالظّٰلِمِیۡنَ ﴿۷﴾ قُلۡ اِنَّ الۡمَوۡتَ الَّذِیۡ تَفِرُّوۡنَ مِنۡہُ فَاِنَّہٗ مُلٰقِیۡکُمۡ ثُمَّ تُرَدُّوۡنَ
اِلٰی عٰلِمِ الۡغَیۡبِ وَ الشَّہَادَۃِ فَیُنَبِّئُکُمۡ بِمَا کُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۸﴾ ع

आयत नं० 01 से 08

सब चीज़ें जो कुछ आसमानों में हैं और जो कुछ ज़मीन में हैं अल्लाह की तस्बीह करती हैं जो कि बादशाह है (ऐबों से) **पाक है ज़बरदस्त** (क़ुदरत और) **हिकमत वाला है(01) वो ही जिसने** (अरब के) **अनपढ़ लोगों में उन्हीं** (की क़ौम यानी अरब) **में से एक पैग़म्बर भेजा जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते हैं और उनको** (ग़लत अक़ीदों और बुरी आदतों से) **पाक करते हैं और उनको किताब और अक़्लमन्दी** (की बातें) **सिखाते हैं** (जिसमें सब दीन के ज़रूरी हुक्म आ गये), **और ये लोग** (यानी इनमें ज़्यादा तर आप के आने से) **पहले से खुली गुमराही में थे** (यानी शिर्क व कुफ़्र)**(02) और** (इन मौजूद लोगों के सिवा) **दूसरों के लिए भी** (आप को भेजा) **जो** (इस्लाम लाकर) **उनमें से होने वाले हैं लेकिन अभी इनमें शामिल नहीं हुए** (चाहे

इस वजह से कि अभी इस्लाम नहीं लाए या इस वजह से कि अभी पैदा ही नहीं हुए इसमें सारी उम्मत के लोग क़ियामत तक के आगये अरब वाले हों या दूसरे), **और वो ज़बरदस्त** (क़ुदरत वाला) **हिकमत वाला** (है कि अपनी क़ुदरत और हिकमत से ऐसा नबी भेजा) **है(03)** (और) **यह** (रसूल के वास्ते से गुमराही से निकल कर किताब व हिकमत व हिदायत की तरफ़ आना) **अल्लाह की महरबानी है वो** (यह महरबानी) **जिस को चाहता है** (उस पर कर) **देता है, और अल्लाह बड़ा महरबान है(04)** (और आगे झुटलाने वाले यहूदियों के आलिमों के बारे में बयान है कि) **जिन लोगों को तौरेत** (के हुक्मों) **पर चलने को कहा गया फिर वो उस पर नहीं चले उन की हालत उस गधे की सी है जो बहुत सी किताबें लादे हुए** (है मगर उन किताबों के नफ़े से महरूम है बस उन लोगों ने पढ़ने में महनत बहुत की मगर अमल करके नफ़ा न उठाया और गधे की मिसाल इसलिए दी गई कि वो जानवरों में बेवक़ूफ़ मशहूर) **है, उन लोगों की बुरी हालत है जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया** (जैसे ये यहूदी हैं), **और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं दिया करता** (है क्योंकि जान बूझकर मुख़ालफ़त करते हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का भी तौरेत में हुक्म है बस ईमान न लाना तौरेत के हुक्म को छोड़ना) **है(05) आप** (उनसे) **कह दीजिए कि ऐ यहूदियों अगर तुम्हारा यह दावा है कि सारे लोगों को छोड़ कर तुम ही अल्लाह को पसन्द** (और प्यारे) **हो तो तुम** (इस की तस्दीक़ के लिए ज़रा) **मौत की तमन्ना करो** (यानी तमन्ना करके दिखला दो) **अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो(06) और** (हम साथ ही यह कह देते हैं कि) **वो** (दावा करने वाले लोग) **कभी उस** (मौत) **की तमन्ना न करेंगे उन** (कुफ़्र के) **कामों** (की सज़ा के डर) **की वजह से जो अपने हाथों समेटे हैं, और अल्लाह तआला इन ज़ालिमों** (के हाल) **को अच्छी तरह जानता है** (वक़्त पर सज़ा देगा)(07) **आप** (उनसे यह भी) **कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भागते हो** (और सज़ा के डर से उस की तमन्ना नहीं करते हो) **वो** (मौत एक दिन) **तुम को आ पकड़ेगी फिर तुम छुपी और खुली बातों के जानने वाले** (अल्लाह) **के पास ले जाए जाओगे फिर वो तुम को तुम्हारे सब किये हुए काम बता** (देगा और सज़ा) **देगा(08)।**

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर उस वक़्त उन (यहूदियों) में से कोई मौत की तमन्ना करता तो उसी वक़्त मर जाता । (रूह)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَ ابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ وَ اِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ا۟نْفَضُّوْۤا اِلَيْهَا وَ تَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَ
مِنَ التِّجَارَةِ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝

आयत नं० 09 से 11

ऐ ईमान वालो जब जुमआ के दिन (जुमआ की) **नमाज़ के लिए अज़ान कही जाया करे तो तुम अल्लाह की याद** (यानी नमाज़ व ख़ुत्बा) **की तरफ़** (फ़ौरन) **चल दिया करो और ख़रीदना बेंचना** (इसी तरह दूसरे काम धन्धे) **छोड़ दिया करो, यह** (धन्धे छोड़ कर चल देना) **तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है अगर तुम को कुछ समझ हो** (क्योंकि इस का नफ़ा सदा रहने वाला है और कारोबार का नफ़ा ख़त्म हो जाने वाला है)(09) **फिर जब** (जुमआ की) **नमाज़ पूरी हो चुके** (तो उस वक़्त तुम को इजाज़त है कि) **तुम ज़मीन पर चलो फिरो और अल्लाह की रोज़ी तलाश करो** (यानी उस वक़्त दुनिया के कामों के लिए चलने फिरने की इजाज़त है) **और** (उसमें भी) **अल्लाह को ख़ूब याद करते रहो** (यानी दुनिया के धन्धों में लग कर ज़रूरी इबादतों से बेपरवा मत हो जाओ) **ताकि तुम्हें कामयाबी नसीब हो**(10) **और** (कुछ लोगों का यह हाल है कि) **वो लोग जब किसी बिक्री या तमाशे की चीज़ को देखते हैं तो उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप को खड़ा हुआ छोड़ जाते हैं, आप कह दीजिए कि जो चीज़ अल्लाह के पास है** (यानी सवाब) **वो ऐसे धन्धे और कारोबार से बहुत बेहतर है, और** (अगर रोज़ी बढ़ाने की चाहत हो तो समझ लो कि) **अल्लाह सबसे अच्छा रोज़ी देने वाला** (है उसकी ज़रूरी इबादत में लगे रहने पर नसीब में लिखी रोज़ी देता) **है** (फिर क्यों उसके हुक्मों को छोड़ा जाए)(11)।

नोटः- जुमआ का दिन था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ के बाद ख़ुतबा दे रहे थे उस वक़्त जुमा का ख़ुतबा नमाज़ के बाद होता था जो फिर नमाज़ से पहले कर दिया गया। तो ऐसे वक़्त में एक तिजारती क़ाफ़िला मदीना पहुंचा और बिक्री के लिए मुनादी होने लगी। और उन दिनों मदीने में ज़रूरी चीज़ों की कमी थी। कुछ मुसलमान यह सोच कर कि नमाज़ तो हो ही चुकी और ख़ुतबा सुनना ऐसा ज़रूरी नहीं समझा। बस ख़रीदारी के लिए मस्जिद से बाहर

चले गये कि कभी बाद में सामान ख़त्म हो जाए तो उस मौक़े पर ये आयतें उतरीं तब अपनी ग़लती का पता चला।

मसअलाः- जुमा की अज़ान हो जाने के बाद ख़रीदना बेंचना ही नहीं बल्कि वो सारे कारोबार व काम धन्धे मना हैं जो नमाज़ को जाने में रूकावट बनें सिर्फ़ जुमआ की तैयारी से जुड़े काम किये जा सकते हैं। और तैयारी के बाद जितनी जल्दी हो सके मस्जिद में पहुंच जाए।

63-सूरत-मुनाफ़िक़ून

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '11' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ
لَكٰذِبُوْنَ ۚ﴿۱﴾ اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۳﴾ وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ
لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۫ اَنّٰى
يُؤْفَكُوْنَ ﴿۴﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ
مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۵﴾ سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۶﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ
خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿۷﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ
الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۧ﴿۸﴾

आयत नं० 01 से 08

जब आप के पास ये मुनाफ़िक़ लोग आते हैं तो कहते हैं कि हम (दिल से) **गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और यह तो अल्लाह जानता है कि आप अल्लाह के रसूल हैं** (उनकी यह बात तो झुटलाई नहीं जाती)**, और** (इसके बावजूद) **अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ लोग** (इस कहने में) **झूटे हैं** (कि हम दिल से गवाही देते हैं क्योंकि वो गवाही सिर्फ़ ज़बानी है दिल के यक़ीन से नहीं)(01) **उन लोगों ने अपनी क़समों को** (अपनी जान व माल के बचाने के लिए) **ढाल बना रक्खा है** (क्योंकि कुफ़्र न छुपाते तो उनके साथ काफ़िरों का सा बरताव किया जाता) **फिर** (एक और बुराई यह भी है कि) **ये लोग** (दूसरों को भी) **अल्लाह की राह से**

रोकते हैं, बेशक उनके ये काम बहुत ही बुरे हैं(02) (और हमारा) **यह** (कहना कि इनके काम बहुत बुरे हैं) **इस वजह से है कि ये लोग** (शुरू में दिखाने को) **ईमान ले आए फिर** (अपने शैतानों के पास जाकर कुफ़्र की बात कह कर) **काफ़िर हो गये तो** (इस धोकेबाज़ी की वजह से) **उनके दिलों पर बन्द लगा दिया गया सो** (हक़ बात को) **नहीं समझते(03) और** (देखने में ऐसे हैं कि) **आप उनको देखें** (तो) **उनके डील डोल आप को बहुत अच्छे लगें, और** (बातों में ऐसे हैं कि) **अगर ये बातें करने लगें तो आप उनकी बात** (मीठी होने की वजह से) **सुन लें,** (लेकिन अन्दर से कोरा होने की वजह से उनकी मिसाल ऐसी है कि) **जैसे कि ये लकड़ियां हैं जो** (दीवार के) **सहारे से लगाई हुई** (खड़ी हैं कि देखने में तो लम्बी चौड़ी मोटी मगर बेजान इसी तरह ये लोग देखने में तो शानदार मगर अन्दर से बेकार) **हैं,** (और अपना भेद खुल जाने के डर से ऐसे सहमे रहते हैं कि) **हर चीख़ पुकार को** (चाहे किसी वजह से हो) **अपने ही ऊपर** (पड़ने वाली मुसीबत) **समझते हैं,** (असलीयत में) **ये ही लोग** (तुम्हारे पूरे) **दुशमन हैं इसलिए उन से होशियार रहिए** (यानी उनकी किसी बात का यक़ीन न कीजिए), **अल्लाह की मार हो उन पर कहां** (सच्चे दीन से) **फिरे चले जाते** (हैं यानी रोज़ाना दूर ही होते जाते) **हैं(04) और** (उनके घमन्ड और शरारत की यह हालत है कि) **जब उन से कहा जाता है कि** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास) **आओ तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **मुआफ़ी की दुआ करें तो वो अपना सर फेर लेते हैं आप उन को देखेंगे कि वो** (इस भलाई और रसूल की दुआ से) **घमन्ड करते हुए मुंह फेर लेते हैं(05)** (जब उनके कुफ़्र की यह हालत है तो) **उनके हक़ में दोनो बातें बराबर हैं चाहे आप उनके लिए मुआफ़ी की दुआ करें या उनके लिए मुआफ़ी की दुआ न करें, अल्लाह तआ़ला उन को हरगिज़ मुआफ़ न करेगा** (मतलब यह कि अगर वो आप के पास आते भी और आप उनकी बाहरी हालत को देख कर दुआ भी करते तब भी उनको कुछ नफ़ा न होता), **बेशक अल्लाह तआ़ला ऐसे नाफ़रमान लोगों को हिदायत** (की तौफ़ीक़) **नहीं देता(06) ये वो हैं जो कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के पास** (जमा) **हैं उन पर कुछ ख़र्च मत करो यहां तक कि ये आप ही इधर उधर भाग जाएंगे, और** (उन का यह कहना सिर्फ़ जहालत है क्योंकि) **अल्लाह ही के हैं सब ख़ज़ाने आसमानों और ज़मीन के लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं** (हैं कि रोज़ी का मदार लोगों की मदद को समझते) **हैं(07) ये** (लोग) **यह कहते हैं कि अगर हम मदीने में लौट कर जाएंगे तो इज़्ज़त वाला वहां से ज़िल्लत वाले को बाहर निकाल देगा** (यानी हम उन मुसाफ़िर परदेसियों को निकाल बाहर कर देंगे) **और** (ये जो अपने को इज़्ज़त

वाला मुसलमानों को ज़िल्लत वाला कहते हैं यह सिर्फ़ जहालत है बल्कि) **अल्लाह ही की है इज़्ज़त** (असल में) **और उसके रसूल की** (अल्लाह के ताल्लुक़ के वास्ते से) **और मुसलमानों की** (अल्लाह और रसूल के ताल्लुक़ के वास्ते से) **लेकिन मुनाफ़िक़ जानते नहीं**(08)।

नोटः- मदीने में अब्दुल्लाह बिन उबई नाम का एक मुनाफ़िक़ (दिखावे का मुसलमान) था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों से दुश्मनी रखता और जलता था। एक बार एक अन्सारी और मुहाजिर के बीच झगड़ा हो गया तो उसने मौक़ा पाकर आग लगाने के लिए कहा कि ये परदेसी जो तुम्हारे टुकड़ों पर पले हैं अब इनकी इतनी हिम्मत हो गई कि तुम्हारा ही मुक़ाबिला करने लगे और जब हम सफ़र से मदीने लौट जाएंगे तो इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को बाहर निकाल देगा और इनकी मदद बन्द कर दो। इन बातों की शिकायत ज़ैद बिन अरक़म रज़ि० ने जो अन्सारी ही थे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से की क्योंकि उन्हें मुहाजिर सहाबा और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेअदबी बहुत नागवार हुई। फिर जब उससे पूछताछ की गई तो उसने साफ़ इनकार कर दिया कि उसने ऐसी बात नहीं कही और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म को झूटा साबित करना चाहा तो हज़रत ज़ैद की बात की सच्चाई की तस्दीक़ में ये आयतें उतरीं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝٩ وَ اَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْ لَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى
اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَ اَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠ وَ لَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَ اللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ ۝١١ ع

आयत नं० 09 से 11

ऐ ईमान वालो तुम को तुम्हारे माल और औलाद अल्लाह की याद से बेपरवा न करने पाएं (यानी दुनिया में ऐसे न खप जाना कि दीन के हुक्मों का ध्यान न रहे), **और जो ऐसा करेगा ऐसे लोग नाकाम रहने वाले हैं** (क्योंकि दुनिया का नफ़ा तो ख़त्म हो जाएगा और आख़रत का नुक़सान सदा के लिए रह जाएगा)(09) **और हम ने जो कुछ तुम को दिया है उसमें से** (नेक

कामों में) **इससे पहले-पहले ख़र्च कर लो कि तुम में से किसी के पास मौत आजाए फिर वो** (पछताकर तमन्ना करते हुए) **कहने लगे कि या रब मेरे मुझको और थोड़े दिनों की मुहलत क्यों न दी कि मैं ख़ैर ख़ैरात कर लेता और नेक काम करने वालों में शामिल हो** जाता(10) **और** (उन की यह तमन्ना बेकार है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला किसी आदमी को जब कि उस** (की मौत) **का** (तय) **वक़्त आ जाता है हरगिज़ मुहलत नहीं देता, और अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है** (जैसा काम होगा वैसा ही बदला पाओगे)(11)।

नोटः- हदीस में है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि कौन सा सदक़ा सबसे ज़्यादा सवाब रखता है आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे वक़्त अल्लाह की राह में ख़र्च करना जब कि इन्सान तन्दरूस्त हो और अपनी आइन्दा की ज़रूरतों के सामने यह डर भी हो कि माल ख़र्च कर दिया तो कहीं बाद में ख़ुद मुहताज न हो जाऊं। और फ़रमाया कि अल्लाह की राह में ख़र्च करने को उस वक़्त तक न टलाओ जब कि रूह तुम्हारे हलक़ में आजाए और मरने लगो उस वक़्त कहो कि इतना माल फ़लां को देदो इतना फ़लां काम में ख़र्च कर दो। (बुख़ारी व मुस्लिम)

64-सूरत-तग़ाबुन

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '18' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहम वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١ هُوَ الَّذِيْ
خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ
فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ؕ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى
اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ؕ قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ ؕ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨
يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَ
يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠

आयत नं० 01 से 10

सब चीज़ें जो कुछ कि आसमानों में हैं और जो कुछ कि ज़मीन में हैं अल्लाह की तस्बीह करती हैं, उसी की बादशाही है और वो ही तारीफ़ के लाइक़ है, और वो ही हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है(01) वो ही है जिसने तुम को पैदा किया (इसलिए चाहिए तो यह था कि सब ईमान लाते) **फिर** (इसके बावजूद भी) **तुम में कुछ काफ़िर हैं और कुछ मोमिन हैं, और अल्लाह तुम्हारे** (ईमान व कुफ़्र के) **कामों को देख रहा है** (बस हर एक के हिसाब से बदला देगा)**(02) उसी ने आसमानों और ज़मीन को ठीक-ठीक पैदा किया** (यानी उनमें फ़ाइदे हिकमतें

रक्खीं) **और तुम्हारी सूरतें बनाईं सो कैसी अच्छी सूरतें बनाईं** (क्योंकि इन्सानी जिस्म जैसा किसी जानदार के जिस्म का नक़्शा नहीं) **और उसी के पास** (सब को) **लौटना है(03)** (और) **वो सब चीज़ों को जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में हैं और जो कुछ तुम छुप कर करते हो और जो कुछ ऐलानिया करते हो उस को भी जानता है, और अल्लाह तआला दिलों तक की बातों को जानने वाला है** (इसलिए चाहिए कि तुम उसी की इबादत करो)(04) **क्या तुम को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने** (तुम से पहले) **कुफ़्र किया, फिर उन्होंने अपने** (उन) **कामों का अज़ाब** (दुनिया में भी) **चक्खा और** (इसके सिवा आख़रत में भी) **उन को दर्दनाक अज़ाब होने वाला है(05) यह** (दुनिया व आख़रत का अज़ाब) **इस लिए है कि उन लोगों के पास उनके पैग़म्बर साफ़ दलीलें लेकर आए तो उन लोगों ने** (उन पैग़म्बरों के बारे में) **कहा कि क्या** (हम जैसे) **आदमी हम को हिदायत करेंगे** (यानी इन्सान कहीं पैग़म्बर हो सकता है), **बस उन्होंने कुफ़्र किया और मुंह फेरा और अल्लाह ने** (भी उनकी कुछ) **परवाह न की** (बल्कि अज़ाब भेज दिया), **और अल्लाह** (सबसे) **बेपरवाह** (और) **तमाम तारीफ़ों वाला** (है उस को न किसी के गुनाह से नुक़सान और न किसी की ताबेदारी से नफ़ा ख़ुद ताबेदार और गुनाहगार का ही नफ़ा नुक़सान) **है(06)** (और) **ये काफ़िर** (आख़रत के अज़ाब की बातें सुन कर) **यह दावा करते हैं कि वो हरगिज़ दोबारा ज़िन्दा न किये जाएंगे, आप कह दीजिए क्यों नहीं मेरे रब की क़सम ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे फिर जो कुछ तुमने किया है तुम सब को बता दिया जाएगा** (और उस पर सज़ा दी जाएगी), **और यह** (दोबारा ज़िन्दा करना और बदला देना) **अल्लाह** (क़ुदरत वाले) **को बिल्कुल आसान है(07) इसलिए** (तुम को चाहिए कि) **तुम अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस के नूर** (यानी क़ुरआन) **पर जो कि हमने उतारा है ईमान लाओ, और अल्लाह तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर रखता है(08)** (और उस दिन को याद करो) **जिस दिन कि तुम सब को उस जमा होने के दिन में जमा करेगा ये ही दिन है नफ़े नुक़सान** (के खुल जाने) **का** (यानी मुसलमानों का नफ़ा और काफ़िरों का नुक़सान उस दिन नज़र आजाएगा), **और जो आदमी अल्लाह पर ईमान रखता होगा और नेक काम करता होगा अल्लाह उसके गुनाह दूर कर देगा और उसको** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती होंगी जिन में सदा-सदा के लिए रहेंगे,** (और) **यह बड़ी कामयाबी है(09) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया होगा और हमारी आयतों को झुटलाया होगा ये लोग दोज़ख़ी हैं उसमें सदा रहेंगे, और बुरा ठिकाना है(10)।**

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी किसी मजलिस में बैठा और पूरी मजलिस में अल्लाह का ज़िक्र न किया तो यह मजलिस क़ियामत के दिन उसके लिए पछतावा बनेगी।

مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝١١ وَ اَطِيْعُوا
اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝١٢ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ عَلَى اللّٰهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١٣ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَ اَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ وَ اِنْ
تَعْفُوْا وَ تَصْفَحُوْا وَ تَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٤ اِنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ
عَظِيْمٌ ۝١٥ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَ اسْمَعُوْا وَ اَطِيْعُوْا وَ اَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ مَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٦ اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝١٧
عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١٨ ع

आयत नं० 11 से 18

कोई मुसीबत अल्लाह के हुक्म के बिना नहीं आती (तो यह समझ कर सब्र करना और राज़ी रहना चाहिए), **और जो आदमी अल्लाह पर** (पूरा) **ईमान रखता है अल्लाह तआ़ला उसके दिल को** (सब्र करने और राज़ी रहने की) **राह दिखा देता है, और अल्लाह हर चीज़ को पूरी तरह जानता** (है कि किसने सब्र किया और किसने नहीं किया और हर एक को हिकमत से बदला व सज़ा देता) **है(11) और** (हर बात में) **अल्लाह का कहना मानो, और रसूल का कहना मानो, और अगर तुम** (ताबेदारी से) **मुंह फेरोगे तो** (याद रक्खो कि) **हमारे रसूल के ज़िम्मे सिर्फ़ साफ़-साफ़** (बात) **पहुंचा देना है** (जिस को वो पूरा कर चुके इसलिए उन का तो कोई नुक़सान नहीं तुम्हारा ही नुक़सान होगा)(12) **अल्लाह वो है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए(13) ऐ ईमान वालो तुम्हारी कुछ बीवियां और औलाद तुम्हारे** (दीन के) **दुशमन हैं** (जब कि वो अपने दुनिया के नफ़े के लिए तुम को ऐसे काम के लिए कहें जिसमें तुम्हारी आख़रत का नुक़सान हो) **इस लिए तुम उनसे** (यानी ऐसों से) **होशियार रहो** (और उनकी ऐसी बात मत मानो), **और** (अगर तुम को ऐसी मांगो पर गुस्सा आए और तुम उन पर सख़्ती करने लगो और वो ग़लती मानलें और तौबा करें तो) **तुम** (उस वक़्त उनकी वो ख़ता) **मुआफ़**

कर दो (यानी सज़ा न दो) **और टाल जाओ** (यानी ज़्यादा बुरा भला मत कहो) **और बख़्श दो** (यानी उसको दिल से और ज़बान से भुला दो), **तो अल्लाह तआ़ला** (तुम्हारे गुनाहों का) **बख़्शने वाला** (और तुम्हारे हाल पर) **रहम करने वाला है** (तो तुम भी इस बात का ध्यान रक्खो)(14) **तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे आज़माने की चीज़ हैं** (कि देखें कौन इनमें पड़कर अल्लाह के हुक्मों को भूल जाता है और कौन याद रखता है), **और** (जो इनमें पड़ कर अल्लाह को याद रक्खेगा तो) **अल्लाह के पास** (उसके लिए) **बड़ा सवाब है**(15) **तो** (इन सब बातों को सुन कर) **जहां तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो और** (उसके हुक्मों को) **सुनो और मानो और** (ख़ास कर उसके हुक्म के मौक़ों में) **ख़र्च** (भी) **किया करो यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा, और जो आदमी अपने जी के लालच से बचा रहे ऐसे ही लोग** (आख़िरत में) **कामयाब होने वाले हैं**(16) **अगर तुम अल्लाह को अच्छी तरह** (सच्चे दिल से) **क़र्ज़ दोगे** (यानी नेक कामों में ख़र्च करोगे) **तो वो उस को तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और अल्लाह बड़ा क़द्रदान** (है कि नेक काम को क़ुबूल करता) **है और बड़ा सहार वाला है** (कि गुनाह के काम पर फ़ौरन पकड़ नहीं करता)(17) **छुपे और खुले** (कामों) **का जानने वाला है** (और) **ज़बरदस्त** (कुदरत वाला और) **हिकमत वाला है**(18)।

मसअला:- आलिमों ने ऊपर आयत से दलील लेकर बयान किया है कि घर वालों से कोई काम शरीअत के ख़िलाफ़ भी हो जाए तो उनसे बिल्कुल अलग हो जाना, नफ़रत करना और उनसे दुशमनी रखना या उनके लिए बद्दुआ करना ठीक नहीं।

नोटः- औलाद और घर वालों को इम्तिहान की चीज़ बताया गया यानी उनमें पड़ कर इन्सान बहुत सी नेकियों से रूक जाता है और बहुत से गुनाह के काम कर बैठता है। ऐसे ही माल के चक्कर में भी गुनाह कर बैठता है यहां बता दिया गया कि आख़िरत के अज़ाब से ये बचा न पाएंगे।

65-सूरत-तलाक़

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '12' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَ اَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ
بُيُوْتِهِنَّ وَ لَا يَخْرُجْنَ اِلَّاۤ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ؕ وَ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ
ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ۝۱ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ
فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّ اَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَ اَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۬ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۝۲ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ وَ مَنْ
يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ؕ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝۳ وَ الّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ
الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ ۙ وَّ الّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ؕ وَ اُولَاتُ الْاَحْمَالِ
اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ؕ وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ۝۴ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ اَنْزَلَهٗۤ اِلَيْكُمْ ؕ
وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَ يُعْظِمْ لَهٗۤ اَجْرًا ۝۵ اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ وَ لَا
تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ كُنَّ اُولَاتِ حَمْلٍ فَاَنْفِقُوْا عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَاِنْ اَرْضَعْنَ
لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۚ وَ اْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ۚ وَ اِنْ تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗۤ اُخْرٰى ۝۶ لِيُنْفِقْ ذُوْ
سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَ مَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ؕ سَيَجْعَلُ
اللّٰهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ۝۷ ع

आयत नं० 01 से 07

नोटः- एक हदीस में है कि हलाल चीज़ों में अल्लाह तआला के नज़दीक सब से ज़्यादा नापसन्द चीज़ तलाक़ है।

एक हदीस में है कि निकाह करो और तलाक़ न दो क्योंकि तलाक़ से अर्शे रहमान हिल जाता है। (क़ुरतबी)

लेकिन कुछ ज़रूरत के मौक़ों में अगर तलाक़ की इजाज़त दी है तो उसके लिए कुछ क़ाइदे क़ानून बनाकर इजाज़त दी है ताकि यह काम गुस्सा निकालने और बदला लेने का खेल न बन जाए.....

ऐ पैग़म्बर (आप लोगों से कह दीजिए कि) **जब तुम लोग** (ऐसी) **औरतों को तलाक़ देने लगो** (जिन से मिलाप हो चुका है) **तो उन को इद्दत** (के ज़माने यानी महावारी) **से पहले** (यानी पाकी में) **तलाक़ दो** (और यह बात हदीसों से साबित है कि उस पाकी में मिलाप न हो जिसमें तलाक़ देना है) **और** (तलाक़ देने के बाद) **तुम इद्दत** (के दिनों) **को याद रक्खो** (यानी मर्द व औरत सब याद रक्खें), **और अल्लाह से डरते रहो जो तुम्हारा रब है** (यानी इस बारे में उस के हुक्मों के ख़िलाफ़ न करो जैसा यह कि तीन तलाक़ एक दम मत दो और महावारी के दिनों में तलाक़ मत दो और यह कि इद्दत के दिनों में) **उन औरतों को** (रहने के) **घरों से मत निकालो** (क्योंकि तलाक़ दी हुई औरत का रहने का हक़ वाजिब है) **और न वो औरतें ख़ुद निकलें** (यह शरीअत का हुक्म है) **मगर हां कोई खुली बेहयाई करें तो और बात** (है यानी जैसे बदकारी या चोरी करें तो सज़ा के लिए निकाली जाएं या ज़बान दराज़ी और हर वक़्त का झगड़ा रखती हों तो उन को निकाल देना जाइज़) **है, और ये सब अल्लाह के तय किये हुए हुक्म हैं, और जो आदमी अल्लाह के हुक्मों से आगे बढ़ेगा** (जैसे उस औरत को घर से निकाल दिया) **तो उसने अपने ऊपर ज़ुल्म** (किया यानी गुनाह का काम) **किया,** (आगे बयान है कि तलाक़ रजई से आगे न बढ़ो यानी एक दम तीन तलाक़ मत दो क्योंकि) **तुम नहीं जानते शायद अल्लाह तआला इस** (तलाक़ देने) **के बाद कोई नई बात** (तुम्हारे दिल में) **पैदा कर दे** (जैसे तलाक़ पर पछतावा हो तो तलाक़ रजई में इस का हल आसानी से हो सकेगा)(01) **फिर जब वो** (तलाक़ दी हुई) **औरतें** (जब कि उन को तलाक़ रजई दी हो) **अपनी इद्दत पूरी होने के नज़दीक पहुंच जाएं** (और इद्दत ख़त्म नहीं हुई) **तो** (तुम को दो इख़्तियार हैं या तो) **उन को भले तरीक़े पर** (लौटा कर अपने) **निकाह में रहने दो या भले तरीक़े से उन को आज़ाद कर दो** (मतलब यह कि तीसरी बात मत करो कि रखना भी नहीं चाहते और उनको तंग करने के लिए निकाह में लौटाओ) **और** (जो कुछ करो मेल या जुदाई उस पर) **आपस में से दो भरोसेमन्द लोगों को गवाह कर लो** (ताकि उलझाव न रहे न मर्द झूट कह सके मैं लौटा चुका था

और न औरत इनकार कर सके) **और** (ऐ गवाहो अगर गवाही की ज़रूरत पड़े तो) **तुम अल्लाह के वास्ते ठीक-ठीक गवाही दो, इस बात से उस आदमी को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर यक़ीन रखता हो** (मतलब यह कि ईमानदार ही नसीहत से फ़ाइदा उठाते हैं), **और** (आगे परहेज़गारी की बरकतें बताते हैं कि) **जो आदमी अल्लाह से डरता है** (और परहेज़गार रहता है तो) **अल्लाह तआ़ला उसके लिए** (मुश्किलों व नुक़सान से) **बचाव का रास्ता निकाल देता है(02) और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाता है जहां उस का गुमान भी नहीं होता, और जो आदमी अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस** (का काम बनाने) **के लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह तआ़ला अपना काम** (जिस तरह चाहता है) **पूरा करके रहता है,** (और हर काम का वक़्त भी उसके इरादे पर है क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ का एक अन्दाज़** (अपने इल्म में) **तय कर रक्खा है(03) और तुम्हारी** (तलाक़ दी हुई) **बीवियों में से जो औरतें** (ज़्यादा उम्र होने की वजह से) **महावारी आने से नाउम्मीद हो चुकी हैं अगर तुम को** (उनकी इद्दत के हिसाब में) **शक हो तो उन की इद्दत तीन महीने है और इसी तरह जिन औरतों को** (अभी तक) **महावारी नहीं आई** (उनकी इद्दत भी तीन महीने है और जिन को महावारी आती है उनकी इद्दत तीन महावारी है), **और जिन औरतों के पेट में बच्चा है उनकी इद्दत उस बच्चे का पैदा हो जाना है, और जो आदमी अल्लाह से डरेगा अल्लाह तआ़ला उसके हर काम में आसानी कर देगा(04) यह** (जो कुछ बयान हुआ) **अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारे पास भेजा है, और जो आदमी** (शरीअत के हुक्मों में) **अल्लाह तआ़ला से डरेगा अल्लाह तआ़ला उसके गुनाह दूर कर देगा** (जो सबसे बड़े नुक़सान से बचाव है) **और उसको बड़ा** (नफ़ा यानी) **सवाब देगा(05)** (आगे फिर तलाक़ दी हुई औरतों के हक़ों का बयान है कि) **तुम उन** (तलाक़ दी हुई) **औरतों को अपनी हैसियत के हिसाब से रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो** (यानी इद्दत में रहने की जगह भी तलाक़ दी हुई औरत का हक़ है अलबत्ता तलाक़ बाइन में एक मकान में अकेले में दोनों का साथ रहना जाइज़ नहीं बल्कि बीच में पर्दा रहना ज़रूरी है) **और उनको तंग करने के लिए** (रहने के बारे में) **तकलीफ़ मत पहुंचाओ** (जैसे कोई ऐसी बात करने लगे जिससे वो परीशान होकर निकल जाएं) **और अगर उन** (तलाक़ दी हुई) **औरतों के पेट में बच्चा हो तो बच्चा पैदा होने तक उन को** (खाने पीने का) **ख़र्च दो** (जब कि दूसरी औरतों के ख़र्च की हद तीन महावारी या तीन महीने हैं), **फिर अगर** (इद्दत के बाद) **वो** (तलाक़ दी हुई) **औरतें** (जब कि पहले से बच्चे वाली हों या बच्चा ही पैदा होने से उनकी इद्दत ख़त्म हुई हो) **तुम्हारे लिए** (बच्चे को ख़र्च लेकर) **दूध पिलाएं**

तो तुम उन को (तय किया हुआ) **ख़र्च दो, और** (ख़र्च के बारे में) **आपस में भले तरीक़े से बात तय कर लिया करो** (यानी न तो औरत इतना ज़्यादा मांगे कि मर्द को दूसरी दूध पिलाने वाली तलाश करनी पड़े और न मर्द इतना कम देना चाहे कि औरत का काम न चल सके बल्कि जहां तक हो सके दोनो इसका ध्यान रक्खें कि मां ही दूध पिलाए कि बच्चे के लिए ज़्यादा अच्छा है) **और अगर तुम आपस में ज़िद करोगे तो कोई दूसरी औरत दूध पिलाएगी** (और मां बाप के लिए अच्छी बात नहीं कि पैसों के लालच में किसी और से दूध पिलवाएं)(06) **गुन्जाइश वाले को अपनी हैसियत के हिसाब से** (बच्चे पर) **ख़र्च करना चाहिए, और जिसकी आमदनी कम हो उसको चाहिए कि अल्लाह ने उस को जितना दिया है उसमें से ख़र्च** (करे यानी अमीर आदमी अपनी हैसियत के हिसाब से ख़र्च करे और ग़रीब आदमी अपनी हैसियत के हिसाब से ख़र्च) **करे,** (क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला किसी आदमी पर उससे ज़्यादा बोझ नहीं डालता जितना उस को दिया है,** (और ग़रीब आदमी ख़र्च करने से न डरे बस जान लो कि) **अल्लाह तआ़ला तंगी के बाद जल्दी आसानी भी पैदा कर देगा**(07)।

नोटः- तलाक़ तीन क़िस्म की होती है एक तो रजई यानी जब एक या दो बार तलाक़ दी हो तो इद्दत के अन्दर दोबारा उसी निकाह में लौटाने का हक़ होता है और अगर न लौटाएं और इद्दत पूरी हो जाए तो अब तलाक़ पूरी हो जाती है। दूसरी क़िस्म तलाक़ बाइन यानी जब तलाक़ रजई में न लौटाया जाए तो इद्दत पूरी हाने के बाद वो तलाक़ बाइन बन जाती है जिस में दोबारा रज़ामन्दी से नये सिरे से निकाह हो सकता है। और तीसरी क़िस्म तलाक़ मुग़ल्लज़ा जिस में गुन्जाइश बिल्कुल ख़त्म यह तीन तलाक़ के बाद होती है चाहे तलाक़ एक दम दी हों या तीन बार में दी हों।

मसअलाः- अगर दूसरी औरत से दूध पिलवाना तय हो जाए तो यह ज़रूरी है कि दूध पिलाने वाली औरत बच्चे को मां के पास रख कर दूध पिलाए। मां से अलग करके दूध पिलवाना जाइज़ नहीं क्योंकि परवरिश अपनी देख रेख में करना मां का हक़ है जो हदीस से साबित है। उससे यह हक़ छीनना जाइज़ नहीं। (मज़हरी)

हदीसः- बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "कि मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार आदमी बेहिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे उनकी ख़ूबियों में एक यह भी है कि वो अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करने वाले होंगे"। (मज़हरी)

وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ اَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ۝٨
فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ۝٩ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِی
الْاَلْبَابِ ۛۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝١٠ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ۝١١ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّ
مِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۙ۬ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ
بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا ۝١٢

आयत नं० 08 से 12

और बहुत सी बस्तियां थी जिन्होंने अपने रब और उसके पैग़म्बरों के हुक्म (मानने) **से सरकशी की तो हम ने उन** (के कामों) **का सख़्त हिसाब किया** (मतलब यह कि उनके कुफ़्र के कामों में से किसी काम को मुआफ़ नहीं किया बल्कि सब पर सज़ा दी गई) **और हमने उन को बड़ी भारी सज़ा दी** (कि अज़ाब से हलाक किये गये)(08) **बस उन्होंने अपने कामों की सज़ा भुगती और उनके कामों का अन्जाम नुक़सान ही हुआ(09)** (यह तो दुनिया में हुआ और आख़िरत में) **अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए एक सख़्त अज़ाब तैयार कर रक्खा है** (और जब अन्जाम नाफ़रमानी का यह है) **तो ऐ समझदारो जो कि ईमान लाए हो अल्लाह से डरो** (और कहना मानो और उसी का तरीक़ा बताने के लिए) **अल्लाह ने तुम्हारे पास एक नसीहत नामा भेजा है(10)** (और वो नसीहत नामा देकर) **एक ऐसा रसूल** (भेजा) **जो तुम को अल्लाह के साफ़-साफ़ हुक्म पढ़ कर सुनाते हैं ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाएं और अच्छे काम करें** (कुफ़्र और जहालत के) **अन्धेरों से** (ईमान और इल्म व नेक कामों के) **नूर की तरफ़ ले आएं** (मतलब यह कि जो नसीहत रसूल के वास्ते से पहुंचे उस पर चलना भी ताबेदारी है), **और** (आगे ताबेदारी यानी ईमान व नेक कामों पर वादा है कि) **जो आदमी अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा अल्लाह उस को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं उनमें सदा-सदा के लिए रहेंगे, बेशक अल्लाह ने** (उनको बहुत) **अच्छी रोज़ी दी(11) अल्लाह ऐसा है जिसने सात आसमान पैदा किये और उन्हीं की तरह ज़मीन** (भी सात पैदा की जैसा कि

हदीस में है कि एक ज़मीन के नीचे दूसरी ज़मीन है उसके नीचे तीसरी ज़मीन है इसी तरह सात हैं ज़मीनें) **भी,** (और) **उन सब** (आसमानों और ज़मीनों) **में** (अल्लाह तआ़ला के शरई या इन्तिज़ामी या दोनों तरह के) **हुक्म उतरते रहते हैं** (और यह इसलिए बता दिया गया) **ताकि तुम को मालूम हो जाए कि अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है और अल्लाह हर चीज़ को अपने इल्म में समाए हुए** (है इसलिए अल्लाह तआ़ला की ताबेदारी करना ज़रूरी) **है**(12)

नोटः- ऊपर आयत से इतनी बात तो साफ़ तौर पर साबित है कि आसमान की तरह ज़मीनें भी सात हैं। मगर वो ज़मीनें कहां ऊपर नीचे हैं आसमान की तरह या अलग-अलग जगह हैं इस बारे में कुछ बताया नहीं गया। और न इसके जानने की ज़रूरत है न उस पर किसी शरई हुक्म का मदार है। बस जितना बता दिया उस पर यक़ीन रखना काफ़ी है।

66-सूरत-तहरीम

इस मदनी सूरत में '2' रूकू और '12' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۱ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ
لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝۲ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ
حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ
اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝۳ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ
اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝۴ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ
يُّبْدِلَهٗۤ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ۝۵

आयत नं० 01 से 05

ऐ नबी जो चीज़ अल्लाह ने आप के लिए हलाल की है आप (क़सम खाकर) **उसको** (अपने ऊपर) **क्यों हराम करते हैं** (फिर वो भी) **अपनी बीवियों को राज़ी करने के लिए, और अल्लाह तआ़ला बख़्शने वाला महरबान है** (कि गुनाह तक को मुआफ़ कर देता है और आपसे तो कोई गुनाह भी नहीं हुआ इसलिए यह नाराज़ी नहीं बल्कि हमदर्दी से आप को कहा जाता है कि आप ने एक जाइज़ नफ़े को छोड़ने की तकलीफ़ क्यों उठाई)(01) **अल्लाह तआ़ला ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी क़समों का खोलना** (यानी क़सम तोड़ने के बाद उसके कफ़्फ़ारा अदा करने का तरीक़ा) **तय कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा मालिक** (और मददगार) **है, और वो बड़ा जानने वाला बड़ी हिकमत वाला** (है, इस लिए वो अपने इल्म व हिकमत से तुम्हारी भलाइयों और ज़रूरतों को जानकर तुम्हारी बहुत सी मुश्किलों को आसान कर देने के तरीक़े तय कर देता है जैसा कि कफ़्फ़ारे से क़सम की पाबन्दी की तकलीफ़ का इलाज कर दिया) **है(02) और** (आगे पैग़म्बर की बीवियों को सुनाते हैं कि वो वक़्त याद कीजिए) **जब कि पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **ने अपनी किसी बीवी से**

चुपके से एक बात कही (वो बात ये ही थी कि मैं फिर शहद न पियूंगा मगर किसी से कहना नहीं), **फिर जब उस बीवी ने वो बात** (दूसरी बीवी को) **बता दी और पैग़म्बर को अल्लाह तआ़ला ने** (वही से) **उसकी ख़बर कर दी तो पैग़म्बर ने** (उस राज़ खोलने वाली बीवी को) **थोड़ी सी बात तो जिता दी** (कि तूने हमारी यह बात दूसरी से कहदी) **और थोड़ी सी बात को टाल गये** (ताकि अपनी ग़लती पर ज़्यादा शर्मिन्दा न हो), **तो जब पैग़म्बर ने उस बीवी को वो बात जिताई तो वो कहने लगी कि आप को इस की किसने ख़बर दी, आपने कहा कि मुझको बड़े जानने वाले ख़बर रखने वाले** (यानी अल्लाह) **ने ख़बर कर दी(03) ऐ** (पैग़म्बर की) **दोनो बीवियो अगर तुम अल्लाह के सामने** (अपनी ग़लती पर) **तौबा कर लो तो** (बेहतर है और) **तुम्हारे दिल** (इस तरफ़) **झुक रहे हैं, और अगर** (इसी तरह) **पैग़म्बर के मुक़ाबिले में तुम दोनो कार्रवाइयां करती रहीं तो** (याद रक्खो कि) **पैग़म्बर का दोस्त अल्लाह है और जिब्रील है और नेक मुसलमान हैं और उनके अलावा फ़रिशते** (आप के) **मददगार हैं** (मतलब यह कि तुम्हारी इन साज़िशों से पैग़म्बर का कोई नुक़सान नहीं बल्कि तुम्हारा ही नुक़सान है क्योंकि जिसके हिमायती ऐसे हों उसके ख़िलाफ़ कार्रवाइयां करने का अन्जाम बुरा ही बुरा है)**(04) अगर** (तुम यह समझो कि हम से बेहतर औरतें कहां से आएंगी तो जान लो कि अगर) **पैग़म्बर तुम औरतों को तलाक़ देदें तो उन का रब बहुत जल्दी तुम्हारे बदले उन को तुम से अच्छी बीवियां देदेगा जो मुसलमान ईमान वाली ताबेदारी करने वाली तौबा करने वाली इबादत करने वाली रोज़ा रखने वाली होंगी कुछ बेवा और कुछ कुवारी होंगी** (कुछ बातों में बेवा भी पसन्द होती है जैसे तजरबा, सलीक़ा हम उम्री वग़ैरह)(05)।

नोटः- एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बीवी के पास शहद पिया तो दूसरी बीवी ने शिकायत की कि आपने मग़ाफ़ीर पिया है जो एक क़िस्म का गोन्द होता है जिसमें बू होती है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बदबूदार चीज़ों से नफ़रत थी इसलिए आप ने क़सम खाली कि मैं फिर शहद न पियूंगा और बीवी से कह दिया कि इस बात का किसी से ज़िक्र न करें मगर उन्होंने एक और बीवी से कह दिया क्योंकि एक हलाल चीज़ को हुज़ूर ने क़सम खाकर अपने ऊपर हराम कर लिया था इस पर ये आयतजें उतरीं आपने क़सम तोड़ दी और कफ़्फ़ारे में एक गुलाम आज़ाद कर दिया था।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا
يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

आयत नं० 06 से 07

ऐ ईमान वालो तुम अपने को और अपने घर वालों को (दोज़ख़ की) **आग से बचाओ जिस का ईंधन इन्सान और पत्थर हैं** (अपने को बचाना खुद हुक्मों की ताबेदारी करना और घर वालों को बचाना उन को दीन की बातें सिखाना और उन पर पाबन्दी कराने के लिए कोशिश करना है आगे दोज़ख़ का बयान है कि) **जिस पर सख़्त दिल** (और) **मज़बूत ताक़तवर फ़रिशते** (तैनात) **हैं** (कि न वो किसी पर रहम करें न कोई उन का मुक़ाबिला करके बच सके) **जो अल्लाह की किसी हुक्म में** (ज़रा) **नाफ़रमानी नहीं करते और जो कुछ उनको हुक्म दिया जाता है उस को** (फ़ौरन) **पूरा करते हैं(06)** (बस दोज़ख़ में ऐसे फ़रिशते तैनात हैं जो काफ़िरों को दोज़ख़ में दाख़िल करके छोड़ेंगे और उस वक़्त काफ़िरों से कहा जाएगा कि) **ऐ काफ़िरों तुम आज बहाने मत बनाओ** (कि बेकार है) **बस तुम को उसी की सज़ा मिल रही है जो कुछ तुम** (दुनिया में) **किया करते थे(07)।**

नोटः- ऊपर आयत से साबित हुआ कि हर आदमी पर फ़र्ज़ है कि अपनी बीवी और औलाद को शरीअत की ज़रूरी बातें और हलाल व हराम के हुक्म सिखा दे और उस पर चलाने के लिए कोशिश करे। और कुछ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा अज़ाब में वो आदमी होगा जिसके बीवी बच्चे दीन से जाहिल और बेपरवा हों। (रूह)

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى اللّٰهُ النَّبِيَّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ
بِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَ اغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ
الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ

كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّ قِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَ نَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۱﴾ وَ مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَ صَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَ
كُتُبِهٖ وَ كَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿۱۲﴾

आयत नं० 08 से 12

(इन आयतों में दोज़ख़ से बचने का तरीक़ा बताया गया है और वो ही घर वालों को भी बताने का हुक्म है कि) **ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह के सामने सच्ची तौबा करो** (यानी दिल में गुनाह पर पछतावा और आगे कभी उसके न करने का पक्का इरादा और दीन के हुक्मों की पाबन्दी की कोशिश), **उम्मीद** (यानी वादा) **है कि तुम्हारा रब** (इस तौबा की वजह से) **तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा और तुम को** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी** (और यह उस दिन होगा) **जिस दिन अल्लाह** (अपने) **पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को और जो मुसलमान** (ईमान और दीन की रू से) **उनके साथ हैं उनको रूसवा न करेगा उन का नूर उनके दाहिने और उनके सामने दौड़ता होगा** (जैसा कि सूरत 'हदीद' में आ चुका है और वो) **यह दुआ करते होंगे कि या हमारे रब हमारे लिए इस नूर को अख़ीर तक रखिए** (यानी रास्ते में बुझ न जाए) **और हमें मुआफ़ कर दीजिए, बेशक आप हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं(08) ऐ पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए,** (दुनिया में तो ये इस सज़ा के हक़दार हुए) **और** (आख़रत में) **उनका ठिकाना दोज़ख़ है, और वो बुरी जगह है(09)** (आगे इसका बयान है कि आख़रत में हर इन्सान को अपना ही ईमान काम आएगा, काफ़िर को उस के किसी रिशतेदार का ईमान अज़ाब से न बचाएगा, इसी तरह मोमिन के रिशतेदार काफ़िर हों तो मोमिन को इसका कोई नुक़सान नहीं पहुंचेगा) **अल्लाह तआ़ला काफ़िरों** (की नसीहत) **के लिए नूह** (अलैहिस्सलाम) **की बीवी और लूत** (अलैहिस्सलाम) **की बीवी का हाल बयान करता है, वो दोनो हमारे ख़ास बन्दों में से दो नेक बन्दों के निकाह में थी सो उन औरतों ने उन बन्दों का हक़ बर्बाद किया** (यानी नबी होने की वजह से उन का हक़ यह भी था कि उन पर ईमान लातीं और दीनी हुक्मों में उनकी ताबेदारी करतीं जो उन्होंने नहीं की) **तो वो**

दोनो नेक बन्दे अल्लाह के मुक़ाबिले में उनके ज़रा काम न आसके और उन दोनो औरतों को (काफ़िर हो जाने की वजह से) **हुक्म हो गया कि तुम दोनो भी दूसरे जहन्नम में दाख़िल होने वालों के साथ जहन्नम में दाख़िल हो जाओ(10)** (और आगे) **अल्लाह तआ़ला मुसलमानों** (की तसल्ली) **के लिए फ़िरऔन की बीवी** (हज़रत आसिया) **का हाल बयान करता है, जब कि उन बीवी ने दुआ की कि या मेरे रब मेरे वास्ते जन्नत में अपने नज़दीक मकान बनाइये और मुझको फ़िरऔन** (की बुराई) **से और उसके** (कुफ़्र के) **काम** (के नुक़सान और असर) **से बचा दीजिए और मुझ को सभी ज़ालिम** (यानी काफ़िर) **लोगों** (के खुले और छुपे नुक़सान) **से बचाए रखिए(11) और** (ऐसे ही मुसलमानों की तसल्ली के लिए अल्लाह तआ़ला) **इमरान की बेटी हज़रत मरयम का हाल बयान करता है जिन्होंने अपनी आबरू को** (हराम और हलाल दोनो से) **बचाए रक्खा** (यानी कभी किसी मर्द से तन्हाई में मिलाप नहीं किया) **तो हम ने उसमें** (जिब्रील अलैहिस्सलाम के वास्ते से) **अपनी रूह फूंक दी और उन्होंने अपने रब की बातों** (जो फ़रिशतों के वास्ते से पहुंची थी) **और उसकी किताबों की तस्दीक़ की** (जिन में तौरेत व इन्जील भी हैं यह बयान है उनके अक़ीदों का) **और** (नेक कामों का बयान यह है कि) **वो ताबेदारी करने वालों में से थी(12)।**

नोटः- हज़रत अ़ली रज़ि० से सवाल किया गया कि तौबा क्या है तो आप ने फ़रमाया जिन में '6' चीज़ें जमा हों।

(1) अपने पिछले बुरे काम का पछतावा।

(2) अल्लाह तआ़ला के जो फ़र्ज़ व वाजिब छूट गये हैं उन को अदा करना।

(3) किसी का माल वग़ैरह ज़ुल्म से ले लिया था तो उसकी वापसी।

(4) किसी को हाथ या ज़बान से सताया और तकलीफ़ पहुंचाई थी तो उससे मुआफ़ी।

(5) आगे को उस गुनाह के पास न जाने का पक्का इरादा।

(6) और यह कि जिस तरह उसने अपने जी को अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए देखा है अब वो ताबेदारी करते हुए देखले।

67-सूरत-मुल्क

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '30' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ٘ وَ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرُ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَ الْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ
اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْغَفُوْرُ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰی فِیْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ
تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰی مِنْ فُطُوْرٍ ﴿۳﴾ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَیْنِ یَنْقَلِبْ اِلَیْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّ هُوَ
حَسِیْرٌ ﴿۴﴾ وَ لَقَدْ زَیَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْیَا بِمَصَابِیْحَ وَ جَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّیٰطِیْنِ وَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِیْرِ ﴿۵﴾
وَ لِلَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۶﴾ اِذَاۤ اُلْقُوْا فِیْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِیْقًا وَّ هِیَ تَفُوْرُ ۙ﴿۷﴾
تَكَادُ تَمَیَّزُ مِنَ الْغَیْظِ ؕ كُلَّمَاۤ اُلْقِیَ فِیْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ خَزَنَتُهَاۤ اَلَمْ یَاْتِكُمْ نَذِیْرٌ ﴿۸﴾ قَالُوْا بَلٰی قَدْ جَآءَنَا
نَذِیْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا وَ قُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ ۖۚ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ كَبِیْرٍ ﴿۹﴾ وَ قَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ
مَا كُنَّا فِیْۤ اَصْحٰبِ السَّعِیْرِ ﴿۱۰﴾ فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِیْرِ ﴿۱۱﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَیْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِیْرٌ ﴿۱۲﴾ وَ اَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۳﴾ اَلَا
یَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَ هُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ ﴿۱۴﴾

आयत नं० 01 से 14

वो (अल्लाह) **बड़ी शान वाला है जिसके क़ब्ज़े में सारी बादशाही है, और वो सब कुछ कर सकता है(01) जिसने मौत और ज़िन्दगी को** (इसलिए) **पैदा किया ताकि तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन अच्छे काम करता है, और वो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला और) **बख़्शने वाला** (है कि बुरे कामों पर अज़ाब और अच्छे कामों पर बख़्शिश और सवाब देता) **है(02) उसने सात आसमान ऊपर नीचे पैदा** (किये जैसा हदीस में है कि एक आसमान से ऊपर बहुत दूरी पर दूसरा आसमान है फिर इसी तरह उससे ऊपर तीसरा आसमान है इसी तरह सातों आसमान पैदा) **किये,**

(आगे आसमान की मज़बूती का बयान है कि ऐ देखने वालो) **तुम अल्लाह की इस कारीगरी में कोई कमी न देखोगे,** (सो अब की बार) **फिर नज़र डाल कर देख लो कहीं तुम को कोई कमी दिखाई देती है** (यानी बेसोचे तो बहुत बार देखा होगा अब की बार इसी इरादे से नज़र कर)(03) **फिर बार-बार नज़र डाल कर देख** (अन्जामकार) **नज़र थक हार कर नाकाम होकर तेरी तरफ़ लौट** (आएगी और कोई कमी नज़र न) **आएगी(04) और** (हमारी कुदरत की दलील यह है कि) **हमने नज़दीक वाले आसमान को चराग़ों** (यानी सितारों) **से सजा रक्खा है और हमने उन** (सितारों) **को शैतानों के** (अंगारे) **मारने का सामान भी बनाया है और हमने उन** (शैतानों) **के लिए** (सितारों की मार के सिवा जो कि दुनिया में होता है आख़रत में उन के कुफ़्र की वजह से) **दोज़ख़ का अज़ाब** (भी) **तैयार कर रक्खा है(05) और जो लोग अपने रब** (के एक होने) **का इनकार करते हैं उनके लिए दोज़ख़ का अज़ाब है, और वो बुरी जगह है(06) जब ये लोग उसमें डाले जाएंगे तो उसकी बड़ी ज़ोर की आवाज़ सुनेंगे और वो** (इस तरह) **जोश मारती होगी(07) जैसे लगता है कि** (अभी) **गुस्से के मारे फट पड़ेगी,** (और) **जब उसमें कोई गिरोह** (काफ़िरों का) **डाला जाएगा तो उसके रखवाले** (फ़रिशते) **उन लोगों से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई ख़बरदार करने वाला** (पैग़म्बर) **नहीं आया था** (जिसने तुम को इस अज़ाब से डराया हो तो चाहिए था कि इससे डरते और बचने का सामान करते)(08) **वो काफ़िर** (इक़रार करेंगे और) **कहेंगे कि बेशक हमारे पास ख़बरदार करने वाला** (पैग़म्बर) **आया था मगर** (हमारी शामत थी कि) **हमने उसको झुटला दिया और कह दिया कि अल्लाह तआला ने** (हुक्म या किताब) **कुछ नहीं उतारा** (और) **तुम बड़ी ग़लती में पड़े हो(09) और** (वो काफ़िर फ़रिशतों से यह भी) **कहेंगे कि हम अगर सुन लेते या समझ से काम लेते** (यानी पैग़म्बरों के कहने को मान लेते) **तो हम दोज़ख़ वालों में** (शामिल) **न होते(10) इस तरह अपने जुर्म का इक़रार करेंगे तो दोज़ख़ वालों पर लानत है(11) बेशक जो लोग अपने रब से बिन देखे डरते हैं** (और ईमान लाते और ताबेदारी करते हैं) **उन के लिए बख़शिश और बड़ा सवाब** (तय) **है(12) और तुम लोग चाहे छुपा कर बात कहो या पुकार कर** (उसको सब ख़बर है, क्योंकि) **वो दिलों तक की बातों को जानता है(13)** (और भला) **क्या वो न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वो भेदों का जानने वाला** (और) **ख़बरदार है(14)।**

नोटः- हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूरत

तिलावत की यहां तक कि "अहसनु अमला" तक पहुंचे तो फ़रमाया कि अहसनु अमला (सबसे अच्छे काम करने वाला) वो आदमी है जो अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों से सबसे ज़्यादा परहेज़ करने वाला हो और अल्लाह की ताबेदारी में हर वक़्त तैयार हो। (क़ुरतबी)

هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِىْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ النُّشُوْرُ ﴿۱۵﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِى
السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْاَرْضَ فَاِذَا هِىَ تَمُوْرُ ﴿۱۶﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِى السَّمَآءِ اَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ
فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿۱۷﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿۱۸﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ
فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿۱۹﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ جُنْدٌ
لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِىْ غُرُوْرٍ ﴿۲۰﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِىْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ
رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِىْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿۲۱﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِىْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖۤ اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِىْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۲۲﴾ قُلْ هُوَ الَّذِىْۤ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿۲۳﴾ قُلْ هُوَ
الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۲۵﴾ قُلْ اِنَّمَا
الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَاِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۶﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِىْ
كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿۲۷﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِىَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِىَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ
اَلِيْمٍ ﴿۲۸﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ
اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿۳۰﴾

आयत नं० 15 से 30

वो ऐसा (नेमतें देने वाला) **है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को काम का बना दिया** (कि तुम उसमें हर तरह के काम कर सकते हो) **तो तुम उसके रास्तों में चलो** (फिरो) **और अल्लाह की रोज़ी में से** (जो ज़मीन में पैदा की है) **खाओ** (पियो), **और** (खा पीकर उस को याद रखना कि) **उसी के पास दोबारा ज़िन्दा होकर जाना** (है बस चाहिए कि उस की नेमतों का शुक्र अदा करो जो ईमान व ताबेदारी) **है**(15) **क्या तुम आसमान वाले की इस बात से निडर हो गये कि वो तुम को** (क़ारून की तरह) **ज़मीन में धंसा दे फिर वो ज़मीन थरा थरा**(कर उलट पुलट हो)**ने लगे**

(जिससे तुम ज़मीन में नीचे उतर कर दब जाओ)(16) **या तुम लोग आसमान वाले की इस बात से निडर हो गये कि वो तुम पर** (आद क़ौम की तरह) **एक तेज़ आंधी भेज दे** (जिससे तुम हलाक हो जाओ यानी तुम्हारे कुफ़्र की वजह से ये ही होना चाहिए), **फिर** (अगर किसी वजह से दुनिया का अज़ाब तुम पर से टल रहा है तो क्या हुआ) **जल्दी ही** (यानी मरते ही) **तुम्हें पता चल जाएगा कि मेरा** (अज़ाब से) **डराना कैसा** (सही) **था**(17) **और इनसे पहले जो लोग हो चुके हैं उन्होंने** (सच्चे दीन को) **झुटलाया था तो** (देख लो उन पर) **मेरा अज़ाब कैसा हुआ** (जिससे कुफ़्र का अन्जाम पता चला बस अगर किसी वजह से यहां अज़ाब टल गया तो दूसरी दुनिया में तो ज़रूर होगा)(18) **क्या उन लोगों ने अपने ऊपर परिन्दों को नहीं देखा कि पर फैलाए हुए** (उड़ते फिरते) **हैं और** (कभी इसी हालत में) **पर समेट लेते** (हैं और दोनों हालतों में ज़मीन पर नहीं गिरते) **हैं,** (और) **सिवाए अल्लाह के उन को कोई थामे हुए नहीं है, बेशक वो हर चीज़ को देख रहा** (है और जिस तरह चाहे उसे चला रहा) **है**(19) (अल्लाह की कुदरत के कमाल जानने के बाद अब बताओ कि) **भला अल्लाह के सिवा वो कौन है कि वो तुम्हारी फ़ौज बन कर** (मुसीबतों से) **तुम्हारा बचाव कर सके,** (और) **काफ़िर** (जो अपने माबूदों के बारे में ऐसा समझते हैं) **तो** (वो) **निरे धोके में हैं**(20) (और) **हां** (यह भी बताओ कि) **वो कौन है जो तुम को रोज़ी पहुंचाए अगर अल्लाह तआला अपनी रोज़ी बन्द कर ले** (मगर ये लोग इससे भी असर नहीं लेते) **बल्कि ये लोग शरारत और** (सच्चे दीन से) **नफ़रत पर जम रहे** (हैं यानी तुम्हारे बुत न किसी मुसीबत को दूर कर सकते हैं न कोई नफ़ा पहुंचा सकते) **हैं**(21) **तो** (इसको सुन कर सोचो कि) **जो आदमी** (टेढ़े मेढ़े रास्ते में ठोकरें खाता हुआ और) **मुंह बल गिरता हुआ चल रहा हो वो अपने ठिकाने पर ज़्यादा पहुंचने वाला होगा या वो आदमी** (ज़्यादा पहुंचने वाला होगा) **जो एक सीधे रास्ते पर चल रहा हो** (ये ही हाल मोमिन व काफ़िर का है कि मोमिन के चलने का रास्ता भी सच्चे दीन का रास्ता है और वो चलता भी है सीधा होकर और काफ़िर के चलने का रास्ता भी गुमराही का है और चलने में भी ख़तरनाक जगहों में गिरता जाता है बस ऐसी सूरत में क्या सही ठिकाने पर पहुंचेगा)(22) **आप** (इनसे) **कह दीजिए कि वो ही** (ऐसा कुदरत वाला व नेमतें देने वाला) **है जिसने तुम को पैदा किया और तुम को कान और आंखें और दिल दिये,** (मगर) **तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो**(23) (और) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि वो ही है जिसने तुम को ज़मीन में फैलाया और तुम उसी के पास इकट्ठे किये जाओगे**(24) **और ये लोग** (जब क़ियामत का ज़िक्र सुनते हैं तो) **कहते हैं कि यह वादा कब** (पूरा) **होगा अगर तुम** (यानी पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और

आप के मानने वाले) **सच्चे हो** (तो बताओ)(25) **आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि इस की जानकारी तो अल्लाह ही को है और मैं तो बस साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूं**(26) **फिर जब उस** (क़ियामत के अज़ाब) **को पास आता हुआ देखेंगे** (यानी जब हिसाब होकर दोज़ख़ में जाने का हुक्म होगा) **तो** (मारे ग़म के) **काफ़िरों के चेहरे बिगड़ जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि ये ही है वो जिसको तुम मांगा करते थे**(27) **आप** (इनसे) **कह दीजिए कि तुम यह बताओ कि अगर अल्लाह तआ़ला मुझ को और मेरे साथ वालों को हलाक कर दे** (जैसा तुम चाहते हो) **या** (हमारी उम्मीद और अपने वादे के हिसाब से) **हम पर रहमत करदे तो** (दोनो सूरतों में अपनी ख़बर लो और यह बताओ कि) **काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा** (यानी हमारी तो जो हालत होगी दुनिया में होगी अन्जाम उस का हर हाल में अच्छा है मगर अपनी कहो कि तुम पर जो मुसीबत आने वाली है उस को कौन रोकेगा)(28) **आप** (उनसे यह भी) **कह दीजिए कि वो बड़ा महरबान है हम उस पर** (उसके हुक्म के मुवाफ़िक़) **ईमान लाए और हम उस पर भरोसा करते हैं** (बस ईमान की बरकत से तो वो हम को आख़रत के अज़ाब से बचाएगा और उस पर भरोसे की बरकत से दुनिया की मुसीबतों को दूर या आसान कर देगा), **सो** (जब तुम पर दर्दनाक अज़ाब आने वाला है और हम इन्शाअल्लाह ईमान की बरकत से उससे बचे रहेंगे तो) **जल्दी ही तुम को पता चल जाएगा** (जब अपने आप को अज़ाब में गरिफ़्तार और हम को उससे बचा हुआ देखोगे) **कि खुली गुमराही में कौन है** (यानी तुम हो जैसा कि हम कहते हैं या हम हैं जैसा कि तुम कहते हो)(29) **आप** (यह) **कह दीजिए कि** (अगर तुम को अपने झूटे ख़ुदाओं पर घमन्ड हो कि ये बचा लेंगे तो) **अच्छा यह बताओ कि अगर तुम्हारा पानी** (जो कुवों में है) **नीचे को** (उतर कर) **ग़ाइब ही हो जाए तो वो कौन है जो तुम्हारे पास सोत का पानी ले आए** (यानी कुवे की सोत को जारी कर दे और ज़मीन की गहराई से पानी ऊपर ले आए बस जब अल्लाह के मुक़ाबिले में किसी को इतनी भी कुदरत नहीं तो आख़रत के अज़ाब से बचाने की क्या कुदरत होगी बस झूटे माबूदों से कोई उम्मीद बेकार है)(30)।

नोटः- हदीस में है कि जब यह आख़री आयत तिलावत करे तो उस को कहना चाहिए कि "अल्लाहु रब्बुल आ़लमीन" यानी अल्लाह रब्बुल आलमीन ही फिर उस पानी को ला सकता है हमारी किसी की ताक़त नहीं।

सूरत मुल्क की फ़ज़ीलतें

(1) हदीस में है कि यह सूरत अज़ाब को रोकने वाली और अज़ाब से बचा देने वाली है यह अपने पढ़ने वाले को क़ब्र के अज़ाब से बचा लेगी। (क़ुरतबी)

(2) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि सूरत मुल्क हर मोमिन के दिल में हो। (सालबी)

(3) एक हदीस में है कि अल्लाह की किताब में एक ऐसी सूरत है जिसकी आयतें तो सिर्फ़ तीस हैं क़ियामत के दिन यह एक आदमी की सिफ़ारिश करेगी यहां तक कि उस को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल कर देगी और वो सूरत मुल्क है। (तिरमिज़ी)

68-सूरत-क़लम

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '52' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

نٓ وَ الۡقَلَمِ وَ مَا یَسۡطُرُوۡنَ ۙ﴿۱﴾ مَاۤ اَنۡتَ بِنِعۡمَۃِ رَبِّکَ بِمَجۡنُوۡنٍ ۚ﴿۲﴾ وَ اِنَّ لَکَ لَاَجۡرًا غَیۡرَ مَمۡنُوۡنٍ ۚ﴿۳﴾ وَ اِنَّکَ لَعَلٰی
خُلُقٍ عَظِیۡمٍ ﴿۴﴾ فَسَتُبۡصِرُ وَ یُبۡصِرُوۡنَ ۙ﴿۵﴾ بِاَیِّکُمُ الۡمَفۡتُوۡنُ ﴿۶﴾ اِنَّ رَبَّکَ ہُوَ اَعۡلَمُ بِمَنۡ ضَلَّ عَنۡ سَبِیۡلِہٖ ۪ وَ
ہُوَ اَعۡلَمُ بِالۡمُہۡتَدِیۡنَ ﴿۷﴾ فَلَا تُطِعِ الۡمُکَذِّبِیۡنَ ﴿۸﴾ وَدُّوۡا لَوۡ تُدۡہِنُ فَیُدۡہِنُوۡنَ ﴿۹﴾ وَ لَا تُطِعۡ کُلَّ حَلَّافٍ
مَّہِیۡنٍ ﴿ۙ۱۰﴾ ہَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِیۡمٍ ﴿ۙ۱۱﴾ مَّنَّاعٍ لِّلۡخَیۡرِ مُعۡتَدٍ اَثِیۡمٍ ﴿ۙ۱۲﴾ عُتُلٍّۭ بَعۡدَ ذٰلِکَ زَنِیۡمٍ ﴿ۙ۱۳﴾ اَنۡ کَانَ ذَا مَالٍ وَّ
بَنِیۡنَ ﴿ؕ۱۴﴾ اِذَا تُتۡلٰی عَلَیۡہِ اٰیٰتُنَا قَالَ اَسَاطِیۡرُ الۡاَوَّلِیۡنَ ﴿۱۵﴾ سَنَسِمُہٗ عَلَی الۡخُرۡطُوۡمِ ﴿۱۶﴾

आयत नं० 01 से 16

नून (इसका मतलब तो अल्लाह ही को पता है) **क़सम है क़लम की** (जिससे लोगों की तक़दीर लिखी गई) **और** (क़सम है) **उन** (फ़रिशतों) **के लिखने की** (जो आमाल लिखने वाले हैं)**(01) कि आप अपने रब की महरबानी से दीवाने नहीं** (हैं जैसा ये पैग़म्बरी का इनकार करने वाले कहते हैं मतलब यह कि आप सच्चे नबी) **हैं(02) और बेशक आप के लिए** (इस तबलीग़ के काम पर) **ऐसा बदला** (मिलने वाला) **है जो** (कभी) **ख़त्म होने वाला नहीं** (है इसमें तसल्ली है कि मुख़ालिफ़ों की नागवार बातों को कुछ दिन सहन कर लीजिए कि अन्जाम इसका बड़ा सवाब) **है(03) और** (ऐ पैग़म्बर) **बेशक आप अच्छे अख़लाक़ के ऊंचे दर्जे पर हैं** (और दीवाने में अख़लाक़ का कमाल कहां होता है)**(04) सो** (उनकी बकवास का ग़म न कीजिए जो आप को दीवाना कहते हैं क्योंकि) **जल्दी ही आप भी देख लेंगे और ये लोग भी देख लेंगे(05) कि तुम में** (असल में) **कौन दीवाना था** (बस थोड़े दिनों में ही यह बात खुल कर सामने आ गई कि आप को दीवाना कहने वालों में ज़्यादातर लोग ईमान लाकर आप की ताबेदारी को अपनी ख़ुशनसीबी समझने लगे)**(06) आप का रब उस आदमी को भी जानता है जो उसकी राह से भटका हुआ है और वो** (सीधी) **राह पर चलने वालों को भी**

अच्छी तरह जानता है (इसलिए हर एक को उसके हिसाब से बदला व सज़ा देगा)(07) **तो आप इन झुटलाने वालों का कहना न मानिए** (जैसा कि अब तक नहीं माना)(08) **ये लोग यह चाहते हैं कि आप** (नऊ़ज़ुबिल्लाह अपने तबलीग़ के काम में ज़रा) **ढीले हो जाएं** (यानी बुतपरस्ती को बुरा कहना छोड़ दें) **तो ये भी ढीले हो जाएं** (यानी आप की मुख़ालफ़त छोड़ दें)(09) **और आप** (ख़ास कर) **किसी ऐसे आदमी का कहना न मानें जो बहुत क़समें खाने वाला हो** (मुराद झूटी क़सम खाना है अक्सर झूटे आदमी क़समें खाया करते हैं, और जो अपनी बुरी आदतों की वजह से अल्लाह के नज़दीक और लोगों की नज़रों में) **गिरा हुआ हो**(10) (दिल दुखाने के लिए) **ताना देने वाला हो चुग़लियां लगाता फिरता हो**(11) **नेक काम से रोकने वाला हो गुनाह** (के काम) **करने वाला हो**(12) **सख़्त मिज़ाज हो** (और) **इस** (सब) **के अलावा बदनाम** (भी हो बस आप ऐसे आदमी का कहना न मानिए जो ऐसी आदतों वाला) **हो**(13) (और वो भी सिर्फ़) **इस वजह से कि वो बहुत माल और औलाद वाला** (हो यानी दुनिया में ख़ुशहाल) **हो**(14) (और उसकी यह आदत है कि) **जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये पहले लोगों की कहानियां हैं** (मतलब यह कि आयतों को झुटलाता है)(15) **हम जल्द ही उसकी नाक पर दाग़ लगाएंगे** (यानी क़ियामत में उसके चेहरे और नाक पर उस के कुफ़्र की वजह से कोई निशानी रूसवाई और पहचान की लगा देंगे जिससे वो ख़ूब रूसवा हो। इन आयतों में एक ख़ास शरीर काफ़िर वलीद बिन मुग़य्यरा की बुरी आदतें बयान करके उससे अलग रहने और उसकी बात न मानने का ख़ास हुक्म दिया गया है)(16)

नोटः- एक हदीस में है कि अमल की तराज़ू में अच्छे अख़लाक़ की बराबर किसी अमल का वज़न नहीं होगा। और अल्लाह गाली गलोज करने वाले बदज़बान से नाराज़ होते हैं। (तिरमिज़ी)
एक हदीस में है कि मुसलमान अपने अच्छे अख़लाक़ की वजह से उस आदमी का दर्जा पा लेता है जो हमेशा रात को इबादत में जागता हो और दिन भर रोज़ा रखता हो। (अबुदाऊद)

إِنَّا بَلَوْنَٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحَٰبَ ٱلْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا۟ لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾ وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا
طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُونَ ﴿١٩﴾ فَأَصْبَحَتْ كَٱلصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا۟ مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ ٱغْدُوا۟ عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن
كُنتُمْ صَٰرِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَٱنطَلَقُوا۟ وَهُمْ يَتَخَٰفَتُونَ ﴿٢٣﴾ أَن لَّا يَدْخُلَنَّهَا ٱلْيَوْمَ عَلَيْكُم مِّسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدَوْا۟ عَلَىٰ

حَرۡدٍ قٰدِرِيۡنَ ﴿۲۵﴾ فَلَمَّا رَاَوۡهَا قَالُوۡۤا اِنَّا لَضَآلُّوۡنَ ﴿۲۶﴾ بَلۡ نَحۡنُ مَحۡرُوۡمُوۡنَ ﴿۲۷﴾ قَالَ اَوۡسَطُهُمۡ اَلَمۡ اَقُلۡ لَّكُمۡ لَوۡلَا
تُسَبِّحُوۡنَ ﴿۲۸﴾ قَالُوۡا سُبۡحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقۡبَلَ بَعۡضُهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ يَّتَلَاوَمُوۡنَ ﴿۳۰﴾ قَالُوۡا يٰوَيۡلَنَاۤ
اِنَّا كُنَّا طٰغِيۡنَ ﴿۳۱﴾ عَسٰى رَبُّنَاۤ اَنۡ يُّبۡدِلَـنَا خَيۡرًا مِّنۡهَاۤ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوۡنَ ﴿۳۲﴾ كَذٰلِكَ الۡعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ
الۡاٰخِرَةِ اَكۡبَرُ ۘ لَوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۳۳﴾

आयत नं० 17 से 33

(आगे मक्के वालों को एक क़िस्सा सुना कर उनको अज़ाब से डराया गया है कि) **हमने इन** (मक्के वालों को जो ऐश का सामान दे रक्खा है जिस पर ये घमन्ड कर रहे हैं तो हमने इन) **को आज़माया है** (कि देखें ये नेमतों के शुक्र में ईमान लाते हैं या नाशुक्री व बेक़द्री करके कुफ़्र करते हैं) **जैसा** (इनसे पहले नेमतें देकर) **हमने बाग़ वालों को आज़माया था** (उनका क़िस्सा मक्के वालों में मशहूर था कि उनके बाप का दस्तूर था कि वो अपने बाग़ और खेत की आमदनी का काफ़ी हिस्सा ग़रीबों में ख़र्च किया करता था जब वो मर गया तो बेटों ने ग़रीबों पर ख़र्च करना बेवक़ूफ़ी समझा इन आयतों में उस क़िस्से का बयान है कि) **जब कि उन लोगों ने आपस में क़सम खाई कि उस** (बाग़) **का फल सुबह चल कर ज़रूर तोड़ लेंगे(17) और** (ऐसा भरोसा हुआ कि) **उन्होंने इन्शाअल्लाह भी नहीं कहा(18) तो उस बाग़ पर आप के रब की तरफ़ से एक फिरने वाला** (अज़ाब) **फिर गया** (और वो एक आग थी हवा में मिली हुई जैसे गर्म लू) **और वो सो रहे थे(19) फिर सुबह को वो बाग़ ऐसा रह गया जैसे कटा हुआ खेत** (कि ख़ाली ज़मीन रह जाती है मगर उनको उसकी कुछ ख़बर न थी)(20) **तो सुबह के वक़्त** (जो सोकर उठे तो) **एक दूसरे को पुकारने लगे(21) कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है(22) फिर वो लोग आपस में चुपके-चुपके बातें करते चले(23) कि आज तुम तक कोई ग़रीब न आने पाए(24) और** (अपने मन में) **उसको न देना अपने बस में समझ कर चले** (कि बाग़ का सारा फल अपने घर ले आएंगे और किसी को न देंगे)(25) **फिर जब** (वहां पहुंचे और) **उस बाग़ को** (उस हालत में) **देखा तो कहने लगे कि हम ज़रूर रास्ता भूल गये हैं** (कहीं और निकल आए यहां तो बाग़ नहीं है फिर दूसरी निशानी देख कर यक़ीन कर लिया कि वो ही जगह है तो उस वक़्त कहने लगे भूले नहीं)(26) **बल्कि** (जगह तो वो ही है लेकिन) **हमारी क़िस्मत ही फूट गई** (कि बाग़ का यह हाल हो गया)(27) **उनमें जो आदमी** (कुछ) **अच्छा था वो कहने लगा क्यों मैंने तुम को कहा न था** (कि

ऐसी नीयत मत करो ग़रीबों को देने से बरकत होती है, मगर) **अब** (तौबा और) **तस्बीह क्यों नहीं करते** (ताकि वो गुनाह मुआफ़ हो और इससे ज़्यादा मुसीबत न आजाए)(28) **सब** (तौबा करते हुए) **कहने लगे कि हमारा रब पाक है बेशक हम क़ुसूरवार हैं**(29) **फिर** (आम लोगों की तरह) **एक दूसरे को इल्ज़ाम देने लगे**(30) (फिर सब एक राय होकर) **कहने लगे कि बेशक हम** (सब ही) **हद से निकलने वाले थे** (किसी एक की ख़ता न थी सब मिल कर तौबा कर लो)(31) **शायद** (तौबा की बरकत से) **हमारा रब हमको इससे अच्छा बाग़ बदले में देदे** (अब) **हम अपने रब की तरफ़ लौ लगाते** (हैं यानी तौबा करते) **हैं** (रूहुल मआनी किताब में लिखा है कि उससे अच्छा बाग़ उनको दिया गया)(32) **इसी तरह अज़ाब हुआ करता** (है जब हुआ करता) **है** (यानी ऐ मक्के वालो तुम भी ऐसे अज़ाब के हक़दार हो बल्कि उससे भी ज़्यादा क्योंकि वो अज़ाब तो सिर्फ़ गुनाह पर था और तुम तो कुफ़्र करते हो), **और आख़िरत का अज़ाब इस** (दुनिया के अज़ाब) **से भी बढ़ कर है, क्या अच्छा होता कि ये लोग** (इस बात को) **जान लेते** (और ताकि ईमान ले आते)(33)।

नोटः- उन बाग़ वालों में जो आदमी कुछ अच्छा था वो भी उन लोगों की ग़लत राय पर चला इसलिए अन्जाम उस का भी उन्हीं के साथ हुआ इससे पता चला कि जो आदमी किसी गुनाह से लोगों को रोके मगर वो न रूकें फिर ख़ुद भी उनके साथ लगा रहे और गुनाह में शरीक रहे तो यह भी उन्हीं के हुक्म में होता है उसको चाहिए कि अगर वो नहीं रूके तो ख़ुद अपने आप को उस गुनाह से बचाए।

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿۳۴﴾ اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿۳۵﴾ مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۶﴾
اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿۳۷﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿۳۸﴾ اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿۳۹﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿۴۰﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ اِنْ
كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿۴۱﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّ يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۴۲﴾ خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ
تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَ قَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ وَ هُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَذَرْنِيْ وَ مَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۴﴾ وَ اُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿۴۵﴾ اَمْ تَسْئَلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ
مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ﴿۴۶﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿۴۷﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَ لَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ

اِذْ نَادٰی وَ هُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾ لَوْ لَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَ هُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾ فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ
فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَ اِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَ يَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ
لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾

आयत नं० 34 से 52

बेशक परहेज़गारों के लिए उनके रब के पास नेमतों की जन्नतें हैं(34) क्या हम कहना मानने वालों को और मुजरिमों को बराबर कर देंगे (यानी अगर काफ़िरों को सज़ा न हो तो ताबेदारों और मुजरिमों में क्या फ़र्क़ रह जाएगा)**(35) तुम को क्या हुआ तुम कैसा फ़ैसला करते हो(36) क्या तुम्हारे पास कोई** (आसमानी) **किताब है जिसमें पढ़ते हो(37) कि उसमें तुम्हारे लिए वो चीज़** (लिखी) **हो जो तुम पसन्द करते हो** (यानी उसमें लिखा हो कि तुम को आख़रत में जन्नत मिलेगी)**(38) या तुमने हमसे क़ियामत तक बाक़ी रहने वाली क़समें ले रक्खी हैं** (जिन में यह बात हो) **कि तुम को वो चीज़ मिलेगी जो तुम तय करोगे** (यानी सवाब और जन्नत)**(39) इनसे पूछिए इन में इसका कोई ज़िम्मेदार है(40) क्या इनके बनाए हुए कुछ** (ख़ुदाई में) **साझी हैं** (कि उन्होंने इन को सवाब देने की ज़िम्मेदारी ली है) **तो उनको चाहिए कि ये अपने उन** (ख़ुदाई के) **साझियों को ले आएं अगर ये सच्चे हैं(41)** (आगे उन लोगों की क़ियामत में रूसवाई का बयान है कि) **जिस दिन** (अल्लाह की तरफ़ से) **जलवा दिखाया जाएगा** (यानी क़ियामत में) **और लोगों को सजदे की तरफ़ बुलाया जाएगा तो ये** (काफ़िर) **लोग सजदा न कर सकेंगे(42)** (और) **उन की आंखें** (शर्म के मारे) **झुकी होंगी** (और) **उन पर रूसवाई छाई होगी, और** (वजह इसकी यह है कि) **ये लोग** (दुनिया में) **सजदे की तरफ़ बुलाए जाया करते थे** (इस तरह कि ईमान लाकर इबादत करें) **और वो सही सालिम** (थे यानी सजदा कर सकते थे मगर इनकार करते) **थे(43) तो मुझ को और जो इस कलाम को झुटलाते हैं उनको** (इसी हाल में) **रहने दीजिए** (यानी अज़ाब में देर होने से ग़म न कीजिए), **हम उन को धीरे-धीरे** (जहन्नम की तरफ़) **लिए जा रहे हैं इस तरह कि उन को ख़बर भी नहीं(44) और** (दुनिया में उन पर अज़ाब न डालने से) **उन को मुहलत देता हूं, बेशक मेरा दांव बहुत पक्का है(45)** (आगे उनके पैग़म्बरी के इनकार पर हैरानी है कि) **क्या आप उन से कुछ बदला मांगते हैं कि वो उस तावान** (के बोझ) **से दबे जाते हैं** (इसलिए आप की ताबेदारी से नफ़रत है)**(46) या उनके पास ग़ैब** (का इल्म) **है कि ये** (उस को यादगारी के लिए)

लिख लिया करते हैं (यानी क्या उनको ख़ुदाई हुक्म ख़ुद किसी तरीक़े से मालूम हो जाते हैं इसलिए नबी की ताबेदारी की ज़रूरत नहीं समझते)(47) **तो आप अपने रब के** (इस) **फ़ैसले पर सब्र से बैठे रहिए** (यानी इन पर अज़ाब अपने वक़्त पर आएगा) **और मच्छली** (के पेट में जाने) **वाले** (पैग़म्बर यूनुस अलैहिस्सलाम) **की तरह न हो जाना** (कि वो अज़ाब न आने से तंग दिल हुए और कहीं चले गये जिनका क़िस्सा पहले आ चुका है, और वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अपने रब से) **दुआ की और वो ग़म से घुट रहे** (थे और वो दुआ वो ही है "लाइलाह् इल्ला अन्त् सुबहानक् इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन" जिसकी बरकत से मच्छली के पेट से निकाले गये) **थे**(48) **अगर उन के रब के अहसान ने उन को संभाला न होता** (यानी दुआ क़ुबूल न की होती) **तो वो** (जिस मैदान में मच्छली के पेट से निकाल कर डाले गये थे उस) **मैदान में बुरी हालत के साथ डाले जाते**(49) **फिर उनके रब ने उन को** (और ज़्यादा) **रुतबा दिया और उनको** (बड़े दर्जे के) **नेक लोगों में से कर दिया**(50) **और ये काफ़िर जब क़ुरआन सुनते हैं तो** (सख़्त दुशमनी से) **ऐसे लगते हैं कि जैसे आप को अपनी निगाहों से फिसला कर गिरा देंगे** (यह एक मुहावरा है जैसे बोलते हैं कि वो आदमी इस तरह देखता है जैसे खा जाएगा, मतलब यह कि दुशमनी से आप को बुरी निगाहों से देखते हैं) **और** (उसी दुशमनी से आप के बारे में) **कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **ये दीवाने हैं**(51) **हालांकि यह क़ुरआन** (जो आप पर उतरा है) **सारे जहान के वास्ते नसीहत है** (और दीवाना आदमी लोगों के सुधार की ऐसी बातें नहीं कर सकता(52)।

नोटः- ऊपर आयतों से साबित हुआ कि क़ियामत का आना और हिसाब-किताब होना और नेक व बुरे को इनाम व सज़ा यह सब अक़्ल से ज़रूरी है। क्योंकि यह इस बात को दुनिया में हर आदमी देखता है और कोई इनकार नहीं कर सकता कि दुनिया में बुरे ज़ालिम और बदकार लोग नफ़े में रहते हैं और मज़े उड़ाते हैं और नेक लोग जो ख़ुदा से डरते हैं वो तंगी की ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। तो फिर अच्छे बुरे का फ़ैसला कहां होगा। ताकि अच्छों को नेक बदला मिले और बुरों को सज़ा मिले। बस उसके लिए क़ियामत का दिन तय है।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि जिस आदमी को किसी इन्सान की बुरी नज़र लग गई हो उस पर सूरत क़लम की आख़री दो आयतें पढ़ कर दम कर देना उस नज़र के असर को हटा देता है। ये आयतें "व इंय्यकादुल्लज़ीना् कफ़रू" से .... आख़िर सूरत तक हैं। (मज़हरी)

69-सूरत-हाक़्क़ा

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '52' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلْحَآقَّةُ ۝١ مَا الْحَآقَّةُ ۝٢ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ۝٣ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ۝٤ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا
بِالطَّاغِيَةِ ۝٥ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۝٦ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ
حُسُوْمًا ۙ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝٧ فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝٨ وَجَآءَ
فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ۝٩ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝١٠ اِنَّا لَمَّا طَغَا
الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِى الْجَارِيَةِ ۝١١ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝١٢ فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ نَفْخَةٌ
وَّاحِدَةٌ ۝١٣ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝١٤ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١٥ وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ
فَهِىَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۝١٦ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۗ وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۝١٧ يَوْمَئِذٍ
تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝١٨ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۝١٩ اِنِّىْ
ظَنَنْتُ اَنِّىْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝٢٠ فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٢١ فِىْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝٢٢ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۝٢٣ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا
هَنِيْٓئًاۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝٢٤ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُوْتَ
كِتٰبِيَهْ ۝٢٥ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۝٢٦ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝٢٧ مَآ اَغْنٰى عَنِّىْ مَالِيَهْ ۝٢٨ هَلَكَ عَنِّىْ
سُلْطٰنِيَهْ ۝٢٩ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۝٣٠ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۝٣١ ثُمَّ فِىْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۝٣٢ اِنَّهٗ
كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۝٣٣ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣٤ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۝٣٥ وَّلَا
طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۝٣٦ لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ ۝٣٧ فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۝٣٨ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۝٣٩ اِنَّهٗ
لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۝٤٠ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۗ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۝٤١ وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۗ قَلِيْلًا مَّا
تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٢ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٣ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۝٤٤ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۝٤٥

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَ اِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾ وَ اِنَّا لَنَعْلَمُ
اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَ اِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَ اِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾

आयत नं० 01 से 52

वो होने वाली चीज़(01) कैसी कुछ है वो होने वाली चीज़(02) और आप को कुछ ख़बर है कि कैसी कुछ है वो होने वाली चीज़ (मुराद इससे क़ियामत है)(03) **समूद और आद** (की क़ौमों) **ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़** (यानी क़ियामत) **को झुटलाया(04) तो समूद** (की क़ौम के लोग) **तो ज़ोर की आवाज़ से हलाक कर दिये गये(05) और आद** (की क़ौम के लोग ऐसी) **तूफ़ानी हवा से हलाक किये गये(06) जिसको अल्लाह ने उन पर सात रात और आठ दिन लगातार बरपा रक्खा बस तुम** (अगर वहां मौजूद होते तो) **उस क़ौम को इस तरह गिरा हुआ देखते कि जैसे वो गिरी हुई खजूर के तने** (पड़े) **हैं** (क्योंकि वो बहुत लम्बे क़द वाले थे)(07) **तो क्या तुम को उनमें का कोई नज़र आता है** (यानी कोई नहीं बचा)(08) **और** (इसी तरह) **फ़िरऔन ने और उससे पहले लोगों ने और** (क़ौमे लूत की) **मिली हुई बस्तियों ने बड़े-बड़े जुर्म** (यानी कुफ़्र व शिर्क के काम) **किये(09)** (इस पर उनके पास रसूल भेजे गये) **तो उन्होंने अपने रब के** (उस) **रसूल का कहना न माना** (जो उनकी तरफ़ भेजा गया था और कुफ़्र व शिर्क से बाज़ न आए जिसमें क़ियामत को झुटलाना भी दाख़िल है) **इसलिए अल्लाह तआ़ला ने उन्हें सख़्त पकड़ में ले लिया(10) हमने** (नूह अलैहिस्सलाम के वक़्त में) **जब कि पानी चढ़ आया तुम को** (यानी तुम्हारे बड़ों को जो मोमिन थे और उनके बच जाने से तुम वजूद में आए) **कशती में सवार किया** (और बाक़ी लोगों को डुबा दिया)(11) **ताकि हम इस क़िस्से को तुम्हारे लिए एक यादगार** (सबक़) **बनादें और याद रखने वाले कान इसको याद** (रक्खें मतलब यह कि इस को याद रख कर सज़ा के कामों से बचाव) **रक्खें(12)** (आगे क़ियामत के डर दहशत का बयान है कि) **फिर जब सूर में एक बारगी फूंक मार दी जाएगी** (यानी क़ियामत का पहला सूर फूंका जाएगा)(13) **और** (उस वक़्त) **ज़मीन और पहाड़** (अपनी जगह से) **उठा लिए** (यानी हटा दिये) **जाएंगे फिर दोनो एक बार में चूरा-चूरा कर दिये जाएंगे(14) तो उस दिन वो होने वाली चीज़ हो जाएगी(15) और आसमान फट जाएगा और वो** (आसमान) **उस दिन बिल्कुल कमज़ोर होगा** (जैसा इस वक़्त मज़बूत है)(16) **और फ़रिश्ते** (जो आसमान में फैले हुए हैं जिस वक़्त फटना शुरू होगा) **उस के किनारों पर आजाएंगे** (इससे मालूम हुआ कि आसमान बीच में से फटेगा), **और** (ये सब बातें तो पहले सूर के वक़्त की हैं और

आगे दूसरे सूर के क़िस्से हैं कि) **आप के रब के अर्श को उस दिन आठ फ़रिशते उठाए हुए** (होंगे हदीस में है कि अब अर्श को चार फ़रिशते उठाए हुए हैं क़ियामत को आठ फ़रिशते उठाएं) **होंगे(17)** (फिर हिसाब शुरू होगा तो) **जिस दिन तुम** (अल्लाह के सामने हिसाब के वास्ते) **लाए जाओगे** (और) **तुम्हारी कोई बात** (अल्लाह तआला से) **छुपी न होगी(18) फिर** (आमाल नामे उड़ाकर हाथ में दे दिये जाएंगे तो) **जिस आदमी का आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा वो तो** (ख़ुशी के मारे आस पास वालों से) **कहेगा कि मेरा आमाल-नामा पढ़ लो(19) मेरा** (तो पहले ही से) **ऐतक़ाद था कि मुझे अपने हिसाब का सामना करना होगा** (यानी मैं क़ियामत और हिसाब का ऐतक़ाद रखता था बस अल्लाह ने ईमान की बरकत से मुझ पर महरबानी की)**(20) बस वो आदमी मनपसन्द ऐश में होगा(21) यानी ऊंची जन्नत में होगा(22) जिस के फल** (इतने) **झुके** (होंगे कि जिस तरह चाहेंगे लेते) **होंगे(23)** (और हुक्म होगा कि) **खाओ और पियो मज़े के साथ उन कामों के बदले में जो बीते हुए दिनों में** (यानी दुनिया में रहते हुए) **किये हैं(24) और जिस का आमाल नामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा तो वो** (पछताकर) **कहेगा क्या अच्छा होता कि मुझ को मेरा आमाल नामा ही न मिलता(25) और मुझ को यह भी ख़बर न होती कि मेरा हिसाब क्या है(26) क्या अच्छा होता कि** (पहली) **मौत पर ही ख़ातमा हो जाता** (और दोबारा ज़िन्दा न होते जिस पर हिसाब हुआ)**(27) मेरा माल मेरे कुछ काम न आया(28) मेरा सारा ज़ोर** (भी) **मुझसे जाता रहा(29)** (ऐसे आदमी के लिए फ़रिशतों से कहा जाएगा कि) **इस आदमी को पकड़ो और इसके गले में पट्टा डाल दो(30) फिर दोज़ख़ में इसको दाख़िल करो(31) फिर एक ही ज़ंजीर में जिस की लम्बाई सत्तर गज़ है इसको जकड़ दो** (वहां के गज़ की लम्बाई ख़ुदा को ही मालूम है)**(32) यह आदमी ईमान न लाता था अल्लाह पर जो सबसे बड़ा है(33) और** (ख़ुद तो किसी को क्या देता दूसरों को भी) **ग़रीब आदमी को खाना खिलाने की नसीहत न करता था** (मतलब यह कि न अल्लाह के हक़ अदा करता था और न बन्दों के इसलिए अज़ाब का हक़दार हुआ)**(34) इसलिए आज उस आदमी का न कोई यार मददगार है(35) और न उस को कोई खाने की चीज़ नसीब है सिवाए ज़ख़्मों के धोवन के** (यानी कोई अच्छी चीज़ खाने को न मिलेगी)**(36) जिस को सिवाए बड़े गुनाहगारों के कोई न खाएगा(37) बस मैं क़सम खाता हूं उन चीज़ों की भी जिन को तुम देखते हो(38) और उन चीज़ों की भी जिन को तुम नहीं देखते** (मतलब यह कि सारी मख़्लूक़ की क़सम है)**(39) कि यह क़ुरआन** (अल्लाह का) **कलाम है एक इ़ज़्ज़तदार फ़रिशते का लाया हुआ** (बस जिस पर यह कलाम उतरा हो वो ज़रूर रसूल है)**(40)**

और यह किसी शाइर का कलाम नहीं है (जैसा कि काफ़िर आप को शाइर कहते थे, मगर) **तुम बहुत कम ईमान लाते हो(41) और न किसी काहिन का कलाम है** (जैसा कुछ काफ़िर आप को कहते थे, मगर) **तुम बहुत कम समझते हो(42)** (बल्कि यह) **सारे जहानों के रब की तरफ़ से भेजा हुआ** (कलाम) **है(43) और** (आगे क़ुरआन की सच्चाई पर एक अक़्ली दलील है कि) **अगर ये** (पैग़म्बर) **हमारे ज़िम्मे कुछ** (झूटी) **बातें लगा देते** (यानी जो कलाम हमारा न होता उस को हमारा कलाम कहते और पैग़म्बरी का झूटा दावा करते)**(44) तो हम उनका दाहिना हाथ पकड़ते(45) फिर हम उनके दिल की रग काट डालते(46) फिर तुम में कोई उनका इस सज़ा से बचाने वाला भी न होता** (दिल की रग काटने से आदमी मर जाता है मुराद इससे क़त्ल है)**(47) और बेशक यह क़ुरआन परहेज़गारों के लिए नसीहत है(48) और** (आगे झुटलाने वालों को धमकी है कि) **हमें मालूम है कि तुम में से कुछ लोग झुटलाने वाले भी हैं** (बस हम उन को इसकी सज़ा देंगे)**(49) और** (इसलिए) **यह क़ुरआन काफ़िरों के हक़ में पछतावे का सामान है** (क्योंकि उनके लिए झुटलाने की वजह से अज़ाब की वजह हो गया)**(50) यह क़ुरआन बिल्कुल हक़ और यक़ीनी है** (इसमें किसी शक व शुबह की गुन्जाइश नहीं)**(51) तो** (जिस का यह कलाम है) **अपने** (उस) **रब के नाम की तस्बीह करते रहो जो सब से बड़ा है(52)।**

नोटः- अबूदाऊद (किताब) में हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि० की रिवायत हैं कि जब यह आयत "फ़सब्बिह बिस्मि रब्बिकल अज़ीम" नाज़िल हुई तो "रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इसको अपने रूकू में रक्खो (यानी रूकू में यह तस्बीह 'सुबहान रब्बियल अज़ीम' पढ़ो) और जब यह आयत "सब्बिहिस्मा रब्बिकल आला" नाज़िल हुई तो फ़रमाया कि इसको अपने सजदे में रक्खो (यानी सजदे में यह तस्बीह 'सुबहान्न रब्बियल आला' पढ़ो)।" तो रूकू और सजदे में इन तस्बीहों का तीन बार पढ़ना सुन्नत है"।

70-सूरत-मआरिज

इस मक्की सूरत में ‘2’ रूकू और ‘44’ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍۙ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌۙ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِؕ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ
الرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍۚ ﴿٤﴾ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ﴿٥﴾ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًاۙ ﴿٦﴾
وَّ نَرٰىهُ قَرِيْبًاؕ ﴿٧﴾ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِۙ ﴿٨﴾ وَ تَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِۙ ﴿٩﴾ وَ لَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًاۚ ﴿١٠﴾
يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۭ بِبَنِيْهِۙ ﴿١١﴾ وَ صَاحِبَتِهٖ وَ اَخِيْهِۙ ﴿١٢﴾ وَ فَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ
تُـْٔوِيْهِۙ ﴿١٣﴾ وَ مَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِۙ ﴿١٤﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰىۙ ﴿١٥﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰىۚ ﴿١٦﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَ
تَوَلّٰىۙ ﴿١٧﴾ وَ جَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿١٨﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًاۙ ﴿١٩﴾ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًاۙ ﴿٢٠﴾ وَّ اِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًاۙ ﴿٢١﴾ اِلَّا
الْمُصَلِّيْنَۙ ﴿٢٢﴾ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۙ ﴿٢٣﴾ وَ الَّذِيْنَ فِىْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۙ ﴿٢٤﴾ لِّلسَّآئِلِ وَ الْمَحْرُوْمِ ۙ ﴿٢٥﴾
وَ الَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ ﴿٢٦﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَۚ ﴿٢٧﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ
مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَۙ ﴿٢٩﴾ اِلَّا عَلٰۤى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ
مَلُوْمِيْنَۚ ﴿٣٠﴾ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَۚ ﴿٣١﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ ﴿٣٢﴾ وَ
الَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۙ ﴿٣٣﴾ وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ؕ ﴿٣٤﴾ اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ؕ ﴿٣٥﴾

आयत नं० 01 से 35

एक मांगने वाला (इनकार की राह से) **वो अज़ाब मांगता है(01) जो कि काफ़िरों पर आने वाला है** (और) **जिसका कोई हटाने वाला नहीं(02)** (और) **जो अल्लाह की तरफ़ से आएगा जो कि** (आसमानी) **सीढ़ियों का मालिक है(03)** (जिन सीढ़ियों से) **फ़रिशते और** (ईमान वालों की) **रूहें उसके पास** (यानी आसमान में) **चढ़ कर जाती हैं** (और वो अज़ाब) **ऐसे दिन में आएगा जो** (दुनिया के) **पचास हज़ार साल** (की बराबर है मुराद इससे क़ियामत का दिन) **है(04) सो** (जब

अज़ाब का आना साबित है तो) **आप** (उनकी मुख़ालफ़त पर) **सब्र कीजिए और सब्र भी ऐसा जिसमें शिकायत का नाम न हो(05) ये लोग उस दिन को** (क़ियामत पर ईमान न होने की वजह से उसके आने को) **दूर देख रहे हैं(06) और हम** (को उस का आना यक़ीनी मालूम है इसलिए) **उस** (के आने) **को नज़दीक देख रहे हैं(07)** (और वो अज़ाब उस दिन होगा) **जिस दिन** (कि) **आसमान** (रंग में) **तेल की तिलछट की तरह हो जाएगा(08) और पहाड़** (धुनकी हुई) **रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे** (यानी उड़ते फिरेंगे)(09) **और** (उस दिन) **कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा(10) बावजूद इसके कि एक दूसरे को दिखा भी दिये जाएंगे** (यानी एक दूसरे को देखेंगे मगर कोई किसी की हमदर्दी न करेगा), (उस दिन) **मुजरिम** (यानी काफ़िर) **इस बात की तमन्ना करेगा कि उस दिन के अज़ाब से छूटने के लिए बदले में देदे अपने बेटों को(11) और बीवी को और भाई को(12) और कुनबे जिनमें वो रहता था(13) और ज़मीन के सारे लोगों को फिर यह** (बदले में देदेना) **उस को** (अज़ाब से बचाले यानी उस दिन सब को अपनी ही पड़ी होगी कि कल तलक जिन पर जान देने को तैयार था आज उनको अपने फ़ाइदे के लिए अज़ाब के सुपुर्द करने को तैयार होगा अगर ऐसा करना उसको अज़ाब से) **बचाले(14)** (लेकिन) **यह हरगिज़ न होगा** (यानी अज़ाब से रिहाई न होगी, बल्कि) **वो ऐसी भड़कती हुई आग है(15) जो खाल** (तक) **उतार देगी(16)** (और) **वो उस आदमी को** (ख़ुद) **बुलाएगी जिसने** (दुनिया में सच्चे दीन से) **पीठ फेरी होगी और** (ताबेदारी से) **मुंह मोड़ा होगा(17) और** (दूसरों का हक़ मार कर या लालच से माल) **जमा किया होगा** (मतलब यह कि अल्लाह के हक़ और बन्दों के हक़ बर्बाद किये होंगे) **फिर उसको उठा-उठा रक्खा होगा(18) असल में इन्सान कम हिम्मत पैदा हुआ** (है मुराद काफ़िर इन्सान से) **है(19) जब उसको तकलीफ़ पहुंचती है तो बहुत घबरा जाता है(20) और जब उसके पास ख़ुशहाली आजाती है तो** (ज़रूरी हक़ों से) **कंजूसी करने लगता है(21) मगर वो नमाज़ी** (यानी ईमान वाले) **ऐसे नहीं हैं(22) जो अपनी नमाज़ का बराबर ध्यान रखते हैं(23) और जिनके मालों में हक़ तय है(24) मांगने वालों का और न मांगने वालों का** (सब का हक़ है)(25) **और जो क़ियामत के दिन का ऐतक़ाद रखते हैं(26) और अपने रब के अज़ाब से डरने वाले हैं(27)** (और) **सचमुच उनके रब का अज़ाब निडर होने की चीज़ नहीं(28) और जो अपनी शर्मगाहों को** (हराम से) **बचाने वाले हैं(29) लेकिन अपनी बीवियों से या अपनी** (शरई) **बान्दियों से** (नहीं बचाते) **क्योंकि उन पर** (इसमें) **कोई इल्ज़ाम नहीं(30) हां जो इसके अलावा** (दूसरी जगह बदकारी करना) **चाहें ऐसे लोग** (शरीअत की) **हद से निकलने वाले हैं(31) और जो अपनी**

अमानतों और वादों का ध्यान रखने वाले हैं(32) और जो अपनी गवाहियां ठीक-ठीक अदा करते हैं (उनमें कमी ज़्यादती नहीं करते)(33) **और जो अपनी** (फ़र्ज़) **नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हैं(34) ऐसे लोग जन्नतों में इज़्ज़त के साथ रहेंगे(35)।**

नोटः- ऊपर आयतों में जिस अज़ाब मांगने वाले का ज़िक्र हुआ उस का नाम नज़र बिन हारिस लिखा है जिसने कुरआन और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झुटलाने में इतनी हिम्मत से काम लिया कि कहने लगा कि या अल्लाह अगर यह कुरआन ही हक़ है और आप की तरफ़ से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसादे या कोई दूसरा दर्दनाक अज़ाब भेज दे। अल्लाह ने जंगे बद्र में उसको मुसलमानों के हाथों अज़ाब दिया। (मज़हरी)

فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۝٣٦ عَنِ الْيَمِيْنِ وَ عَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ۝٣٧ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ
يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ ۝٣٨ كَلَّا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٩ فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَ الْمَغٰرِبِ اِنَّا
لَقٰدِرُوْنَ ۝٤٠ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝٤١ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا
يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ۝٤٢ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝٤٣ خَاشِعَةً
اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٤٤

आयत नं० 36 से 44

तो (ऐ पैग़म्बर जब कामयाबी और नाकामी की बातें दलील से साबित हो चुकीं तो इन) **काफ़िरों को क्या हुआ कि** (हक़ बातों को झुटलाने के लिए) **तुम्हारी तरफ़ चढ़े चले आ रहे हैं(36) दाहिनी तरफ़ से भी और बाईं तरफ़ से भी टोलियां बना बना कर(37)** (और आगे बयान है कि काफ़िर लोग अपने को हक़ पर समझते थे इसलिए अपने आप को जन्नत का हक़दार मानते थे तो भला) **क्या इनमें से हर आदमी यह तमन्ना रखता है कि वो नेमतों की जन्नत में दाख़िल कर लिया जाएगा(38) यह हरगिज़ न** (होगा क्योंकि दोज़ख़ के काम करते हुए जन्नत का हक़दार कैसे) **होगा,** (आगे क़ियामत में दोबारा पैदा होने का बयान है कि) **हमने उन को ऐसी चीज़ से पैदा किया है जिसकी उनको भी ख़बर है** (यानी वो जानते हैं कि मनी से बने हैं जो जानदार नहीं फिर दोबारा पैदा होने का इनकार करते हैं)(39) **फिर** (अब) **मैं क़सम खाता हूं सितारों के निकलने और छुपने**

की जगहों के मालिक की कि हम बेशक क़ुदरत रखते हैं(40) **कि** (दुनिया ही में) **उनकी जगह उनसे अच्छे लोग ले आएं** (यानी पैदा करदें) **और हम** (इससे) **लाचार नहीं हैं** (तो दोबारा पैदा करना क्या मुश्किल है)(41) **तो आप उनको उसी धन्धे और खेल तमाशों में रहने दीजिए यहां तक कि अपने उस दिन से जा मिलें जिसका उनसे वादा किया जाता है**(42) **जिस दिन ये क़ब्रों से निकल कर इस तरह दौड़ेंगे जैसे किसी इबादत की जगह की तरफ़ दौड़े जाते हैं**(43) (और) **उनकी आंखें** (मारे शर्म के) **नीचे को झुकी होंगी** (और) **उन पर रूसवाई छाई होगी, यह है उनका वो दिन जिसका उनसे वादा किया जाता था** (जो कि अब आगया)(44)।

नोटः- जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ुरआन करीम की तिलावत करते तो काफ़िर लोग टोलियां बनाकर आप के आस पास जमा हो जाते और मज़ाक़ उड़ाते हुए कहते कि अगर ये साहिब जन्नत में जाएंगे तो हम उनसे पहले चले जाएंगे। (रूहुल मआनी)

71-सूरत-नूह

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '28' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِۦٓ أَنْ أَنذِرْ قَوْمَكَ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝١ قَالَ يَٰقَوْمِ إِنِّى لَكُمْ
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝٢ أَنِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ وَٱتَّقُوهُ وَأَطِيعُونِ ۝٣ يَغْفِرْ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰٓ أَجَلٍ
مُّسَمًّى ۚ إِنَّ أَجَلَ ٱللَّهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۖ لَوْ كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٤ قَالَ رَبِّ إِنِّى دَعَوْتُ قَوْمِى لَيْلًا وَنَهَارًا ۝٥
فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىٓ إِلَّا فِرَارًا ۝٦ وَإِنِّى كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوٓا۟ أَصَٰبِعَهُمْ فِىٓ ءَاذَانِهِمْ وَٱسْتَغْشَوْا۟
ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوا۟ وَٱسْتَكْبَرُوا۟ ٱسْتِكْبَارًا ۝٧ ثُمَّ إِنِّى دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨ ثُمَّ إِنِّىٓ أَعْلَنتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ
إِسْرَارًا ۝٩ فَقُلْتُ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ إِنَّهُۥ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا ۝١١ وَيُمْدِدْكُم بِأَمْوَٰلٍ وَ
بَنِينَ وَيَجْعَل لَّكُمْ جَنَّٰتٍ وَيَجْعَل لَّكُمْ أَنْهَٰرًا ۝١٢ مَّا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝١٣ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝١٤
أَلَمْ تَرَوْا۟ كَيْفَ خَلَقَ ٱللَّهُ سَبْعَ سَمَٰوَٰتٍ طِبَاقًا ۝١٥ وَجَعَلَ ٱلْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ ٱلشَّمْسَ سِرَاجًا ۝١٦ وَٱللَّهُ
أَنۢبَتَكُم مِّنَ ٱلْأَرْضِ نَبَاتًا ۝١٧ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝١٨ وَٱللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ ٱلْأَرْضَ بِسَاطًا ۝١٩
لِّتَسْلُكُوا۟ مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۝٢٠

आयत नं० 01 से 20

हम ने नूह (अलैहिस्सलाम) **को उनकी क़ौम के पास** (पैग़म्बर बनाकर) **भेजा कि तुम अपनी क़ौम को** (कुफ़्र के अज़ाब से) **डराओ इससे पहले कि उन पर दर्दनाक अज़ाब आए** (यानी उनसे कहो कि अगर ईमान न लाओगे तो तुम पर दर्दनाक अज़ाब आएगा चाहे आख़रत में यानी दोज़ख़ या दुनिया में भी यानी तूफ़ान)(01) **उन्होंने** (अपनी क़ौम से) **कहा कि ऐ मेरी क़ौम मैं तुम्हारे लिए साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूं(02)** (और कहता हूं) **कि तुम अल्लाह की इबादत करो** (यानी तौहीद अपनाओ) **और उससे डरो और मेरा कहना मानो(03) वो तुम्हारे गुनाह मुआफ़**

कर देगा और तुम को तय वक़्त (यानी मौत के वक़्त) **तक** (बिना सज़ा) **मोहलत देगा** (यानी ईमान न लाने से जिस अज़ाब का मरने से पहले वादा किया जाता है अगर ईमान ले आए तो वो अज़ाब न आएगा, और बाक़ी मौत के लिए जो) **अल्लाह का तय किया हुआ वक़्त** (है) **जब** (वो) **आजाएगा तो टलेगा नहीं** (यानी मौत तो आना हर हाल में ज़रूरी है ईमान में भी और कुफ़्र में भी लेकिन दोनो हालतों इतना फ़र्क़ है कि एक हालत में आख़रत के अज़ाब के सिवा दुनिया में भी अज़ाब होगा और एक हालत में दोनो अज़ाबों से बचे रहोगे), **क्या अच्छा होता अगर तुम** (इन बातों को) **समझते(04)** (जब बहुत ज़माने तक समझाने का क़ौम पर कुछ असर न हुआ तो) **नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह तआ़ला से) **दुआ** (और फ़रियाद) **की या रब मेरे मैंने अपनी क़ौम को रात को भी और दिन को भी** (सच्चे दीन की तरफ़) **बुलाया(05) तो मेरे बुलाने पर** (दीन से) **और ज़्यादा भागते रहे(06) और** (वो भागना यह हुआ कि) **मैंने जब कभी उन को** (सच्चे दीन की तरफ़) **बुलाया ताकि** (उनके ईमान की वजह से) **आप उनको बख़्श दें तो उन लोगों ने** (नफ़रत की वजह से) **अपनी उंगलियां अपने कानों में देलीं** (ताकि हक़ बात सुनें भी नहीं) **और अपने कपड़े** (अपने ऊपर) **लपेट लिए** (ताकि हक़ बात कहने वाले को देखें भी नहीं और कहने वाला भी उनको न देखे) **और** (अपने कुफ़्र व इनकार पर) **जमे रहे और** (मेरा कहना मानने से) **घमन्ड करते रहे(07)** (मगर इसके बावजूद) **फिर** (भी बहुत से तरीक़ों से मैं उनको नसीहत करता रहा जैसा कि) **मैंने उनको** (सच्चे दीन की तरफ़) **ऊंची आवाज़ में बुलाया** (यानी आम नसीहत की)**(08) फिर मैंने उन को** (ख़ास तरह से) **ऐलानिया भी समझाया और उनको चुपके-चुपके भी** (समझाया यानी जितने तरीक़े भी नफ़े के हो सकते थे सभी तरह) **समझाया(09) और** (उस समझाने में) **मैंने** (उन से यह) **कहा कि अपने रब से गुनाह बख़्शवाओ** (यानी ईमान ले आओ ताकि गुनाह बख़्शे जाएं), **बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला है(10)** (अगर तुम ईमान ले आओगे तो आख़रत की नेमत के सिवा) **कि** (बख़्शिश है दुनिया की नेमतें भी तुम को देगा जैसा कि) **तुम पर ख़ूब बारिशें भेजेगा(11) और तुम्हारे माल और औलाद में तरक़्क़ी देगा और तुम्हारे लिए बाग़ लगा देगा और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा(12)** (मैंने उन से यह भी कहा कि) **तुम को क्या हुआ तुम अल्लाह की बड़ाई का यक़ीन नहीं रखते(13) हालांकि** (उसकी दलीलें मौजूद हैं कि) **उसने तुम को तरह-तरह से** (बनाया कि बेजान चीज़ों यानी ख़ुराक से मनी फिर मनी से कैसे बच्चा और पूरा इन्सान) **बनाया(14)** (और) **क्या तुम को मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने किस तरह सात आसमान ऊपर नीचे पैदा किये(15) और उन में चान्द नूर** (की चीज़) **बनाया और सूरज को** (रौशन) **चराग़** (की तरह)

बनाया(16) और अल्लाह तआला ने तुम को ज़मीन से एक ख़ास तरह पैदा किया (या तो इस तरह कि आदम अलैहिस्सलाम मिट्टी से बनाए गये और या इस तरह कि इन्सान मनी से बना जिस की खुराक ज़मीन से पैदा होती है)(17) **फिर तुम को** (मरने के बाद) **ज़मीन ही में ले जाएगा और** (क़ियामत में फिर उसी ज़मीन से) **तुम को बाहर ले आएगा(18) और अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श** (की तरह) **बनाया(19) ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो(20)।**

नोटः- एक हदीस में है कि तक़दीर के हुक्म को कोई चीज़ नहीं रोक सकती सिवाए दुआ के और किसी की उम्र में ज़्यादती नहीं हो सकती सिवाए मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करने के यानी इन आमाल की वजह से बदलाव हो सकता है। (तिरमिज़ी)

قَالَ نُوحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهُ وَوَلَدُهُ إِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾ وَ
قَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۖ وَلَا
تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ﴿٢٤﴾ مِّمَّا خَطِيئَاتِهِمْ أُغْرِقُوا فَأُدْخِلُوا نَارًا فَلَمْ يَجِدُوا لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَنصَارًا ﴿٢٥﴾ وَ
قَالَ نُوحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾ إِنَّكَ إِن تَذَرْهُمْ يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوا إِلَّا
فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَّبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

आयत नं० 21 से 28

नूह (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह सब कुछ फ़रियाद सुनाने के बाद) **कहा कि या रब मेरे उन लोगों ने मेरा यह कहना नहीं माना और ऐसे लोगों की बात मानी जिन के माल और औलाद ने उन को नुक़सान ही ज़्यादा पहुंचाया** (यानी उन सरदारों के पीछे चले कि जिन्होंने माल और औलाद की वजह से सरकशी की)(21) **और** (जिनके वो पीछे चले वो ऐसे हैं) **जिन्होंने** (हक़ के मिटाने में) **बड़ी-बड़ी चालें चलीं(22) और जिन्होंने** (अपने मानने वालों से यह) **कहा कि तुम अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ना और** (ख़ासकर) **वद्द को और सुवा को और यग़ूस को और यऊक़ को और नसर को न छोड़ना** (ये बुत ज़्यादा मशहूर थे)(23) **और उन** (सरदार) **लोगों ने बहुत लोगों को** (बहका-बहका कर) **गुमराह कर दिया और** (चूंकि मुझको आप के हुक्म से मालूम

हो गया कि ये अब ईमान न लाएंगे इसलिए यह भी दुआ करता हूं कि) **इन ज़ालिमों की गुमराही और बढ़ा दीजिए** (ताकि अज़ाब के हक़दार हो जाएं)(24) **उन** (का अन्जाम यह हुआ कि उन) **ही अपने गुनाहों की वजह से वो डुबाए गये फिर** (आख़रत में) **दोज़ख़ में दाख़िल किये गये और अल्लाह के सिवा उन को कुछ मददगार भी नसीब नहीं हुए(25) और नूह** (अलैहिस्सलाम) **ने** (यह भी) **कहा कि या रब मेरे इन काफ़िरों में से ज़मीन पर एक भी रहने वाला न छोड़िए** (बल्कि सब को हलाक कर दीजिए)(26) **अगर आप इनको ज़मीन पर रहने देंगे तो ये लोग आप के बन्दों को गुमराह करेंगे और** (आगे भी) **इनके बदकार और काफ़िर ही औलाद पैदा होगी(27)** (और काफ़िरों के लिए बद्दुआ करने के बाद मोमिनों के लिए दुआ की कि) **या रब मेरे मुझको और मेरे मां बाप को और जो ईमान वाले मेरे घर में दाख़िल हैं उनको और सभी मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बख़्श दीजिए, और** (फिर काफ़िरों के लिए बद्दुआ है कि) **इन ज़ालिमों की तबाही और बढ़ा दीजिए** (यानी उनकी रिहाई की कोई सूरत न रहे हलाक ही हो जाएं)(28)।

नोटः- हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम उनको इतना मारती कि बेहोश हो जाते तो मरा समझ कर छोड़ देते। होश आने पर फिर क़ौम को समझाते इसी तरह नस्लें गुज़र गईं मगर वो लोग राह पर न आए। नूह अलैहिस्सलाम की उम्र मोजिज़े के तौर पर ज़्यादा हुई। जब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उनको यह ख़बर दी गई कि अब सिवाए आप के मोमिन साथियों के उन लोगों की नस्ल में से कोई ईमान न लाएगा तो यह सोच कर कि ये बाक़ी मुसलमानों को भी गुमराह करेंगे नूह अलैहिस्सलाम ने उनके लिए बद्दुआ की जो ऊपर आयतों में बयान की गई है।

72-सूरत-जिन्न

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '28' आयतें हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝١ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ ۖ وَلَن
نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝٢ وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝٣ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ
شَطَطًا ۝٤ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن تَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝٥ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝٦ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝٧ وَأَنَّا لَمَسْنَا
السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيدًا وَشُهُبًا ۝٨ وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ فَمَن يَسْتَمِعِ الْآنَ
يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ۝٩ وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَن فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝١٠ وَأَنَّا مِنَّا
الصَّالِحُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ كُنَّا طَرَائِقَ قِدَدًا ۝١١ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نُّعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَن نُّعْجِزَهُ
هَرَبًا ۝١٢ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ آمَنَّا بِهِ ۖ فَمَن يُؤْمِن بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝١٣ وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ
وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۖ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝١٤ وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝١٥

आयत नं० 01 से 15

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से पहले शैतान आसमान के नज़दीक पहुंच कर फ़रिशतों की बातें सुनते थे फिर उनमें कुछ अपनी तरफ़ से मिलाकर काहिनों को बता देते थे मगर आप के आने के बाद ख़बरें सुनने से रोक दिये गये। और अगर वहां तक जाना चाहते तो आसमान से अंगारे बरसाए जाते तो उन को फ़िक्र हुई कि यह क्या क़िस्सा है इस बात का पता लगाने के लिए वो ज़मीन में चारों तरफ़ फैल गये कि उनके एक गिरोह ने एक रात में देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ में क़ुरआन पढ़ रहे थे जिन्नात यह कलाम सुनकर समझ गये कि आप पैग़म्बर हैं और यह अल्लाह का कलाम है और वो ईमान ले आए और आकर

अपनी क़ौम को यह क़िस्सा सुनाया और बताया कि इसी वजह से आसमानी ख़बरें सुनने से रोक दिया गया हैः-

(ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन लोगों से) **कह दीजिए कि मेरे पास इस बात की वही आई है कि जिन्नात में से एक जमाअत ने क़ुरआन सुना फिर** (अपनी क़ौम में वापस जाकर) **उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब क़ुरआन सुना है(01) जो सीधा रास्ता बताता है तो हम तो उस पर ईमान ले आए, और हम** (अब) **अपने रब के साथ** (इबादत में) **किसी को शरीक न बनाएंगे(02) और** (उन्होंने आपस में कहा कि) **हमारे रब की बहुत ऊंची शान है उसने न किसी को बीवी बनाया और न औलाद** (और ऐसा होना समझ से परे है)**(03) और हम में जो बेवक़ूफ़ हैं वो अल्लाह की शान में हद से बढ़ी हुई बातें कहते थे** (यानी शिर्क की बातें जैसे बीवी और औलाद बताना)**(04) और हमने** (पहले) **यह समझा था कि इन्सान और जिन्नात अल्लाह के बारे में कभी झूट बात न कहेंगे** (क्योंकि अक्सर जिन्नात व इन्सान शिर्क करते थे हम समझे कि अल्लाह की शान में इतने लोग झूट पर एक राय न हुए होंगे बस हमने भी उसी तरीक़े को अपना लिया)**(05) और** (एक बात यह कि) **बहुत से लोग इन्सानों में से ऐसे थे कि वो जिन्नात में से कुछ लोगों की पनाह लिया करते थे तो उन आदमियों ने जिन्नात को और सर चढ़ा दिया था** (कुछ लोग पहले जब कहीं सुनसान जंगल में जाते तो इस ऐतक़ाद से कि जिन्नात के सरदार हमारी हिफ़ाज़त करेंगे यह कहा करते थे कि मैं इस जंगल के सरदार की पनाह लेता हूं उसकी क़ौम के बेवक़ूफ़ शरीर लोगों से इस तरह वो समझते कि हम जिन्नात के सरदार तो थे ही अब इन्सान भी बड़ा समझने लगे इस तरह उनकी गुमराही और बढ़ गई)**(06) और** (यह भी कहा कि) **वो** (यानी इन्सान भी) **ये ही समझते थे जैसा तुम समझते थे कि अल्लाह किसी को भी मरने के बाद दूसरी ज़िन्दगी नहीं देगा(07) और** (यह भी कहा कि) **हमने आसमान** (की ख़बरों) **की** (पहले की तरह) **तलाशी लेना चाहा तो हमने उसको सख़्त पहरा** (यानी पहरेदार फ़रिशतों) **और अंगारों से भरा हुआ पाया** (यानी अब पहरा हो गया कि कोई जिन्न आसमानी ख़बर न ले जाने पाए और जो जाए वो अंगारे से मारा जाए)**(08) और** (इससे पहले) **हम आसमान** (की ख़बर सुनने) **की जगहों में** (ख़बर) **सुनने के लिए जा बैठा करते थे, लेकिन जो कोई अब सुनना चाहता है तो अपने लिए एक तैयार अंगारा पाता** (है मतलब यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने पैग़म्बरी दी है इसलिए ख़बरों की चोरी का दरवाज़ा बन्द कर दिया) **है(09) और हम नहीं जानते कि** (इन नये पैग़म्बर के

भेजने से) **ज़मीन वालों को कोई तकलीफ़ पहुंचाने का इरादा है या उनके रब ने उनको सीधा रास्ता दिखाने का इरादा किया है** (यानी मालूम नहीं कि लोग ईमान लाकर सीधा रास्ता पा जाएंगे या मुख़ालफ़त करके सज़ा पाएंगे)(10) **और हम में** (पहले से भी) **कुछ नेक** (होते आए) **हैं और कुछ दूसरी तरह के** (होते आए) **हैं,** (बस) **हम अलग-अलग तरीक़ों पर थे** (इसी तरह इन नबी की ख़बर सुन कर अब भी हम में दोनो तरीक़े के लोग मौजूद हैं यानी कुछ लोगों का ईमान न लाना कुछ हैरानी की बात नहीं)(11) **और** (हमारा तरीक़ा तो यह है कि) **हमने समझ लिया है कि हम ज़मीन** (के किसी हिस्से) **में** (जाकर) **अल्लाह तआ़ला को हरा नहीं सकते और न** (और कहीं) **भाग कर उसको हरा सकते हैं** (यानी अगर कुफ़्र करेंगे तो अल्लाह तआ़ला के अज़ाब से बच नहीं सकते)(12) **और हमने जब हिदायत की बात सुन ली तो हमने उसका यक़ीन कर लिया, तो** (हमारी तरह) **जो आदमी अपने रब पर ईमान ले आएगा तो उसको न किसी कमी का डर होगा न ज़्यादती का** (कमी यह कि उसकी कोई नेकी लिखने से रह जाए और ज़्यादती यह कि गुनाह ज़्यादा लिख दिया जाए)(13) **और हममें से कुछ तो** (इन बातों को समझ कर) **मुसलमान** (हो गये) **हैं और कुछ हम में** (पहले की तरह) **बेराह हैं, तो जो आदमी मुसलमान हो गया उन्होंने तो भलाई का रास्ता ढूंड लिया** (जिस पर सवाब मिलेगा)(14) **और जो बेराह हैं वो दोज़ख़ के ईंधन हैं**(15)।

وَّ اَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَ مَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ
يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾ وَّ اَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّ اَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا
يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ؕ ﴿١٩﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَ لَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّ لَا
رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ۙ وَّ لَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِسٰلٰتِهٖ ؕ
وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ
اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّ اَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾ قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ
الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ
رَصَدًا ﴿٢٧﴾ لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَ اَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَ اَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

आयत नं० 16 से 28

और (ऐ पैग़म्बर मक्के वालों से कहो कि मुझ पर) **यह** (वही भी आई है) **कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर आजाते तो हम उनको ख़ूब पानी पिलाते** (यानी पानी बरसाते)(16) **ताकि इसमें उनको आज़माएं** (कि नेमत का शुक्र करते हैं या नाशुक्री व नाफ़रमानी करते हैं मतलब यह कि अगर मक्का वाले शिर्क न करते तो उन पर अकाल न आता), **और जो आदमी** (भी) **अपने रब की याद** (यानी ईमान व ताबेदारी) **से मुंह फेरेगा अल्लाह तआ़ला उसको सख़्त अज़ाब में दाख़िल करेगा**(17) **और** (एक यह है कि) **जितने सजदे हैं वो सब अल्लाह का हक़ हैं** (यानी यह जाइज़ नहीं कि कोई सजदा अल्लाह को किया जाए और कोई सजदा दूसरे को जैसा मुशरिक लोग करते थे) **तो अल्लाह के साथ किसी की इबादत मत करो**(18) **और जब अल्लाह का ख़ास बन्दा** (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **अल्लाह की इबादत करने खड़ा होता है तो ये** (काफ़िर) **लोग उस बन्दे पर** (ऐसे) **भीड़ लगा**(ने को खड़े हो जा)**ते हैं** (जैसे अब हमला कर देंगे)(19) **आप** (ऐ पैग़म्बर उनसे) **यह कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूं और उसके साथ किसी को साझी नहीं करता** (और यह कोई दुशमनी रखने की बात नहीं)(20) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि न तुम्हारा कोई नुक़सान मेरे बस में है और न कोई भलाई** (यानी तुम जो ऐसी मांग करते हो कि अगर आप रसूल हैं तो हम पर अज़ाब लादें तो यह मेरे बस में नहीं इसी तरह क़ुरआन में कुछ बदल दो तो हम आप को रसूल मानलें(21) **आप कह दीजिए कि** (अगर मैं अल्लाह न करे ऐसा करूं तो) **मुझ को अल्लाह** (के गुस्से) **से कोई नहीं बचा सकता और न मैं उसके सिवा कोई पनाह** (की जगह) **पा सकता हूं**(22) **लेकिन अल्लाह की तरफ़ से बात पहुंचाना और उसके पैग़ामों का अदा करना यह मेरा काम है, और जो अल्लाह और उसके रसूल का कहना नहीं मानते तो बेशक उन लोगों के लिए जहन्नम की आग है जिसमें वो सदा-सदा रहेंगे**(23) (मगर ये काफ़िर लोग बाज़ न आएंगे) **यहां तक कि जब उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है** (यानी अल्लाह का अज़ाब) **उस वक़्त पता चल जाएगा कि किसके मददगार कमज़ोर हैं और किसकी गिनती कम है** (यानी काफ़िर ही ऐसे होंगे जिनके कोई काम न आएगा)(24) **आप** (उनसे क़ियामत के आने के सवाल के जवाब में) **कह दीजिए कि मुझ को मालूम नहीं कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जाता है वो नज़दीक** (आने वाली) **है या मेरे रब ने उसके लिए कोई लम्बी मुद्दत तय कर रक्खी है** (लेकिन वो हर हाल में आएगी ज़रूर)(25) **सारे भेद जानने वाला वो ही है तो** (जो भेद यानी ग़ैब का इल्म किसी वजह से बताना

नहीं होता) **वो अपने** (ऐसे) **भेद की किसी को ख़बर नहीं** (करता बस क़ियामत के वक़्त की ख़बर ऐसी ही है क्योंकि वो पैग़म्बरी के इल्मों में से नहीं जिनको जान कर सवाब कमाया जाता है इसलिए ऐसे भेद पर किसी को ख़बर नहीं) **करता(26) हां मगर अपने चुने हुए किसी पैग़म्बर को** (अगर किसी ऐसे इल्म की ख़बर करना चाहता है जो पैग़म्बरी के इल्म से हो जैसे शरीअत के हुक्म) **तो** (इस तरह ख़बर देता है कि) **उस पैग़म्बर के आगे और पीछे** (यानी चारों तरफ़ वही के वक़्त) **पहरेदार फ़रिशते भेज देता** (है ताकि वहां शैतानों का गुज़र न हो जो कि वही को फ़रिशते से सुनकर और किसी से जा कहें और न कोई वसवसा डाल सकता) **है(27)** (और यह इन्तिज़ाम इसलिए किया जाता है) **ताकि अल्लाह तआ़ला जानले कि उन फ़रिशतों ने अपने रब के पैग़ाम** (रसूल तक हिफ़ाज़त से) **पहुंचा दिये** (और उसमें किसी का अमल दख़ल नहीं हुआ) **और अल्लाह तआ़ला उन** (पहरेदारों) **के सारे हालात को घेरे में लिए हुए हैं और उसको हर चीज़ की गिनती मालूम** (है बस वही के सब हिस्से एक-एक करके उसको मालूम हैं और वो सब की पूरी हिफ़ाज़त करता) **है(28)।**

नोटः- इल्मे ग़ैब वो इल्म है जिसे अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई दूसरा नहीं जानता न कोई पैग़म्बर न कोई फ़रिशता। और जो ग़ैब की बातें पैग़म्बरों को वही से बताई गईं वो इल्मे ग़ैब नहीं बल्कि ग़ैब की ख़बरें हैं। कुछ लोग ग़ैब की ख़बरों को इल्मे ग़ैब समझ कर बहसें करते हैं उसकी वजह सही इल्म का न होना है।

73-सूरत-मुज़म्मिल

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '20' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ(١) قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ(٢) نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ۙ(٣) اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَ رَتِّلِ الْقُرْاٰنَ
تَرْتِيْلًا ؕ(٤) اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا (٥) اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّ اَقْوَمُ قِيْلًا ؕ(٦) اِنَّ لَكَ فِي
النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ؕ(٧) وَ اذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَ تَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ؕ(٨) رَبُّ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا (٩) وَ اصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَ اهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا (١٠) وَ ذَرْنِيْ وَ الْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَ
مَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا (١١) اِنَّ لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّ جَحِيْمًا ۙ(١٢) وَّ طَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّ عَذَابًا اَلِيْمًا ۗ(١٣) يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَ
الْجِبَالُ وَ كَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا (١٤) اِنَّآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى
فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ؕ(١٥) فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا (١٦) فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبَا ۖۗ(١٧) السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ؕ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا (١٨) اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ
اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا (١٩)

आयत नं० 01 से 19

नोटः- काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बुरे-बुरे नामों से पुकारा किसी ने दीवाना कहा किसी ने काहिन कहा किसी ने जादूगर कहा तो एक बार आप दुखी होकर कपड़ों में लिपट कर लेट गये इसलिए आप को ख़ुश करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने आप को उसी हालत में पुकारा कि.....

ऐ कपड़ों में लिपटने वाले (नबी काफ़िरों की बातों का ज़्यादा ग़म न करो बल्कि अल्लाह की तरफ़ ध्यान लगाओ)(01) **रात को** (नमाज़ में) **खड़े रहा करो थोडी सी रात**(02) **यानी आधी रात** (कि उसमें आराम करो) **या उस आधी से कुछ कम कर दो** (यानी आधी रात से कम इबादत करो

और आधी रात से ज़्यादा आराम करो जैसे एक तिहाई रात)(03) **या आधी से कुछ बढ़ा दो** (यानी आधी से ज़्यादा इबादत और आधी से कम आराम करो जैसे दो तिहाई रात) **और** (इस रात की इबादत में) **कुरआन को ख़ूब साफ़-साफ़ पढ़ो** (कि एक-एक हर्फ़ अलग-अलग हो और ये ही हुक्म नमाज़ के अलावा तिलावत का भी है)(04) **हम तुम पर एक भारी कलाम उतारने वाले हैं** (मुराद कुरआन मजीद है कि जिसके उतरने के वक़्त आप की हालत बदल जाती थी कि सर्दियों में भी आप पसीना-पसीना हो जाते थे और इसलिए भी भारी कहा कि कुरआन के हुक्मों की पाबन्दी भारी है)(05) **बेशक रात का उठना असर रखता है** (नफ़्स के) **कुचलने में और बात अच्छी तरह निकलती है**(06) (और) **बेशक तुम को दिन में बहुत काम रहता है**(07) **और** (रात के सिवा दूसरे वक़्तों में भी) **अपने रब का नाम याद करते रहो और सब से अलग होकर उसी की तरफ़ ध्यान लगाओ**(08) **वो पूरब और पच्छिम का मालिक है उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं तो उसी को अपने सब काम सौंप दो**(09) **और ये** (काफ़िर) **लोग जो बातें करते हैं उन पर सब्र करो और ख़ूबसूरती के साथ उनसे अलग हो जाओ** (अलग होना यह कि कोई वास्ता न रक्खो और ख़ूबसूरती यह कि उनकी शिकायत व बदला लेने की फ़िक्र में मत पड़ो)(10) **और** (आगे उनके अज़ाब की ख़बर देकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि) **मुझ को और इन झुटलाने वालों ऐश आराम में रहने वालों को** (इसी हालत पर) **छोड़ दो** (यानी रहने दो) **और इन लोगों को थोड़े दिन और मुहलत देदो** (यानी कुछ दिन और सब्र कर लीजिए जल्दी ही उन को सज़ा होने वाली है)(11) **हमारे यहां बेड़ियां हैं और दोज़ख़ है** (उनके लिए)(12) **और गले में फंसने वाला खाना है और दर्दनाक अज़ाब है**(13) (और यह सज़ा उस दिन होगी) **जिस दिन ज़मीन व पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़** (चूरा-चूरा होकर उड़ता हुआ) **रेत हो जाएंगे**(14) (आगे झुटलाने वालों को कहा गया है कि) **बेशक हमने तुम्हारे पास एक ऐसा रसूल भेजा है जो तुम पर** (क़ियामत के दिन) **गवाही देंगे** (कि उन लोगों ने तबलीग़ के बाद क्या बरताव किया) **जैसा हम ने फ़िरऔन के पास रसूल भेजा था**(15) **फिर फ़िरऔन ने उस रसूल का कहना न माना फिर हमने उस को सख़्त पकड़ में ले लिया**(16) **तो अगर तुम** (भी रसूल के आने के बाद नाफ़रमानी और) **कुफ़्र करोगे तो** (इसी तरह एक दिन तुम को भी मुसीबत भुगतना पड़ेगी बस वो मुसीबत का दिन आने वाला है तो तुम) **उस दिन** (की मुसीबत) **से कैसे बचोगे जो** (सख़्त और बड़ा होने की वजह से) **बच्चों को बूढ़ा कर देगा**(17) **जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उस का वादा ज़रूर पूरा होकर रहेगा** (ऐसा नहीं है कि वो वक़्त टल जाए)(18) **यह एक नसीहत** (की बात) **है**

जिसका जी चाहे अपने रब की तरफ़ (जाने वाला) **रास्ता अपनाए**(19)।

नोटः- इशा की नमाज़ के बाद हर नमाज़ तहज्जुद में दाख़िल है और सुन्नत तरीक़ा यह है कि इशा के बाद सोकर उठने के बाद रात के आख़री हिस्से में नमाज़ अदा की जाए।

मसअलाः- यहां मालूम हुआ कि कुरआन का सिर्फ़ पढ़ना ही काफ़ी नहीं बल्कि तरतील से पढ़ना असल है जिसमें हर-हर लफ़्ज़ साफ़-साफ़ और सही अदा हो। और रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसी तरह तरतील से पढ़ते थे। जैसा कि उम्मे सलमा रज़ि० की हदीस में आया है।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ
اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن لَّن تُحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنكُم
مَّرْضَىٰ ۙ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۙ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا
تَيَسَّرَ مِنْهُ ۚ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَأَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ
عِندَ اللَّهِ هُوَ خَيْرًا وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٢٠

आयत नं० 20

(ऐ पैग़म्बर) **आप का रब जानता है कि आप और आप के साथ वालों में से कुछ आदमी** (कभी) **दो तिहाई रात के क़रीब और** (कभी) **आधी रात और** (कभी) **तिहाई रात** (तहज्जुद की नमाज़ में) **खड़े रहते हैं, और रात और दिन का पूरा अन्दाज़ा अल्लाह ही कर सकता है, उस को मालूम है कि तुम उसका ठीक हिसाब नहीं रख सकोगे** (और इसलिए तुम को ज़्यादा महनत उठानी पड़ती है) **तो** (इस वजह से) **उसने तुम्हारे हाल पर महरबानी की** (और उस रात की इबादत के फ़र्ज़ होने के हुक्म को बदल दिया जो शुरू में बताया गया था) **तो** (अब) **तुम लोग जितना कुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया** (करो मतलब यह कि अब तहज्जुद की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं रही अगर चाहो पढ़ लिया) **करो, उस को** (यह भी) **मालूम है कि कुछ आदमी तुम में बीमार होंगे और कुछ रोज़गार की तलाश में मुल्क में सफ़र करेंगे और कुछ अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे** (इसलिए भी इस हुक्म को बदल दिया क्योंकि उन हालतों में तहज्जुद और उसके वक़्तों की पाबन्दी मुश्किल थी), **तो** (इसलिए भी तुम को इजाज़त है कि अब) **तुम लोग जितना**

क़ुरआन आसानी से पढ़ा जा सके पढ़ लिया करो और (भले ही तहज्जुद का हुक्म बदल दिया गया मगर ये हुक्म अब भी बाक़ी है यानी यह कि) **नमाज़** (फ़र्ज़) **की पाबन्दी रक्खो और ज़कात देते रहो और अल्लाह को अच्छी तरह** (यानी सच्चे मन से) **क़र्ज़ दो** (यानी नेक कामों में ख़र्च करो), **और जो नेक काम अपने लिए** (आख़िरत का ख़ज़ाना बनाकर) **आगे भेज दोगे उसको अल्लाह के पास पहुंच कर उससे अच्छा और सवाब में बड़ा पाओगे** (यानी दुनिया के कामों में ख़र्च करने से जो नफ़ा मिलता है ख़ैरात करने से उससे ज़्यादा बेहतर मिलेगा), **और अल्लाह से गुनाह मुआफ़ कराते रहो, बेशक अल्लाह तआला बहुत बख़्शने वाला बहुत महरबान है(20)।**

नोटः- हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा कि तुम में ऐसा कौन है जो अपने माल के मुक़ाबिले अपने वारिस के माल से ज़्यादा मुहब्बत रक्खे। सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम में कोई भी ऐसा नहीं जो अपने वारिस के माल की मुहब्बत ख़ुद अपने माल से ज़्यादा रक्खे। आपने फ़रमाया सोच समझ कर बात करो सहाबा ने अर्ज़ किया कि हमें तो इसके सिवा कोई दूसरी सूरत मालूम नहीं आप ने फ़रमाया (जब यह बात है तो समझ लो कि) तुम्हारा माल वो है जो तुमने अपने हाथ से अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया और जो रह गया वो तुम्हारा माल नहीं बल्कि तुम्हारे वारिस का माल है। (इब्ने कसीर)

और एक हदीस में है कि दुनिया छोड़ देना इसका नाम नहीं कि तुम अपने ऊपर अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ों को हराम कर लो या जो माल तुम्हारे पास हो उसे बेबात उड़ा दो। बल्कि दुनिया छोड़ देना इसका नाम है कि तुम्हारा भरोसा अल्लाह तआला के हाथ में जो चीज़ है उस पर ज़्यादा हो उसके मुक़ाबिले में जो तुम्हारे हाथ में है। (मज़हरी)

74-सूरत-मुदस्सिर

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '56' आयतें हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

يٰۤاَيُّهَا الۡمُدَّثِّرُ ۙ﴿۱﴾ قُمۡ فَاَنۡذِرۡ ۪ۙ﴿۲﴾ وَ رَبَّكَ فَكَبِّرۡ ۪ۙ﴿۳﴾ وَ ثِيَابَكَ فَطَهِّرۡ ۪ۙ﴿۴﴾ وَ الرُّجۡزَ فَاهۡجُرۡ ۪ۙ﴿۵﴾ وَ لَا تَمۡنُنۡ تَسۡتَكۡثِرُ ۪ۙ﴿۶﴾
وَ لِرَبِّكَ فَاصۡبِرۡ ؕ﴿۷﴾ فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوۡرِ ۙ﴿۸﴾ فَذٰلِكَ يَوۡمَئِذٍ يَّوۡمٌ عَسِيۡرٌ ۙ﴿۹﴾ عَلَى الۡكٰفِرِيۡنَ غَيۡرُ يَسِيۡرٍ ﴿۱۰﴾ ذَرۡنِیۡ وَ
مَنۡ خَلَقۡتُ وَحِيۡدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ جَعَلۡتُ لَهٗ مَالًا مَّمۡدُوۡدًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ بَنِيۡنَ شُهُوۡدًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ مَهَّدۡتُّ لَهٗ تَمۡهِيۡدًا ۙ﴿۱۴﴾ ثُمَّ يَطۡمَعُ
اَنۡ اَزِيۡدَ ٭ۙ﴿۱۵﴾ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيۡدًا ؕ﴿۱۶﴾ سَاُرۡهِقُهٗ صَعُوۡدًا ؕ﴿۱۷﴾ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَ قَدَّرَ ۙ﴿۱۸﴾ فَقُتِلَ كَيۡفَ قَدَّرَ ۙ﴿۱۹﴾
ثُمَّ قُتِلَ كَيۡفَ قَدَّرَ ۙ﴿۲۰﴾ ثُمَّ نَظَرَ ۙ﴿۲۱﴾ ثُمَّ عَبَسَ وَ بَسَرَ ۙ﴿۲۲﴾ ثُمَّ اَدۡبَرَ وَ اسۡتَكۡبَرَ ۙ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا سِحۡرٌ
يُّؤۡثَرُ ۙ﴿۲۴﴾ اِنۡ هٰذَاۤ اِلَّا قَوۡلُ الۡبَشَرِ ؕ﴿۲۵﴾ سَاُصۡلِيۡهِ سَقَرَ ﴿۲۶﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا سَقَرُ ؕ﴿۲۷﴾ لَا تُبۡقِیۡ وَ لَا تَذَرُ ۚ﴿۲۸﴾ لَوَّاحَةٌ
لِّلۡبَشَرِ ۚۖ﴿۲۹﴾ عَلَيۡهَا تِسۡعَةَ عَشَرَ ؕ﴿۳۰﴾ وَ مَا جَعَلۡنَاۤ اَصۡحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّ مَا جَعَلۡنَا عِدَّتَهُمۡ اِلَّا فِتۡنَةً
لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا ۙ لِيَسۡتَيۡقِنَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ وَ يَزۡدَادَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِيۡمَانًا وَّ لَا يَرۡتَابَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ وَ
الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ وَ لِيَقُوۡلَ الَّذِيۡنَ فِیۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ وَّ الۡكٰفِرُوۡنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنۡ يَّشَآءُ وَ يَهۡدِیۡ مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَ مَا يَعۡلَمُ جُنُوۡدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ مَا هِیَ اِلَّا ذِكۡرٰى لِلۡبَشَرِ ﴿۳۱﴾

आयत नं० 01 से 31

ऐ कपड़े में लिपटने वाले (नबी)(01) **उठो** (यानी तैयार हो जाओ) **फिर** (काफ़िरों को अज़ाब से) **डराओ** (जो कि पैग़म्बर की ज़िम्मेदारी है)(02) **और अपने रब की बड़ाइयां करो** (कि तबलीग़ में सबसे पहली चीज़ तौहीद है)(03) **और** (आगे कुछ ज़रूरी बातें बताई गई हैं जिन पर ख़ुद भी चलना है और दूसरों को भी सिखाना है एक तो) **अपने कपड़े को पाक रखिए(04) और** (दूसरे यह कि) **बुतों से अलग रहो** (जिस तरह कि अब तक अलग हो)(05) **और किसी को इस नीयत से मत दो कि** (दूसरे वक़्त) **ज़्यादा बदला चाहो(06) और** (तबलीग़ में जो तकलीफ़ें आएं उन पर)

अपने रब (को राज़ी करने) **के वास्ते सब्र कीजिए(07) फिर** (इस नसीहत के बाद जो कोई ईमान न लाए उसके लिए धमकी है कि) **जिस वक़्त सूर फूंका जाएगा(08) तो वो दिन बड़ा सख़्त दिन होगा(09) काफ़िरों के लिए जिसमें ज़रा आसानी न होगी(10)** (आगे कुछ ख़ास काफ़िरों का ज़िक्र है यानी) **मुझको और उस आदमी को** (अपने-अपने हाल पर) **रहने दो** (कि हम उससे निमट लेंगे) **जिसको मैंने** (माल व औलाद से ख़ाली और) **अकेला पैदा किया** (जैसा कि पैदा होने के वक़्त आदमी के पास न माल होता है न औलाद यहां मुराद इससे वलीद बिन मुग़य्यरा है जो बहुत माल और औलाद वाला था)(11) **और उसको बहुत सा माल दिया(12) और पास रहने वाले बेटे** (दिये)(13) **और सब तरह का सामान उसको दिया(14) फिर भी** (इसके बावजूद उस माल व औलाद का शुक्र अदा न किया कि ईमान ले आता बल्कि इस नेमत को कम समझ कर) **इस बात का लालच रखता है कि** (उसको) **और ज़्यादा दूं(15) हरगिज़** (वो ज़्यादा देने के क़ाबिल) **नहीं,** (क्योंकि) **वो हमारी आयतों का मुख़ालिफ़** (है इस आयत के उतरने के बाद उस आदमी की तरक़्क़ी बन्द हो गई फिर न कोई औलाद हुई न कुछ माल बढ़ा और यह सज़ा तो दुनिया में) **है(16)** (और आख़रत में) **उसको जल्दी ही** (यानी मरने के बाद) **दोज़ख़ के पहाड़ पर चढ़ाऊंगा** (हदीस में है कि दोज़ख़ में एक पहाड़ है सत्तर साल में उसकी चोटी पर पहुंचेगा फिर वहां से गिर पड़ेगा फिर इसी तरह सदा चढ़ेगा और गिरेगा)(17) **उस आदमी ने** (इस बारे में) **सोचा** (कि क़ुरआन के बारे में क्या बात बनाई जाए) **फिर** (सोच कर) **एक बात बनाई** (जिस का बयान आगे आता है)(18) **तो उस पर ख़ुदा की मार हो कैसी बात बनाई(19) फिर उस पर ख़ुदा की मार हो कैसी बात बनाई(20) फिर** (लोगों के चेहरों को) **देखा** (कि वो बनाई हुई बात उनसे कहूं)(21) **फिर मुंह बनाया** (ताकि देखने वाले समझें कि उसको क़ुरआन से बहुत नफ़रत है फिर) **और ज़्यादा मुंह बनाया(22) फिर मुंह फेरा और घमन्ड किया** (जैसा आदत है कि जिस चीज़ से नफ़रत होती है उससे मुंह फेर लेते हैं)(23) **फिर बोला बस यह तो एक जादू है** (जो पहले से) **चला आता है(24) बस यह तो आदमी का कलाम है** (जिसको आप किसी जादूगर से नक़ल कर देते हैं मतलब यह कि अल्लाह का कलाम नहीं)(25) **मैं उस को जल्दी दोज़ख़ में दाख़िल करूंगा(26) और तुम को कुछ ख़बर है कि दोज़ख़ कैसी चीज़ है(27)** (वो ऐसी है कि) **न तो** (किसी दोज़ख़ी की कोई चीज़ जलाने से) **बाक़ी रहने देगी और न** (किसी काफ़िर को अपने अन्दर लिए बिना) **छोड़ेगी(28)** (और) **वो** (जलाकर) **बदन की सूरत बिगाड़ देगी(29)** (और) **उस पर उन्नीस फ़रिशते तैनात होंगे** (जो काफ़िरों को तरह-तरह का अज़ाब देंगे)(30) **और** (काफ़िरों ने जो दोज़ख़ के पहरेदार फ़रिशतों की गिनती सुनकर

हंसी उड़ाई तो जानलें कि) **हमने दोज़ख़ के पहरेदार** (आदमी नहीं बल्कि) **सिर्फ़ फ़रिशते बनाए हैं** (जिनमें से एक-एक फ़रिशता सभी इन्सानों व जिन्नात की बराबर ताक़त रखता है), **और हमने जो उनकी गिनती** (बताने में) **सिर्फ़** (उन्नीस) **ऐसी रक्खी है जो काफ़िरों की गुमराही का सामान हो** (और) **ताकि किताब वाले** (सुनने के साथ) **यक़ीन करलें और ईमान वालों का ईमान और बढ़ जाए और किताब वाले** (यानी तौरेत व इन्जील को मानने वाले) **और मोमिन लोग शक न करें और ताकि जिन लोगों के दिलों में** (शक की) **बीमारी है वो और काफ़िर लोग कहने लगें कि भला इस अजीब बात से अल्लाह की क्या मुराद है,** (जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने ईमान वालों को इस बारे में हिदायत की और काफ़िरों को इस बारे में गुमराह किया) **इसी तरह अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसको चाहता है हिदायत कर देता है, और** (जहन्नम के फ़रिशतों के उन्नीस बताने में भेद हैं वर्ना) **तुम्हारे रब की** (उन) **फ़ौजों** (की यानी फ़रिशतों की गिनती इतनी ज़्यादा है कि उस) **को सिवाए रब के कोई नहीं जानता** (क्योंकि उन्नीस फ़रिशते तो वहां के सरदार हैं और उनके मददगार बहुत ज़्यादा हैं), **और दोज़ख़** (का हाल बयान करना) **तो सिर्फ़ आदमियों की नसीहत के लिए है** (ताकि वहां के अज़ाब को सुनकर डरें और ईमान लाएं)(31)।

नोटः- ऊपर आयतों में जिस वलीद बिन मुग़य्यरा का ज़िक्र है उसने जब क़ुरआन सुना तो यह कहा कि यह इन्सान का कलाम नहीं यानी अल्लाह की तरफ़ से है और क़ुरआन की बहुत तारीफ़ें की लेकिन अबूजहल के बहकाने से मुख़ालिफ़ हो गया। और अन्जाम उस का बुरा हुआ।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾ وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ﴿٣٣﴾ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ﴿٣٤﴾ اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ﴿٣٥﴾ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ﴿٣٦﴾ لِمَنْ شَآءَ
مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ﴿٣٧﴾ كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ﴿٣٨﴾ اِلَّآ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ﴿٣٩﴾ فِيْ جَنّٰتٍ
يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿٤٠﴾ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤١﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ﴿٤٢﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ
الْمِسْكِيْنَ ﴿٤٤﴾ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٤٦﴾ حَتّٰىٓ اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ﴿٤٧﴾ فَمَا
تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ﴿٤٨﴾ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٩﴾ كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ
قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ﴿٥٢﴾ كَلَّا بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٥٣﴾ كَلَّآ اِنَّهٗ
تَذْكِرَةٌ ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ﴿٥٦﴾

आयत नं० 32 से 56

कोई शक नहीं क़सम चान्द की(32) **और रात की जब वो जाने लगे**(33) **और सुबह की जब रौशनी फैल जाए**(34) **कि दोज़ख़ बड़ी भरी चीज़ है**(35) **जो इन्सान के लिए बड़ा डरावा है**(36) **यानी तुम में जो** (भलाई की तरफ़) **आगे बढ़े उसके लिए भी या जो** (भलाई से) **पीछे हटे उसके लिए भी**(37) (आगे लोगों की कुछ हालतों का बयान है कि) **हर आदमी अपने** (कुफ़्र के) **कामों के बदले में** (दोज़ख़ में) **गरिफ़्तार होगा**(38) **सिवाए दाहिने हाथ वालों** (के यानी मोमिनों) **के**(39) **कि वो जन्नतों में होंगे** (और) **हाल पूछते होंगे**(40) **मुजरिमों** (यानी काफ़िरों) **का** (ख़ुद) **उन** (काफ़िरों ही) **से**(41) **कि तुम को दोज़ख़ में किस बात ने दाख़िल किया है**(42) **वो कहेंगे कि हम न तो नमाज़ पढ़ते थे**(43) **और न ग़रीब को** (जिसका हक़ वाजिब था) **खाना खिलाया** (करते थे यानी ग़रीबों की ज़रूरतों पर ख़र्च नहीं) **करते थे**(44) **और** (जो लोग सच्चे दीन को झुटलाने के धन्धे में रहते थे उन) **धन्धों में रहने वालों के साथ हम भी** (उसी दीन के झुटलाने के) **धन्धे में रहा करते थे**(45) **और क़ियामत के दिन को झुटलाया करते थे**(46) **यहां तक कि** (उसी हालत में) **हम को मौत आ गई** (और हम उन हरकतों से बाज़ न आए यानी ख़ातमा उसी नाफ़रमानी पर हुआ इस वजह से हम दोज़ख़ में आए)(47) **तो** (इस हालत में) **सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश उनके काम न आएगी** (यानी कोई काफ़िरों की सिफ़ारिश ही न कर सकेगा)(48) **तो उनको क्या हुआ कि इस** (क़ुरआनी) **नसीहत से मुंह मोड़ते हैं**(49) **कि जैसे वो जंगली गधे हैं**(50) **जो शेर से भागे जा रहे हैं**(51) (ये लोग क़ुरआन को काफ़ी नहीं समझते) **बल्कि उनमें हर आदमी यह चाहता है कि उसको खुली हुई** (आसमानी) **चिट्ठियां दी जाएं** (जैसे कुछ काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि अगर आप चाहते हैं कि हम आप का कहना मानें तो ख़ास आसमान से ऐसी चिट्ठियां आएं जिनमें आप के कहना मानने का हुक्म लिखा हो)(52) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (हो सकता क्योंकि न इसकी ज़रूरत है और न इनके दिल में ईमान लाने का इरादा है), **बल्कि** (वजह यह है कि) **ये लोग आख़रत** (के अज़ाब) **से डरते** (नहीं इसलिए हक़ की तलाश) **नहीं**(53) (अगर मानलो यह मांगे पूरी भी हो जाएं ये तब भी न मानेंगे इसलिए यह) **हरगिज़ नहीं** (हो सकता, बल्कि) **यह क़ुरआन** (ही) **नसीहत** (के लिए काफ़ी है दूसरी चिट्ठियों की ज़रूरत नहीं) **है**(54) **तो** (इस हालत में) **जिसका जी चाहे इससे नसीहत हासिल करे** (और जिसका चाहे न करे जहन्नम में जाए हम को कोई ज़रूरत नहीं कि मांगी हुई चिट्ठियां भेजें)(55) **और** (क़ुरआन के नसीहत होने में इससे शक न किया जाए कि कुछ लोगों को इससे नसीहत नहीं होती बल्कि बात यह है कि)

बिना अल्लाह के चाहे ये लोग नसीहत क़ुबूल नहीं करेंगे (और इस न चाहने में कुछ भेद हैं लेकिन क़ुरआन अपने आप में नसीहत ज़रूर है बस इससे नसीहत हासिल करो और अल्लाह का कहना मानो क्योंकि) **वो ही है जिस** (के अज़ाब) **से डरना चाहिए और** (वो ही है) **जो** (बन्दों के गुनाह) **मुआफ़ करता है**(56)।

नोटः- आख़रत में मुसलमानों के लिए भले ही गुनाहगार हों सिफ़ारिश नफ़ा देगी जैसा कि हदीसों से साबित है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि "आख़रत में अल्लाह के फ़रिशते और पैग़म्बर और शहीद हज़रात और नेक लोग गुनाहगारों की सिफ़ारिश करेंगे और वो उनकी सिफ़ारिश से जहन्नम से निकाल लिये जाएंगे"। मगर काफ़िरों के लिए न सिफ़ारिश की इजाज़त होगी न क़ुबूल होगी। एक हदीस में है कि जो आदमी सिफ़ारिश के हक़ होने ही का इनकार करे या हौज़े कौसर के वजूद का इनकार करे उसका सिफ़ारिश और हौज़े कौसर में कोई हिस्सा नहीं। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

75-सूरत-क़ियामाः

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '40' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ﴿۱﴾ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ؕ﴿۲﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ؕ﴿۳﴾ بَلٰى
قٰدِرِيْنَ عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿۴﴾ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۚ﴿۵﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا بَرِقَ
الْبَصَرُ ۙ﴿۷﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ﴿۸﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۙ﴿۹﴾ يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ﴿۱۰﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ﴿۱۱﴾
اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِۨ الْمُسْتَقَرُّ ؕ﴿۱۲﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۢ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ﴿۱۳﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ﴿۱۴﴾ وَّ
لَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ؕ﴿۱۵﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ؕ﴿۱۶﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۚ﴿۱۷﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ
قُرْاٰنَهٗ ۚ﴿۱۸﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ؕ﴿۱۹﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ﴿۲۰﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ﴿۲۱﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ﴿۲۲﴾
اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۚ﴿۲۳﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ۙ﴿۲۴﴾ تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ؕ﴿۲۵﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ﴿۲۶﴾ وَ
قِيْلَ مَنْ ٜ رَاقٍ ۙ﴿۲۷﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ﴿۲۸﴾ وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ﴿۲۹﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِۨ الْمَسَاقُ ؕ﴿۳۰﴾

आयत नं० 01 से 30

मैं क़सम खाता हूं क़ियामत के दिन की(01) और क़सम खाता हूं ऐसे जी की जो अपने को बुरा कहे (यानी नेकी करके भी उसे कम समझे और गुनाह हो जाए तो बहुत पछताए और क़सम इस बात पर कि इन्सान को दोबारा ज़रूर ज़िन्दा करेंगे)(02) **क्या** (काफ़िर) **इन्सान समझता है कि हम** (क़ियामत में) **उसकी हड्डियां** (यानी ढांचा) **हरगिज़ न जमा करेंगे(03)** (आगे इस इनकार का जवाब है यानी) **हम ज़रूर जमा करेंगे** (और यह जमा करना हम को कुछ मुश्किल नहीं क्योंकि) **हमें इस पर** (भी) **क़ुदरत है कि उसकी उंगलियों के पोर-पोर को ठीक बनाएं(04)** (कुछ आदमी ऐसे हैं कि अल्लाह की क़ुदरत के बारे में सोचते नहीं और क़ियामत को नहीं मानते) **बल्कि** (ऐसा) **आदमी** (क़ियामत का इनकार करके) **यह चाहता है कि अपनी आगे की ज़िन्दगी में भी** (निडर होकर) **गुनाह करता रहे(05)** (इसलिए इनकार की राह से) **पूछता है कि क़ियामत का दिन कब**

आएगा(06) तो जिस वक़्त (अचम्भे से) **आंखें फटी रह जाएंगी** (और वजह इस अचम्भे की यह होगी कि जिन चीज़ों को झुटलाया करता था वो अचानक नज़र) **आजाएंगी(07) और चान्द में रौशनी न रहेगी(08) और** (चान्द ही क्या बल्कि) **सूरज और चान्द** (दोनो) **एक हालत के हो जाएंगे** (यानी दोनो में रौशनी न रहेगी)**(09) उस दिन इन्सान कहेगा कि अब किधर भागूं(10)** (लेकिन) **हरगिज़** (भाग) **नहीं** (सकते क्योंकि) **कहीं पनाह की जगह नहीं** (होगी)**(11) उस दिन सिर्फ़ आप ही के रब के पास** (जाने का) **ठिकाना है** (फिर चाहे जन्नत में भेजें या दोज़ख़ में)**(12) उस दिन इन्सान को उसका सब अगला पिछला किया हुआ जिता दिया जाएगा(13)** (और यह ही नहीं) **बल्कि इन्सान अपने सब हाल को ख़ूब जानता होगा(14) चाहे वो** (उस वक़्त भी) **कितने ही बहाने बनाए(15)** (और) **ऐ पैग़म्बर** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब वही उतरा करे तो) **आप** (वही पूरी होने से पहले) **क़ुरआन पर अपनी ज़बान न हिलाया कीजिए ताकि आप उसको जल्दी-जल्दी** (याद कर) **लें(16)** (क्योंकि) **हमारे ज़िम्मे है** (आप के दिल में) **उसका जमा कर देना** (यानी याद करा देना) **और** (आप की ज़बान से) **उसका पढ़वा देना(17) तो जब हम उसको पढ़ने लगा करें** (यानी हमारा फ़रिशता पढ़ने लगा करे) **तो उसके ताबे हो जाया** (कीजिए यानी उधर ही ध्यान किया कीजिए और साथ-साथ न पढ़ा) **कीजिए(18) फिर** (आप की ज़बान से लोगों के सामने) **उसका बयान करा देना** (यानी आप को याद करा देना और लोगों के सामने पढ़वा देना सब) **हमारे ज़िम्मे है(19)** (और ऐ काफ़िरों जैसा तुम समझ रहे हो कि क़ियामत न आएगी) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (और न तुम्हारे पास इसके इनकार की कोई दलील है) **बल्कि** (सिर्फ़ बात यह है कि) **तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो(20) और** (उसकी मुहब्बत में खपकर) **आख़रत को भूले हुए हो(21)** (बस जब क़ियामत आएगी तो) **बहुत से चेहरे तो उस दिन खिले होंगे(22)** (और) **अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे(23) और बहुत से चेहरे उस दिन उदास होंगे(24)** (और वो लोग) **सोच रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला बरताव किया जाएगा** (यानी उसको सख़्त अज़ाब होगा)**(25) हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (जैसा कि तुम समझते हो बल्कि दुनिया से एक दिन जुदाई होने वाली है और आख़िरकार आख़रत में जाना है कि) **जब जान हंसली तक पहुंच जाती है(26) और** (बहुत नाउम्मीदी से उस वक़्त) **कहा जाता है** (यानी पास वाले कहते हैं) **कि** (अरे) **कोई झाड़** (फूंक कर) **ने वाला भी है** (यानी दवा इलाज से मजबूर होकर झाड फूंक करने वाले को तलाश करने लगते हैं)**(27) और** (उस वक़्त) **वो** (मरने वाला) **यक़ीन कर लेता है कि यह** (दुनिया से) **जुदाई का वक़्त है(28) और** (मौत की सख़्ती से) **एक पिन्डली दूसरी पिन्डली से लिपट-लिपट जाती** (है यानी मौत की निशानी आ जाती)

है(29) (जब ये हालतें सामने आ जाती हैं तो ऐ इन्सान) **उस दिन तेरे रब की तरफ़ जाना होता है(30)।**

नोटः- जब हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम क़ुरआन की कुछ आयतें लेकर आते और उनको पढ़ते तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह सोच कर कि कहीं कुछ भूल न लग जाए उनके पढ़ने के साथ-साथ दोहराने लगते थे। अल्लाह की तरफ़ से उनको इस महनत से रोक दिया गया कि साथ-साथ न पढ़ा करें बल्कि बाद में पढ़ा करें क्योंकि क़ुरआन को याद करा देना और ठीक-ठीक पढ़वा देना हमारी ज़िम्मेदारी है। इसलिए आप इसकी फ़िक्र छोड़ दें।

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾ ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾ ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ
فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ
فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِۦَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

आयत नं० 31 से 40

फिर (अल्लाह के पास पहुंचने के बाद अगर वो काफ़िर है तो उस का बुरा हाल होगा क्योंकि) **न तो वो** (अल्लाह व रसूल पर) **यक़ीन लाया था और न नमाज़ पढ़ी थी(31) लेकिन** (अल्लाह और रसूल को) **झुटलाया था और** (हुक्मों से) **मुंह मोड़ा था(32) फिर** (नसीहत करने वालों से मुंह फेर कर) **अकड़ दिखाता हुआ अपने घर चल देता** (था मतलब यह कि एक तो कुफ़्र और गुनाह फिर उस पर पछतावा नहीं बल्कि और उल्टा घमन्ड करता) **था(33)** (ऐसे आदमी से कहा जाएगा कि) **तेरी बर्बादी पर बर्बादी आने वाली है(34) फिर** (दोबारा सुन ले कि) **तेरी बर्बादी पर बर्बादी आने वाली है(35) क्या इन्सान यह समझता है कि उसे यूं ही छोड़ दिया जाएगा** (न उस पर हुक्म जारी किये जाएंगे और न उससे हिसाब किताब होगा बल्कि ये दोनों बातें यक़ीनी हैं)(36) **क्या यह आदमी** (शुरू में सिर्फ़) **मनी की एक बून्द नहीं था जो** (औरत की बच्चेदानी में) **टपकाया गया था(37) फिर वो जमा हुआ ख़ून बन गया फिर अल्लाह तआला ने उसे** (इन्सान) **बनाया फिर जिस्म के हिस्से ठीक किये(38) फिर उस** (इन्सान) **की दो क़िस्में कर दीं मर्द और औरत(39)** (तो) **क्या वो** (अल्लाह जिसने शुरू में अपनी क़ुदरत से यह सब कुछ किया) **इस बात पर क़ुदरत नहीं रखता कि** (क़ियामत में) **मुर्दों को ज़िन्दा करे** (हालांकि दोबारा पैदा करना पहले

पैदा करने से आसान है)(40)

नोटः- हदीस में है कि जो आदमी सूरत क़ियामा की आख़री आयत की तिलावत करे तो उस को यह कहना चाहिए-

"बला व अना अला ज़ालिका मिनश्शाहिदीन"

ऊपर आयतों से यह भी मालूम हुआ कि जन्नती लोगों को आख़रत में अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा। अलबत्ता उनके दर्जे अलग-अलग होंगे। कुछ को यह ज़ियारत हफ़्तेवार जुमा को हासिल होगी कुछ को रोज़ाना सुबह व शाम और कुछ के लिए हर वक़्त हर हाल में रहेगी।

(मज़हरी)

76-सूरत-दहर

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '31' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾ اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ
نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿٢﴾ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّ اِمَّا كَفُوْرًا ﴿٣﴾ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۠ وَ
اَغْلٰلًا وَّ سَعِيْرًا ﴿٤﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ
يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَ يَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾ وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ
مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا
يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَ لَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّ سُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَ جَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّ
حَرِيْرًا ﴿١٢﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّ لَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾ وَ دَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَ ذُلِّلَتْ
قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾ وَ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّ اَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿١٥﴾ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا
تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾ وَ يُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾ وَ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ
وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾ وَ اِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّ مُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾
عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّ اِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّ حُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَ سَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾ اِنَّ
هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّ كَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾ ع

आयत नं० 01 से 22

बेशक इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त भी आ चुका है जिसमें उसका नामो निशान न (था यानी इन्सान न था बल्कि मनी की बून्द था और उससे पहले ख़ुराक की चीज़ों की सूरत में) **था(01) हमने उसको** (मर्द व औरत की) **मिली जुली मनी से पैदा किया फिर उसे ऐसा बनाया**

कि सुनता भी है देखता भी (है यानी समझ बूझ भी दी) **है(02)** (फिर) **हमने उस को** (पैग़म्बरों और किताबों के वास्ते से भलाई बुराई का) **रास्ता दिखाया** (और हुक्म जारी किये फिर) **या तो शुक्र करने वाला** (और मोमिन) **हो गया या नाशुक्रा** (और काफ़िर होगया यानी जिस रास्ते पर चलने को उसको कहा था जो उस पर चला वो मोमिन हो गया और जो बिल्कुल न चला वो काफ़िर) **हो गया(03)** (आगे दोनों के अन्जाम का बयान है कि) **हमने काफ़िरों के लिए ज़ंजीरें और गले के पट्टे और भड़कती हुई आग तैयार कर रक्खी है(04)** (और) **जो नेक** (लोग) **हैं वो ऐसे पियालों से** (शराबें) **पियेंगे जिसमें काफ़ूर की मिलावट** (होगी और यह काफ़ूर वहां की) **होगी(05) यानी ऐसी नहरों से** (पियेंगे) **जिससे अल्लाह के ख़ास बन्दे पियेंगे** (और) **जिसको वो** (ख़ास बन्दे जहां चाहेंगे) **बहाकर ले जाएंगे** (और यह जन्नती लोगों की करामत होगी कि जन्नत की नहरें उनके ताबे होंगी)**(06) वो लोग** (ऐसे हैं कि) **अपने वाजिबों** (और मन्नतों) **को पूरा करते हैं और** (अदा भी सच्चे मन से करते हैं क्योंकि वो) **ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख़्ती आम होगी** (यानी कम व ज़्यादा सब पर उसकी सख़्ती का असर होगा मगर जिसे अल्लाह चाहे मुराद क़ियामत का दिन है)**(07) और वो लोग** (नीयत के ऐसे सच्चे हैं कि सिर्फ़) **अल्लाह की मुहब्बत से ग़रीब और यतीम और क़ैदी को खाना खिलाते हैं(08)** (और वो लोग खाना खिलाकर ज़बान से या दिल से यह कहते हैं कि) **हम तुम को सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए खाना खिलाते हैं, न हम तुम से** (इसका कोई) **बदला चाहते हैं और न** (उसका ज़बानी) **शुक्रिया** (चाहते हैं)**(09) हम** (अल्लाह को राज़ी करने के लिए इस वास्ते तुम को खाना खिलाते हैं कि हम) **अपने रब की तरफ़ से एक उदास कर देने वाले सख़्त दिन का ख़तरा रखते हैं** (तो उम्मीद है कि इन नेक कामों की वजह से उस दिन की सख़्ती से बचे रहें)**(10) तो अल्लाह तआ़ला उनको** (इस ताबेदारी व मन की सच्चाई की बरकत से) **उस दिन की सख़्ती से बचाएगा और उनको ताज़गी और ख़ुशी** (देगा यानी चेहरों पर ताज़गी और दिल में ख़ुशी) **देगा(11) और उनकी** (दीन पर) **मज़बूती के बदले में उनको जन्नत और रेशमी लिबास देगा(12) इस हालत में कि वो वहां** (जन्नत में) **मसहरियों पर** (इ़ज़्ज़त से) **तकिया लगाए हुए** (आराम करते) **होंगे** (और) **न वहां तपिश** (और गर्मी) **पाएंगे और न ज़्यादा सर्दी** (बल्कि सुहाना मौसम होगा)**(13) और यह हालत होगी कि** (वहां के यानी जन्नत के) **पेड़ों के साए उन** (जन्नती लोगों) **पर झुके होंगे** (यानी नज़दीक होंगे) **और उन के फल उनके बस में होंगे** (कि हर वक़्त हर तरह बिना मेहनत ले सकेंगे)**(14) और उन के पास** (खाने पीने की चीज़ें पहुंचाने के लिए) **चान्दी के बर्तन लाए जाएंगे और पियाले जो शीशे के होंगे(15)** (और) **वो**

शीशे चान्दी के होंगे जिनको भरने वालों ने ठीक हिसाब से भरा होगा (कि न कमी रहे और न बचे, और चान्दी के शीशे का मतलब यह कि सफ़ेदी तो चान्दी जैसी और सफ़ाई शीशे जैसी कि आर पार दिखाई दे दुनिया में ऐसे शीशे नहीं होते)(16) **और वहां उनको** (एक) **ऐसा** (भी) **जामे शराब पिलाया जाएगा जिसमें सोंठ की मिलावट होगी**(17) **यानी ऐसी नहर से** (उन को पिलाया जाएगा) **जिसका नाम** (वहां) **सलसबील** (मशहूर) **होगा**(18) **और उनके पास** (ये चीज़ें लेकर) **ऐसे लड़के आते जाते होंगे जो सदा लड़के ही रहेंगे,** (और वो ऐसे हसीन हैं कि) **अगर आप उनको** (चलते फिरते) **देखें तो ऐसा लगे कि वो मोती हैं जो बिखर गये हैं**(19) (और वहां और भी ऐश के सामान होंगे कि) **अगर तुम उस जगह को देखो तो तुम को बड़ी नेमत और बड़ी बादशाही दिखाई दे**(20) (और) **उन जन्नतियों पर बारीक रेशम के हरे कपड़े होंगे और भारी रेशम के कपड़े होंगे** (क्योंकि हर लिबास का अलग मज़ा है), **और उनको चान्दी के कंगन पहनाए जाएंगे और उनका रब** (जो शराब पीने को देगा तो) **उनको पाक शराब पीने को देगा** (जिसमें न गन्दगी होगी और न नशा होगा)(21) **यह तुम्हारा इनआम है और तुमने** (दुनिया में) **जो मेहनत की थी कुबूल हुई** (यह कह कर उन को ख़ुश कर दिया जाएगा)(22)।

नोटः- मन्नत के वाजिब होने के लिए यह ज़रूरी है कि वो गुनाह का काम न हो दूसरे जिस काम की मन्नत मानी जाए वो किसी इबादत की जिन्स से हो जैसे नमाज़, रोज़ा, सदक़ा व क़ुर्बानी वग़ैरह।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿۲۳﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿۲۴﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ
رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿۲۵﴾ وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿۲۶﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ
وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿۲۷﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿۲۸﴾ اِنَّ هٰذِهٖ
تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿۲۹﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۳۰﴾
يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۳۱﴾

आयत नं० 23 से 31

(ऐ पैग़म्बर) **हमने आप पर यह क़ुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है** (ताकि थोड़ा-थोड़ा लोगों को पहुंचाते रहें और उनको उससे फ़ाइदा उठाने में आसानी हो)(23) **तो आप अपने रब के**

हुक्म पर जमे रहिए (कि उसमें तबलीग़ भी आगई) **और उनमें से किसी बड़े गुनाहगार या काफ़िर की बात** (न मानिए यानी जो तबलीग़ से मना करते हैं उनका कहना) **न मानिए(24) और अपने रब का सुबह शाम नाम लिया कीजिए(25) और रात के कुछ हिस्से में भी उसको सजदा कीजिए** (यानी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ा कीजिए) **और रात के बड़े हिस्से में उसकी तस्बीह किया** (कीजिए यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा) **कीजिए(26)** (और इन लोगों की आप के साथ मुख़ालफ़त की असली वजह यह है कि) **ये लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे** (आने) **वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे** (हैं बस दुनिया की मुहब्बत ने अन्धा कर रक्खा है इसलिए हक़ बात से दुशमनी रखते) **हैं(27)** (और भारी दिन यानी क़ियामत का वो इनकार करते थे इसलिए बताते हैं कि) **हम ही ने उनको पैदा किया और हम ही ने उनके जोड़ बन्द मज़बूत किये और** (ऐसे ही) **जब हम चाहेंगे उन्ही जैसे लोग उनकी जगह बदल दें** (फिर मुर्दों को दो बारा ज़िन्दा करने में कौन बात ज़्यादा मुश्किल है कि वो न कर सकें)(28) **यह** (सब जो बताया गया एक) **नसीहत** (की बात) **है सो जो आदमी चाहे अपने रब की तरफ़** (जाने वाला) **रास्ता चुन ले(29) और** (क़ुरआन के नसीहत होने में इससे शक न किया जाए कि कुछ लोगों को इससे हिदायत नहीं होती बात यह है कि) **बिना अल्लाह के चाहे तुम लोग कोई बात चाह ही नहीं सकते,** (और कुछ लोगों के लिए अल्लाह के न चाहने में कुछ भेद होते हैं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला बड़ा इल्म वाला और हिकमत वाला है(30) वो जिस को चाहे अपनी रहमत में ले लेता है, और** (जिसको चाहे कुफ़्र और ज़ुल्म में गरिफ़्तार रखता है फिर) **ज़ालिमों के लिए उसने दर्दनाक अज़ाब तैार कर रक्खा है(31)।**

नोटः- दुनिया में ज़ेवर औरतों के लिए होते हैं मगर जन्नत में मर्दों के लिए भी शान की चीज़ होंगे। यह ख़ास बात जन्नत की होगी।

77-सूरत-मुरसलात

इस मक्की सूरत में '2' रूकू और '50' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ﴿۱﴾ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ﴿۲﴾ وَّ النّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ﴿۳﴾ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ﴿۴﴾ فَالْمُلْقِیٰتِ
ذِكْرًا ۙ﴿۵﴾ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ﴿۶﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ﴿۷﴾ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ﴿۸﴾ وَ اِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ﴿۹﴾ وَ اِذَا
الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ﴿۱۰﴾ وَ اِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ﴿۱۱﴾ لِاَیِّ یَوْمٍ اُجِّلَتْ ؕ﴿۱۲﴾ لِیَوْمِ الْفَصْلِ ۚ﴿۱۳﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا یَوْمُ
الْفَصْلِ ؕ﴿۱۴﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۵﴾ اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِیْنَ ؕ﴿۱۶﴾ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِیْنَ ﴿۱۷﴾ كَذٰلِكَ نَفْعَلُ
بِالْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۸﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِیْنٍ ۙ﴿۲۰﴾ فَجَعَلْنٰهُ فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ ۙ﴿۲۱﴾
اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۙ﴿۲۲﴾ فَقَدَرْنَا ۖۗ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَیْلٌ یَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِیْنَ ﴿۲۴﴾

आयत नं० 01 से 24

क़सम है उन हवाओं की जो नफ़ा पहुंचाने के लिए भेजी जाती हैं(01) फिर उन हवाओं की जो (आंधी बनकर) **तेज़ी से चलती हैं** (जिनसे ख़तरा रहता है)**(02) और उन हवाओं की जो बादलों को** (उठाकर) **फैलाती हैं** (जिसके बाद बारिश होने लगती है)**(03) फिर उन हवाओं की जो बादलों को तितर-बितर कर देती हैं** (जैसा बारिश के बाद होता है)**(04) फिर उन हवाओं की जिन से** (दिलमें) **अल्लाह की याद पैदा होती है(05) या डर पैदा करती हैं जिससे तौबा का ध्यान आता है(06)** (आगे क़सम का जवाब है) **कि जिस चीज़ का तुम से वादा किया जाता है वो ज़रूर होने वाली है** (यानी क़ियामत)**(07) तो** (क़ियामत उस वक़्त आएगी) **जब सितारों में रौशनी न रहेगी(08) और जब आसमान फट जाएगा(09) और जब पहाड़** (चूरा-चूरा होकर) **उड़ते फिरेंगे(10) और जब पैग़म्बरों के जमा होने का वक़्त आ**(जाएगा उस वक़्त सब का फ़ैसला हो)**जाएगा(11)** (क्या आप को मालूम है) **किस दिन के लिए पैग़म्बरों के मुआमले में देरी है(12)** (आगे जवाब है कि) **फ़ैसले के दिन के लिए** (यह देरी है)**(13) और** (आगे उस फ़ैसले के दिन की

सख़्ती का बयान है कि) **आप को मालूम है कि वो फ़ैसले का दिन कैसा** (है यानी बहुत सख़्त) **है**(14) (और जो लोग उस सच्चाई को झुटला रहे हैं वो समझलें कि) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी**(15) (और) **क्या हमने पहले** (काफ़िर) **लोगों को** (अज़ाब से) **हलाक नहीं किया**(16) **फिर बाद वालों को भी** (अज़ाब में) **उन** (पहलों) **ही के साथ-साथ कर देंगे** (यानी आप की उम्मत के काफ़िरों पर भी मुसीबत का वबाल भेजेंगे जैसा जंगे बद्र में हुआ)(17) **हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही** (सलूक) **किया करते** (हैं चाहे दोनो जहान में चाहे सिर्फ़ आख़रत में उनके कुफ़्र पर सज़ा देते) **हैं**(18) (और जो इस हक़ बात को झुटलाते हैं समझ रक्खें कि) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी**(19) **क्या हमने तुम को एक बेक़द्र पानी** (यानी मनी) **से नहीं बनाया** (यानी शुरू में तुम मनी की बून्द थे)(20) **फिर हमने उस को एक हिफ़ाज़त की जगह** (यानी औरत की बच्चे दानी) **में रक्खा**(21) **एक तय वक़्त तक** (की मुद्दत) **के लिए**(22) (इन सब कामों का) **एक अन्दाज़ा ठहराया सो हम कैसे अच्छे अन्दाज़ा ठहराने वाले** (हैं तो इससे साबित हुआ कि मुर्दों को ज़िन्दा कर सकते) **हैं**(23) (बस जो लोग इस मुर्दों के ज़िन्दा करने को झुटलाते हैं) **उस दिन** (उन) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी**(24)।

नोटः- पहली उम्मतों पर आसमानी अज़ाब आता था जिससे काफ़िरों की पूरी बस्तियां तबाह हो जाती थीं। हुज़ूर की उम्मत का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वजह से यह ख़ास इकराम है कि उनके काफ़िरों पर आम आसमानी अज़ाब नहीं आता और आम लोग हलाक नहीं होते बल्कि सिर्फ़ बड़े सरकश मुजरिम ही मारे जाते हैं।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٨﴾ انْطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾ انْطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَا
ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾ إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾ كَأَنَّهُ جِمَالَتٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ
لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾ هَٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٦﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾ هَٰذَا
يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٣٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

आयत नं० 25 से 40

क्या हमने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया(25) यानी ज़िन्दों और मुर्दों को (समेटने वाली)(26) **और हमने उस** (ज़मीन) **में ऊंचे-ऊंचे पहाड़ बनाए** (जिनसे बहुत से नफ़े जुड़े हैं) **और हमने तुम को मीठा पानी पिलाया(27)** (और ये सब नेमतें एक अल्लाह की दी हुई हैं बस जो लोग इस सच्चाई यानी तौहीद को झुटलाते हैं वो समझ लें कि) **उस दिन** (सच्चाई के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(28)** (आगे क़ियामत की कुछ सज़ाओं का ज़िक्र है यानी क़ियामत के दिन काफ़िरों से कहा जाएगा कि) **तुम उस अज़ाब की तरफ़ चलो जिसको झुटलाया करते थे(29) चलो उस सायबान की तरफ़ जो तीन शाख़ों वाला है(30) जिसमें न** (ठन्डा) **साया है और न वो गर्मी से बचाता है** (मुराद उस सायबान से एक धुवां है जो जहन्नम से निकलेगा और चूंकि बहुत ज़्यादा होगा इसलिए ऊंचा होकर फटकर तीन टुकड़े हो जाएंगे और हिसाब पूरा होने तक काफ़िर उसी धुएं के घेरे में रहेंगे जब कि नेक लोग अर्श के साए में रहेंगे)(31) **वो** (धुवां) **अंगारे बरसाएगा जैसे बड़े-बड़े महल(32) जैसे काले-काले ऊंट** (जब चिंगारी आग से झड़ती है तो बड़ी होती है फिर बहुत से छोटे टुकड़े होकर ज़मीन पर गिरती है तो शुरू में अंगारे महल जैसे फिर छोटे-छोटे होकर ऊंट जैसे हो जाएंगे)(33) **उस दिन** (इस फ़ैसले के दिन को) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(34) यह वो दिन होगा जिसमें वो** (यानी काफ़िर) **लोग बोल नहीं सकेंगे(35) और न उनको** (मजबूरी बताने की) **इजाज़त होगी तो मजबूरी भी न बता सकेंगे** (क्योंकि असल में कोई मजबूरी होगी ही नहीं)(36) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(37)** (उन लोगों से कहा जाएगा कि) **यह है फ़ैसले का दिन** (जिस को तुम झुटलाया करते थे) **हम ने** (आज) **तुम को और पहले लोगों को** (फ़ैसले के लिए) **जमा कर लिया(38) अब अगर तुम्हारे पास** (आज के फ़ैसले से बचने का) **कोई दांव है तो मुझ पर वो दांव चला लो(39)** (याद रक्खो) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(40)**।

नोटः- ज़मीन को ज़िन्दों और मुर्दो को समीटने वाली कहा गया क्योंकि ज़िन्दगी इसी पर बसर होती है। और मरने के बाद ज़मीन में ही समा जाते हैं चाहे दफ़नाए जाएं या डूब जाएं या जल कर राख बन जाएं मिट्टी होकर ज़मीन में ही समा जाते हैं। और इस हालत में मौत के बाद का नेमत होना इस तरह है कि अगर मुर्दे मिट्टी न हो जाया करते तो ज़िन्दे परीशान होकर मुर्दों से भी बुरे हाल हो जाते कि उनको अपने बसने बल्कि चलने फिरने की जगह न मिलती।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَٰلٍ وَّ عُيُونٍ ﴿٤١﴾ وَّ فَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾ كُلُوا وَ اشْرَبُوا هَنِيٓئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾ إِنَّا
كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٥﴾ كُلُوا وَ تَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ﴿٤٦﴾ وَيْلٌ
يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٧﴾ وَ إِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾ فَبِأَيِّ حَدِيثٍۭ
بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

आयत नं० 41 से 50

परहेज़गार लोग बेशक सायों में और नहरों में होंगे(41) और अपने मन पसन्द फलों में होंगे(42) (और उनसे कहा जाएगा कि) **अपने** (नेक) **कामों के बदले में ख़ूब मज़े से खाओ और पियो(43) हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं(44)** (मगर) **उस दिन** (इन सच्चाइयों के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(45)** (आगे काफ़िरों से कहा गया है कि ऐ काफ़िरों) **तुम** (दुनिया में) **थोड़े दिन और खा पीलो और आराम बरत लो** (जल्दी ही तुम पर बदनसीबी आने वाली है क्योंकि) **तुम बेशक मुजरिम हो(46)** (और जो लोग जुर्म की सज़ा को झुटलाते हैं जानलें कि) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(47)** (और इन काफ़िरों की सरकशी और जुर्म की यह हालत है कि) **जब उनसे कहा जाता है कि** (अल्लाह की तरफ़) **झुको** (यानी ईमान लाओ और ताबेदारी करो) **तो नहीं झुकते** (इससे ज़्यादा क्या जुर्म होगा)(48) **उस दिन** (हक़ के) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(49)** (और चाहिए तो यह था कि क़ुरआन की इन आयतों को सुनते ही ईमान ले आते मगर जब इस पर भी उनको असर नहीं) **तो फिर इस** (नसीहत भरे क़ुरआन) **के बाद कौन सी बात पर ईमान लाएंगे(50)।**

नोटः- हदीस में है कि जब तिलावत करने वाला इस आयत पर पहुंचेः **"फ़बि अय्यि हदीसिम बादहू यूमिनून"** तो उसको कहना चाहिए **"आमन्ना बिल्लाहि"** यानी हम अल्लाह पर ईमान ले आए। नमाज़ में ऐसा कहने से अहतियात रक्खे।

78-सूरत-नबा

"इस मक्की सूरत में 2 रूकू और 40 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ﴿٢﴾ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾
اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ﴿٦﴾ وَّ الْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَّ خَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿٨﴾ وَّ جَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾ وَّ جَعَلْنَا
الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾ وَّ جَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَّ بَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾ وَّ جَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَّ اَنْزَلْنَا
مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّ نَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَّ جَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾
يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَّ فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾ وَّ سُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾
اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّ لَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾
اِلَّا حَمِيْمًا وَّ غَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَّ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَ كُلَّ شَيْءٍ
اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

आयत नं0 01 से 30

ये (क़ियामत का इनकार करने वाले) **लोग किस चीज़ के बारे में पूछते हैं(01) उस बड़ी ख़बर** (यानी क़ियामत) **के बारे में पूछते हैं(02) जिसमें ये लोग** (सच्चे दीन वालों की) **मुख़ालफ़त कर रहे हैं(03)** (जैसा ये लोग समझते हैं कि क़ियामत न आएगी) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (बल्कि क़ियामत ज़रूर आएगी और) **उन को अभी पता चल जाएगा** (यानी दुनिया से जाने के बाद उन पर असलीयत खुल जाएगी जब उन पर अ़ज़ाब आएगा)**(04) फिर** (हम दोबारा कहते हैं कि जैसा ये लोग समझते हैं कि क़ियामत नहीं आएगी ऐसा) **हरगिज़ नहीं** (बल्कि आएगी और) **उनको अभी पता चल जाएगा(05)** (और वो लोग दोबारा पैदा होने को मुश्किल समझते थे इसलिए क़ुदरत की दलीलें बयान की जाती हैं कि) **क्या हमने ज़मीन को फ़र्श नहीं बनाया(06) और पहाड़ों को** (ज़मीन की) **कीलें**

(नहीं बनाया यानी कीलों की तरह जैसे किसी चीज़ में कीलें गाड़ देने से वो अपनी जगह से हिलती नहीं)(07) **और हम ही ने तुम को जोड़ा-जोड़ा** (यानी मर्द व औरत) **बनाया(08) और हम ही ने तुम्हारी नींद को आराम की चीज़ बनाया(09) और हम ही ने रात को पर्दे की चीज़ बनाया(10) और हम ही ने दिन को रोज़गार का वक़्त बनाया(11) और हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए(12) और हम ही ने** (आसमान में) **एक चमकता चराग़** (यानी सूरज) **बनाया(13) और हम ही ने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया(14) ताकि हम उस पानी से अनाज और सब्ज़ी पैदा करें(15) और घने बाग़** (पैदा करें, तो इन सब कमालों को देखने के बाद फिर हमारे क़ियामत बरपा करने का इनकार क्यों किया जाता है)(16) **बेशक फ़ैसले का दिन एक तय किया हुआ वक़्त है(17) यानी जिस दिन सूर फूंका जाएगा फिर तुम लोग गिरोह-गिरोह होकर आओगे** (यानी हर उम्मत अलग-अलग होगी, फिर मोमिन अलग काफ़िर अलग नेक अलग बदकार अलग)(18) **और आसमान खुल जाएगा फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाऐंगे** (यानी इतना बड़ा खुल जाएगा जैसे बहुत से दरवाज़े मिला कर बहुत बड़ी जगह होती है यूं दरवाज़े आसमान में अब भी हैं)(19) **और पहाड़** (अपनी जगह से) **हटा दिये जाएंगे तो वो** (चूरा होकर) **रेत की तरह से हो जाएंगे(20) बेशक दोज़ख़ एक घात की जगह** (है यानी अज़ाब के फ़रिशते इन्तिज़ार और ताक में हैं कि पकड़ कर अज़ाब दिया जाए जैसे ही काफ़िर आता) **है(21)** (और वो) **बाग़ियों का ठिकाना** (है)(22) **जिसमें वो मुद्दतों** (यानी सदा पड़े) **रहेंगे(23)** (और) **उसमें वो न तो किसी ठन्डक** (यानी आराम) **का मज़ा चक्खेंगे और न पीने के क़ाबिल चीज़ का** (जिससे प्यास बुझे)(24) **सिवाए गर्म पानी और पीप** (लहू) **के(25) यह** (उनको) **पूरा बदला मिलेगा(26)** (क्योंकि) **वो लोग** (क़ियामत के) **हिसाब का यक़ीन नहीं रखते थे(27) और हमारी** (उन) **आयतों को** (जिनमें हिसाब व दूसरी सच्ची बातों की ख़बर थी) **झूटा बताते थे(28) और हमने** (उनके किये कामों में से) **हर चीज़ को** (उन के आमाल नामे में) **लिख कर रख रक्खा है(29) तो** (उनके काम दिखा कर कहा जाएगा अब उन कामों का) **मज़ा चक्खो कि हम तुम को सज़ा ही बढ़ाते चले जाऐंगे(30)।**

नोटः- एक हदीस में है कि लोग क़ियामत के दिन तीन फ़ौजों में बन्टे होंगे। एक फ़ौज उन लोगों की जो पेट भरे हुए लिबास पहने हुए सवारियों पर सवार मैदाने हश्र में आएंगे। दूसरी फ़ौज पैदल लोगों की होगी जो चल कर मैदान में आएंगे। तीसरी फ़ौज उन लोगों की होगी जिन को चेहरों के बल घसीट कर मैदाने हश्र में लाया जाएगा। (मज़हरी)

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَكَأْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا
كِذَّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّن رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ
خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ
الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ إِنَّآ أَنذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ
يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِى كُنتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

(और आगे ईमान वालों के फ़ैसले का बयान है कि) **अल्लाह से डरने वालों के लिए बेशक कामयाबी है**(31) (यानी खाने और घूमने को) **बाग़** (जिनमें तरह-तरह के फल होंगे) **और अंगूर**(32) **और** (दिल बहलाने को) **नौजवान हम उम्र औरतें हैं**(33) **और** (पीने को ऊपर तक) **भरे हुए शराब के पियाले**(34) (और) **वहां न कोई ग़लत बात सुनेंगे और न झूट** (क्योंकि ये बातें वहां नहीं है)(35) **यह** (उन को उन की नेकियों का) **बदला मिलेगा जो कि बड़ा इनआम होगा आप के रब की तरफ़ से**(36) **जो मालिक है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो दोनों के बीच में हैं** (और जो) **बहुत महरबान है** (और) **किसी की हिम्मत नहीं जो बिना इजाज़त उसके सामने बोल सके**(37) **जिस दिन सभी जानदार और फ़रिशते** (अल्लाह के सामने) **सफ़ बान्धकर** (अदब के साथ) **खड़े होंगे,** (उस दिन) **कोई नहीं बोल सकेगा सिवाए उसके जिस को अल्लाह तआ़ला** (बोलने की) **इजाज़त देदे और वो आदमी बात भी ठीक कहे** (यानी उतनी बात कहे जितनी इजाज़त मिली है)(38) **यह दिन** (जो ऊपर बताया गया) **ज़रूर आने वाला है तो जिस का जी चाहे** (उसकी बातें सुन कर) **अपने रब के पास** (अपना) **ठिकाना बना रक्खे** (यानी नेक काम करे कि वहां अच्छा ठिकाना मिले)(39) **हमने** (ऐ लोगो) **तुम को एक पास आने वाले अज़ाब से डरा दिया है,** (जो कि ऐसे दिन में होने वाला है) **जिस दिन हर आदमी उन कामों को** (अपने सामने हाज़िर) **देख लेगा जो उसने अपने हाथों किये होंगे और काफ़िर** (पछता कर) **कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो** (जाता ताकि अज़ाब से बच) **जाता**(40)।

नोटः- लिखा है कि क़ियामत में सारे इन्सान व जिन्नात और जानवर सब जमा कर दिये जाऐंगे। और जानवरों में से जिसने दुनिया में दूसरे जानवर पर ज़ुल्म किया था तो हश्र के मैदान में उससे बदला लिया जाएगा और सज़ा दी जाएगी। यहां तक कि अगर किसी सींग वाली बकरी ने बेसींग

वाली बकरी को मारा था तो उससे भी बदला दिलवाया जाएगा। और बाद में सब जानवरों को मिट्टी कर दिया जाएगा इसे देख कर काफ़िर लोग तमन्ना करेंगे कि काश हम जानवर होते और इस वक़्त मिट्टी हो जाते ताकि हिसाब किताब और जहन्नम की सज़ा से बच जाते।

79-सूरत-नाज़िआत

"इस मक्की सूरत में 2 रूकू और 46 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ﴿۱﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿۲﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿۳﴾ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿۴﴾ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴿۵﴾
يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿۷﴾ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۸﴾ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿۹﴾
يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ؕ﴿۱۰﴾ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۱﴾ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ﴿۱۲﴾
فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ﴿۱۳﴾ فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ؕ﴿۱۴﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ﴿۱۵﴾ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ
الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ﴿۱۶﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ﴿۱۷﴾ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۙ﴿۱۸﴾ وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ
فَتَخْشٰى ۚ﴿۱۹﴾ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۖ﴿۲۰﴾ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۖ﴿۲۱﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۖ﴿۲۲﴾ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۖ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اَنَا
رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۖ﴿۲۴﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ؕ﴿۲۵﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ؕ﴿۲۶﴾

आयत नं0 01 से 26

क़सम है उन (फ़रिश्तों) **की जो** (काफ़िरों की) **जान सख़्ती से निकालते हैं(01) और जो** (मुसलमानों की रूह आसानी से निकालते हैं जैसे कि उनका) **बन्द खोल देते हैं(02) और जो** (रूहों को लेकर ज़मीन से आसमान की तरफ़ इस तरह तेज़ी व आसानी से चलते हैं जैसे) **तैरते हुए चलते हैं(03) फिर** (रूहों के बारे में अल्लाह का जो हुक्म होता है उसे पूरा करने के लिए) **तेज़ी के साथ दौड़ते हैं(04) फिर हर हुक्म को पूरा करते हैं(05)** (उन सब की क़सम खाकर कहते हैं कि क़ियामत ज़रूर आएगी) **जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी** (यानी क़ियामत का सूर फूंकने की पहली आवाज़ होगी)(06) **जिस के बाद पीछे आने वाली चीज़ आजाएगी** (यानी सूर फूंकने की दूसरी आवाज़ होगी)(07) **बहुत से दिल उस दिन धड़क रहे होंगे(08) उन की आँखें** (शर्म के मारे) **झुक रहीं होंगी(09)** (मगर ये लोग क़ियामत का इनकार कर रहे हैं और) **कहते हैं कि क्या**

हम पहली हालत में फिर वापिस होंगे (यानी क्या मरने के बाद फिर ऐसे ही बन जाएंगे भला ऐसा कैसे हो सकता है)(10) **क्या जब हमारी हड्डियां गल जाएंगी फिर** (ज़िन्दगी की तरफ़) **वापिस होंगे** (यानी यह बहुत मुश्किल है)(11) **कहने लगे कि** (अगर ऐसा हुआ तो) **इस सूरत में यह वापिसी** (हमारे लिए) **बड़े नुक़सान की होगी** (क्योंकि हमने इसके लिए कुछ सामान तो जमा किया नहीं यानी यक़ीन न करके हंसी उड़ाते हैं)(12) **तो** (यह समझलें कि हम को कुछ मुश्किल नहीं बल्कि) **बस वो एक ज़ोर की आवाज़ होगी(13) जिससे सब फ़ौरन ही मैदान में आ मौजूद होंगे(14)** (आगे झुटलाने वालों पर मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा फ़िरऔन के साथ बयान किया जाता है ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली हो बस बताते हैं कि) **क्या आप को मूसा** (अलैहिस्सलाम) **का क़िस्सा पहुंचा है(15) जब कि उन को उनके रब ने एक पाक मैदान यानी तुवा** (नाम के मैदान) **में पुकारा(16) कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ कि उसने बहुत सर उठा रक्खा है(17) बस उससे** (जाकर) **कहो कि क्या तुम यह चाहते हो कि तुम सुधर जाओ(18) और** (सुधरने के लिए) **मैं तुम को तुम्हारे रब की तरफ़ रास्ता दिखाऊं तो तुम** (उस हस्ती व उस की शान को सुन कर उससे) **डरने लगो** (और उससे डर कर सुधर जाओ)(19) **तो** (यह सुन कर मूसा अलैहिस्सलाम उसके पास गये और यह ख़बर दी तो उसने पैग़म्बरी की निशानियां मांगी इस पर) **उस को बड़ी निशानी** (पैग़म्बर होने की) **दिखाई** (जैसे असा का मोजिज़ा और दूसरी निशानियां)(20) **फिर** (भी) **उस** (फ़िरऔन) **ने** (उन को) **झुटलाया और** (उनका) **कहना नहीं माना(21) फिर** (मूसा अलैहिस्सलाम से) **अलग होकर** (उनके ख़िलाफ़) **कोशिश करने लगा(22) और** (लोगों को) **इकट्ठा किया फिर** (उनके सामने) **ज़ोरदार बयान किया(23) और कहा मैं** (ही) **तुम्हारा सब से बड़ा रब हूं(24) तो अल्लाह तआला ने उस को आख़रत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा** (दुनिया का अज़ाब तो डूबना है और आख़रत का अज़ाब जलना है)(25) **बेशक इस क़िस्से में ऐसे आदमी के लिए बड़ा सबक़ है जो** (अल्लाह से) **डरे(26)।**

नोटः- मौत के वक़्त फ़रिश्तों का आना और इन्सान की रूह क़ब्ज़ करके आसमान की तरफ़ ले जाना फिर उसके अच्छे या बुरे ठिकाने पर जल्दी से पहुंचा देना और वहां सवाब या अज़ाब तकलीफ़ या आराम के इन्तिज़ाम कर देना इन आयतों से साबित हो गया। यह अज़ाब व सवाब क़ब्र यानी बरज़ख़ में होगा। हश्र का अज़ाब व सवाब इसके बाद है।

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰىهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾ وَ اَغْطَشَ لَيْلَهَا وَ اَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾ وَ
الْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَ مَرْعٰىهَا ﴿٣١﴾ وَ الْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ﴿٣٢﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَ
لِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَ بُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ
يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَ اٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ
نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ اَنْتَ
مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا
عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾

आयत नं0 27 से 46

(आगे क़ियामत को मुश्किल समझने का जवाब है कि ऐ इन्सानो) **भला तुम्हारा** (दूसरी बार) **पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का** (पैदा करना फिर जब उस को पैदा कर दिया तो तुम्हारा पैदा करना क्या मुश्किल है) **अल्लाह ने उस को** (इस तरह से) **बनाया(27)** (कि) **उसकी छत को ऊंचा किया और उस को ठीक बनाया** (कि कहीं उसमें झिरी या जोड़ नहीं)(28) **और उस की रात को अन्धेरी बनाया और उसके दिन को रौशन बनाया** (क्योंकि रात दिन सूरज से जुडे हैं और सूरज आसमान में है)(29) **और उसके बाद ज़मीन को बिछाया(30)** (और बिछाकर) **उसमें उस का पानी और चारा निकाला(31) और पहाड़ों को** (उसपर) **जमा दिया(32) तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फ़ाइदा पहुंचाने के लिए(33) तो जब वो बड़ा हंगामा बरपा होगा** (यानी क़ियामत आएगी)(34) **यानी जिस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा(35) और देखने वालों के सामने दोज़ख़ लाई जाएगी(36)** (उस दिन यह हालत होगी कि) **जिस आदमी ने** (सच्चे दीन से) **बग़ावत की होगी(37) और** (आख़रत का इनकार करके उस पर) **दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द किया होगा(38) तो दोज़ख़ उस का ठिकाना होगा(39) और जो आदमी** (दुनिया में) **अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा होगा** (कि क़ियामत और आख़रत और हिसाब किताब पर उस का पूरा ईमान हो) **और** (अपने) **जी को बुराइयों से रोका होगा** (यानी सही ऐतक़ाद के साथ काम भी भले किये होंगे)(40) **तो जन्नत उस का ठिकाना होगा(41) ये** (काफ़िर) **लोग आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वो कब आएगी(42)** (तो) **उसके बयान करने से आप का क्या वास्ता(43)**

उस (की जानकारी) **की पहुंच सिर्फ़ आप के रब की तरफ़ है**(44) (और) **आप तो सिर्फ़ ऐसे आदमी को ख़बरदार करने वाले हैं जो उससे डरता** (हो और डर कर ईमान लाने वाला) **हो**(45) (और ये लोग जो उसके आने की जल्दी मचा रहे हैं तो समझलें कि) **जिस दिन ये उस को देखेंगे तो** (उनको) **ऐसा लगेगा कि जैसे** (दुनिया में) **सिर्फ़ एक दिन के आख़री हिस्से में या उसके पहले हिस्से में रहे हैं** (यानी दुनिया में एक शाम या एक सुबह से ज़्यादा नहीं रहे)(46)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में कोई आदमी उस वक़्त तक पूरा मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस के मन की चाहतें मेरी तालीम के ताबे न हो जाऐं। (मआ़रिफुल कुरआन)

80-सूरत-अबस

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 42 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

عَبَسَ وَ تَوَلّٰۤی ۙ۝١ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰی ؕ۝٢ وَ مَا یُدْرِیْكَ لَعَلَّهٗ یَزَّكّٰۤی ۙ۝٣ اَوْ یَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰی ؕ۝٤ اَمَّا مَنِ
اسْتَغْنٰی ۙ۝٥ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰی ؕ۝٦ وَ مَا عَلَیْكَ اَلَّا یَزَّكّٰی ؕ۝٧ وَ اَمَّا مَنْ جَآءَكَ یَسْعٰی ۙ۝٨ وَ هُوَ یَخْشٰی ۙ۝٩ فَاَنْتَ عَنْهُ
تَلَهّٰی ۚ۝١٠ كَلَّاۤ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۚ۝١١ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۘ۝١٢ فِیْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ۝١٣ مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۙ۝١٤ بِاَیْدِیْ سَفَرَةٍ ۙ۝١٥
كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ؕ۝١٦ قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَاۤ اَكْفَرَهٗ ؕ۝١٧ مِنْ اَیِّ شَیْءٍ خَلَقَهٗ ؕ۝١٨ مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۙ۝١٩ ثُمَّ السَّبِیْلَ
یَسَّرَهٗ ۙ۝٢٠ ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۙ۝٢١ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ؕ۝٢٢ كَلَّا لَمَّا یَقْضِ مَاۤ اَمَرَهٗ ؕ۝٢٣ فَلْیَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰی
طَعَامِهٖۤ ۙ۝٢٤ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۙ۝٢٥ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ۙ۝٢٦ فَاَنْۢبَتْنَا فِیْهَا حَبًّا ۙ۝٢٧ وَّ عِنَبًا وَّ قَضْبًا ۙ۝٢٨ وَّ
زَیْتُوْنًا وَّ نَخْلًا ۙ۝٢٩ وَّ حَدَآىِٕقَ غُلْبًا ۙ۝٣٠ وَّ فَاكِهَةً وَّ اَبًّا ۙ۝٣١ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَ لِاَنْعَامِكُمْ ؕ۝٣٢ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝٣٣
یَوْمَ یَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِیْهِ ۙ۝٣٤ وَ اُمِّهٖ وَ اَبِیْهِ ۙ۝٣٥ وَ صَاحِبَتِهٖ وَ بَنِیْهِ ؕ۝٣٦ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ یَوْمَىِٕذٍ شَاْنٌ
یُّغْنِیْهِ ؕ۝٣٧ وُجُوْهٌ یَّوْمَىِٕذٍ مُّسْفِرَةٌ ۙ۝٣٨ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۚ۝٣٩ وَ وُجُوْهٌ یَّوْمَىِٕذٍ عَلَیْهَا غَبَرَةٌ ۙ۝٤٠ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ؕ۝٤١
اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۠۝٤٢

आयत नं0 01 से 42

नोटः- इन आयतों के उतरने का क़िस्सा यह है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुशरिकों के कुछ सरदारों को समझा रहे थे कि इतने में हज़रत अ़ब्दुल्लाह नाबीना सहाबी आए और कुछ पूछा आप को यह बात काटना बुरा लगा। आपने उनकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया। और गुस्से से माथे में बल पड़ गये। क्योंकि आप चाहते थे कि अगर ये सरदार समझ जाएं और ईमान ले आएं तो दूसरों को समझाना भी आसान हो जाए। फिर ये आयतें उतरीं...

पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **नाराज़ हुए और मुंह फेर लिया(01) इसलिए कि उनके पास एक अन्धा आया(02)** (आगे तसल्ली के लिए कहा गया) **और आप को क्या पता शायद वो** (नाबीना आप के समझाने से पूरी तरह) **सुधर जाता(03) या** (कम से कम किसी ख़ास बात में) **नसीहत मान लेता तो उस को समझाना** (कुछ न कुछ) **फ़ाइदा पहुंचाता(04)** (तो) **जो आदमी** (दीन से) **बेपरवाई करता है(05) आप उस की तो फ़िक्र में पड़ते हैं(06) जब कि आप पर कोई इल्ज़ाम नहीं वो अगर न सुधरे(07) और जो आदमी आपके पास** (दीन के शौक़ में) **दौड़ता हुआ आता है(08) और वो** (अल्लाह से) **डरता है(09) आप उस से बेपरवाई करते हैं** (यानी जो दीन सीखने का शौक़ रखता है पहले उस पर ध्यान दें)**(10) हरगिज़** (आगे कभी आप ऐसा) **न कीजिए** (क्योंकि) **यह क़ुरआन** (सिर्फ़ एक) **नसीहत की चीज़** (है और आप के ज़िम्मे सिर्फ़ इस को पहुंचा देना) **है(11) तो जिस का जी चाहे इस को मानले** (और जो न माने वो जाने आप का कुछ नुक़सान नहीं)**(12) वो** (क़ुरआन तक़दीर की किताब के) **ऐसे सहीफ़ों में** (लिखा) **है जो** (अल्लाह के यहां) **इज़्ज़त वाले** (यानी पसन्द और मक़्बूल) **हैं(13)** (और) **ऊंचे रूतबे वाले** (और) **पाक हैं** (यानी शैतानों ख़बीसों की वहां पहुंच नहीं)**(14) जो ऐसे लिखने वालों** (यानी फ़रिश्तों) **के हाथों में** (रहते) **हैं(15) कि वो बड़ी इज़्ज़त वाले** (और) **बहुत नेक** (हैं ये सब उस के अल्लाह की तरफ़ से होने की दलील) **हैं(16)** (और इसका इनकार करने वाले आदमी पर) **ख़ुदा की मार हो कि वो कैसा नाशुक्रा है(17)** (वो ज़रा सोचे कि) **अल्लाह तआला ने उस को किस चीज़ से पैदा किया(18)** (आगे जवाब है कि) **मनी की बून्द से** (पैदा किया और बहुत से बदलाव के बाद) **उसकी सूरत बनाई फिर उस** (के बदन के हिस्सों) **को** (ख़ास) **अन्दाज़ से बनाया(19) फिर उस** (के निकलने) **का रास्ता आसान कर दिया** (वर्ना यह आसान काम न था तो यह अल्लाह की क़ुदरत की साफ़ दलील है)**(20) फिर** (उम्र पूरी होने के बाद) **उसको मौत दी फिर उसको क़ब्र में पहुंचा दिया** (चाहे पहले ही मिट्टी में रक्खा जाए या कुछ दिनों के बाद मिट्टी में मिल जाए)**(21) फिर जब अल्लाह चाहेगा उस को दोबारा ज़िन्दा कर देगा(22)** (मगर इन्सान ने इन बातों का) **हरगिज़** (शुक्र अदा) **नहीं** (किया और) **उसको जो हुक्म किया था उसको पूरा नहीं किया(23) इसलिए इन्सान को चाहिए कि** (अपने पैदा होने की शुरू की हालत और रहन सहन को देख कर सोचे जैसा कि) **अपने खाने की तरफ़ देखे(24) कि हमने ऊपर से बहुत सा पानी बरसाया(25) फिर** (पौधों की कोंपल निकालने के लिए) **अजीब तरह ज़मीन को फाड़ा(26) फिर हमने उसमें अनाज पैदा किया(27) और अंगूर और सब्ज़ी(28) और ज़ैतून और खजूर(29) और घने बाग़(30) और**

फल और चारा(31) (यानी सब चीज़ें पैदा कीं) **तुम्हारे लिए और** (कुछ चीज़ें) **तुम्हारे जानवरों के फ़ाइदे के लिए हैं**(32) (अब तो ये लोग नाशुक्री और कुफ़्र करते हैं) **फिर जिस वक़्त कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा** (यानी क़ियामत आएगी उस दिन सारी नाशुक्री का मज़ा पता चल जाएगा)(33) **जिस दिन** (ऐसा) **आदमी** (जिस का ऊपर बयान हुआ) **भागेगा अपने भाई से**(34) **और अपनी मां से और अपने बाप से**(35) **और अपनी बीवी से और अपने बेटों से**(36) (कोई किसी की हमदर्दी नहीं करेगा जिस की वजह यह है कि) **उनमें हर आदमी को** (अपनी ही) **ऐसी फ़िक्र होगी जो उसको दूसरी तरफ़ ध्यान न करने देगी**(37) (लेकिन) **बहुत से चेहरे उस दिन** (ईमान की वजह से) **चमकते दमकते होंगे**(38) (और ख़ुशी से) **हंसते हुए और खिले होंगे**(39) **और बहुत से चेहरों पर उस दिन** (कुफ़्र की वजह से) **सियाही होगी**(40) (और सियाही होने के साथ) **उन पर** (ग़म का) **मलाल छाया होगा**(41) **ये ही लोग काफ़िर व बदकार हैं** (काफ़िर से इशारा अ़क़ीदे की ख़राबी की तरफ़ और फ़ाजिर (बदकार) से बुरे कामों की तरफ़ है)(42)।

नोटः- ऊपर आयतों से मालूम हुआ कि मुसलमानों की तालीम और सुधार की कोशिशें ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम में दाख़िल करने की फ़िक्र से ज़्यादा ज़रूरी हैं। इसमें उन लोगों के लिए भी नसीहत है जो ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम से मानूस करने के लिए ऐसे काम कर बैठते हैं जिससे मुसलमानों के दिल में शक या शिकायतें पैदा हो जाती हैं। उन को इस क़ुरआनी हिदायत के हिसाब से मुसलमानों की हिफ़ाज़त और सुधार का ध्यान पहले करना चाहिये।

81-सूरत-तकवीर

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 29 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝۱ وَ اِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ۝۲ وَ اِذَا الْجِبَالُ سُیِّرَتْ ۝۳ وَ اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝۴ وَ اِذَا
الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝۵ وَ اِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝۶ وَ اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝۷ وَ اِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُىِٕلَتْ ۝۸ بِاَیِّ ذَنْۢبٍ
قُتِلَتْ ۝۹ وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝۱۰ وَ اِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝۱۱ وَ اِذَا الْجَحِیْمُ سُعِّرَتْ ۝۱۲ وَ اِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ۝۱۳
عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّاۤ اَحْضَرَتْ ۝۱۴ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝۱۵ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝۱۶ وَ الَّیْلِ اِذَا عَسْعَسَ ۝۱۷ وَ الصُّبْحِ اِذَا
تَنَفَّسَ ۝۱۸ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِیْمٍ ۝۱۹ ذِیْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَكِیْنٍ ۝۲۰ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِیْنٍ ۝۲۱ وَ مَا
صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ۝۲۲ وَ لَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِیْنِ ۝۲۳ وَ مَا هُوَ عَلَى الْغَیْبِ بِضَنِیْنٍ ۝۲۴ وَ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَیْطٰنٍ
رَّجِیْمٍ ۝۲۵ فَاَیْنَ تَذْهَبُوْنَ ۝۲۶ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ۝۲۷ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ یَّسْتَقِیْمَ ۝۲۸ وَ مَا تَشَآءُوْنَ
اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۲۹

आयत नं0 01 से 29

जब सूरज में रौशनी न रहेगी(01) और जब सितारे टूट कर गिर जाएंगे(02) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे(03) और जब दस महीने की गाभन ऊंटनियां छुटी फिरेंगी (ऊंटनी उस वक़्त अरब वालों में बड़ी दौलत समझी जाती थी यानी ऐसी हालत होगी कि उस की भी परवाह न रहेगी)**(04) और जब** (घबराहट के मारे) **सब जंगली जानवर इकट्ठे हो** (जाएंगे यानी एक दूसरे की दुशमनी भूल) **जाएंगे(05) और जब समन्दर भड़काए जाएंगे** (ये पहली 6 बातें तो पहले सूर फूंकने के वक़्त होंगी जब दुनिया आबाद होगी)**(06) और** (अगली 6 बातें दूसरे सूर फूंकने के बाद होंगी जिन का बयान यह है कि) **जब एक-एक क़िस्म के लोग इकट्ठे किये जाएंगे** (काफ़िर अलग मुसलमान अलग, फिर उनमें एक-एक तरीक़े के अलग-अलग)**(07) और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा**

जाएगा(08) **कि उसे किस जुर्म में क़त्ल किया गया था** (यानी बेटियों पर होने वाले ज़ुल्म व सितम पर फ़ैसला होगा)(09) **और जब आमाल नामे खोल दिये जाएंगे** (ताकि सब अपने-अपने किये काम देख लें)(10) **और जब आसमान खुल जाएगा** (और उसके खुलने से आसमान के ऊपर की चीज़ें दिखाई देने लगेंगी और फ़रिशते उतरेंगे)(11) **और जब दोज़ख़** (और ज़्यादा) **दहकाई जाएगी**(12) **और जब जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी**(13) (तो उस वक़्त) **हर आदमी उन कामों को जान लेगा जो लेकर आया है**(14) **तो मैं क़सम खाता हूं उन सितारों की जो** (सीधे चलते-चलते) **पीछे को हटने लगते हैं**(15) (और फिर पीछे ही को) **चलते रहते हैं** (और कभी पीछे चलते- चलते अपनी जगह) **जा छुपते** (हैं ऐसे पांच सितारे) **हैं**(16) **और क़सम है रात की जब वो जाने लगे**(17) **और क़सम है सुबह की जब वो आने लगे**(18) **कि यह क़ुरआन** (अल्लाह का) **कलाम है एक इज़्ज़त वाले फ़रिशते** (यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम) **का लाया हुआ**(19) **जो ताक़त वाला है** (और) **आसमान के मालिक के यहां रुतबे वाला है**(20) (और) **वहां** (यानी आसमानों में) **उसका कहना माना जाता है** (यानी फ़रिशते उस का कहना मानते हैं, और) **अमानतदार** (है कि वही को ठीक-ठीक पहुंचा देता है तो वही लाने वाला तो ऐसा) **है**(21) **और** (जिन पर वही उतरी उन के बारे में बयान है कि) **ये तुम्हारे साथ के रहने वाले** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनके बारे में तुम अच्छी तरह जानते हो) **कोई दीवाने नहीं हैं** (जैसा कि पैग़म्बरी का इनकार करने वाले कहते थे)(22) **और इन्होंने उस फ़रिशते को** (असली सूरत में आसमान के) **साफ़ किनारे पर देखा भी** (है यानी ऊंचे किनारे पर कि जहां साफ़ नज़र आता) **है**(23) **और ये पैग़म्बर ग़ैब की बातों** (यानी वही की बातों) **पर कंजूसी करने वाले भी नहीं** (कि पूरी बात न बताएं या बताने की कुछ फ़ीस लें)(24) **और यह क़ुरआन किसी शैतान मरदूद की कही हुई बात नहीं** (है बस यह अल्लाह का कलाम) **है**(25) **तो तुम लोग** (इस बारे में) **किधर को चले जा रहे** (हो कि पैग़म्बरी का इनकार कर रहे) **हो**(26) **बस यह** (क़ुरआन) **तो** (सभी) **दुनिया जहान वालों के लिए एक बड़ा नसीहत नामा है**(27) (और ख़ास कर) **ऐसे आदमी के लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे** (आम लोगों के वास्ते हिदायत इसलिए कि उन को सीधा रास्ता बता दिया और मोमिनो दीनदारों के वास्ते इस लिए कि उन को उनके ठिकाने पर पहुंचा दिया)(28) **और** (कुछ लोगों के नसीहत न मानने से इसके नसीहत नामा होने में शक न किया जाए क्योंकि) **तुम अल्लाह के बिना चाहे कुछ नहीं चाह सकते हो जो सारी दुनिया का रब** (है यानी असल में तो नसीहत है लेकिन इसका असर अल्लाह की मर्ज़ी पर है जो कुछ लोगों पर तो किसी ख़ास वजह से नहीं होता और कुछ लोगों पर होता) **है**(29)।

नोटः- पहले ज़माने में अरब में यह रस्म थी कि लड़की पैदा होने को शर्म की बात समझते थे और उस को ज़िन्दा ही ज़मीन में गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने इस बुरी रस्म को मिटाया।

मसअलाः- बच्चों को ज़िन्दा गाड़ देना या क़त्ल कर देना सख़्त और बड़ा गुनाह है और ज़ुल्म है। और चार महीने के बाद किसी हमल (गर्भ) को गिरा देना भी इसी हुक्म में है क्योंकि चौथे महीने में हमल में रूह पड़ जाती है और वो ज़िन्दा इन्सान के हुक्म में होता है। और चार महीने से पहले हमल का गिराना भी बिना बहुत मजबूरी के हराम है मगर चार महीने के बाद गिराने से गुनाह कम है। ऐसे ही फ़ैमिली प्लानिंग के लिए ऐसा तरीक़ा अपनाना जिससे सदा के लिए बच्चा होने का सिलसिला बन्द हो जाए इसकी भी शरीअत से इजाज़त नहीं है।

(मआ़रिफुल क़ुरआन)

82-सूरत-इनफ़ितार

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 19 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۙ﴿١﴾ وَ إِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۙ﴿٢﴾ وَ إِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۙ﴿٣﴾ وَ إِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۙ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ
مَّا قَدَّمَتْ وَ اَخَّرَتْ ؕ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ﴿٧﴾ فِيْۤ اَيِّ
صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ؕ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۙ﴿٩﴾ وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۙ﴿١٠﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۙ﴿١١﴾ يَعْلَمُوْنَ
مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۚ﴿١٣﴾ وَ اِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ۚۖ﴿١٤﴾ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾ وَ مَا هُمْ عَنْهَا
بِغَآئِبِيْنَ ؕ﴿١٦﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۙ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ
شَيْـًٔا ؕ وَ الْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

आयत नं0 01 से 19

जब आसमान फट जाएगा(01) और जब सितारे (टूट कर) **झड़ जाऐंगे(02) और जब सब समन्दर** (खारा और मीठा) **बह** (जाएंगे और बह कर एक हो) **जाएंगे** (ये तीनों बातें पहले सूर फूंकने के वक़्त की हैं)(03) **और** (दूसरे सूर फूंकने की बातें आगे हैं यानी) **जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएंगी** (यानी उन में के मुर्दे निकल खड़ें होंगे)**(04) हर आदमी** (उस वक़्त) **अपने अगले पिछले** (अच्छे बुरे) **कामों को जान लेगा(05) ऐ इन्सान तुझ को किस चीज़ ने अपने** (ऐसे) **महरबान रब से भूल में डाल रक्खा है(06) जिसने तुझ को** (इन्सान) **बनाया फिर तेरे बदन के हिस्सों को ठीक किया तुझ को ठीक बनाया(07)** (और) **जिस सूरत में चाहा तुझ को ढाल दिया(08) हरगिज़** (घमन्ड) **नहीं** (करना चाहिए मगर तुम घमन्ड से बाज़ नहीं आते) **बल्कि** (घमन्ड में इतने बढ़ गये हो कि) **तुम** (ख़ुद) **इन्साफ़ होने ही को झुटलाते हो** (जिससे यह धोका और घमन्ड दूर हो सकता था)(09) **और** (यह तुम्हारा झुटलाना ख़ाली नहीं जाएगा बल्कि हमारी तरफ़ से) **तुम पर तुम्हारे सब कामों की देख रेख करने वाले** (फ़रिशते) **तैनात हैं(10)** (जो हमारे यहां) **इज़्ज़त वाले** (और तुम्हारे कामों के)

लिखने वाले हैं(11) **जो तुम्हारे सब कामों को जानते** (और लिखते) **हैं** (बस क़ियामत में तुम्हारे सब काम पेश होंगे और सब का बदला मिलेगा)(12) **नेक लोग बेशक आराम में होंगे**(13) **और बुरे लोग** (यानी काफ़िर) **बेशक दोज़ख़ में होंगे**(14) (और) **फ़ैसले के दिन उस में जाएंगे**(15) **और** (फिर) **उससे बाहर नहीं होंगे** (बल्कि उसमें सदा रहेंगे)(16) **और आप को कुछ पता है कि वो फ़ैसले का दिन कैसा है**(17) (और हम) **फिर** (दोबारा कहते हैं कि) **आप को कुछ पता है कि वो फ़ैसले का दिन कैसा है**(18) (आगे जवाब है कि) **वो ऐसा दिन है जिसमें किसी आदमी का किसी आदमी के नफ़े के लिए कुछ बस नहीं चलेगा** (यानी अपनी मर्ज़ी से सिफ़ारिश न कर सकेगा बल्कि सिफ़ारिश के लिए इजाज़त की ज़रूरत होगी) **और कुल हुकूमत उस दिन अल्लाह की होगी**(19)।

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि कितने ही इन्सान ऐसे हैं कि अल्लाह तआला ने उनके ऐबों और गुनाहों पर पर्दा डाला हुआ है उनको रूसवा नहीं किया वो इस महरबानी व करम से और ज़्यादा ग़रूर और धोके में पड़ गये।

83-सूरत-मुतफ़्फ़िफ़ीन

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 36 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ۖ﴿۲﴾ وَ اِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّ زَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ؕ﴿۳﴾ اَلَا
يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ﴿۴﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ﴿۵﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿۶﴾ كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ
الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ؕ﴿۷﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ؕ﴿۸﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ؕ﴿۹﴾ وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيْنَ
يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۱۱﴾ وَ مَا يُكَذِّبُ بِهٖۤ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ۙ﴿۱۲﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ؕ﴿۱۳﴾ كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ كَلَّاۤ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ؕ﴿۱۵﴾
ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ؕ﴿۱۶﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ؕ﴿۱۷﴾ كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ
عِلِّيِّيْنَ ؕ﴿۱۸﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ؕ﴿۱۹﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۙ﴿۲۰﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ﴿۲۱﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۙ﴿۲۲﴾ عَلَى
الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ۙ﴿۲۳﴾ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۚ﴿۲۴﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ۙ﴿۲۵﴾ خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَ
فِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ؕ﴿۲۶﴾ وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ۙ﴿۲۷﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ﴿۲۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ
اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ۖ﴿۲۹﴾ وَ اِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ۖ﴿۳۰﴾ وَ اِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰۤى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا
فَكِهِيْنَ ۖ﴿۳۱﴾ وَ اِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْۤا اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ۙ﴿۳۲﴾ وَ مَاۤ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ؕ﴿۳۳﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ۙ﴿۳۴﴾ عَلَى الْاَرَآئِكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ؕ﴿۳۵﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۳۶﴾

आयत नं0 01 से 36

बड़ी ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की(01) (जिन का हाल यह है) **कि जब लोगों से** (अपना हक़) **नाप कर लेते हैं तो पूरा लेते हैं(02) और जब उन को नाप कर या तौल कर देते हैं तो घटा कर देते** (हैं लोगों से अपना हक़ पूरा लेना बुरा नहीं बल्कि दूसरों को कम देना बुरा है ख़ास कर जब कि अपना हक़ पूरा लेते) **हैं(03)** (आगे ऐसा करने वालों को डराया

गया है कि) **क्या उन लोगों को इस का यक़ीन नहीं है कि वो ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे(04) एक बड़े भारी दिन** (यानी क़ियामत) **में(05) जिस दिन सभी आदमी अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े होंगे** (यानी उस दिन से डरना चाहिये और अपनी ग़लती से तौबा करना चाहिये)(06) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (जैसा कि ये लोग फ़ैसले के दिन का इनकार करते हैं बल्कि फ़ैसला ज़रूर होगा और) **बदकार** (यानी काफ़िर) **लोगों का आमाल नामा सिज्जीन में रहेगा** (वो एक जगह सातवीं ज़मीन में है जो काफ़िरों की रूहों का ठिकाना है)(07) **और** (आगे डराने के लिए सवाल है कि) **आप को कुछ पता है कि सिज्जीन** (में रक्खा हुआ आमाल नामा) **क्या चीज़ है(08) वो एक लिखी हुई** (और हिफ़ाज़त से रक्खी हुई) **किताब है(09)** (आगे कामों के बदले का बयान है कि) **उस दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी(10) जो कि फ़ैसले के दिन को झुटलाते हैं(11) और उस** (फ़ैसले के दिन) **को तो वो आदमी ही झुटलाता है जो** (बन्दगी की) **हद से निकलने वाला** (और) **मुजरिम हो(12)** (और) **जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ये बेसनद बातें पहलों से कही चली आती हैं(13)** (और ये लोग फ़ैसले के दिन की ख़बर को ग़लत समझ रहे हैं) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं बल्कि** (उनके झुटलाने की वजह यह है कि) **उनके दिलों पर उनके बुरे कामों का ज़ंग बैठ गया है** (इसलिए हक़ बात को नहीं मानते)(14) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (जैसा ये लोग समझ रहे हैं) **ये लोग उस दिन** (एक तो) **अपने रब** (का दीदार देखने) **से रोक दिये जाएंगे(15) फिर** (ये ही नहीं बल्कि) **ये दोज़ख़ में जाएंगे(16) फिर** (इनसे) **कहा जाएगा कि यह वो चीज़ है जिस को तुम झुटलाया करते थे(17)** (और ये जो मोमिनों के नेक बदले और सवाब का इनकार करते हैं) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (बल्कि उनका सवाब ज़रूर मिलने वाला है कि) **नेक लोगों का आमाल नामा इल्लीयीन में रहेगा** (वो एक जगह सातवें आसमान पर है जो मोमिनों की रूहों का ठिकाना है)(18) **और** (आगे पूछते हैं कि) **आप को कुछ पता है कि इल्लीयीन** (में रक्खा हुआ आमाल नामा) **क्या चीज़ है(19) वो एक लिखी हुई किताब है(20) जिसको अल्लाह के नज़दीकी फ़रिश्ते** (शौक़ से) **देखते हैं** (और यह मोमिन की बड़ी इ़ज़्ज़त है)(21) **नेक लोग बेशक बड़े आराम में होंगे(22) मसहरियों पर** (बैठे जन्नत की अजीब चीज़ें) **देखते होंगे(23)** (और) **आप उन के चेहरों पर आराम की ताज़गी देखोगे(24) और उन को पीने के लिए ख़ालिस शराब मुहर लगी हुई मिलेगी(25) जिस पर मुश्क की मुहर होगी, और तमन्ना करने वालों को ऐसी चीज़ की तमन्ना करनी** (चाहिए यानी नेक काम करके जन्नत की ऐसी नेमतें पाने की कोशिश करनी) **चाहिए(26) और उस शराब में मिलावट तसनीम के पानी से होगी(27)**

(और तसनीम) **एक ऐसी नहर है जिससे अल्लाह के नेक बन्दे पानी पियेंगे**(28) (और) **जो लोग मुजरिम** (यानी काफ़िर) **थे वो ईमान वालों को** (दुनिया में) **हंसा करते थे**(29) **और** (ईमान वाले) **जब इन काफ़िरों के सामने से होकर निकलते थे तो वो आपस में आँखों से इशारे करते** (थे मतलब यह कि उन का मज़ाक़ उड़ाते) **थे**(30) **और जब अपने घरों को जाते तो वहां भी उनकी बात करके दिल्लगी व मज़ाक़ करते थे**(31) **और जब इन मोमिनों को देखते तो यह कहा करते थे कि ये लोग सचमुच ग़लती पर हैं** (क्योंकि काफ़िर मुसलमानों को ग़लती पर समझते थे)(32) **हालांकि ये काफ़िर उन मुसलमानों पर चोकीदार बनाकर नहीं भेजे गये थे** (यानी उनको अपनी फ़िक्र करनी चाहिए इनके पीछे क्यों पड़ गये बस उन से दो ग़लती हुईं एक तो सच्चे दीन वालों का मज़ाक़ उड़ाना दूसरे अपने सुधार से बेफ़िक्री)(33) **इसलिए आज** (यानी क़ियामत के दिन) **ईमान वाले काफ़िरों पर हंसते होंगे**(34) **मसहरियों पर बैठे उन का हाल देख रहे होंगे** (कुछ खिड़कियां ऐसी होंगी जिन से जन्नती लोग दोज़ख़ी लोगों को देख सकेंगे बस उन का बुरा हाल देख कर बदले में उन पर हसेंगे)(35) **सचमुच काफ़िरों को उनके किये का ख़ूब बदला मिला**(36)

नोटः- ततफ़ीफ़ यानी दूसरे के हक़ में कमी करना सिर्फ़ नाप तौल ही नहीं बल्कि अल्लाह और बन्दों के हक़ों से जुड़ी हर चीज़ के साथ है जहां दूसरे के हक़ में कमी की जाए। यहां तक कि नौकर का अपने काम में कमी करना भी हक़ में कमी करना है। ऐसे ही नमाज़ में रूकू सजदे सही न करना अल्लाह के हक़ की अदाएगी में कमी करना है।

हदीसः-हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पांच गुनाहों की (दुनिया में) सज़ा पांच चीज़ें हैं....

(1) जो आदमी एहद तोड़ता है अल्लाह तआला उस पर उसके दुशमन को हावी कर देता है।

(2) जो क़ौम अल्लाह के क़ानून को छोड़ कर दूसरे क़ानूनों पर फ़ैसले करते हैं उनमें फ़क़ीरी मुहताजी आम हो जाती है।

(3) जिस क़ौम में बेशर्मी और ज़िना आम हो जाए उस पर अल्लाह तआ़ला ताऊन (और दूसरी वबाई बीमारियां) भेज देता है।

(4) और जो लोग नाप तौल में कमी करने लगें अल्लाह तआ़ला उन को क़हत (अकाल) में पकड़ता है।

(5) जो लोग ज़कात अदा नहीं करते अल्लाह तआला उनसे बारिश को रोक देता है। (क़ुरतबी)

84-सूरत-इन्शिक़ाक़

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 25 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ﴿۱﴾ وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ۙ﴿۲﴾ وَ اِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ۙ﴿۳﴾ وَ اَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَ تَخَلَّتْ ۙ﴿۴﴾ وَ اَذِنَتْ
لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ؕ﴿۵﴾ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۚ﴿۶﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ﴿۷﴾
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ﴿۸﴾ وَّ يَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ﴿۹﴾ وَ اَمَّا مَنْ اُوْتِىَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۙ﴿۱۰﴾ فَسَوْفَ
يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ يَصْلٰى سَعِيْرًا ؕ﴿۱۲﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِىْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ﴿۱۳﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۛۚ﴿۱۴﴾ بَلٰۤى ۛۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ
بِهٖ بَصِيْرًا ؕ﴿۱۵﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۙ﴿۱۶﴾ وَ الَّيْلِ وَ مَا وَسَقَ ۙ﴿۱۷﴾ وَ الْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۙ﴿۱۸﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ؕ﴿۱۹﴾ فَمَا
لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَ اِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ؕ﴿۲۱﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ۖ﴿۲۲﴾ وَ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
يُوْعُوْنَ ۖ﴿۲۳﴾ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۲۴﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿۲۵﴾

आयत नं0 01 से 25

जब (दूसरे सूर फूंकने के वक़्त) **आसमान फट जाएगा** (ताकि उससे फ़रिशतों की फ़ौज उतरे)(01) **और वो अपने रब का हुक्म सुन लेगा** (और मान लेगा) **और वो** (आसमान) **इसी लाइक़ है** (कि हुक्म को माने)(02) **और जब ज़मीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी** (जिस तरह रबड़ खींची जाती है ताकि सब लोग उसमें समा जाएं)(03) **और** (वो ज़मीन) **अपने अन्दर की चीज़ों** (यानी मुर्दों) **को बाहर उगल देगी और** (सब मुर्दों से) **ख़ाली हो जाएगी(04) और** (वो ज़मीन) **अपने रब का हुक्म सुन** (कर मान) **लेगी और वो इसी लाइक़ है** (कि हुक्म को माने)(05) **ऐ इन्सान तू अपने रब के पास पहुंचने तक** (यानी मरने के वक़्त तक) **काम में कोशिश कर रहा है** (यानी कोई नेक काम में लगा हुआ है कोई बुरे काम में) **फिर** (क़ियामत में) **उस** (काम के बदले) **से जा मिलेगा(06) तो** (उस दिन) **जिस आदमी का आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में मिलेगा(07) उससे तो आसान हिसाब लिया जाएगा(08) और वो** (उसके बाद) **अपने लोगों के**

पास ख़ुश-ख़ुश आएगा (और आसान हिसाब के अलग-अलग दर्जे हैं एक यह कि बिल्कुल सज़ा न हो दूसरा यह कि सज़ा तो हो मगर सदा के लिए न हो)(09) **और जिस आदमी का आमाल नामा** (उसके बाएं हाथ में) **उसकी पीठ पीछे से मिलेगा** (यानी काफ़िर आदमी)(10) **तो वो मौत को पुकारेगा** (जैसे मुसीबत में ऐसा करते हैं)(11) **और दोज़ख़ में जाएगा**(12) **यह आदमी** (दुनिया में) **अपने लोगों में ख़ुश-ख़ुश रहा करता था** (यहां तक कि ख़ुशी में मगन होकर आख़िरत को झुटलाने लगा)(13) **उसने समझ रक्खा था कि उस को** (अल्लाह की तरफ़) **लौटना नहीं है**(14) (और लौटना) **क्यों न होता उस का रब उस को ख़ूब देखता** (था और किये कामों का बदला मिलना था इसलिए क़ियामत का आना ज़रूरी) **था**(15) **तो मैं क़सम खाकर कहता हूं शाम की लाली की**(16) **और रात की और उन चीज़ों की जिन को रात समेट** (कर जमा कर) **लेती है** (यानी वो सब जानदार जो रात को आराम करने के लिए अपने अपने ठिकानों पर आ जाते हैं)(17) **और चान्द की जब वो पूरा हो जाए**(18) (इन सब चीज़ों की क़सम खाकर कहता हूं) **कि तुम लोगों को ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुंचना है** (और वो हालतें मौत फिर क़ब्र फिर क़ियामत की हालतें हैं)(19) **तो इन लोगों को क्या हुआ कि ईमान नहीं लाते**(20) **और** (हटधर्मी की यह हालत है कि) **जब उन के सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो** (उस वक़्त भी अल्लाह की तरफ़) **नहीं झुकते**(21) **बल्कि** (बजाए झुकने के) **ये काफ़िर** (और उल्टा) **झुटलाते हैं**(22) **और अल्लाह को सब पता है जो कुछ ये लोग** (बुरे काम) **जमा कर रहे हैं**(23) **इसलिए** (उन कुफ़्र के कामों की सज़ा में) **आप इन को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर देदीजिए**(24) **लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनके लिए** (आख़िरत में) **ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म नहीं होगा**(25)

मसअलाः- इस सूरत की आयत न० 21 की तिलावत करने व सुनने वाले पर सजदाए तिलावत वाजिब हो जाता है।

नोटः- बुख़ारी की एक हदीस में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन "जिस आदमी से उसके आमाल का पूरा-पूरा हिसाब लिया जाए वो अज़ाब से न बचेगा"। और जिसको आसान हिसाब कहा गया वो असल में पूरा हिसाब नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाह के सामने पेशी है। इससे मालूम हुआ कि मोमिनों के आमाल भी अल्लाह के सामने पेश तो होंगे मगर उनके ईमान की बरकत से उनके हर-हर अमल पर पकड़ न होगी। इसी का नाम आसान हिसाब है।

85-सूरत-बुरूज

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 22 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝١ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝٢ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝٣ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝٤ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝٥
اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝٦ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝٧ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝١٠ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝١١ اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝١٢
اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝١٣ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٦ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ
الْجُنُوْدِ ۝١٧ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۝١٨ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۝١٩ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۝٢٠ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ
مَّجِيْدٌ ۝٢١ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝٢٢

आयत नं0 01 से 22

नोटः- इस सूरत के बारे में एक क़िस्सा लिखा है कि एक ज़ालिम बादशाह ने मुसलमानों को इस्लाम से फेरने के लिए कोशिशें कीं और मजबूर करना चाहा और ऐलान किया कि जो आदमी इस्लाम से न फिरेगा उस को आग में जला दिया जाएगा। और इस काम के लिए ख़न्दक़ें (खाइयां) खोद कर उसमें आग दहकाई। और एक एक करके मुसलमानों को उसमें डाल दिया जाता था ताकि उस को जलता देख कर दूसरे डर जाएं और दीन से फिर जाएं। मगर कोई भी नहीं बदला। इस तरह वहां सब मुसलमान आग में जला कर शहीद कर दिये गये। फिर उस पर अल्लाह का अज़ाब आया और सारे ज़ालिम हलाक कर दिये गये।

क़सम है बुर्जों वाले आसमान की (बुर्जों से मुराद बड़े-बड़े सितारे हैं)(01) **और क़सम है उस दिन की जिस** (के आने) **का वादा किया गया है** (यानी क़ियामत के दिन की)(02) **और क़सम है हाज़िर होने वाले दिन** (यानी जुमा के दिन) **की और क़सम है उस दिन की जिस में लोगों की हाज़िरी होती** (है और वो अर्फ़े का दिन) **है**(03) (आगे क़सम का जवाब है कि) **अल्लाह की मार है उन ख़न्दक़ों वालों पर**(04) **यानी बहुत से ईंधन की आग वालों पर**(05) **जिस वक़्त वो लोग उस आग के पास बैठे हुए थे**(06) **और वो जो कुछ मुसलमानो के साथ ज़ुल्म व सितम कर रहे थे उस को** (बेरहमी से) **देख रहे थे** (इस में मुसलमानों को तसल्ली दी गई कि जो काफ़िर तुम्हें सता रहे हैं उन को भी अज़ाब हेगा चाहे दुनिया में भी वर्ना आख़रत में तो ज़रूर)(07) **और उन काफ़िरों ने उन मुसलमानों में कोई बुराई नहीं देखी थी सिवाए इसके कि वो** (उस) **अल्लाह पर ईमान लाए थे जो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **और तारीफ़ों वाला है**(08) (और) **ऐसा कि आसमानों और ज़मीन में जिस की हुकूमत** (है सिर्फ़ ईमान लाने पर यह ज़ुल्म किया जब कि ईमान लाना कोई ख़ता नहीं) **है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा** (है तो इस ज़ुल्म का अन्जाम भुगतना ज़रूरी) **है**(09) **यक़ीन जानो जिन्होंने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को सताया और फिर तौबा नहीं की तो उन के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है और** (वहां ख़ासकर) **उनके लिए जलने का अज़ाब है** (और दूसरे अज़ाब भी हैं)(10) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन के लिए** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ है जिन के नीचे नहरें बहती होंगी,** (और) **यह बड़ी कामयाबी है**(11) **बेशक आप के रब की पकड़ बड़ी सख़्त है** (बस काफ़िरों को सख़्त सज़ा होना कोई हैरानी की बात नहीं)(12) **वो ही पहली बार भी पैदा करता है और दोबारा** (क़ियामत में) **भी पैदा करेगा**(13) (और आगे मोमिनों के लिए वादा है कि) **वो ही बड़ा मुआफ़ करने वाला** (और) **बहुत मुहब्बत करने वाला है**(14) (और) **अर्श का मालिक** (और) **बड़ी शान वाला है** (बस ईमान वालों के गुनाह मुआफ़ कर देगा और उन को अपना प्यारा बना लेगा)(15) **वो जो चाहे सब कुछ कर गुज़रता है**(16) (और आगे कुछ काफ़िरों का हाल व अन्जाम बयान होता है कि) **क्या आप को उन फ़ौजों का क़िस्सा पता है**(17) **यानी फ़िरऔन** (और उसके लोगों) **और समूद** (की क़ौम) **का** (कि किस तरह कुफ़्र किया और क्यों कर अज़ाब में पकड़े गये इससे मोमिनों को तसल्ली हासिल करना और काफ़िरों को डरना चाहिये मगर फिर भी काफ़िर अज़ाब से नहीं डरते)(18) **बल्कि ये काफ़िर** (ख़ुद क़ुरआन ही को) **झुटलाने में लगे हैं**(19) **और** (अन्जाम कार उस की सज़ा भुगतेंगे और) **अल्लाह** (की पकड़ से बच नहीं सकते क्योंकि उस) **ने उन को घेरे**

में लिया हुआ है(20) (और कुरआन ऐसी चीज़ नहीं जिसे झुटलाया जा सके) **बल्कि वो एक बड़ी शान की किताब है**(21) **जो तक़दीर की किताब में** (लिखा हुआ है जिसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता वहां से बहुत हिफ़ाज़त के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचाया जाता है, ऐसी सूरत में कुरआन को झुटलाना जहालत है जो सज़ा का हक़दार बना देता) **है**(22)।

नोटः- लिखा है कि जिन मोमिनों को उन ज़ालिमों ने आग की ख़न्दक़ों में डाला था अल्लाह तआला ने उन को तकलीफ़ से इस तरह बचा दिया कि आग के छूने से पहले ही उन के बदन की रूहें क़ब्ज़ कर ली गईं आग में मुर्दा जिस्म गिरे। फिर आग इतनी भड़क उठी कि ख़न्दक की हदों से निकल कर शहर में फैल गई और उन सब लोगों को उस आग ने जला दिया जो मुसलमानों के जलने का तमाशा देख रहे थे। (मज़हरी)

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की इस महरबानी और करम को देखो कि उन लोगों ने अल्लाह के वलियों को ज़िन्दा जलाकर उन का तमाशा देखा और अल्लाह तआ़ला इस पर भी उन को तौबा और मग़फ़िरत की तरफ़ दावत दे रहा है। (इब्ने कसीर)

86-सूरत-तारिक़

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 17 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾ النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾
فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾ يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى
رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ
ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾ اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾
فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾

आयत नं0 01 से 17

क़सम है आसमान की और उस चीज़ की जो रात को आने वाली है(01) और आप को कुछ पता है वो रात को आने वाली चीज़ क्या है(02) वो एक चमकदार सितारा है(03) (आगे क़सम का जवाब है कि) **कोई आदमी ऐसा नहीं जिस पर कोई कामों की देख रेख करने वाला** (फ़रिशता) **तैनात न हो** (मतलब यह कि इन किये कामों पर हिसाब होगा)**(04) तो इन्सान को** (क़ियामत की फ़िक्र करनी चाहिए अगर उस के आने में शक हो तो उस को) **देखना चाहिए कि उसे किस चीज़ से पैदा किया गया है(05) उसे एक उछलते पानी** (यानी मनी) **से पैदा किया गया है(06) जो पीठ और सीने के बीच** (यानी पूरे बदन के बीच) **से निकलता** (है तो जो एक बून्द से पूरा इन्सान बना देता है तो उस को दोबारा पैदा कर देना क्या मुश्किल) **है(07)** (तो इससे साबित हुआ कि) **वो उस को दोबारा पैदा करने की क़ुदरत रखता है(08)** (और यह दोबारा पैदा करना उस दिन होगा) **जिस दिन सब की पोल खुल जाएगी** (यानी सब छुपी बातें खुल कर सामने आ जाएंगी दुनिया की तरह बुराई छुपाई न जा सकेगी)**(09) फिर वो इन्सान न तो ख़ुद कुछ बचाव कर सकेगा और न उस का कोई मददगार होगा** (कि अज़ाब को उससे दूर कर दे)**(10) क़सम है**

आसमान की जिससे मूसलाधार बारिश होती है(11) और ज़मीन की जो (कोंपल निकलने के वक़्त) **फट जाती है(12) कि यह क़ुरआन सच और झूट में एक फ़ैसला कर देने वाला कलाम है(13) और यह कोई मज़ाक़ की चीज़ नहीं है(14) ये लोग** (सच्चे दीन की मुख़ालफ़त के लिए) **तरह-तरह की कोशिशें कर रहे हैं(15) और मैं भी** (इन की नाकामी और सज़ा के लिए) **तरह-तरह की कोशिशें कर रहा हूं** (और मेरी ही कोशिश कामयाब होगी)(16) **तो** (ऐ पैग़म्बर) **आप इन काफ़िरों** (की मुख़ालफ़त से घबराइये नहीं और न उन पर जल्दी अज़ाब आने की बात चाहें बल्कि उन) **को यूंही रहने दीजिए** (और ज़्यादा दिन नहीं बल्कि) **थोड़े ही दिनों रहने दीजिए** (फिर मैं उन पर अज़ाब भेजूंगा चाहे मौत से पहले या मौत के बाद)(17)।

नोटः- एक हदीस में है कि हर मोमिन पर अल्लाह तआला की तरफ़ से 360 फ़रिशते उस की हिफ़ाज़त के लिए तैनात हैं जो इन्सान के हर हर हिस्से की हिफ़ाज़त करते हैं। अगर ऐसा न होता तो शैतान उस को उचक ले जाएं। (क़ुरतबी)

87-सूरत-आला

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 19 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ﴿١﴾ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۙ﴿٢﴾ وَ الَّذِىْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۙ﴿٣﴾ وَ الَّذِىْۤ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ۙ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ
غُثَآءً اَحْوٰى ؕ﴿٥﴾ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰۤى ۙ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَ مَا يَخْفٰى ؕ﴿٧﴾ وَ نُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى
ۚۖ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ؕ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى ۙ﴿١٠﴾ وَ يَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ۙ﴿١١﴾ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ۚ﴿١٢﴾
ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَ لَا يَحْيٰى ؕ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۙ﴿١٤﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ؕ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا ۫ۖ﴿١٦﴾ وَ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى ؕ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ۙ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى ۧ﴿١٩﴾

आयत नं0 01 से 19

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (और जो मोमिन आप के साथ हैं) **अपने** (उस) **रब के नाम की तस्बीह किया कीजिए जिस की शान सब से ऊंची है**(01) (और) **जिसने** (हर चीज़ को) **पैदा किया फिर** (उसको) **ठीक-ठीक बनाया**(02) **और जिसने** (जानदारों की ज़रूरत की चीज़ों को) **ठहराया फिर** (उन को उन चीज़ों की तरफ़) **राह बताई** (यानी उनके दिलों में उन चीज़ों की चाहत पैदा कर दी)(03) **और जिसने** (हरा भरा) **चाराः** (ज़मीन से) **निकाला**(04) **फिर उस को** (सुखा कर) **काला कूड़ा कर** (दिया इसमें इन्सान को उस का अन्जाम बता) **दिया**(05) (और ऐ पैग़म्बर) **हम जितना क़ुरआन** (उतारते जाएंगे) **आप को पढ़ा दिया करेंगे** (यानी याद करा दिया करेंगे) **फिर आप** (उसमें से कोइ हिस्सा) **नहीं भूलेंगे**(06) **मगर जितना** (भुलाना) **अल्लाह चाहे,** (और इसमें कुछ भेद हैं क्योंकि) **वो हर खुली और छुपी बात को जानता** (है बस जैसा ठीक समझे वैसा करता है)(07) **और** (जैसा हम आप के लिए क़ुरआन का याद होना आसान कर देंगे इसी तरह) **हम आसान शरीअ़त** (के हर हुक्म पर चलने) **के लिए आप को आसानी दे** (देंगे यानी समझना भी आसान होगा और अमल करना भी आसान होगा और तबलीग़ में भी आसानी होगी और रूकावटें भी दूर कर) **देंगे**(08) **तो** (जब हम आप के लिए वही से जुड़ा हर काम आसान कर देने का वादा

करते हैं तो) **आप नसीहत किया कीजिए अगर नसीहत करना फ़ाइदा देता हो** (और यह तो जानते ही हैं कि नसीहत करना सदा फ़ाइदा ही देता है)(09) **वो आदमी ही** (मगर) **नसीहत मानता है जो** (अल्लाह से) **डरता है**(10) **और जो बदनसीब है वो उससे दूर भागता है**(11) **जो** (अन्जामकार) **बड़ी आग में जाएगा** (यानी दोज़ख़ की आग में जो दुनिया की सब आगों से बड़ी है)(12) **फिर** (उससे बढ़ कर यह कि) **न उसमें मर ही जाएगा और न** (आराम की ज़िन्दगी) **जियेगा**(13) **कामयाब हुआ जो आदमी** (कुरआन सुनकर बुरे अक़ीदे और बुरी आदतों से) **पाक हो गया**(14) **और अपने रब का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा**(15) (मगर ऐ इनकार करने वालो तुम कुरआन को सुनकर उस को नहीं मानते और आख़रत का सामान नहीं करते) **बल्कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हो**(16) **जब कि आख़रत** (दुनिया से) **बहुत अच्छी और सदा रहने वाली है**(17) (और यह बात सिर्फ़ कुरआन में ही नहीं बल्कि) **यह बात पहले** (आसमानी) **सहीफ़ों में भी है**(18) **यानी इब्राहीम व मूसा** (अलैहिमुस्सलाम) **के सहीफ़ों में**(19)।

नोटः- जो नाम अल्लाह के लिए ख़ास है वो किसी मख़लूक़ के लिए इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं। जैसे कुछ लोग अब्दुर्रहमान को रहमान और अब्दुल ख़ालिक़ को ख़ालिक़ कह कर पुकारते हैं और यह नहीं समझते कि इसका कहने वाला और सुनने वाला दोनों गुनाहगार होते हैं।

और अल्लाह तआला को सिर्फ़ उन नामों से पुकारना चाहिये जो ख़ुद अल्लाह तआला ने अपने लिए बयान फ़रमाए हैं या अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताए हैं। उनके सिवा किसी और नाम से उस को पुकारना जाइज़ नहीं।

88-सूरत-ग़ाशिया

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 26 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ۝١ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ۝٢ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۝٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۝٤ تُسْقٰى مِنْ
عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ۝٥ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۝٦ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ۝٧ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۝٨
لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝١١ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢ فِيْهَا سُرُرٌ
مَّرْفُوْعَةٌ ۝١٣ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝١٤ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۝١٥ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۝١٦ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى
الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝١٧ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٨ وَاِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝١٩ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ
سُطِحَتْ ۝٢٠ فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢ اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۝٢٣ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ
الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ۝٢٤ اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ۝٢٥ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝٢٦

आयत नं0 01 से 26

आप को उस छा जाने वाले क़िस्से (यानी क़ियामत) **का कुछ पता भी है(01) बहुत से चेहरे उस दिन उतरे हुए होंगे(02)** (और) **मुसीबत झेलते हुए थकन से चूर होंगे(03)** (और) **दोज़ख़ की आग में जाएंगे(04)** (और) **उन्हें** (गर्म) **खौलते** (हुए) **चश्मे से पानी पिलाया जाएगा(05)** (और) **उन को सिवाए कान्टेदार झाड़ के और कोई खाना नसीब नहीं होगा(06) जो न तो** (खाने वालों के) **जिस्म को ताक़त देगा और न** (उनकी) **भूक मिटाएगा(07)** (और आगे जन्नत वालों का ज़िक्र है कि) **बहुत से चेहरे उस दिन तरोताज़ाः** (और खिले) **होंगे(08)** (और) **अपने नेक कामों की वजह से ख़ुश होंगे(09)** (और) **आलीशान जन्नत में होंगे(10) जिस में वो कोई बेहूदा** (और दिल दुखाने वाली) **बात न सुनेंगे(11)** (और) **उस जन्नत में** (नहरों की तरह) **बहते हुए चश्मे होंगे(12)** (और) **उस** (जन्नत) **में ऊंचे तख़्त बिछे हैं(13) और रक्खे हुए पियाले मौजूद हैं** (यानी यह सामान उसके सामने ही मौजूद होगा ताकि जब पीने को जी चाहे तो देर न

लगे)(14) **और बराबर लगे हुए गद्दे तकिये हैं**(15) **और सब तरफ़ क़ालीन ही क़ालीन बिछे हुए** (हैं कि जहां चाहे आराम कर सकते) **हैं**(16) (और इन सब बातों को सुनकर जो कुछ लोग क़ियामत का इनकार करते हैं तो उन की ग़लती है क्योंकि) **क्या ये लोग नहीं देखते ऊंट को कि किस तरह अजीब तौर पर पैदा किया गया है**(17) **और आसमान को** (नहीं देखते) **कि किस तरह ऊंचा किया गया है**(18) **और पहाड़ों को** (नहीं देखते) **कि किस तरह खड़े किये गये हैं**(19) **और ज़मीन को** (नहीं देखते) **कि किस तरह बिछाई गई है** (यानी इन चीज़ों को देख कर अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत के बारे में नहीं सोचते ताकि उस का क़ियामत लाने की क़ुदरत रखना समझ लेते)(20) **तो** (जब ये लोग दलीलों के बावजूद नहीं सोचते तो) **आप** (भी उन की फ़िक्र में ज़्यादा न पड़िए बल्कि सिर्फ़) **नसीहत कर दिया कीजिए, क्योंकि आप तो बस नसीहत करने वाले हैं**(21) (और) **आप इन पर** (ऐसे) **ज़िम्मेदार नहीं हैं** (कि इन के कामों की आप से पूछताछ हो)(22) **हां मगर जो कोई मुंह मोड़ेगा और कुफ़्र करेगा**(23) **तो अल्लाह तआ़ला उस को** (आख़िरत में) **बड़ी सज़ा देगा**(24) (क्योंकि) **हमारे ही पास उन को आना होगा**(25) **फिर हमारा ही काम उनसे हिसाब लेना है** (आप ज़्यादा ग़म में न पड़िए)(26)

नोटः- हज़रत उमर रज़ि० ने एक बूढ़े ईसाई जोगी को देखा जो अपने मज़हब की इबादत में मेहनत करते-करते बहुत कमज़ोर हो गया था तो आप उस को देख कर रो पड़े। लोगों ने रोने की वजह पूछी तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे इस बूढ़े के हाल पर रहम आया कि जिस मतलब के लिए इसने इतनी मेहनत की मगर उस मतलब को नहीं पा सका यानी अल्लाह को राज़ी नहीं कर सका। और इस पर हज़रत उमर ने इस सूरत (ग़ाशिया) की आयत न० २ व ३ तिलावत की जिन का मतलब है कि "बहुत से चेहरे उस दिन (यानी क़ियामत के दिन) उतरे हुए होंगे। (और) मुसीबत झेलते हुए थकन से चूर होंगे"।

89-सूरत-फ़ज्र

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 30 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالْفَجْرِ ۙ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۙ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۙ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۚ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ؕ﴿٥﴾
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۙ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۙ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۙ﴿٨﴾ وَثَمُوْدَ
الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۙ﴿٩﴾ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ۙ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۙ﴿١١﴾ فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۙ﴿١٢﴾
فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۚ﴿١٣﴾ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ؕ﴿١٤﴾ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَ
نَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ؕ﴿١٥﴾ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۚ﴿١٦﴾ كَلَّا بَلْ لَّا
تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ﴿١٧﴾ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۙ﴿١٨﴾ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۙ﴿١٩﴾ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ
حُبًّا جَمًّا ؕ﴿٢٠﴾ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۙ﴿٢١﴾ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ﴿٢٢﴾ وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ
يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ؕ﴿٢٣﴾ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۚ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۙ﴿٢٥﴾ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ؕ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۖ﴿٢٧﴾ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً
مَّرْضِيَّةً ۚ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ۙ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۧ﴿٣٠﴾

आयत नं0 01 से 30

क़सम है फ़ज्र के वक़्त की(01) और (ज़िल हिज्जा के महीनों की) **दस रातों** (यानी दस तारीख़ों) **की** (कि वो बहुत बड़े रूतबे वाली हैं)**(02) और जुफ़्त की और ताक़ की** (जुफ़्त दसवीं तारीख़ ज़िल हिज्जा की और ताक़ नवीं तारीख़)**(03) और क़सम है रात की जब वो चलने** (लगे यानी बीतने) **लगे(04) क्या एक समझदार** (को यह यक़ीन दिलाने) **के लिए ये क़समें काफ़ी नहीं हैं** (कि आख़रत में किये कामों का बदला मिलना है)**(05) क्या आप को पता नहीं है कि आप के रब ने कैसा बरताव किया आद क़ौम के साथ(06) यानी इरम क़ौम के साथ जिन के डील डौल**

खम्बे जैसे थे(07) और जिन की बराबर ज़ोर व ताक़त में दुनिया के शहरों में कोई और क़ौम पैदा नहीं की गई(08) और (आगे आद के बाद हलाक होने वाली दूसरी उम्मतों का हाल बयान करते हैं कि आप को मालूम है कि) **समूद क़ौम के साथ** (कैसा बरताव किया) **जो** (क़ुरा की) **घाटी में** (पहाड़ के) **पत्थर तराशा करते** (थे और मकान बनाया करते) **थे(09) और कीलों वाले फ़िरऔन के साथ** (क्या बरताव किया जो लोगों को सज़ा देने के लिए उनके हाथों व पैरों में कीलें गाड़ दिया करता था)(10) **ये वो लोग हैं जिन्होंने शहरों में सर उठा रक्खा था(11) और उनमें बहुत फ़साद मचा रक्खा था(12) इसलिए आप के रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया** (यानी अज़ाब भेजा)(13) **बेशक आप का रब** (नाफ़रमानों की) **घात में** (है जिन में से पहलों को तो हलाक कर दिया और इन को अज़ाब देने वाला) **है(14) तो** (चाहिए तो यह था कि इन क़िस्सों से सबक़ लेते और सज़ा वाले कामों से बचते लेकिन काफ़िर) **आदमी** (का यह हाल है कि अज़ाब के काम करता है जिन सब की जड़ दुनिया की मुहब्बत है तो उस) **को जब उस का रब आज़माता है यानी नेमतें व इज़्ज़त देता है** (जैसे माल व रूतबा जिसमें उस की शुक्रगुज़ारी देखना होता है) **तो वो** (उसको अपना ज़रूरी हक़ समझ कर घमन्ड से) **कहता है कि मेरे रब ने मेरी इज़्ज़त की है** (यानी मैं उस का चहेता हूं कि मुझ को ऐसी नेमतें दीं)(15) **और जब उस को** (दूसरी तरह) **आज़माता है यानी उस की रोज़ी उस पर घटा देता है** (जिससे उस के सब्र को आज़माना है) **तो वो** (शिकायत करता है और) **कहता है कि मेरे रब ने मेरी तौहीन की** (है कि मैं जिन नेमतों का हक़दार था वो नहीं दी यानी मुझ से नाराज़ है मतलब यह कि काफ़िर दुनिया ही को असल समझता) **है(16)** (आगे कहा गया कि) **हरगिज़ ऐसा नहीं** (यानी दुनिया की चीज़ों का होना या न होना असल नहीं और सज़ा की वजह सिर्फ़ यह नाशुक्री और बेसब्री ही नहीं और दूसरी बुराइयां भी हैं जैसे) **तुम लोग यतीम की** (कुछ) **इज़्ज़त** (और ख़ातिर) **नहीं करते** (हो यानी उस का ध्यान नहीं रखते बल्कि सताते हो और उस का माल खा जाते) **हो(17) और दूसरों को भी ग़रीबों को खाना देने को नहीं उकसाते** (हो यानी दूसरों का हक़ न ख़ुद अदा करते हो और न औरों को अदा करने को कहते) **हो(18) और** (तुम लोग) **मीरास का सारा माल समेट कर खा जाते** (हो यानी दूसरे वारिसों का हिस्सा भी खा जाते) **हो(19) और** (तुम लोग) **माल से बहुत ही मुहब्बत रखते हो(20) हरगिज़ ऐसा नहीं** (जैसा तुम समझते हो कि इन कामों पर अज़ाब न होगा ज़रूर होगा और उस वक़्त होगा) **जिस वक़्त ज़मीन** (के ऊंचे हिस्से जैसे पहाड़) **को तोड़ कर** (और) **रेत** (बनाकर ज़मीन को बराबर) **कर दिया जाएगा(21) और आप का रब और फ़रिश्तों की फ़ौजें** (हश्र के मैदान में) **आएंगे** (यह हिसाब के वक़्त होगा,

और अल्लाह का आना इस का मतलब वो ख़ुद ही जानता है)(22) **और उस दिन दोज़ख़ को सामने लाया जाएगा, उस दिन इन्सान को समझ आएगी और अब समझने का मौक़ा कहां रहा** (यानी अब समझने से क्या फ़ाइदा हो सकता है क्योंकि वो फ़ैसले की जगह है कामों की नहीं)(23) **बस** (उस दिन वो) **कहेगा काश में इस आख़रत की ज़िन्दगी के लिए कुछ नेक काम आगे भेज लेता(24) बस उस दिन न तो अल्लाह के अज़ाब की बराबर कोई अज़ाब देने वाला होगा(25) और न उसके जकड़ने के बराबर कोई जकड़ने वाला** (होगा, यानी ऐसा क़ैद करनेवाला और ऐसी सख़्त सज़ा देने वाला दुनिया में कोई न) **होगा(26)** (और जो अल्लाह का हुक्म मानने वाले थे उन को कहा जाएगा कि) **ऐ चैन पाने वाली रूह(27) तू अपने रब** (की रहमत के साय) **की तरफ़ चल इस तरह कि तू उससे ख़ुश और वो तुझ से ख़ुश(28) फिर** (उधर चल कर) **तू मेरे ख़ास बन्दों में शामिल होजा(29) और मेरी जन्नत में दाख़िल होजा(30)।**

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "जो आदमी अल्लाह तआ़ला से मिलने को पसन्द करता है अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलने को पसन्द करता है। और जो अल्लाह तआ़ला से मिलने को नापसन्द करता है तो अल्लाह तआ़ला भी उससे मिलने को नापसन्द करता है"। यह हदीस सुनकर हज़रत आइशा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि अल्लाह से मिलना तो मौत से हो सकता है लेकिन मौत तो हमें या किसी को भी पसन्द नहीं। आप ने फ़रमाया "यह बात नहीं असलीयत यह है कि मोमिन को मौत के वक़्त फ़रिशतों के वास्ते से अल्लाह के राज़ी होने और जन्नत की ख़ुशख़बरी दी जाती है जिस को सुन कर उस को मौत ज़्यादा प्यारी हो जाती है। इसी तरह काफ़िर को मौत के वक़्त अज़ाब और सज़ा सामने कर दी जाती है। इस लिए उसको उस वक़्त मौत से बढ़कर कोई चीज़ बुरी और नागवार मालूम नहीं होती"। (मतलब यह है कि मौत की मुहब्बत या नागवारी इस वक़्त की नहीं बल्कि मरने के नज़दीक जो आदमी मरने और अल्लाह से मिलने पर राज़ी है अल्लाह भी उससे राज़ी है)। (मज़हरी)

90-सूरत-बलद

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 20 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝١ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝٢ وَ وَالِدٍ وَّ مَا وَلَدَ ۝٣ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ۝٤
اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝٥ يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝٦ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗۤ اَحَدٌ ۝٧ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ
عَيْنَيْنِ ۝٨ وَ لِسَانًا وَّ شَفَتَيْنِ ۝٩ وَ هَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝١٠ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝١١ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝١٢ فَكُّ
رَقَبَةٍ ۝١٣ اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ يَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۝١٤ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝١٥ اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝١٦ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَ تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَ تَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝١٧ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝١٨ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ
الْمَشْئَمَةِ ۝١٩ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝٢٠

आयत नं0 01 से 20

मैं क़सम खाता हूं इस शहर (मक्का) **की(01)** (कि ऐ पैग़म्बर) **आप को इस शहर में लड़ाई हलाल होने वाली है** (जो कि मक्के की जीत के दिन जाइज़ कर दी गई थी)**(02) और क़सम है बाप की** (यानी आदम अलैहिस्सलाम की) **और औलाद** (की यानी सारी दुनिया) **की(03)** (आगे क़सम का जवाब है) **कि हमने इन्सान को बड़ी मेहनत में पैदा किया** (है यानी उम्र भर किसी न किसी परेशानी में घिरा रहता है इसलिए चाहिए तो यह था कि उसमें लाचारी और ताबेदारी पैदा हो जाती लेकिन काफ़िर इन्सान फिर भी भूल में पड़ा) **है(04) क्या वो यह समझता है कि उस पर किसी का बस नहीं चलेगा** (यानी क्या अल्लाह की क़ुदरत से अपने को बाहर समझता है)**(05) कहता है कि मैंने इतना ज़्यादा माल ख़र्च कर दिया** (है यानी एक तो डींग मारता है और माल को इस्लाम की दुशमनी में ख़र्च करता) **है(06) क्या वो समझता है कि उसको किसी ने नहीं देखा** (यानी अल्लाह तआला तो उसके किये कामों को देख रहे हैं)**(07) क्या हमने उस को दो आँखें नहीं दीं(08) और एक ज़बान और दो होंट** (नहीं दिये)**(09) और फिर उसको दोनों रास्ते** (भलाई व

बुराई के) **बता दिये** (ताकि बुराई के रास्ते से बचे और भलाई के रास्ते पर चले तो चाहिए था कि अल्लाह के हुक्मों का ताबेदार होता)(10) **मगर वो आदमी दीन की घाटी में से होकर नहीं निकला** (दीन के कामों को घाटी इसलिए कहा कि जी पर भारी हैं)(11) **और आप को पता है कि घाटी** (का) **क्या** (मतलब) **है**(12) **वो किसी गर्दन का** (गुलामी से) **छुड़ा देना** (है यानी गुलाम आज़ाद करना) **है**(13) **या खाना खिलाना भूक के दिन** (यानी ख़ासकर ऐसे दिन जिसमें वो भूका हो)(14) **किसी रिश्तेदार यतीम को**(15) **या बहुत ग़रीब को** (यानी अल्लाह के इन हुक्मों को पूरा करना चाहिए था)(16) **फिर** (सबसे बढ़ कर यह कि) **उन लोगों में से हुआ जो ईमान लाए और एक दूसरे को** (ईमान की) **पाबन्दी की नसीहत की और एक दूसरे को** (लोगों पर) **तरस खाने की** (और न सताने की) **नसीहत की**(17) **ये ही लोग दाहिने वाले हैं** (यानी ख़ुशनसीब मोमिन जिन का आमाल नामा दाहिने हाथ में मिलेगा)(18) **और जो लोग हमारी आयतों का इनकार करते हैं वो लोग बाएं वाले हैं** (यानी दोज़ख़ी लोग जिन का आमाल नामा बाएं हाथ में मिलेगा)(19) **वो आग में घिरे होंगे जिस को** (उन पर) **बन्द कर दिया जाएगा** (यानी दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में भर कर आगे से दरवाज़ा बन्द कर देंगे क्योंकि सदा उसी में रहने की वजह से निकलना तो मिलेगा नहीं)(20)

नोटः- ऊपर आयात से मालूम हुआ कि इन्सान को सदा चैन आराम ही रहे कोई तकलीफ़ मुसीबत पेश न आए ऐसा तो हो नहीं सकता इसलिए ज़रूरी है कि हर आदमी दुनिया में मेहनत व मुशक़्क़त उस चीज़ के लिए करे जो उस को सदा काम आए और सदा के आराम का सामान बने और वो सिर्फ़ ईमान व ताबेदारी है।

91-सूरत-शम्स

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 15 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الشَّمۡسِ وَ ضُحٰہَا ۪ۙ﴿۱﴾ وَ الۡقَمَرِ اِذَا تَلٰىہَا ۪ۙ﴿۲﴾ وَ النَّہَارِ اِذَا جَلّٰىہَا ۪ۙ﴿۳﴾ وَ الَّیۡلِ اِذَا یَغۡشٰہَا ۪ۙ﴿۴﴾ وَ السَّمَآءِ وَ مَا
بَنٰہَا ۪ۙ﴿۵﴾ وَ الۡاَرۡضِ وَ مَا طَحٰہَا ۪ۙ﴿۶﴾ وَ نَفۡسٍ وَّ مَا سَوّٰىہَا ۪ۙ﴿۷﴾ فَاَلۡہَمَہَا فُجُوۡرَہَا وَ تَقۡوٰىہَا ۪ۙ﴿۸﴾ قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَکّٰىہَا ۪ۙ﴿۹﴾
وَ قَدۡ خَابَ مَنۡ دَسّٰىہَا ﴿ؕ۱۰﴾ کَذَّبَتۡ ثَمُوۡدُ بِطَغۡوٰىہَاۤ ۪ۙ﴿۱۱﴾ اِذِ انۡۢبَعَثَ اَشۡقٰہَا ۪ۙ﴿۱۲﴾ فَقَالَ لَہُمۡ رَسُوۡلُ اللّٰہِ نَاقَۃَ
اللّٰہِ وَ سُقۡیٰہَا ﴿ؕ۱۳﴾ فَکَذَّبُوۡہُ فَعَقَرُوۡہَا ۪۬ۙ فَدَمۡدَمَ عَلَیۡہِمۡ رَبُّہُمۡ بِذَنۡۢبِہِمۡ فَسَوّٰىہَا ۪ۙ﴿۱۴﴾ وَ لَا یَخَافُ عُقۡبٰہَا ﴿۱۵﴾ع

आयत नं0 01 से 15

क़सम है सूरज की और उस की रौशनी की(01) और चान्द की जब (वो) **सूरज डूबने के बाद आए(02) और** (क़सम है) **दिन की जब वो उस** (सूरज) **को ख़ूब चमका दे(03) और** (क़सम है) **रात की जब वो उस** (सूरज) **को** (और उस की निशानियों को) **छुपाले** (यानी अच्छी तरह रात हो जाए)**(04) और** (क़सम है) **आसमान की और उस** (हस्ती) **की जिसने उस को बनाया** (यानी अल्लाह तआ़ला**(05) और** (क़सम है) **ज़मीन की और उस** (हस्ती) **की जिसने उस को बिछाया(06) और** (क़सम है इन्सान की) **जान की और उस** (हस्ती) **की जिस ने उस को** (हर तरह सूरत शकल बदन से) **ठीक बनाया(07) फिर उसके दिल में बुराई और अच्छाई** (दोनों बातों) **की समझ डाली(08) बेशक कामयाब हुआ जिसने इस** (जान) **को पाक कर लिया** (यानी जी को बुराइयों से रोका और परहेज़गारी अपनाई)**(09) और वो नाकाम हुआ जिसने इस को** (बुराइयों में) **दबा दिया(10)** (और ऐ मक्के के काफ़िरों जब तुम बुराइयों में पड़े हो तो ज़रूर अज़ाब में पकड़े जाओगे जैसा कि) **समूद की क़ौम ने अपनी बुराइयों की वजह से** (पैग़म्बर सालिह अलैहिस्सलाम को) **झुटलाया(11)** (और यह उस वक़्त का क़िस्सा है) **जब कि क़ौम में जो सब से ज़्यादा बदनसीब था वो** (उस ऊंटनी को मारने के लिए) **उठ खड़ा हुआ** (यानी तैयार हो गया और उसके साथ और लोग भी थे)**(12) तो अल्लाह के पैग़म्बर** (सालिह अलैहिस्सलाम को जब उनके इस क़त्ल

के इरादे की ख़बर हुई तो उन्हों) **ने उन लोगों से कहा कि अल्लाह की** (इस) **ऊंटनी से और इसके पानी पीने से ख़बरदार रहना** (यानी न उस को मारना और न उस का पानी बन्द करना)(13) **तो उन्होंने पैग़म्बर को** (यानी पैग़म्बरी की निशानी को) **झुटलाया फिर उस ऊंटनी को मार दिया तो उनके रब ने उनके गुनाह की वजह से उन पर अज़ाब भेजा फिर उस** (अज़ाब) **को** (सारी क़ौम के लिए) **आम कर दिया(14) और अल्लाह को उस अज़ाब के बाद में किसी ख़राबी** (के निकलने) **का** (किसी से कोई) **ख़तरा नहीं हुआ** (जैसे दुनिया के बादशाहों को कभी-कभी किसी क़ौम को सज़ा देने के बाद यह डर होता है कि उस पर कोई हंगामा न हो)(15)

नोटः- समूद क़ौम की मांग पर अल्लाह तआ़ला ने पैग़म्बरी की निशानी के लिए मोजिज़े से यह ऊंटनी पैदा की थी। और लोगों से कहा कि एक दिन कुंए से यह पानी पियेगी, और दूसरे दिन तुम पानी भर लिया करना। लेकिन उन्होंने पैग़म्बर को झुटलाया और उस क़ौम के एक पत्थर दिल आदमी ने जिकसका नाम "क़िदार" बताया जाता है क़ौम के मशवरे से उस ऊंटनी को क़त्ल कर दिया। उसके बाद उस क़ौम पर अज़ाब आया।

92-सूरत-लैल

“इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 21 आयतें हैं”

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۙ﴿١﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ﴿٢﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ۙ﴿٣﴾ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ؕ﴿٤﴾ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى
وَاتَّقٰى ۙ﴿٥﴾ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿٦﴾ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ؕ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۙ﴿٨﴾ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ﴿٩﴾
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ﴿١٠﴾ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ؕ﴿١١﴾ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۖ﴿١٢﴾ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿١٣﴾
فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۚ﴿١٤﴾ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۙ﴿١٥﴾ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ﴿١٦﴾ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۙ﴿١٧﴾ الَّذِيْ يُؤْتِيْ
مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۚ﴿١٨﴾ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۙ﴿١٩﴾ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۚ﴿٢٠﴾ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

आयत नं0 01 से 21

क़सम है रात की जब कि वो (सूरज को और दिन को) **छुपाले(01) और** (क़सम है) **दिन की जब कि उस की रौशनी फैल जाए(02) और** (क़सम है) **उस** (हस्ती यानी अल्लाह तआला) **की जिसने नर और मादा को पैदा किया(03)** (आगे क़सम का जवाब है कि) **बेशक तुम्हारी कोशिशें** (यानी किये काम) **अलग-अलग** (हैं और इसी तरह उन के फल भी अलग-अलग) **हैं(04) तो जिसने** (अल्लाह की राह में माल) **दिया और अल्लाह से डरा(05) और सब से अच्छी बात** (यानी दीन इस्लाम) **को सच्चा समझा(06) तो हम उस को आराम की चीज़** (यानी जन्नत) **के लिए सामान** (देंगे मतलब यह कि अच्छे काम उसके लिए आसान कर) **देंगे(07) और जिसने** (ज़रूरी हक़ों से) **कंजूसी की और** (बजाए अल्लाह से डरने के उससे) **बेपरवाई की(08) और अच्छी बात** (यानी दीने इस्लाम) **को झुटलाया(09) तो हम उस को तकलीफ़ की चीज़** (यानी दोज़ख़) **के लिए सामान** (देंगे मतलब यह कि बुरे कामों में उस के लिए आसानी कर) **देंगे(10) और** (आगे बुराई का अन्जाम बताया गया कि) **उसका माल उसके कुछ काम न आएगा जब वो बर्बाद होने** (लगेगा यानी दोज़ख़ में जाने) **लगेगा(11) असल में हमारे ज़िम्मे राह का बता देना** (है सो वो हमने पूरी तरह बता दी है

फिर किसी ने ईमान व ताबेदारी की राह अपनाई और किसी ने कुफ़्र व गुनाह की राह अपनाई) **है**(12) **और** (जैसी राह कोई आदमी चलेगा वैसा ही फल उस को देंगे क्योंकि) **हमारे ही क़ब्ज़े में है आख़रत और दुनिया** (यानी दोनों में हमारी ही हुकूमत है इसलिए दुनिया में हुक्म जारी किये और आख़रत में मानने व न मानने पर सवाब व अज़ाब देंगे)(13) **तो मैं तुमको एक भड़कती हुई आग से डरा चुका हूं** (तो उससे बचने के काम करो)(14) **उसमें** (सदा के लिए) **वो बदनसीब ही जाएगा**(15) **जिसने** (सच्चे दीन को) **झुटलाया** (और उससे) **मुंह फेरा**(16) **और उससे ऐसा आदमी दूर रक्खा जाएगा जो बुराइयों से बचने वाला है**(17) **जो अपना माल सिर्फ़ इसलिए देता है कि गुनाहों से पाक हो जाए** (यानी अल्लाह को राज़ी करना चाहे)(18) **हालांकि उसके ज़िम्मे किसी का अहसान न था कि** (इस देने से) **उसका बदला उतारना चाहता हो**(19) **सिवाए अपने उस रब को राज़ी करने के जिसकी शान सबसे ऊंची है** (यानी उस की कोई और नीयत नहीं)(20) **और ऐसा आदमी जल्दी ही ख़ुश हो जाएगा** (यानी आख़रत में ऐसी नेमतें मिलेंगी कि उसको सदा की ख़ुशी नसीब होगी)(21)।

नोटः- हज़रत अबूबक्र रज़ि० की यह आदत भी थी कि जिस मुसलमान को काफ़िरों की क़ैद में देखते उसको ख़रीद कर आज़ाद कर देते थे। और ये लोग आम तौर से कमज़ोर होते थे। उनके बाप अबूक़हाफ़ा रज़ि० ने कहा कि जब तुम ग़ुलामों को आज़ाद ही करते हो तो इतना काम करलो कि ऐसे ग़ुलामों को आज़ाद किया करो जो ताक़तवर और बहादुर हैं ताकि वो कल तुम्हारे दुशमनों का मुक़ाबिला और तुम्हारी हिफ़ाज़त कर सकें। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि मेरा इरादा उन आज़ाद किये हुए लोगों से कोई फ़ाइदा उठाना नहीं बल्कि मैं तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए उनको आज़ाद कर रहा हूं। (मज़हरी)

93-सूरत-ज़ुहा

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 11 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالضُّحٰى ۙ﴿۱﴾ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ۙ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ﴿۳﴾ وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ؕ﴿۴﴾ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ
رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ﴿۵﴾ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ۪﴿۶﴾ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ۪﴿۷﴾ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ؕ﴿۸﴾ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ
فَلَا تَقْهَرْ ؕ﴿۹﴾ وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ؕ﴿۱۰﴾ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾

आयत नं0 01 से 11

क़सम है दिन की रौशनी की(01) और रात की जबकि (उस का अन्धेरा) **छा जाए(02) कि** (ऐ पैग़म्बर) **आप के रब ने न आप को छोड़ा और न आप से नाराज़ हुआ** (न आप से ऐसी बात हुई और न हो सकती है कुछ दिनों वही न आने की वजह से लोगों के यह कहने की वजह से कि आप को आप के अल्लाह ने छोड़ दिया है आप दुखी न हों ऐसा नहीं)**(03) और** (आप को बराबर नेमतें व बरकतें मिलती रहेंगी और) **आख़रत आप के लिए दुनिया से बहुत अच्छी है** (बस वहां आप को इससे ज़्यादा नेमतें मिलेंगी)**(04) और जल्दी ही अल्लाह तआ़ला आप को** (आख़रत में बहुत नेमतें) **देगा तो आप** (उनके मिलने से) **ख़ुश हो जाएंगे(05) क्या** (दुनिया में भी अल्लाह तआ़ला ने) **आप को यतीम नहीं पाया फिर** (आप को) **ठिकाना दिया** (यतीम पैदा हुए तो पहले दादा ने पाला फिर चाचा ने पाला)**(06) और** (अल्लाह तआ़ला ने) **आप को** (शरीअ़त से) **बेख़बर पाया तो** (आप को शरीअ़त का) **रास्ता बताया** (और वही आने से पहले शरीअ़त के हुक्मों का पता न होना कोई ऐब की बात नहीं)**(07) और** (अल्लाह तआ़ला ने) **आप को ग़रीब पाया तो मालदार बना** (दिया जैसा कि हज़रत ख़दीजा के वास्ते से माल) **दिया(08) तो आप** (इसके शुक्रये में) **यतीम पर सख़्ती न कीजिए(09) और मांगने वाले को मत झिड़कये** (अगर मौक़ा न हो तो नर्मी से इनकार कर दीजिए)**(10) और अपने रब की नेमतों का ज़िक्र** (और शुक्र) **करते रहा कीजिए(11)।**

नोटः- हदीस में है कि जब यह आयत उतरी "वलऱ् सौफ़ऱ् यूतीका रब्बुका फ़तरज़ा" यानी जल्दी ही अल्लाह तआ़ला आप को इतनी नेमतें देगा कि आप ख़ुश होजाएंगे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब यह बात है तो मैं उस वक़्त तक राज़ी न हूंगा जब तक मेरी उम्मत में से एक आदमी भी जहन्नम में रहेगा। (क़ुरतबी)

मसअलाः- हर नेमत का शुक्र अदा करना वाजिब है माली नेमत का शुक्र यह है कि उस माल में से सच्ची नीयत से कुछ अल्लाह के लिए ख़र्च करे। और बदन की नेमत का शुक्र यह है कि जिस्मानी ताक़त को अल्लाह के वाजिबों को अदा करने में ख़र्च करे। और इल्म की नेमत का शुक्र यह है कि दूसरों को भी सिखाए।

94-सूरत-इन्शिराह

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَ وَضَعۡنَا عَنۡكَ وِزۡرَكَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِىۡۤ اَنۡقَضَ ظَهۡرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَ رَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ ؕ﴿۴﴾ فَاِنَّ مَعَ
الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ يُسۡرًا ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا فَرَغۡتَ فَانۡصَبۡ ۙ﴿۷﴾ وَ اِلٰى رَبِّكَ فَارۡغَبۡ ﴿۸﴾

आयत नं0 01 से 08

(ऐ पैग़म्बर) **क्या हमने आप की ख़ातिर आप का सीना** (इल्म व सहार से) **नहीं खोल** (दिया यानी तबलीग़ में मुख़ालिफ़ों की तकलीफ़ को सहार करने की हिम्मत दी और बड़ा इल्म) **दिया(01) और हमने आप पर से आप का वो बोझ उतार दिया(02) जिसने आप की कमर तोड़ रक्खी थी** (यानी पैग़म्बरी की ज़िम्मेदारी को शुरू में आप ज़्यादा भारी समझ रहे थे फिर अल्लाह तआला ने आप को हिम्मत दी)(03) **और हमने आप की ख़ातिर आप का नाम ऊंचा किया** (यानी अक्सर जगह शरीअत में अल्लाह के नाम के साथ आप का नाम लिया जाता है जैसे कलमे में अज़ान व तकबीर में, ख़ुत्बे में और नमाज़ में)(04) **बेशक इन मुश्किलों के साथ आसानी** (होने वाली) **है** (05) (हमारे इस वादे को फिर सुनिये) **बेशक इन मुश्किलों के साथ आसानी** (होने वाली) **है** (जैसा सभी मुश्किलें एक-एक करके सब दूर हो गईं)(06) **तो** (जब हम ने आप को ऐसी नेमतें दी हैं तो उसके शुक्रये में) **आप जब** (तबलीग़ का) **काम पूरा कर लिया करें तो** (दूसरी इबादतों में) **मेहनत किया** (कीजिए यानी ज़्यादा इबादत किया) **कीजिए(07) और अपने रब की ही तरफ़ ध्यान रखिए** (यानी जो कुछ मांगना हो उसी से मांगिए)(08)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि जो आलिम तालीम व तबलीग़ और लोगों के सुधार का काम करने वाले हैं उन का कुछ वक़्त तन्हाई में अल्लाह के ज़िक्र व इबादत के लिए होना चाहिए जैसा कि बड़ों का ये ही तरीक़ा रहा है। इसमें बेपरवाई न होना चाहिए। इसके बिना तालीम व तबलीग़ के काम में भी पूरा असर नहीं होता उसमें नूर व बरकत नहीं होती।

ऊपर आयत में मुश्किल के बाद जो आसानी देने का वादा किया गया है वो ख़ास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा के लिए ख़ास है। जिसको अल्लाह तआ़ला ने पूरा फ़रमाया कि दुनिया ने आंखों से देख लिया। अलबत्ता आम दस्तूरे इलाही अब भी ये ही है कि जो आदमी सख़्ती पर सब्र करे। और सच्चे दिल से अल्लाह पर भरोसा रक्खे। और हर तरफ़ से टूट कर उसी से लौ लगाए। और उसी की महरबानी का उम्मीदवार रहे। और कामयाबी में देरी होने से उम्मीद न तोड़ बैठे तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला उसके हक़ में आसानी कर देगा। (फ़वाइद उस्मानिया)

95-सूरत-तीन

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالتِّيۡنِ وَالزَّيۡتُوۡنِ ۙ﴿۱﴾ وَطُوۡرِ سِيۡنِيۡنَ ۙ﴿۲﴾ وَهٰذَا الۡبَلَدِ الۡاَمِيۡنِ ۙ﴿۳﴾ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِىۡۤ اَحۡسَنِ تَقۡوِيۡمٍ ﴿۴﴾
ثُمَّ رَدَدۡنٰهُ اَسۡفَلَ سٰفِلِيۡنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمۡ اَجۡرٌ غَيۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ؕ﴿۶﴾ فَمَا يُكَذِّبُكَ
بَعۡدُ بِالدِّيۡنِ ؕ﴿۷﴾ اَلَيۡسَ اللّٰهُ بِاَحۡكَمِ الۡحٰكِمِيۡنَ ﴿۸﴾

आयत नं0 01 से 08

क़सम है अन्जीर (के पेड़) **की और ज़ैतून** (के पेड़) **की(01) और सीना** (के जंगल) **के पहाड़ तूर की(02) और इस अमन वाले शहर** (यानी मक्का मुअ़ज़्ज़मा) **की(03) कि हमने इन्सान को बहुत ख़ूबसूरत सांचे में ढाल कर पैदा किया है(04) फिर** (उनमें जो बूढ़ा हो जाता है) **हम उस को निचली हालत वालों में सबसे ज़्यादा निचली हालत में कर देते हैं** (यानी वो ख़ूबसूरती बदसूरती से और ताक़त कमज़ोरी से बदल जाती है इससे साबित हुआ कि अल्लाह तआ़ला दोबारा पैदा करने और ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता है)**(05) लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये तो उनके लिए इतना सवाब है जो कभी कम न होगा** (इसमें बता दिया गया कि मोमिन बूढ़े और कमज़ोर हो जाने के बाद भी अन्जाम के ऐतबार से अच्छे ही रहते हैं बल्कि पहले से उन की इज़्ज़त ज़्यादा बढ़ जाती है)**(06) तो** (ऐ इन्सान फिर) **किस लिए तू क़ियामत का इनकार कर रहा** (है यानी वो कौन सी दलील है जिसकी वजह से क़ियामत का इनकार कर रहा) **है(07) क्या अल्लाह तआ़ला सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं** (है बस वो सब कुछ कर सकता) **है(08)**

नोटः- हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई मुसलमान किसी बीमारी में गरिफ़तार हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसके कामों के लिखने वाले फ़रिशतों को हुक्म देते हैं कि जो-जो नेक काम यह अपनी तन्दरूस्ती के दिनों में किया

करता था वो सब उसके आमाल नामे में लिखते रहो। (बुख़ारी)

मसअलाः- एक हदीस से साबित होता है कि इस सूरत की आख़िरी आयत पढ़ने के बाद यह पढ़ना मुस्तहब है।

"बला व अना अला ज़ालिका मिनश्शाहिदीन"।

यानी क्यों नहीं मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह तआ़ला सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम है।

96-सूरत-अलक़

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 19 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾ اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَ
الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾ كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰۤى ۙ﴿۶﴾ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ؕ﴿۷﴾ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ؕ﴿۸﴾ اَرَءَیْتَ
الَّذِیْ يَنْهٰى ۙ﴿۹﴾ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ؕ﴿۱۰﴾ اَرَءَیْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰۤى ۙ﴿۱۱﴾ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ؕ﴿۱۲﴾ اَرَءَیْتَ اِنْ كَذَّبَ وَ
تَوَلّٰى ؕ﴿۱۳﴾ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ؕ﴿۱۴﴾ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِيَةِ ۙ﴿۱۵﴾ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ﴿۱۶﴾
فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ﴿۱۷﴾ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ﴿۱۸﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩﴿۱۹﴾

आयत नं0 01 से 19

नोटः- "इक़रा" से "मालम यालम" तक सबसे पहली वही है जिसके उतरने से पैग़म्बरी शुरू हुई। जिसका क़िस्सा हदीस में यह है कि पैग़म्बरी मिलने के नज़दीक दिनों में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा में कई-कई दिन इबादत करते थे। एक दिन अचानक जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और आप से कहा "इक़रा" यानी पढ़िए। आप ने कहा मैं कुछ पढ़ा हुआ नहीं। उन्होंने बहुत ज़ोर से आप को दबाया फिर कहा पढ़िए। आप ने फिर वो ही जवाब दिया। इसी तरह तीन बार किया फिर आख़िर में दबाने के बाद छोड़ कर कहा- "इक़रा" से "मालम यालम" तक। इस तरह ये आयतें उतरीं फिर बाक़ी आयतें बाद में उतरीं।

ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (पर जो) **क़ुरआन** (उतरा करेगा जिन में ये आयतें भी दाख़िल हैं) **अपने** (उस) **रब का नाम लेकर पढ़ा** (कीजिए यानी बिस्मिल्लाह पढ़ा) **कीजिए जिसने** (सब को) **पैदा किया(01)** (और) **जिसने** (ख़ास कर) **इन्सान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया** (यानी इन्सान को सारे जानदारों में सब से बेहतर बनाया इसलिए उस को ज़्यादा शुक्र और ज़िक्र करना चाहिए)(02) **आप क़ुरआन पढ़ा कीजिए आप का रब बड़ा महरबान** (है भले ही आप लिखे

पढ़े न हों वो जो चाहता है दे देता) **है(03)** (और वो ऐसा है) **जिसने** (लिखे पढ़ों को) **क़लम से इल्म सिखाया(04)** (और) **इन्सान को** (दूसरे तरीक़ों से) **वो चीज़ें सिखाईं जिन को वो नहीं जानता था** (बस आप को इल्म देना हमारा काम है और आप की हिफ़ाज़त करना भी)(05) **बेशक** (काफ़िर) **इन्सान** (आदमियत की) **हद से निकल जाता है(06) इस लिए कि** (माल व दौलत की वजह से) **अपने आप को** (सब से) **बेपरवाह समझता है(07)** (जब कि लोगों की चाहे ज़रूरत न हो अल्लाह तआला का तो हर हाल में मुहताज है यहां तक कि आख़ीर में) **तेरे रब ही की तरफ़ सब को लौटना होगा** (और उसकी सज़ा से कभी भाग भी न सकेगा)(08) **भला तुम ने उस आदमी** (की सरकशी) **को भी देखा जो** (नमाज़ से) **मना करता है(09)** (हमारे) **एक** (ख़ास) **बन्दे को जब वो** (बन्दा) **नमाज़ पढ़ता** (है यानी नमाज़ी को नमाज़ से रोकना बहुत ही बुरी बात) **है(10) भला अगर वो** (बन्दा जिस को नमाज़ से रोका गया है) **सही रास्ते पर हो(11) या वो दूसरों को भी नेकी की बात सिखाता हो** (तो ऐसी सूरत में उसे रोकना तो और भी गुमराही है)(12) **भला यह तो बताओ कि अगर वो आदमी** (मना करने वाला सच्चे दीन को) **झुटलाता हो और** (सच्चे दीन से) **मुंह फेरता** (हो यानी उसका अक़ीदा भी ख़राब हो और अमल भी ख़राब) **हो(13)** (आगे इस मना करने पर उसको धमकी है यानी) **क्या उस आदमी को यह पता नहीं कि अल्लाह तआला** (उसके सब कामों को) **देख रहे हैं** (और उस पर सज़ा देंगे)(14) **हरगिज़** (उस को ऐसा) **नहीं** (करना चाहिए और) **अगर यह आदमी** (अपनी इस हरकत से) **बाज़ नहीं आएगा तो हम** (उसको) **पंठे** (माथे के बाल) **पकड़ कर** (दोज़ख़ की तरफ़) **घसीटेंगे(15) जो कि झूटे गुनाहगार के पंठे हैं(16)** (और इस को जो अपने साथियों पर घमन्ड़ है और हमारे पैग़म्बर को धमकाता है) **तो यह अपने साथियों को बुलाले(17)** (अगर उसने ऐसा किया तो) **फिर हम भी दोज़ख़ के सिपाहियों को** (यानी फ़रिशतों को) **बुला लेंगे** (मगर उसने नहीं बुलाया इसलिए अल्लाह ने फ़रिशतों को नहीं बुलाया)(18) **हरगिज़** (उसको ऐसा) **नहीं** (करना चाहिए, मगर) **आप** (उस नालाइक़ की उन हरकतों की परवाह न कीजिए और) **उसका कहना न मानिए** (जैसा अब तक भी नहीं माना) **और उसी तरह नमाज़ पढ़ते रहिए और अल्लाह की नज़दीकी पाते जाइए** (और एक हदीस में है कि बन्दा अपने रब से सबसे ज़्यादा नज़दीक उस वक़्त होता है जब कि वो सजदे में होता है)(19)।

नोटः- अबूजहल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सख़्त दुशमन था वो आप को नमाज़ पढ़ने से रोकता था और डराता था उसके बारे में ये आयतें उतरीं और बता दिया गया कि वो कुछ

नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। जैसा कि एक बार उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हमला करना चाहा तो उस को बीच में आग की खाई दिखाई दी।

मसअलाः- इस सूरत की आख़री आयत की तिलावत करने और सुनने वाले पर सजदाए तिलावत वाजिब हो जाता है।

97-सूरत-क़द्र

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِنَّاۤ اَنۡزَلۡنٰہُ فِیۡ لَیۡلَۃِ الۡقَدۡرِ ۚ﴿۱﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ؕ﴿۲﴾ لَیۡلَۃُ الۡقَدۡرِ ۬ۙ خَیۡرٌ مِّنۡ اَلۡفِ شَہۡرٍ ؕ﴿۳﴾ تَنَزَّلُ
الۡمَلٰٓئِکَۃُ وَ الرُّوۡحُ فِیۡہَا بِاِذۡنِ رَبِّہِمۡ ۚ مِنۡ کُلِّ اَمۡرٍ ۙ﴿۴﴾ سَلٰمٌ ۟ۛ ہِیَ حَتّٰی مَطۡلَعِ الۡفَجۡرِ ٪﴿۵﴾

आयत नं0 01 से 05

बेशक हमने इस (क़ुरआन) **को शबे क़द्र में उतारा है(01) और** (ज़्यादा शौक़ दिलाने के लिए कहते हैं कि) **आप को क्या पता कि शबे क़द्र कैसी चीज़ है(02)** (आगे जवाब है कि) **शबे क़द्र एक हज़ार महीनों से भी बेहतर** (है यानी एक हज़ार महीनों तक इबादत करने का जितना सवाब है उससे ज़्यादा शबे क़द्र में इबादत करने का सवाब) **है(03)** (और वो रात ऐसी है कि) **उस रात में फ़रिशते और रूहुलक़ुदुस** (यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम) **अपने रब के हुक्म से हर भलाई की बात लेकर** (ज़मीन की तरफ़) **उतरते हैं(04)** (और वो रात) **सलामती वाली है** (कि इस रात में जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़रिशतों की जमाअत के साथ उतरते हैं और इबादत करने वालों पर सलाम भेजते हैं और उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं और) **शबे क़द्र** (इसी बरकत व रहमत के साथ) **सुबह के निकलने तक रहती** (है यानी यह नहीं कि इस रात के किसी ख़ास हिस्से में यह बरकत हो और किसी हिस्से में बरकत न हो बल्कि पूरी रात में सलामतमी रहती) **है(05)।**

नोटः- पहली उम्मतों में उम्रें ज़्यादा होती थीं सहाबा को फ़िक्र हुई कि वो लोग ज़्यादा इबादत कर सकते थे और उनकी इबादतों के क़िस्से भी सुने थे तो हम उन की बराबर इबादत नहीं कर सकते इस पर शबे क़द्र की ख़ुशख़बरी दी गई कि कम उम्र में भी ज़्यादा सवाब कमा सकते हैं।

हदीस से साबित है कि जिस आदमी ने इशा व फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ ली उसने भी इस रात का सवाब पा लिया।

हज़रत आ़इशा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अगर मैं शबे क़द्र को पाऊं तो क्या दुआ करूं आपने फ़रमाया कि यह दुआ करो। "अल्लाहुम्मा इन्नका" अफ़्वुन तुहिब्बुल अफ़्वा फ़ाफु अन्नी"।

यानी या अल्लाह आप बहुत मुआफ़ करने वाले हैं और मुआ़फ़ी को पसन्द करते हैं मेरी ख़ताएं मुआ़फ़ कर दीजिए। (क़ुरतबी)

शबे क़द्र में पूरा क़ुरआन लोहे महफ़ूज़ से एक बार में उतारा गया और फिर थोड़ा-थोड़ा हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से २३ साल तक लाते रहे।

98-सूरत-बय्यिना

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لَمۡ يَكُنِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ مُنۡفَكِّيۡنَ حَتّٰى تَاۡتِيَهُمُ الۡبَيِّنَةُ ۙ﴿۱﴾ رَسُوۡلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتۡلُوۡا
صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ﴿۲﴾ فِيۡهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ﴿۳﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡهُمُ الۡبَيِّنَةُ ؕ﴿۴﴾ وَ
مَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوا اللّٰهَ مُخۡلِصِيۡنَ لَهُ الدِّيۡنَ ۬ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيۡمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤۡتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيۡنُ الۡقَيِّمَةِ ؕ﴿۵﴾
اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ وَالۡمُشۡرِكِيۡنَ فِىۡ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ اُولٰٓـئِكَ هُمۡ شَرُّ الۡبَرِيَّةِ ؕ﴿۶﴾ اِنَّ
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓـئِكَ هُمۡ خَيۡرُ الۡبَرِيَّةِ ؕ﴿۷﴾ جَزَآؤُهُمۡ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ
تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِىَ اللّٰهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُوۡا عَنۡهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنۡ خَشِىَ رَبَّهٗ ﴿۸﴾

आयत नं0 01 से 08

जो लोग किताब वालों और मुशरिकों में (नबी के आने से पहले) **काफ़िर थे वो** (अपने कुफ़्र से उस वक़्त तक) **बाज़ आने वाले न थे जब तक उन के पास साफ़ दलील न आती(01)** (यानी) **एक अल्लाह का पैग़म्बर जो** (उनको) **पाक किताब पढ़ कर सुनाए(02) जिन में सीधी सच्ची बातें लिखी हों** (यानी कुरआन मतलब यह कि बिना पैग़म्बर और कुरआन के आए वो राह पर आने वाले न थे इसलिए अल्लाह तआला ने कुरआन देकर आप को भेजा)(03) **और** (उन को चाहिए था कि इस पर ईमान ले आते मगर) **जो लोग किताब वाले थे वो इस खुली दलील के आने ही के बाद** (दीन में) **अलग** (राह पर) **हो गये** (और मुशरिकों के पास तो पहले ही से आसमानी इल्म न था)(04) **जब कि उन लोगों को** (पहली किताबों में) **ये ही हुक्म हुआ था कि अल्लाह की इस तरह इबादत करें कि इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रक्खें और उसी की तरफ़ ध्यान करें** (किसी को अल्लाह का साझी न बनाएं) **और नमाज़ की पाबन्दी रक्खें और ज़कात दिया करें और ये ही तरीक़ा है उन किताबों का बताया हुआ** (यानी उन किताब वालों को उन की किताबों

में ये ही हुक्म हुआ था कि कुरआन और रसूल पर ईमान लाएं, इस तरह जो कुरआन व रसूल को नहीं मानता वो अपनी किताब को भी नहीं मानता और मुशरिक लोग हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मानते थे और हज़रत इब्राहीम शिर्क से पाक थे)(05) **बेशक जो लोग किताब वालों और मुशरिकों में से काफ़िर हुए वो दोज़ख़ की आग में जाएंगे जहां सदा-सदा रहेंगे,** (और) **ये लोग सबसे बुरे हैं**(06) (और) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये वो सब अच्छे लोग हैं**(07) **उन का बदला उनके रब के यहां सदा-सदा रहने की जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहती होंगी जहां सदा-सदा रहेंगे, और अल्लाह तआ़ला उनसे ख़ुश रहेगा और वो अल्लाह तआ़ला से ख़ुश रहेंगे** (यानी न उनसे कोई गुनाह होगा जिस से अल्लाह तआ़ला नाराज़ हो और न उनको कोई नागवार बात पेश आएगी जिससे वो नाख़ुश हों, और) **यह** (जन्नत और रज़ामन्दी) **उस आदमी के लिए है जो अपने रब से डरता** (है यानी ईमान लाकर नेक काम करता) **है**(08)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला जन्नती लोगों से पूछेंगे कि तुम लोग राज़ी और ख़ुश हो। वो जवाब देंगे या रब हमारे अब भी राज़ी न होने की क्या बात है जब कि आपने हम को वो सब कुछ दे दिया जो किसी मख़्लूक़ को नहीं मिला। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कि क्या मैं तुम को इससे भी बेहतर नेमत देदूं। फिर फ़रमाएंगे कि मैंने अपनी रज़ामन्दी तुम्हारे लिए उतार दी अब कभी तुम से नाराज़ न हूंगा। (मज़हरी)

99-सूरत-ज़िलज़ाल

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا زُلۡزِلَتِ الۡاَرۡضُ زِلۡزَالَهَا ۙ﴿۱﴾ وَ اَخۡرَجَتِ الۡاَرۡضُ اَثۡقَالَهَا ۙ﴿۲﴾ وَ قَالَ الۡاِنۡسَانُ مَا لَهَا ۚ﴿۳﴾ يَوۡمَئِذٍ تُحَدِّثُ
اَخۡبَارَهَا ۙ﴿۴﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوۡحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾ يَوۡمَئِذٍ يَّصۡدُرُ النَّاسُ اَشۡتَاتًا ۬ۙ لِّيُرَوۡا اَعۡمَالَهُمۡ ؕ﴿۶﴾ فَمَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ
خَيۡرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾ وَ مَنۡ يَّعۡمَلۡ مِثۡقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾

आयत नं0 01 से 08

जब ज़मीन अपने भौंचाल से हिलाई जाएगी(01) और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी (यानी जो चीज़ें उसमें गड़ी हैं चाहे मुर्दे हों या माल हो सब बाहर फेंक देगी और माल बाहर फेंकने की वजह यह हो सकती है कि माल की मुहब्बत करने वाले अपनी आँखों से माल का बेकार होना देखलें)(02) **और** (इस हालत को देख कर काफ़िर) **इन्सान कहेगा कि इसको क्या हुआ** (कि ज़मीन इस तरह हिल रही है और सब गड़ी चीज़ें बाहर आ रही हैं)(03) **उस दिन ज़मीन अपनी सब** (अच्छी बुरी) **बातें बयान करने लगेगी(04) इस वजह से कि आप के रब का उस को ये ही हुक्म होगा** (यानी जो काम ज़मीन पर किया होगा अच्छा या बुरा उसकी गवाही देगी)(05) **उस दिन लोग** (हिसाब की जगजह से) **अलग-अलग गिरोह होकर वापस होंगे** (यानी कुछ जन्नती कुछ दोज़ख़ी और जन्नती जन्नत की तरफ़ और दोज़ख़ी दोज़ख़ की तरफ़ चले जाएंगे) **ताकि अपने किये कामों** (के फल) **को देखलें(06) तो जो आदमी** (दुनिया में) **ज़रा सी भी नेकी करेगा वो उस को देख लेगा(07) और जो आदमी ज़रा सी भी बुराई करेगा वो उस को देख लेगा** (शर्त यह है कि वो नेकी और बुराई उस वक़्त तक बची हो क्योंकि कुफ़्र से नेकी बर्बाद हो जाती है और तौबा से गुनाह ऐसे मुआफ़ हो जाते हैं जैसे कि वो गुनाह किया ही न हो)(08)।

नोटः- हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि देखो ऐसे गुनाहों से बचने का पूरा ध्यान रक्खो जिन को छोटा या कमतर समझा जाता है क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से उस पर भी पकड़ होनी है। (रिवायत किया इसको हज़रत आइशा रज़ि० ने)। (इब्ने माजा)

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूरत को आधा क़ुरआन और "क़ुल हुवल्लाहु अहद" को तिहाई क़ुरआन और सूरत काफ़िरून को चौथाई क़ुरआन बताया है। (मज़हरी)

100-सूरत-आदियात

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 11 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالۡعٰدِيٰتِ ضَبۡحًا ۙ﴿۱﴾ فَالۡمُوۡرِيٰتِ قَدۡحًا ۙ﴿۲﴾ فَالۡمُغِيۡرٰتِ صُبۡحًا ۙ﴿۳﴾ فَاَثَرۡنَ بِهٖ نَقۡعًا ۙ﴿۴﴾ فَوَسَطۡنَ بِهٖ جَمۡعًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ
الۡاِنۡسَانَ لِرَبِّهٖ لَـكَنُوۡدٌ ۚ﴿۶﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيۡدٌ ۚ﴿۷﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الۡخَيۡرِ لَشَدِيۡدٌ ؕ﴿۸﴾ اَفَلَا يَعۡلَمُ اِذَا بُعۡثِرَ مَا
فِى الۡقُبُوۡرِ ۙ﴿۹﴾ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوۡرِ ۙ﴿۱۰﴾ اِنَّ رَبَّهُمۡ بِهِمۡ يَوۡمَـئِذٍ لَّخَبِيۡرٌ ﴿۱۱﴾

आयत नं0 01 से 11

क़सम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं(01) फिर (पत्थर पर) **टाप मार कर चिंगारियां उड़ाते हैं(02) फिर सुबह के वक़्त हमला कर देते हैं(03) फिर उस वक़्त धूल उड़ाते हैं(04) फिर उस वक़्त** (दुशमनों की) **फ़ौज में जा घुसते** (हैं मुराद इस से लड़ाई के घोड़े) **हैं(05)** (आगे क़सम का जवाब है कि) **बेशक** (काफ़िर) **इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है(06) और उस को खुद भी इस बात का पता** (है कभी शुरू से ही और कभी सोचने के बाद अपनी नाशुक्री को जान लेता) **है(07) और उस को माल की मुहब्बत ज़्यादा** (है और ये ही उस की नाशुक्री की वजह) **है(08)** (आगे माल की मुहब्बत और नाशुक्री पर धमकी है कि) **क्या वो उस वक़्त को नहीं जानता जब ज़िन्दा किये जाएंगे जितने मुर्दे क़ब्रों में हैं** (यानी क़ियामत में)(09) **और खुल जाएगा जो कुछ** (राज़) **दिलों में है(10) बेशक उनके रब को उनके हाल की उस दिन सब ख़बर है** (और जैसे जिसके काम होंगे वैसा बदला देगा, मतलब यह है कि इन्सान को अगर उस वक़्त की पूरी ख़बर होती और आख़रत का हाल ध्यान में होता तो अपनी नाशुक्री और माल की मुहब्बत से बाज़ आ जाता)(11)।

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि जो इन्सान नेमतों और अहसानों को भूल जाता है और मुसीबतों व तकलीफ़ों को याद रखता है वो नाशुक्रा है।

101-सूरत-क़ारिआ

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 11 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلۡقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾ مَا الۡقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡقَارِعَةُ ؕ﴿۳﴾ يَوۡمَ يَكُوۡنُ النَّاسُ كَالۡفَرَاشِ الۡمَبۡثُوۡثِ ۙ﴿۴﴾ وَ تَكُوۡنُ
الۡجِبَالُ كَالۡعِهۡنِ الۡمَنۡفُوۡشِ ؕ﴿۵﴾ فَاَمَّا مَنۡ ثَقُلَتۡ مَوَازِيۡنُهٗ ۙ﴿۶﴾ فَهُوَ فِىۡ عِيۡشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ﴿۷﴾ وَ اَمَّا مَنۡ خَفَّتۡ
مَوَازِيۡنُهٗ ۙ﴿۸﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ﴿۹﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا هِيَهۡ ؕ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿۱۱﴾

आयत नं0 01 से 11

वो दिल दहला देने वाली चीज़(01) कैसी है वो दिल दहला देने वाली चीज़(02) और आप को कुछ पता है कैसी है वो दिल दहला देने वाली चीज़ (यानी क़ियामत)(03) **जिस दिन लोग बिखरे हुए परवानों की तरह हो जाएंगे** (यानी जब क़ियामत आएगी तो इन्सान बहुत ज़्यादा होंगे और कमज़ोर व परेशान इधर उधर भागेंगे मगर मुसलमान ऐसे बेचैन न होंगे)(04) **और पहाड़ धुनकी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे**(05) (उस दिन इन्सानों के किये कामों को तौला जाएगा) **फिर जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **भारी** (होगा यानी जो मोमिन) **होगा(06) वो तो मन चाहे आराम में होगा** (यानी बख़्शिश पाकर जन्नत में जाएगा)(07) **और जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **हलका** (होगा यानी जो काफ़िर) **होगा(08) तो उस का ठिकाना हाविया होगा(09) और आप को कुछ पता है वो** (हाविया) **क्या चीज़ है(10)** (वो) **एक दहकती हुई आग है** (यानी वो दोज़ख़ में जाएगा)(11)।

नोटः- लिखा है कि महशर में वज़न दो बार होगा। एक बार मोमिन व काफ़िर का फ़ैसला करने के लिए दूसरा वज़न मोमिनो के आमाल के लिए। यहां पहला वज़न मुराद है जिसमें हर मोमिन का पल्ला ईमान की वजह से भारी होगा चाहे उसके आमाल कैसे ही हों और काफ़िर का पल्ला ईमान न होने की वजह से हल्का होगा चाहे उसने कुछ नेक काम भी किये हों।

102-सूरत-तकासुर

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلۡهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ ثُمَّ كَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ؕ﴿۴﴾ كَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُوۡنَ
عِلۡمَ الۡيَقِيۡنِ ؕ﴿۵﴾ لَتَرَوُنَّ الۡجَحِيۡمَ ۙ﴿۶﴾ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيۡنَ الۡيَقِيۡنِ ۙ﴿۷﴾ ثُمَّ لَتُسۡئَلُنَّ يَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِيۡمِ ﴿۸﴾

आयत नं0 01 से 08

(दुनिया कमाने की) **हवस** (और माल पर घमन्ड) **ने तुम्हें** (आख़रत से) **भूल में डाल रक्खा है** (यानी दुनिया समेटने की धुन में आख़रत को भूले हुए हो और माल कमाने में जाइज़ नाजाइज़ कुछ नहीं देखते)(01) **यहां तक कि तुम क़ब्रुस्तानों में पहुंच जाते** (हो यानी मर जाते) **हो(02) हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (चाहिए यानी दुनिया के सामान पर घमन्ड न करना चाहिए और न आख़रत को भूलना चाहिए) **जल्दी तुम्हें सब पता चल जाएगा(03) फिर** (सुनलो) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (चाहिए बल्कि) **जल्दी तुम्हें सब पता चल जाएगा(04) हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (करते) **अगर तुम यक़ीन से यह बात जानते होते** (यानी सोच समझ से काम लेते तो एसा न करते)(05) **तुम लोग दोज़ख़ को ज़रूर देखोगे(06) फिर** (सुनलो) **सच जानो कि तुम उसे बिल्कुल यक़ीन के साथ** (देखोगे यानी खुली आंखों) **देखोगे(07) फिर** (और बात सुनो कि) **उस दिन तुम से सब नेमतों की पूछ होगी** (कि अल्लाह की दी हुई नेमतों का हक़ ईमान व ताबेदारी के साथ अदा किया या नहीं)(08)।

नोटः- जो लोग जन्नत में जाएंगे उन्हें भी दोज़ख़ दिखाई जाएगी ताकि उन्हें जन्नत की सही क़द्र मालूम हो।

हदीसः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि महशर में कोई आदमी अपनी जगह से सरक न सकेगा जब तक पांच सवालों का जवाब उससे न लिया जाए। एक यह कि उसने अपनी उम्र को किन कामों में फ़ना किया है। दूसरे यह कि उसने अपनी जवानी की ताक़त को किन कामों में ख़र्च किया है। तीसरे यह कि जो माल उसने कमाया वो किस-किस तरीक़े से कमाया

जाइज़ या नाजाइज़ से। चौथे यह कि उस माल को कहां ख़र्च किया। पांचवे यह कि जो इल्म अल्लाह ने उस को दिया था उस पर कितना अमल किया। (बुख़ारी)

एक हदीस में है कि सूरत "तकासुर" पढ़ना एक हज़ार आयतों के बराबर है। (मज़हरी)

103-सूरत-अस्र

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 3 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالۡعَصۡرِ ۙ﴿۱﴾ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَفِیۡ خُسۡرٍ ۙ﴿۲﴾ اِلَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوۡا بِالۡحَقِّ ۬ۙ وَتَوَاصَوۡا بِالصَّبۡرِ ﴿۳﴾

आयत नं0 01 से 03

क़सम है ज़माने की(01) (कि) **इन्सान असल में** (अपनी उम्र बर्बाद करने की वजह से) **बड़े नुक़सान में है(02) सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और एक दूसरे को सच्चे दीन पर** (जमे) **रहने की नसीहत करते रहे और एक दूसरे को** (नेक कामों की) **पाबन्दी की नसीहत करते** (रहे यानी जो खुद भी पाबन्द रहे और दूसरों को भी समझाते रहे ये लोग नुक़सान में नहीं बल्कि नफ़े में) **रहे** (और इस से यह भी मालूम हुआ कि सिर्फ़ ख़ुद नेक बन जाना ही बख़्शिश के लिए काफ़ी नहीं बल्कि दूसरे पास वालों को समझाना भी ज़रूरी है)**(03)**

नोटः- इस सूरत ने मुसलमानों को एक बड़ी हिदायत यह भी दी कि उन का सिर्फ़ अपने अमल को क़ुरआन व सुन्नत के ताबे कर लेना जितना ज़रूरी है उतना ही ज़रूरी यह है कि दूसरे मुसलमानों को भी ईमान और नेक कामों की तरफ़ बुलाने की हिम्मत भर कोशिश करें। वर्ना सिर्फ़ अपना अमल बख़्शिश के लिए काफ़ी न होगा। ख़ास कर अपने घर वालों और दोस्तों व ताल्लुक़ वालों के बुरे कामों से बेपरवाई बरतना अपनी बख़्शिश का रास्ता बन्द करना है भले ही वो ख़ुद कैसे ही नेक कामों का पाबन्द हो। इसलिए क़ुरआन व हदीस में हर मुसलमान पर अपनी-अपनी हिम्मत के हिसाब से भलाई की नसीहत करना और बुराई से रोकना फ़र्ज़ किया गया है। इस बारे में आम मुसलमान बल्कि बहुत से ख़ास लोग तक भूल में हैं। ख़ुद अमल करने को काफ़ी समझ बैठे हैं औलाद व घर वाले कुछ भी करते रहें उस की फ़िक्र नहीं करते। अल्लाह तआला हम सब को इस आयत की हिदायत की तौफ़ीक़ नसीब करें।

104-सूरत-हुमाज़ा

“इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 9 आयतें हैं”

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَیۡلٌ لِّکُلِّ ہُمَزَۃٍ لُّمَزَۃِۣ ﴿۱﴾ الَّذِیۡ جَمَعَ مَالًا وَّ عَدَّدَہٗ ﴿۲﴾ یَحۡسَبُ اَنَّ مَالَہٗۤ اَخۡلَدَہٗ ﴿۳﴾ کَلَّا لَیُنۡۢبَذَنَّ فِی
الۡحُطَمَۃِ ﴿۴﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡحُطَمَۃُ ﴿۵﴾ نَارُ اللّٰہِ الۡمُوۡقَدَۃُ ﴿۶﴾ الَّتِیۡ تَطَّلِعُ عَلَی الۡاَفۡـِٕدَۃِ ﴿۷﴾ اِنَّہَا عَلَیۡہِمۡ
مُّؤۡصَدَۃٌ ﴿۸﴾ فِیۡ عَمَدٍ مُّمَدَّدَۃٍ ﴿۹﴾

आयत नं0 01 से 09

बड़ी ख़राबी है हर ऐसे आदमी के लिए जो पीठ पीछे (दूसरों की) **बुराई करने वाला हो** (और) **मुंह पर ताना देने वाला हो(01) जो** (बहुत लालच की वजह से) **माल जमा करता हो और** (उस की मुहब्बत और उस पर घमन्ड की वजह से) **उस को बार-बार गिनता रहता हो(02)** (यानी) **वो समझ रहा है कि उस का माल उसके पास सदा** (रहेगा यानी वो समझता है कि वो ख़ुद भी सदा रहेगा और उस का माल भी) **रहेगा(03)** (हालांकि यह माल उसके पास) **हरगिज़ नहीं** (रहेगा बल्कि) **क़सम से वो आदमी ऐसी आग में डाला जाएगा जिस में जो कुछ पड़े वो उस को चूरा-चूरा कर डाले(04) और आप को कुछ पता है कि वो चूरा-चूरा करने वाली आग कैसी है (05) वो अल्लाह की आग है जो** (अल्लाह के हुक्म से) **सुलगाई गई** (है यानी बहुत सख़्त) **है(06)** (और वो ऐसी है) **जो** (बदन को लगते ही) **दिलों तक जा पहुंचेगी(07)** (और) **वो आग उन पर बन्द कर दी जाएगी(08)** (इस तरह से कि वो लोग आग के) **बड़े लम्बे चौड़े खम्बों में** (घिरे हुए) **होंगे** (दोज़ख़ में आग के शोले लम्बे चौड़े खम्बों की शकल में होंगे और वो चारों तरफ़ से दोज़ख़ियों को इस तरह घेर लेंगे कि बाहर निकलने का रास्त बन्द होगा)(09)।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह के बन्दों में सबसे बुरे वो लोग है जो चुग़ल ख़ोरी करते हैं और दोस्तों के बीच फूट डलवाते हैं और बेगुनाह लोगों के ऐब तलाश करते रहते हैं। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन) दुनिया की आग का असर यह है कि दिल तक पहुंचने से पहले ही आदमी मर जाता है। और जहन्नम में मौत आएगी नहीं इसलिए दिल के जलने की तकलीफ़ महसूस करेगा।

105-सूरत-फ़ील

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلَمۡ تَرَ کَیۡفَ فَعَلَ رَبُّکَ بِاَصۡحٰبِ الۡفِیۡلِ ؕ﴿۱﴾ اَلَمۡ یَجۡعَلۡ کَیۡدَهُمۡ فِیۡ تَضۡلِیۡلٍ ۙ﴿۲﴾ وَّ اَرۡسَلَ عَلَیۡهِمۡ طَیۡرًا
اَبَابِیۡلَ ۙ﴿۳﴾ تَرۡمِیۡهِمۡ بِحِجَارَۃٍ مِّنۡ سِجِّیۡلٍ ۪ۙ﴿۴﴾ فَجَعَلَهُمۡ کَعَصۡفٍ مَّاۡکُوۡلٍ ﴿۵﴾

आयत नं0 01 से 05

क्या आप को पता नहीं आप के रब ने हाथी वालों के साथ क्या बरताव किया(01) **क्या उनकी चालों को नाकाम नहीं कर दिया** (जो काबा के उजाड़ने के लिए थीं)(02) **और उन पर झुन्ड के झुन्ड परिन्दों के भेजे**(03) **जो उन पर कंकर की पथरियां फेंकते थे**(04) **तो** (अल्लाह ने) **उन को ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भूसा** (मतमलब यह कि अल्लाह के हुक्मों की बेअदबी करने वालों को ऐसे अज़ाब व सज़ा से बेफ़िक्र न रहना चाहिए। हो सकता है कि दुनिया ही में अज़ाब आजाए जैसे हाथी वालों पर आया वर्ना आख़रत का अज़ाब तो यक़ीनी है)(05)।

नोटः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से कुछ पहले का क़िस्सा है कि अबरहा नामी यमन का बादशाह हाथियों पर सवार बड़ी फ़ौज लेकर काबे को उजाड़ने के इरादे से मक्के पर चढ़ आया था। रास्ता रोकने वालों को हलाक करता गया। जब समझाने से भी नहीं माना तो अल्लाह तआला ने उस पर परिन्दों से अज़ाब भेजा जिन्होंने पूरी फ़ौज को हलाक कर दिया। इस क़िस्से को देखने वाले लोग उस वक़्त तक मौजूद थे जब यह सूरत उतरी। तो इस से इस्लाम के मुख़ालिफ़ों को सबक़ लेना चाहिए और अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए।

106-सूरत-क़ुरैश

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 4 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لِاِیۡلٰفِ قُرَیۡشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِہِمۡ رِحۡلَۃَ الشِّتَآءِ وَ الصَّیۡفِ ۚ﴿۲﴾ فَلۡیَعۡبُدُوۡا رَبَّ ہٰذَا الۡبَیۡتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیۡۤ اَطۡعَمَہُمۡ مِّنۡ جُوۡعٍ ۬ۙ وَّ
اٰمَنَہُمۡ مِّنۡ خَوۡفٍ ﴿۴﴾

आयत नं० 01 से 04

चूंकि क़ुरैश (के लोग) **आदी हो गये हैं(01) यानी सर्दी और गर्मी** (के मौसम) **में सफ़र के आदी हो गये हैं(02) तो** (इस नेमत के शुक्र में) **उन को चाहिए कि इस ख़ाना-ए-काबा के मालिक** (यानी अल्लाह तआ़ला) **की इबादत करें(03) जिस ने उन को भूक में खाने को दिया और डर से उन को अमन दिया(04)।**

नोटः- मक्के वालों का असल कारोबार तिजारत था जिसके लिए उन्हें यमन व शाम मुल्कों के सफ़र करने होते थे। काबे की इ़ज़्ज़त की वजह से रास्ते में उन्हें कोई परेशान न करता था। और उन के दुशमन हाथियों की फ़ौज वालों को दर्दनाक सज़ा देकर उनकी इ़ज़्ज़त लोगों के दिलों में और बढ़ा दी थी तो मक्के वाले अमन से सफ़र करते थे और रोज़ी कमाते थे। इन आयतों में उन नेमतों को याद दिलाया गया है।

अबुल हसन रह० ने फ़रमाया है कि जिस आदमी को किसी दुशमन या और किसी मुसीबत का डर हो उसके लिए इस सूरत का पढ़ना अमन है। इमाम जज़री ने फ़रमाया कि यह अमल मेरा आज़माया हुआ है। क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० तफ़सीर मज़हरी में फ़रमाते हैं कि मैंने भी बहुत बार तजरबा किया है।

107-सूरत-माऊन

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 7 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَرَءَیۡتَ الَّذِیۡ یُکَذِّبُ بِالدِّیۡنِ ؕ﴿۱﴾ فَذٰلِکَ الَّذِیۡ یَدُعُّ الۡیَتِیۡمَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَا یَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الۡمِسۡکِیۡنِ ؕ﴿۳﴾ فَوَیۡلٌ
لِّلۡمُصَلِّیۡنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡنَ ہُمۡ عَنۡ صَلَاتِہِمۡ سَاہُوۡنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِیۡنَ ہُمۡ یُرَآءُوۡنَ ۙ﴿۶﴾ وَ یَمۡنَعُوۡنَ الۡمَاعُوۡنَ ٪﴿۷﴾

आयत नं0 01 से 07

क्या आपने उस आदमी को देखा है जो इन्साफ़ होने (के दिन) **को झुटलाता है(01) तो** (उस का हाल सुनिए कि) **वो आदमी वो है जो यतीम को धक्के देता है(02) और ग़रीब मुहताज को खाना देने को** (दूसरों को भी) **नहीं उकसाता** (यानी वो ऐसा पत्थर दिल है कि ख़ुद तो वो किसी ग़रीब को क्या देता दूसरों को भी इसके लिए तैयार नहीं करता, और जब बन्दों का हक़ अदा न करना ऐसा बुरा है तो अल्लाह का हक़ अदा न करना तो और ज़्यादा बुरा है)(03) **तो** (इससे साबित हुआ कि) **ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है(04) जो अपनी नमाज़ को भुला बैठे** (हैं यानी छोड़ देते) **हैं(05) जो ऐसे हैं कि** (जब नमाज़ पढ़ते हैं तो) **दिखावा करते हैं(06) और ज़कात बिल्कुल नहीं देते** (हैं क्योंकि ज़कात के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि सब को दिखाकर दी जाए इसलिए उसको बिल्कुल नहीं देते, और नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा की जाती है उसको अगर पढ़ते भी हैं तो दिखावे को पढ़ लेते) **हैं(07)**

नोटः- ऊपर आयतों में मुनाफ़िक़ का हाल बयान किया गया है जो लोगों को दिखाने के लिए और अपने को मुसलमान साबित करने के लिए नमाज़ तो पढ़ लेता है और ज़कात दिखाई देने वाली चीज़ नहीं इसलिए ईमान न होने ऐतक़ाद न होने की वजह से उसे अदा नहीं करता।

108-सूरत-कौसर

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 3 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِنَّاۤ اَعۡطَیۡنٰکَ الۡکَوۡثَرَ ؕ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّکَ وَ انۡحَرۡ ؕ﴿۲﴾ اِنَّ شَانِئَکَ ہُوَ الۡاَبۡتَرُ ٪﴿۳﴾

आयत नं0 01 से 03

(ऐ पैग़म्बर) **बेशक हमने आप को कौसर देदी** (है कौसर जन्नत की एक हौज़ का नाम भी है और दुनिया व आख़रत की हर भलाई भी इसमें शामिल) **है(01) तो** (इन नेमतों के शुक्र में) **आप अपने रब की नमाज़ पढ़िए** (क्योंकि सब से बड़ी नेमत के शुक्र में सबसे बड़ी इबादत चाहिए और वो नमाज़ है) **और** (माली इबादत भी यानी उसके नाम की) **क़ुर्बानी** (कीजिए और इसकी वजह यह भी हो सकती है कि मुशरिक लोग बुतों के नाम की कुर्बानी करते थे इसलिए आप को हुक्म दिया गया कि अल्लाह के नाम की क़ुर्बानी) **कीजिए(02)** (आगे उस बात का जवाब है जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे हज़रत क़ासिम की बचपन में मौत हो जाने पर काफ़िरों ने जो यह ताना दिया था कि आगे इनकी नस्ल न चलेगी और इनके दीन का सिलसिला जल्दी ख़त्म हो जाएगा तो अल्लाह की महरबानी से आप बे नामोनिशान नहीं बल्कि) **सच यह है कि आप का दुशमन ही बेनामोनिशान है** (चाहे देखने में उस दुशमन की नस्ल चले या न चले लेकिन दुनिया में उस का भला चर्चा बाक़ी न रहेगा जब कि आप की उम्मत और आप की याद नेक नामी मुहब्बत और ऐतक़ाद के साथ बाक़ी रहेगी)(03)।

नोटः- अब सोचिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम को अल्लाह तआ़ला ने कितनी बड़ाई दी कि आप के दौर से आज तक पूरी दुनिया के चप्पे-चप्पे पर आप का मुबारक नाम पांच वक़्त अल्लाह के नाम के साथ मीनारों पर पुकारा जाता है। और आप की नसबी व रूहानी औलाद पूरी दुनिया में मौजूद है। और आख़रत में आप को बड़ी सिफ़ारिश का सबसे बड़ा दर्जा मिलेगा। और जिन लोगों ने आप को अबतर कहा उन की औलाद कहां, उन के ख़ानदान का क्या हुआ दुनिया में आज उन का नाम लेने वाला कोई बाक़ी नहीं है।

109-सूरत-काफ़िरून

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 6 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ ۙ‏ ﴿۱﴾ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ‏ ﴿۲﴾ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ‌ ۚ‏ ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمۡ ۙ‏ ﴿۴﴾
وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ‏ ﴿۵﴾ لَـكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ ﴿۶﴾

आयत नं0 01 से 06

आप (इन काफ़िरों से) **कह दीजिए कि ऐ काफ़िरों** (मेरा और तुम्हारा तरीक़ा एक नहीं हो सकता)(01) **न** (तो अब) **मैं तुम्हारे माबूदों** (यानी देवताओं) **की इबादत करता हूं(02) और न तुम मेरे माबूद** (अल्लाह तआला) **की इबादत करते हो(03) और न** (आगे भी) **मैं तुम्हारे माबूदों की इबादत करूंगा(04) और न तुम मेरे माबूद की इबादत करोगे** (मतलब यह कि मैं तौहीद पर क़ाइम होकर शिर्क नहीं कर सकता और तुम शिर्क पर जमे रह कर तौहीद पर नहीं हो सकते यानी तौहीद व शिर्क एक साथ जमा नहीं हो सकते)(05) **तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है** (तुम को तुम्हारा बदला मिलेगा) **और मेरे लिए मेरा दीन है** (मुझको मेरा बदला मिलेगा)(06)।

नोटः- मक्के के काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने समझौते के लिए यह बात रक्खी थी कि आप हमारे माबूदों की एक साल इबादत करें और हम आप के माबूद की एक साल इबादत करें। तो इस पर ये आयतें उतरीं जिन में ऐसे किसी समझौते से इनकार कर दिया गया। इससे मालूम हुआ कि सुलह अपने इन्सानी हक़ों में होती है। अल्लाह के क़ानून और दीन के उसूलों में किसी सुलह समझौते की गुन्जाइश नहीं।

हदीसः- कुछ सहाबा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हमें कोई दुआ बता दीजिए जो हम सोने से पहले पढ़ा करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरत "क़ुल या अय्युहल काफ़िरून" पढ़ने की नसीहत की और फ़रमाया कि यह शिर्क से छुटकारा है। (तिरमिज़ी)

110-सूरत-नस्र

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 3 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَ الۡفَتۡحُ ۙ﴿۱﴾ وَ رَاَیۡتَ النَّاسَ یَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَ اسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

आयत नं0 01 से 03

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **जब अल्लाह की मदद और** (मक्के की) **जीत** (अपनी निशानियों के साथ) **आ पहुंचे(01) और** (जीत की निशानियां ये हैं कि) **आप लोगों को अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल होता देखलें(02) तो** (उस वक़्त समझिए कि दुनिया में आप के रहने का काम पूरा हो चुका, अब आख़रत का सफ़र नज़दीक है उसके लिए तैयारी कीजिए और) **अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह कीजिए और उससे मुआफ़ी** (मांगिए यानी ऐसी बातें जो आप के रूतबे के ख़िलाफ़ हों उनसे मुआफ़ी) **मांगिए, बेशक वो बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है(03)।**

नोटः- इस सूरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात नज़दीक होने की तरफ़ इशारा है। और जिन बातों की आप को नसीहत की गई है वो ख़ास तौर से उम्मत को बताने के लिए हैं वर्ना आप तो मासूम हैं।

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० कहते हैं कि इस सूरत के उतरने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इबादत में बहुत ज़्यादा मेहनत की यहां तक कि आप के मुबारक पांव सूज गये। और हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि हर वक़्त ये दुआ पढ़ते

سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمۡدِهٖ اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ وَ اَتُوۡبُ اِلَیۡهِ

"सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही असतग़फिरूल्लाहा व अतूबु इलैह"

111-सूरत-लहब

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَبَّتۡ یَدَاۤ اَبِیۡ لَہَبٍ وَّ تَبَّ ؕ﴿۱﴾ مَاۤ اَغۡنٰی عَنۡہُ مَالُہٗ وَ مَا کَسَبَ ؕ﴿۲﴾ سَیَصۡلٰی نَارًا ذَاتَ لَہَبٍ ۚۖ﴿۳﴾ وَّ امۡرَاَتُہٗ ؕ حَمَّالَۃَ الۡحَطَبِ ۚ﴿۴﴾ فِیۡ جِیۡدِہَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ٪﴿۵﴾

आयत नं0 01 से 05

अबूलहब के हाथ टू जाएं और वो बर्बाद हो जाए(01) न उस का माल उसके काम आया और न उसकी कमाई (माल असल दौलत है और कमाई उस का नफ़ा मतलब यह कि कोई सामान उसको तबाही से न बचा पाएगा और दुनिया में उसका ये ही हाल हुआ)(02) **जल्दी ही** (यानी मरते ही) **दहकती आग में जाएगा** (वहां आख़रत का अज़ाब होगा)(03) **और** (वो भी और) **उसकी बीवी भी जो लकड़ियां लाद कर लाती है** (यानी कान्टेदार लकड़ियां जिन को वो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ते में बिछा देती थी ताकि आप को तकलीफ़ पहुंचे)(04) **उसके गले में** (दोज़ख़ में वहां का पट्टा और ज़ंजीर होगी जैसे वो) **एक रस्सी होगी ख़ूब बंटी हुई** (जैसे बड़े मुजरिमों के गले में होती है)(05)।

नोटः- अबूलहब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सख़्त दुशमन था वो हुजूर को बहुत सताता था। और बददुआ देता था। उस की बीवी भी उस का बहुत साथ देती थी और कांटेदार लकड़ियां हुजूर के रास्ते में बिछा देती थी कि आप को तकलीफ़ पहुंचे। इस सूरत में उन दोनों के अन्जाम की ख़बर दी गई है। अबूलहब को ताऊन का दाना निकला घर वालों ने बीमारी फैलने के ख़तरे से उसे अलग डाल दिया और मरने के बाद जब सड़ने लगा और बदबू फैली तो मज़दूरों से बाहर फिकवा दिया जो गले में रस्सी बान्धकर घसीटते हुए बाहर फेंक आए। यह अन्जाम तो दुनिया में हुआ और आख़रत का अज़ाब दहकती हुई आग है।

112-सूरत-इख़्लास

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 4 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۞ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۞ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۞ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۞

आयत नं0 01 से 04

नोटः- एक बार काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि अपने रब की ख़ूबियां और उसके ख़ानदान के बारे में बताइये उस पर यह सूरत उतरी।

आप (इन लोगों से) **कह दीजिए कि वो यानी अल्लाह** (अपनी हस्ती में) **एक** (है यानी सदा से है सदा रहेगा और उसे हर वक़्त हर चीज़ का इल्म है और उसकी क़ुदरत सब को घेरे हुए) **है (01) अल्लाह बेनियाज़** (है यानी किसी का मुहताज नहीं और हर कोई उसका मुहताज) **है(02) उसके कोई औलाद नहीं न वो किसी की औलाद है(03) और न कोई उसकी बराबर का है(04)।**

नोटः- एक हदीस में है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को जमा करके फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक तिहाई क़ुरआन सुनाउंगा फिर आपने सूरत "क़ुल हुवल्लाहु अहद" सुनाई और फ़रमाया कि यह सूरत एक तिहाई क़ुरआन की बराबर है। (मुस्लिम)

एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मुझे इस सूरत (यानी सूरत इख़्लास) से बड़ी मुहब्बत है आप ने फ़रमाया कि इसकी मुहब्बत ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया। (इब्ने कसीर)

113-सूरत-फ़लक़

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝۳ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝۴
وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝۵

आयत नं0 01 से 05

(ऐ पैग़म्बर) **आप** (अपने रब से पनाह मांगने के लिए और दूसरों को भी पनाह मांगना सिखाने के लिए यानी अल्लाह पर पूरा भरोसा सिखाने के लिए) **कहिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह लेता हूं** (और जिस तरह अल्लाह तआ़ला रात की अन्धेरी को दूर करके सुबह की रौशनी निकाल देता है इसी तरह जादू को भी मिटा सकता है)(01) **हर उस चीज़ की बुराई से** (पनाह लेता हूं) **जो उसने पैदा की है(02) और** (ख़ास कर) **अन्धेरी रात की बुराई से** (पनाह लेता हूं) **जब वो रात आ जाए** (रात में बुराई का ख़तरा ज़्यादा रहता है)(03) **और** (ख़ास कर) **गन्डे की गिरहों पर पढ़-पढ़ कर फूंकने वाली जानों** (यानी जादूगरों) **की बुराई से(04) और हसद करने** (यानी जलने) **वाले की बुराई से** (पनाह लेता हूं) **जब वो हसद करने लगे(05)।**

नोटः- यह सूरत और इसके बाद की सूरत यानी सूरत नास एक ही साथ एक क़िस्से के बारे में उतरी हैं। कि एक बार एक यहूदी ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू कर दिया था जिसके असर से आप बीमार हो गये। हज़रत जिब्रील ने आकर हुजूर को ख़बर दी। उनके बताए हुए कुंए से वो जादू वाली चीज़ निकाली गई। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये आयतें पढ़ कर उन गिरहों को खोल दिया। आप उसी वक़्त बिल्कुल तन्दरूस्त हो गये।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई बीमारी पेश आती तो ये दोनों सूरतें (सूरत फ़लक़ व सूरत नास) पढ़ कर अपने हाथों पर

दम करके सारे बदन पर फेर लेते थे। फिर जब मर्ज़े वफ़ात में आप की तकलीफ़ बढ़ी तो मैं ये सूरतें पढ़ कर आपके हाथों पर दम कर देती थी आप अपने सारे बदन पर हाथ फेर लेते थे। मैं यह काम इसलिए करती थी कि हज़रत के मुबारक हाथों का बदल मेरे हाथ न हो सकते थे। (इमाम मालिक - तफ़सीर इब्ने कसीर)

मसअलाः- बीमारी की तरह जादू पैग़म्बर पर भी हो सकता है लेकिन पैग़म्बरी पर उस का असर नहीं होता।

114-सूरत-नास

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 6 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِکِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰہِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ
فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ٪﴿۶﴾

आयत नं0 01 से 06

आप कहिए कि मैं पनाह लेता हूं लोगों के मालिक की(01) (और) **लोगों के बादशाह की(02)** (और) **लोगों के माबूद** (यानी अल्लाह तआ़ला) **की(03) वसवसा डालने** (यानी बहकाने) **वाले पीछे हट जाने वाले** (शैतान) **की बुराई से** (पीछे हट जाने का मतलब यह है कि हदीस में है कि अल्लाह का नाम लेने से शैतान हट जाता है)**(04) जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है(05) चाहे वो** (वसवसा डालने वाला) **जिन्न हो या इन्सान** (यानी जिस तरह मैं शैतान जिन्नात से पनाह मांगता हूं उसी तरह शैतान इन्सानों से भी पनाह मांगता हूं जैसा कि कुरआने करीम में दूसरी जगह जिन्नात और इन्सान दोनों में शैतानों के होने का ज़िक्र है)**(06)**।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर इन्सान के दिल में दो घर हैं एक में फ़रिशता रहता है दूसरे में शैतान (फ़रिशता इन्सान को नेक कामों का शौक़ दिलाता रहता है और शैतान बुरे कामों का वसवसा डालता है)। फिर जब इन्सान अल्लाह का ज़िक्र करता है तो शैतान पीछे हट जाता है। और जब तक वो अल्लाह के ज़िक्र में नहीं लगता तो अपनी चोंच इन्सान के दिल पर रख कर उसमें बुराइयों के वसवसे डालता है। (मज़हरी)